राजस्थानी कहावत कोश

सम्पादक :
भागीरथ कानोड़िया
गोविन्द अग्रवाल

पंचशील प्रकाशन, जयपुर

प्रकाशक : पंचशील प्रकाशन
फिल्म कालोनी, जयपुर–302003

मूल्य : साठ रुपये

संस्करण : प्रथम, 1979

मुद्रक : शीतल प्रिंटर्स
फिल्म कालोनी, जयपुर–302003

RAJASTHANI KAHAWAT KOSH

Edited by Bhagirath Kanoria
Govind Agrawal

Price Rs. 60.00

आमुख

लोक संस्कृति शोध संस्थान, नगर-श्री, चूरू के यशस्वी लेखक श्री गोविन्द अग्रवाल ने एक और महत्त्वपूर्ण कृति साहित्य-जगत को प्रेषित की है। यह है, 'राजस्थानी कहावत कोश'।

कहावत या लोकोक्ति लोक-क्षेत्र की अपूर्व वस्तु है। रेवरेंड जेम्स लौंग ने सन् १८७५ में Oriental Proverbs में लिखा था—लोकोक्ति या कहावत नीचे गहराइयों से उछाली हुई स्फुलिंग है। लार्ड बेकन ने लिखा है कि किसी जाति की प्रतिभा, आत्मा और वाक्-वैदग्ध्य उसकी लोकोक्तियों में से उद्घाटित होता है।

लौंग की पुस्तक के ग्यारह वर्ष बाद सन् १८८६ में प्रकाशित एस. डब्ल्यू. फैलन की पुस्तक, A Dictionary of Hindustani Proverbs की भूमिका में टेम्पल महोदय ने लिखा कि,

"स्पेन की तरह भारत भी कहावतमय वार्तालापी देश है। कहावतें प्रमाण भी हैं एवं उनका उपयोग निरन्तर होता है और अनंत होता है। यहां के निवासी कहावतों का उपयोग दैनिक बात-चीत में, वाणिज्य-व्यवसाय में सामाजिक पत्राचार में और जीवन की विविध प्रवृत्तियों में. यहां तक कि न्यायालयों में भी करते रहते हैं।"

इसमें सन्देह नहीं कि भारत कहावतों का देश है। इन कहावतों का पहला संग्रह भी फैलन महोदय ने ही प्रस्तुत किया। फैलन महोदय के उक्त कहावत कोश को इधर सन् १९६८ (मार्च) में नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया ने देवनागरी लिपि में प्रस्तुत किया। इसके प्रकाशकीय वक्तव्य में श्री बालकृष्ण केसकर महोदय ने बताया है कि फैलन के पहले इस प्रकार की कोई कृति हिन्दी भाषा के सम्बन्ध में मौजूद नहीं थी। यह स्मरण रहे कि फैलन ने इस कोश में मारवाड़ी, पंजाबी, मराठी, भोजपुरी और तिरहुती कहावतों, प्रचलित वाक्य-खण्डों, सूत्रों एवं नीति-वाक्यों का संग्रह किया। इस प्रकार बहुत कुछ जो अन्यथा नष्ट होता, बच गया। कहावतों और मुहावरों में इतिहास के बहुत से तथ्य जीते चले जाते हैं। जिस इलाके में कहावत प्रचलित है, कई बार उसके इतिहास, रीति-नीति पर इन कहावतों, मुहावरों से नई रोशनी पड़ती है।

फैलन के बाद इस ग्रन्थ का संपादन और परिशोधन कप्तान आर सी. टेम्पल महोदय ने किया। उन्होंने दिल्ली निवासी लाला फकीरचंद वैश की सहायता ली, जो बंगाल सरकार के प्रथम उर्दू सहायक अनुवादक थे।

यह 'कोश' अकारादि क्रम से प्रस्तुत किया गया है। इस हिन्दी संस्करण का सम्पादन हिन्दी लोक-साहित्य के जाने-माने विद्वान् श्री कृष्णानंद गुप्त ने किया है। तो, फैलन महोदय का यह कोश हिन्दी-हिन्दुस्तानी कहावतों का पहला कोश है।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि फैलन ने मार्ग-दर्शक कार्य किया। इसके बाद हिन्दी क्षेत्र में ही बहुत काम हुआ है, यद्यपि इस क्षेत्र में अभी बहुत करना शेष भी है।

राजस्थान भी इस क्षेत्र में पीछे नहीं रहा और राजस्थानी कहावतों के कतिपय संग्रह भी प्रकाशित हो चुके हैं। साथ ही यह बात भी ध्यान आकर्षित करती है कि राजस्थान के और भी कई क्षेत्र अभी ऐसे पड़े हुए हैं जो किसी संग्रह कर्त्ता की बाट जोह रहे हैं जैसे मेवाती बोली की कहावतें, जयपुरी की कहावतें, शेखावाटी की कहावतें, भरतपुर–करौली की कहावतें आदि आदि।

राजस्थानी कहावतों पर प्रथम शोध कर्त्ता विद्वान् डॉ० कन्हैयालाल सहल से सभी परिचित हैं। अब यह 'राजस्थानी कहावत कोश' पाठकों के सामने है। इसके संपादक हैं श्री गोविन्द अग्रवाल एवं श्री भागीरथ कानोड़िया।

यों तो श्री भागीरथ कानोड़िया जैसे लोक–वार्त्ता और लोक–साहित्य के महान् धनी का आशीर्वाद भी मिल जाता तो भी कार्य की सम्पन्नता में चार चांद लग जाते, किन्तु यहां तो वे स्वयं भी एक सम्पादक हैं, अतः इसमें संदेह के लिए स्थान नहीं रहा कि कोश बहुत उपयोगी सिद्ध होगा।

फिर, श्री गोविन्द अग्रवाल स्वयं लोक–संस्कृति और इतिहास के क्षेत्र में बहुत उपयोगी कृतित्व दे चुके हैं और बहुत यश अर्जित कर चुके हैं। इस कोश का काम उन्होंने एक संपादक के रूप में संपन्न किया है, यह एक और ठोस उपलब्धि उनके यश–वर्द्धक कार्यों से जुड़ी है।

इनका यह कार्य ऐसा है कि वस्तुतः इसे किसी भूमिका की आवश्यकता नहीं थी। इस कोश में ३२०६ कहावतें एवं लगभग ३५० संदर्भ कथाएँ भी यथा-स्थान दी गई हैं। ये संदर्भ कथाएँ इस कोश की उपयोगिता को और बढा देती हैं। साथ ही जिस कहावत के रूपान्तर या पाठान्तर मिलते हैं, वे भी दे दिये गये हैं। अर्थ भी सरल भाषा में दिये गये हैं। इस प्रकार संपादकों ने इसे सर्वतोभावेन उपयोगी बनाने का प्रयत्न किया है। मेरी दृष्टि में यह अभिनंदनीय कार्य है।

मुझे पूरा भरोसा है कि इस कोश का अच्छा स्वागत होगा।

४ ल ३६,
जवाहर नगर, जयपुर

डॉ० सत्येन्द्र

दो शब्द

कहावतें या लोकोक्तियां अत्यन्त प्राचीन काल से ही संसार की विभिन्न भाषाओं में चलती आ रही हैं एवं इनका क्षेत्र बड़ा व्यापक रहा है। भारत के अन्य प्रदेशों की तरह राजस्थान में भी कहावतों का विपुल भण्डार है। ये कहावतें बड़ी सजीव तथा सार्थक हैं और देश-विदेश की किसी भी भाषा की कहावतों से होड़ लेने में समर्थ हैं।

राजस्थान शताब्दियों तक विभिन्न राजनीतिक इकाइयों में बटा रहा है, अतः स्थान एवं बोली भेद के कारण इन कहावतों के स्वरूप में थोड़ा-बहुत अन्तर अवश्य परिलक्षित होता है। प्रस्तुत संग्रह में मुख्य रूप से राजस्थानी कहावतों के चूरू एवं शेखावाटी क्षेत्र में प्रचलित स्वरूप को ही लिया गया है।

इस संग्रह में खेती-पाती, व्यापार-वाणिज्य, खान-पान, वेश-भूषा, पर्व-त्यौहार, रीति-रिवाज, पशु-पक्षी, घर-परिवार एवं देश और समाज आदि विभिन्न पहलुओं से सम्बन्धित कहावतें हैं जिनमें मानव-जीवन के कड़वे-मीठे अनुभव समाये हुए हैं।

सुदीर्घ काल से ये कहावतें लोक-मुख पर आसीन रह कर ही पीढ़ी दर पीढ़ी अपनी मंजिलें तय करती आ रही हैं। लेकिन अब इनका मार्ग अवरुद्ध होने लगा है और ये तेजी से विस्मृति के गर्त में समाती जा रही हैं। आधुनिक शिक्षा-प्रणाली के कारण आज का छात्र एवं युवा वर्ग इन कहावतों से कटता जा रहा है। पिछली पीढ़ी के लोगों को जितनी कहावतें याद थीं, उतनी वर्तमान पीढ़ी को नहीं हैं और जितनी वर्तमान पीढ़ी को याद है, उतनी भावी-पीढ़ी को याद नहीं रहेंगी। इसलिए लोक-मुख पर अवस्थित जितनी भी कहावतें लिपिबद्ध हो सकें उतना ही श्रेयस्कर है।

राजस्थान के जो लोग इस प्रदेश को छोड़कर अन्यत्र चले गये हैं और वहीं बस गये हैं, वे भी इन कहावतों के माध्यम से राजस्थान की धरती एवं यहां के जन-जीवन के साथ अपना सम्पर्क बनाये रख सकेंगे, राजस्थान की स्मृतियों को संजोये रख सकेंगे, ऐसी आशा है।

इन्हीं सब बातों को दृष्टिगत रखते हुए यह 'राजस्थानी कहावत कोश' प्रस्तुत किया जा रहा है। यदि यह आंशिक रूप में भी अपने उद्देश्य की प्राप्ति कर सका तो हम अपने प्रयत्न को सफल समझेंगे।

प्रस्तुत कहावत कोश में ३२०६ कहावतें दी गई हैं एवं अधिकांश कहावतों के सरल अर्थ या भावार्थ भी दे दिये गये हैं। लगभग ३५० कहावतों की सन्दर्भ कथाएँ भी संक्षेप में दी गई हैं, जिससे सम्बन्धित कहावत का आशय पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है। इनमें एक-दो प्रतिशत कहावतें ऐसी भी हैं जिनका भाव हमारे लिए भी एकदम स्पष्ट नहीं था, लेकिन ऐसी कहावतों के अर्थ खींच-तान कर बिठाने की चेष्टा नहीं की गई है। कहावत और मुहावरे का चोली-दामन का साथ है अतः सम्भव है कि एक-दो प्रतिशत मुहावरे भी इस कोश में प्रवेश पा गये हों।

यद्यपि प्रूफ संशोधन में पर्याप्त सावधानी बरती गई है, तथापि डाक द्वारा प्रूफ आने-जाने की व्यवस्था के कारण हम स्वयं केवल एक बार ही प्रूफ देख पाये हैं, अतः प्रूफ विषयक जो भी भूलें इस कोश में रह गई हों, उन्हें विज्ञ पाठक सुधार लेने की कृपा करेंगे।

प्रस्तुत कोश से पूर्व भी राजस्थानी कहावतों के कुछ संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। यद्यपि ये सभी कहावत-संग्रह हमारे देखने में नहीं आये, तथापि जिन प्रकाशित पुस्तकों या पत्र-पत्रिकाओं से सहायता ली गई है उनकी सूची अन्त में दे दी गई है।

लोक-साहित्य के मूर्द्धन्य विद्वान् श्रद्धास्पद डा० सत्येन्द्रजी ने प्रस्तुत कोश की भूमिका लिख देने की कृपा की है, इसके लिए हम उनके अत्यन्त कृतज्ञ हैं। प्रूफ संशोधन में चि० नन्दकिशोर अग्रवाल (सुपुत्र श्री गोविन्द अग्रवाल) ने पूरा समय व सहयोग दिया है।

भागीरथ कानोड़िया

गोविन्द अग्रवाल

१. **अंगड़ाई सासरै जावै जिकी के न्हाल करै ?**

अनिच्छा और मजबूरी से ससुराल जाने वाली स्त्री भला क्या निहाल करेगी। वे मन और दबाव से किया गया काम सन्तोषप्रद नहीं होता।

२. **अजळ वड़ो बलवान।**

दाना-पानी बड़ा बलवान होता है। जहां का दाना-पानी लिखा होता है, मनुष्य को वहीं जाना पड़ता है।

कित कासी कित कासमीर, खुरासाण गुजरात।
दाणों पाणी परसराम बांह पकड़ लेजात।

रू० अंजळ वड़ो बलवान, काळ वड़ो सिकारी।

३. **अंत भलै को भलो।**

दूसरों की भलाई करने वाले का अन्त में भला ही होता है।

रू० अंत बुरै को बुरो।

४. **अंत भलो सो भलो।**

जिसका अन्त सुधर जाए, वही भला है।

५. **अंत मता सो गता।**

अंतिम समय में जिसकी जैसी मति होती है, उसी के अनुसार उसकी गति होती है।

सन्दर्भ कथा—एक स्त्री बाल-विधवा थी, केवल हथलेवे की गुनहगार। उसने अपनी सारी जिन्दगी संयम से बिता दी, किसी पुरुष के हाथ का स्पर्श भी नहीं होने दिया। जब उसका अंतिम समय निकट आया तो उसे दिखलाने के लिए किसी वैद्य को बुलवाया गया। वह चाहती थी कि वैद्य उसका स्पर्श न करे, लेकिन असमर्थता के कारण बोल नहीं पाई। वैद्य ने नब्ज देखने के लिए उसका हाथ पकड़ा तो स्त्री को अत्यधिक आनन्द की अनुभूति हुई। उसने मन ही मन पश्चाताप करते हुए कहा कि पुरुष से अलग रह कर वह संसार के सबसे बड़े आनन्द से वंचित रही है। इसी विचार के साथ उसके प्राण-पखेरू उड़ गये और अपनी अन्तिम भावना के अनुरूप वह अगले जन्म में एक सुन्दर लड़की के रूप में एक वेश्या के घर जन्मी।

६. **अद का फंद गोविन्द जाणै, गोविन्द का फंद कोई न जाणै।**

रू० नंद का फंद गोविन्द (श्रीकृष्ण) जाणै, गोविन्द का फंद कोई न जाणै।

७. **अंधाधुंध को सायवो, घटा टोप को राज ।**
अन्धाधुन्ध शासन करने वाले के राज्य में अन्धेर गर्दी और अराजकता की काली घटायें ही घिरी रहती हैं ।

८. **अंधाधुंध के राज में गधा पंजीरी खाय ।**
जिस राज्य में अन्धेर गर्दी हो, वहां सर्वथा निकम्मे व्यक्ति ही गुलछर्रे उड़ाते हैं ।

९. **अन्धेर नगरी, चौपट राजा । टके सेर भाजी, टके सेर खाजा ।**

सन्दर्भ कथा–एक बार कोई साधु अपने चेले के साथ ऐसी ही किसी अंधेर नगरी में आ गया, जहां हर वस्तु टके-सेर बिकती थी । गुरु ने चेले से कहा कि यहां रहना ठीक नहीं । लेकिन चेला पेटू था, अतः टके सेर वाली बात उसे बहुत भाई । गुरु तो अन्यत्र चला गया और चेला वहीं रह गया तथा मनचाही चीजें खा-खाकर मुस्टण्डा बन गया ।

एक दिन नगर में किसी मकान की दीवार गिर जाने से किसी गडरिये की भेड़ दब कर मर गई तो गडरिये ने राजा के पास शिकायत की । राजा ने मकान मालिक को बुलवाया, लेकिन उसने कहा कि राज ने दीवार मजबूत नहीं बनाई । इसलिए उसे ही दण्ड मिलना चाहिए, मैं तो निर्दोष हूं । यूं करते-कराते बात मन्त्री पर आकर रुकी । वह कोई माकूल जवाब नहीं दे पाया, अतः राजा ने मंत्री को फाँसी पर लटकाने का आदेश दे दिया । लेकिन मन्त्री दुबला-पतला था, इसलिए फँदा उसके गले में फिट नहीं बैठा । पर चूंकि किसी न किसी को दण्ड दिया जाना आवश्यक था । इसलिए राजा ने हुक्म दिया कि फँदा जिसके गले में ठीक बैठे, उसे ही फाँसी दे दी जाये ।

इस पर राज कर्मचारी उक्त चेले को पकड़ लाये । अब चेले को अपनी भूल ज्ञात हुई । उसने गुरु का स्मरण किया । गुरु तत्काल ही वहां पहुँच गया और सारी स्थिति जान कर उसने चेले के कान में कुछ कहा । इसके बाद दोनों फाँसी के तख्ते पर चढ़ने के लिए परस्पर झगड़ने लगे । गुरु कहता था कि मैं फाँसी के तख्ते पर चढ़ूंगा और चेला कहता था कि मैं चढ़ूंगा । राजा के पूछने पर गुरु ने कहा कि महाराज ! इस समय ऐसा उत्तम मुहूर्त है कि जो इस मुहूर्त में फाँसी पर चढेगा वह सीधा स्वर्ग को जाएगा । इस पर राजा ने उनसे कहा कि तब तो मैं स्वयं ही फाँसी पर लटकूंगा, तुम दोनों वहां से अलग हट जाओ । इतना सुनते ही गुरु-चेला तो वहां से तत्काल चम्पत हो गये और राजा फाँसी पर लटक गया ।

१०. **अंधेरी रात में मूंग काळा ।**
अंधेरी रात में हरे मूंग भी काले दिखलाई पड़ते हैं ।
अज्ञान के अंधेरे में वस्तुस्थिति का सही ज्ञान नहीं हो पाता ।

११. **अंधेरै में गासियो किसी कान में जावै ।**
चाहे कितना ही अन्धेरा हो, हाथ का ग्रास मुँह में ही जाता है, कान में नहीं । मनुष्य हर परिस्थिति में अपने स्वार्थ के प्रति सजग रहता है ।

१२. **अंवळचंडी रांड, खावै लूण बतावै खांड ।**
औंधी खोपड़ी की बेढंगी रांड करती कुछ है, कहती कुछ है ।

१३. **अकास में बीजळी चिमकै, गधेड़ो लात वावै ।**
आकाश में बिजली चमकती है और गधा दुलत्ती चलाता है ।
निरर्थक आक्रोश का प्रदर्शन करना ।

१४. **अकास सें पड़ी, खिजूर में अटकी ।**
आकाश से तो गिरी लेकिन खजूर में अटक गई ।
संकटों पर संकट की स्थिति ।

१५. **अकूरड़ी पर किसो आम कोनी ऊगै ?**
क्या घूरे पर कभी आम का पौधा नहीं उगता ?
कभी कभी निकृष्ट व्यक्ति के घर भी श्रेष्ठ औलाद पैदा हो जाती है ।

१६. **अक्कल अर अक्खड़ एक घर कोनी खटावै ।**
बुद्धिमान एवं उद्धत या निर्बुद्धि का निर्वाह एक स्थान में नहीं हो पाता ।

१७. **अक्कल आप में अर धन दूसरां कनै घणो दीखै ।**
आदमी को अक्ल अपने में और धन दूसरों के पास अधिक दिखलाई पड़ता है ।

१८. **अक्कल उधारी कोनी मिलै ।**
अक्ल उधार नहीं मिलती ।

१९. **अक्कल उमर आसरै कोनी होवै ।**
अक्ल सदैव उम्र पर निर्भर नहीं करती । छोटी अवस्था वाले बालक बुद्धिमान एवं बड़ी उम्र वाले वृद्ध भी निर्बुद्धि हो सकते हैं ।

२०. **अक्कल की पांती कोनी होवै ।**
भाई या साझेदार अलग-अलग होते समय चल-अचल सम्पत्ति का बँटवारा तो करवा लेते हैं, लेकिन अक्ल का बँटवारा नहीं करवा सकते । वह जिसके पास होती है, उसी की रहती है ।

२१. **अक्कल कै बळ नै सरीर को बळ कोनी नावड़ै ।**
बुद्धि की ताकत को शरीर की ताकत नहीं पा सकती ।

२२. **अक्कल कोई कै बाप की कोनी ।**
अक्ल किसी की बपौती नहीं ।

२३. **अक्कल को न दाणो, मन में भोत स्याणो ।**
निपट ना-समझ व्यक्ति भी अपने आप को बड़ा बुद्धिमान समझता है ।

२४. **अक्कल को मोल है ।**
अक्ल की कीमत होती है ।
रू० १. अक्कल की पूछ है, आदमी की कोनी ।
२. अक्कल को खाणों है ।

२५. **अक्कल तो आई, पण आई धणी मरयां पीछै ।**
औरत को अक्ल तो आई, लेकिन पति के मरने के वाद ।
विनाश हो चुकने के वाद समझ आने से कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं होता ।

२६. **अक्कल तो आपकी ही आडी आवै ।**
समय पर अक्ल तो अपनी ही काम आती है ।

संदर्भ कथा—एक दिन किसी वात के सिलसिले में मंत्री ने राजा से कह दिया कि अक्ल तो अपनी ही काम देती है। इस वात की परीक्षा लेने के लिए राजा ने मन्त्री को नगर के वाहर के ऊंचे बुर्ज में वन्द कर दिया और कह दिया कि तुम अपनी अक्ल के वल पर ही बुर्ज से निकलना ।

बुर्ज में केवल एक छोटा सा झरोखा था। मंत्री ने उसमें से झांक कर देखा तो उसे बुर्ज के पास से ऊंटों की एक कतार गुजरती हुई दिखलाई पड़ी। उसने कतार के मालिक को पुकार कर पास वुलाया और उससे कहा कि तुम एक लम्वी और मजवूत रस्सी यहां रख दो, उसके सिरे पर एक पतली रस्सी वांध दो तथा पतली रस्सी के साथ कपड़े के एक टुकड़े को वांध कर उस पर कुछ चीनी भिगो कर छिड़क दो। कतार का मालिक मन्त्री को जानता था। इसलिए उसने मन्त्री के कहे अनुसार कर दिया और अपनी कतार को लेकर आगे वढ़ गया ।

थोड़ी ही देर में वहुत सारी चींटियां कपड़े पर लगी चीनी पर जुट गई और कपड़े को खींचती हुई बुर्ज की दीवार पर चढ़ने लगीं। कपड़े के साथ पहले पतली रस्सी और फिर मोटी रस्सी भी ऊपर खिसकने लगी। अन्त में रस्सी बुर्ज के ऊपर पहुँच गई। मन्त्री उस रस्सी को बुर्ज की दीवार से वांध कर उसके सहारे नीचे उतर आया और उसने राजा के सामने यह सिद्ध कर दिखाया कि अक्ल अपनी ही काम आती है ।

२७. **अक्कल दुनियां में ड्योढ ई है, एक आप में अर आधी दुनियां में ।**
समूची दुनिया में अक्ल डेढ ही है,. एक स्वयं अपने में और आधी शेष संसार में ।
हर आदमी अपने आपको ही सवसे अधिक अक्लमँद समझता है ।

२८. **अक्ल न वाड़ी नीपजै, हेत न हाट विकाय ।**
अक्ल वाड़ी में उत्पन्न नहीं होती और प्रेम वाजार में मोल नहीं विकता ।

२९. **अक्कल वडी'क भैंस ?**
अक्ल वड़ी या भैंस ?
भैंस की तरह स्थूल रूप में न दिखाई पड़ने पर भी भैंस की अपेक्षा बुद्धि वड़ी है।
संदर्भ कथा—शिकार खेलता हुआ एक राजा जंगल में भटक गया। जंगल में भेड़ बकरियां चराने वाले दो गडरियों ने राजा को पानी पिलाया, उसकी सेवा की और उसे राजधानी का रास्ता बतला दिया। नगर में पहुंच कर राजा ने उन दोनों को दरबार में बुलवाया और पुरस्कार मांगने के लिए कहा। वड़े ने एक अच्छी सी भैंस मांगी और वह उसे लेकर चला गया। छोटे ने अक्ल मांगी। राजा ने उसे अपने यहां रख लिया, उसे पढ़ाया लिखाया और एक गांव का हाकिम बना दिया। कालान्तर में वड़े की भैंस तो मर गई लेकिन छोटे ने अक्ल के वल पर खूब तरक्की की।
रू० अक्कल वड़ी 'क भैंस (वहस) ?

३०. **अक्कल बिना आंधळो, पीसै बिना पांगळो।**
अक्ल के बिना मनुष्य अन्धा और पैसे बिना पंगु है।

३१. **अक्कल बिनां ऊंट उभाणां डोलै।**
बुद्धि से रहित होने के कारण विशालकाय होने पर भी ऊंट नंगे पांवों ही घूमते हैं।
पद्य—ऊंटां में अक्कल नहीं, बिना अकल का ऊत।
पगां उभाणां क्युं फिरैं, क्यूं न करावैं जूत॥

३२ **अक्कलमंद नै इसारो घणो।**
बुद्धिमान के लिए संकेत ही पर्याप्त है।

३३. **अक्कल सें खुदा पिछाणै।**
बुद्धि से मनुष्य चरम सत्य को भी जान सकता है।

३४ **अक्कल हाट-बजार बिकै तो कुण मूरख रवै।**
यदि अक्ल हाट-बाजार में मोल बिकने लगे तो फिर कौन मूर्ख रहना चाहेगा।

३५. **अगरवाळा सब ठुकराळा, मूंग मोठ में कोण वडाळा।**
अग्रवाल वैश्यों के साढे सतरह गोत्र माने जाते हैं जो सभी अपने को प्रमुख समझते है।

३६. **अगस्त ऊगा मेह न मंडे, जे मडे तो धार न खडे।**
अगस्त्य का तारा उदय होने पर प्रायः वर्षा नहीं होती, लेकिन यदि कभी हो तो फिर खूब जोरों से हो।

३७. **अगस्त ऊग्यो, मेह पूग्यो।**
अगस्त्य नामक तारे का उदय होने पर वर्षा का अन्त हो जाता है।

३८. **अगम बुद्धि वाणियों, पिच्छम बुद्धि जाट।**
तुरत बुद्धि तुरकड़ो, वामरण सम्पट पाट॥

३९. **अग्रे अग्रे ब्राह्मणां, नदी नाळा वरजन्ते।**
लाभप्रद कार्यो में ब्राह्मण सबसे आगे, लेकिन हानि व खतरे के काम में पीछे।

४०. **अजगर पड्यो उजाड़ में,दाता देवण हार।**
अजगर जङ्गल में पड़ा रहता है, कोई उद्यम नहीं करता, फिर भी भगवान् उसका भरण-पोषण करते हैं।
पद्य— १. इजगर पूछै बिजगरा, कहा करत हो मित।
पड्या रहां हां धूळ में, हरी करत है चित॥
२. अजगर करै न चाकरी, पंछी करै न काम।
दास मलूका कथ गये, सब के दाता राम॥

४१. **अजमेरी घालै जिकै नै चैरासाही त्यार है।**
न्योते में अजमेरी रुपया देने वाले के लिए बदले में 'चेहराशाही' रुपया तैयार है।
(अजमेरी रुपये की कीमत चेहराशाही रुपये से लगभग आधी होती थी।)

४२. **अटकळ सें काम होवै जिसो बळ सें कोनी होवै।**
युक्ति से जिस सहजता से काम बन जाता है, वैसा बल से नहीं बन पाता।

४३. **अटकै सो भटकै।**
जो अटक जाता है, वह लक्ष्य से भटक जाता है। गतिशील लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है।
जिसका काम अटक जाता है, वह सहायता की आशा में दूसरों के द्वारों पर चक्कर लगाता है।

४४. **अटक्यो वो'रो उधार दे।**
जिस बोहरे की रकम क़र्ज़दार में अटक जाती है, उसे वसूल करने की ग़रज से वह और भी उधार देता है।

४५. **अट्टा सट्टा करणियों भूख कोनी मरै।**

संदर्भ कथा—एक गांव में एक ठाकुर अपने परिवार सहित रहता था। उसकी माली हालत बहुत ही नाजुक थी। उसके दो युवा पुत्र भी थे। लेकिन दोनों ही कुँआरे थे। एक तो गरीबी के कारण कोई लड़की वाला उनके यहां आता ही नहीं था और कोई भूला-भटका आ भी जाता तो दो चार चुगलखोर काम नहीं बनने देते थे।

एक दिन किसी दूर के गांव के दो ठाकुर अपनी लड़कियों के सम्बन्ध करने हेतु उक्त ठाकुर के घर आये। मेहमानों के लिए घर में कुछ था नहीं, लेकिन उनकी आव-भगत करनी जरूरी थी। इसलिए दोनों लड़कों ने उन्हें

आदर सहित चौपाल में बिठाया और बोले—आजकल गांव में चोरियां बहुत होती हैं, इसलिए आपकी तलवारें हमें दे दीजिए सो इन्हें अन्दर सुरक्षित रूप में रख दें। उन्होंने तलवारें दे दीं।

वे लोग तलवारों को गिरवी रखकर उनके लिए खाने-पीने का सामान मोदी की दुकान से ले आये और उन्हें भोजन कराने के लिए पड़ौसी सेठ के यहां से दो थाल, गिलास व कटोरियां भी मांग कर ले आये। आगन्तुक ठाकुरों ने छक कर भोजन किया। इसी बीच दो चुगलखोर वहाँ पहुंच गये। उन्होंने उन ठाकुरों को अपने गांव वाले ठाकुर के सम्बन्ध में अनेक बातें कहीं और यह भी कहा कि दोनों लड़के तुम्हारी तलवारें गिरवी रख कर भोजन का सामान लाये हैं, विश्वास न हो तो अपनी तलवारें मांग देखिये। आगन्तुक ठाकुरों ने अपनी तलवारें मांगीं तो लड़कों ने सेठ वाले बर्तन साफ करवा के गिरवी रख दिये और तलवारें लाकर ठाकुरों को दे दीं। चुगलखोरों ने पुनः उनसे कहा कि ये लोग सेठ के बर्तन गिरवी रख कर तलवारें लाये हैं। इस पर आगन्तुकों ने उनसे कहा कि जो लड़के इस प्रकार अट्टा-सट्टा (उलट-पुलट) करने में माहिर हैं, उनके घर आकर हमारी लड़कियां भूखों नहीं मर सकतीं। यों कह कर उन्होंने नारियल आदि देकर दोनों के सम्बन्ध पक्के कर दिए।

४६. **अठीनली छायां वठीनै आयां सरै।**
इधर की छाया उधर आती ही है।
उत्थान-पतन अवश्यंभावी हैं।

४७. **अठीनै पड़ै तो कूवो, वठीनै पड़ै तो खाड।**
इधर पड़ें तो कुआं, उधर पड़ें तो खड्ड।
रू० इन्नै पड़ां तो कूवो, विन्नै पड़ां तो खाई।

४८. **अठै इस्यो गुड़ गीलो कोनी, जिको मास्यां ई चाटज्या।**
यहां ऐसी उदारता नहीं कि हर आदमी उसका फायदा उठाले।
यहां ऐसी पोल नहीं कि हर कोई अपना उल्लू सीधा करले।

४९. **अठै ई रेवड़ को रेवाड़ो अर अठै ई ना'रिये की घुरी।**
यहीं भेड़ बकरियों के रहने का स्थान और यहीं भेड़िये की मांद।
भक्ष्य के लिए भक्षक का पड़ोस सुरक्षित और मंगलदायी नहीं हो सकता।

५०. **अठ चाय है, जंको वठै भी चाय है।**
जिसकी यहां दरकार है, उसकी परमात्मा के घर भी दरकार है।

५१. **अठै टर वठै टर, तेरै खातर छोडदयूं घर ?**
यहां भी टर्र, वहां भी टर्र, तो क्या तेरे लिए घर ही छोड़ दूं ?

संदर्भ कथा—एक गडरिया भेड़-बकरियां चराने हेतु जंगल में जाया करता था। दोपहर की रोटी अपने साथ ले जाता और रोटी खाकर पास के तालाब पर पानी पी लिया करता। एक दिन जैसे ही उसने पानी पीना चाहा, एक मेंढक जोरों से टर्र-टर्र बोल उठा। वेचारा गडरिया डर गया कि न जाने क्या बला है। वह प्यासा ही घर की ओर दौड़ पड़ा। घर आकर जैसे ही पानी पीने को हुआ तो यहाँ भी घड़े के पीछे बैठे हुए मेंढ़क ने जोरोंसे टर्र-टर्र की आवाज की। लेकिन इस बार उसने मेंढ़क को देख लिया और समझ गया कि यही टर्र-टर्र कर रहा है, अतः वह बोल पड़ा—

अठै टर वठै टर, तेरै खातर छोड़दयूं घर ?

५२. **अठै अैयां वठै वैयां, ओ गणगोरो धुकै कैयां ?**

संदर्भ कथा—एक निहायत गरीब आदमी था। गनगौर का त्यौहार आया तो उसकी घरवाली ने उससे कहा कि आज तो कुछ गुड़-चावल लाओ, जिससे गनगौर धुके। उस बेचारे के पास पैसे तो थे ही नहीं, साथ ही कोई वस्त्र भी नहीं था, जिसमें बांध कर चीजें लाई जाएँ। उसकी स्त्री के पास भी केवल एक फटा-पुराना लहँगा था, जिसे वह पहने रहती थी। पति ने उससे कहा कि तुम मुझे अपना लहँगा दे दो और मेरे लौटने तक कोठरी बन्द करके बैठी रहो। पत्नी ने लहँगा दे दिया।

वह लहँगा लेकर चला गया। लेकिन उसके पास तो फूटी कौड़ी भी नहीं थी, इसलिए वह सामान चुराने की नीयत से चुपचाप एक दुकान में घुस गया। परन्तु दुकानदार ने उसे देख लिया और उसे दुकान में ही बन्द कर दिया। पत्नी घर में बन्द और पति दुकान में बन्द। इस स्थिति से दुखित होकर उसने कहा—

अठै अैयां वठै वैयां, ओ गणगोरो धुकै कैयां ?

५३. **अड़वी में तो अड़वी ई होवै।**

एक अड़ता है तो दूसरा भी अड़ता है।

रू० आंट में तो आंट ई होवै।

५४. **अड़वो न खावै न खावण दे।**

खेत में खड़ा 'अड़वा' (डरावा) न स्वयं खाता है और न खड़ी हुई फसल को पशु पक्षियों को खाने देता है।

यहां अड़वा से तात्पर्य ऐसे सूम व्यक्ति से है जो न तो स्वयं सम्पत्ति का उपभोग करता है और न दूसरों को करने देता है।

५५. **अड़ियो-दड़ियो बूढळी कै सिर पड़ियो।**

हर काम का भर-भार बुढिया के सिर।

हर बुराई और असफलता के लिए घर का बुजुर्ग ही जिम्मेदार।

५६. अड़ी-वड़ी में आडो आवै जिको ई आप को।
जो समय पर काम आये, वही अपना।

५७ अणकमाऊ वीरो, नित उठ मांगै सीरो।
भाई साहब कमायें-कजायें कुछ नहीं और खाने के लिए नित्य हलवे की मांग करें।

५८. अणजाण अर आंधो बराबर होवै।
अन्धा और अनजान एक समान।

५९. अणजाण तो भाठै के समान होवै।
अनजान व्यक्ति पत्थर के बराबर होता है। अनजान को कोई लिहाज या अपनत्व नहीं होता।
रू० असैंधो मिनख भाठै बरोबर।

६०. अणदोखी नै दोख, वींको गति न मोख।
निरपराध पर दोष मढने वाले की गति-मुक्ति नहीं होती।

६१. अणधीज कै टाबर अर नादीदी कै खसम नै बतळायड़ो ही बुरो।
जिसे जरा भी धैर्य या विश्वास न हो, ऐसी स्त्री के बालक एवं नदीदी स्त्री के पति से बात करना भी बुरा।
रू० अणधीज कै टाबर नै खिलायेड़ो ही बुरो।

६२. अणपढ जाट पढे बरोबर पढयो जाट खुदा बरोबर।

६३. अणपढयोड़ो दायमो, पढयो पढायो गोड़।
बिना पढा हुआ दाहिमा (ब्राह्मण) भी पढ़े हुए गौड़ के बराबर।
रू० भणियो बूझै है'क दायमो ?

६४. अणभणियां घोड़ां चढै, भणियां मांगै भीख।
अनपढ़ तो घोड़ों पर चढ़ते हैं एवं पढ़े लिखे भीख मांगते हैं।
मध्ययुग में शक्ति को वरिष्ठता प्राप्त थी। प्राय: राजा व जागीरदार पढ़े-लिखे नहीं होते थे, लेकिन फिर भी उनके यहां घोड़ों के ठाट रहते थे एवं कवि और पण्डित उनके सामने हाथ पसारते थे।

६५. अण मांगी तो दूध बरोबर, मांगी मिलै सो पाणी।
वा भिच्छा है रगत बरोबर, जीं में ताणा ताणी।।
बिना मांगे जो भिक्षा मिले वह दूध के समान (सात्विक), जो मांगने से मिले वह पानी के समान और जो भिक्षा खींच तान करके प्राप्त की जाए वह रक्त के तुल्य होती है।

६६. अणमांग्या मोती मिलै, मांगी मिलै न भीख।
बिन मांगे तो मोती भी मिल जाते हैं और मांगने पर भीख भी नहीं मिलती।

६७. **अणमिली का सँ जती है ।**
भोग्या के अभाव में सभी यति हैं ।
रू० १. अण मिली का सं विरमचारी है ।
२. नई मिली नारी तो सदां विरमचारी ।

६८. **अणसमझ कै आगै रोवै, आपका दीदा खोवै ।**
ना समझ के आगे अपना दुखड़ा रोना व्यर्थ है ।
रू० आंधै कै आगै रोवै, आपका दीदा खोवै ।

६९. **अणसमझ कै भांवै कीं नईं, समझदार की मौत ।**
ना समझ के लिए तो कीर्ति-अपकीर्ति समान है, लेकिन समझदार की सब तरह से आफत है, उसे भला बुरा सब सोचना पड़ता है ।

७०. **अणहूंत भाठै सें काठी ।**
तंगदस्ती पत्थर से भी कठोर होती है ।

७१. **अणहोणी होणी नहीं, होणी हो सो होय ।**
होनहार होकर रहती है, उसे कोई टाल नहीं सकता एवं अनहोनी कभी होती नहीं ।
पद्य—लाख जतन अर कोड़ बुध, कर देखो किण कोय ।
अण होणी होवै नहीं, होणी हो सो होय ।।

७२. **अणी चूकी, धार मारी ।**
जरा चूके कि नुकसान हुआ ।
उस्तरे की अनी जरा सी चूकते ही उसकी धार लग जाती है ।

७३. **अत तरणावै तीतरो, लवखारी कुरळेह ।**
सारसरे शृंगन भ्रमें, जद अत जोरे मेह ।।
तीतरी जोरों से बोले, लखारी कुरलाये एवं सारस गिरि शिखरों पर ऊंचे उड़ें तो जोरों की वर्षा हो ।

७४. **अत पित वाळो आदमी, सोवै निद्रा घोर ।**
अणपढिया आतम थकी, कहै मेघ अति जोर ।।
पित्त प्रकृति वाला मनुष्य घोर निद्रा में सोये तो वर्षा जोरों से हो ।

७५. **अति राम वैर है ।**
हर चीज की अति बुरी होती है, वह ईश्वर को भी अच्छी नहीं लगती ।
अति सर्वत्र वर्जयेत् ।

७६. **अति लोभ न कीजिए, लोभ पाप की धार ।**
एक नारेळ कै कारणै, पड़्या कुवै में च्यार ।

संदर्भ कथा—एक पंडित बड़ा लोभी था । एक दिन पूजा के लिए वह एक नारियल खरीदने हेतु बाजार में गया तो दुकानदार ने नारियल की

कीमत चार पैसे बतलाई। पंडित ने कहा कि तीन पैसे में देना हो तो दे दो। दुकानदार ने उत्तर दिया कि तीन पैसे में आगे मिल जाएगा। पंडित आगे बढ़ा तो अगले दुकानदार ने एक नारियल की कीमत तीन पैसे बतलाई। इस पर पण्डित बोला कि तीन पैसे तो अधिक हैं, दो पैसे में देना हो तो दे दो। दुकानदार ने उसे और आगे जाने के लिए कहा। आगे वाले दुकानदार ने नारियल की कीमत दो पैसे और उससे भी आगे वाले ने एक पैसा बतलाई। इस पर पण्डित ने उससे कहा कि कही मुफ्त में मिलता हो तो बतलाओ। दुकानदार ने उत्तर दिया कि आगे जाओ, वहां नारियल के वृक्ष खड़े है सो वृक्ष पर चढ़ कर नारियल तोड़ लो, कुछ भी नही लगेगा।

आगे जाकर पंडित एक वृक्ष पर चढ़ा, लेकिन नारियल तोड़ते समय उसका पैर फिसल गया। वह गिरने लगा तो उसने दोनों हाथों से वृक्ष की डाल पकड़ ली। पंडित जहां लटक रहा था, ठीक उसके नीचे एक कुआं था, जिसमें गिरते ही उसका प्राणान्त हो जाता। इसलिए वह वृक्ष की डाल को मजबूती से पकड़े लटकता रहा।

कुछ देर बाद एक महावत अपने हाथी पर चढ़ा हुआ उधर से गुजरा तो पंडित ने प्रार्थना के स्वर में उससे कहा कि तुम मुझे नीचे उतार दो, मैं तुम्हें सौ रुपये दूंगा। महावत अपने हाथी को वहां ले गया, लेकिन जैसे ही उसने पंडित को उतारने के लिए उसके पैर पकड़े, हाथी वहां से सरक कर अलग जा खड़ा हुआ। अब दोनों लटकने लगे। थोड़ी देर बाद एक ऊंट वाला उधर से गुजरा तो दोनों ने उसे सौ-सौ रुपये देने किये, लेकिन महावत की तरह वह भी लटक गया। फिर एक घुड़-सवार आया, लेकिन उसकी भी वही हालत हुई।

अब चारों वृक्ष से लटकने लगे। अधिक बोझ के कारण पंडित के हाथ वृक्ष से छूटने लगे तो घुड़सवार ने उससे कहा कि तुम हाथ न छोड़ देना, मैं तुमको एक हजार रुपये दूंगा। हजार रुपये पाने की बात सुनकर पंडित ने खुशी से दोनों हाथ फैलाकर कहा—ओह! हजार रुपये तो इतने सारे होते हैं। पण्डित ने डाल छोड़ दी थी, अतः चारों कुएँ में गिरे और मर गये।

७७. **अतै सो खपै।**

अति करने वाले का विनाश अवश्यंभावी है।

७८. **अत्तौताई बेटो जायो, नाळै पैली नाक कटायो।**

अति उतावली स्त्री ने बेटा जना और नवजात शिशु को देखने की व्यग्रता में 'नाळै' से पहले नाक कटवा बैठी।

रू० नादीदी कै गीगो जायो, नाळां पैली नाक कटायो।

नाळां = आंवल-नाल, जेर।

७६. **अद भण्यो घरकां नै खावै।**
अधूरी पढ़ाई करने वाला सदा घरवालों को परेशान किए रहता है।

८०. **अधर छैल, काख में छाणो।**
नाजुक छैला और वगल में गोवर का उपला।

८१. **अधरम सें धन होय, वरस पांच कै सात।**
पाप से कमाया पैसा थोड़े समय तक ही फलता है।

८२. **अनजी का वाजा अर अनजी का गाजा।**
सारे गाजे वाजे अन्न के पीछे ही हैं।

८३. **अनाड़ी को गरू अनाड़ी होवै।**
अनाड़ी को अनाड़ी ही रास्ते पर ला सकता है।

संदर्भ कथा—१. एक सेठ का इकलौता वालक अधिक लाड-प्यार में रहने के कारण अत्यन्त दुराग्रही हो गया था। एक दिन वह अपने मकान की छत पर चढ़ गया और अपनी माँ को दिक् करने की गरज से वोला कि मैं छत पर से कूद कर प्राण दूंगा। वेचारी माँ का तो कलेजा ही वैठ गया। वह नीचे खड़ी-खड़ी उसके निहोरे खा रही थी कि वह ऐसा न करे। लेकिन वह नहीं मान रहा था। उसी समय एक जाट अपनी 'चौसींगी' (लम्वे डण्डे वाला एक कृपि उपकरण जिसके एक सिरे पर लकड़ी या लोहे के चार नुकीले सींग लगे होते हैं) लिये जा रहा था। सारी घटना देख-सुनकर उसने लड़के की माँ से कहा कि तुम अलग हट जाओ, मैं अभी इसे मना देता हूं। उसकी माँ अलग हट गई तो जाट ने अपनी चौसींगी के चारों सींग लड़के को दिखलाते हुए कहा कि तुम जल्दी से कूदो, विलम्व न करो। जैसे ही तुम छत पर से कूदोगे, मैं इस चौसींगी के सींगों में तुम्हें ऊपर के ऊपर पिरो लूंगा। चौसींगी के सींगों के तीखेपन को देखकर लड़के के मन में भय समा गया और वह नीचे आकर अपनी मां से चिपट गया एवं कहने लगा कि फिर ऐसा कभी नहीं करूंगा।

२. एक सेठ का लड़का केवल दही खाता था, अन्य किसी वस्तु को जीभ पर भी नहीं रखता था। सव लोगों ने उसे वहुत समझाया वुझाया, लेकिन वह नहीं माना। एक दिन सेठ के यहां कोई मेहमान आया तो सेठ ने उसके सामने भी अपना दुखड़ा रोया। इस पर मेहमान ने लड़के को वुला कर कहा कि दही खाना तुम कदापि नहीं छोड़ना, क्योंकि दही के गुण अनन्त हैं। लड़के के जिज्ञासा प्रकट करने पर मेहमान ने कहा कि यों तो दही के गुणों की कोई गिनती नहीं हो सकती, लेकिन मैं तुम्हें इसके चार ही गुण वतलाता हूँ—(१) निरन्तर दही खाने वाला व्यक्ति कभी जल में डूव कर

नहीं मर सकता, (२) उसके घर में कभी चोर नहीं घुसता, (३) उसको कभी कुत्ता नहीं काट पाता और (४) वह कभी बूढा नहीं होता। लेकिन मेहमान की बातों को लड़का समझ नहीं पाया तो उसने अपने कथन का स्पष्टीकरण करते हुए कहा कि जो आदमी केवल दही ही दही खाता है, वह घोर आलसी बन जाता है, नहाना धोना उसे जरा भी नहीं सुहाता। इसलिए वह नदी या तालाब पर नहीं जाता जिससे डूब कर मरने का भय नहीं रहता। दूसरे, अधिक दही खाने से वह कफ-खासी का मरीज हो जाता है, अत. रात भर खासता ही रहता है, सो नहीं पाता। इसलिए उसके घर में चोर नहीं घुसता। तीसरे, वह असमय ही बूढा हो जाता है जिससे उसे सदा लाठी के सहारे चलना पड़ता है, अतः लाठी को देखकर कुत्ता भी उसके पास नहीं आता और चौथे, श्वास-खासी आदि रोगो के कारण वह जवानी मे ही मर जाता है अतः उसे बुढ़ापा आता ही नहीं। इस प्रकार उल्टे तरीके से समझाने पर बात उसकी समझ मे आ गई और उसने दही खाना छोड़ दिया।

८४. **अनियो नाचै अनियो कूदै, अनियों तोड़ै तान।**
पेट भरा होने पर ही राग-रंग सूझता है।
पद्य—अनियो नाचै, अनियो कूदै, अनियो करै गटरका।
आज अनियो घर मे कोनी, तो कुण करै मटरका॥

८५. **अनोखो नाई, वांस को न्हैरणो।**
निराला नाई, बांस का नहरना।

८६. **अन्न खावै जिसी डकार आवै।**

८७. **अन्न खावै जिसी नीत होवै।**
अन्न के अनुसार ही नीयत होती है।
स० अन्न जिसो मन।

८८ **अन्न छूट्या जांका घर छूट्या।**
खाना-पीना छूट जाने के बाद मनुष्य अधिक समय तक जीवित नहीं रह पाता।

८९. **अन्न जीं को पुन्न।**
जो अन्न का दान करता है, उसका पुण्य बढता है।

९०. **अन्नदेव मोटो है, माथै चढ़ा कर खाणो।**
अन्न की महिमा अपार है। जो मिले, उसे शिरोधार्य करके खाना चाहिए।

९१. **अन्न मुगतां, घी जुगतां।**
अन्न भर पेट, लेकिन घी कमाई के अनुसार ही खाना चाहिए।

९२. **अपणी करणी पार उतरणी।**
अपनी अच्छी करनी ही मनुष्य को ससार सागर से पार लगाती है।

६३. **अपणी ढपड़ी, अपणो राग ।**
अपनी-अपनी डफली, अपना अपना राग ।
रू० आप आप की तुण तुणी, आप आप को राग ।

६४. **अब तो वीरा तन्नै कह्ग्यो जिको मन्नै ईं कह्ग्यो ।**
भाई ! अब तो जो तुझे कह गया वह मुझे भी कह गया ।

सन्दर्भ कथा—एक बुढ़िया अपने सामान की गठरी सिर पर उठाये किसी गाँव जा रही थी । उसके पास से एक घुड़सवार गुजरा तो बुढ़िया ने उससे कहा कि भाई, थोड़ी दूर तक तुम इस गठरी को अपने घोड़े पर रख कर ले चलो तो मुझे जरा आराम मिल जाए । इस पर घुड़सवार ने इनकार करते हुए उत्तर दिया कि बुढ़िया माई का और घुड़सवार का भला क्या साथ ।

यों कह कर वह तेजी से आगे बढ़ गया । लेकिन थोड़ी दूर जाने पर उसके मन में कलुष जगा कि बुढ़िया की गठरी को अपने घोड़े पर रख कर भाग चलूं तो बुढ़िया मुझे कहाँ पा सकेगी । सारा माल अपना ही हो जाएगा । यों सोच कर वह बुढ़िया की तरफ लौट पड़ा । लेकिन इधर बुढ़िया के मन में भी यह बात आई कि यदि मैं घुड़सवार को गठरी दे देती और वह उसे लेकर भाग जाता तो मैं उसका क्या कर लेती । इस लिए जब घुड़सवार ने बुढ़िया के पास पहुंच कर कहा कि बुढ़ियामाई ! ला, थोड़ी दूर तक तेरी गठरी मैं अपने घोड़े पर रख लेता हूं तो बुढ़िया ने सहज भाव से ना करते हुए कहा—"ना वीरा, अब तो जिको तन्नै कह्ग्यो वो मन्नै ई कह्ग्यो ।"

६५. **अब पिसतायां के बणै, जद चिड़ियां चुग गई खेत ।**
चिड़ियों के खेत चुग जाने के बाद पछताने से क्या लाभ ?
समय पर बरती जाने वाली सजगता ही लाभप्रद होती है ।

६६. **अभलै नाई की तो पून ई पून ।**
अभले नाई की तो केवल हवा ही हवा है ।

संदर्भ कथा—अभला नाम का एक गरीब नाई सुलफा गांजा पीने वाले ब्राह्मणों की संगति में रहता था । वे लोग उसे हमेशा तंग किया करते कि तू हमें एक दिन तो मन-इच्छा भोजन करवा दे । निदान उसने हां भर ली और उनसे कह दिया कि कल आप सब मेरे घर पर ही भोजन करें । लेकिन मेरे यहां बर्तन नहीं हैं सो आप सब भोजनके लिए आते समय अपना-अपना लोटा-थाली साथ लेते आवें ।

अभले ने एक हलवाई से मिठाइयों की व्यवस्था कर ली । सभी 'उस्ताद' भोजन करने बैठे तो अभला एक बड़ा सा पंखा लेकर उन्हें हवा

करने लगा। साथ ही वह कहता जाता था, "थारो ई चुन्न थारो ई पुन्न, अभलै नाई की तो पून ई पून।" भोजन के बाद वे अभले की तारीफ करते हुए जाने लगे तो अभले ने उनसे कहा कि आपके थाली लोटे मांज कर मैं आपके घर पहुँचा दूंगा। लेकिन उस्ताद लोगों के जाने के बाद अभले ने उनके सारे बर्तन माज कर हलवाई की दुकान पर पहुँचा दिए और उससे कह दिया कि जो अपना थाली-लोटा मागने आये, उससे अपने पैसे वसूल कर लेना और थाली-लोटा उसे संभला देना।

जब दो दिन तक उस्तादो के घर बर्तन नही पहुँचे तो उन्होंने अभले को टोका। अभले ने कहा कि आप सब के बर्तन अमुक हलवाई के यहा गिरवी रखे हैं सो छुडवा कर ले आइये। इस पर वे नाराज होने लगे तो अभले ने उत्तर दिया कि मैंने तो आप सब से पहले ही कह दिया था "थारो ई चुन्न थारो ई पुन्न, अभलै नाई की तो पून ई पून।" मेरे पास तो केवल हवा ही हवा थी जो आप सबको खूब प्रेम से खिला दी, शेष सब तो आपका ही था। निदान सारे उस्तादो को पैसे देकर अपने थाली लोटे हलवाई के यहाँ से छुडवाने पडे।

९७. **अभागिये चोर नै बिल्ली घूंसै।**
चोर को देखकर कुत्ता तो भौंकता ही है, लेकिन अभागे चोर को देख कर बिल्ली भी गुर्राने लगती है।
रू० कुभागिये चोर ने बिल्ली घूंसै।

९८. **अभागियो टाबर त्यूंहार नै रूसै।**
अभागा बालक त्योहार के दिन रूठता है। उस दिन अन्य लोग तो पकवान्न खाते हैं और रूठा होने के कारण वह अभागा दिन भर भूखो मरता है।
रू० कुलखणो टाबर त्यूहार नै रूसै।

९९. **अभी किसा मियां मरग्या 'क रोजा घटग्या।**

१००. **अभी तो मण में कण ई कोनी पीस्यो गयो।**
अभी तो मण भर में कण भी नहीं पीसा गया है। अभी से उकताने लगे?

१०१. **अमर नांव परमेसर को।**
संसार मे भगवान् का नाम ही अमर है। शेष सब नश्वर है।

१०२. **अमली च्यार अर हुक्का तीन।**
नशेबाज चार और हुक्के तीन। हर नशेबाज एक हुक्का लेना चाहेगा अत: झगडा अवश्यभावी है।

१०३. **अमीर की उगाळी अर गरीब को चारो।**
अमीर द्वारा छोडी गई जूठन से गरीब पेट भर लेना है।

१०४. **अमीर डील नैं छांटो ई भारी।**
अमीर आदमी को जरा सा भार भी बर्दाश्त नहीं होता।

१०५. **अम्मर को तारो हाथ सें कोनी टूटै।**
आकाश के तारे को हाथ से नहीं तोड़ा जा सकता।
असंभव काम संभव नहीं हो सकता।

१०६. **अम्मर टोकसी सो दीखं।**
अहंकार व अज्ञान में डूबे हुए मनुष्य को आकाश नारियल की 'टोपसी' जैसा तुच्छ दिखलाई पड़ता है।

१०७. **अम्मर दूभैं सूत कमावै, आकासी धन आपै आवै।**
सौभाग्यशाली पुरुष के पास विना कुछ किये-कराये ही अपार सम्पत्ति अपने आप चली आती है।

रू० करम कमावै सूत्यो खावै।

१०८. **अम्मर पटको अर धरती भेली कोनी।**
कुदरत ने पैदा तो करदी, लेकिन धरती पर कहीं दो पैरों के लिए ठौर नहीं। सर्वथा आश्रय हीन।

१०९. **अम्मर पीळो, 'मे सीळो।**
वर्षा ऋतु में आसमान का रंग पीलापन लिए दिखाई पड़े तो वर्षा मन्द पड़ जाती है।

११०. **अम्मर रातो, 'मे मातो।**
वर्षा ऋतु में आकाश में लालिमा छाई हो तो वर्षा की प्रबलता होती है।
रू० अम्मर राच्यो, 'मे माच्यो।

१११. **अम्मर हरियो, चुवै टपरियो।**
आकाश का हरापन सामान्य वर्षा का द्योतक है।

११२. **अरजन जिसा ही फरजन।**
जैसा वाप वैसा ही वेटा।
फरजन = फर्जन्द = वेटा।

११३. **अलख पुरुष की माया, कठै धूप कठै छाया।**
सुख दुखः आदि समस्त सांसारिक व्यापार प्रभु की लीला है।
रू० राम तेरी माया, कठै धूप कठै छाया।

११४. **अलख भरोसै ऊकळै, आधण ईसरदास।**
भक्त ईश्वरदास का कथन है कि परमात्मा के विश्वास पर ही 'आधण' उवल रहा है, वही उसमें अन्न पूरेगा।

आधण = चावल, खिचड़ी आदि पकाने के लिए पहले चूल्हे पर पानी को उबाला जाता था, इसे 'आधण' कहते थे। 'आधण' तैयार हो जाने पर इसमें अन्न डाला जाता था।

११५. **अलख राजी तो खलक राजी।**
जिस पर ईश्वर प्रसन्न हों, उससे संसार प्रसन्न रहता है।

११६. **अलूणी सिला कुण चाटै ?**
जिस काम में जरा भी स्वार्थ न सधे उसे कोई क्यों करे ?

११७. **अल्ला खावण नैं दे तो सोणैं बरावर सुख कोनी।**
पेट भरने की समस्या न हो तो मनुष्य सदा सोते रहने का आनन्द भोग सकता है।
रू० अल्ला देवैं खावण नैं तो कुतको जाय कमावण नैं।

११८. **अल्ला तेरी आस, निजर चूल्है पास।**
मुँह से तो भगवान् पर भरोसा रखने की वात और नजर चूल्हे के पास।

११९. **अल्ला दिया तार-तार खुदा लेग्या सोड़ उतार।**
अल्लाह ताला ने थोड़ा-थोड़ा करके दिया और खुदा ताला एक साथ ही सारा ले गया।

सन्दर्भ कथा—एक धुनियाँ जाड़े के दिनों में रजाइयां भरने का काम करता था। उसके पास वहुतेरी रजाइयां रूई भरने के लिए आतीं और वह प्रत्येक रजाई में से थोड़ी-थोड़ी रूई चुरा कर जमा करता जाता। जव पर्याप्त रूई एकत्र हो गई तो उसने उस चुराई हुई रूई से अपने लिए भी एक रजाई भरी और रात को उसे ओढ़ कर खूब आराम से सोया। सवेरे उठ कर वह शौचादि के लिए गया तो पीछे से कोई उचक्का उसकी रजाई को उठा ले गया। जव वह लौटा तो रजाई गायव थी। इस पर उसके मुँह से निकल पड़ा, "अल्ला दिया तार-तार, खुदा लेग्या सोड़ उतार"।

१२०. **अल्ला सें माड़ो राम ई कोनी।**
राम भी अल्लाह से घटकर नहीं है।
चाहे राम कहें चाहे अल्लाह, एक ही वात है।

१२१. **अवेरयां तो घर वधै, छाप्यां वधै वाड़।**
सीधो वोल्यां हेत वधै, आडो वोल्यां राड़॥
मितव्ययिता और सार-सम्हाल से घर वढ़ता है, छापते रहने से वाड़ वढ़ती है, सीधा वोलने से प्यार वढ़ता है और टेढा वोलने से झगड़ा वढ़ता है।

१२२. **असली तो औगण तजै, गुण नैं तजै गुलाम।**
कुलीन तो अवगुणों का परित्याग करता है और गुलाम गुणों का।

१२३. **असली लाजै, छिनाळ गाजै ।**
कुलीन तो लज्जित होकर रह जाती है लेकिन छिनाल गरजती है ।

सन्दर्भ कथा—एक वार राजा ने अपने मन्त्री से पूछा कि कुलीन और छिनाल में क्या अन्तर होता है ? मंत्री ने उत्तर दिया कि कुलीन सहनशील होती है और कुलटा जरासी वात पर ही उछल पड़ती है । वादशाह ने इसका सबूत मांगा तो मंत्री ने कहा शीघ्र ही दूंगा ।

उसी दिन नगर में कोई मेला था । योजनानुसार राजा और मन्त्री वेश वदल कर एक स्थान पर खड़े हो गये । मेले से लौटने वाली हर औरत की ओर इशारा करके मंत्री कहता कि यह छिनाल है । वह वेचारी सुन कर संकोच के मारे चुपचाप चली जाती । अन्त में एक वनी-ठनी शौकीन औरत उधर से गुजरी और मन्त्री ने जैसे ही उसकी ओर उँगली उठा कर कहा कि यह औरत छिनाल है तो वह अपने पैर से जूती निकाल कर मंत्री पर वरस पड़ी और लगी जोर-जोर से गालियां देने—मैं क्यों छिनाल ? तेरी माँ छिनाल, तेरी वहिन छिनाल....आदि ।

लोगों ने वीच-वचाव करके मंत्री का पीछा छुड़वाया और उन सब के जाने के वाद मंत्री ने धीरे से राजा से कहा कि यही असली छिनाल है ।

१२४. **असलेखां वूठां, वैदां घरां वधावणा ।**
अश्लेषा नक्षत्र में वर्षा होने से रोग अधिक फैलते हैं, जिससे वैद्यों को विशेष आमदनी होती है ।

१२५. **असवार तो कोनी थी, पण ठाडां करदी ।**
सवार तो नहीं थी, लेकिन जवरदस्तों ने वलात् सवार वना दी ।

सन्दर्भ कथा—किसी औरत को कुछ डाकू जवरन ऊंट पर भगाये ले जा रहे थे । रास्ते में उस औरत का कोई परिचित मिल गया तो उसने आश्चर्य से पूछा कि अरी ! तू ऐसी ऊंट सवार कव से वन गई ? औरत ने जवाव दिया कि सवार तो नहीं थी, लेकिन जवरदस्तों के कारण मजवूरन सवार वन गई हूँ ।

१२६. **असाढ चूक्यो करसो अर डाळ चूक्यो बांदरो ।**
आषाढ में चूका किसान और वृक्ष की डाल से चूका वन्दर सहज ही नहीं संभल पाता । उचित समय पर किया गया कार्य ही फलदायी होता है ।

१२७. **अस्सी की आमद चौरासी को खरच ।**
आय से अधिक व्यय ।

१२८. **अस्सी वरस पूरा लिया, तो ई मन फेरां में ।**
अस्सी वर्ष की उम्र प्राप्त कर लेने पर भी शादी करने की वांछा ?

१२९. **ग्रहारे व्योहारे लज्जा न कारे ।**
ग्राहार ग्रौर व्यवहार में लज्जा नहीं करनी चाहिए ।

१३०. **ग्रांक वेपारी की ग्रांख ।**
ग्रांक व्यापारी की ग्रांख । व्यापारी का हिसाब-किताब नियमित रूप से लिखा जाता रहे तो उसे ग्रपने लेने-पावने ग्रौर हानि-लाभ का ज्ञान सहज ही होता रहे ।

१३१. **ग्रां'का उडायोड़ा रूंखां ई कोनी वैठै ।**
इनके उड़ाये हुए पंछी वृक्षों पर ही नही वैठने ।
किसी को इस प्रकार के भ्रम जाल में डाल देना कि वह कभी सही रास्ते पर न ग्रा पाये ।

१३२. **ग्रांको ग्रायां ई रोग जावै ।**
हर व्याधि ग्रवधि पूरी होने पर ही जाती है ।

सन्दर्भ कथा—किसी साधु की पीठ में एक फोड़ा (ग्रदीठ) हो गया । उसके शिष्यों ने वहुत उपचार किया, लेकिन वह ठीक नही हुग्रा । एक दिन साधु के ग्राश्रम के पास उगी हुई एक जड़ी (बूटी) ने साधु से कहा कि यदि तुम मुझे घिस कर फोड़े पर लगालो तो फोड़ा ठीक हो जाएगा । साधु ने उससे पूछा कि तुम तो यही थीं, फिर इतने दिनों तक क्यों नही कहा ? जड़ी ने उत्तर दिया कि — मैं तो यही थी, लेकिन तुम्हारे फोड़े की ग्रवधि ग्रभी पूरी हुई है । इस पर साधु ने उपेक्षा पूर्वक कहा कि ग्रव तुझे घिस कर क्यों लगाऊं ? फोड़े की ग्रवधि पूरी हो चुकी है, इसलिए ग्रव इसे तो यों भी जाना ही पड़ेगा ।

१३३. **ग्रांख ग्रर कान को च्यार ग्रांगळ को ग्रांतरो ।**
यद्यपि ग्रांख ग्रौर कान की दूरी चार ग्रंगुल ही होती है तथापि ग्रांखों देखी वात ही प्रामाणिक मानी जाती है ।
रू० ग्रांख्यां देखी साची, कानां सुणी काची ।

१३४. **ग्रांख कान मोती करम, ढोल वोल ग्रर नार ।**
ग्रेता फूटा ना भला, ढाल तोप तलवार ।।
उपरोक्त सारी चीजों का न फूटना ही ग्रच्छा है ।

१३५. **ग्रांख कै ग्रागै नाक, सूझै के राख ?**
जव ग्रांखों के ग्राड़े नाक है तव ईश्वर के दर्शन क्या खाक हों ?

सन्दर्भ कथा—एक नकटे ग्रादमी को इस वात का दुःख था कि दूसरे लोगों की नाक साबित क्यों है । इसलिए उसने ग्रपना पन्थ बढाने की युक्ति निकाली । वह इस वात का प्रचार करने लगा कि उसकी नाक कट जाने के वाद उसे ईश्वर के दर्शन होने लगे हैं तथा जो कोई भी ग्रपनी नाक कटवा

लेगा, उसे तत्काल ही ईश्वर के दर्शन होने लगेंगे। उसकी झाँसा-पट्टी में आकर एक आदमी ने अपनी नाक कटवा ली, लेकिन उसे ईश्वर के दर्शन नहीं हुए तो वह नाराज होने लगा। इस पर पहले वाले नकटे ने उसे समझाया कि यदि तुम ईश्वर के दर्शन न होने की बात कहोगे तो लोग तुम्हें चिढायेंगे, इसलिए अब तो तुम यही कहो कि मुझे भगवान् के दर्शन होने लगे हैं। नये नकटे को यह बात ठीक लगी और वह उछल-उछल कर इस बात को दोहराने लगा कि उसे साक्षात् भगवान् के दर्शन हो रहे हैं। इसी प्रकार वे लोग अपना पंथ बढ़ाते गये।

१३६. **आंख गई संसार गयो, कान गया हूंकार गयो।**
आँखों की दृष्टि के साथ संसार अदृश्य हो जाता है और बधिर होने के साथ अहंकार समाप्त हो जाता है।

१३७. **आंख न दीदा, काढै कसीदा।**

१३८. **आंख फरूकै दहणी, लात घमूका सहणी।**
स्त्री की दाईं आंख का फड़कना संकट कारक माना जाता है।

१३९. **आंख फरूकै बाईं, कै बीर मिलै कै साईं।**
स्त्री की बाईं आंख फड़के तो उसे भाई या पति के मिलने का सुख प्राप्त हो।

१४०. **आंख फूटी, पीड़ मिटी।**
नुकसान हुआ, पर बखेड़ा तो मिटा।

१४१ **आंख मीच अंधेरो करणो।**
जान बूझ कर नजर अन्दाज करना।

१४२. **आंख में काजळ को के बोझ।**
आँख में काजल का क्या भार ?

१४३. **आंख में ताकू देऊं हूं, कायर मत होई।**
तुम्हारी आंख में तकुआ घुसेड़ रहा हूं, कमजोरी न लाना।
तुम्हारा बहुत बड़ा अपकार कर रहा हूँ, कोई ख्याल न करना।

१४४. **आंख में पड़्यो तुस, काणती नै लाध्यो मिस।**
कामचोर व्यक्ति को काम न करने का ज़रा सा बहाना चाहिए।
रू० आंख में पड़ग्यो तुस, बाई नै पाग्यो मिस।

१४५. **आंख है तो ध्यान हैं।**
आँख है तो संसार है।

१४६. **आंख्यां को काजळ पूनां भारी।**

१४७. **आंख्यां देखी परसराम, कदे न झूठी होय।**
प्रत्यक्षीकरण सबसे बड़ा प्रमाण है।

१४८. **आंख्यां देखे को पाप है।**
यों तो न जाने संसार में क्या क्या होता रहता है, लेकिन किसी अपकर्म को आंखों से देख लेने पर मन में घृणा हो आती है।

१४६. **आंख्यां में गीड़ मावै ई कोनी अर नांव मिरगानैणी ?**
आँखों में नेत्र-मल भरा है और नाम मृगनैनी ?

१५०. **आंख्यां सें आंधो, नांव नैणसुखराय ?**
आँखों का अन्धा, नाम नैनसुखराय ?

१५१. **आंगळियां धरम नै क्यूं नटणो ?**
अपनी उँगली के इशारे से ही किसी का उपकार होता हो तो ना क्यों की जाए ?

१५२. **आंगळियां सें नूं न्यारा कोनी होवै।**
उँगलियों से नाखून अलग नहीं होते।
मनमुटाव होने पर भी आत्मीयजन अपने होते हैं।

१५३. **आंगळी पकड़तो-पकड़तो पूंचो पकड़ लियो।**
ज़रा सा आश्रय पाकर पूरा आधिपत्य जमा लिया।

१५४. **आंगी में सें वेस कोनी नीकळै।**
अँगिया में से पोशाक नहीं निकल सकती।
रू० कांचळी में सें वेस कोनी नीकळै।

१५५. **आंट में आयोड़ो 'लो टूटै।**
मरोड़ में आने पर लोहे जैसी सख्त धातु भी टूट जाती है।
दांव में आने पर बलवान् को भी हारना पड़ता है।

१५६. **आंटै आई मरै बिलाई।**
दांव में आने पर बिल्ली मरती है।
चालाक और धूर्त आदमी को भी दांव में फँसने पर मरना पड़ता है।

१५७. **आंत भारी तो माथ भारी।**
पेट में भारी पन हो तो सिर भी भारी रहता है।

१५८. **आं तिलां में तेल कोनी।**
यहां कोई सार नहीं। यहां किसी प्रकार के लाभ की आशा नहीं।

१५६. **आंधां में काणो राजा।**
मूर्खों की टोली में स्वल्प बुद्धि वाला भी विद्वान् माना जाता है।
रू० आंधां में काणो राव।

१६०. **आंधा स्यामी राम-राम, 'क थाज तो तेरै ई नूंतो।**
राम-राम करते ही गले बंध जाना।

१६१. **आंधी आई जठै 'मे बी आसी ।**
आँधी आई है तो मेह भी आएगा ।
दुःख के बाद सुख भी होगा ।

१६२. **आंधी घोड़ी खोखळा चणां, खावै थोड़ा वखेरै घणां ।**

१६३. **आंधी तो आई ही कोनी, सूंसाट पैली ही माचग्यो ।**
कार्य के प्रारम्भ होने से पहले ही शोर-शरावा मच गया ।
भावी संकट के लक्षण पहले ही प्रकट होने लगे ।

१६४. **आंधी पीसै कुत्तो खावै ।**
अंधी पीसे, कुत्ता खाये ।
समुचित व्यवस्था और सार-सम्भाल के अभाव में अपनी मेहनत का लाभ अन्य लोग ही उठा ले जाते हैं ।

१६५. **आंधी मां पूत को मूंडो कद निरखै ।**
अँधी मां को पुत्र के मुख दर्शन का सुयोग कब प्राप्त हो ?

१६६. **आंधी भैंस वरूं में चरै ।**
अँधी भैंस 'वरूं' में चरती रहती है, भले ही आस-पास अच्छी घास खड़ी हो ।
अज्ञानी को अपने हिताहित का ज्ञान नहीं होता ।

१६७. **आंधी में भंमूळिये को के थाग ?**
तूफान में वातचक्र की क्या विसात ?

१६८. **आंधीं रांड 'मे की दावी दवै ।**
आंधियां चलने लगती हैं तो वर्षा होने पर ही दबती हैं ।

१६९. **आंधै आळो वटवड़ सधगी ।**
अक्षम व्यक्ति को अनायास और अप्रत्याशित रूप से लाभ हो गया ।

सन्दर्भ कथा—एक युवक अपनी ससुराल से अपनी वहू को विदा करवा कर ला रहा था । वहू की गोद में एक छोटा वालक था । वे सव लोग एक वैलगाड़ी में वैठे जा रहे थे कि कुछ लुटेरों ने वैलगाड़ी को घेर लिया । उन्होंने युवक को मार डाला एवं वे सारा माल-असवाव लेकर भाग गये । वेचारी असहाय औरत अपने नन्हे वालक को ज़ंगल में लिए वैठी रो रही थी कि एक अन्धा आदमी उधर से गुजरा । उसके पूछने पर औरत ने अपनी व्यथा उसे सुनाई तो अंधा वोला—अव तू कहां जाएगी ? अपने वच्चे को लेकर मेरे घर चल और वहीं रह । स्त्री ने अन्य कोई उपाय न देख कर अन्धे की वात मानली और तीनों वैलगाड़ी में वैठकर उसके घर की ओर चल पड़े । सारी स्थिति को जानकर किसी ने कहा—

उड़क सवगी ग्रांवळा, जे तेरी ग्रावै ग्राडी।
वेटै मुवां भू ग्रावै, वळदां मुवां गाडी ॥

१७०. **ग्रांधै की गपकी, वोळै को वटको।**
राम छुटावै तो छूटै, नहीं सिर ही पटको ॥
ग्रंधे के हाथों ग्रौर बहरे के दांतों की पकड़ सहज ही नहीं छूटती।

१७१. **ग्रांधै की माखी राम उड़ावै।**
ग्रसहाय का मालिक ईश्वर है। वही उसकी रक्षा ग्रौर सहायता करता है।
रू० ग्रांधै को तंदूरो रामदेवजी वजावै।

१७२. **ग्रांधै कुत्तै कै भांवैं खोळन ई खीर।**
ग्रंधा कुत्ता 'खोळन' को ही खीर समझ कर उसे संतोष पूर्वक चाटता रहता है।
'खोळन'—देवमूर्ति को स्नान कराया जाने वाला जल जिसमें प्राय: जरासा दूध भी डाल देते हैं। दूध या खीर के पात्र को धोने पर निकलने वाले पानी को भी खोळन कहते हैं।

१७३. **ग्रांधै ग्रागै ढोल वाजै ढम ढम क्यां की ?**
ग्रंधे के सामने ही ढोल बज रहा है, फिर भी वह ग्रनजान की तरह पूछता है कि यह ढम-ढम की ग्रावाज काहे की हो रही है ?

१७४. **ग्रांधै ग्राळी लूंट हो'री है।**
ग्रंधे वाली लूट मची है।

सन्दर्भ कथा—एक ग्रन्धा ब्राह्मण किसी ब्रह्मभोज में भोजनार्थ गया। जब वह भरपेट खा चुका तो उसने ग्रपनी सारी जेबें लड्डुग्रों से भर ली। इतने पर भी उसे संतोष नहीं हुग्रा तो उसने ग्रपनी धोती के 'पायचों' में भी बहुत सारे लड्डू भर लिये। भोजन कराने वालों ने सोचा कि ग्रन्धा ग्रादमी है, ले जाने दो। इसलिए वे चुप रहे। लेकिन ग्रन्धे ने सोचा कि उसकी करतूत को कोई नहीं जानता। साथ ही उसे यह भी विचार ग्राया कि ग्रन्य लोग भी इसी प्रकार लड्डू ले जा रहे होंगे। यह बात उसे सह्य नहीं हुई ग्रौर ग्रपने को साहूकार एवं ग्रन्य लोगों को चोर साबित करने के लिए वह जोर जोर से चिल्लाने लगा कि लोगों, दौड़ो-दौड़ो, इन सभी ब्राह्मणों ने लूट मचा रखी है ग्रौर ये लोग ग्रपने वस्त्रों में भर भर कर लड्डू लिए जा रहे हैं।

१७५. **ग्रांधै कै भांवैं जिसो दिन, विसी ही रात।**
ग्रन्धे के लिए जैसा दिन, वैसी ही रात। ग्रन्धा दिन के प्रकाश का कोई लाभ नहीं उठा पाता। ग्रज्ञानी के लिए ज्ञान वार्ता का कोई ग्रर्थ नहीं होता।

१७६. **आंधै को हाथ कांधै पै ।**

अंधे को सहारे के लिए किसी का कन्धा चाहिए ।

१७७. **आंधै नै आंधो नई कैणो ।**

अंधे को अंधा कह कर पुकारने से उसे बुरा मालूम होता है । लेकिन यदि सहानुभूति पूर्वक उससे पूछा जाए तो वह सब कुछ बतला देता है कि वह अंधा क्योंकर बना ।

पद्य—(१) आंधै नै आंधो कैयां, भूंडा लागै वैण ।
धीरै धीरै पूछले, तेरा किस विध फूट्या नैण ॥

(२) आंधै नै आंधो नई कैणो, कैणो भाई सैण ।
होळै होळै पूछले, थारा कीकर फूट्या नैण ॥

१७८. **आंधै नै तो दो आंख्यां चायै ।**

अंधे को तो दो आंखें चाहिएँ । यही उसकी सबसे बड़ी आकांक्षा होती है ।

१७९. **आंधै नै तो लाठी चायै ।**

अंधे को तो सहारा चाहिए ।

१८०. **आंधै मामै सैं काणो मामो ई चोखो ।**

अंधे मामा की अपेक्षा काना मामा ही अच्छा जो भानजे का मुंह तो देख सकता है ।

१८१. **आंधै सुसरै सैं क्यांको घूंघटो ?**

अंधे श्वसुर के सामने घूंघट की क्या आवश्यकता ?

रू० आंधै सुसरै सैं क्यांकी लाज ?

१८२. **आंधो आरसी को के करै ?**

अंधा दर्पण का क्या करे ? अन्धे के लिए दर्पण की कोई उपयोगिता नहीं ।

१८३. **आंधो कूकड़ो सूळ्यो धान, जिसा नाई उसा ही जजमान ।**

अन्धा मुर्गा और कीट-भक्षित धान, जैसा नाई वैसा यजमान ।

१८४. **आंधो जाणै, आंधै की बलाय जाणै ।**

जिस पर आफत आये, वही उससे निपटे ।

१८५. **आंधो नूंतै जिको दो जिमावै ।**

जो अंधे को न्योता देगा, उसे एक के स्थान पर दो को भोजन कराना पड़ेगा अर्थात् जो व्यक्ति उसकी लाठी पकड़ कर लाएगा उसे भी जिमाना पड़ेगा । अंधे को न्योता देना जान बूझ कर दोहरा नुकसान उठाना है ।

रू० (१)—क्यूं आंधो नूंतै, क्यूं दो बुलावै ।

(२)—आंधो नूंतै दोय बुलावै, लकड़ी पकड़्यां सागै आवै ।

१८६. **आंधो बजाज तोल कर तो देखै ।**

अंधा बजाज किसी वस्तु की बढ़िया घटिया किस्म को आंखों से भले ही न देख पाये लेकिन उसे तौल कर हल्की भारी का पता तो लगा ही सकता है ।

सामान्य मनुष्य किसी बात की सूक्ष्मता को भले ही न जान पाए, लेकिन मोटे तौर पर तो अनुमान लगा ही सकता है।

१८७. **आंधो वांटै जेवड़ी, लैरां वाछो खाय।**

अंधा आगे-आगे रस्सी बटता जाता है और पीछे-पीछे उसे बछड़ा खाता जाता है।

अकुशल के श्रम को दूसरे चौपट करते रहते हैं और उसे कुछ पता ही नहीं चल पाता।

१८८. **आंधो वांटै सीरणी, फिर-घिर घरकां नै ई दे।**

अंधा सीरनी (प्रसाद) बांटता है और घूम फिर कर अपने घर वालों को ही देता है। दूसरे लोग यह सोचते हैं कि अन्धेपन के कारण उसे अपने-पराये का ज्ञान नहीं रहता, लेकिन वह अपने अन्धेपन का उपयोग भी स्वार्थ-पूर्ति के लिए ही करता है।

रू० आंधो वांटै रेवड़ी, घरकां नै ई दे।

१८९. **आंबो नींबू वाणियों भींच्यां ई रस देय।**

आम, नींबू और बनिया दबाने पर ही रस देते हैं।

रू० (१) आंबो नींबू वाणियों, कंठ भींच्यां जाणियों।
(२) आंबो नींबू वाणियो, गळ भींच्यां रस देय॥

१९०. **आं मंदरां में तो अैई हरजस है।**

ऐसे मन्दिरों में तो ऐसा ही हरिकीर्तन होता है।

१९१. **आंसू वेचतां आसी।**

आंसू तो बेचते समय आएँगे। जब घटिया किस्म की चीज अज्ञानवश ऊंची कीमत में खरीद ली जाए तो उसे घाटा उठाकर बेचते समय दुकानदार को दुःख होता ही है।

सन्दर्भ कथा—एक बार किसी पंसारी ने अपने बेटे को हींग खरीद कर लाने के लिए भेजा और उसे समझा दिया कि हींग इतनी तेज होनी चाहिए कि उसे सूंघते ही आंखों में आंसू आ जाएँ। लड़का हींग विक्रेता के यहां पहुँचा तो उसने उसे कई प्रकार की हींग दिखलाई। वह हींग की डलियों को उठा-उठा कर सूंघने लगा। जब दुकानदार के पूछने पर लड़के ने अपने पिता की कही हुई बात उसे बतलाई तो वह झट समझ गया कि लड़का नासमझ है। इस लिए उसने कहा कि आंसू तो बेचते समय आएँगे, इस वक्त नहीं। यों कह कर उसने उसे बिल्कुल घटिया किस्म की हींग दे दी और आगे जाकर उस हींग विक्रेता का कथन बिल्कुल सही हुआ।

१९२. **आई अर समाई।**

अनचाही घटना घट ही जाए तो फिर सब्र करना ही पड़ता है।

घर में प्राय: पुत्र-जन्म की आकांक्षा की जाती है, लेकिन जब कन्या का जन्म हो जाता है तो फिर समाई तो करनी ही पड़ती है।

१९३. **आई गूगा जांटी, बकरी दूधां नाटी।**
गोगा नवमी (भादों वदि नवमी) के बाद प्राय: बकरियां दूध देना बंद कर देती हैं।

१९४. **आई चांदा छठ, कातरो मरग्यो पटांपट।**
भादों वदि ६ के बाद 'कातरा' (फसल को हानि पहुँचाने वाला एक कीड़ा) प्राय: मर जाता है।

१९५. **आई चूकै, जगत थूकै।**
अवसर चूकने पर स्वयं का नुकसान तो होता ही है, दुनिया भी निन्दा करती है।

१९६. **आई तो आवै जिकी आवै, अण आई भी आज्या।**
आने वाली आफत तो आती ही है, लेकिन कभी-कभास बेमतलब की आफत भी आ जाती है।

१९७. **आई बलाय, दी चलाय।**
बला आई, दूर भगाई।

१९८. **आई भू आयो काम, गई भू गयो काम।**
बहू ससुराल आती है तो काम बढ़ जाता है, चली जाती है तो घट जाता है।
काम की कमी-बेशी करने वाले के अनुसार घटती-बढ़ती रहती है।

१९९. **आई मौज फकीर की, देई झूंपड़ी बाळ।**
फकीर के मन में आई तो उसने अपने आश्रय स्थल झोंपड़े को ही आग लगा दी।

२००. **आई रांड आंचा में, पड़ी जेठ कै मांचा में।**
कामातुर का विवेक और धैर्य नष्ट हो जाता है।

२०१. **आई रुत खेती, क्यूं करै पछेती ?**
खेती करने की ऋतु आ गई है, अब विलम्ब क्यों ?
अवसर प्राप्त होने पर विलम्ब नहीं करना चाहिए।

२०२. **आई ही छा मांगण नै, घर की धिराणी बण बैठी।**
आई तो थी छाछ मांगने के लिए और घर की मालकिन बन बैठी।

२०३. **आई ही बिल्ली, पूंछ ही गोली।**

सन्दर्भ कथा—गुरु और शिष्य दोनों मठ की कोठरी में सोये हुए थे। चेला नितान्त आलसी किन्तु हाजिर-जवाब था। गुरु ने चेले से कहा कि जरा उठ कर देखो कि बाहर वर्षा हो रही है या नहीं। लेकिन चेले ने लेटे-

लेटे ही उत्तर दे दिया—'ग्राई ही विल्ली, पूंछ ही गीली' ग्रर्थात् ग्रभी एक विल्ली यहां ग्राई थी जिसकी पूंछ भीगी हुई थी, इससे स्पष्ट है कि वाहर वर्षा हो रही है। तव गुरु ने चेले को ग्रादेश दिया कि दीपक वढ़ा दो (वुझा दो), परन्तु चेले ने फिर लेटे-लेटे ही उत्तर दिया कि गुरुजी, ग्रांखें वन्द कर लीजिए ग्रौर समझ लीजिए कि दीपक वुझ गया। ग्रन्त में गुरु ने उससे कहा कि ग्रच्छा किवाड़ तो वन्द कर लो। इस पर चेले ने तपाक से उत्तर दिया कि गुरुजी, दो काम तो मैंने कर दिए, ग्रव यह तीसरा काम ग्राप ही कर दीजिए।

यही कथा सास ग्रौर ग्रालसी वहू के नाम से भी कही जाती है।

२०४. **ग्राई ही मिलवा वैठाए दी दळवा।**
ग्राई तो थी मिलने, विठा दी दलने।
मिलने के लिए ग्राये हुए व्यक्ति को वेगार में फंसा लेना।

२०५. **ग्राऊं न जाऊं, घरां वैठी मंगळ गाऊं।**
कहीं ग्राना न जाना, घर वैठे मंगल गाना।
किसी कार्य को सक्रिय रूप से करने की ग्रपेक्षा केवल घर वैठे कार्य-साधन के मनसूवे वांधते रहना।

२०६. **ग्राक में तो ग्रकडोडिया ई लागै, ग्राम कद लागै ?**
वृक्ष के ग्रनुरूप ही फल लगते हैं।

२०७. **ग्राक को कीड़ो ग्राक में राजी, ढाक को ढाक में राजी।**
ग्राक का कीड़ा ग्राक में ग्रौर ढाक का कीड़ा ढाक में सन्तुष्ट रहता है।
दाख छुहारा छाड़ि ग्रमृत फल, विप कीड़ा विप खात।

२०८. **ग्राकड़ै हाथी कद वंधै ?**
ग्राक के तने से हाथी नहीं वंध सकता।
कमजोर के सहारे शक्तिशाली का निर्वाह नहीं हो सकता।

२०९. **ग्राक न ग्रैळो काटिये, नीम न घालिये घाव।**
रोहीड़ै का काटणियां, तेरो दरगा होसी न्याव।
ग्रकारण तो ग्राक एवं नीम को भी नहीं काटना चाहिए। लेकिन जो रोहीड़े के वृक्ष को काटता है, उसका न्याय तो भगवान् के दरवार में ही होगा।
मरुभूमि के लिए वृक्षों का वड़ा महत्त्व है, ग्रतः उन्हें नहीं काटना चाहिए।

२१०. **आक में ईख ग्रर ईख में ग्राक।**
यदा-कदा नीच कुल में श्रेष्ठ ग्रौर उच्च कुल में निकृष्ट संतान पैदा हो जाती है।

२११. **ग्राक में ईख, फोग में जीरो।**

२१२. **ग्राकरै देव नै सै निमैं।**
उग्र देवता को सब कोई नमते हैं।
खोटो ग्रह जप-दान।

२१३. **ग्राक सींचै पण पीपळ कोनी सींचै।**
ग्रपात्र की सेवा, पात्र की उपेक्षा।

२१४. **ग्राकास कानी थूकै जद ग्रापकै ई मूंडै पर पड़ै।**
ऊपर की ग्रोर मुंह करके थूकने वाले का थूक स्वयं के मुंह पर ही पड़ता है। बढ़-बढ़ कर बोलना या ग्रकारण ही श्रेष्ठ व्यक्ति की निंदा करना स्वयं के लिए ही हानिकर है।
रू० सूरज कानी थूकै तो ग्रापकै ई मूंडै पर पड़ै।

२१५. **ग्राखड़्या जिसा पड़्या कोनी।**
जैसे चूके, वैसा नुकसान नहीं हुग्रा। चूके तो सही, लेकिन संभल गये।

२१६. **ग्राखर पाणी निवांण सिर ग्रायां सरै।**
पानी को चाहे कितना ही ऊंचा चढ़ा दें, लेकिन उसकी गति नीच है, ग्रतः ग्राखिरकार वह नीचे की ग्रोर ही ग्राता है।

२१७. **ग्राकास बिना खंभां कै खड़्यो है।**
ग्राकाश को सहारे के लिए खंभों की ग्रपेक्षा नहीं।
वह सत्य के सहारे टिका है।

संदर्भ कथा—एक बार पार्वतीजी ने शिवजी से पूछा कि यह ग्राकाश किस के ग्राधार पर टिका हुग्रा है? शिवजी ने उत्तर दिया कि ग्राकाश सत्य ग्रौर धर्म के खंभों पर टिका हुग्रा है। पार्वती ने इन खम्भों को दिखलाने का हठ किया तो शिवजी उनको साथ लेकर निकल पड़े।

साधु ग्रौर साध्वी का वेश बनाये दोनों एक वृद्ध किसान के खेत में पहुँचे। दोपहर हो चुकी थी, जेठ का महीना था। ऊपर से ग्राकाश तप रहा था, नीचे धरती सुलग रही थी, लेकिन बूढ़ा किसान हल चलाये जा रहा था। शिवजी ने किसान से पूछा कि यदि तुम कहो तो थोड़ी देर तुम्हारी 'टापी'(खेत में स्थित टपरी) में विश्राम करलें। किसान ने स्वीकृति देते हुए कहा—हां, तुम दोनों 'टापी' में विश्राम करो, मैं भी वहीं ग्रा रहा हूँ।

दोनों टपरी में चले गये। कुछ देर बाद बूढा किसान भी वहां पहुँच गया। इतने में किसान की ग्रौरत 'छाक' (खेत में काम करने वाले के लिए दोपहर का भोजन) लेकर वहां ग्राई। वह भी लगभग किसान जितनी ही बूढी थी। उसको देखकर साध्वी (पार्वती) ने किसान से पूछा कि चौधरी, तू इतना बूढा हो गया लेकिन ऐसी कठिन दोपहरी में स्वयं हल चलाता है ग्रौर बूढी चौधराइन को 'छाक' लानी पड़ती है, तो क्या तुम्हारे कोई लड़का नहीं

है ? चौधरी ने उत्तर दिया कि लड़का कहां से होता ? हमने तो विवाह के बाद कभी पति पत्नी का सम्बन्ध ही स्थापित नहीं किया। पार्वती द्वारा इसका कारण पूछे जाने पर वृद्ध ने कहा—विवाह के समय हम दोनों की अवस्था बहुत छोटी थी। विवाह हो चुकने के बाद हम दोनों एक बैलगाड़ी बैठकर हमारे घर आ रहे थे। चूंकि 'फेरे' आधी रात के बाद हुए थे अतः इसे (चौधराइन को) नींद आ रही थी और मैं भी ऊंघ रहा था। उसी हालत में मेरा एक हाथ इसकी जंघा पर जा गिरा। यह चौंक कर उठी और बोली कि फिर कभी ऐसा किया तो तुम्हें राम-दुहाई (राम की आन) है। सो हम दोनों उसी राम-दुहाई का निर्वाह आज तक करते आ रहे हैं।

पार्वती ने दोनों से बड़ा आग्रह किया कि बहुत हो चुका, अब अपनी आन को तोड़ दो। लेकिन दोनों का एक ही उत्तर था कि इस राम-दुहाई को युवावस्था में ही नहीं तोड़ा, तो अब क्या तोड़ेंगे। पार्वती निरुत्तर हो गई। उसे यह विश्वास हो गया कि वस्तुतः इस प्रकार टेक निभाने वालों के बल पर ही आकाश टिका हुआ है।

२१८. **आखर रामजी कै घर न्याव है।**
आखिर तो ईश्वर के घर न्याय होता ही है।

२१९. **आखा थोड़ा अर देव घणां।**
'आखा' कम और देवता अधिक। किस किस को प्रसन्न किया जाए ?
आखा = अक्षत, अन्न के दाने।

२२०. **आखी रात पीस्यो, ढकणी में सांवरयो।**
रात भर पीसने पर भी ढकनी (ढक्कन) भर आटा तैयार हो पाया।
भरपूर श्रम और समय लगाने पर भी नगण्य फल की प्राप्ति।

२२१. **आखै रावळै में अेक घाघरो, पैली उठै जिकी पैरै।**
पूरे रनिवास में एक घाघरा, जो पहले जगे वह पहने।
अभाव की चरम सीमा।

२२२. **आग नै बजराग नावड़ै।**

२२३. **आगम चौमासै लूंकड़ी, जे नहीं खोदै गेह।**
तो निस्चै करकै जाणजो, नहीं बरसै लो मेह॥
वर्षा काल से पूर्व यदि लोमड़ी अपनी 'घुरी' न खोदे तो जानो कि इस बार वर्षा नहीं होगी।

२२४. **आगम सूझै सांडणी, दौड़ै थळां अपार।**
पग पटकै बैसै नहीं, जद मेह आवणहार॥
सांडनी इधर-उधर दौड़े, पैर पटके, लेकिन बैठे नहीं तो जानो कि वर्षा आयेगी।

२२५. **आग लगन्तै झूंपड़ै, जो निकसै सो लाभ ।**
आग लगने पर झोंपड़े में से जो निकाल लें, वही अपना है ।

२२६. **आगली दाळ नै ई पाणी कोनी ।**
जो समस्या सामने है, वही निपटने में नहीं आ रही है ।
रू० आगली ई वाड़ै को वड़ै नी ।

२२७. **आगलै पग को ठांयचो देख कर लारलो पग उठाणो ।**
जो पैर पहले उठ चुका है, उसे टिकाने का स्थान मिल जाए, तभी पीछे वाला पैर उठाना चाहिए ।
एक काम जम जाए तो दूसरा शुरू करना चाहिए ।

२२८. **आगै आग न लैरयां पाणी ।**
मरने के वाद न कोई अग्नि संस्कार करने वाला, न पानी (जलाञ्जलि) देने वाला ।
सर्वथा गईवाल ।
रू० आगै आग न लारै भीटको ।

२२९. **आगै ही गधेड़ा आवै तो लारै घोड़ां की किसी आस ?**
शोभा यात्रा में सवसे आगे गधे निकलें तो पीछे घोड़े क्या आयेंगे ?

२३०. **आगै तो बाईजी फूठरा था ही, फेर नींदां में उठ खड़्या रैया ।**
वाई पहले से ही वदसूरत थी, फिर नीद में उठ जाने के वाद तो कहना ही क्या ?
वदसूरती और फूहड़पन का संयोग हो गया ।
रू० (१) आगै तो वावोजी फूठरा था ही, फेर लगायली राख ।
(२) आगै तो वावोजी फूठरा था ही, फेर घड़ायली टाट ।

२३१. **आगै सें पीछा ई भला है ।**
आगे आने वालों से पीछे वाले ही अच्छे है ।

सन्दर्भ कथा—एक किसान औरत के पति का लघुताव्यंजक नाम 'लैटूरा' था । उसकी पड़ोसिनें उससे कहा करती कि भला यह भी कोई नाम है । तुम अपने पति से कहो कि वह 'लैटूरा' के स्थान पर अपना कोई अच्छा सा नाम रख ले ।

एक दिन किसान की औरत नाम की वास्तविकता का पता लगाने के लिए घर से निकल पड़ी । थोड़ी ही दूर गई थी कि उसने कुछ आदमियों को एक मुर्दे की अर्थी को ले जाते देखा । पूछने पर पता चला कि अमरचन्द नामक व्यक्ति मर गया है । किसान की औरत यह सोचते हुए आगे वढ़ी कि जिसका नाम अमरचन्द है, वह मर कैसे गया । कुछ दूर जाने पर उसने देखा कि शूरसिंह नामक व्यक्ति डर के मारे भागा जा रहा है और दो आदमी

उसका पीछा कर रहे हैं। यहां भी उसे नाम की सार्थकता दिखलाई नहीं पड़ी। पुन: आगे बढ़ने पर उसे पड़ौसी गाँव का चौधरी मिला जो अपनी 'चौंधर' छिन जाने से दुखी हो रहा था। कुछ और आगे बढ़ने पर उसने लाछां (लक्ष्मी) नाम की स्त्री को कूड़ा बुहारते देखा। उसे नामों की अवास्तविकता का पता चल गया और वह वहीं से लौट पड़ी। घर आकर उसने अपनी पड़ौसिनों को सारी घटना सुनाते हुए कहा कि आगे वालों से पीछे वाले ही अच्छे हैं और मेरे पति का 'लँटूरा नाम ही ठीक है, क्योंकि—

अमरो तो मैं मरतो देख्यो, भाजत देख्यो सूरो।
चौंधर तो मैं खुसती देखी, लाछ बुहारै कूड़ो,
आगै सें पीछो भलो, नाँव भलो लँटूरो।

रू० अमर मरंता देखिया, धनजी मांगै भीख।
लछमी छाणा बीणती, टंटणपाळ ही ठीक॥

२३२. **आ छाछ तो राळवा जोगी।**
यह छाछ तो धूल में गिराने लायक ही थी।

संदर्भ कथा—एक आदमी पैदल ही किसी गाँव जा रहा था। रास्ते में ताल की धरती भी आई, जहां एक गधे का पेशाब पड़ा था। राहगीर ने सोचा कि किसी मूर्ख ने छाछ जैसा दुर्लभ पदार्थ यहाँ डाल दिया है। उसे कई दिनों से छाछ के दर्शन नहीं हुये थे। अत: उसने वहां बैठकर छाछ को उँगली से मस्तक पर लगाते हुए कहा कि हे छाछ माता, तुझे कौन बेवकूफ यहाँ डाल गया? लेकिन जब उसने थोड़ी सी 'छाछ' उठा कर जीभ पर रखी तो उसे असलियत का पता लगा और वह तिरस्कार पूर्वक बोल उठा, "आ छाछ तो राळवा जोगी ही थी।"

२३३. **आछा जाया नानगी, तरै तरै की बानगी।**
नानगी ने अच्छे पूत जने, एक से एक न्यारा (गया गुजरा)।
रू० आछा जाया ये मामी, कोई साध कोई स्यामी।

२३४. **आछी म्हारी टाटी, खावां दाळ बाटी।**
अपनी झोंपड़ी ही अच्छी जिसमें बैठ कर दाल-रोटी खा लेते हैं, गुजर-बसर कर लेते हैं।

२३५. **आज ई मोडियो मूंड मुंडायो अर आज ई ओळा पड़्या।**
आज ही बाबाजी ने सिर मुंडवाया और आज ही ओले पड़े।
रू० आज ई टाट मुंडाई अर आज ई ओळा।

२३६. **आज काल परस्युं, भाणजै नै झुगला टोपी करस्युं।**
किसी काम के मंसूबे बांधते रहना और उसे आगे के लिए टालते रहना।

२३७. **आज की घड़ी अर काल को दिन ।**
झांसा पट्टी देकर निकल जाने और फिर कभी मुंह न दिखलाने पर इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

२३८. **आज की थाप्योड़ी आज कोनी वळै ।**
आज का थापा हुआ उपला (कंडा) आज नहीं जलता ।

२३९. **आज तो मारूजी का नैण राता ?**
आज तो 'मारूजी' (पति) के नैनों में मस्ती की लालिमा ?

२४०. **आज थारलै कूवै में मैं पड़ग्यो हूँ ।**
आज तुम्हारे वाले कुएँ में मैं गिर गया हूँ ।

संदर्भ कथा—एक किसान की औरत बड़ी चालाक थी । किसान खेत से आता तो वह उसे रूखी सूखी रोटी और रावड़ी खाने के लिए दे देती । जब वह अपनी औरत से भी खाने के लिए कहता तो वह अहसान जताते हुए उत्तर देती—तुम रोटी खालो, भले ही मै रांड कुएँ मे गिरूं, तुम्हारी बला से ।

किसान सोचता कि यह रोज ही ऐसा कहती है, फिर भी मुस्टंडी बनती जा रही है, अवश्य ही इसमें कोई रहस्य है । वस्तुत: वह औरत अपने लिए घी शक्कर से तर चूरमे के लड्डू बना कर छुपा देती थी और किसान की अनुपस्थिति में खा लेती थी । एक दिन किसान जान-बूझ कर खेत से जल्दी आ गया । उसकी स्त्री पड़ौसिन के यहां गई हुई थी, अत: किसान को अच्छा मौका मिल गया और लड्डुओं को ढूंढ कर चट कर गया । कुछ देर बाद घर लौटने पर उसने सदा की तरह अपने पति को रावड़ी और रोटी परोस दी । किसान ने उससे कहा कि आजा, तू भी रोटी खाले । औरत ने कुएँ में गिरने वाला वही रटा-रटाया उत्तर दिया तो किसान ने मुस्कराते हुए कहा कि आज तुम्हारे वाले कुएँ में मैं गिर पड़ा हूं, रोटी खाले, वरना भूखों मरेगी । इस प्रकार भेद खुल जाने से औरत लज्जित हो गई ।

२४१. **आज मरै जिकै नै काल कद आवै ?**
जो आज मर रहा है, उसे कल कब आये ?

२४२. **आज मरां काल मरां, मरचा मरचा फिरां ।**
घाल कचोळै दळमळां, जद बनड़ा होयां फिरां ।।
पोस्त और अफीम के अभाव में पोस्ती एवं अफीमची निर्जीव से रहते है । लेकिन जब ये चीजें उन्हें मिल जाती है तो मानो दूल्हे बन जाते है ।

२४३. **आज मर्‌यो काल दूसरो दिन ।**
जो मरा सो गया ।

२४४. **आज मेरी मंगणी, कल मेरा व्याव ।**
टूट गई टंगड़ी, रह गया व्याव ।।
आज मेरी मगनी है, कल व्याह होगा, लेकिन इसी वीच टाग टूट गई और व्याह वीच मे ही रह गया ।
जव किसी कार्य के सम्पन्न होने की आशा मे वडा उत्साह प्रदर्शित किया जाए और वीच मे ही काम विगड जाए, ऐसी स्थिति मे इस कहावत का प्रयोग किया जाता हे ।

२४५. **आज राज सो राज ।**
आज जिसका राज है उसी का हुक्म चलेगा ।

२४६. **आज हमां तो काल तमां ।**
जो आज हम पर वीत रही है, वह कल तुम पर भी वीत सकती है ।

२४७. **आटै में लूण खटावै, पण लूण में आटो कद खटावै ।**
रोटी वनाते समय आटे मे थोडा सा नमक मिलाया जाता है, लेकिन उसी अनुपात मे नमक और आटा नही चल सकता ।

२४८ **आटो कांटो घी घड़ो, खुल्लै केसां नार ।**
वायों भलो न जीवणो, त्याळी जरख सुनार ।।
यात्रा करते समय शकुन विषयक मान्यता ।

२४९. **आठ पूरबिया, नौ चूल्हा ।**
अलगाव की गहरी प्रवृत्ति ।

२५० **आठ हाथ की काकड़ी, नौ हाथ को वीज ।**
आठ हाथ लम्वी ककटी मे नौ हाथ लम्वा वीज ।
सर्वथा झूठी और अनहोनी वात ।

२५१. आड की होड, काग क्यूं डूवै ?
आड की देखा देखी पानी पर तैरने की होड मे काग क्यो अपने प्राण गँवाये ? आड = एक जल-पक्षी जो वखूवी पानी पर तैरता रहता है । पानी पर तैरने के कारण इसे 'जळ कागली' भी कहते है । लेकिन काग पक्षी होते हुए भी पानी पर नही तैर सकता ।

रू० (१) आड तिरै तो तिरण दे, तूं क्यूं तिरै रे काग ।
नीची होसी नाडकी, थारा ऊचा होसी पग्ग ।।
(२) आड तरन्ति देखकर, तूं क्यू तरियो काग ।
होड पराई जे करै, तळ मुंडो ऊपर पग्ग ।।

२५२. **आड कै वचियां नै कुण तिरणो सिखावै ।**
आड पक्षी के वच्चो को पानी पर तैरना सिखलाने की अपेक्षा नही होती । पानी पर तैरना उनका कुदरती गुण है ।

२५३. **आड़ू के घी में कांकरा।**
अनाड़ी के घी में भी कंकड़! अनाड़ी के हर काम में अनाड़ीपन भरा होता है।

२५४. **आड़ू खा मरै 'क उठा मरै।**
अनाड़ी और गंवार व्यक्ति या तो अधिक खा कर या बूते से अधिक भार उठाकर मरता है।

२५५. **आड़ू नै टक्को देदेणो, अक्कल नईं देणी।**
उज्जड और गँवार व्यक्ति को टका दे देना, सीख नहीं देनी।

२५६. **आडै दिन खाती लापसी, जापै में खावै घाट।**
सामान्य दिनों में तो घी युक्त तर माल खाती थी और प्रसवकाल में जब पौष्टिक आहार की अपेक्षा होती है तब घाट जैसा अति साधारण खाना खाती है।
सर्वथा उल्टा काम करना।

२५७. **आडै दिन रंगी-चंगी, बार त्यूंहार फिरै नंगी।**
यों तो सदा सजी-धजी रहती है और त्यौहार के दिन फटे-पुराने कपड़े पहनती है।

२५८. **आडै दिन सें वासीड़ो ही चोखो जिको मीठा चावळ तो मिलै।**
सामान्य दिन की अपेक्षा 'वासीड़ा' ही अच्छा जो खाने के लिए मीठे चावल तो मिलें।
वासीड़ा = होली के लगभग एक सप्ताह बाद मनाया जाने वाला शीतला-देवी का त्यौहार (शीतला-सप्तमी या शीतला अष्टमी)। इस दिन बासी खाना खाया जाता है। पहले दिन गुड़ के भात, 'राबड़ी' आदि बना कर रख लेते हैं और अगले दिन शीतला पूजन के बाद खाते हैं।

२५९. **आडो आज्या जिकै नै काट कर काढै।**
गर्भस्थ शिशु को प्रसव के समय आड़े रूप (विपरीत स्थिति) में आने पर काट कर पेट से बाहर निकाला जाता था। बच्चे को सही सलामत निकाल पाना दुष्कर होता था। लेकिन जच्चा की प्राण रक्षा तो हो जाए, इसी उद्देश्य से ऐसा किया जाता था।
दो तरफा नुकसान से बचने के लिए एक नुकसान को सहन कर लेना।

२६०. **आतमा सो परमातमा।**
आत्मा, परमात्मा एक हैं।

२६१. **आथणवाई को 'मे अर पावणो रीतो कोनी जावै।**
संध्या समय का मेह बरसे बिना और सांध्य वेला में घर आया अतिथि भोजन किये बिना नहीं जाता।

२६२. **आदमी कोनी कमावै, आदमी को दिन कमावै।**
आदमी नहीं, आदमी का 'दिन' (भाग्य) कमाता है। आदमी का दिन खड़ा हो तो कमाई अपने आप होती है।

सन्दर्भ कथा—एक छोटा भाई अपने बड़े भाई के साथ रहता था। लेकिन उसकी भौजाई बड़ी कर्कशा थी। एक दिन उसका देवर खेत में एक बरतन भूल आया तो भौजाई ने उसे शाम को घर आते ही बरतन लाने के लिए वापिस खेत भेजा। खेत में पहुँचते पहुँचते घना अंधेरा हो गया था, इसलिए उसने खेत में ही रात बिताने की सोची, लेकिन उसे नींद नहीं आई।

कुछ अधिक रात बीतने पर उसने देखा कि एक विचित्र पुरुष के साथ उसके बहुत से सेवक आस-पास के खेतों से धान के पौधे ला-लाकर उसके भाई के खेत में रोप रहे हैं। लड़के ने साहस बटोर कर मुखिया से उसका परिचय पूछा तो वह बोला कि मैं तुम्हारे भाई का 'दिन' हूँ और ये सब मेरे सेवक हैं। मैं स्वयं उसको कमा कर देता हूँ। जब तक मैं खड़ा हूं, तुम्हारे भाई को हर काम में लाभ ही लाभ प्राप्त होगा। इस पर लड़के ने अपने 'दिन' के विषय में पूछा तो वह बोला कि तुम्हारा 'दिन' अमुक स्थान पर सोया पड़ा है, तुम जाकर उसे जगा सको तो निहाल हो जाओगे। लड़का बहुत कष्ट उठाकर अपने 'दिन' तक पहुँचा। उसने उसे जगाया और 'दिन' के खड़ा होने पर मालामाल हो गया।

२६३. **आदमी को भाग पत्तै ओलै।**
मनुष्य का भाग्य पत्ते की ओट में।
न जाने कब हवा से पत्ता अलग हो जाए और मनुष्य का भाग्य खुल जाए। मनुष्य का भाग्य कब चमक उठे, कोई ठिकाना नहीं।

२६४. **आदमी बस्यां, सोनो कस्यां।**
आदमी की पहचान पड़ोस में बसने से और सोने की कसौटी पर कसने से होती है।

२६५. **आदरा बाजै बाय, झूंपड़ी झोला खाय।**
आर्द्रा नक्षत्र में हवा चले तो झोंपड़ी झूलने लगे अर्थात् अकाल पड़े, जिससे घर छोड़ कर अन्यत्र जाना पड़े।

२६६. **आदरा भरै खादरा, पुनरबसु च्यारूं दिसू।**
आर्द्रा नक्षत्र में सामान्य वर्षा होती है किन्तु पुनर्वसु में चारों दिशाओं में वर्षा हो जाती है।

२६७. **आदरा भरै खादरा, पुनरबसु भरै तळाव।**
न बरस्यो पुसै, तो बरसै हो घणा दुसै।।

आर्द्रा नक्षत्र में साधारण वर्षा होती है, पुनर्वसु में वर्षा की बहुलता होती है। लेकिन यदि पुष्य नक्षत्र में वर्षा न हो तो फिर बड़ी मुश्किल से ही वर्षा होगी।

२६८. **आधो देई-देवता, आधो खेतरपाळ।**
आधा भाग तो सब देवी-देवताओं का और आधा अकेले क्षेत्रपाल का।

२६९. **आधो गिणी न पाछलो, सोपो गिण्यो न सांझ।**
जण जण को मन राखती, वेस्या रैं'गी बांझ॥
वेश्या के घर वक्त-बेवक्त जो भी (पुरुष) आया, वेश्या ने सब का मन रखा, फिर भी वह बांझ ही रह गई।
रू० बूढो गिण्यो न बाळको, तड़को गिण्यो न सांझ।
जण-जण को मन राखतां, वेस्यां रैं'गी बांझ।

२७०. **आधी छोड़ पूरी न धावै, वींकी आधी मुंह सैं जावै।**
जो हाथ में आई हुई आधी को छोड़ कर लालच के कारण पूरी के लिए दौड़ता है, उसकी वह आधी भी चली जाती है।

सन्दर्भ कथा—एक कुत्ते को आधी रोटी मिल गई तो वह उसे मुंह में दबा कर चल पड़ा कि कहीं एकान्त में बैठकर आराम से खाऊंगा। रास्ते में पानी का एक नाला आया। कुत्ते को पानी में अपनी परछाई दिखलाई पड़ी। उसने सोचा कि कोई दूसरा कुत्ता आधी रोटी लिए जा रहा है, यदि मैं उसकी आधी रोटी छीन लूं तो मेरे पास पूरी रोटी हो जाएगी। यों सोच कर जैसे ही उसने भौंकने के लिए अपना मुंह खोला, वैसे ही उसके मुंह वाला टुकड़ा भी पानी में गिर कर डूब गया।
रू० (१) आधी छोड़ पूरी नै धावै, वींको आडी अेक न आवै।
(२) आधी छोड़ पूरी नै धावै, आधी रहै न पूरी पावै॥

२७१. **आधै आंगण सासरो, आधै आंगण पी'र।**
मुसलमानों में बहुधा निकट परिवार वालों (ताऊ-चाचा) में शादी हो जाती है जिससे घर का आधा आंगन लड़की के लिए पीहर और आधा ससुराल बन जाता है।
इस आशय की अन्य कहावतें भी प्रचलित हैं, जैसे—"अैई घर में जाई अर अैई घर में व्याही।"

२७२. **आधै गांव होळी अर आधै गांव दिवाळी।**
आधे गाँव में होली और आधे गाँव में दीवाली मनाई जा रही है।
आपसी फूट और मतभेद से परस्पर विरोधी काम होते है।

२७३. **आधै पाणी न्याव होय।**
बेईमानी करने वाले को कभी न कभी उसका फल मिल ही जाता है।

२७४. **आधै माह, कांधै कामळ बाह ।**
माघ का आधा महीना बीतते-बीतते जाड़ा कम हो जाता है जिससे लोग कम्बल को कन्धे पर डालने लगते हैं ।
रू० (१) आधै 'मा, कांधै कामळ 'गा ।
(२) माह मांगळी, कांधै कामळी ।।

२७५. **आधै में गर, आधै में सर ।**
अग्रवाल वैश्यों में किसी समय गर (गर्ग) गोत्र के आदमी अधिक थे, इसी को लेकर यह कहावत चल पड़ी ।

२७६. **आधै में लूंकड़ी अर आधै में पूंछ ।**
आधी वास्तविकता, आधा आडम्बर ।

२७७. **आधो घड़ो भव भवै ।**
आधा भरा घड़ा छलकता है । अध जल गगरी छलकत जाए ।
पूर्ण ज्ञान के अभाव में अहं का जन्म होता है ।
रू० भरिया नाहीं झमळै, झमळसी आधा ।

२७८. **आधो रह्यो ऊंखळी, आधो रह्यो छाज ।**
सांगर साटै घण गई, (अब) मदरो मदरो गाज ।।

सन्दर्भ कथा—वर्षा के अभाव में दुर्भिक्ष पड़ा तो एक किसान ने खेजड़े की थोड़ी सी पकी फलियों (खोखों) के बदले अपनी औरत बेच डाली । उनको कूटने की इच्छा से उसने थोड़ी सी फलियां ओखली में डालीं और शेष छाज में ही पड़ी थीं कि इतने में बादलों के गरजने की ध्वनि सुनाई पड़ी । इस पर किसान ने आह भरते हुए उपरोक्त दोहा कहा कि पत्नी तो 'सांगर' के बदले चली गई, अब भले ही गरजता रह ।

सांगर = खेजड़े के वृक्ष में लगने वाली हरी फलियों को 'सांगर' कहते हैं जो शाक बनाने के काम में आती हैं । इन्हें उबाल कर और सुखा कर रख लेने से ये साल भर काम देती हैं । पकी हुई फलियां मोटी होती हैं एवं इनका रंग भी कुछ भूरापन लिए होता है । इनको 'खोखा' कहते हैं । ये वैसे ही खाये जाते हैं और लोग इन्हें 'थळी' का मेवा कह कर भी पुकारते हैं ।

२७९. **आनी को पानी, पानी को पंसूरो ।**

२८०. **आनी को पानी, पानी को पूळो ।**
आयो भंभूळियो, लेग्यो समूळो ।।

२८१. **आप-आप की मूंछ्यां कै सै ताव देवै ।**
सब अपनी-अपनी मोंछों पर ही ताव देते हैं ।

२८२. **आप-आप की रोट्यां नीचै सै खीरा देवै ।**
सब अपनी-अपनी रोटियों के नीचे ही आंच देते है ।
हर व्यक्ति अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए ही सचेष्ट रहता है ।

२८३. **आप-आप की सै दळै ।**
सब अपनी-अपनी हांकते हैं ।

२८४. **आप-आप कै खोळिये में सै ई मस्त ।**

सन्दर्भ कथा—राजा के पूछने पर राजज्योतिषी ने उसे बताया कि उसकी मृत्यु शीघ्र ही होने वाली है और अगले जन्म में वह अमुक चाण्डाल के घर शूकरी के पेट से जन्म लेगा। इस बात को सुन कर राजा को बड़ा दुःख हुआ और उसने अपने युवराज को बुला कर उसे आदेश दिया—अमुक चाण्डाल के घर शूकरी के पेट से जन्म लेते ही तुम मुझे मार डालना कि जिससे मुझे जन्म भर घूरों पर फिर-फिर कर विष्टा न खानी पड़े।

कुछ समय पश्चात् राजा की मृत्यु हो गई और उसने उसी चाण्डाल के घर शूकरी के पेट से जन्म लिया। नया राजा उसे मारने के लिए चाण्डाल के घर पहुँचा। उसको देख कर शूकरी का बच्चा उसके पास आया और मनुष्य की वाणी में बोला—मैं पिछले जन्म में तुम्हारा पिता था। यद्यपि मैंने तुम्हें मार डालने का आदेश दिया था, लेकिन अब तुम मुझे मत मारो। मैं इस योनि में अत्यन्त सन्तुष्ट एवं प्रसन्न हूँ।

शूकरी के बच्चे के स्थान पर नाली के कीड़े को लेकर भी यह कथा कही जाती है।

रू० (१) आप-आप की खोड़ में सै मस्त ।
(२) आप-आप की खाल में सै मस्त ।

पद्य—क्या सीपी क्या घूंघची, क्या मोती क्या लाल ।
अपणी अपणी खाल में, सबही खाल खुसाल ।।

२८५. **आप-आप कै घर में सै ही ठाकर ।**
अपने अपने घर में सभी ठाकुर ।
अपने अपने घर में सभी बड़े है ।

२८६. **आप-आप कै दाणै पाणी में सै मस्त ।**
अपने अपने दाने पानी में सभी मस्त है ।

२८७. **आप-आप की तान में खोता भी मस्तान ।**

२८८. **आप-आप कै भाग को सै खावै ।**
सब अपने अपने भाग्य में लिखा खाते है ।
रू० आप आप को भाग सै सागै ल्यावै ।

२८९. **आप आप को जी सँ नै प्यारो लागै ।**
अपनी-अपनी जान सभी को प्यारी होती है ।

२९०. **आप आळो ई बुरी चींतै ।**
अपना आत्मीय ही अनिष्ट की आशंका करता है ।

२९१. **आप ई गावै अर आप ई बजावै ।**
सब काम स्वयं को ही करने पड़ते हैं ।

२९२. **आप कमाया कामड़ा, किण नै दीजे दोस ।**
अपनी ही गलती से जब अपना नुकसान होता है तब दोष किसे दिया जाए ?

संदर्भ कथा—(१) कोजाजी नामक भक्त को भू० पू० जोधपुर राज्य की ओर से पालड़ी नामक गाँव शासन में मिला हुआ था । कोजाजी ने वहां एक बावड़ी बनवाई और उनके शिष्यों ने बावड़ी के पानी से प्याज की खेती की । प्याज बहुत बड़े बड़े हुए जो राजा को भेंट-स्वरूप भेजे गये । इतने बड़े बड़े प्याज देख कर राजा को भी आश्चर्य हुआ और उस गांव को खालसा कर लिया । इस पर उन्होंने खेद प्रकट करते हुए कहा—

आप कमाया कामड़ा, किण नै दीजे दोस ।
कोजैजी री पालड़ी, कांदां लीनी खोस ।।

(२) किसी कुएँ में बहुत सारे मेंढ़क रहते थे । एक दिन किसी पारस्परिक झगड़े के कारण बहुत सारे मेंढ़कों ने मिल कर एक मेंढक को खूब पीटा । इस पर वह पानी के चरस में बैठ कर कुएँ से बाहर आया और प्रचुर मात्रा में भोजन का लालच देकर एक अन्धे सांप को कुएँ में ले गया । सांप ने एक एक करके उसके सब शत्रुओं को उदरस्थ कर लिया । अन्त में उसकी भी बारी आ गई । लेकिन अब वह निरुपाय था, अतः बोल पड़ा—

बैरी ल्यायो पावणो, करयो कुटम पर रोस ।
आप कमाया कामड़ा, दई न दीजे दोस ।।

(३) पति बहुत समय बाद दिसावर से घर आया और दिन भर परिवार के सदस्यों एवं पास-पड़ोस वालों से ही घिरा रहा । बड़ी रात गये पत्नी के पास पहुँचा तो उसने मान किया । बहुत मनाने पर भी जब वह नहीं मानी तो पति को भी गुस्सा आ गया और वह अविलम्ब ही फिर दिसावर चला गया । अब तो पत्नी ने पछता कर कहा—

आयो मुख बोली नहीं, पिउ चाल्यो करि रोस ।
आप कमाया कामड़ा, दई न दीजे दोस ।।

२९३. **आपका ई हाथ अर आपकी ई आरती ।**
अपने ही हाथों अपनी आरती उतारना ।
अपना सम्मान स्वयं ही करना ।

२९४. **आपका करयोड़ा आपनैं ई भोगणा पड़ै ।**
अपने किए हुए कर्मो का फल अपने को ही भोगना पड़ता है ।

२९५. **आपकी अक्कल नैं घोड़ा ई कोनी नावड़ै ।**
अपनी अक्ल इतनी तेज कि उसे घोड़े भी नहीं पा सकते ।
हर आदमी अपने को बेहद अक्लमंद समझता है ।

२९६. **आपकी अेक फूटी को धोखो कोनी, पाड़ौसी की दोनूं फूटी चायै ।**
अपनी एक आंख के फूट जाने का गम नहीं, लेकिन पड़ौसी की दोनों आंखें फूटनी चाहिएँ ।

संदर्भ कथा—एक आदमी ने देवी को सन्तुष्ट कर यह वरदान मांगा कि जो वस्तु वह मांगे, उसे तत्काल मिल जाए । देवी ने उसे वरदान तो दे दिया, लेकिन साथ ही यह भी कह दिया कि जितना तुम्हें मिलेगा, उससे दुगना तुम्हारे पड़ौसी को मिलेगा ।

देवी के वरदान के कारण वह जो भी वस्तु मांगता, उसे तुरन्त मिल जाती, लेकिन साथ ही पड़ौसी को उससे दुगनी चीजें प्राप्त हो जातीं । ईर्ष्या के कारण उसे यह सह्य नहीं हुआ । इसलिए उसने देवी से याचना की कि उसकी एक आंख फूट जाए । वरदान के प्रभाव से उसकी एक आँख तत्काल फूट गई, लेकिन पड़ौसी की भी दोनों आंखें चली गईं । अब उसने देवी से पुनः याचना की कि उसके घर के दरवाजे के आगे एक कुआं खुद जाए । अविलम्ब ही कुआं खुद गया किंतु इसके साथ ही पड़ौसी के दरवाजे के आगे दो कुएँ खुद गये । पड़ौसी अंधा तो पहले ही हो चुका था अतः लाठी के सहारे घर से बाहर निकलते समय एक कुएँ में गिर कर मर गया । देवी से वरदान पाने वाले ने अब अपने वरदान को सार्थक माना ।

२९७. **आपकी कमाई पाणी में ईं कोनी डूबै ।**
अपनी खरी कमाई का पैसा पानी में भी नहीं डूबता ।

२९८. **आपकी खाज आपकै हाथां ईं खोरीजै ।**
अपनी खुजली अपने हाथ से ही अच्छी तरह खुजलाई जाती है ।

२९९. **आपकी गळी में कुत्तो ई ना'र ।**
अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है ।
रू० आपकी घुरी में गादड़ो ई सेर ।

३००. **आपकी गयै को धोखो कोनी, जेठ की रहै को धोखो है ।**
देवरानी को अपनी वस्तु के चोरी चले जाने का इतना दुःख नहीं, जितना जेठ की वस्तु के रह जाने का है । जेठ की वस्तु भी चोरी चली जाती तो उसे गम न होता ।

३०१. **आपकी गाय को घी चाये जठै खाल्यो ।**
अपनी गाय का घी जहाँ इच्छा हो वहाँ खा लीजिए ।

संदर्भ कथा—एक संपन्न किसान था । घर में सदा गाय रखता और अपने यहां आने वाले अतिथियों को गाय के घी से बना तर भोजन खिलाया करता । इसलिए जब वह स्वयं कहीं जाता तो उसे भी शुद्ध गो-घृत से तर भोजन मिलता । इस पर वह कहता कि अपनी गाय का घी चाहे जहाँ भी खाया जा सकता है । मैं अपने अतिथियों को घर की गाय के घृत से बना भोजन खिलाता हूँ और उसी के परिणाम स्वरूप मुझे भी वैसा ही भोजन मिलता है ।

३०२. **आपकी 'चा, गधो बाप ।**
अपनी गरज पूरी करने के लिए गधे को भी बाप कहना पड़ता है ।
जरूरत पड़ने पर निकृष्ट व्यक्ति की भी खुशामद करनी पड़ती है ।

३०३. **आपकी 'छा नै कोई खाटी कोनी बतावै ।**
अपनी छाछ को कोई खट्टी नहीं बतलाता ।
अपनी चीज को कोई खराब नहीं बतलाता ।

३०४. **आपकी छोड़ पराई तक्कै, सो सब जाय गैब कै धक्कै ।**
जो अपनी को छोड़कर पराई को तकता है उसका सर्वस्व नष्ट हो जाता है ।

३०५. **आपकी जांघ उघाड़्यां आप ई लाज मरै ।**
दूसरों के सामने अपने घर की या अपने आत्मीयजनों की बुराई करने से स्वयं को ही लज्जित होना पड़ता है ।

३०६. **आपकी डाढी कै ल्हसरको पैली देवै ।**
हर कोई अपना स्वार्थ पहले सिद्ध करना चाहता है ।

३०७. **आप आपकी धोती में सै उघाड़ा है ।**
धोती के भीतर सभी नंगे हैं ।
हर व्यक्ति की अंदरूनी कमजोरियां होती हैं ।

३०८. **आपकी नाक कटवा कर दूसरां को कसूण करै ।**
अपनी नाक कटवा कर भी दूसरों का अपशकुन करना ।
स्वयं हानि उठाकर भी दूसरों को नुकसान पहुँचाना ।

३०९. **आपकी नींद सोवै, आपकी नींद जागै ।**
अपनी मर्जी हो तब सोये और अपनी मर्जी हो तब जगे ।

३१०. **आपकी पराई अर पराई आप की ।**
अपनी तो पराई हो जाती है और पराई अपनी होती है ।
अपनी बेटी का विवाह कर उसे पराये घर भेजना पड़ता है और पराई बेटी को बहू के रूप में अपने घर लाते हैं ।

३११. **आपकी पगड़ी आपकै हाथ ।**
अपनी इज्जत अपने हाथ है ।

३१२. **आपकी पूठ आपनै कद दीखै ?**
अपनी कमियां अपने को दिखलाई नहीं पड़तीं ।

३१३. **आपकी मां नै डाकरण कुरण बतावै ?**
अपनी मां को कोई डाकिन नहीं बतलाता ।
अपने आत्मीय जनों में मोह वश कमियां दिखलाई नहीं पड़तीं ।

३१४. **आपकी मारी तीसरै पताळ जावै ।**
हर व्यक्ति को अपने बूते का झूठा अहँकार होता है ।

३१५. **आपकी लुळताई स्यानलै नै खावै ।**
अपनी नम्रता सामने वाले को परास्त करती है ।

३१६. **आपकै घरे उजाड़, दूसरे कै घरे धाड़ ।**
कोई किसी के घर मेहमान बन कर जाते हैं तो उनके स्वयं के घर में तो नुकसान होता है और सामने वाला (मेजबान) समझता है कि घर में 'धाड़' (लुटेरों की टोली) घुस आई है ।

३१७. **आपकी नाक पर माखी कोई नीं बैठण दे ।**
अपनी इज्जत को कोई ठेस नहीं लगने देना चाहता ।

३१८. **आपकै पेट की लाय सैं बुझावै ।**
अपना पेट तो सभी भरते हैं, लेकिन परोपकार बिरले ही कर पाते हैं ।

३१९. **आपकै रूप अर पराये धन को 'छे कोनी ।**
आदमी को रूप अपना और धन पराया अधिक लगता है ।

३२०. **आपकै लागै हीक में, दूसरै कै लागै भींत में ।**
अपनी पीड़ा को तो मनुष्य खूब अनुभव करता है, लेकिन दूसरे की पीड़ा का उसे जरा भी अहसास नहीं होता ।

३२१. **आपकै हाथां आपका कान कोनी बींध्या जावै ।**
अपने हाथों अपने कान नहीं बींधे जाते ।

३२२. **आपको घर हँग कर भर, दूसरै को घर थूक को डर ।**
अपने घर में आदमी चाहे जो करे, चाहे जैसे रहे, लेकिन दूसरे के घर पर तो उसे हर बात का संकोच रहता है ।

३२३. **आपको बिगाड़्यां बिना दूसरै को कोनी सुधरै ।**
दूसरे का काम सुधारना हो तो अपने काम की उपेक्षा करनी पड़ती है ।

३२४. **आपको बिगाड़चोड़ो अर दूसरै को सुधारचोड़ो ।**
अपने हाथ से बिगड़ा हुआ काम भी दूसरे के हाथ से सुधरे हुए काम के बराबर होता है ।

३२५. **आपको विरम कवै जीं में फरक कोनी पड़ै ।**
अपना अंतःकरण जो कहता है, उसमें फर्क नहीं पड़ता ।

३२६. **आपको सीर कोनी जिकी हांडी भांवें चढती ई फूटो ।**
जिस हँडिया में अपना हिस्सा नहीं, वह भले, चूल्हे पर चढते ही फूट जाए ।

३२७. **आपको सो आपको, दूसरै को सो हैं हैं ।**
अपने स्वार्थ-साधन में तो खूब सावधान रहते हैं, लेकिन जब दूसरे के मतलब की बात आती है तो खीसें निपोर देते हैं ।

३२८. **आप गरूजी कातरा मारै, औरां नै परमोद सिखावै ।**
गुरुजी खुद तो कातरे (एक कीड़ा) मारते हैं और दूसरों को अहिंसा का प्रबोध देते हैं ।
रू० आप गुरूजी कातरा मारै, चेलां नै परबोध सिखावै ।

३२९. **आप मरयां जुग परलै ।**
मरने वाले के लिए तो मानो उसकी मृत्यु के साथ ही प्रलय हो जाता है ।

३३०. **आप डूबतो पांडियो, ले डूब्यो जजमान ।**
स्वयं डूबता हुआ पंडा अपने यजमान को भी साथ ही ले डूबा ।

३३१. **आप न जावै सासरै, औरां नै दे सीख ।**
स्वयं तो ससुराल नहीं जाती और दूसरी औरतों को ससुराल जाने की शिक्षा देती है ।

३३२. **आप भलो तो जुग भलो ।**
जो स्वयं भला है, उसके लिए सारा संसार भला है ।
रू० आप भलो तो जुग भलो, नींतर भलो न कोय ।

३३३. **आप भुवाजी उघाड़ा फिरै, भतीजां नै भुगला टोपी ।**
बूआ के पास स्वयं के अंग ढांकने के लिए तो वस्त्र ही नहीं और भतीजों के लिए झुग्गे-टोपी !

३३४. **आप मरतां बाप कोनै याद आवै ।**
अपनी विपदा के समय आत्मीय जनों के हित का भी ध्यान नहीं रहता ।

३३५. **आप मरयां डूम राणा ।**
अपने मरने के बाद भले ही डोम राणा बने ।

संदर्भ कथा—राणा प्रतापसिंह के समय से ही मेवाड़ और आमेर (बाद में जयपुर) के शासकों में विद्वेष चला आता था । यद्यपि कालान्तर में दोनों राज-घरानों में परस्पर विवाह सम्बन्ध होने लगे थे, फिर भी द्वेष भावना सर्वथा लुप्त नहीं हुई थी । किंवदंती है कि मेवाड़ के राणा की कोई राजकुमारी जयपुर के राजा को ब्याही थी । मेवाड़ के शासकों की उपाधि राणा थी, अतः उनको नीचा दिखाने की इच्छा से जयपुर के राजा ने डोमों को 'राणा' की उपाधि देने

का निश्चय किया। इस पर मेवाड़ वाली रानी ने विरोध प्रकट करते हुए कहा कि मेरे जीते जी तो ऐसा नहीं होगा। यदि आप नहीं मानेंगे तो मैं प्राण दे दूंगी और मेरे मरने के बाद भले ही डोमों को राणा बना दें।

३३६. **आप मर्‌यां बिना सुरग कोनी मिलै।**
स्वयं के मरे बिना स्वर्ग की प्राप्ति नहीं हो सकती।
जो स्वर्ग में जाने का आकांक्षी हो, उसे पहले मरना होगा।
रू० (१) आप मर्‌यां बिना सुरग कोनी दीखै।
(२) आप मर्‌यां बिना सुरग कठै ?

३३७. **आप मियां मंगता, बारै खड़्या दरवेस।**
मियांजी स्वयं भिखमंगे हैं और उनके द्वार पर याचना के लिए फकीर खड़े हैं!

३३८. **आपनै सूझै कोनी, औरां नै बूझै कोनी।**
स्वयं को कोई युक्ति सूझती नहीं और दूसरे से पूछता नहीं, तब काम कैसे बने।
रू० आपनै उपजै कोनी, दूसरै की मानै कोनी।

३३९. **आप होवै जिसी ही दुनियां दीखै।**
स्वयं जैसा होता है, दुनिया भी उसे वैसी ही दिखलाई पड़ती है।

संदर्भ कथा—एक दिन राजा ने अपने नाई से पूछा कि तुम तो पूरे नगर में घूमते हो, अतः सच-सच बतलाओ कि लोगों की आर्थिक दशा कैसी है ? नाई के यहां एक अच्छी भैंस थी और उसके पास लगभग दस तोला सोना था। इसलिए उसने राजा से कहा कि पृथ्वीनाथ ! सब लोग बहुत खुशहाल हैं। नगर में ऐसा कोई घर नहीं होगा जिसमें एक भैंस और दस तोला सोना न हो।

राजा ने अपने मन्त्री से यह बात कही तो मन्त्री ने नाई द्वारा कही गई बात को गलत बतलाते हुए कहा कि बहुत से घरों में तो भैंस के स्थान पर बकरी और सोने के स्थान पर रांगा भी नहीं मिलेगा। राजा ने मन्त्री से पुनः कहा कि नाई ने अपनी बात बड़े विश्वास के साथ कही है, इसलिए तुम सही स्थिति का पता लगाओ।

इस पर मन्त्री ने नाई के घर से भैंस भी चुरवा कर मंगवा ली और सोना भी। फिर उसने राजा से कहा कि अब आप नाई से पुनः पूछिये। भैंस और सोने के चोरी चले जाने से नाई बहुत दुखी था। इसलिए जब राजा ने दुबारा उससे पूछा तो उसने बहुत खिन्न होकर कहा कि अन्नदाता ! आजकल तो लोगों की माली हालत बहुत नाजुक है, न किसी के यहां भैंस है और न किसी के घर में सोना। नाई की बात सुनकर राजा को विश्वास हो गया कि मनुष्य जैसा आप होता है, उसकी दृष्टि में दूसरे भी वैसे ही होते हैं।

३४०. आ फंस्यां को के मोल ?

भारी आपत्ति में फंस जाने पर छुटकारे के लिए मुँहमांगी कीमत भी चुकानी पड़ती है ।

३४१. आ बळद मनै मार ।

आ बैल मुझे मार ।
जान बूझ कर आफत मोल लेना ।
रू० आवरे बळद मनै मार, सींग सूँ नईं तो पूंछ सूँ ई मार ।

३४२. आबरू सेर उधार ।

साख के अनुरूप ही उधार मिलता है ।

३४३. आम का आम गूंठळियां का दाम ।

आम के आम गुठलियों के दाम । दोहरा लाभ ।

३४४. आम खाणा 'क पेड़ गिणना ?

आम खाने हैं या पेड़ गिनने हैं ?
आदमी को व्यर्थ की बातों में न पड़कर अपने मतलब की बात करनी चाहिए ।

३४५. आम फळै नीचो निवै, अरंड अकासां जाय ।

आम का वृक्ष फलने पर नीचे की ओर झुकता है व एरंड ऊपर की ओर जाता है । अधिकार और सम्पन्नता प्राप्त होने पर सज्जन विनम्र होता है एवं दुर्जन घमंड से इतराता है ।

३४६. आम फळै परिवार सूँ, महुवो फळै पत खोय ।
वां को पाणी जो पीवै, अकल कठै सूँ होय ॥

आम पत्तों के रहते हुए ही फलता है । लेकिन महुआ 'पत' (पत्ते = प्रतिष्ठा) खोकर फलता है । इसलिए उसका पानी या उससे बनी शराब पीने वालों की अकल ठिकाने कैसे रह सकती है ?

३४७. आयगी सेखै नै घाटी ।

यह कहावत राव सेखा के घाटवा युद्ध से सम्बन्धित है । गौड़ों के साथ हुए इस युद्ध में यद्यपि राव सेखा की जीत हो गई थी तथापि अधिक घायल होने के कारण उनकी मृत्यु भी हो गई थी ।
रू० आयगी सेखै नै माटी ।

३४८. आया तो लाख रा, नईं आया तो सवा लाख रा ।

आये तो अच्छा, न आये तो और भी अच्छा ।

का निश्चय किया। इस पर मेवाड़ वाली रानी ने विरोध प्रकट करते हुए कहा कि मेरे जीते जी तो ऐसा नहीं होगा। यदि आप नहीं मानेंगे तो मैं प्राण दे दूंगी और मेरे मरने के बाद भले ही डोमों को राणा बना दें।

३३६. **आप मरयां बिना सुरग कोनी मिलै।**
स्वयं के मरे बिना स्वर्ग की प्राप्ति नहीं हो सकती।
जो स्वर्ग में जाने का आकांक्षी हो, उसे पहले मरना होगा।
रू० (१) आप मरयां बिना सुरग कोनी दीखै।
(२) आप मरयां बिना सुरग कठै ?

३३७. **आप मियां मंगता, बारै खड़्या दरवेस।**
मियांजी स्वयं भिखमंगे हैं और उनके द्वार पर याचना के लिए फकीर खड़े हैं!

३३८. **आपनै सूझै कोनी, औरां नै बूझै कोनी।**
स्वयं को कोई युक्ति सूझती नहीं और दूसरे से पूछता नहीं, तब काम कैसे बने।
रू० आपनै उपजै कोनी, दूसरै की मानै कोनी।

३३९. **आप होवै जिसी ही दुनियां दीखै।**
स्वयं जैसा होता है, दुनिया भी उसे वैसी ही दिखलाई पड़ती है।

संदर्भ कथा—एक दिन राजा ने अपने नाई से पूछा कि तुम तो पूरे नगर में घूमते हो, अतः सच-सच बतलाओ कि लोगों की आर्थिक दशा कैसी है? नाई के यहां एक अच्छी भैंस थी और उसके पास लगभग दस तोला सोना था। इसलिए उसने राजा से कहा कि पृथ्वीनाथ! सब लोग बहुत खुशहाल हैं। नगर में ऐसा कोई घर नहीं होगा जिसमें एक भैंस और दस तोला सोना न हो।

राजा ने अपने मन्त्री से यह बात कही तो मन्त्री ने नाई द्वारा कही गई बात को गलत बतलाते हुए कहा कि बहुत से घरों में तो भैंस के स्थान पर बकरी और सोने के स्थान पर रांगा भी नहीं मिलेगा। राजा ने मन्त्री से पुनः कहा कि नाई ने अपनी बात बड़े विश्वास के साथ कही है, इसलिए तुम सही स्थिति का पता लगाओ।

इस पर मन्त्री ने नाई के घर से भैंस भी चुरवा कर मंगवा ली और सोना भी। फिर उसने राजा से कहा कि अब आप नाई से पुनः पूछिये। भैंस और सोने के चोरी चले जाने से नाई बहुत दुखी था। इसलिए जब राजा ने दुबारा उससे पूछा तो उसने बहुत खिन्न होकर कहा कि अन्नदाता! आजकल तो लोगों की माली हालत बहुत नाजुक है, न किसी के यहां भैंस है और न किसी के घर में सोना। नाई की बात सुनकर राजा को विश्वास हो गया कि मनुष्य जैसा आप होता है, उसकी दृष्टि में दूसरे भी वैसे ही होते हैं।

३४०. आ कंम्यां को के मोल ?

भारी आपत्ति में फंस जाने पर छुटकारे के लिए मुंहमांगी कीमत भी चुकानी पड़ती है।

३४१. आ बळद मनै मार।

आ बैल मुझे मार।

जान बूझ कर आफत मोल लेना।

तु० आवरे बळद मनै मार, सींग में नईं तो पूंछ में ई मार।

३४२. आवरू जैर उधार।

साख के अनुरूप ही उधार मिलता है।

३४३. आम का आम गुंठळियां का दाम।

आम के आम गुठलियों के दाम। दोहरा लाभ।

३४४. आम खाणा 'क पेड़ गिणना ?

आम खाने है या पेड़ गिनने है ?

आदमी को व्यर्थ की बातों में न पड़कर अपने मतलब से ही काम रखना चाहिए।

३४९. आया था हरि भजन कूं, ओटण लग्या कपास ।
मनुष्य देह प्राप्त कर आये तो थे हरि-भजन कर आवागमन से छूटने के लिए, लेकिन उल्टे दुनिया के गोरख धंधे में फँस गये ।
रू० आयो व्याज कमावण नै, चाल्यो मूळ गमाय ।

३५०. आया सराध बंधी आस, बामण उछळै नौ-नौ बांस ।
गया सराध टूटी आस, बामण रोवै चूल्हे पास ।।
श्राद्ध जीमने के लिए व्यग्र भोजन भट्ट ब्राह्मण के प्रति व्यंग्य ।

३५१. आये गये नै पूछै बात, खेती में क्यूं आथ न साथ ।
जो स्वयं अपनी खेती को नहीं संभालता और केवल आने जाने वाले से अपनी खेती के हाल-चाल पूछता रहता है, उसे खेती से कोई लाभ नहीं हो सकता ।

३५२. आये बांडी आरो घालां, 'क पूंछ ई आरै में तुड़ाई है ।
'बांडी' (पूंछ कटी) को हर वक्त लड़ाई की चुनौती स्वीकार है । उसने तो अपनी पूँछ ही इसमें कटवाई है ।

३५३. आये भंरण लड़ां, ठाली बैठी के करां ।
आओ बहिन लड़ें, बेकार बैठी और क्या करें !

३५४. आये म्हारी काणों, तूं कठै ई नई खटाणी ।
ऐबी मनुष्य कहीं नहीं खटाता ।

३५५. आयो चैत निवायो, फूड़ां मैल गमायो ।
चैत का गरम महीना आने पर फूहड़ भी अपने शरीर का मैल उतार देती हैं ।

३५६. आ रै मेरा सम्पट पाट, मैं तनै चाटूं तूं मनै चाट ।
दोनों एक जैसे गये गुजरे ।
रू० आई आंधी मिलग्या पाट, नूंत्या बामण जीमग्या जाट ।
आरै म्हारा सम्पट पाट, मैं तनै चाटूं तूं मनै चाट ।।

३५७. आ रै म्हारा लाल्या, सौंत को चन्नण तूं भी लगाले, औरां नै भी बुलाल्या ।
आरे मेरे लाले, सेंत-मेंत का चंदन तू भी लगाले एवं औरों को भी बुलाले ।

३५८. आ रै राड़्या राड़ करां, ठाला बैठ्या के करां ।
अरे झगड़ालू ! भला निकम्मे बैठे क्या कर रहे हैं; आओ परस्पर झगड़ा ही करें ।

३५९. आरै सीरी सीर करां, सीर की रसोई करां ।
घी गुड़ आटा तेरां, फूंक बसन्दर पाणी मेरा ।।
आओ भाई ! साझे में खाना बनायें । इसमें घी, गुड़ और आटा तुम्हारा रहेगा एवं हवा, अग्नि और पानी मेरा ।
अपनी ओर से नाम मात्र का सहयोग देकर साझे से लाभ उठाने की दुष्प्रवृत्ति ।

३४९. **आया था हरि भजन कूं, ओटण लग्या कपास ।**
मनुष्य देह प्राप्त कर आये तो थे हरि-भजन कर आवागमन से छूटने के लिए, लेकिन उल्टे दुनिया के गोरख धंधे में फँस गये ।
रू० आयो व्याज कमावण नै, चाल्यो मूळ गमाय ।

३५०. **आया सराध बंधी आस, बामण उछळै नो-नो वांस ।**
गया सराध टूटी आस, बामण रोवै चूल्है पास ।।
श्राद्ध जीमने के लिए व्यग्र भोजन भट्ट ब्राह्मण के प्रति व्यंग्य ।

३५१. **आये गये नै पूछै बात, खेती में क्यूं आय न साय ।**
जो स्वयं अपनी खेती को नहीं संभालता और केवल आने जाने वाले से अपनी खेती के हाल-चाल पूछता रहता है, उसे खेती से कोई लाभ नहीं हो सकता ।

३५२. **आये बांडी आरो घालां, 'क पूंछ ई आरै में तुड़ाई है ।**
'बांडी' (पूंछ कटी) को हर वक्त लड़ाई की चुनौती स्वीकार है । उसने तो अपनी पूंछ ही इसमें कटवाई है ।

३५३. **आये भांण लड़ां, ठाली बैठी के करां ।**
आओ बहिन लड़ें, बेकार बैठी और क्या करें !

३५४. **आये म्हारी काणीं, तूं कठै ई नईं खटाणी ।**
ऐबी मनुष्य कहीं नहीं खटाता ।

३५५. **आयो चैत निवायो, फूड़ां मैल गमायो ।**
चैत का गरम महीना आने पर फूहड़ भी अपने शरीर का मैल उतार देता है ।

३५६. **आ रै मेरा सम्पट पाट, मैं तनै चाटूं तूं मनै चाट ।**
दोनों एक जैसे गये गुजरे ।
रू० आई आंधी मिलग्या पाट, नूंत्या बामण जीमग्या जाट ।
आरै म्हारा सम्पट पाट, मैं तनै चाटूं तूं मनै चाट ।।

३५७. **आ रै म्हारा लांल्या, सैंत को चन्नण तूं भी लगाले, औरां नै भी बुलाल्या ।**
आरे मेरे लाले, सेंत-मेंत का चंदन तू भी लगाले एवं औरों को भी बुलाले ।

३५८. **आ रै राड़्या राड़ करां, ठाला बैठ्या के करां ।**
अरे झगड़ालू ! भला निकम्मे बैठे क्या कर रहे हैं; आओ परस्पर झगड़ा ही करें ।

३५९. **आरै सीरी सीर करां, सीर की रसोई करां ।**
घी गुड़ आटा तेरां, फूंक बसन्दर पाणी मेरा ।।
आओ भाई ! साझे में खाना बनायें । इसमें घी, गुड़ और आटा तुम्हारा रहेगा एवं हवा, अग्नि और पानी मेरा ।
अपनी ओर से नाम मात्र का सहयोग देकर साझे से लाभ उठाने की दुष्प्रवृत्ति ।

३६०. **आरोगो तो घात्यो ई कायनी।**

'आरोगा' तो परोसा ही नही।

संदर्भ कथा—किसी बारात में एक अन्धा देहाती भी था। भोजन के समय कन्या पक्ष के लोग बरातियों की पत्तलों में विविध प्रकार के पकवान परोस रहे थे और परोसते समय हर पकवान का नाम भी पुकारते जाते थे—लीजिए, मोतीचूर के लड्डू, लीजिए, जलेबी—आदि। अन्धे आदमी ने कभी इतने पकवानों के नाम नहीं सुने थे, लेकिन वह हाथ से पत्तल में टटोल कर जान लेता था कि यह अमुक पकवान है। जब सारी बानगियां परोसी जा चुकीं तो जिमाने वालों ने भोजन करने का आग्रह करते हुए कहा, "आरोगो' सा" (भोजन कीजिए)। अन्धे ने 'आरोगो' शब्द तो सुना, लेकिन इस नाम की वस्तु उसकी पत्तल में नहीं परोसी गई। उसने सोचा कि परोसने वाले जल्दी में उसे भूल गये हैं। इसलिए उसने जोरों से पुकार कर कहा, "आरोगो तो घात्यो ई कायनी" अर्थात् आरोगा तो मुझे परोसा ही नहीं गया। इस पर वहाँ खड़े किसी मसखरे ने एक बड़ा सा पत्थर लाकर उसकी पत्तल के पास रख दिया और कहा कि यह आरोगा लो।

३६१. **आल पड़ै तो खेलू खाऊं, सूक पड़ै घर जाऊं।**

यदि वर्षा होगी और जमाना अच्छा होगा तो यहाँ रह कर मौज-मजे करूंगा अन्यथा अपने घर चला जाऊंगा।

निपट स्वार्थ परायणता। सुख में साझीदार, लेकिन दुःख में किनारा कर जाना।

३६२. **आळस नींद किसान नै खोवै, चोर नै खोवै खांसी।**
टक्को ब्याज मूळ नै खोवै, रांड नै खोवै हांसी॥

किसान को निद्रा व आलस्य नष्ट कर देता है, खांसी चोर का काम बिगाड़ देती है, टका रुपये का ब्याज (ऊंची दर का ब्याज) मूल को भी ले बैठता है और हंसी-मसखरी विधवा को बिगाड़ देती है।

३६३. **आळसी को दाळद कोनी जा।**

आलसी मनुष्य का दारिद्रय नहीं जाता।

संदर्भ कथा—किसी महात्मा ने एक आलसी को पारस दिया और कहा कि अमुक समय तक तुम इसे अपने पास रख कर चाहे जितना सोना बना सकोगे। आलसी खुशी से फूल कर कुप्पा हो गया कि अब तो जब चाहूँगा, धन कुबेर बन जाऊंगा। लेकिन उसने पूरी अवधि आलस्य में ही बिता दी। ठीक समय पर महात्मा ने उसके सामने प्रकट होकर अपना पारस मांगा। आलसी बहुत

गिड़गिड़ाया कि जरा देर और रुक जाइये। लेकिन महात्मा नहीं माना और अपना पारस लेकर अदृश्य हो गया। इतने समय तक पारस को पास रख कर भी आलसी अपने दरिद्रय को दूर नहीं कर पाया।

३६४. आळा-आळा दे निवाळा।

संदर्भ कथा—किसी राजा ने सांसी जाति की एक स्त्री के रूप पर मोहित होकर उसे पर्दे में डाल ली। अब वह महलों में रहने लगी। उसे सारी सुख-सुविधाएँ प्राप्त थीं, लेकिन फिर भी वह दिन-प्रतिदिन दुबली होती जा रही थी। राजा के पूछने पर उसने कहा कि मेरे लिए एक अलग महल बनवा दीजिए जिसमें कोई दास-दासी भी न रहे। राजा ने वैसा ही कर दिया। दासियां यथा-समय वहाँ भोजन का थाल रख आतीं, लेकिन महल में ठहरने की इजाजत किसी को न थी।

थोड़े ही दिनों में वह हृष्ट-पुष्ट होने लगी। इसका कारण यह था कि पहले उसे घर-घर भीख मांगने की आदत थी। लेकिन अन्तःपुर में अन्य स्त्रियों के साथ रहने से वह वैसा नहीं कर पाती थी। अब अलग महल में अकेली रहने के कारण उसे अपनी हवस पूरी करने का अवसर प्राप्त हो गया। इसलिए अब वह किवाड़ बन्द करके आलों में भोजन के ग्रास रख देती और फिर आलों से मांग-मांग कर खा लेती। राजा के कहने पर दासियों ने छुप कर सारी लीला देखी तो रहस्य प्रकट हो गया।

सांसिन के स्थान पर यही कथा डोमनी के संदर्भ में भी कही जाती है—

पद्य—जात सुभाव न जा कदे, मांग्योड़ो भावै।
राणी होगी डूमणी, आळै घर खावै॥

३६५. आला बंचै न आप सें, सूका बंचै न बाप सें।

ऐसी खराब लिखावट कि लिखने के बाद स्याही सूखने तक लिखने वाला स्वयं न पढ सके और सूखने के बाद तो उसका बाप भी न पढ पाये।

३६६. आला सूका भेळाई बळै।

अग्नि में गीला-सूखा सब स्वाहा हो जाता है।

३६७. आलीजा नी आज्यो घरां, धान विनां भूखा मरां।

परदेश में रहने वाले शौकीन किन्तु निठल्ले पति के प्रति पत्नी का कथन—आली हज़रत ! घर पधारिये, यहाँ अन्न के बिना सब भूखों मर रहे हैं।

३६८. आली सूकै, सूकी झड़ै, वींनै पूरी कुण करै ?

गीली मूंज सूखती है और सूखी झड़ती है, अतः उसका वजन पूरा नहीं बैठ पाता।

३६९. आ ले पाटघोसरण झूंपड़ी, नित उठ करती राड़ ।
आधो वगड़ बुहारती, सारो वगड़ बुहार ।
संदर्भ कथा—दो स्त्रियों की झोंपड़ियां पास-पास थीं जिनके आस-पास पर्याप्त खुला स्थान था । दोनों आधी-आधी जगह को झाड़-बुहार लेतीं । लेकिन एक स्त्री बड़ी झगड़ालू थी और वह अपनी पड़ोसिन से नित्य झगड़ा किया करती । इससे तंग आकर वह अन्यत्र चली गई और जाते वक्त उपरोक्त कहावती दोहा कह गई ।

३७०. पावती बहू अर जलमतो पूत ।
घर मे बहू आये और पहली ही बार वह पुत्र को जन्म दे तो फिर क्या कहना ! दोहरे लाभ की प्राप्ति ।

३७१. आवतो नईं लाजै तो जावतो क्यूं लाजै ?
जिसे वेश्या के घर आते हुए लाज न आये, वह जाते समय क्यों लजाये ?

३७२. आव म्हारी हाट में देऊं थारी टाट में ।
लोभी दुकानदार इस ताक में रहता है कि कब कोई ग्राहक उसकी दुकान पर आये और कब वह उसे मूंडे ।

३७३. आवै कूंटा, पाड़ै भूंटा ।
बालक के मुंह में जब 'कूंटे' निकलते हैं तो उसे विशेष कष्ट देते हैं ।
कूंटा = सामने के चौके के बाद पड़ने वाले नुकीले दांत ।

३७४. आंवो को आंवो ई काचो रह्यो ।
आँवाँ का आँवाँ ही कच्चा रह गया, एक भी बर्तन नहीं पका ।
जब किसी परिवार के सभी सदस्य एक से एक गये गुजरे निकलें तो इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

३७५. आवोगा जद के ल्यावोगा, जावांगा जद के देवोगा ?
जब तुम हमारे यहां आओगे तो हमारे लिए क्या लाओगे; और जब हम तुम्हारे यहां आयेंगे तो हमें क्या दोगे ?
दोनों तरफ अपने ही स्वार्थ की पूर्ति ।

३७६. आओ निकमाजी काम करां, माचो उधेड़ कर वाण वणां ।
निकम्मेजी आओ, कुछ काम करें । और कुछ नहीं तो बुनी-बुनाई खाट को उधेड़ कर रस्सी ही तैयार करें ।

३७७. आवो बैठो गावो गीत, नईं म्हारै पतासां की रीत ।
आइये, बैठिये, गीत गाइये, लेकिन हमारे यहां बताशे बांटने की रीति नहीं है ।
आइये, बैठिये और गीत गाइये, लेकिन यहां देने-लेने या खिलाने-पिलाने को कुछ नहीं है ।

३७८. **आवो बैठो पीवो पाणी, तीन चीज तो मोल न आणी।**
सामान्य आव-भगत, जिसमें कौड़ी खर्च न हो।

३७९. **आवो मियां खाणा खाओ, विसमिल्ला झट हाथ धुलाओ।**
आवो मिया छान उठाओ, हम बूढा कोई जवान बुलाओ॥
भोजन के लिए सबसे आगे, काम करने के लिए सौ बहाने।
रू० आओ मियां खाणा खाओ, थाळी छोटी परात मंगाओ।
आओ मियां छान छवाओ, 'क ऐ काम काफर का॥

३८०. **आवो म्हारा नवल बनां, थांकै घर की रोवै नाज बिनां।**
उस निठल्ले छैले के प्रति व्यंग्य जो बना-ठना फिरता है, लेकिन घर वाली के लिए अन्न की व्यवस्था भी नहीं कर पाता।

३८१. **आसण मोटो 'क भगती ?**
आसन (साधुओं का मठ, अखाड़ा या आश्रम) बड़ा है या भक्ति ?

३८२. **आसवाणी, भागवाणी।**
आश्विन की वर्षा भाग्यशाली के खेत में होती है।

३८३. **आसा खेती अमर धन।**
सन्दर्भ कथा—एक गरीब बहेलिये की औरत ने अपने पति से कहा कि आज मेरा मन मृग का मांस खाने के लिए मचल रहा है, अतः एक मृग का शिकार करके लाओ। बहेलिये ने उत्तर दिया कि आज मैंने कुछ खाया नहीं है और भूखे पेट मृगों के पीछे दौड़ने में असमर्थ हूँ, इसलिए यदि तुम मुझे गरम-गरम रोटी बनाकर खिलाओ तो मैं मृग का शिकार करने के लिए जा सकता हूँ। लेकिन घर में तो अन्न का दाना भी नही था, इसलिये बहेलिये की औरत ने पड़ोसिन के घर जाकर उससे कहा कि तुम मुझे सेर भर बाजरा देदो, मेरा पति जिस मृग को मार कर लायेगा, मैं उसका पिंड तुम्हें दे दूंगी। सेर भर बाजरे के बदले में मृग का पिंड पाने की आशा में पड़ोसिन ने उसे सहर्ष बाजरा दे दिया।

मृग तो कहीं जंगल में चर रहा होगा। वह शिकारी के हाथ आये न आये, लेकिन आशा की खेती अमर धन है, इसलिए पड़ोसिन ने मृग का पिंड पाने की आशा में ही बाजरा दे दिया—

पद्य—आसा खेती अमर धन, निरधनियां धनवंत।
गोरी पींडा बेचती, मिरगा पान चरंत॥

३८४. **आसाढां सुद नौमी, घण बादळ घण बीज।**
कोठा खेर खखेरल्यो, झोळी राखो बीज॥
आषाढ शुक्ला नवमी को यदि आकाश में बादल और बिजली खूब हों तो कोठों में भरे अन्न को बुहार-झाड़ के बेच डालो, केवल बोने के लिए बीज रखो, क्योंकि जमाना भरपूर होगा जिससे अन्न सस्ता रहेगा।

रू० आसाढ़ै सुद नौमी, घण बादळ घण बीज ।
कोठा खेर खंखेर दयो, राखो बळद अर बीज ।।

३८५. **आसाढे सुद नवमी, नै बादळ ना बीज ।**
हळ फाड़ ईंधण करो, बैठ्या चावो बीज ।।

आषाढ सुदि नवमी को यदि आकाश में बादल और बिजली न हों तो हल को चीरफाड़ कर ईंधन के स्थान पर जला दो और खेत में बोने के लिये रखे हुए बीज (अन्न) को चबा कर किसी तरह गुजारा करो, क्योंकि अकाल पड़ेगा ।

रू० सुदी असाढां नम्म नै, ससि जो निरमळ देख ।
जा पीव तूं माळवै, भीख मांगणी पेख ।।

३८६. **आसाढी पूनम दिनां, निरमल ऊगै चंद ।**
कोई सिंध कोई माळवै, जायां कटसी फंद ।।

यदि आषाढ मास की पूर्णिमा को चन्द्रमा निर्मल (बिना बादलों के) उगे तो अकाल पड़ेगा और लोगों को जीवन-यापन हेतु सिन्ध, मालवा आदि जाना पड़ेगा ।

३८७. **आसाढी पूनो दिना, बादर भीणो चन्द ।**
तो भड्डर जोसी कहै, सगळां नरां अनन्द ।।

यदि आषाढ मास की पूर्णिमा को चन्द्रमा का उदय बादलों में हो तो भड्डर जोशी का कहना है कि सुकाल होगा जिससे सब लोग आनंदित होंगे ।

३८८. **आसोजां का पड़्या तावड़ा, जोगी होग्या जाट ।**

आसोज की तेज धूप से घबड़ा कर खेती करने के अभ्यस्त जाट भी खेती छोड़ कर जोगी हो गये ।

आश्विन की धूप बड़ी तेज होती है ।

३८९. **आसोजां में मोती बरसै ।**

आश्विन मास में होने वाली थोड़ी वर्षा भी खेती के लिए बड़ी मूल्यवान् होती है ।

३९०. **आसाढां धुर अस्टमी, चंद उगंतो जोय ।**
काळो व्है तो कुरियो—धोळो व्है तो सुगाळ ।
जो चंदो निरमळ हुवै तो पड़ै अचित्यो काळ ।।

आषाढ कृष्ण पक्ष की अष्टमी को यदि चांद का उदय काले बादलों में हो तो जमाना साधारण होगा, श्वेत बादलों में उदय होने पर भरपूर जमाना होगा और यदि बादल न हों तो दुर्भिक्ष पड़ेगा ।

३९१ **आसाढां सुद अस्टमी, ससि बादळ छायो ।**
च्यार कूंट पिंजर भरै, ज्यूं भांडो रायो ।।

आषाढ शुक्ला अष्टमी को यदि चांद गहरे बादलों में उगे तो चारों दिशाओं में खूब वर्षा हो ।

रू० ग्रापाढां धुर ग्रस्टमी, चंद सेवरा छाय ।
च्यार मास चू तो रहै, जिउं भांडै रै राय ।।

३६२. **ग्राहारे विहारे लज्जा न कारे ।**
ग्राहार ग्रौर व्यवहार में लज्जा नहीं करनी चाहिए ।

३६३. **ग्रा ही तो वीमारी ही ।**
यही तो बीमारी थी ।

संदर्भ कथा—एक वार ग्रकाल पड़ा तो गाँव में रहने वाला एक गरीव किन्तु चालाक वनिया पास के शहर में गया ग्रौर उसने एक विधुर सेठ के साथ ग्रपनी लड़की का विवाह करना तय करके उससे पांच हजार रुपये ले ग्राया । विवाह के लिए निश्चित तिथि के दिन उसने ग्रपने घर में वहुत ऊंचा 'मांडा' छवा दिया । सेठ की वारात उसी को लक्ष्य करके उस घर की ग्रोर वढ़ने लगी ।

लेकिन वनिये के तो कोई लड़की थी ही नही । इसलिए लड़की वालों ने एक कुतिया को मार कर उसकी ग्रर्थी बांधी ग्रौर उसे कंधों पर उठा कर वारात के सामने चले । वारात वालों के पूछने पर उन्होंने गहरा दुःख प्रकट करते हुए कहा कि जिस लड़की की शादी होनी थी, वह ग्रचानक मर गई । इस वात को सुन कर वे सव सकते में ग्रा गये । लेकिन ग्रर्थी जल्दी में वांधी गई थी, इसलिए कुतिया की पूंछ नीचे की ग्रोर लटकती रह गई थी । वरातियों में से किसी ने पूछ लिया, यह क्या है ? वनिये ने तत्काल ही उत्तर दिया कि यही तो बीमारी थी । ग्राज ग्रचानक उसके पूंछ निकल ग्राई, जिससे वह इतनी जल्दी मर गई । इस पर दूल्हा मन मार कर वरात सहित ग्रपने घर की ग्रोर लौट पड़ा ।

३६४. **इक मत के, दो मत कै ।**
'क' पर एक मात्रा लगाने से 'के' वनता है, लेकिन दो मात्राएँ लगाने से 'कै' (कई) । एक तो १ ही रहता है, लेकिन एक ग्रौर एक मिलने पर ११ हो जाते हैं ।
रू० इक लग 'के' दो लग 'कै' ।

३६५. **इक लख पूत सवा लख नाती, उरा रावण घर दीया न बाती ।**

३६६. **इकली लकड़ी ना जळै, नीं'र उजाळा होय ।**
ग्रकेली लकड़ी न तो ग्रच्छी तरह जल पाती है ग्रौर न उससे उजाला हो पाता है ।

३६७. **इक्कल हट्टी वाणियों, करै मन की जाणियों ।**
गांव में ग्रकेली दुकान वाला वनिया मनमाने भाव लगाता है ।
एकाधिकार से मनमानी करने का ग्रवसर प्राप्त होता है ।

३६८. **इज्जत भरम की, कमाई करम की, लुगाई सरम की।**
जब तक भ्रम बना रहे तभी तक इज्जत है, कमाई भाग्य से होती है एवं नारी का लज्जाशील होना अपेक्षित है।

३६६. **इण घर आही रीत, दुरगो सफरां दागियो।**
यह कहावत मारवाड़ के राठौड़ वीर दुर्गादास से सम्बन्धित है। दुर्गादास ने मारवाड़ राज्य की बड़ी सेवा की, लेकिन अन्त में उसे राज्य से निष्कासित कर दिया गया एवं उसका अंतिम संस्कार सफरा नदी के तट पर हुआ।

४०० **इत्ता बरस दिल्ली में रह कर भी भाड़ ई भूंजी!**
इतने वर्षों तक दिल्ली में रह कर भी कोरा ही रहा।
रू० बारा बरस दिल्ली में रह कर भी भाड़ ई भूंजी।

४०१. **इत्ती तो मरदां की छूट ई है।**
इतनी तो मर्दों की छूट ही है।

सन्दर्भ कथा—एक आदमी अपने समधी से मिलने के लिए उसके घर गया। समधिन चक्की चला रही थी और अपने पति को नीचे पटक कर स्वयं उसके ऊपर बैठी थी। फिर भी उसका पति बाजरे के दाने ले-ले कर चबा रहा था। समधी को देख कर वह सकुचाने लगा तो आगन्तुक ने उससे कहा कि समधी जी! शर्माते क्यों हो? मुझ पर भी ऐसी ही बीतती है, लेकिन तुम भाग्यशाली हो जो नीचे पड़े-पड़े ही बाजरा चबा रहे हो; मुझे तो इसकी भी इजाजत नहीं है। यह सुनकर नीचे पड़े हुए समधी के मन में होशियारी आगई और उसने अपनी मोंछों पर ताव देते हुए कहा—हाँ, मर्दों को इतनी तो छूट है ही।

४०२. **इन्दर की मा भी तिसाई?**
क्या इन्द्र की मां भी प्यासी ही रही?
रू० इन्दर की जाई, पाणी की तिसाई।

४०३. **इसा ही म्हे, इसा ही म्हारा सगा।**
म्हारै कोनी टोपली, वांकै कोनी झगा॥
जैसे हम, वैसे ही हमारे समधी! उनके सिर पर टोपी नहीं, हमारे तन पर कुरता नहीं।

४०४. **इसी खाट इसा ही पाया, इसी रांड इसा ही जाया।**
जैसी खाट, वैसे ही उसके पाये। जैसी मां, वैसे ही (गये-गुजरे) उसके बेटे।
रू० ईस जिसा पाया, मां जिसा जाया।

४०५. **इसी खाण का इसा ही हीरा, इसी भाण का इसा ही वीरा।**
ऐसी खानों में ऐसे ही हीरे निकलते हैं, ऐसी बहिनों के ऐसे ही भाई होते हैं।

४०६. इसी पोल रावळै में कठै, जिको दो वार जीमज्या ।
रावले में ऐसी पोल कहां, जो कोई दो वार जीम जाए ?

४०७. इसी रांडां का इसा ई नांव ।
ऐसी रंडाओं के ऐसे ही नाम ।

४०८. इसी लाय, जिकी न दीवा लेकर देखो ।

४०९. इसी ही रांड का जाया, कदे न गुड़ तेल ल्याया ।
ऐसी ही रंडा का जाया, जो कभी घर में गुड़-तेल भी नहीं लाया ।

४१०. इसै व्यावां का इसा ही नेगचार ।
जैसे व्याह, वैसे ही नेगचार ।

४११. इसो ही हरि गुण गायो, इसो ही संख बजायो ।
यहां हरि-गुण गाना और शंख बजाना बराबर है ।
सब धान बाईस पसेरी ।

४१२. इसो कुण सो गाछ जींकै हवा नईं लागी ?
ऐसा कौनसा वृक्ष, जिसे कभी हवा न लगी हो ?

४१३. इसो सोनो के काम को, जिको कान फाड़ै ?

४१४. इसो भोमियों भोळो कोनी जिको रेवड़ मांय सें सूखो ई आज्या ।
रू० इसो भगवानियों भोळो कोनी जिको मूखो ई गायां चरावण नैं चल्यो जा ।

४१५. ईं हाथ दे, ऊं हाथ ले ।
इस हाथ दे, उस हाथ ले ।

४१६. ईलोजी घोड़ां का पारखू, पूंछ ऊंची कर दांत देखै ।
निपट अनाड़ी और अनभिज्ञ व्यक्ति जब ख्वाहमख्वाह किसी विषय में टांग अड़ाता है, तब व्यंग्य में इस कहावत का प्रयोग किया जाता है ।

४१७. उगतो ई कोनी तपै जिको छिपतो के तपैगो ?
यदि उदय होते हुए सूर्य में ही प्रखरता नहीं तो छिपते हुए में क्या होगी ?

४१८. उगाई अर गाही ।
उधार दी गई रकम को वसूल करने के लिए जितने फेरे लगाये जाएँ, उसी के अनुरूप उसकी वसूली हो पाती है ।

४१९. उघाड़ी देख कर मन चालज्या ।

४२०. उघाड़ै बारणै धाड़ नीं, उजाड़ गाँव में राड़ नीं ।
जिस घर का दरवाजा खुला पड़ा रहता है वहां धाड़ा (डाका) नहीं पड़ता और निर्जन गांव में झगड़ा नहीं होता ।

४२१. उघाड़ै मांस पर तो माखी ई बैठसी ।
कुलटा के यहां तो लम्पट पहुँचेंगे ही ।

४२२. **उघाड्यां ई पत ऊबरै, ढक्यां ई पत जाय ।**

४२३. **उभळ्या समदर ना डटै ।**
यदि समुद्र अपनी मर्यादा तोड़ दे तो फिर उसे कौन रोक सकता है ?

४२४. **उठती मालण अर बैठतो वाणियों ।**
शाक-सब्जी बेचने वाली मालिन घर लौटने की जल्दी में बचा-खुचा सामान सस्ता दे देती है। बनिया सवेरे दुकान खोल कर बैठता है तो वह बोहनी करने के लिए कम मुनाफे पर अथवा लागत मूल्य पर भी चीज बेच देता है।

४२५. **उठ बंदा, वही धंधा ।**
सो कर उठते ही आदमी के आगे नित्य-प्रति का धंधा तैयार रहता है।

४२६. **उडेड़ो आटो बडेरां कै नांव ।**
चक्की से अनाज पीसते समय जो थोड़ा-बहुत आटा हवा में उड़ गया, वह पुरखों के निमित्त ही सही ।

४२७. **उणिहारां सूँ देस भरया पड़्या है ।**

४२८. **उतर ढींगा मेरी बारी ।**
एक के बाद दूसरे की भी बारी आती है।
रू० उतर भीखा मेरी बारी ।

४२९. **उतर पातर, मैं मियाँ तूं चाकर ।**
कर्ज-मुक्त होने पर आदमी कर्ज देने वाले का दबेल नहीं रहता ।

४३०. **उतरा पांव पसारिये, जितरी लाम्बी सौड़ ।**
अपने बूते और साधनों के अनुरूप ही काम करना चाहिये ।

४३१. **उतरयो गांव भलाई डूमां नै दयो ।**
जब अपने से गांव छिन गया, तब भले ही किसी को दें ।

४३२. **उतरयो घाटी हुयो माटी ।**
गले से उतरने के बाद स्वादिष्ट पक्वान्न भी मिट्टी बन जाता है।
रू० ढळयो घाटी, होयो माटी ।

४३३. **उतरयो हाकम ढेढ बरोबर ।**
पदमुक्त अधिकारी की कद्र नहीं रहती ।

४३४. **उतार दीनो लोई तो के करैगो कोई ।**
लज्जा की चादर उतार फेंकने पर लोक-निंदा का क्या डर ?
रू० (१) गेर दीनी लोई तो के करैगो कोई ।
(२) गेर दीनी लोई तो के करै सगो-सोई ।

४३५. **उतावळो सो बावळो ।**

४३६. **उधार अर हार ।**
उधार देने वाला हार में रहता है।

४३७. **उधार तोलां, न मांगण जावां।**
न उधार तोलें, न ऋण उगाहने के लिए जाएँ।

४३८. **उधार दीजे, वैरी कीजे।**
किसी को उधार देना, उसे वैरी बनाना है।

४३९. **उधार दियो अर गायक गमायो।**
उधार दिया और ग्राहक खोया।

४४०. **उधारियो किसो पासंग देखै।**
उधार लेने वाला 'पासंग' नहीं देखता।

४४१. **उधारियो दिवाळियो, जिनसियो साह।**
सारा माल लोगों को उधार दे देने से दुकानदार का दिवाला पिट जाता है। लेकिन वही माल उसकी दुकान में पड़ा रहे तो वह शाह कहलाता है।

४४२. **उधारो लियोड़ो तो लाय में ई कोनी वळै।**
यदि किसी कर्जदार के घर में आग लग जाए तो वह यह कह कर बरी नहीं हो सकता कि घर की अन्य वस्तुओं के साथ उसका कर्जा भी जल गया है। घर में आग लग जाने के बाद भी कर्जा तो बरकरार रहता है।

४४३. **उपासरै में कांगसिये को के काम?**
उपासरे में कंघे की क्या उपयोगिता?

४४४. **उलटा वांस वरेली नै भरै।**

४४५. **उलटी गत गोपाल की, गई सिटल्लू मांय।**
कावल में मेवा करचा, टींट बिरज कै मांय।।
भगवान् कृष्ण की भी उल्टी रीति है जो काबुल में तो मेवे और ब्रज भूमि में करील उत्पन्न किये।
रू० कहूँ-कहूँ गोपाल की, गई सिटल्लू भूल।
कावल में मेवा कर्या, व्रज कर्या वबूल।।

४४६. **उलटो चोर कोतवाळ नै डंडै।**
चोर उल्टे कोतवाल को दंड देता है!
चोर उल्टे साहूकार को दंड देता है!

४४७. **उलटो दिन बूझ कर कोनी आवै।**
किसी का बुरा दिन उसकी पूर्व स्वीकृति लेकर नहीं आता।

४४८. **ऊंखळी में सिर दे जिको धमकां सूं क्यूं डरै?**
जो जान-बूझ कर ओखली में सिर डाले, वह फिर मूसल की चोट से क्यों डरे?

४४९. **ऊंगणियों अर पादणियों हामळ कोनी भरै।**

४५०. **ऊंघै ही, बिछायो लादचो।**
ऊंघने वाली को बिछौना मिल गया।

सन्दर्भ कथा—एक ब्राह्मण के यहाँ हरहाई गाय थी। वह दूध तो जरा भी नहीं देती थी, लेकिन पराये खेतों में घुस कर नुकसान करती रहती, जिससे उसे नित्य उपालंभ मिलते। ऐसी गाय को कोई खरीदना भी नहीं चाहता था और ब्राह्मण होने के नाते वह उसे कसाई को भी नहीं दे पाता था। ब्राह्मण बड़ी सांसत में फँसा था। एक दिन गाय किसी खाई में गिर कर मर गई। ब्राह्मण का पिंड सहज ही छूट गया। उसने कहा—

वांगड़ गाय बिड़ै में बासो, निन उठ खै जीव नै सांसो।
दूध दही मैं कदे न खाद्यो, ऊंधै ही बिछायो लाद्यो।

४५१. **ऊँचा चढ चढ देखो, घर-घर यो ही लेखो।**

संदर्भ कथा—एक विधवा स्त्री अपने छोटे लड़के के साथ रहती थी। वह दुश्चरित्रा थी, इस लिए काजल-टीकी वगैरह शृंगार तो किया ही करती, लेकिन दिखावे के लिए तिलक-छापे भी लगाती और हाथ में माला लिये रहती। लड़का कुछ सयाना हुआ तो अपनी माँ के सारे करतब जान गया।

एक दिन उसने अपनी माँ से काजल-टीकी लगाने का कारण पूछा तो माँ ने रुष्ट होकर उसे एक गुरु को सौंप दिया। वह गुरु के घर पर रह कर ही पढने लगा। लेकिन गुरु की स्त्री भी व्यभिचारिणी थी। एक दिन गुरु किसी दूसरे गाँव गया तो उसने अपने जार को घर पर बुलाया। उसने उसके लिए बैंगन की सब्जी बनाई, लेकिन उसने कहा कि बैंगन मुझे 'बादी' (वायु-विकार) करता है, इसलिए यह सब्जी मैं नहीं खाऊंगा। इस पर गुरु की स्त्री ने वह सब्जी उस लड़के को दे दी। लड़के को वह सब्जी बहुत भाई और वह जोरों से बोल उठा—

कैई कै बैंगण बायला, कैई कै बैंगण पच्छ।
कैई कै बादी करै, कैई कै जावै जच्च॥

गुरु की स्त्री को यह बात बहुत बुरी लगी और उसने लड़के को घर से निकाल दिया। वहाँ से निकल कर वह किसी राजा की राजधानी में पहुँच गया और संयोग से राजा के यहाँ नौकर हो गया। राजा ने उसे अन्तःपुर की ड्योढी पर नियुक्त कर दिया। वहाँ रहते हुए उसे इस बात का पता चल गया कि राजा की रानी भी बदचलन है। उसने सोचा कि रंक से लगा कर राजा तक इसी प्रकार लुटिया डूबी हुई है और सहसा बोल उठा—

ऊंचा चढ-चढ देखो, घर-घर यो ही लेखो।

४५२. **ऊंचा जांका बैठणा, जांका खेत निवाण।**
वांको दोखी के करै, जांका मित दिवाण॥

४५३. ऊंची दुकान, फीका पकवान।
दुकान तो बड़ी, लेकिन पकवान फीके।
नाम के अनुसार गुण नहीं, नाम बड़ा दर्शन छोटा।

४५४. ऊंचै गढ़ां का ऊंचा ई कांगरा।
ऊंचे गढों के ऊंचे ही कगूरे। बड़ों की बातें भी बड़ी।

४५५. ऊंचै चढ-चढ डोळी डाकै, नई मरद नै थापै।
राघो चेतन यूं कहै, थाक्यां रह'गी आपै॥
जो पुंश्चली औरत दीवारें उलांघ-उलांघ कर अन्यत्र जाती रहती है एवं अपने पति को कुछ नहीं गिनती, वह तभी मानेगी, जब उसकी इन्द्रियां शिथिल हो जाएँगी।

४५६. ऊँट की नाड़ लांबी होवै तो काटण सारू कोनी होवै।
ऊँट की गर्दन लम्बी है तो काटने के लिए नहीं है।

४५७. ऊँट कै सागै बिल्ली बेचै।
संदर्भ कथा—किसी आदमी का ऊँट खो गया तो उसने घोषणा करदी कि यदि उसका ऊँट मिल जाए तो वह उसे दो टके में बेच देगा। जिस आदमी को ऊँट मिला, वह इस आशा से उसे उसके पास लाया कि वह ऊँट के मालिक से उसे दो पैसे में खरीद लेगा। लेकिन ऊंट के मालिक ने एक युक्ति निकाल ली। उसने ऊँट के गले में एक बिल्ली बांध दी और कहा कि ऊँट खरीदने वाले को यह बिल्ली भी खरीदनी होगी। ऊँट की कीमत तो उसने अपने वादे के मुताबिक दो टके ही रखी, लेकिन बिल्ली की कीमत उसने ऊँट की वास्तविक कीमत से भी अधिक बतलाई। इसलिए ऊँट को किसी ने नहीं खरीदा और ऊँट वाले की चालाकी के कारण उसका ऊँट बिना कुछ खर्च किये उसे वापिस मिल गया।

४५८. ऊँट को पाद धरती को न अकास को।

४५९. ऊँट को रोग रैंबारी जाणै।
ऊँट की बीमारी को रैबारी (ऊँट की विशेषज्ञ एक जाति)जानता है।

४६०. ऊंट खुड़ावै, अर गधो डामीजै।
ऊँट लंगड़ावे और डाम गधे को लगाया जाए।
अपराध कोई और करे एवं दण्ड किसी और को दिया जाए।
संदर्भ कथा—ढोला-मारू की सुप्रसिद्ध कथा में ऐसा प्रसंग है कि मारवणी को लाने हेतु पूगल जाने के लिए उत्सुक ढोला को जब मालवणि और अधिक रोक पाने में असमर्थ हो गई तो उसने ढोला के ऊँट (करहा) को प्रलोभन देकर इस बात के लिए राजी कर लिया कि वह लँगड़ा होने का

बहाना करके ढोला को रोके। ऊँट ने वैसा ही किया। इस पर उसे 'डाम' (गर्म लोहे से दाग लगाना) लगाने की तैयारी की जाने लगी। इतने में बाईं ओर गधा बोला। मालवणि ने सोचा कि गधे ने ढोला को अच्छा शकुन दे दिया। इससे वह गधे पर झल्ला उठी और उसने ऊँट को बचाने एवं गधे को दण्ड दिलाने के लिए ढोला से कहलवाया कि मेरे बाप के यहाँ ऊँटों के 'टोले' (समूह) रहते थे और जब कोई ऊँट खोड़ा हो जाता था तब गधे को 'डाम' लगाया जाता था—

ढोला म्हारा बाप रै, छो करहां रो वग्ग ।
जे करहो खोड़ो हुवै, गादह दीजै दग्ग ॥

इस पर ढोला ने उस गधे को पकड़वा कर मंगवा लिया और उसके 'डाम' लगवा दिया ऊँट तो केवल बहाना बना रहा था, अतः चंगा हो गया और मालवणि की बात सच मानली गई

४६१. **ऊंट खोज्या तो मेरी टोपी उतार लेई।**

तुम्हारा ऊँट गुम हो जाए तो इसके बदले में मेरी टोपी उतार लेना।

सन्दर्भ कथा—एक चरवाहे के लड़के ने गाँव के चौधरी के पास जाकर कहा कि मैं आपके ऊँट जंगल में चरा लाया करूंगा। चौधरी ने उससे पूछा—यदि ऊंट खो जाएँ तो क्या होगा? लड़के ने सहज भाव से उत्तर दिया—यदि ऊँट खो जाएँ तो मेरी टोपी उतार लेना।

४६२. **ऊंट गाजै अर विलोवणो बाजै।**

जिस घर में मस्त ऊँट बलबलाते रहते हैं और बिलोने चलते रहते हैं, ग्राम्य जीवन में वह घर सम्पन्न माना जाता है।

४६३. **ऊंट घी देवताई अरड़ावै अर फिटकड़ी देवताई अरड़ावै।**

ऊँट को चाहे घी दें, चाहे फिटकरी, वह तो चिल्लायेगा ही।

४६४. **ऊंट चढे नै कुत्तो खाय, अरण होणी को के उपाय।**

ऊँट चढे को कुत्ता काट खाये, इसकी संभावना प्राय नहीं होती। लेकिन यदि अनहोनी ही होनी हो तो फिर उसका क्या इलाज?

४६५. **ऊंट छोड्यो आक, बकरी छोड्यो ढाक।**

ऊँट केवल आक को नहीं खाता और बकरी ढाक को छोड़ कर सब कुछ चट कर जाती है।

४६६. **ऊंट तो अरड़ावता ई लदै।**

ऊँट तो चिल्लाते हुए ही लादे जाते हैं।

४६७. **ऊंट न कूदियो, बोरा कूदिया, बोरां मांयला छाणा कूदिया।**

ऊँट तो उछला ही नहीं, उससे पहले ही उस पर लदे बोरे उछल पड़े और बोरों से भी पहले बोरों में भरे कंडे उछलने लगे।

मालिक के बोलने से पहले ही उसके नौकरों के भी नौकर जोश में आने लगे।

४६८. **ऊंट नै उठताई ढाण नहीं घालणो।**
ऊंट को उठते ही सरपट नहीं दौड़ाना चाहिए क्योंकि ऐसा करने से वह बहुत जल्दी ही थक जाता है।

४६९. **ऊंट नै सुहाळियां सैं के होवै ?**
ऊंट का काम 'सुहाळियों' से नहीं चलता।
रू० ऊंटा नै गुड्याणी सैं के होवै ?

४७०. **ऊंट पर सैं पड़ै, भाड़ेती सैं रूसै।**
ऊंट को किराये करने वाला व्यक्ति स्वयं ऊँट पर से गिर पड़ता है और रूठता है ऊँट के मालिक से, जिसका ऊँट किराये पर लिया गया है।
अपनी कमजोरी या गलती का दोष दूसरों को देना।

४७१. **ऊंट वड़ो होवै ज्यूं लारनै मूतै।**
ऊंट जैसे-जैसे वड़ा होता है, वह पीछे की ओर मूतता है।
शक्ति और संपन्नता की वृद्धि के साथ दुष्ट आदमी उल्टे काम करता है।

४७२. **ऊँट बिलाई ले गई, हांजी-हांजी कहणो।**
ऊंट को बिल्ली उठा लेजाए, यह संभव नहीं। लेकिन जबरदस्त की इच्छा के अनुसार ऐसा स्वीकार कर लेना पड़ता है।

इस संदर्भ की एक छोटी सी कथा है कि किसी गांव से एक जाट का ऊँट चोरी चला गया। गाँव का ठाकुर चोरों से मिला हुआ था अतः जाट के पुकार करने पर उसने बनावटी छान-बीन के बाद यह फैसला दिया कि जाट के ऊँट को बिल्ली ले गई जाट भी इस बात को जानता था कि ऐसा कदापि नहीं हो सकता। लेकिन उसे उसी गाँव में रहना था, अतः उसने अपनी घरवाली से कहा—

जाट कहे सुण जाटणी, ग्रैंई गांव में रहणो।
ऊँट बिलाई ले गई, हांजी-हांजी कहणो॥

४७३. **ऊंट मरै जब चींचड़ा ई मरै।**
ऊँट मरता है तो चींचड़े भी मरते हैं।
चींचड़ा = ऊँट आदि जानवरों की चमड़ी से चिपक कर खून चूसने वाला एक कीट

४७४. **ऊंट मरै तो ई मारवाड़ कानी जोवै।**
रू० ऊँट मरै तो ई लंका कानी जोवै।

४७५. **ऊंट मरचो, कपड़ै कै सिर।**
ऊँट मर गया तो उसकी कीमत भी कपड़े से वसूल की जाएगी।

संदर्भ कथा—कपडे के व्यापारी पहले दिसावरो से ऊँटो पर ही कपड़ा मगवाते थे। किसी व्यापारी का एक ऊँट रास्ते मे मर गया। जब उसे इस बात की सूचना दी गई तो उसने कहा—कोई बात नही, ऊँट मर गया है तो उसकी कीमत भी कपडे का दाम बढा कर वसूल करली जाएगी।

४७६. ऊंट मे सीधोपण कठै ? वो तो मूतै ई आडो-टेडो।
ऊँट मे सीधापन कहाँ ? वह तो मूतता ही आडा-टेडा है।

४७७. ऊंट लादणं सूं गयो, पण पादणं सूं तो कोनी गयो।

४७८. ऊंट होवै तो झै-झै करां ?
पास मे ऊँट हो तब तो उसे बिठाने के लिए "झै झै" करे ?

४७९. ऊंटां कै ब्या में गधेड़ा गीत गावै।
ऊँटो के विवाह मे गधे ही गीत गाते है और सारा बानक भी वैसा ही होता है।
पद्य—ऊँट बनो जांगड गधो, स्वान करै जस केळ।
मैंस भुवा ले वारणा, मिल्यो अमोलक मेळ।।

४८०. ऊंटां टेटां टेगड़ां, गुड़ गादर गाडां।
अतरा में दुख ऊपजै, जे मींडक बोलै नाडां।।

४८१. ऊंडो बावणियों अर घूस को देवणियों हार में कोनी रैवै।
गहरा बोने वाला और रिश्वत देने वाला घाटे मे नही रहता।

४८२. ऊंदरी का जाया तो बिल ई खोदै।
चुहिया की संतान तो बिल ही खोदेगी।

४८३. ऊगन्तै का माछला आंथवतै की मोख।
डंक कहै हे भड्डली, नदियां चढसी गोख।।
यदि सूर्योदय के समय आकाश मे छोटे-छोटे बादलो के समूह एवं सूर्यास्त के समय मोख दिखाई दे तो वर्षा खूब हो, जिससे नदियो मे बाढ आ जाए।
तु० आयण मोग सवारे गोळा।
भगी दुपैरी मे का रोळा।।

४८४ ऊगंतै का गीत, ढळतो बिकै न सोंत।
जिसका अभ्युदय हो उसकी प्रशस्ति सब कोई गाते है, लेकिन पतनोन्मुख को कोई नही पूछता।

४८५. ऊगा सूर भागा सूर, कुण खोदै आली धूड़।
सूर्य के उगने पर जाडा मिट गया तो अब गीली बालू को कौन खोदे ?

सन्दर्भ कथा—एक सियार-सियारिन जंगल मे रहते थे। लेकिन-दोनों ही इतने आलसी थे कि अपने रहने के लिए 'घुरी' भी नही खोदते थे। रात को जाड़ा पडता तो दोनो यह तय करते कि सवेरा होते ही अवश्य घुरी खोदेंगे।

लेकिन सूर्योदय के साथ जैसे ही कुछ गरमाहट महसूस करते, रात की बात को भुला कर बोल पड़ते—

ऊगा सूर भागा भूर, कुण खोदै आली घूड़ ।

ऐसी एक कथा किसी डोम के विषय में भी कही जाती है । रात को जाड़े के मारे ठिठुरने पर तो वह कहता कि सवेरा होते ही अपना हुक्का बेच कर 'सौड़' भरवाऊंगा । लेकिन सूर्योदय के साथ ही अपने वादे को भुला कर बोल उठता—वह देखो सौ "सौड़-सौड़ियों" का स्वामी उग आया है, अब 'सौड़' भराने की क्या आवश्यकता है ?

४८६ **ऊगै सो आथरणै, जलमै सो मरै ।**
उदय होने वाला अस्त भी होता है, जन्म लेने वाला मरता भी है ।

४८७. **ऊठ बींद फेरा ले, हाय राम मौत दे ।**
नितान्त आलसी और अकर्मण्य व्यक्ति बड़े से बड़े लाभ के लिए भी जरा सा श्रम करना नहीं चाहता ।

४८८ **ऊठो सासूजी सांस ल्यो, मैं कातूं थे पीसल्यो ।**
वहू अपनी सास के आराम का बड़ा खयाल रखती है ! वह सास से कहती है कि—सासजी, चर्खा तो मैं कात लेती हूँ, तुम चक्की पीस लो, जिससे तुम्हें थोड़ा आराम मिल जाए ।
सास से उपेक्षाकृत कड़ा श्रम करवा कर भी वहू उस पर अहसान थोपती है ।

४८९. **ऊत गये की चिट्ठी आई, बांचै जींनै राम दुहाई ।**
कुपुत्र की चिट्ठी आई है, जो कोई इसे पढे उसे राम की आन है ।

४९०. **ऊत गयो दक्खण, रैया वैही लक्खण ।**
कपूत कहीं चला जाए, उसके लक्षण सुधरते नहीं ।
रू० ऊत गयो दक्खण, बडे का ल्यायो लक्खण ।

४९१ **ऊत गांव में ऊंट आयो, लोग जाणै परमेसर आयो ।**
मू-र्खों के गांव में ऊंट आया तो उन्होंने समझा कि भगवान् आ गये ।

४९२. **ऊत गांव में कुम्हार ई महतो ।**

४९३. **ऊतां कै किसा सींग होवै ?**
मूर्खों के सिर पर पशुओं की तरह सींग नहीं होते, लेकिन व्यवहार में वे पशु-तुल्य ही होते हैं ।

४९४. **ऊदळतियां नै किसा दायजा मिलै ?**
घर छोड़ कर भाग जाने वालियों को दहेज नहीं मिला करता ।

४९५. **ऊधो को लेणो न माधो को देणो ।**
न उधो से कुछ लेना, न माधो को कुछ देना ।

४९६. **ऊपरं कायनी तो हेटै भी कायनी ।**
ऊपर कुछ नहीं है तो नीचे भी कुछ नहीं ।

सन्दर्भ कथा—एक बारहठ किसी अनजान गांव में पहुँच गया। वहाँ के ठाकुर से उसकी कोई जान-पहचान नहीं थी। भोजन का वक्त हो गया था, भूख जोरों से लग रही थी, इसलिए कुछ सोचकर ठाकुर की गढी की ओर चल पड़ा। राह में किसी से एक कोरा कागज लेकर उसे चिट्ठी की तरह लपेट लिया। गढी में पहुँचा तो ठाकुर सा'ब अन्य आदमियों के साथ थाल पर बैठने ही वाले थे। बारहठ ने ठाकुर से 'जय माताजी' की कह कर अपना परिचय दिया और बोला कि आपके लिए एक आवश्यक पत्रिका लाया हूँ। ठाकुर ने 'पत्रिका' लेकर अपने पास रख ली और बारहठजी के लिए भी भोजन का थाल लगवा दिया। बारहठजी ने खूब छक कर भोजन किया। भोजन के बाद जब बारहठजी जाने लगे तो ठाकुर सा'ब ने पत्रिका उठाई, लेकिन उस पर नाम-ठाम कुछ नहीं लिखा था। उन्होंने कहा 'ऊपर तो कायनी' अर्थात् उसके ऊपर तो कुछ भी नहीं लिखा है। इस पर बारहठजी ने उत्तर दिया—'ऊपर कायनी तो हेटै भी कायनी' अर्थात् ऊपर कुछ नहीं है तो नीचे भी कुछ नहीं है और यों कह कर वे शीघ्रता से चलते बने।

४६७. ऊपर तो लहरयो, पण नीचै के पहरयो ?

सिर पर तो लहरिये का सजीला साफा और नीचे नंग-धड़ंग।

रू० (१) ऊपर बागा, नीचै नागा।

(२) ऊपर चीरो, नीचै वस।

(३) पून उघाड़ी सिर पर चीरो, वो आयो बाईजी थारो बीरो।

४६८. ऊपर थाळी नीचै थाळी, मांय परोसी डेढ सुहाळी।
बांटण आळी तेरा जणी, हांते थोड़ो हाल घणो ।।

ऊपर थाली, नीचे थाली और उनमें रखी है केवल डेढ सुहाली (सुहाली = मैदे आदि की पपड़ी) और इसे बाँटने के लिए तेरह स्त्रियां चली हैं।

सार नगण्य, आडम्बर बेशुमार।

रू० च्यार सुहाळी चवदा थाळी, बांटण आळी सत्तर जणी।
फळसै सेती गीत परू'थ्या, हांते थोड़ी हाल घणी ।।

४६६. ऊपर भरै, नीचै भरै, जंको गरु गोरखनाथ के करै ?

पर्याप्त मात्रा में पौष्टिक पदार्थ खाने वाले किन्तु संयमहीन व्यक्ति को गुरु गोरखनाथ भी नहीं बचा सकते।

५००. ऊपर सें बाबोजी दीखै, नीचै खोज गधां का।

ऊपर से देखने में तो महात्मा लगते हैं, लेकिन करनी उल्टी है।

सन्दर्भ कथा—एक साधु बावा जंगल में रहा करता था। उसकी कुटिया के पास ही एक किसान का खेत था। साधु रात को खड़ाऊँ पहन कर खेत में जाता और खेत में से सिट्टे-मतीरे आदि तोड़ कर ले आता। खड़ाऊँ

इस प्रकार बनाई गई थीं कि उनको पहन कर चलने पर साधु के खोज (पद चिह्न) गधे के खोज की तरह अंकित होते थे। प्रातः काल उन चिह्नों को देख कर किसान यही सोचता कि कोई गधा रात को खेत में घुस कर नुकसान पहुँचा जाता है।

एक रात को किसान खेत में छुप कर बैठ गया। अपने निश्चित समय पर बाबाजी खड़ाऊँ पहन कर खेत में घुसे, लेकिन जब सिट्टे आदि तोड़ कर चलने को तैयार हुये तो किसान ने बाबाजी को पकड़ लिया और बोला—

गटमरण-गटमरण माळा फेरै, तिलक करै सिघां का।
ऊपर सें बाबोजी दीखै, नीचै खोज गधां का॥

५०१ **ऊभो मूतै सूत्यो खाय, वींको दाळद कदे न जाय।**
खड़े-खड़े मूतने वाले और लेटे-लेटे खाने वाले आलसी का दारिद्रय कभी नहीं जाता।

५०२. **ऊबै खेजड़ां वेज कोनी नीकळै।**
खड़े खेजड़े में सहज ही छेद नहीं निकलता। जल्दबाजी करने से काम नहीं होता।

पद्य—पावरणा आया तन ही तन का।
घर में नई करणूका अन का।
जा रै पावरणा मत कर जेज।
ऊभै खेजड़ां पड़ै न वेज॥

रू० खड़े खेजड़ां वेज कोनी नीकळै।

५०३. **ऊमस कर घृत माट गमावै, इंडा कीड़ी बाहर लावै।**
नीर बिनां चिड़ियां रज न्हावै, मेह बरसै धर मांह न मावै॥
यदि उमस के कारण बिलौने में पड़ा घी पिघल जाए, चींटियां अपने अंडों को बाहर लाने लगें और चिड़ियां रेत में स्नान करें तो भरपूर वर्षा हो।

५०४. **अेक अर अेक तो दो होवै, पण अेकै-अेकै ग्यारा होज्या।**
एक और एक को जोड़ने से तो दो (१ + १ = २) होते हैं, लेकिन उनमें अेका होने से ग्यारह (११) हो जाते हैं।

५०५. **अेक आंख को के मीचै अर के खोलै।**
जिसके एक ही आंख हो, वह उसे क्या खोले और क्या बंद करे।
प्रायः एक पुत्र वाली माताएँ अपनी मनःस्थिति को व्यक्त करने के लिए इस कहावत का प्रयोग करती हैं।

५०६. अेक करोट की रोटी वळै ।

रोटी को अच्छी तरह सेंकने के लिए उसे पलटना जरूरी है अन्यथा वह जल जाती है । यही बात कुछ अन्य चीजों पर भी लागू पड़ती है—

पान सड़ै घोड़ो अड़ै, विद्या वीसर जाय ।
रोटी जरै अंगार पर, कहु चेला किण दाय ?
गुरुजी, फेरी नहीं ।

५०७. अेक काचर को बीज सौ मण दूध नै फाड़ गेरै ।

एक काचर का बीज सौ मन दूध को फाड़ डालता है ।
एक कुटिल व्यक्ति बड़े से बड़े काम को बिगाड़ देता है ।
एक बदकार आदमी सारे समाज को दूषित कर देता है ।

५०८. अेक काणो, अेक खोड़ो, चोखो राम मिलायो जोड़ो ।

एक काना है और दूसरा लँगड़ा, भगवान् ने अच्छी जोड़ी मिलादी है ।

५०९. अेक कूकड़ी सौ जगां हलाल कोनी होवै ।

एक मुर्गी सौ जगह हलाल नहीं होती ।

५१०. अेक कैवै जिको दो सुणै ।

जो किसी को एक अपशब्द कहता है, उसे बदले में दो सुनने पड़ते है ।

५११. अेक खसम नईं होवै जिकी कै सैंस खसम होज्या ।

पति के न होने पर अन्य लोग स्त्री पर हुकूमत चलाने की चेष्टा करते हैं अथवा हर कोई उसे हथिया लेना चाहता है ।

५१२. अेक गळै, अेक नळै ।

एक गले पड़ा है, दूसरा पेट में है ।
कम अन्तर से अधिक संतान पैदा करने वाली स्त्री की स्थिति ।

५१३. अेक घर तो डाकण ई छोड़ै ।

एक घर तो डाकिन भी छोड़ देती है ।
दुष्ट आदमी से भी यह अपेक्षा की जाती है कि कहीं न कहीं तो वह लिहाज बरतेगा ।

५१४. अेक घर होळी अर अेक घर दिवाळी ।

एक घर में होली और दूसरे में दिवाली ।
एक घर में जशन तो दूसरे में मातम ।

५१५. अेक चंदरमा नो लख तारा, अेक सखी अर नगर सारा ।

असंख्य तारों के बावजूद चाँद से ही आकाश की शोभा होती है । इसी प्रकार पूरे नगर में एक भी दातार हो तो नगर की शोभा बनी रहती है ।

५१६. **अेक चुप सौ लपरां नै हरावै ।**
मौन रहने वाला सौ वाचालों को हराता है ।

५१७. **अेक टको मेरी गांठी, मगद खाऊं 'क माठी ।**
मेरी गांठ में केवल एक टका है उससे मगद खरीद कर खाऊं या माठी ?
साधन स्वल्प और आकांक्षाएँ बड़ी ।

५१८. **अेक दिन की सोवा, सैंस दिन का रोवा ।**
विवाह-शादी जैसे अवसरों पर दिखावे और प्रदर्शन हेतु बूते से अधिक खर्च करके एक दिन के लिए भले ही वाहवाही लूट ली जाए, लेकिन बाद में बहुत दिनों तक तकलीफ उठानी पड़ती है ।

५१९. **अेक दिन पांवणो, दूजै दिन अणखांवणो, तीजै दिन बाप को मुहांवणो ।**
पहले दिन पाहुना, दूसरे दिन अनखावना और तीसरे दिन बाप-मुआ ।
रू० (१) पैलै दिन पांवणो, दूसरै दिन अण खांवणो, तीसरै दिन बाप को मुहांवणो ।
(२) अेक दिन पांवणो, दूजै दिन पई ।
तीजै दिन रहै तो, अक्कल कठै गई ।।

५२०. **अेक नन्नो सौ दुख हड़ै ।**
एक 'ना' कह देने से सौ झंझट टल जाते हैं ।

५२१. **अेक पग उठावै अर दूसरै की आस ई कोनी ।**
आदमी का जीवन क्षण-भंगुर है । वह एक कदम उठाता है, लेकिन दूसरे की आश नहीं ।

५२२. **अेक पहिये सें गाड़ी कोनी चालै ।**
एक पहिए से गाड़ी नहीं चलती ।
गृहस्थ की गाड़ी को सुचारु रूप से चलाने के लिए स्त्री-पुरुष रूपी दो पहियों की अपेक्षा रहती है ।

५२३. **अेक फूल सें माळा कोनी गूंथी जावै ।**
एक फूल से माला नहीं गूंथी जा सकती ।

५२४. **अेक बर खावै नेमी-धेमी, दो बर खावै बडो ।**
तीजां खावै टाबर टीकर, चौथां खावै गधो ।।
संयम-नियम से रहने वाले लोग दिन-रात में एक ही बार भोजन करते हैं । सामान्य बालिग व्यक्ति दो बार और बालक तीन बार । लेकिन इससे अधिक बार खाने वाले लोग गधे माने जाते हैं ।

५२५. **अेक बांदरी कै रूस्यां किसो बिंदराबन सूनो होवै ?**
एक बंदरिया के रूठ कर चली जाने से वृन्दावन सूना नहीं हो जाएगा ।
रू० (१) अेक बांदरी कै रूस्यां के अजोध्या खाली होवै ?
(२) रेवड़ में एक लरड़ी तूज्या तो के फरक पड़ै ?

५२६. ग्रेक वात लेई है, ग्रेक बात छोड़ी है।
हर नियम हर जगह लागू नहीं पड़ता।
सामाजिक नियमों में लचीलापन होता है।

५२७. ग्रेक बार जोगी, दो बार भोगी, तीन बार रोगी।
योगी दिन रात में एक बार शौच जाता है, सामान्य ग्रादमी दो बार ग्रौर रोगी तीन बार ग्रथवा बार-बार शौच जाता है।

५२८. ग्रेक विरती सदा वैर।
हमपेशा सदा वैरी।

५२९. ग्रेक बुरै बुराई कोनी होवै।
पारस्परिक झगड़ा केवल एक के कसूर से नहीं होता। कम-ग्रधिक कसूर दोनों पक्षों का होता है। दो बुरों के मिलने से ही बुराई होती है।

५३०. ग्रेक भेड़ कुवै में पड़ै तो सै जा पड़ै।
एक भेड़ भूल से भी कुएँ में गिर पड़ती है तो उसका ग्रन्धानुकरण करके उसके साथ की ग्रन्य भेड़ें भी कुएँ में जा गिरती हैं।

५३१. ग्रेक मसखरी, सौ गाळ।
किसी के साथ मसखरी करने वाले को उसकी सौ गालियां भी सुननी पड़ती हैं।

५३२. ग्रेक 'मे, ग्रेक 'मे करता बडका ई मरग्या।
राजस्थान की मरु भूमि में सदा से ही वर्षा की कमी रही, इसलिए यहां के लोग एक वर्षा की प्रतीक्षा करते-करते ही मर जाते थे।

५३३. ग्रेक म्यान में दो तलवारां कोनी खटावै।
एक म्यान में दो तलवारें नहीं खटा सकतीं।
एक स्थान में दो प्रतिद्वन्द्वी नहीं खटा सकते।

५३४. ग्रेक रती बिन ग्रेक रती को।
ग्रोज, कान्ति या प्रतिभा के बिना ग्रादमी का रत्ती भर भी मूल्य नहीं होता।
रू० ग्रेक रती बिन पाव रती को।

५३५. ग्रेक रोटी ग्रर दो टुकड़ा।
एक रोटी के दो टुकड़े, बराबर की हिस्सेदारी।

५३६. ग्रेक लिख्या, सौ भख्या।
चाहे कोई लाख कहता रहे, लेकिन लिखित प्रमाण को ही सच्चा माना जाता है।

५३७. ग्रेकलो चणो उछळ कर के भाड़ फोड़ै।
ग्रकेला चना उछल कर भाड़ नहीं फोड़ सकता।

५३८. **अेक सेर की सोळा पोई, सवा सेर की अेक ।**
ओ निगोड़्यो सोळा खाग्यो, मैं बापड़ी अेक ।।
घर वाली ने एक सेर आटे की सोलह रोटियां बनाईं और सवा सेर की एक रोटी । निगोड़ा पति अकेला ही सोलह रोटियां खा गया जब कि बेचारी घरवाली को उस एक रोटी पर ही संतोष करना पड़ा ।

५३९. **अेक सें दो भला ।**
एक से दो अच्छे ।
सन्दर्भ कथा—एक लड़का कमाने के लिए दिसावर जाने लगा तो उसकी मां ने उससे कहा कि अकेले जाना ठीक नहीं । एक की अपेक्षा दो अच्छे होते हैं । लेकिन और कोई उसके साथ जाने वाला नहीं था, अतः उसकी मां ने एक नेवले को उसकी पिटारी में रख दिया । रास्ते में लड़का एक वृक्ष के नीचे सोया तो एक सांप ने बांबी से निकल कर उसे डसना चाहा । लेकिन नेवले ने सांप को मार डाला और इस प्रकार 'एक सें दो भला' वाली कहावत चरितार्थ हो गई ।
नेवले के स्थान पर 'झावा' (hedge hog) भी कहा जाता है ।

५४०. **अेक हळदी की गांठ लेकर पंसारी बणग्यो ।**
रू० अेक सूंठ को गांठियो लेकर पंसारी बण बैठ्यो ।

५४१. **अेक हळ हत्या, दो हळ काज ।**
तीन हळ खेती, च्यार हळ राज ।।
एक हल की खेती नगण्य, दो की सामान्य, तीन हलों की सार्थक और चार हलों की खेती का तो कहना ही क्या ?

५४२. **अेक हळा, संस कळा ।**

५४३. **अेक हाथ लील में, अेक हाथ कसूमे में ।**
गृहस्थी का एक हाथ नील में और दूसरा कुसुंभा (लाल रंग) में रहता है। गृहस्थ में सुख-दुःख लगे ही रहते हैं और कभी-कभी गृहस्थी को हर्ष व शोक की दोनों प्रक्रियायें साथ-साथ निभानी पड़ती हैं ।

५४४. **अेक हाथ सें ताळी कोनी बाजै ।**
एक हाथ से ताली नहीं बजती ।

५४५. **अेकी मेरी, दोकी ल्यूं, तेकी आवै तो जूतियां की दयूं ।**
हर प्रकार से अपने ही स्वार्थ की पूर्ति के लिए तत्पर रहना ।

५४६. **अेकै घर में दो मता, जड़ामूळ सें जाय ।**
एक घर में दो मत होने से विनाश अवश्यंभावी है ।
रू० देव पूजणो सायबो, भूत पूजणी जोय ।
अेकै घर में दो मता, कुसळ कठै सें होय ।।

५४७. श्रेडी रगड़ी, वहू विगड़ी ।
अधिक सिंगार-पिटार करते रहने से वहू विगड़ जाती है ।

५४८. श्रे परवाई बाई, गाढा मेह कठै सें ल्याई ?
सुण रे मूरचा भाई, श्रेक घटी में चालण पाऊं,
तो खूंटे बंध्या पाडा प्याऊं ।।
'परवा' (पुरवैया) हवा थोड़ी देर भी चले तो वर्षा को ले आती है।

५४९. श्रेंठवाड़ो खा लेवणो, पण श्रेंठवाड़ी बात नईं करणी ।
जूठन भले ही खाली जाए, लेकिन झूठी बात नहीं करनी चाहिए ।

५५०. श्रेक मुरदै का पीळा पांव, मूंड कूटतो तूं भी श्राव ।

सन्दर्भ कथा—नगर-सेठ बाजार से गुजरा तो उसने अपने एक परिचित सुनार को अपनी दुकान पर उदास मुंह बैठे देखा। उदासीनता का कारण पूछने पर सुनार ने सेठ से कहा कि आजकल तो सोना आंख से भी नहीं दिखलाई पड़ता, तब भला रौनक कहां से आये ? इस पर सेठ ने पुनः उससे कहा कि यदि आंखों से देख लेने से ही तुम्हारी भूख भगती हो तो कल हमारी हवेली पर आ जाना और चाहे जितना सोना देख लेना ।

अगले दिन सुनार उक्त सेठ की हवेली पहुंच गया। सेठ ने उसके बदन से सारे कपड़े उतरवा लिये, केवल एक लंगोट रहने दिया और फिर उसे अपने खजाने वाले कमरे में जाने की अनुमति दे दी। सुनार को वहां भरपूर सोने के दर्शन हुए। तभी संयोग से एक बिल्ली वहां आ गई। सुनार ने फुर्ती से एक चांदी की सिल्ली उठा कर उसके ऊपर रखदी जिससे बिल्ली मर गई। अब सुनार ने सोने की एक छड़ उसके पेट में घुसेड़ दी और स्वयं बाहर निकल आया। सेठ ने उसकी तलाशी लेली और वह कपड़े पहन कर अपनी दुकान पर चला गया।

दो-तीन दिन बीते तो मरी हुई बिल्ली की दुर्गन्ध के मारे सेठ और अन्य लोगों का हवेली में रह पाना कठिन हो गया। अन्त में मरी हुई बिल्ली का पता लगने पर सेठ ने उसे उठवा कर बाहर फिकवाई। सुनार तो इस ताक में था ही। उसने भंगी को एक रुपया दिया और कहा कि वह मरी हुई बिल्ली को उसके घर पर डाल आये। भंगी उसे उठा कर चला तो सुनार भी उसके पीछे-पीछे हो लिया। इस पर एक धूर्त आदमी को संदेह हो गया और वह बोल पड़ा "श्रै मुरदै का पीळा पांव"। सुनार ने सोचा कि बात फूटने से तो सारा मामला ही गड़बड़ हो जाएगा, अतः बोला, 'मूंड कूटतो तूं भी श्राव'। वह आदमी भी पीछे-पीछे सुनार के घर पहुंच गया। सुनार ने उसे कुछ दे-दिला कर विदा किया और फिर सोने की छड़ निकाल कर ठाट से दुकान पर जा बैठा। सेठ ने इस आकस्मिक परिवर्तन को तो देखा। लेकिन उसका रहस्य उसकी समझ में नहीं आया।

५५१. ग्रँई काम मेरी मा करती, मैं बैठी देख्या करती ।
ऐसे ही काम मेरी मां किया करती थी और मैं बैठी बैठी सब कुछ देखा करती थी ।

५५२. ग्रँई पत्थर जुवानी में पड़्या था ।
ऐसे ही पत्थर जवानी में पड़े थे । युवावस्था में भी कोई करामात वाली बात न थी ।

सन्दर्भ कथा—एक बूढे मियां डगमगाते कदमों से चले जा रहे थे । ऐंठ तो बड़ी थी, लेकिन शरीर में ताकत नहीं थी । अचानक लड़खड़ाकर गिर पड़े तो बुढापे के सिर दोष मढते हुए बोले—हाय बुढापे ! फिर उन्होंने इधर-उधर नजर घुमा कर देखा और जब उन्हें यह यकीन हो गया कि आस-पास कोई नहीं है तो खिन्न स्वर में कह उठे—ऐसे ही पत्थर जवानी में पड़े थे अर्थात् जवानी में भी कोई तीसमारखां नहीं थे ।

५५३. ग्रँ कुण 'क ग्रोपरा, ग्रां नै दयो खांड खोपरा ।
ग्रँ कुण 'क घर का, ग्रां कै दयो ठरका ।
परायों को भेंट-उपहार, घरवालों को दुत्कार ।

५५४. ग्रँ घर घोड़ी ग्रापणा, वा थी बाकानेर ।
घास घणेरो घालस्यां, दाणों दयां नीं सेर ।।

सन्दर्भ कथा—कोई बारहठ बीकानेर गया । वहां कई दिन रहा । राज्य की ग्रोर से उसकी अच्छी आवभगत हुई । उसकी घोड़ी को भी पर्याप्त दाना मिलता था । बारहठ अपने घर ग्राया तो दाने का वक्त होने पर घोड़ी हिनहिनाई, लेकिन वहां दाना कहां ? घोड़ी की हिनहिनाहट सुन कर बारहठ ने उपरोक्त दोहा कहा ।

रू० वैं घोड़ी घर पार का, वो दाणो बा घास ।
ग्रँ घर घोड़ी ग्रापणा, लीपी चांकी ल्हास ।।

५५५. ग्रँ चोखा, थे भला ।
ये अच्छे हैं, आप भले हैं ।

सन्दर्भ कथा—एक बनिया पास के किसी गांव गया था । लौटते समय पड़ौसी गांव के दो ठाकुर उसे राह में मिल गये । उन्होंने बनिये को लूटने की युक्ति विचारी और उसके पास पहुँच कर बोले—सेठजी यह बतलाइये कि हम दोनों में से कौन अच्छा है और कौन बुरा ? बनिया उनकी चाल को समझ गया कि जिसको बुरा बताया जाएगा, वही उसे लूट लेगा । इसलिए वह एक को अच्छा और दूसरे को भला बतलाता हुआ आगे बढता रहा । यों करते-करते गांव नजदीक आ गया और बनिया तेजी से भाग कर गांव में घुस गया । दोनों ठाकुर ताकते रह गये ।

५५६. ग्रैदी फटूण नै उडीकै ।
आलसी आदमी इसी ताक में रहता है कि कोई अपशकुन हो जाए तो उसे काम न करने का सहज ही बहाना मिल जाए ।

५५७. ग्रैवी घोड़ो निसांण तळै दबै ।

५५८. ग्रैयां ई रांडां रो वोकर सी, ग्रैयां ई पावणा जीम वोकरसी ।
औरतें इसी प्रकार भोगती रहेंगी और पाहुने इसी तरह जीमते रहेंगे ।

५५९. ग्रैरट की बारा मास, इन्दर की दो घड़ी ।
ग्ररहट के निरन्तर बारहों महीने चलते रहने पर भी कुएँ से उतना ही पानी नहीं निकल पाता, जितना इन्द्र दो घड़ी में बरसा देता है ।

५६०. ग्रैरण की चोरी करी, करयो सुई को दान ।
ऊंचो चढ कर देखण लाग्यो, कद ग्रावै बीवांण ।
निहाई जैसी बड़ी वस्तु की चोरी की एवं सुई जैसी नगण्य वस्तु का दान दिया; फिर भी इस प्रतीक्षा में आसमान की ओर आंखें लगाये हैं कि उनको ले जाने के लिए स्वर्गीय विमान कब पहुँच रहा है ।
तु० ग्रैरण की चोरी करी, करयो सुई को दान ।
चढ चौवारै देखण लागी, कद ग्रावै बीवाण ।।

५६१. ग्रैसे कूं वैसा मिल्या, मिल्या बामण कूं नाई ।
वो दीनी ग्रासका, यो ग्रारसी दिखाई ।।
दोनों पक्ष एक जैसे । ब्राह्मण से नाई की भेंट हुई तो ब्राह्मण ने उसे आशीर्वाद दिया, बदले में नाई ने उसे दर्पण दिखला दिया ।

५६२. ग्रो ई पूत पटेलां मे, ग्रो ई गोवर चुगवा में ।
पटेलाई करने से लगा कर गोबर एकत्र करने तक का काम एक ही आदमी के जिम्मे । पीर बवर्ची भिश्ती खर ।

५६३. ग्रोगड़ क्यां सें मोटो, लावो गिणै न टोटो ।
ग्रोगड़ इतना मोटा क्यों है ? इसलिए कि उसे लाभ-हानि की कोई चिन्ता नहीं ।

५६४. ग्रोछा नाचो बिल तको, चलो ग्रपूठी ढाण ।
मौसी मिरदंग भूलगी, हो'गी तीन पगां कै पाण ।।
सन्दर्भ कथा—एक बूढ़ी बिल्ली जब चूहों का शिकार कर पाने में अशक्त हो गई तो तिलक-छापे लगाकर और गले में मृदंग टांग कर चूहों के बिलों के पास आकर भजन-कीर्तन करने लगी । चूहों ने अपने बिलों में से मुँह निकाल कर देखा तो बिल्ली ने उन्हें आश्वस्त करते हुए कहा—मैं अब सभी तीर्थों में स्नान कर आई हूं, मैंने अहिंसा का व्रत ले लिया है और रात-दिन भगवान् का भजन-कीर्तन ही करती रहती हूँ । इसलिए तुम डरो नहीं और मेरे साथ हरि-कीर्तन करो ।

चूहे कीर्तन में शामिल हो गये और तालियां बजा-बजा कर कीर्तन करने लगे। इतने सारे चूहों को देख कर बिल्ली के मुंह में पानी भर आया और उसके तेवर बदलने लगे, वह एक ही झपाटे में कई चूहों को दबोच लेना चाहती थी। लेकिन एक समझदार चूहे ने बिल्ली के बदलते हुए पैंतरे को भांप लिया और उसने गाते-गाते ही चूहों से उपरोक्त दोहा कहा जिसे सुनकर चूहे फुर्ती से अपने बिलों में जा घुसे।

५६५. **ओछी डांडी लांबो तणो, जच्चै जियां तोलै घणो।**
तकड़ी की डंडी छोटी और उसकी तनियां लम्बी हों तो दुकानदार इच्छानुसार कम तौल कर ग्राहक को आसानी से ठग सकता है।

५६६. **ओछी पूंजी धणी नै खावै।**
थोड़ी पूंजी से व्यापार करने वाला टोटे में रहता है।

५६७. **ओछी पोटी में नोटी बात कोनी खटावै।**
अल्प सामर्थ्य वाले के मन में बड़ी बात नहीं खटाती।

५६८. **ओछी रांड उधारा गिणावै।**
ओछी औरत हर घड़ी उधार दी गई चीज का बखान करती है।

५६९. **ओछै की प्रीत, कटारी को मरबो।**
ओछे आदमी की प्रीति कटारी से मरने के तुल्य है।

५७०. **ओछै की प्रीत, बाळू की भींत।**
ओछे की प्रीति बालू की दीवार की तरह अस्थायी होती है जो चाहे जब ढह जाती है।

५७१. **ओछो बो'रो, गोद को छोरो, मूरै की सांड, नातै की रांड न्हयाल कोनी करै।**
क्षुद्र बोहरा, गोद का बेटा, मोहरे की सांड और नाते की औरत कभी निहाल नहीं करती।
पद्य—ओछो बोरो, गोद को छोरो।
मूरै की सांड, नातै की रांड।
चालणी को चाम, घोड़ै की लगाम।
संजोगी को जाम, कदे न आवै काम॥

५७२. **ओत पड़ै सो करो।**
जिसमें किफायत हो, वही काम करें।

सन्दर्भ कथा—किसी राजा के राज्य में आय की अपेक्षा खर्च ज्यादा था। करों का बोझ पहले ही काफी था और आय का एक बड़ा भाग फिजूल-खर्ची में चला जाता था। इसलिए राजा की इच्छा थी कि व्यय में कमी करके इस समस्या का हल किया जाए। राजा ने अपने मंत्री से पूछा तो मंत्री ने उत्तर दिया—अन्नदाता, वनिये बड़े किफायती होते हैं अतः इस विषय में किसी सुयोग्य वनिये का सहयोग प्राप्त करना चाहिए।

अपनी बात को प्रमाणित करने के लिए मंत्री ने तत्काल ही नगर के एक कुशल बनिये को दरबार में बुलाया और उससे कहा —अन्नदाता का हुक्म है कि तुम्हें मृत्यु दण्ड दिया जाए। बनिये के यह पूछने पर कि उसका अपराध क्या है, मंत्री ने उत्तर दिया—ज्यादा बात करने की आवश्यकता नहीं, प्राण दण्ड तुम्हें अवश्य दिया जाएगा; हां, इतनी रियायत तुम्हारे साथ बरती जा सकती है —तुम चाहो तो तुम्हें शूली पर चढा कर प्राण दण्ड दिया जा सकता है और तुम चाहो तो तुम्हें फांसी पर लटकाया जा सकता है। इस पर बनिये ने उत्तर दिया कि मुझे तो दोनों तरह से मरना ही है अतः जिस तरीके से 'ओत पड़े' (किफायत हो) वही कीजिए। बनिये का उत्तर सुन कर राजा बहुत प्रसन्न हुआ और उसने राज्य के खजाने का प्रबंध उसे सौंप दिया।

५७३ **ओरूं जांट चढसी जिको सीरणी बोलसी।**

जो दुबारा खेजड़े के वृक्ष पर चढेगा वही शीरनी बोलेगा।

संदर्भ कथा—'सांगर' (खेजड़े की फलियां) तोड़ने के लिए एक आदमी खेजड़े के ऊंचे वृक्ष पर चढ गया। वृक्ष पर बड़ी संख्या में 'मकोड़े' (बड़े चींटे) थे जो उसे काटने लगे। वृक्ष पर से उतरना उसके लिए दूभर हो गया। तब उसने देवता की मनौती मानी कि यदि वृक्ष पर से उतर जाऊं तो तुम्हारी सवा पांच आने की शीरनी (प्रसाद) बांट दूंगा। यों कह कर वह वृक्ष पर से उतरने लगा। जब आधी दूर तक उतर आया तो शीरनी की राशि में कटौती करके देवता से कहा कि सवा पांच आने की तो नहीं, लेकिन अढाई आने की शीरनी जरूर बांट दूंगा। यों दूरी के साथ-साथ शीरनी की राशि भी कम होती गई और अन्त में जब वह वृक्ष पर से उतर गया तो देवता को धता बतलाते हुए बोला—मैं तो अब दुबारा 'जांट' पर चढने से रहा, अतः जो फिर जांट पर चढेगा, वही तुम्हारी शीरनी बोलेगा।

५७४ **ओस चाट्यां किसी तिस मिटै।**

ओस चाटने से प्यास नहीं बुझती।

रू० ओस सें घड़ो कोनी भरै।

५७५. **ओ ही काळ को पड़बो, ओही बाप को मरबो।**

इसी वर्ष अकाल पड़ा और इसी वर्ष बाप की मृत्यु हुई।

दुर्भाग्य की दोहरी मार।

५७६. **ओर काम सै कळ का, गीत ढोल कै बळ का।**

५७७. **ओर मास सूत्यो भलो, ऊभो, भलो असाढ।**

शुक्ल पक्ष की द्वितीया के चन्द्रमा का उदय अन्य महीनों में तो लेटे हुए एवं आषाढ़ में खड़ा होना चाहिए। ऐसी मान्यता है कि आषाढ में चन्द्रमा खड़ा उगे तो वह हलों को भी खड़े करता है।

रू० सीयाळै सूत्यो भलो, ऊभो भलो असाढ।

५७८ औरत नैं खोवै मिठाई, मरद नैं खोवै खटाई।
औरत को मिठाई और मर्द को खटाई खराब करती है।

५७९. और सै सांग आज्या, बोरै आळो सांग कोनी आवै।
और सब स्वांग भरे जा सकते हैं, लेकिन 'बोहरे' (ऋण दाता) का स्वांग नहीं भरा जा सकता। भांड भी बोहरे का स्वांग नहीं भरता।
रू० और सै सांग आज्या, रिपिये आळो सांग कोनी आवै।

५८०. औसर चूको डूमणी, गावै आळ-पताळ।
अवसर चूकी हुई डोमनी ताल-बेताल गाती है।
संदर्भ कथा—राजधानी में राजा की वर्ष गांठ का जलसा था जिसमें भाग लेने के लिए स्थान-स्थान से 'कलावंत' आये थे। भोजन के लिए सभी आगन्तुकों को राज्य की ओर से 'चिट्ठियां' दी गई थीं, जिनको दिखला कर वे भंडारी से अपना 'पेटिया' (भोजन की सामग्री) तुलवा लेते थे। एक डोमनी चिट्ठी लेकर विलम्ब से भंडारी के यहाँ पहुँची। भंडारी तब तक भंडार को ताला लगा कर जा चुका था। डोमनी अवसर चूक गई और भूखी रह गई। जब जलसे में उसके गाने की बारी आई तो वह ताल बेताल गाने लगी। इस पर किसी ने कहा—

भंडारो रस्तै लग्यो, आई दुवारै चाल।
औसर चूकी डूमणी, गावै आळ-पताळ॥

५८१. औसर चूके नैं मौसर कद मिलै ?
चूका हुआ अवसर दुबारा हाथ नहीं आता।

५८२. औसांण आवै जिको ई हथियार।
औसान ही सबसे बड़ा हथियार है।

५८३. कंगाल की छोरी, लाडू बिनां दोरी ?
दरिद्र की लड़की और लड्डू के लिए रूठे ?
बूते से अधिक की आकांक्षा।

५८४. कंगाल को काळजो पोचो।
गरीब का कलेजा कच्चा होता है।

५८५. कंगाल छैल गांव नै भारी।
दरिद्र शौकीन गांव के लिए भार स्वरूप होता है।

५८६. कंगाली में आटो गीलो।
गरीबी में दोहरी मार।
गरीब आदमी किसी प्रकार आटे का जुगाड़ बिठाये और आटा अधिक गीला हो जाने के कारण उसकी रोटी न बन पाये।
रू० बेईमान को आटो गीलो।

५८७. कंचन के काट कोनी लागै ।
सोने को जंग नहीं लगता ।
खरे आदमी को कलंक नहीं लगता ।

५८८. कंचन जेड़ी ऊजळी, उत्तर बीज सुहाय ।
ग्रगम देवै सूचना, वेगी विरखा ग्राय ।।
स्वर्ण ग्राभा जैसी विजली उत्तर दिशा में चमके तो जानो कि वर्षा शीघ्र ही ग्रायेगी ।

५८९. कंठी लोनी खोल, पूरां पादती ई डोल ।
बाबाजी ने पूरां (चेली का नाम) के गले में बांधी गई कंठी खोलली । ग्रब वह कहीं ग्राये-जाये, बाबाजी को उससे कोई वास्ता नहीं ।
कंठी = दीक्षा गुरु की ग्रोर से शिष्य या शिष्या के गले में पहनाई जाने वाली माला । जिनके गले में कंठी बांध कर दीक्षा दी जाती थी, उन्हें कंठीबंध शिष्य या शिष्या कहते थे ।

५९०. कंथो ग्रेक, दिसावर घणां ।
पति एक ग्रौर दिसावर ग्रनेक ।
पति कभी एक दिसावर चल जाता है तो कभी दूसरे ग्रौर इस प्रकार वह घर पर पत्नी के पास नहीं रह पाता ।

५९१. कंवरजी का दसकत डागळै सूकै ।
कुंग्ररजी के दस्तखत छत पर सूख रहे हैं ।
संदर्भ कथा—एक बनिये का लड़का सर्वथा निरक्षर ग्रौर मूर्ख था । इसलिए घरवालों ने उसे गोबर के उपले थापने का काम दे रखा था । वह उपले थाप कर छत पर सुखा दिया करता । एक बार कोई लडकी वाला उसकी सगाई करने ग्राया ग्रौर उसने लड़के के बाप से पूछा कि कुंग्ररजी कितने पढ़े हुए हैं ? बाप ने उत्तर दिया कि वाह ! कुंवरजी के क्या कहने हैं, उनके दस्तखत तो छत पर सूख रहे हैं ।

उन दिनों काठ की पाटी पर ग्रक्षर जमाये जाते थे ग्रौर पाटी भर जाने पर सूखने के लिए धूप में रखदी जाती थी । इसलिए लड़की का पिता उसकी लिखावट देखने छत पर गया तो उसे ग्रसलियत ज्ञात हो गई ग्रौर वह छत से उतर कर चुपचाप चला गया ।

५९२. कंसळै की ग्रेक टांग टूट्यां किसो पांगळो होवै ।
कनखजूरे का एक पैर टूट जाने से वह पंगु नहीं हो जाता, क्योंकि उसके ग्रनेक पैर होते हैं ।
समर्थ व्यक्ति के लिए छोटी-मोटी हानि विशेष महत्व नहीं रखती ।

५९३. करम को फूट्यो आंक आवै कोनी अर नांव विद्याधर।
है तो निरक्षर भट्टाचार्य, लेकिन नाम रखा है विद्याधर।
गुण के सर्वथा विपरीत नाम।
रू० पल्लै कोनी काणी कोडी, नांव किरोड़ीमल।

५९४. कच्चो अेवज होवां तो पक्को होवतां वार कोनी लागै।
कच्चा माल पास में हो तो उसे पक्के में परिवर्तित करते देर नहीं लगती।

५९५. कटेड़ी आंगळी पर ई कोनी मूतै।
कटी उंगली पर भी पेशाब नहीं करता।
ऐसी मान्यता है कि कटे हुए अंग पर पेशाब करने से वह अच्छा हो जाता है। इस कहावत का प्रयोग ऐसे निकृष्ट व्यक्ति के लिए होता है जो अपना कुछ खोये विना भी कभी किसी के कोई काम न आवे।

५९६. कटै काऊ का, सीखै नाऊ का।
नाई अपने लड़के को हजामत करने का अभ्यास करवाता है तो उसके उस्तरे से हजामत बनवाने वालों की चमड़ी भी कटती है, लेकिन नाई की वला से? उसका लड़का तो इस प्रकार होशियार हो ही जाता है।

५९७. कठैई जावो, सगळै पीसां की खीर है।
कहीं भी चले जाएं, सब जगह पैसे से ही काम बनता है।

५९८. कठैई बोलै, कठैई लाधै।
बोले कहीं, मिले कहीं।
कहे कुछ, करे कुछ

५९९. कठै कळ सें तो कठै बळ सें।
कहीं युक्ति से और कहीं बल से काम बनता है।

६००. कठै की ईंट कठै को रोड़ो, भाणमती यूं कुणबो जोड़यो।
कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भानमती ने कुनबा जोड़ा।
बे-मेल वस्तुओं का अनुपयोगी संग्रह।

६०१. कठै टोर सूना, कठै ढ़ोर सूना।
कहीं एक वस्तु की कमी तो कहीं दूसरी की।

६०२. कठै राजा भोज अर कठै गांगलो तेली?
कहाँ राजा भोज और कहाँ गंगू तेली!
दोनों में कोई समानता नहीं, दोनों में दिन-रात का अन्तर।
रू० (१) कठै राम-राम, कठै ट्यां-ट्यां?
(२) कठै राजा की रिवाड़ी, कठै कुम्हार को थेचाकूटो?

६०३. कड़की कठेई, पड़ी कठेई ।
बिजली की गर्जना तो कहीं और हुई, किन्तु गिरी कहीं और ।
आफत आने की आशंका किसी और पर थी, लेकिन आन पड़ी किसी और पर ।

६०४. कड़वी वेल की कड़वी तूमड़ी, अड़सठ तीरथ न्हाई ।
गंगा न्हाई गोमती न्हाई, मिटी नहीं कड़वाई ।।
तूंबे के कड़वे फल से बनी 'तूमड़ी' को तीर्थों के जल में स्नान कराने से उसकी कटुता नहीं जाती ।
तीर्थों के जल में शारीरिक स्नान करने मात्र से मन का कलुष नहीं धुलता ।
संदर्भ कथा—महाभारत का युद्ध समाप्त होने के बाद जब पाण्डव तीर्थों के स्नान हेतु जाने लगे तो उन्होंने भगवान् कृष्ण से भी साथ चलने के लिए कहा । कृष्ण ने उनसे कहा कि मैं तो नहीं चल सकता, लेकिन मेरी ओर से इस तूंबी को स्नान करवा लाना । यों कह कर उन्होंने एक तूंबी उन्हें दे दी । पाण्डवों ने सभी तीर्थों में स्नान किया और साथ ही वे तूंबी को भी स्नान कराना नहीं भूले । जब वे स्नान करके लौटे तो भगवान् कृष्ण ने सब को उस तूंबी का एक-एक टुकड़ा प्रसाद-स्वरूप दिया । लेकिन सभी ने उन्हें चख कर कहा कि भगवन्, यह तो बहुत कड़वी है । इस पर भगवान् कृष्ण ने पूछा कि क्या इतने तीर्थों के पवित्र जल में स्नान करने के बाद भी इसकी कड़ुआहट नहीं गई ? उनके कहने का तात्पर्य यही था कि मन की पवित्रता के बिना केवल शारीरिक स्नान से कुछ नहीं होता ।
रू० अड़सठ तीरथ न्हाय तूमड़ी खारी ।

६०५. कढी होठां, चढी कोठां ।
मुँह से बात निकल जाने पर वह कई गुना होकर सर्वत्र फैल जाती है ।
रू० निकळी होटां, वंबगी पोटां ।

६०६. कण-कण जोड़्यां मण जुड़ै ।
थोड़ा-थोड़ा संचय करते रहने से बड़ा संग्रह हो जाता है ।
रू० कण-कण कोठी भरीजै ।

६०७. कण-कण भीतर रामजी, ज्यूं चकमक में आग ।
जिस प्रकार चकमक में आग रहती है, उसी प्रकार भगवान् कण-कण में निवास करते हैं ।

६०८. कणक पुराणा घी नया, घर सिलवंती नार ।
चौथो पीठ तुरंग की, सुरग निसाणी च्यार ।।
खाने के लिए गत वर्ष का गेहूँ एवं ताजा घी, घर में शीलवती पत्नी तथा चढ़ने के लिए घोड़ा—ये चारों सुलभ हों तो स्वर्गिक सुखों के तुल्य हैं ।

रू० धान पुराणा घी नवां, घर कुळवंती नार ।
चौथी पीठ तुरंग री, घरमतणां फळ च्यार ॥

६०६. कण थोड़ा अर कांकर घणां ।
अनाज के दाने कम और कंकड़ ज्यादा ।
सत्य स्वल्प और झूठ अधिक ।
सार कम और आडम्बर बेशुमार ।

६१०. कण देख्यां मण की ठा पड़ै ।
थोड़ी बानगी देखने से ही पूरे ढेर का पता चल जाता है ।

६११. कतरणी काटै ई काटै, सूई सांठै ई सांठै ।
कैंची सदैव काटती ही है, सूई सदा जोड़ती ही है ।
कुटिल व्यक्ति सदैव काम को बिगाड़ता ही है, सज्जन पुरुष सदैव उसे सुधारता ही है ।
रू० काग कुहाड़ो कुटिल नर, काटै ही काटै ।
सुई सुहागो सा-पुरुष, सांठै ही सांठै ॥

६१२. कथणी सँ करणी दोरी ॥
कहना सरल लेकिन करना कठिन ।
रू० कहणो सौरो, करणो दोरो ।

६१३. कद नटणी बांस चढ़ै, कद भोजन पावै ।
कब नटिनी बांस पर चढ़े और कब उसे भोजन प्राप्त हो ।
नटिनी नित्य बांस पर चढ कर और खेल दिखला कर ही भोजन का जुगाड़ बिठा पाती है ।

६१४. कद बांझ ब्यावै अर कद तूर बाजै ।
न वंध्या कभी पुत्र जने और न खुशी के वाद्य बजें ।

६१५. कद मरी सासु, कद आया आंसू ।
सास तो कभी की मर गई और वहू अब बनावटी आंसू वहा रही है ।
रू० (१) काल मरी सासु, आज आया आंसू ।
(२) पर मरी सासु, अैस आया आंसू ।

६१६. कद मरै सासु कद आवै आंसू ।
कब सास मरे और कब बहू को आंसू वहा कर अपना दुःख प्रकट करने का अवसर प्राप्त हो ।

६१७. कद राजा आवैं' कद दाळ दळूं ?
निरर्थक और अन्तहीन प्रतीक्षा ।
रू० कद बावो आवै अर कद ताळी बाजै ?

६१८. कदे ई हींजड़ां नै कतार लूटतां देखी नीं ।
हिजड़ों ने भला किस दिन कतार लूटी थी ?
कापुरुष कभी कोई वीरता का कार्य नहीं कर सकते ।

संदर्भ कथा—एक गांव से थोड़ी ही दूरी पर एक ऐसा रास्ता निकलता था, जहां से होकर कतारें गुजरा करती थीं । उस गांव के कुछ लोग उधर से गुजरने वाली कतारों को लूटने का ही काम किया करते थे । उनकी देखा-देखी उस गांव में रहने वाले हिजड़ों ने भी एक मत होकर कतारों को लूटने का निश्चय किया । योजनानुसार उन्होंने रात्रि को डाकुओं का वेश बनाया और जैसे हथियार मिल सके उन्हें लेकर वे सब उस रास्ते पर जा खड़े हुए । आधी रात के बाद एक कतार उधर से गुजरी तो उन्होंने कतारियों को डपटते हुए कहा कि जान प्यारी हो तो ऊंटों को यहीं छोड़ कर भाग जाओ । उस स्थान का ऐसा आतंक छाया हुआ था कि एक ऊंट पर एक ठाकुर को छोड़ कर शेष सारे लोग भाग गये । डाकू वेशधारी हिजड़ों ने ठाकुर से भी भाग जाने को कहा । लेकिन वह तलवार निकाल कर अपनी जगह पर डटा रहा और डाकुओं को ललकारते हुए बोला कि तुम सामने आ जाओ, मैं तुम्हारी तरह हिजड़ा नहीं हूँ जो भाग जाऊं । हिजड़ों ने सोचा कि इसने हमें पहचान लिया है । उनकी हिम्मत टूट गई और वे तालियां बजाते हुए और "भला पिछाण्या जी 'क भला पिछाण्या जी" कहते हुए वहाँ से भाग गये ।
रू० हींजड़ा किसै दिन कतार लूंटी ही ?

६१९. कदे 'क कहती नूर महम्मद, कदे 'क कहती है नूरा ।
अब तो रंडी यूं उठ बोली, भैंस चराल्या वे नूरा ।।
धन सम्पत्ति के समाप्त हो जाने पर स्त्री भी पति का अपमान करने लगती है ।

संदर्भ कथा—मियां नूर मुहम्मद के पास पहले बहुत धन था । लेकिन धीरे-धीरे वह गरीब हो गया और अब उसकी बीबी भी बात-बात पर उसका निरादर करने लगी । एक दिन उसने अपने पति से कहा—अबे ! यहाँ बैठा क्या करता है, भैंस को जंगल में ले जा कर चरा क्यों नहीं लाता ? बीबी की बात सुन कर उसे बड़ा दुःख हुआ और उपरोक्त कहावती पद उसके मुँह से बरबस निकल पड़ा ।

६२०. कदे 'क दूध बिलाई पीज्या, कदे 'क रहज्या काचो ।
कदे 'क नार बिलोवै कोनी, कदे 'क चूंघज्या बाछो ।।
घर में गाय होने पर भी गृह-स्वामी को कभी दूध-दही नहीं मिल पाता । कभी दूध को बिल्ली पी जाती है तो कभी वह कच्चा रह जाता है । कभी घर वाली बिलौना नहीं डालती तो कभी बच्छा चूंघ जाता है ।
साधनों के बावजूद कार्य सिद्धि में एक न एक बाधा का उपस्थित होते रहना ।

६२१. कदे गधो गूण पर तो कदे गूण गधै पर ।
कभी गधा बोरे पर तो कभी बोरा गधे पर ।
समय-समय की बात ।

६२२. कदे गाडो न्याव में तो कदे न्याव गाडै में ।
कभी गाड़ा नाव में तो कभी नाव गाड़े में ।
आवश्यकतानुसार हर चीज का अपना महत्त्व होता है ।

६२३. कदे घी घणां तो कदे मुट्ठी चणां ।
कभी घी से तर भोजन प्राप्त होता है तो कभी मुट्ठी भर चने भी कठिनता से मिल पाते हैं ।
सब दिन एक समान नहीं रहते ।

६२४. कदे दिन वड़ा, कदे रात ।
कभी दिन बड़े होते हैं, कभी रात ।
मनुष्य जीवन में समय का उतराव-चढाव आता ही रहता है ।
रू० कोई समैं का दिन बड़ा, कोई समैं की रात ।

६२५. कदे न घोड़ा हींसिया, कदे न खींच्या तंग ।
कदे न रांड्या रण चढ्या, कदे न बाजी बंब ।।
कायर कभी वीरतापूर्ण कार्य नहीं कर सकते ।

६२६. कदे न भोपा रण चढ़ै, सदां बजावै संख ।
देवी-देवताओं के भोपे कब रण में चढते हैं और कब रण-वाद्य बजाते है ? वे तो सदा पूजा-वाद्य के रूप में देवी-देवताओं के सामने शंख ही बजाया करते हैं ।

६२७. कदे बिल्लो रांड नै मंगळ गाया देख्या नीं ।
बिल्ली को कभी मंगल-गान गाते नहीं देखा, वह तो सदा म्याऊं-म्याऊं ही करती है ।
कुटिल व्यक्ति से कभी किसी का भला नहीं होता ।

६२८. कदे सासरै गई न भू कुहाई ।
न कभी सुसराल गई और न बहू कहलाने की नौबत आई ।
रू० (१) कळ खायो न बळ आयो ।
सासरै गई न भू कुहाई ।।
(२) खळ खाई न मळ आई ।
सासरै गई न भू कुहाई ।।

६२९. कदे सेर नै ई सवा सेर मिलज्या ।
बदमाश को कभी न कभी उससे भी ज्यादा बदमाश मिल जाता है जो उसे सीधा कर देता है ।

सदर्भ कथा—एक आदमी चोरी से दूसरे के बाग में से आम तोड़ कर लाया करता था। आम के वृक्ष के पास जाकर वह उससे पूछता, "अम्बसार, अम्बसार, लेलूं दो चार ?" फिर स्वयं ही स्वीकृति दे देता, "ले ले दस-बीस यार।" बाग के मालिक ने एक दिन छिप कर सारी लीला देखली और चोर को पकड़ लिया। फिर उसने अपनी लाठी से पूछा, "लट्ठसार, लट्ठसार, लगाऊं दो चार ?" और फिर अपने से ही कह दिया, "लगादे, दस-बीस यार।" यों कह कर जैसे ही उसने चोर को लट्ठ जमाने शुरू किये, वह घिघियाने लगा और फिर कभी आमों की चोरी न करने की प्रतिज्ञा करके वहां से चला गया।

६३०. **कनफड़ा दोनूं दीन बिगाड़्या।**
कनफटे साधु दोनों तरफ के ही न रहे।
योग न सधने पर वे पुनः गृहस्थ में भी नहीं आ सकते क्योंकि कान फटे होने से उनकी पहचान स्पष्ट हो जाती है।

६३१. **कन्या फूलै, तुल फळै, वृश्चिक ल्यावै लाण।**
कन्या राशि में फूल उत्पन्न हों, तुला राशि में फल लगें तो वृश्चिक राशि में फसल काटो।

६३२. **कपड़ा फाट गरीबी आई, जूती फाटी चाल गमाई।**
फटे कपड़े पहनने से गरीबी प्रकट होती है, फटे जूते पहनने से चाल बिगड़ती है।

६३३. **कपड़ा सपेत अर घोड़ा कुमेत।**
पुरुष की पोशाक सफेद अच्छी और घोड़े का रंग कुमेत अच्छा।

६३४. **कपड़ै को पेट मोटो।**
कपड़े के व्यापार में अधिक मुनाफे की गुंजाइश रहती है।

६३५. **कपड़ो कवै—तूं मेरी इज्जत राख, मैं तेरी इज्जत राखूं।**
कपड़ा मनुष्य से कहता है कि यदि तुम मेरी इज्जत रखोगे अर्थात् मुझे साफ-सुथरा रखोगे तो मैं तुम्हारी इज्जत रखूंगा।

६३६. **कपड़ो पैरै तीन वार, बुध भिसपत शुकरवार।**
नूतन वस्त्र बुध, बृहस्पति और शुक्रवार को पहनने चाहिएँ।

६३७. **कपूत कलाळ कै जावै अर सपूत सुनार कै।**
कुपुत्र कलाल के यहाँ शराब पीने जाता है जिससे बाप-दादों की अर्जित सम्पत्ति और कीर्ति नष्ट होती है। सुपुत्र आभूषण बनवाने हेतु सुनार के यहाँ जाता है जिससे सम्पत्ति तो सुरक्षित होती ही है साथ ही घर की इज्जत भी बढती है।

६३८. कपूत जायो भलो न आयो।
कुपुत्र न घर में जन्मा हुआ अच्छा होता है, न गोद आया हुआ।
रू० (१) कुपातर जायो भलो न आयो।
(२) कुमाणस आयो भलो न जायो।

६३९. कपूत दूसरां नै कुमा कर घालै।
कुपुत्र घर वालों को तो निहाल नहीं करता, लेकिन दूसरे लोग बातें बनाकर उससे अपना काम करवा लेते हैं।

६४०. कपूत सैं तो निपूती भली।
कुपुत्र को पैदा करने की अपेक्षा तो स्त्री का पुत्र-प्रसव न करना ही अच्छा।

६४१. कब्बर दीख्यां सबर आवै।
मनुष्य की लालसाओं का अन्त उसके मरने पर ही होता है।

६४२. कवित्त सोवै भाट नै, खेती सोवै जाट नै।
कवित्त रचना भाट को और खेती करना जाट को शोभा देता है।

६४३. कबूतर नै कूवो ई दीखै।
विपत्ति पड़ने पर गरीव को तो अपना आश्रयदाता ही सूझता है और वह दौड़ कर उसी के पास जाता है।

६४४. कम खाणो अर गम खाणो चोखो।
कम खाना और गम खाना दोनों ही लाभप्रद होते हैं।

६४५. कम खालेणो, पण कम कायदै नईं रैणो।
कम आय पर निर्वाह कर लेना अच्छा, लेकिन इज्जत गँवा कर रहना अच्छा नहीं।

६४६. कमजोर की लुगाई, सैंकी भौजाई।
कमजोर की औरत सब की भाभी।
रू० चोदू की जोरू गाँव की भाभी।

६४७. कमजोर गुस्सा जादा, अैई मार खाणैं का इरादा।
कमजोर होते हुए भी अधिक गुस्सा दिखलाने पर आदमी पिट जाता है।
रू० कमजोर गुस्सो भारी, मार खावण की त्यारी।

६४८. कमर तपै जद सूत कतै।
सूत कातने के लिए कमर तपानी होती है अर्थात एक स्थान पर लम्बे समय तक जम कर बैठना होता है।

६४९. कमाई करम की, इज्जत भरम की, लुगाई सरम की।
कमाई भाग्य से होती है; जब तक भ्रम बना रहे तभी तक इज्जत है और जब तक शील-संकोच बना रहे तभी तक स्त्री, स्त्री है।

६५०. **कमाई गैल समाई ।**
आय के अनुसार ही व्यय करने की सामर्थ्य होती है ।
आय के अनुरूप ही व्यय करना ठीक रहता है ।

६५१. **कमाऊ आवै डरतो, निखट्टू आवै लड़तो ।**
कमाने वाला तो घर मे डरता हुआ प्रवेश करता है, लेकिन निखट्टू जो कभी कानी कौड़ी नहीं कमाता, वह लड़ाई-झगड़ा करते ही आता है । कमाऊ को हर समय इज्जत-आबरू का खयाल रहता है, लेकिन निखट्टू की बला से !

६५२. **कमा कर खाणै में दोस कोनी चोरी करणै में दोस है ।**
छोटा-बड़ा कोई भी काम करके आजीविका कमाना बुरा नहीं, चोरी करना बुरा है ।

रू० काम को छोटै-बडै को लंजण कोनी, चोरी अन्याई को लंजण है ।

६५३. **कमावै तो वर, नईं आगै ई मर ।**
यदि कमाने की हिम्मत हो तो किसी की कन्या का वरण करो अन्यथा बिना ब्याहे ही मर जाओ ।

रू० कमावै तो वर, नई तो माटी रो ई ढळ ।

६५४. **कमावै थोड़ो, खरचै घणो, पैलो मूरख उण नै गिणो ।**
आय से अधिक व्यय करने वाले की गिनती अव्वल दर्जे के मूर्खों में होती है ।

६५५ **कमेड़ी बाज नै कद जीतै ?**
कमेड़ी कभी बाज को नहीं जीत सकती ।
निर्बल व्यक्ति सबल को नहीं जीत पाता ।

६५६. **कम्मर को मोल है, तलवार को मोल कोनी ।**
तलवार की अपेक्षा उसे धारण करने वाले की शक्ति और सामर्थ्य का मूल्य अधिक होता है ।

संदर्भ कथा—एक सेठ ऊंट पर सवार होकर कहीं जा रहा था । सुरक्षा की दृष्टि से उसने एक विश्वस्त ठाकुर को भी साथ लेलिया था । राह में उन्हें दो डाकू मिले । उन्होंने सेठ को लूटना चाहा । लेकिन ठाकुर ने अपनी तलवार से दोनों को मार डाला । सेठ ने ठाकुर की प्रशंसा की तो ठाकुर बोला कि यह सब इस तलवार के भरोसे पर ही संभव हो पाया है, इसके एक-एक वार में ही दोनों काम आये ।

सेठ ने मुँहमाँगी कीमत देकर ठाकुर से वह तलवार ले ली और उसे अपनी हवेली के कमरे में खूंटी से लटका कर चोर-डाकुओं की तरफ से निश्चिंत हो गया । एक रात को सेठ की हवेली में चोर घुसे । सेठ जाग गया और उसने तलवार को आदेश दिया कि वह चोरों को मार डाले और जैसा

करतब उसने ठाकुर के साथ रहते हुए दिखलाया था, वैसा ही फिर दिखलाये। लेकिन तलवार तो टस से मस भी नहीं हुई। चोर काफी मालमत्ता ले गये और तब सेठ की समझ में यह बात आई कि वस्तुतः कीमत तलवार की नहीं, उसे धारण करने वाले की सामर्थ्य और बहादुरी की है।

६५७. **करंता सो भोगंता, खोदंता सो पड़ंता।**
जो जैसा करता है, उसे वैसा ही फल भोगना पड़ता है; जो दूसरों के लिए खाई खोदता है, वह स्वयं ही उसमें गिरता है।

सन्दर्भ कथा—बादशाह का वजीर वेश बदले नगर में घूम रहा था कि उसने एक लड़के को गड्ढा खोदते देखा। वजीर ने उससे गड्ढा खोदने का कारण पूछा तो लड़का बोला—इससे तुम्हें क्या प्रयोजन है? जो करेगा सो भरेगा, जो खोदेगा सो पड़ेगा।

वजीर को वह लड़का होनहार दिखलाई पड़ा, अतः वह उसे अपने यहाँ ले आया और उसे पढाने-लिखाने लगा। स्वयं वजीर के भी एक उतना ही बड़ा लड़का था, लेकिन वह इस लड़के की तुलना में मन्द-बुद्धि था। इससे वजीर को ईर्ष्या हो गई और उसने उस लड़के को मरवा देने का निश्चय कर लिया। वजीर ने एक कसाई के घर जाकर कहा कि थोड़ी ही देर में तुम्हारे घर एक लड़के को भेजूंगा सो उसे आते ही मार डालना। घर लौट कर वजीर ने उस लड़के को एक रुपया देकर उस कसाई के यहां से मांस लाने के लिए भेजा। जब वह जा रहा था तो उसे राह में वजीर का लड़का मिला जो अन्य लड़कों के साथ खेल रहा था और सात बाजियां हार चुका था। उसने अपने सहपाठी को अपने पास बुला कर कहा कि तुम मेरी जगह खेलो, मांस मैं ला देता हूँ। वजीर का लड़का मांस लाने के लिए कसाई के घर पहुँचा और कसाई ने उसे तुरंत मार डाला। बाद में जब वजीर को इस घटना का पता चला तो उसके मुँह से हठात् निकल पड़ा—करंता सो भोगंता, खोदंता सो पड़ंता।

रू० करै सो भरै, खोदै सो पड़ै।

६५८. **करक मैदै को के भाव? 'क चोट जाणिये।**
किसी ने पंसारी से पूछा कि कर्क मैदा का क्या भाव? पंसारी ने उत्तर दिया कि चोट के अनुसार।
वस्तु की वास्तविक कीमत की अपेक्षा गर्जमन्द की मजबूरी से अधिक लाभ प्राप्त करने की प्रवृत्ति।

६५९. **करणो आपो आप को, के बेटो के बाप।**

संदर्भ कथा—अपना पेट भरने और अपने कुटुम्ब को पालने के लिए एक आदमी ने डकैती का धंधा अख्तियार कर रखा था। वह राहगीरों को

लूट कर उनका धन तो छीन ही लेता था, साथ ही उन्हें मार भी डालता था कि जिससे न रहे बांस, न बजे बांसुरी।

एक दिन उसने किसी साधु को पकड़ लिया और उसे मारने को तत्पर हुआ तो साधु ने उससे पूछा कि यह सब तुम किस लिए करते हो ? डाकू ने उत्तर दिया कि अपने कुटुम्बियों को पालने के लिए। साधु ने फिर पूछा कि जो कुछ तुम्हें लूट-पाट में मिलता है, उसमें तो उन सब का हिस्सा होता है, लेकिन इस प्रकार के दुष्कृत्य से जो पाप होता है, क्या वे सब भी उसमें भागीदार बनते हैं ? इस बात का उत्तर पाने के लिए वह अपने घर पर गया और उसने अपने बेटों से, स्त्री से एवं अन्य सब लोगों से भी यह प्रश्न पूछा। सब का एक ही उत्तर था कि जो पाप करेगा, उसका फल तो स्वयं उसे ही भोगना पड़ेगा। यह सुनकर उसकी आंखें खुल गईं और उसने लूट-पाट एवं हत्या करना छोड़ दिया।

६६०. **करणी जिसी भरणी।**
जैसी करनी, वैसा ही फल।

६६१. **करणी पार उतरणी।**
अपनी करनी के सहारे ही मनुष्य पार उतर सकता है।

६६२. **करणो अर मरणो बराबर।**
आलसी व्यक्ति को काम करते मौत आती है अर्थात् उसके लिए काम करना और मरना बराबर है।
रू० करणो मरणै सें दोरो।

६६३. **करणो राम को, बोनती आप की।**
करना-कराना तो सब भगवान् के हाथ है, मनुष्य तो केवल उससे विनती कर सकता है।

६६४. **करत विदया है।**
निरन्तर अभ्यास से आदमी कठिन काम में भी प्रवीणता प्राप्त कर लेता है।

६६५. **करता कै संग कीजिए, सुण रै राजा भील।**
सोनै कै घुण लागग्या, तो छोरै नै लेगी चील॥
हे राजा भील सुनो ! जो अपने साथ जैसा व्यवहार करे, बदले में उसके साथ भी वैसा ही व्यवहार करना चाहिए। यदि सोने को घुन लग गये तो लड़के को भी चील झपट ले गई।

संदर्भ कथा—एक आदमी सपरिवार तीर्थ-स्नान के लिए जाने लगा तो घर के सारे स्वर्ण-आभूषण अपने पड़ोसी को संभला गया। लेकिन पड़ोसी की नीयत खराब हो गई और उसने उन लोगों के लौटने पर कह दिया कि तुम्हारे आभूषणों को तो घुन लग गये और वे सारे के सारे आभूषणों का

भक्षण कर गये। बात असंभव थी, लेकिन वे चुप मार गये। दो चार दिन के बाद जब उसका छोटा लड़का उनके घर खेलने के लिए आया तो उन्होंने लड़के को छिपा दिया और पड़ोसी के पूछने पर कह दिया कि लड़के को एक चील उठा ले गई। वह शिकायत लेकर राजा के पास पहुँचा तो राजा ने उसके पड़ोसी को तलब किया। उसने दरबार में पहुँच कर सारी स्थिति बतलादी। राजा समझ गया कि वादी ने प्रतिवादी के आभूषण दबा लिए हैं और प्रतिवादी ने बदले में उसके लड़के को छिपा दिया है। इसलिए उसने प्रतिवादी को उसके आभूषण और वादी को उसका लड़का दिलवा दिया।

इसी से मिलती जुलती एक और कथा है जिसका पद्य इस प्रकार है—

अेकै ठगणी ठग ठग्या, ठगणी नै ठगली ठगां।
लोह नै खाग्या ऊंदरा, तो बाई नै चुगली बुगां।।

६६६ **करता गरू, न करता चेला।**

निरन्तर अभ्यास करते रहने से अकुशल व्यक्ति भी कुशल बन जाता है और अभ्यास छोड़ देने पर कुशल व्यक्ति की क्षमता भी घट जाती है।

रू० करता उस्ताद, न करता सागिर्द।

६६७. **करतै सें न करै जिको बावळो, अर नै करतै सें करै जिको बावळो।**

जो अपने साथ जैसा करे, उसके साथ वैसा ही सलूक करना चाहिए। जो अपने साथ बुराई करे, उससे चूकना नहीं चाहिए और अपने साथ जो बुराई न करे, उसके साथ अपने को भी बुरा बर्ताव नहीं करना चाहिए।

६६८. **करतै सें न करै, वींको गुर पीर झूठो।**

अपना बुरा करने वाले से जो चूके, उसके गुरु और पीर दोनों ही झूठे।

६६९. **कर भला, हो भला।**

दूसरे का भला करोगे तो स्वयं का भी भला होगा।

६७०. **करम अर छियां सागै ई रवै।**

साया और भाग्य मनुष्य के साथ ही रहता है।

६७१. **करम कमेड़ी को सो, मन राजा को सो।**

भाग्य तो कमेड़ी जैसा क्षुद्र और आकांक्षाएं बहुत बड़ीं!

६७२. **करम कै कारी कोनी लागै।**

फूटे भाग्य का कोई उपचार नहीं।

६७३. **करम चलैगो दो डग आगै।**

प्राणी का भाग्य उससे सदैव दो कदम आगे ही रहता है।

६७४. **करम फूटे नै भाग फूट्यो ई मिलै।**

करम हीन को भाग्य हीन ही मिलता है।

रू० (१) करम फूटे नै भाग फूट्यो सौ कोस की ऊँठाई खाकर ई मिलज्या।
(२) रोवतै नै वार घालतो ई लावै।

६७५ **करम फूव्या रै केसवा, गूंदी कै लाग्या ल्हेसवा।**
भाग्य के विपरीत होने पर अनहोने काम होते हैं।

६७६. **करम में ग्यारस तो कठै लिखी है, पण सागार तो ल्यूं 'क ?**
भाग्य में एकादशी का व्रत करना तो कहाँ बदा है, लेकिन शाकाहार तो लेलूं। कष्ट उठाने के लिए इनकार, लाभ में तैयार।

संदर्भ कथा—सास ने बहू से पूछा कि बहू, आज एकादशी है, क्या तुम व्रत रखोगी ? बहू ने चतुराई से टालते हुए कह दिया—ना जी, एकादशी के व्रत का पुण्य-लाभ मेरे भाग्य में कहाँ बदा है ? लेकिन जब शाकाहार का समय हुआ तो बहू भी सास के पास आ बैठी और बोली कि एकादशी का व्रत तो भाग्य में नही लिखा सो नहीं लिखा, लेकिन शाकाहार तो ले ही लूं, क्या इतना भी न करूं ?

६७७. **करम में लिख्या कंकर तो के करै स्योसंकर।**
यदि स्वयं के भाग्य ही फूटे हुए हों तो भगवान् शंकर भी क्या करें ?

सन्दर्भ कथा—एक बूढा और उसकी बुढिया जंगल से लकड़ियां लाकर शहर में बेचते और अपने पेट पालते थे। एक दिन जिस रास्ते से वे लकड़ियों के भार लेकर जा रहे थे, उसी रास्ते से शिव-पार्वती भी गुजर रहे थे। उन दोनों की दशा देख कर पार्वती को बड़ी दया आई। उन्होंने शिवजी से कहा कि आप इन्हें धन दीजिए। शिवजी ने उत्तर दिया कि इनके भाग्य में धन लिखा ही नहीं है तो मैं कैसे दूं ? लेकिन पार्वती नहीं मानी तो शिवजी ने रुपयों से भरी एक थैली उनकी राह में डालदी।

उधर उन दोनों ने विचार किया कि हम बूढे तो हो गये लेकिन यदि अन्धे भी हो जाएँ तो कैसे चल पाएँगे। इस बात का तजरुबा करने के लिए वे दोनों अंधे-अंधी बन कर चले और रुपयों की थैली को उलांघ कर निकल गये। इस पर शिवजी ने पार्वती से कहा कि देखलो, रुपयों की थैली भर कर इनके आगे डालदी तो भी ये उसे उठा नहीं पाये।

६७८. **करमहीण खेती करै, क काळ पड़ै कै बळद मरै।**
भाग्य हीन व्यक्ति खेती करता है तो या तो अकाल पड़ जाता है अथवा उसका बैल मर जाता है।
हतभाग्य व्यक्ति का कोई कार्य सिद्ध नहीं हो पाता।

६७९. **करम ही रांड्यो तो के करै बापड़ो पांड्यो ?**
यदि यजमान का भाग्य ही फूटा हुआ हो तो बेचारा ज्योतिषी क्या करे ?

६८०. **करम हो कपूत तो सपूत नर के करै ।**
यदि भाग्य साथ न दे तो सुयोग्य व्यक्ति भी सफल नहीं हो पाता ।

६८१. **करमां का फोढ कठै जावै ।**
अपने कर्मों के फल तो भोगने ही पड़ेंगे ।

६८२. **करमां में घोड़ी लिखी तो खोल कूण ले जाए ?**
यदि भाग्य में घोड़ी लिखी है तो उसे खोल कर कौन ले जा सकता है ?

संदर्भ कथा—गारवदेसर (बीकानेर) के ठाकुर किसनसिंह भगवान् के भक्त थे । एक रात को उनके यहां चोर घुसे और उनकी घोड़ी को खोल कर ले जाने लगे । ठाकुर के सेवक देवा ने चोरों को देख लिया और उसने ठाकुर से यह बात कही तो ठाकुर ने उत्तर दिया—

देवा दुवधा दूर कर, हर चरणां चित लाय ।
मस्तक में घोड़ी लिखी, तो खोल कूण ले जाय ?

और हुआ भी ऐसा ही । चोर भटक गये और घूम-फिर कर ठाकुर के घर ही आ गये । उन्होंने ठाकुर से क्षमा मांग कर घोड़ी उनको संभला दी ।

६८३. **कर ये महती मालपुआ, वोहरो लेसी हुया-हुया ।**
मुफ्तखोर पति अपनी पत्नी से कहता है कि खूब माल-पूये बनाओ और गुलछर्रे उड़ाओ । हमारे पास कुछ होगा तभी तो वोहरा हमसे अपने ऋण की अदायगी करेगा, नहीं तो क्या लेगा ?
उधर लाकर भी गुलछर्रे उड़ाने की प्रवृत्ति ।

६८४. **करले सो काम अर भजले सो राम ।**
काम और भगवान् का भजन जितना कर लिया जाए, वही अपना है ।

६८५. **करातो को मन होवै, जिसो ब्यातो को कोनी होवै ।**
गर्भ धारण करते समय जैसा मन होता है, वैसा प्रसव करते समय नहीं होता ।

६८६. **करा तो ली, पण ढकसी कूण ?**
किवाड़ करवा भी लिये हैं तो उन्हें बंद कौन करेगा ?
साधन जुट जाने पर भी फूहड़ व्यक्ति उनका उपयोग नहीं कर पाता ।

सन्दर्भ कथा—एक फूहड़ स्त्री के घर की पोली के किवाड़ नहीं थे, इसलिए उसके घर में कुत्ते वे-रोक आते-जाते थे और जो कुछ इधर-उधर रखा मिल जाता, खा जाते । उसका पति दिसावर से आया तो घर की दुर्दशा देख कर उसे बड़ा अफसोस हुआ और उसने पोल के किवाड़ बनवा दिये । इससे कुत्तों में बड़ी घबराहट फैल गई कि गाँव में उनका एक मात्र आश्रय-स्थल ही बंद हो गया और उन्होंने उस गाँव को छोड़कर रेवाड़ी जाने का निश्चय कर लिया । लेकिन जब वे चलने को हुए तो काने कुत्ते ने शकुन

विचार कर शेप कुत्तों से कहा—यह तो ठीक है कि फूहड़ के घर में किवाड़ लग गये हैं, लेकिन उन्हें वंद कौन करेगा ? वे तो सदा खुले ही पड़े रहेंगे और हम सव उसके घर में पहले की तरह ही निर्वाध प्रवेश करते रहेंगे। इसलिए हमें कहीं भी जाने की आवश्यकता नहीं है।

पद्य—फूड़ कै घर होई किंवाड़ी,
कुत्ता रळ कर चाल्या रिवाड़ी,
काणियें कुत्तै लीन्या सूण,
करा तो ली पण ढकसी कूण ?

६८७. **करी नईं तो कर देखो, करी जिकां का घर देखो।**
बुरे कामों का नतीजा वुरा ही होता है। किसी ने न किये हों तो करके देखले अथवा जिन्होंने किये हैं उनके घर देख लें।

६८८. **करी नेकी, पाणी में फेंकी।**
किसी का उपकार करके उसे उसी क्षण भूल जाना चाहिए।

६८९. **करेलो अर नीम चढ्यो।**
करेला स्वयं ही कड़वा होता है; फिर नीम पर चढने के वाद तो कहना ही क्या ?
रू० गिलोय अर नीम चढी।

६९० **करै आसकी, खालाजी को डर ?**
आशिकी भी करे और खालाजी का डर भी सताये ? दोनों वातें साथ नहीं निभ सकतीं।

६९१. **करै कोई भरै कोई।**
अपराध कोई करे और दण्ड कोई भोगे।

६९२. **करै जिकै नै छाजै, बाकी का मूंड घेसळा वाजै।**
जिसका जो काम हो, वही उसे ठीक तरह से कर सकता है और उसे ही वह फवता है। यदि कोई अनधिकार चेष्टा करता है तो हानि ही उठाता है।

सन्दर्भ कथा—एक धोवी के घर में रात को चोर घुसे। धोवी ने उस दिन कुत्ते को पीटा था और खाना भी नहीं दिया था, इसलिये कुत्ता चोरों को देख कर भी नहीं भौंका। धोवी के गधे ने कुत्ते से भौंक कर मालिक को जगाने का आग्रह किया, लेकिन कुत्ता नहीं माना। इस पर मालिक को जगाने के लिए गधा खूव जोरों से रेंका। मालिक मीठी नींद में सो रहा था, उसकी नींद टूट गई। चोरों की वात तो उसे ज्ञात नहीं हो पाई, लेकिन नींद टूट जाने के कारण वह लट्ठ लेकर गधे पर पिल पड़ा। तभी कहा है—

आप आप का जामा कामा, करै जिकै नै छाजै।
कूकर काज गधो करै, जद मगरां मूसळ वाजै॥

६६३. **करै जिको कंवै कोनी ।**
करने वाला डींग नहीं हांकता, वह करके ही दिखलाता है ।

६६४. **करै पाप तो खावै धाप, करै धरम तो फूटै करम ।**
कलियुग में जो पाप करते हैं, वे मौज उड़ाते हैं और जो धार्मिक मान्यताओं को लेकर चलते हैं, वे कष्ट उठाते हैं ।

६६५. **करै सो पावै, वावै सो लूणै ।**
जो जैसा करता है, वैसा ही पाता है; जैसा बोता है, वैसा ही काटता है । इस संदर्भ की एक छोटी वाल कथा भी है—

चीड़ी चीख मारती, कागलियोजी सुणै ।
साची कथी है सायरां, वावै सो लूणै ।।

६६६. **करो कोई लाख, करइयो एक और है ।**
मनुष्य चाहे लाख करले, लेकिन करने वाला कोई और ही है अर्थात् परमात्मा की इच्छा से ही सब कुछ होता है ।

६६७. **करोत आवती भी काटै, जावती भी काटै ।**
दुष्ट व्यक्ति आता है तो भी हानि पहुँचाता है और जाता है तो भी हानि पहुँचाता है । लोभी वोहरा ऋण देते समय भी कटौती करता है और ऋण की भरपाई करते समय भी ।

६६८. **करो वेटा फाटका, घर का रंवौ न घाट का ।**
सट्टा करने वाला न घर का रहता है न घाट का । सट्टे-फाटके में सब कुछ गँवा देने पर भी किसी अन्य काम में उसका जी नहीं लगता ।
रू० करो वेटा फाटका, वेचो थाळी-वाटका ।

६६९. **करो बेटा फाटका, पीवो दूध का वाटका ।**
सट्टा करने वाले को कभी-कभी आशातीत लाभ हो जाता है तो वह दूसरों से भी कहता है कि सट्टा करोगे तो मौज उड़ाओगे ।

७००. **करो सेवा तो पावो मेवा ।**
सेवा करोगे तो मेवा पाओगे ।
रू० करोगा वंदगी तो पावोगा चंदगी ।

७०१. **कलकत्तै को धारो, बाप सें बेटो न्यारो ।**
कलकत्ते का यही नियम है कि वाप और वेटा भी अलग-अलग रहते हैं ।

७०२. **कलकत्तै नई जाणा, यारो भँर खाय मर ज्याणा ।**
कलकत्ता जैसी खर्चीली महानगरी में सामान्य स्थिति वाले मनुष्य का रहना अत्यन्त कष्टपूर्ण होता है । इसलिए वह कहता है कि कलकत्ता जाकर रहने की अपेक्षा तो विष खाकर मर जाना अच्छा है ।

७०३. कळजुग में झूठ फळापै ।

कलियुग में झूठ बोलने से फल की प्राप्ति होती है ।

संदर्भ कथा—एक सेठ बहुत मालदार था। उसने अपने एक गरीब मित्र को काम-धंधा करने के लिए दो हजार रुपये उधार दिये थे। कुछ समय बाद सेठ मर गया और उसके मरने के बाद शीघ्र ही उसका सारा कारोबार चौपट हो गया। स्त्री और बच्चों को दो जून भोजन मिलना भी दूभर हो गया। उधर सेठ के उस गरीब मित्र के पास अपार सम्पदा हो गई। एक दिन मृत सेठ की विधवा अपने एक मात्र छोटे से पुत्र को साथ लेकर नये सेठ के यहाँ पहुँची और उससे अपने पति द्वारा दिये गये रुपयों की मांग की। लेकिन नये सेठ ने उसे दुत्कारते हुए कहा कि मेरे पास रुपयों की क्या कमी थी जो मैं तुम्हारे पति से दो हजार रुपये उधार लेता। पास बैठे हुए लोगों ने भी उसकी बात का समर्थन किया और सेठ की विधवा से कहा कि तुम्हारे पास कोई सबूत या लिखा-पढ़ी हो तो दिखलाओ। विधवा ने उत्तर दिया कि मेरे पास कोई लिखा-पढ़ी तो नहीं है, लेकिन यदि मैं झूठ बोलती होऊं तो मेरा यह इकलौता लड़का मर जाए। उसके इतना कहते ही लड़का तुरन्त मर गया और सभी लोग उसे झूठी मान कर उसकी भर्त्सना करने लगे।

वह बेचारी अपने भाग्य को कोसती हुई सेठ की हवेली से बाहर निकल आई। बाहर आने पर उसे पुरुष वेश में 'कलियुग' मिला। विधवा ने उसके सामने अपना दुखड़ा रोया तो वह बोला कि तुमने सत्ययुग की बात कही, इसलिए तुम्हारा लड़का मर गया। यह युग मेरा है अर्थात् कलियुग है और इसमें झूठ बोलने से ही फल की प्राप्ति होती है। अब तुम पुन: सेठ के पास जाकर कहो कि मेरे पति ने तुम्हें बीस हजार रुपये दिये थे, मैंने भूल से दो हजार बतला दिये और इसीलिए मेरा लड़का मर गया। यदि मेरे पति ने तुम्हें बीस हजार रुपये दिये हों तो मेरा लड़का तुरन्त जी उठे। विधवा ने वैसा ही किया। लड़का जी उठा और नये सेठ को झख मार कर बीस हजार रुपये मृत सेठ की विधवा को देने पड़े।

७०४. कलम दीवानी बह गई, क्या बंदे का सा'रा ?

दीवानी कलम ने जो लिख दिया सो लिख दिया, बंदा उसमें अब कुछ भी रद्दो-बदल नहीं कर सकता।

सन्दर्भ कथा—एक बार जोधपुर के राजा ने किसी चारण को बीलाड़ा नामक गाँव दिया। चारण जब गाँव का पट्टा लिखने वाले काजी के पास गया तो काजी ने चारण से अपनी 'दस्तूरी' मांगी। लेकिन चारण ने कहा कि मुझे यह गांव महाराजा ने दिया है, इसमें तुम्हारी दस्तूरी कैसी ? तब काजी ने चारण से कहा कि बीलाड़ा में क्या धरा है, तुम चाहो तो बीलाड़ा

के स्थान पर बांजरगढ का पट्टा लिख दूं ? बांजरगढ का नाम सुन कर चारण खुश हो गया और बोला, "बीलाड़ी पर पड़ो सीलाड़ी, म्हे तो लेस्यां बांजरगढ।" काजी ने बांजरगढ का पट्टा चारण के नाम लिख दिया। लेकिन जब चारण को इस बात का पता चला कि बांजरगढ तो नाम मात्र का ही बांजरगढ है और बीलाड़ा की तुलना में कुछ भी नहीं है तो वह फिर काजी के पास पहुँचा, लेकिन काजी ने उसे टरकाते हुए कह दिया, "कलम दीवानी बह गई, क्या बंदे का सा'रा ?"

७०५. **कळ सें कळ दबै।**

यथोचित दबाव पड़ने से कठिन काम भी सहजता से बन जाता है क्योंकि एक से एक दबता है।

७०६. **कळ सें होवै जिसो बळ सें कोनी होवै।**

युक्ति से जो काम आसानी से हो जाता है, वैसा बल से नहीं होता।

७०७. **कळसै पाणी गरम हो, चिड़ियां न्हावै धूळ।**
इंडा ले चींटी चढै, जद विरखा भरपूर॥

कलशों में भरा पानी गर्म हो जाय, चिड़ियां धूल में नहायें, कीड़ियां अपने अंडों को लेकर दीवारों पर चढने लगें तो जानो कि भरपूर वर्षा होगी।

७०८. **कळै कळासै, पैंडै को पाणी तासै।**

गृह-कलह से पानी–घर में रखा पानी भी त्रसित हो उठता है।

रू० (१) कळै कळासै, पैंडै को पाणी नासै।
(२) कळै कळाई कसै, पैंडै को पाणी हँसै।

७०९. **कळै को मूळ हांसी, रोग को मूळ खांसी।**

कलह का मूल हँसी और रोग का मूल खांसी।
कभी कभी हँसी बहुत बड़े झगड़े का कारण बन जाती है। इसी प्रकार खांसी से भी भयंकर रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

रू० राड़ को घर हांसी, रोग को घर खांसी।

७१०. **कवि चतारो पारधी, कामणगारी नार।**
इक्कल हट्टी बाणियों, पांचूं नरक दुआर॥

कवि, चित्रकार, पारधी, जादू-टोना करने वाली स्त्री और इक्कल हट्टी चलाने वाला बनिया ये पांचों नर्क के द्वार हैं।

रू० कवि चतारो पारधी, नट वेस्यां अर भट्ट।
आंस्यूं कपट न कीजिये, आंका रच्या कपट्ट॥

७११. **कस कर बांधै पागड़ी, घुरड़ लिवावै नूं।**
करड़ी पैरै मोचड़ी, अण मांग्या दुख यूं॥

खूब कस कर पगड़ी बांधना, नाखूनों को खूब घुरड़ कर कटवाना और तंग जूते पहनना ये तीनों ही बिना मांगे कष्ट है।

रू० करड़ी बांधै पागड़ी, घुरड़ लिवावै नक्ख ।
कसटी पैरै मोचड़ी, अण सिरज्या ई दुक्ख ।।

७१२. **कसाई कै दाणां नै बापड़ी बकरी कद खावै ?**
कसाई के अन्न को खाने की हिमाकत बकरी कब करे ?
रू० कसाई कै चून नै मींढो कद खावै ?

७१३. **कसाई रोवै मांस नै, बकरो रोवै जीव नै ।**
कसाई को मांस की पड़ी है और बेचारा बकरा अपने प्राणों को रो रहा है ।
रू० खटीक रोवै खाल नै, छाळी रोवै जीव नै ।

७१४. **कहूं चन्नण मलयागिरी, कहूं सायर कहूं नीर ।**
जाजा पड़ै अवत्यड़ी, सांसा सहै सरीर ।।
इस कहावत के पीछे कुसुमपुर के राजा चन्दन, उसकी रानी मलयागिरि एवं राजकुमार सायर व नीर की कथा है जो चारों बिछुड़ जाते हैं, अनेक कष्ट उठाते हैं, लेकिन अन्त में सबका मिलन हो जाता है तथा राजा को उसका राज्य मिल जाता है ।

७१५. **कहाणी बिनां किस्यो बरत ?**
कहानी के बिना कैसा व्रत ?
राजस्थान में प्रायः हर व्रत के साथ कोई न कोई कथा होती है जिसे व्रत करने वाली स्त्रियां आवश्यक रूप में सुनती हैं ।

७१६. **कांई चारण की चाकरी, कांई आरण की राख ?**
कांई भील को गावणों, कांई साटिये की साख ?
उपरोक्त चारों बातों का विशेष महत्व नहीं माना जाता ।

७१७. **कांकड़ आई कतार लुटगी ।**
गांव की सीमा में आने के बाद कतार लुट गई ।
मंजिल पूरी होते-होते विघ्न उपस्थित हो गया ।

७१८. **कांकड़ खेती करणी नई, बूढो बैल बिसाणो नई ।**
गांव की सरहद्द में खेती नहीं करनी चाहिए और बूढा बैल खरीदना नहीं चाहिए ।

७१९. **कांकड़ बाण्यों फारगती, गांव में ज्यूं का ज्यूं ।**
गांव की सीमा पर तो ऋण की फारखती, लेकिन गांव में बनिये का ऋण ज्यों का त्यों ।

सन्दर्भ कथा—एक बनिये का अपने पड़ोसी गांव के ठाकुर पर कुछ ऋण था । एक दिन बनिये ने ठाकुर से अधिक कहा-सुनी की तो ठाकुर एक निश्चित तिथि तक रुपये अदा कर देने का वादा करके चला गया । इसी बीच बनिया अपने लेन-देन के सम्बन्ध में पास के एक गांव में गया और जब

वह लौट रहा था तो अपने गांव की सीमा में प्रवेश करते समय उसी ठाकुर ने वनिये को पकड़ लिया एवं उसे ऋण की फारखती लिखने के लिए मजबूर किया। वनिया जानता था कि ठाकुर अनपढ है, इसलिए उसने अपने मन के मुताबिक फारखती लिख कर ठाकुर को दे दी। ठाकुर संतुष्ट होकर चला गया। अगले दिन ठाकुर उक्त वनिये की दुकान के सामने से अकड़ के साथ निकला। वनिये ने ठाकुर को पुकार कर उससे रुपये मांगे तो ठाकुर ने फारखती दिखलाई। लेकिन उसे व्याज सहित रुपये देने पड़े, क्योंकि फारखती में लिखा था—

भर ढळतां ठाकर मिल्या, म्हांनै जीव की जोख्यूं।
कांकड़ कांकड़ फारगती अर गांव में ज्यूं का ज्यूं।
जे ठाकर दुकान पर आज्या तो व्याज फळा कर पूरा ल्यूं।

७२०. **कांकरा फूंळा होवै तो गादड़ा ई कद छोड़ै ?**
यदि कंकड़ कोमल हों तो गीदड़ उन्हें कभी के चट कर जाएं।

७२१. **कांकरी की मारै जिको पंसेरी की खा।**
जो कंकड़ी की मारता है, उसे पंसेरी की मार सहनी पड़ती है।

७२२. **कां गोरख कां भरथरी, कां गोपीचंद गोड़।**
सिद्ध गयां ई पूजिये, सिद्ध रह्यां री ठोड़॥
सिद्ध पुरुषों के चले जाने के वाद भी उनके स्थानों की पूजा होती है। गोरखनाथ, भर्तृहरि और गोपीचंद कभी के चले गये, लेकिन उनके स्थान आज भी पूजे जाते हैं।

७२३. **कांच दवावण गई छोरै की, गैल सें घणी की और आ पड़ी।**
एक काम सुधरवाने गई, पीछे से दूसरा और विगड़ गया।

७२४ **कांचळी तो राणीजी की लेई, पण पसवाड़ा कीं का लेसी ?**
कंचुकी तो रानी जी से मांग कर लेली, लेकिन वगलें तो अपनी ही रहेंगी।

७२५. **कांजर की कुत्ती कठै जावती ब्यावै ?**
कंजर स्थायी रूप से एक स्थान पर न रह कर घूमते रहते हैं, अतः पता नहीं उनकी कुतिया कहां जाकर ब्याये ?

७२६. **कांट कंटीली झाड़खी, लागै मीठा बोर।**
झड़वेरी भले ही कांटों से युक्त हो, लेकिन उसमें मीठे वेर तो लगते हैं।

७२७. **कांटै कांटै वाड़, बचनां बचनां राड़।**
कांटों से वाड़ वनती है और दुर्वचनों से झगड़ा होता है।

७२८. **कांटै सें कांटो नीकळै।**
कांटे से कांटा निकलता है।

७२९. **कांटो गड़ै, वींकै ई रड़कै।**
कांटा जिसको चुभता है, उसी को सालता है।

७३०. **कांटो बुरो करील को ओर बदळी को घाम ।**
सोत बुरी है चून की ओर साझै को काम ।।
करील का कांटा बुरा, बदली की घाम बुरी, साझे का काम बुरा और सौत तो आटे की भी बुरी।

७३१. **कांदै आळा छूंतका, छोलै जिती ई बांस आवै ।**
प्याज के छिलके जितने छीलते जाएँगे, उतनी ही अधिक दुर्गन्ध आती जाएगी और अन्त तक छील डालने पर भी सार कुछ नहीं निकलेगा ।

७३२. **कांधै गेरी झोळी, भांवो गिणे न थोरी ।**
जब कंधे पर झोली डाल कर मांगने निकल गये तब ऊंच-नीच क्या देखना ?

७३३. **कांधै टाकर डांगरो बरस ब्यावणी नार ।**
कुवेलां को पावणो, तीन्यां को मुंह वाळ ।।
कंधे पर घाव वाला पशु (बैल आदि), हर साल प्रसव करने वाली स्त्री और बे वक्त का पाहुना इन तीनों से भगवान् बचाये ।
रू० कुवेळां की बीजळी, सुवेळां री पणिहार ।
फूहड़ जावै वळीतै नै, अै तीनूं ई रुळियार ।।

७३४. **कांसी कुत्ती कुभारजा, अणछेड़ी कूकंत ।**
कांसी, कुतिया और कुभार्या बिना छेड़े ही कूकने लगती हैं ।
रू० कांसी कुत्ती कुभारिया, अणछेड़ी कूकंत ।
सीसो सोनो सापुरष, मधुरा ई बोलंत ।।

७३५. **कांसी सेती फूट प्यारी, फोड़-फोड़ वेचै विणजारी ।**
कांसी की अपेक्षा 'फूट' महँगी है, इसलिए बनजारी बर्तनों को तोड़-तोड़ के बेच रही है ।

७३६. **कांसै काई जमै, आभ नीलै रंग आवै ।**
कीड़ी काढै इंड, चिड़ी रेती में न्हावै ।
माखण गळियो माट, पवन मुख बैठै छाळी ।
डेडका डहक बाड़ां चढै, विषधर चढ बैठै वड़ां ।
माघिया पंडत कूड़ा पतड़, घण वरसै अंतै गुणां ।
यदि कांसी पर काई जमे, आकाश का रंग नीला हो जाए, चींटियां अपने अंडों को लेकर चल पड़ें, चिड़ियां रेत में स्नान करें, बिलौने में मक्खन गल जाए, बकरी पवन के सामने मुख करके बैठे, मेंढक बाड़ों पर चढ जाएँ और सांप वट-वृक्षों पर जा चढें तो पंडित माघ कहता है कि वर्षा का योग न बताने वाले सारे पतड़े झूठे हो जाएँगे और वर्षा खूब होगी ।

७३७. **काकड़ी में वीज हा ई कोनी ।**
ककड़ी में बीज थे ही नहीं ।
सर्वथा सच्ची बात को एक दम झुठलाना ।

७३८ **काका खोखो पायो, 'क काकै कै सागै तो यूं हीं गैरा करैगो।**

सन्दर्भ कथा—काका के पीछे-पीछे उसका बालक भतीजा भी चला जा रहा था। भतीजे को खेजड़े के वृक्ष के नीचे एक 'खोखा' (खेजड़े की पकी फली) पड़ा मिल गया तो उसने खुशी से काका को पुकारते हुए कहा—काका मुझे खोखा मिला है। इस पर काका ने भतीजे पर झूठ मूठ का अहसान थोपते हुए कहा—काका के साथ तो इसी प्रकार माल उड़ाओगे।

७३९. **काकी का जाया मिल्यां ईं ठा पड़ै।**

काकी के जाये मुकाबिले में मिलें, तभी बहादुरी का पता चले।
बराबरी का प्रतिपक्षी मिलने से ही अपनी बहादुरी का पता चलता है।

७४०. **काकै की पीयोड़ी, भतीजै नै ऊगै।**

शराब पीता है काका और उसका नशा चढता है भतीजे को।

७४१. **काको कैयां काकड़ी कोई कोनी देवै।**

काका कह देने से ही कोई ककड़ी नहीं दे देता।

७४२. **काकोजी अंटी में है।**

काकाजी अंटी में हैं।

सन्दर्भ कथा—साधारण स्थिति का एक आदमी अनाज लाने के लिए अपने एक परिचित की दुकान पर गया। दुकान पर स्वयं दुकानदार नहीं बल्कि उसका भतीजा बैठा था। आगन्तुक ने जब लड़के से एक रुपये का बाजरा तौल देने के लिए कहा तो लड़के ने सोचा कि यह उधार ले रहा है, अतः उसे टालने के लिए बोला—दुकान पर काकाजी नहीं हैं, वे आयें तब ले जाना। इस पर आगन्तुक ने अपनी अंटी में से एक नकद रुपया निकाल कर लड़के को दिखलाया और कहा कि यह देख, काकाजी अंटी में हैं। इस पर लड़के ने अनाज तौल दिया।

इसीलिए कहा है—अंटी जमा रहे तो खातिर जमा रहे।

७४३. **काकोजी नै मरतां देख कर मरणै सें मन फाटग्यो।**

काकाजी को मरते देख कर मरने से मन फट गया अर्थात् मरने से अरुचि हो गई।

७४४. **काख उठायां काळजो दीखै।**

नितान्त अभाव की स्थिति।

सन्दर्भ कथा—एक सुलफेबाज ने अपना सारा घर चिलमों में फूंक दिया। घर में खाने को अन्न का दाना भी न रहा। एक दिन उसका साला अपनी बहिन से मिलने आया। उसे खिलाने के लिए बहिन के पास कुछ भी नहीं था। इसलिए वह पड़ोसिन के यहाँ थाली गिरवी रख कर थोड़ा सा अनाज लाई और उसे उतावली-उतावली चक्की में पीसने लगी। इतने में

उसका पति भी घर आ गया। सारी स्थिति समझ कर सुलफेबाज पति बोला—

पावणो आयो सिरै मोड़ ।
रांड लगाई थाळी पर दोड़ ।
घम्मड़ घम्मड़ चाकी पीसै ।
काख उठायां काळजो दीसै ।

७४५. काख में कटारी, चोर नै घूंतां सें मारै ।
बगल में कटारी के होते हुए भी चोर को घूंसों से मारता है ।
साधन होते हुए भी उनका उपयोग न करना ।

७४६. काख में छोरो, गांव में ढिंढोरो ।
बगल में छोरा, गांव में ढिंढोरा ।
रू० कांधै पर छोरो, गांव में ढंढोरो ।

७४७. कागद का कड़ावा को बर्णनी ।
कागज के कड़ाहे नहीं बन सकते ।

७४८. काग पढायो पींजरै, पढग्यो च्यारू वेद ।
समझायो समझै नईं, रैयो ढेढ को ढेढ ।
जन्मजात संस्कार जाते नहीं ।

संदर्भ कथा—एक गुरुजी ने एक कौवे को पकड़ कर पिंजड़े में बंद कर दिया और अपनी विद्या के बल से उसे चारों वेद पढा दिये । लेकिन जैसे ही पिंजड़े का द्वार खोला गया कौवा उड़ कर विष्टा के ढेर पर जा बैठा और उसमें चोंच मारने लगा ।

७४९. कागलां की जान में डोड काग ई बड़ जानी ।
कौवों की बरात में द्रोण काग ही बड़ा बराती ।

७५०. कागलां कै काछड़ा होवता तो उडतां कै ई दीखता ।
कौवों के कच्छे होते तो उड़ते हुओं के ही दिखलाई पड़ जाते ।
रू० कागलां कै वागा होता तो उडतां कै ई घेर पड़ता ।

७५१. कागलां कै सराप सें ऊंट कोनी मरै ।
कौवों के शाप देने से ऊंट नहीं मरते ।
रू० कागलां कै सराप सें भैंस धोळी कोनी होवै ।

७५२. कागलै की चांच, पाव की पांच ।
कौवे की चोंच बड़ी होती है और उसमें काफी सामान समा जाता है ।

७५३. कागलो चाल्यो हंस की चाल, आप आळी ही भूलग्यो ।
हंस की चाल सीखने के फेर में कौवा अपनी चाल भी भूल गया ।

७५४. **कागलो जीव सें गयो, पण ठाकर को ई वेरो पड़ग्यो।**
यद्यपि कौवे के प्राण तो गये ही, लेकिन उसे ठाकुर की असलियत का भी पता चल गया।

संदर्भ कथा—किसी ठाकुर के यहाँ एक कौवा हिल गया जो उसे बहुत तंग किया करता था। साथ ही वह इतना चालाक भी था कि किसी तरह भी ठाकुर की पकड़ाई में नहीं आता था। एक दिन ठाकुर ने कौवे को भुलावे में डालने के लिए अपने लड़के से पुकार कर कहा कि मेरी शमशेर ला, आज इस दुष्ट के प्राण शमशेर से ही लूंगा, कौवा सोच रहा था कि जब तक ठाकुर के हाथ में शमशेर आयेगी, तब तक तो मैं कहाँ का कहाँ पहुँच जाऊंगा। लेकिन तभी ठाकुर ने पास पड़े हुए धनुष पर तीर रखा और कौवे को लक्ष्य करके छोड़ दिया। कौवे को तीर का तो गुमान भी नहीं था। तीर कौवे को लगा और वह वहीं ढेर हो गया. किन्तु मरते-मरते उसने ठाकुर से कहा—

वचन पलट्टै सो मुवा, कागा मुवा न जाण।
नाम लियो समसेर को, मारयो तीर कबाण।।

७५५. **कागां कुत्तां कुमाणसां, तीन्यां अेक निकास।**
ज्यां ज्यां सेरयां नीसरै, त्यां त्यां करै बिनास।।
कौवे, कुत्ते और दुर्जन तीनों एक समान होते हैं। ये जिस मार्ग से निकलते हैं, वहीं नुकसान पहुँचाते हैं।
रू० कागां कुत्तां कुमाणसां, तीनूं जात कुजात।

७५६. **कागा किसका धन हड़ै, कोयल किस कूं देय।**
जीभड़ल्यां कै कारणै, जग अपणो कर लेय।
कौवा किसी का धन छीनता नहीं और कोयल किसी को कुछ देती नहीं। लेकिन अपनी मीठी वाणी के द्वारा वह संसार को अपने वश में कर लेती है।

७५७. **कागा रै तूं मळमळ न्हाय, तेरी काळस कदे न जाय।**
कौवा भले कितना ही मल-मल कर स्नान करे, उसका कालापन जाने का नहीं।

सन्दर्भ कथा—किसी तालाब पर एक हंस रहा करता था। एक कौवा भी वहाँ पानी पीने के लिए आया करता। कौवे ने हंस के स्वच्छ व श्वेत रंग को देख कर सोचा कि यह हंस इस तालाब में सदा नहाता रहता है और इसी से यह श्वेत वर्ण हो गया है। अपना रंग बदलने के लिए कौवा भी नित्य मलमल कर उस तालाब के पानी में स्नान करने लगा, लेकिन उसका रंग जरा भी नहीं बदला।
रू० काळा रै तूं मळमळ न्हाय, तेरी काळस कदे न जाय।
यह बात तन के काले और मन के काले दोनों पर लागू होती है।

७५८. **कागो मोती देवै नीं, चिड़ी रोवती रैवै नीं ।**
न कौवा चिड़ी को उसका मोती दे और न चिड़ी रोने से बाज आये ।
इस संदर्भ की एक बाल कथा बहु प्रचलित है ।

७५९. **काच कटोरो नैण जळ, मोती दूध 'र मन्न ।**
इतणा फाट्या ना मिलै, लाखां करो जतन्न ।।
काँच का कटोरा, आंखों का पानी (हया), मोती, दूध और मन एक बार फटने के बाद लाख प्रयत्न करने से भी फिर नहीं मिलते ।

७६०. **काचरियां बिना किसो ब्या अटकै ?**
काचरियों के अभाव में विवाह थोड़े ही रुकता है ।
नगण्य वस्तु के अभाव में कोई बड़ा काम नहीं रुकता ।

७६१. **काची काया को के गारबो ?**
नश्वर काया का कैसा गर्व ?
रू० काया अर माया को के गारबो ?

७६२. **काचै घड़ै पाणी कोनी भरयो जावै ।**
मिट्टी के कच्चे घड़े में पानी नहीं भरा जा सकता ।

७६३. **काचो कूंपो ऊंट को, या में मीन न मेख ।**
बामण कै सिर पर चढ्यो, संगत का फळ देख ।।
मरे हुए ऊंट के चमड़े का स्पर्श यों तो ब्राह्मण निषिद्ध समझते थे । लेकिन जब उसी चमड़े के कुप्पे बना कर उनमें घी भर दिया जाता था तो वे उसे सहर्ष सिर पर उठा लेते थे ।

७६४. **काछड़ो चोखो गायो ।**
काछड़ा अच्छा गाया ।
स्वल्प और तात्कालिक जानकारी के आधार पर किसी विषय में प्रवीणता का प्रदर्शन करना हास्यास्पद बन जाता है ।

संदर्भ कथा—किसी रईस के बेटे की शादी के अवसर पर शानदार महफिल सजाई गई थी और गाने के लिए एक नामिक वेश्या बुलाई गई थी। गाने की समाप्ति पर जानकार लोग वाह-वाह कर उठते थे लेकिन स्वयं रईस इस मामले में एक दम कोरा था । वह एक भी राग-रागिनी का नाम तक नहीं जानता था । यह बात उसे बहुत अखरी और अगले दिन उसने वेश्या से कहा कि मैं एक दिन में सारी राग-रागिनियां जानना चाहता हूँ । तुम मुझे सिखला दो, मैं तुम्हें मुँहमांगी रकम दूंगा । वेश्या ने कहा कि यों तो संगीत-शास्त्र का ज्ञान प्राप्त करने में जिन्दगी बीत जाती है, लेकिन मैं एक काम-चलाऊ नुसखा आपको बतला देती हूँ । गाना समाप्त होने पर मैं संकेत से उस राग-रागिनी का नाम आपको बतला दिया करूंगी, जैसे कान को हाथ

लगाऊं तो आप कान्हरा समझें और सिर को हाथ लगाऊ तो सोरठ समझें। इस प्रकार वेश्या ने संक्षेप में कई वातें रईस को बतलादीं जिनके बल पर रात की महफिल में उस ने अच्छी वाहवाही ले ली। लेकिन एक वार जब वेश्या ने परज गाया और वह पैर को हाथ लगा कर रईस को संकेत देने जा रही थी तभी उसे काछ पर कुछ खुजलाहट महसूस हुई और उसका हाथ पहले काछ पर चला गया। रईस को इस राग का नाम नहीं वतलाया गया था, लेकिन कुछ सोच कर वह वोल उठा—'काछड़ा अच्छा गाया', और उसकी वात सुनते ही सव लोग हँसी से लोट-पोट हो गये।

७६५. **काजळ की कोटड़ी मांय सूं कोई अण-दाग कोनी नीकळै।**
काजल की कोठरी में प्रवेश कर कोई वे-दाग नहीं निकल पाता।

७६६. **काजळ घालतां आंख फूटी।**
अच्छा करते, वुरा हो गया।

७६७. **काजी करै सो न्याव, पासो पड़ै सो डाव।**
काजी करदे सो न्याय और पासा पड़े सो दांव।

संदर्भ कथा—एक वार काजी और तेली के वैल की परस्पर टक्कर हो गई। काजी का वैल तगड़ा था, अतएव उसने तेली के वैल को मार डाला। तेली ने काजी जी के सामने मामला रखा तो वे वोले—यह तो जानवरों की वात है, इसका भला क्या न्याय किया जाए—

वळद का वळद पर पड़ग्या दाव।
इसका क्या करेगा काजी न्याव?

तेली वहां से चला आया, लेकिन उसे काजी की वात लग गई। उसने एक तगड़ा वैल खरीदा और उसे खिला-पिला कर खूब ताकतवर बना दिया। फिर उसने मौका पाकर अपने वैल को काजी के वैल से भिड़ा दिया। काजी का वैल चारों खाने चित्त पड़ा। तेली के वैल ने उसे जान से मार डाला। जव इस वात का पता काजी को चला तो उसने तेली को तलव किया। तेली ने कहा यह तो जानवरों का मामला है, भला मैं इसमें क्या कर सकता हूँ? लेकिन काजी ने कानून की लाल किताब उठाई और उसके पन्ने उलटता हुआ वोला—

लाल किताब उठ वोली यूं, तेली वळद लड़ाया क्यूं?
खिला पिला कर किया मुसंड, वैल का वैल और सौ रुपये डंड।

निदान तेली को वैल के वदले वैल और सौ रुपये नकद दण्ड के भरने पड़े।

७६८. **काजी की मारी हलाल होवै।**
काजी की मारी हलाल (जायज) होती है।

७६९. **काजी कै घर का ऊंदरा ई स्याणा ।**
काजी के घर के चूहे भी सयाने ।

७७०. **काजीजी की कुत्ती मरी जद तो सारो गांव बैठण नै आयो अर काजीजी मरचा तो उठावणियों कोनी पायो ।**
काजीजी की कुतिया मरी तब तो खुशामद के मारे पूरे गांव के लोग मातम-पुरसी के लिए आये, लेकिन जब काजीजी स्वयं मरे तो उनके जनाजे को उठाने वाला भी न मिला क्योंकि अब काजीजी न तो किसी का भला कर सकते थे और न किसी का कुछ बिगाड़ सकते थे ।

७७१. **काटर कै हेज घणो ।**
दूध न देने वाली गाय अपने बछड़े से अधिक प्यार जताती है ।

७७२. **काठ की हांडी अेक बार ई चढै ।**
काठ की हंडिया एक बार ही चढती है ।
धोखेबाज का विश्वास एक बार ही किया जाता है ।

७७३. **काठ कै सागै 'लो तिरै ।**
काठ के सहारे लोहा भी तैर जाता है ।
अच्छी संगति से पापी का भी उद्धार हो जाता है ।

७७४. **काठ लुळै, पण राठ लुळै नीं ।**
सूखा काठ भले ही झुक जाए, लेकिन राठ नहीं झुकता ।

७७५. **काढै कढारा देवै उधारा, जांका जाई जामता फिरै कुंआरा ।**
जो स्वयं अन्य लोगों से उधार लाकर दूसरों को उधार देत हैं, उनके पुत्र कुंआरे ही रह जाते हैं ।
इस तरह का लेन-देन करने वाला सदा घाटे में ही रहता है ।

७७६. **काढो काढ में काढो काढ अर घालो घाल में घालो घाल ।**
देखा देखी का सौदा ।

७७७. **काढ्यां ई काढ्यां तो कूवा ई रितज्या ।**
यदि मनुष्य कुछ कमाये नहीं और जमा पूंजी को ही निकाल-निकाल कर खर्च करता रहे तो बड़े से बड़ा खजाना भी समाप्त हो जाता है ।

७७८ **काढ्यो पाणी पीवै ।**
इतनी सी आय, जिसमें किसी प्रकार गुजर हो जाए ।

७७९. **काणती को काजळ ई कोनी सारचो जावै ।**
कानी का शृंगार ही पूरा होने में नहीं आता ।

७८०. **काणती को काजळ ई कोनी सुहावै ।**
कानी का काजल भी गांव को नहीं सुहाता ।

७८१. **काणती छोरी तनै कुण व्यासी ? 'क मेरै भाई-भतीजां नै ई खिलास्यूं ।**
कानी लड़की तुझे कौन व्याहेगा ? कोई न सही, मैं अपने भाई-भतीजों को ही खेलाया करूंगी ।

७८२ **काणती दादी छा घाल । 'क बोल्यो तूं इस्यो सुप्यार जिको तनै घी को लूंदो घालूं ।**
कानी दादी छाछ घाल । दादी ने उत्तर दिया—हाँ तुम्हारी बोली इतनी सुहानी है कि तुझे छाछ ही क्या, घी का लौंदा ही घाल दूं !
रू० काणां बाणियां गुड़ दे, 'क तनै खांड देस्यूं ।

७८३. **काणती भेड़ को चाल ई न्यारो ।**
कानी भेड़ की चाल ही अलग ।
रू० काणती भेड़ को राड़यो ही न्यारो ।

७८४. **काण घड़ै में नीसरज्या ।**
तकड़ी की काण (असंतुलन) घड़े में निकल जाती है ।

७८५. *काणी आंख में ई काजळ ?*
कानी आंख में भी काजल ?

७८६. **काणी आंख सूझण नै तो कोनी, पण दुखण नै त्यार ।**
कानी आंख से दिखलाई भले ही न पड़े, लेकिन खटकने के लिए तो वह भी तैयार रहती है ।
कुटिल व्यक्ति से भला चाहे न हो, लेकिन बुरा करने के लिए तो वह तैयार ही रहता है ।

७८७. **काणी कै व्याह में सौ कौतक ।**
कानी के विवाह में सौ कौतुक ।
कानी के विवाह में सौ विघ्न ।

७८८. **काणी छोरी जाई, टोक टोक खाई ।**
कानी छोरी क्या जनी, दुनिया ने टोक-टोक कर परेशान कर डाली ।

७८९. **काणी नै काणो प्यारो, राणी नै राणो प्यारो ।**
राणी को राणा प्यारा लगता है तो कानी को काना ही प्यारा लगता है ।
रू० काणी नै काग प्यारो, राणी नै राज प्यारो ।

७९०. **काणी नै कुण सरावै ? 'क काणी की मा ।**
कानी को और कोई चाहे न सराहे, लेकिन उसकी माँ तो उसकी सराहना करती ही है ।

७९१. **काणै सें राम-रमी ई नई करणी ।**
काने से पहले राम-राम भी नहीं करनी चाहिए ।
काने से बच कर रहना चाहिए ।

संदर्भ कथा—एक आदमी ने यद्यपि यह सुन रखा था कि काने से राम-राम भी नहीं करनी चाहिए, लेकिन एक बार वह किसी गाँव गया तो वहाँ एक अनजान काने से राम-राम कर बैठा। काने ने तत्काल ही उससे कहा कि मैंने अपनी एक आंख तुम्हारे पास पांच रुपये में गिरवी रखी थी सो अपने रुपये ब्याज सहित लेलो और मेरी आंख मुझे लौटा दो। काने की बात सुन कर वह बड़ा चकराया। लेकिन उसने यह सुन रखा था कि यदि काने से पाला पड़ जाए तो उसका प्रतिकार गंजा ही कर सकता है। इसलिए वह उस काने को साथ लेकर उसी गाँव में रहने वाले अपने एक गंजे मित्र के पास गया तो गंजे ने काने से कहा कि तुम कल सवेरे रुपये और ब्याज लेकर आ जाना, तुम्हारी आंख देदी जाएगी। दूसरे दिन सवेरे ही काना वहां आ गया। गंजे ने उससे रुपये ले लिये और उसे बाहर ही बैठ जाने के लिए कहा। उसके यहाँ मरे हुए जानवरों की बहुत सी आंखें एक हंडिया में भरी रखी थीं। गंजे ने उनमें से एक आंख निकाल कर काने के पास भेजी, लेकिन काने ने उसे लेने से इनकार कर दिया। इसी प्रकार उसने चार-पांच आंखें उसके पास भेजीं, लेकिन वह हर बार यही कहता रहा कि यह मेरी आंख नहीं है। इस पर गंजे ने बाहर आकर उससे कहा कि हमारे यहां बहुत लोगों की आंखें गिरवी रखी हुई हैं सो यों तो कुछ पता नहीं चलता कि तुम्हारी आंख कौनसी है, अतः हम तुम्हारी दूसरी आंख निकाल लेते हैं और उसकी जोड़ी की आंख ढूंढ कर तुम्हें ला देंगे। यों कह कर गंजा जैसे ही उसकी ओर बढ़ा, काना वहाँ से ऐसा भागा कि उसने पीछे मुड़ कर भी नहीं देखा।

रू० (१) काणो कुचमादी होवै।

(२) काणाँ कै अेक रग वत्ती होवै।

(३) काणो खोड़ो खोयरो, अैंचाताणो होय।

इण नै जद ही छेड़िये, हाथ घेसळो होय।

७६२. **कातण आळी बात करै, पीसण आळी बोल वाली मरै।**

कातने वाली तो आराम से बैठी बातें करती है, लेकिन पीसने वाली चुपचाप मरती रहती है क्योंकि कातने की अपेक्षा पीसने में कहीं अधिक जोर लगाना पड़ता है।

७६३. **कातिक की छांट बुरी, बाणियें की नाट बुरी।**
भायां की आंट बुरी, राजा की डांट बुरी।

कार्तिक मास की वर्षा बुरी, बनिये की 'नहीं' बुरी, भाइयों की अनबन बुरी और राजा की डांट-डपट बुरी।

७६४. कातिक कुत्ती, माह बिलाई।
फागण मरद, ब्या लुगाई।

उपरोक्त चारों में उपर्युक्त अवसरों पर कामोत्तेजना विशेष होती है।

७६५. कातिक को 'मे कटक बरोबर।
कातिक की वर्षा सेना की तरह फसल को हानि पहुँचाने वाली होती है।

७६६. कातिक सुद एकादसी, बादळ बिजळी होय।
तो असाढ में भडुळी, बिरखा चोखी होय॥
यदि कातिक शुक्ला एकादशी को आकाश में बादल और बिजली हों तो आगामी आषाढ में अच्छी वर्षा होगी।

७६७. काती दीया बाती।
कातिक में दिन इतने छोटे होने लगते हैं कि दीया-बत्ती करते ही बनता है।

७६८. काती में सै सायी।
देर से बोई फसलें भी कातिक में साथ ही पक जाती हैं।

सन्दर्भ कथा—एक बूढा किसान भादों के महीने में हल चला रहा था। उसके खेत में जेठ के महीने में भी वर्षा हो चुकी थी और जेठ वाली फसल खूब अच्छी खड़ी थी। राजा की सवारी उधर से निकली तो राजा ने किसान से पूछा कि तुम्हारी पहले वाली फसल तो पकने जा रही है, लेकिन अब जो फसल बो रहे हो, वह भला कब पकेगी? इस पर किसान ने पहले अपने सिर पर एवं फिर मोंछों पर हाथ लगाते हुए कहा कि मोंछों के बाल सिर के बालों से बीस वर्ष छोटे हैं, लेकिन जैसे वृद्धावस्था को पाकर दोनों ही सफेद हो गये हैं, वैसे ही कातिक में यह फसल भी पहले वाली फसल के साथ ही तैयार हो जाएगी।

७६९. काती वद बारस, बादळ री छाया।
तो आषाढे धुर बरसैलो भाया॥
कातिक वदि बारस को आकाश में बादलों का छाये रहना आगामी आषाढ में वर्षा का सूचन करता है।

८००. कात्या जांका सूत, जाया जांका पूत।
सूत कातने वाले का और पुत्र जन्म देने वाले का।

८०१. कादै में भाठो फैंक्यां आपकै ई छांटा लागै।
कीचड़ में पत्थर फेंकने से उसके छींटे उछल कर फेंकने वाले पर ही पड़ते हैं।

८०२. कानां में गासिया लियां पेट कोनी भरै।
कानों में ग्रास लेने से पेट नहीं भरता।
रू० सिर पर ओक मांड्यां पेट कोनी भरै।

८०३. कानां में मुंदरा होयां आपै ई आ आदेस करसी।
कानों में कुंडल होंगे तो लोग स्वयं आकर 'आदेस बाबाजी' कहेंगे।

८०४. कानूड़ो तो कुळ में आयो, रात बड़ी दिन छोटा ल्यायो।
कृष्ण जन्माष्टमी (भादों वदि अष्टमी) से रातें बड़ी और दिन छोटे होने लगते हैं।

८०५. **काप दरजी को बाप, कोक बरजी की रोक ।**

८०६. **काबल में किस्या गधा कोनी होवै ।**
क्या काबुल में गधे नहीं होते ?
मूर्ख तो सभी जगह मिल जाते हैं ।

८०७. **काम अर लाम कै वैर है ।**
काम और जल्दबाजी में परस्पर बैर है ।
जल्दबाजी करने से काम बिगड़ जाता है ।

८०८. **काम ई करता तो घरे ई घणो हो ।**
यदि काम ही करना होता तो अपने घर पर ही बहुतेरा काम था ।
जो काम चोर व्यक्ति काम से जी चुरा कर घर छोड़ देता है, वह दूसरे का काम क्या करेगा ?
रू० (१) काम ई करता तो बावोजी क्यूं बणता ?
(२) *बावोजी, बाछड़ा घेरियो, 'क बाछड़ाई घेरता तो बावोजी क्यूं बणता ?*

८०९. **काम ई करम है ।**
काम करते रहना ही मनुष्य का कर्तव्य है ।
काम के अनुसार ही भाग्य बनता है ।

८१०. **काम करै ऊधोदास, जीम ज्यावै माधोदास ।**
काम कोई करे और उसका लाभ कोई और ले जाए ।

८११. **काम की कहद्यो अर कूवै में गेरद्यो ।**
काम चोर व्यक्ति से किसी काम के लिए कहना निरर्थक है ।

८१२. **काम की न काज की, ढाई सेर नाज की ।**
काम को तो हाथ भी न लगाये और खाने के लिए अढाई सेर अनाज चाहिए ।

८१३. **काम की मा उरैसी, पूत की मा परैसी ।**
बेटे की माँ से भी अधिक अच्छी काम करने वाली लगती है ।

८१४. **काम की मेदा नीं, पीसै की पैदा नीं ।**
काम तो बेशुमार और उससे आय कुछ भी नहीं ।
निरर्थक पच-पच के मरना ।

८१५. **काम को नांव ई खाणो है ।**
काम करने से ही खाना मिलता है ।

८१६. **काम जिसा दाम ।**
जैसा काम, वैसे दाम ।

८१७. कामरण करचा हा सुहाग नैं, होग्या दुहाग नैं।
'कामरण' (जादू-टोना) किये तो थे सोहाग के लिए, लेकिन उल्टे वैधव्य के निमित्त बन गये।
काम तो भले के लिए किया था, उल्टा बुरे का कारण बन गया।

८१८. काम नईं पड़ै इत्तै सै चोखा है।
जब तक किसी के साथ काम न पड़े, तब तक सभी अच्छे हैं। लेकिन अच्छे-बुरे का वास्तविक ज्ञान तो उसके साथ काम पड़ने से ही होता है।
रू० काम पड़्यां ई कूंतिये, जो नर जैड़ो होय।

८१९. *काम नैं काम सिखावै।*
काम को काम सिखलाता है।
किसी काम को करते-करते मनुष्य उसमें कुशलता प्राप्त कर लेता है।

८२०. काम नैं सिलाम है।
काम को नमस्कार है।
कर्तव्य पालन वंदनीय है।

८२१. **काम प्यारो है, चाम प्यारो कोनी।**
चमड़ी की सुन्दरता की अपेक्षा काम प्यारा होता है।

८२२. **काम सरचा दुख बीछड़्या, वैरी होग्या वैद।**
रोग मुक्त होने के बाद आदमी अपने चिकित्सक से किनारा करने लगता है।
रू० काम सरचो जुग वीसरचो, कुणबो वारा वाट।

८२३. **कामी कै साख नईं, लोभी कै नाक नईं।**
व्यभिचारी को नाते-रिश्ते का कोई खयाल नहीं रहता और लोभी व्यक्ति को मान-मर्यादा का विचार नहीं रहता।
रू० (१) कामी कै जात नईं, लोभी कै साख नईं।
(२) कामी कै साख नईं, लोभी कै जात नईं।

८२४. **कामी नर दूती बिना, राजा मंत्री हीन।**
बिना वसीलै नौकरी, तीनूं तेरा तीन।
कामी मनुष्य दूती के अभाव में, राजा मंत्री के अभाव में एवं नौकरी जरिये के अभाव में तीन-तेरह रहती है।

८२५. **काया राख धरम है।**
शरीर का अस्तित्व रखते हुए ही धर्म का पालन अभीष्ट है।

८२६. **काया राम की, धन राज को।**
शरीर तो राम का है और सम्पत्ति राज्य की।
रू० काया राम की, माया राज की।

८२७. कारटिये को खा लेणो, ऊगटिये को नई खाणो।
महाब्राह्मण का दाना भले ही खा लिया जाए लेकिन ऊगटिये का नहीं खाना चाहिए।
ऊगटिया = जो बार-बार गिनावे; बोली या ताना मारे।

८२८. कारीगरां कमणीगरां कै वणिये की हट्ट।
इतणी जगां ना मिलू' तो डूमां कै अलबत्त॥
झूठ अपने रहने के स्थान बतलाता है कि मैं कारीगरों और कमंगरों के यहां अथवा बनिये की दुकान पर रहता हूँ और कदाचित् वहां न मिलू' तो डोमों के यहां तो निश्चित रूप से ही मिल जाता हूँ।
रू० कारीगरां कमणीगरां और बजाजां हट्ट।
जो अेता में ना मिलू' तो डूमां में अलबत्त॥

८२९. काळ आज्या, पण काल कोनी आवै।
कल, कल करते हुए काल भले ही आ जाए, लेकिन कल कभी नहीं आता। लम्बी अवधि की निश्चित तिथि भी यथा-समय आ जाती है, लेकिन कल कभी नहीं आता।

सन्दर्भ कथा—एक सेठ किसी खाती के कुछ रुपये मांगता था। वह ऋण की वसूली करने के लिए नित्य खाती के घर जाता, लेकिन खाती 'कल दूंगा' कह कर टाल देता। यों करते-कराते बहुत दिन बीत गये। एक दिन सेठ उसके घर आया तो खाती कहीं गया हुआ था और उसका बेटा घर पर था। उसने सेठ से कहा कि सेठजी, क्यों नित्य चक्कर काटते हो ? वो देखो, सामने हमने कुछ वृक्षों के बीज बोये हैं, वे उगेंगे, बढ़ेंगे और बढ़कर पूरे वृक्ष बनेंगे, तब इन वृक्षों की डालों को चीर कर उनके 'फाटके' (तख्ते) निकालेंगे और फिर उन 'फाटकों' से बनी चीजों को बेच कर तुम्हारे रुपये दिये जाएंगे। इस पर सेठ ने उससे पूछा कि ये सब काम हो जाने के बाद तो निश्चित रूप से हमें रुपये मिल जाएँगे न ? खाती के बेटे ने सेठ को भरोसा दिलाया कि हाँ, तब निश्चित रूप से मिल जाएँगे। इस पर सेठ आश्वस्त होकर लौट गया। उसके जाने के बाद जब खाती घर आया तो उसके बेटे ने सारी घटना अपने बाप को बतलाते हुए कहा कि अब सेठ रोज-रोज नहीं आयेगा। इस पर खाती ने अफसोस प्रकट करते हुए अपने बेटे से कहा कि तुमने बड़ी गलती की। अब ये रुपये एक न एक दिन हमें देने ही पड़ेंगे, चाहे बीस वर्ष बाद ही सही। लेकिन मेरे वाला 'कल' न कभी आता और न मैं सेठ को रुपये देता।

८३०. काळ आयां कोई कोनी बंचै।
चाहे कोई लाख उपाय करले, लेकिन मृत्यु आने पर कोई नहीं बचता।

सन्दर्भ कथा—एक ब्राह्मण अपनी स्त्री और लड़के के साथ अपनी झोंपड़ी में सोया हुआ था। आधी रात को एक काला नाग झोंपड़ी पर से उतरा और उसने ब्राह्मणी व उसके लड़के को डस लिया, जिससे दोनो तत्काल मर गये। सांप जाने लगा तो ब्राह्मण ने उसका पीछा किया। थोड़ी दूर जाने के बाद वह सांप एक शेर की शक्ल में बदल गया, लेकिन ब्राह्मण ने उसका पीछा करना नहीं छोड़ा। तब शेर ने सहसा मनुष्य का रूप धारण कर के ब्राह्मण से पूछा कि तू मेरा पीछा क्यों कर रहा है? ब्राह्मण ने पूछा कि तुम कौन हो, यह मुझे सच-सच बतलाओ। उसने उत्तर दिया कि मैं काल-भगवान् हूं जो समयानुसार सब का भक्षण करता हूँ। ब्राह्मण ने पुनः पूछा कि तुमने मेरी स्त्री और पुत्र का तो भक्षण कर लिया, लेकिन मुझे क्यों छोड़ दिया? काल भगवान् ने उत्तर दिया कि उन दोनों की अवधि पूरी हो गई थी, इसलिए मैंने उनका भक्षण किया, तुम्हारी अवधि बारह वर्ष बाद पूरी होगी और तब मैं हरिद्वार में गंगाजी के बीच मगरमच्छ बन कर तुम्हारा भक्षण करूंगा।

यों कह कर काल तो अदृश्य हो गया और ब्राह्मण ने यह दृढ़ निश्चय कर लिया कि वह कभी हरिद्वार जाएगा ही नहीं। लेकिन समय पर ऐसा बानक बना कि उसे वहां जाना पड़ा और काल ने मगरमच्छ बन कर उसका भक्षण किया।

८३१. **काल की जायोड़ी लूंकड़ी अर म्हारै जमानै में 'मे भोत बरस्यो।**

कल की जन्मी लोमड़ी और हमारे जमाने में वर्षा बहुत हुई।

कम उम्र के व्यक्ति द्वारा प्रत्यक्षदर्शी की तरह पुरानी बातों को बढ़ा-चढ़ा कर कहने पर इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

रू० काल की जोगण अर कड़ियां सुधी जटा।

८३२. **काळ टळै, पण कलाळ नईं टळै।**

मृत्यु भले ही टल जाए, लेकिन कलाल नहीं टलता। वह शराब में मिलावट किये बिना नहीं रहता।

८३३. **काळ कुसूमै ना मरै, बामण बकरी ऊंट।**
वो मांगै वा फिर चरै, वो सूका चाबै ठूंठ॥

ब्राह्मण, बकरी और ऊंट दुर्भिक्ष के समय भी भूख के मारे नहीं मरते, क्योंकि ब्राह्मण मांग कर खा लेता है, बकरी इधर-उधर चर कर गुजारा कर लेती है और ऊंट सूखे ठुंठ चबा कर ही जीवित रह जाता है।

८३४. **काल ताईं चोखली चमारी ही, आज नाना बामणी बण बैठी।**

रू० काल ताईं चोखली चमारी ही, आज पाबूजी की पंडी बण बैठी।

८३५. काळ पड़ै जद पी'र अर सासरै सागै ई पड़ै ।
अकाल पड़ता है तो पीहर और ससुराल दोनों में एक साथ ही पड़ता है ।
यदि औरत की ससुराल में अकाल पड़े तो वह पीहर चली जाए, लेकिन यदि वहां भी अकाल हो, तब कहां जाए ?

८३६. काळ बागड़ में ऊपजै, बुरो बामण सें होय ।
अकाल बागड़ से पैदा होता है और बुरा ब्राह्मण से होता है ।

८३७. काळ में अधक मास ।
विक्रम संवत् की गणना में प्रायः हर तीसरा वर्ष १३ महीनों का होता है । यदि उस वर्ष अकाल हो तो एक महीना अधिक होने से कष्ट की अवधि और लम्बी हो जाती है ।

८३८ कालर को खेत, चोदू को हेत ।
कालर का खेत और हीन व्यक्ति का हेत लाभ-प्रद नहीं होता ।
कालर = कालर की भूमि खेती के अयोग्य होती है । अच्छी वर्षा होने पर भी इसमें फसल नहीं होती ।

८३९. काळ सें आळ नईं करणी ।
जान बूझ कर मृत्यु से छेड़खानी नहीं करनी चाहिए ।

८४०. काळा काळा सैं ई बाप का साळा !
काले काले सभी बाप के साले !
ख्वाहमख्वाह अपना बहुमत जताने की चेष्टा ।

८४१. काळा कुत्तम सदा उत्तम, भूरा कुत्ता सरासरी ।
जे हो कुत्ती किरड़ काबरी, बीं की के बराबरी ।।
सन्दर्भ कथा—एक भोजन-भट्ट पंडितजी को भोजन का निमंत्रण मिला । यजमान ने बहुत बढिया खीर बनाई, लेकिन एक कुत्ता उसमें मुँह डाल गया । यजमान ने पंडितजी से पूछा कि खीर तो बहुत बढिया बनाई थी, लेकिन उसे कुत्ता जूठी कर गया, इसलिए अब यह खीर आपको परोसी जाए या नहीं ? पंडितजी ने सोचा कि 'खीर-खांड' के भोजन सदा तो मिलते नहीं और फिर मीठे के साथ जूठा भी चलता ही है, अतः इनकार नहीं करना चाहिए । फिर भी उन्होंने घर वालों से पूछा कि कुत्ता कैसा था ? इस पर एक ने कहा—काले रंग का था, दूसरे ने कहा भूरे रंग का था और तीसरे ने कहा कि कबरी कुतिया थी । पंडित जी एक बार तो दुविधा में पड़ गये, लेकिन फिर उपरोक्त कहावती दोहा कहते हुए उन्होंने खीर परोसने की स्वीकृति देदी ।

८४२ काळो ऊन कुमाणसां चढै न दूजो रंग ।
काली ऊन और कुटिल व्यक्ति पर दूसरा रंग नहीं चढता ।

८४३. काळी पड़वा कातकी, जे बुधवारी आय .
फठै 'क विरखा होवसी, वाकी काळ वताय ।।
कातिक वदि १ को यदि बुधवार हो तो आगामी वर्ष में किसी-किसी स्थान पर ही वर्षा होगी, बाकी जगहों में अकाल पड़ेगा ।

८४४. काळी भलो न कोड्याळी, भूरी भली न सेत ।
राखो रांडां च्यारचां नै एकं ही खेत ।।
न काली अच्छी है, न चितकबरी, न भूरी अच्छी है और न सफेद रंग वाली। चारों एक जैसी हैं और इन चारों का ही काम तमाम कर डालो ।
इस कहावत के पीछे चार जादूगरनियों की कथा है जो अपने शिकार को हाथ से निकलते देख कर चार रंगों की चीलें वन कर उसका पीछा करती हैं ।

८४५. काळी हांडी कनै वैठ्यां काळस ई लागै ।
काली हँडिया के पास वैठने से कालिख ही लगती है ।
बुरी संगति से कलंक ही लगता है ।
रू० काळै कनै वैठ्यां काळो ई लागै ।

८४६. काळै कै काळो नईं तो कोड्याळो जरूर जामै ।
काले के काला न जन्मे तो भी कबरा जरूर जन्मे ।
पुत्र में पिता के सारे अवगुण न भी आएँ तो भी कुछ तो आ ही जाते हैं ।

८४७. काळै केरड़ा, सुकाळै वोर ।
कैर अधिक पैदा हों तो अकाल और वेर अधिक हों तो सुकाल होता है ।

८४८. काळै नै ऊजळो कद सुहावै ?
कुटिल व्यक्ति को सज्जन अच्छा नहीं लगता ।

८४९. काळै 'मूं' की कूकरी, घुस घुस लावा लेय ।
म्हारी तरियां तूं फिरै, कातिक आवण देय ।।
सन्दर्भ कथा—कोई रात्रि-अभिसारिका अपने संकेत स्थल की ओर जा रही थी । राह में उसे एक कुतिया भौंकने लगी । जब वह भौंकने से नहीं रुकी तो अभिसारिका ने तिरस्कार पूर्वक उससे कहा कि तू मुझे क्या भौंकती है, कातिक का महीना आयेगा तो तू स्वयं भी कामान्ध हुई इसी प्रकार डोलती फिरेगी ।

८५०. काळो आंक भैंस बराबर ।
काला अक्षर भैंस के वरावर ।
निरक्षर भट्टाचार्य्य ।

८५१. काळो विप्पर गोरो सुदर, वां सें डरपै बिरमा रुदर ।
काले ब्राह्मण एवं गोरे शूद्र से ब्रह्मा और रुद्र भी डरते हैं ।

८५२. कासी जी गया अर म्हेंई जीत्या, क्यूंकै म्हे म्हारी ई म्हारी दळी, दूसरै की सुणी ई कोनी ।
हमने काशीजी में जाकर शास्त्रार्थ किया तो जीत हमारी ही हुई, क्योंकि हम अपनी ही दलते रहे, किसी दूसरे की बात तो हमने सुनी ही नहीं ।

८५३. किण किण को मन राखिये, बाट विचाळै खेत ।
रास्ते पर खेत है, अब किस-किस का मन रखा जाए ?

८५४. किण किण न समझाइये, कूवै भांग पड़ी ।
जब कुएँ में भांग पड़ गई हो और उसे पीकर पूरे गाँव के लोग ही बावले बन गये हों तब भला किस किस को समझाया जाए ?
तु० कूण सुणै किणनैं कहूं, ऐसी आन अड़ी ।
किण किण नै समझाइये, कूवै भांग पड़ी ।।

८५५. किरती अेक जबूकड़ो, ओगण सै गळिया ।
कृतिका नक्षत्र में एक बार भी बिजली चमक जाए तो वह वर्षा संबंधी सभी पूर्व अपशकुनों को मिटा देती है ।

८५६. किरपण कै दाळद नईं, नां सूरां कै सीस ।
दातारां कै धन नईं, नां कायर कै रीस ।।
कृपण के यहाँ दारिद्रय का क्या काम ? क्योंकि वह माया को जोड़ता ही रहता है, खर्च करना वह जानता ही नहीं । शूरवीर तो अपना सिर हथेली पर ही लिये रहता है । दातार कभी धन का संग्रह नहीं करता, उसके हाथ में जैसे ही धन आता है, वह बांट देता है और कायर गुस्सा नहीं करता ।

८५७. किरपण कै धन को, लुगाई कै मन को बेरो कोनी पड़ै ।
कृपण के धन और स्त्री के मन का कुछ पता नहीं चलता ।

८५८. किसन करी तो बाजी लीला, म्हे बालां लेंगवाड़ा ।
कृष्ण ने गोपियों के चीर हरण किये तो यह भगवान की चीर हरण लीला कहलाई, लेकिन अन्य कोई ऐसा करे तो उसे लुच्चा कहा जाता है ।

८५९. कीं की रांड मरै अर कीं कै सुपनै आवै ।
किसी की औरत मरे और किसी को स्वप्न में दिखलाई दे ।

८६०. कीकर काट'र हळ घड़ै, रस कस की रांधै खीर ।
न्यूंत जिमावै भाणजो, कदे न निरफळ जाय ।
खेती के लिए कीकर की लकड़ी का हल बनाना और भानजे को न्योता देकर खीर खिलाना व्यर्थ नहीं जाता ।

८६१. कीकर छोड़ो कैर पधारो, इतरो कारज म्हारो सारो ।
कीकर को छोड़ कर कैर में पधारिये, कृपया इतना सा काम हमारा कर दीजिए ।

संदर्भ कथा—एक जाट ने हवेली चिनवाई तो किवाड़ों और चौखटों के लिए मजबूत काठ की आवश्यकता हुई। जाट के खेत में कीकर का एक बड़ा वृक्ष था। उसने सोचा कि यदि इसे काट कर काम में लिया जाए तो सारी चौखटें और किवाड़ बन जाएंगे। लेकिन गांव वालों ने कहा कि इस कीकर वृक्ष में 'खेतरपाळ' (क्षेत्रपाल) का निवास है और इसे काटने से वह नाराज हो जाएगा। जाट की स्त्री ने भी अनिष्ट की आशंका से अपने पति को कीकर काटने से मना कर दिया।

तब जाट ने एक तरकीब निकाली। अगले सवेरे वह सोकर उठा तो उसने अपनी स्त्री एवं पास पड़ौस के लोगों को बुला कर कहा कि रात को स्वप्न में मुझे कीकर वाले 'खेतरपाळ' के दर्शन हुए। उन्होंने मुझ से कहा कि इस कीकर में रहते रहते मैं ऊब गया हूं, अतः अब इस पास वाले कैर में प्रवेश करता हूं। तब मैंने भी उनसे कहा—

खेतरपाळ बलिहारै थारै, थोड़ो सो कारज अड़्यो हमारै।
कीकर छोड़ो कैर पधारो, इतरो कारज म्हारो सारो।।

इस पर 'खेतरपाळ' कीकर को छोड़ कर पास वाले कैर में प्रवेश कर गये, अतः अब इस कीकर को काटने में कोई आपत्ति नहीं है। इस पर सब लोग मान गये।

८६२. **कीड़ा पड़ै गोबर के मांय, पपैयो मीठो बोल सुणाय।**
अमल चामड़ो गीलो होय, बिरखा हुवै न संसै कोय।।
यदि गोबर में कीड़े पड़ें, पपीहा मीठी वाणी में बोले, अफीम और चमड़े में गीलापन आ जाए तो निश्चय ही वर्षा होगी।

८६३. **कीड़ी कण आसाढ में, बारै न्हाखै लाय।**
भील कहे सुण भीलणी, मेह घणेरो थाय।
आषाढ मास में यदि चींटियां अन्न के कणों को अपने बिलों से बाहर निकाल कर डालें तो वर्षा खूब हो।

८६४. **कीड़ी कण आसाढ में, मांय लेजाती देख।**
तो अन-त्रण रो काळ व्है, इण में मीन न मेख।।
आषाढ मास में यदि चींटियां अन्न के कणों को बिलों में ले जाएं तो अन्न के साथ-साथ त्रण (घास-फूस) का भी अकाल रहेगा।

८६५. **कीड़ी चाली सासरै, नौ मण सुरमो सार।**
चींटी भी नौ मन सुरमा आंखों में डाल के सुसराल को चली।
जब अकिंचन व्यक्ति भी अधिक आडम्बर करे।

८६६. **कीड़ी छूंक्यां किसो काम सरै।**
कीड़ियों को छौंकने से भला क्या काम सरेगा?
अकिंचन व्यक्तियों को बिना बात सताने से कोई गरज पूरी नहीं होगी।

८६७. **कीड़ी नै कण, हाथी नै मण ।**
ईश्वर सब की यथोचित पूर्ति करता है, कीड़ी को कन और हाथी को मन वही पूरता है ।
रू० कण कीडी मण कूंजरां, सैं नैं पूरै राम ।

८६८. **कीड़ी नै मूत को रेळो ई घणों ।**
कीड़ी के लिए पेशाव की धार ही वहुत है । वह उसी में वह जाती है ।
गरीव के लिए थोड़ी सी क्षति भी वहुत होती है ।

८६९. **कीड़ी पर के कटक करै ?**
कीड़ी पर कैसी फौजकशी ?
रू० कीड़ी पर के पंसेरी वावै ?

८७०. **कीड़ी संचै तीतर खाय, पापी को धन परलै जाय ।**
कीड़ी अन्न का संचय करती है, लेकिन उस संचित अन्न को तीतर खा जाता है । इसी प्रकार पापी नाना प्रकार के पाप करके धन का संचय करता है लेकिन वह नष्ट हो जाता है ।
जो व्यक्ति दिखावे के लिए तो कीड़ी नगरा सींचता है, लेकिन लुक-छिप कर तीतर को मार कर खाता है, उसका धन व्यर्थ जाता है ।

८७१. **कुंआरां का के न्यारा गांव वसै है।**
अविवाहितों के कोई अलग गाँव थोड़े ही वसते हैं ?
रू० काळां का किसा न्यारा गाँव वसै है ?

८७२. **कुंआरी कन्या सैंस बर ।**
कन्या जब तक कुंआरी रहती है, उसके विवाह के लिए अनेक सम्बन्ध आते रहते हैं ।

८७३. **कुंआरी कोनी छूटै, ब्यायोड़ी छूटज्या ।**
यों तो सगाई होने पर भी जब तक कन्या का विवाह न हो, तब तक सगाई छूट सकती है । लेकिन राजपूतों में एक बार सगाई होने पर उसका छूटना बड़ा कठिन होता था ।

ऐसा उदयपुर की राजकुमारी कृष्णा कुमारी के सम्बन्ध में हुआ था । उदयपुर के महाराणा भीमसिंह की पुत्री कृष्णा कुमारी की सगाई की बात जोधपुर के महाराजा भीमसिंह के साथ हुई थी । लेकिन विवाह से पूर्व ही जोधपुर के महाराजा भीमसिंह का देहान्त हो जाने के कारण महाराणा ने अपनी पुत्री की सगाई जयपुर के महाराजा जगतसिंह के साथ कर दी । जोधपुर के नये महाराजा मानसिंह ने इसका कडा विरोध किया और कृष्णा कुमारी के सम्बन्ध को लेकर वड़ा भारी संघर्ष हुआ । अन्त में झगड़े की समाप्ति के लिए कृष्णाकुमारी को विष का प्याला पीना पड़ा ।

८७४ कुचां विना की कामणी, मूंछ विना को जवान ।
अे तीनूं फीका लगै, विना सुपारी पान ।।
विना स्तनों की स्त्री, विना मूंछ वाला युवक और विना सुपारी का पान ये तीनों ही फीके लगते हैं ।
यहां 'विना मूंछ के जवान' से तात्पर्य उस पुंस्त्व हीन युवक से है जिसके चेहरे पर मूंछ उगती ही नहीं ।

८७५. कुछ करणी कुछ करम गत, कुछ भावी का खोट ।
गीहूं नै उमग्यो फिरै, लिख्या करम में मोठ ।।
जब भाग्य में मोठ ही लिखे हैं तो गेहूं कहां से मिलेंगे ?

सन्दर्भ कथा–एक गरीब बारहठ मोठ की रोटी खाते खाते ऊब गया तो गेहूं की रोटी खाने के लिए एक बड़ी जागीर वाले ठाकुर के यहाँ पहुँचा । ठाकुर के यहाँ मोठ बहुत बढिया होते थे, इसलिए उसने बारहठ के लिए उन मोठों की रोटी विशेष रूप से बनवाई । बारहठ के सामने जब भोजन की थाली आई तो उसमें मोठ की रोटियों को देखकर उसके मुंह से उपरोक्त कहावती–दोहा अनायास ही निकल पड़ा ।

८७६. कुण कीं कै आवै, दाणो पाणी ल्यावै ।
कौन किसके घर आता है । लेकिन दाना-पानी बलवान् होता है और वही मनुष्य को दूसरों के यहाँ खींच कर ले जाता है ।

८७७. कुणसै जलम का कुणसै जलम में ऊघड़ावै ।
पता नही किस जन्म में किये हुए कर्म किस जन्म में प्रकट हों ।

सन्दर्भ कथा—महा भारत के युद्ध में धृतराष्ट्र के सभी एक सौ पुत्र मारे गये थे । इस पर उसने पश्चाताप करते हुए कहा कि मुझे अपने पिछले सौ जन्मों का हाल मालूम है और इन सौ जन्मों में भी मेरे से ऐसा कोई पाप नहीं बना कि जिसके फलस्वरूप मेरे सौ पुत्र मारे जाएँ । इस पर श्रीकृष्ण ने धृतराष्ट्र से कहा कि यह सही है कि पिछले सौ जन्मों में तुम्हारे से ऐसा कोई पाप नही हुआ था, लेकिन १०१ जन्म पहले तुमसे ऐसा दुष्कर्म हो गया था, जिसके कारण तुम्हारे सौ पुत्र मारे गये । उस जन्म मे भी तुम राजा थे । एक समय तुम्हारे राज्य में वर्षा नहीं हुई और सारे ताल-तलैया सूख गये । उस समय एक हंस-हंसनी का जोड़ा तुम्हारे पास आया । उन्होंने तुम्हें अपने एक सौ बच्चे संभलाये और कहा कि अगले साल वर्षा होने पर जब हम यहां आयेंगे तो अपने बच्चों को ले लेंगे । तुमने उनकी रक्षा का भार अपने ऊपर ले लिया और वे उड़ गये ।

कुछ दिनों बाद तुम्हारे रसोइये ने हंस-हंसी के उन बच्चों में से एक को मार कर तुम्हारे लिए विशेष भोजन बनाया । उस दिन तुम्हे भोजन बड़ा

स्वादिष्ट लगा और तुमने इसके लिए रसोइये की बड़ी प्रशंसा की। इससे उत्साहित होकर रसोइया तुम्हारे लिए नित्य एक बच्चे को मारने लगा। और जिस दिन सारे बच्चे समाप्त हो गये, उस दिन तुम्हें खाना उतना स्वादिष्ट नहीं लगा। रसोइये से इसका कारण पूछने पर जब उसने हंस के बच्चों को मारने की बात बतलाई तो तुम्हें बड़ा दुःख हुआ, लेकिन फिर क्या हो सकता था। अगले साल जब हंस-हंसी लौटे और उन्हें यह सब ज्ञात हुआ तो उन्होंने तुम्हें शाप दिया कि एक दिन तुम्हारे भी सौ पुत्र मारे जाएँगे और जैसे आज हम रो रहे हैं वैसे ही तुम भी रोओगे। और हंसों का वह शाप इस प्रकार सत्य हो गया।

८७८. **कुतड़ी जाया कूकरिया, अेकै डोरै ऊतरिया।**
कुतिया ने जितने पिल्ले जने, वे सब के सब एक जैसे।
जब किसी औरत की सारी ही औलाद एक जैसी गई गुजरी हो।

८७९. **कुत्तां की टोळी में आटै को दीवो कद खटावै ?**
कुत्तों की टोली में आटे का दीपक कब तक टिके ?

८८०. **कुत्तां कै संप होवै तो गंगाजी न्हायावै।**
कुत्तों में एकता हो तो क्या वे सब गंगा स्नान न कर आयें ?
किसी अच्छे कार्य के संपन्न होने में पारस्परिक द्वेष बाधक होता है।

८८१. **कुत्ता तेरी काण 'क तेरै धणी की।**
लिहाज कुत्ते का नहीं, उसके मालिक का है।

८८२. **कुतिया चोरां रळ गई, पैरा किसका देय ?**
पहरा लगाने वाली कुतिया जब चोरों से मिल गई तब वह पहरा क्या दे ?

८८३. **कुनी कुती को मेळो, अेक घुचरियो तेरो, अेक घुचरियो मेरो।**
कुतिया ब्याई तो बच्चों का मेला लग गया। बच्चे एकत्र होकर घर-घर घूमते हैं और कुतिया के लिए खाने का सामान एकत्र करते हैं तथा उसके पिल्लों को परस्पर बांट लेते हैं कि एक पिल्ला मेरा है, दूसरा तेरा।
जब कई लोग किसी सामान्य कार्य के लिए घर-घर घूम कर पैसा एकत्र करते हैं तो प्रायः यह कहावत कही जाती है।

८८४. **कुत्ती कै पाण गाडो कोनी चालै।**
कुतिया के बूते पर गाड़ा नहीं चल रहा है।

सन्दर्भ कथा—दो बैल एक गाड़े को खींचे ले जा रहे थे। एक गांव के पास गाड़ा रुका तो एक कुतिया गाड़े के नीचे आकर खड़ी हो गई। गाड़ा चलने लगा तो कुतिया भी साथ-साथ चलने लगी। कुतिया को यह वहम हो गया कि गाड़ा उसी के बल पर चल रहा है और वह घमंड से बोल पड़ी कि यह गाड़ा तो मेरे ही बूते पर चल रहा है। दोनों बैल उसकी बात को सुनने

के लिए रुके तो कुतिया ने देखा कि बैलों के साथ ही गाड़े का चलना भी रुक गया है और यों उसका भ्रम दूर हो गया।

८८५. **कुत्ती क्यूं घूंसै ? 'क टुकड़ै खातर।**
कुत्ती क्यों भौंकती है ? टुकड़े के लिए।

८८६. **कुत्ती घुंस घुंस कर मरज्या अर धणी कै भावैं ई कोनी।**
कुतिया भौंक भौंक कर मरी जा रही है और उसके मालिक को इसका कोई खयाल ही नहीं।

८८७. **कुत्तै की पूंछ बारा बरस भाठै तळै दबी रैई, पण नीकळी जद टेढी की टेढी।**
कुत्ते की पूंछ बारह वर्षों तक पत्थर के नीचे दबा कर रखी गई, लेकिन जब निकाली गई तो टेढी की टेढी।
किसी का जन्मजात स्वभाव छूटता नहीं।

८८८ **कुत्तो कुत्तै नै देख कर घूंसै।**
कुत्ता कुत्ते को देख कर भौंकता है।
कुछ लोग अपनी जाति वालों को देख कर गुर्राते हैं और कुछ राजी होते हैं।
पद्य—बामण नाई कूकरो, जात देख घुर्राय।
कायथ कागो कूकड़ो, जात देख हरखाय॥

८८९. **कुत्तो सो कुत्तै नै पाळै, कुत्तो सो कुत्तै नै मारै।**
कुत्तो सो भैण घर भाई, कुत्तो सो सासरै जंवाई।
वो कुत्तो सं में सिरदार, सुसरो फिरै जंवाई लार।
कुत्ते को पालना अथवा मारना दोनों ही बुरे हैं। यदि भाई अपनी बहिन के घर और दामाद ससुराल में रहने लगे तो उनकी कद्र भी कम होकर कुत्ते के समान हो जाती है। लेकिन यदि श्वसुर अपना पेट भरने के लिए दामाद के पीछे लगा रहे तो वह सबसे गया गुजरा माना जाता है।

८९०. **कूदघो मोडियो अर बैकूंठ कै मांय।**
बाबाजी कूदे और सीधे वैकुण्ठ के अन्दर।

८९१. **कुन्नण जमै न जड़ाव पर, जमै सळायन कीट।**
कह जड़ियो सुणज्यो जगत, उडै मेह की रीठ॥
जब जड़ाव पर कुन्दन न जमे और सलाइयों पर कीट जम जाए तो जड़िये का कथन है कि वर्षा खूब होगी।

८९२. **कुपढ मिलरचा है।**
सभी अनपढ मिल गये हैं।
सन्दर्भ कथा—एक बार कोई गीदड़ शहर में आ निकला तो उसे एक पुराना लिखा हुआ कागज कहीं पड़ा मिल गया। गीदड़ ने जंगल में जाकर वह कागज अन्य गीदड़ों को दिखलाया और बोला कि हमें शहर में रहने का

यह गीदड़ पट्टा मिला है। इसलिए अब हम सब शहर में चलकर रहेंगे। यह सुनकर गीदड़ों ने उसका बड़ा सम्मान किया और उपहार स्वरूप कहीं से बैल का जूआ लाकर उसके गले में पहना दिया। अब सारे गीदड़ों को अपने पीछे कर, गले में 'हार' पहने और हाथ में गीदड़-पट्टा लिए वह शहर की ओर चला। वे सब शहर के निकट पहुँचे तो उनको आते देख कर कुत्तों का एक झुंड भौंकता हुआ उनकी ओर दौड़ा। सारे गीदड़ भाग चले, लेकिन सरदार के गले में भारी-भरकम 'हार' पड़ा था, अतः वह भाग नहीं सका। कुत्तों ने उसे चारों ओर से घेर लिया। भागते हुए गीदड़ों ने अपने सरदार से पूछा कि इनको गीदड़-पट्टा क्यों नहीं दिखलाते? इस पर सरदार ने खेद प्रकट करते हुए उत्तर दिया कि किसे दिखलाऊं? ये तो सभी अनपढ़ हैं। निदान कुत्तों ने उसे चीर डाला।

रू० काम कुत्तां सें पड़ग्यो।

८९३ **कुम्हार की गधी, घर-घर लदी।**

कुम्हार की गधी घर-घर लदती रहती है। उसकी कोई इज्जत नहीं।

रू० भाड़ै की गधी, घर घर लदी।

८९४ **कुम्हार को कुम्हारी पर तो जोर कोनी चालै, गधेड़िये का कान ईंठै।**

कुम्हार का कुम्हारी पर तो वश नहीं चलता अतः वह अपना गुस्सा उतारने के लिए बेचारे गधे के कान ऐंठता है।

रू० खसम की झाळ पूत पर।

८९५. **कुम्हार को गधो मरै, धोबण सती होवै!**

कुम्हार का गधा मरे और धोबिन सती हो!

सर्वथा असंबद्ध और अप्रासंगिक बात।

रू० कुम्हार को गधो मरै, घुरसली मट्टर होवै।

८९६. **कुम्हार खांडी में रांधै।**

कुम्हार स्वयं मिट्टी के बर्तन बनाता है और उसके यहाँ बर्तनों की कोई कमी नहीं होती, फिर भी वह खंडित हंडिया को ही रांधने के काम में लेता है क्योंकि उसे कोई खरीदता नहीं।

रू० कुम्हार कै खांडी ई चढै।

८९७. **कुम्हार गधै चढले, 'क कोनी चढूं, पण फेर आपै ई चढले।**

जो मनुष्य बार-बार कहने पर भी किसी काम को न करे, लेकिन फिर झख मार कर अपने आप करले।

८९८. **कुरज उड़ी कुरळाय, पाछी जै आवै नईं।**
मेह गयो नईं आय, अै लक्खण नईं मेह का।

कुरज नामक पक्षी यदि व्याकुल आवाज करता हुआ उड़ जाए और वापिस न आये तो जानो कि अब वर्षा भी नहीं आयेगी।

८९९. कुल्लड़ियो भरयो अर भ्रापके पी'र ।
कुल्हड़ भरा और पीहर भेजा ।
सन्दर्भ कथा—किसी गांव में एक निहायत गरीब चमार परिवार रहता था । एक दिन चमार ने परिहास में चमारी से कहा कि मैं एक ऐसी बढ़िया भैंस लाऊंगा जो नित्य बीस सेर दूध दिया करेगी । चमारी का पीहर उसी गांव में था, इसलिए उसने उत्तर दिया कि तब तो मैं भी रोज ही दूध-दही के कुल्हड़ भर कर अपने पीहर भेजा करूंगी । उसकी बात सुन कर चमार को गुस्सा आ गया और बोला कि मैं तेरे पीहर के लिए भैंस नहीं ला रहा हूँ । दोनों में तकरार बढ़ गई । चमार ने चमारी को पीट दिया तो वह चिल्लाने लगी । उसका चिल्लाना सुन कर पास-पड़ोस के लोग आकर इकट्ठे हो गये । जब उन्हें झगड़े का कारण ज्ञात हुआ तो उन्होंने चमार से कहा कि पहले भैंस तो लाओ, पहले से ही क्यों मार-पीट करते हो ? तुम्हारी ऐसी सामर्थ्य ही कहां है जो भैंस खरीद कर ला सको ।
सूत न कपास, जुलाहे से लट्ठम-लट्ठा ।

९००. कुलड़ी में गुड़ कोनी फूटै ।
कुल्हड़ी में गुड़ नहीं फूटता ।

९०१. कूकड़ी कै तो ताकलै को डाम ई भारी ।
मुर्गी को तो तकुए का डाम ही भारी ।
गरीब के लिए थोड़ी सी हानि भी असह्य होती है ।

९०२. कूकड़ी मांदी अर भैंस की बळि ?
मुर्गी बीमार और उसके लिए भैंस का बलिदान ?

९०३. कूकड़ो नईं बोलै तो दिन ईं कोनी ऊगै के ?
यदि मुर्गा नहीं बोलेगा तो क्या सवेरा ही नहीं होगा ?
सवेरा होने से पूर्व मुर्गा बांग देता है, लेकिन दिन का उगना मुर्गे की बांग पर आश्रित नहीं है ।

९०४. कूण किसो को देत है, देण हार करतार ।
जो तोकूं दिल्ली दई, मोकूं दियो हिसार ।।
कोई किसी को देने वाला नहीं, सब को ईश्वर ही देता है । जिसने तुझे दिल्ली दी, उसी ने मुझे हिसार दिया है ।
ददरेवा के चौहान कर्मसिंह को मुसलमान बना कर उसका नाम क्यामखां रखा गया था जो बाद में हिसार का सूबेदार भी बना । दिल्ली के सुल्तान ने जब उससे हिसार छीनना चाहा तो उसने उपरोक्त कहावती दोहा कहा ।

९०५. कूदिये न कूवा, खेलिये न जूवा ।
कुएं के ऊपर से कूदना और जूआ खेलना, दोनों ही वर्जित हैं ।

९०६. **कूवा खिणाया बावड़ी, छोड़ चल्या परदेस ।**
कुएँ, बावड़ी आदि सब यहीं रह जाते हैं और मनुष्य को सारे ठाट-बाट छोड़ कर इस दुनिया से जाना होता है ।

९०७. **कूवा तेरी मा मरी 'क मरो, जोई 'क जो ई ।**
कुएँ में मुंह डाल कर जैसा कहा जाएगा, वैसी ही प्रतिध्वनि सुनाई पड़ेगी ।

९०८. **कूवै की छायां कूवै में ई रवै ।**
कुएँ की छाया कुएँ में ही रहती है ।

९०९. **कूवै में पड़ां कोनी तो ई झांक जरूर आवां ।**
तुम्हारे कहने से कुएँ में गिरें नहीं तो भी उस में झांक जरूर लेंगे ।

९१०. **कूवै में पाणी तो घणो ई है, पण काढले सो आपको ।**
कुएँ में पानी तो बहुत है, लेकिन जितना निकाल लें उतना ही अपना है । संसार में अर्थ, ज्ञान आदि तो भरपूर हैं, लेकिन जितना अर्जित कर सकें वही अपना है ।

९११. **कूवै में होयां ई खेळ-कोठां में आवै ।**
कुएँ में पानी होगा, तभी 'खेळ-कोठों' में आएगा ।

९१२. **कूवै सें कूवो कोनी मिलै, पण मिनख सें मिनख तो मिलई ज्या ।**
कुएँ से कुआं नहीं मिलता, लेकिन मनुष्य तो मनुष्य से मिल ही जाता है ।

९१३. **के करूं मेरै घर को धणी, मारी थोड़ी घींसी घणी ।**
सन्दर्भ कथा—एक औरत बड़ी कर्कशा थी । वह घर वालों से ही नहीं, पास-पड़ोस के लोगों से भी सदा लड़ती-झगड़ती रहती । इसलिए सभी उससे रुष्ट रहते थे । एक दिन थोड़ी रात बीते उसके यहां कुछ पाहुने आये तो वह उनसे भी झगड़ा करने लगी । लेकिन वे लोग उसकी आदत को जानते थे अतः उन्होंने दीपक बुझा कर उसे खूब पीटा । हो-हल्ला सुन कर उसके घर के निकट रहने वाला एक साधु एवं उसका पड़ोसी गंगू तेली भी आगया । ये दोनों भी उससे चिढे हुये थे अतः अच्छा मौका देख कर उन्होंने भी अपने हाथ हल्के किये । कुछ देर बाद जब उसका पति घर आया तो वह फिर पाहुनों को गालियां देने लगी । इस पर उसके पति ने भी उसकी पिटाई की और उसे घसीट कर घर के बाहरी चौक में पटक दी । वह रात भर वहीं पड़ी रही और सवेरे पास-पड़ोस की औरतों को आप बीती सुनाते हुए बोली -

बात कहूं तो बातां झूठी, दियो नंदा कर पांवणां कूटी ।
फेर आग्यो मोडियो स्यामी, वो भी दो दड़ादड़ धामी ।
फेर आग्यो गांगलो तेली, वो भी दो दड़ादड़ देली ।
के करूं मेरै घर को धणी, मारी थोड़ी घींसी घणी ।।

६१४. **के करै नर बांकड़ो, जद थैली को मुंह सांकड़ो !**
धन के अभाव में योग्य और प्रतिष्ठित व्यक्ति भी असहाय और असमर्थ बन जाता है ।

६१५. **के करै बापड़ी बिल्ली धोळी !**
सफेद बिल्ली का घर में होना शुभ माना जाता है, लेकिन जब अन्य चार अशुभ लक्षण साथ में हों, तब अकेली बिल्ली क्या करे ?

लच्छरण अेक कुलच्छरण च्यार, भूगो बिछायां बैठी नार ।
आगै अरंड पिछोकड़ पोळी, के करै बापड़ी बिल्ली धोळी ।

६१६. **के करघो राजा की राणी, हाथ पखाळ्या नीं बं'तै पाणी ।**
राजा की रानी होकर भी यदि दान-पुण्य आदि न किया तो क्या किया ? सम्पन्न होकर भी यदि सार्वजनिक हित के कार्य न करे तो वह संपन्नता किस काम की ?

६१७. **के कहूं कही न जाय, नौ भैंस अर दो रोटी कुत्ती लियां जाय ।**
क्या कहूं ! कुछ कहने में नहीं आता, नौ भैंसें और दो रोटियों को कुतिया लिये जा रही है ।

संदर्भ कथा-(१) एक किसान भैंसें खरीदने के लिए किसी दूसरे गाँव जा रहा था । उसके पास नौ भैंसें खरीद सकने लायक रुपये थे । उसने राह में खाने के लिए गुड़ और दो रोटियां अपने अंगोछे के पल्ले बांध रखी थीं । रास्ते में किसी धर्मशाला में ठहरा और शौच के लिए बाहर जाने लगा तो रुपयों वाली पोटली को भी अंगोछे में लपेट कर आले में रख गया । पीछे से एक कुतिया आई और गुड़ व रोटियों के लालच में अंगोछे को ले भागी । इसे देख कर किसान के मुंह से उपरोक्त कहावती वाक्य निकल पड़ा ।

रू० अक्कल नईं ही फैम ही, फैम सें अक्कल लागी ।
दो रोटी अर सौ मण गोहूं, गंडकड़ी ले भागी ।।

सन्दर्भ कथा-(२) एक राजा शिकार खेलते हुए जंगल में भटक गया । संगी-साथी सब पीछे छूट गये । प्यास के मारे राजा का दम निकलने लगा । तभी एक ग्वाले ने अपनी 'लोटड़ी' से राजा को पानी पिलाया । राजा ने प्रसन्न होकर ग्वाले को एक पीपल के पत्ते पर ६० गाँव लिख कर दे दिये । ग्वाला बड़ा प्रसन्न था कि वह अब ६० गाँवों का स्वामी बन गया है । उसने पत्ते को एक ढेले के नीचे रख दिया और सो गया । लेकिन पत्ते को बकरी चर गई । जब वह जगा और उसे यह बात मालूम हुई तो उसने दूसरे ग्वाले से कहा—

के कहूं कुछ कह्यो न जाय, कह्यां बिना पण रह्यो न जाय ।
मन की बात मन में रही, साठ गाँव बकरी चर गई ।।

६१८. के गूजर को दायजो, कै बकरी कै भेड़ ।

गूजर का दहेज क्या ? या तो बकरी या भेड़ ।

६१९. के छठ की चोदस करै है ?

कौनसी षष्ठी ने चतुर्दशी कर देगा ।

संदर्भ कथा —जुये में युधिष्ठिर के हार जाने के बाद यह तय हुआ था कि पाण्डव १२ वर्ष तक वन में रहें एवं एक वर्ष अज्ञातवास में। यदि अज्ञातवास की अवधि में वे पहचान लिये जाएँ तो फिर उसी तरह १३ वर्ष काटें। पाण्डवों ने १२ वर्ष वन में बिता दिये और १३वां वर्ष भी छद्मवेश में राजा विराट के यहाँ बिता रहे थे। १३वां वर्ष भी लगभग बीत चुका था कि कौरवों को इसकी भनक मिल गई। त्रिगर्त के राजा सुशर्मा ने उन से मिल कर विराट पर चढाई की। पाण्डवों ने विराट का साथ दिया। यद्यपि विजय विराट की हुई लेकिन पाण्डव पहचान लिये गये। उस दिन षष्ठी तिथि थी और अज्ञातवास का वर्ष चतुर्दशी को पूरा होता था। लेकिन विजयी पाण्डवों ने सुशर्मा को इस बात के लिए विवश कर दिया कि वह उसी दिन चतुर्दशी मानले।

पद्य—घर घर निय बेटा जर्णै, खावै घी अजवाण।
जो छठ की चौंदस करै, सो बेटा परवांण ॥

६२०. के जेठ कै सा'रै बेटी जाई है ?

क्या जेठ के भरोसे बेटी जनी है ?

सन्दर्भ कथा – दो भाई साथ-साथ रहते थे। छोटे भाई की बेटी के विवाह का प्रसंग आया तो बड़े भाई की बहू झगड़ा करने लगी। बेचारी ननद अपने दोनों भाइयों को बुलाने इधर-उधर भाग-दौड़ करने लगी। देवरानी का पति आया तो उसने उससे कहा कि मैंने जेठ के भरोसे बेटी नहीं जनी है। चकले को हटा कर खाई खोल दो और विवाह का सारा सामान ले आओ—

दीर जिठाणी लड़वा लागी, नणद फिरै छै भागी भागी।
खोलो चकळो काढो खाई, के जेठ कै सा'रै बेटी जाई ॥

६२१. के तातै पाणी घर बळै है ?

गर्म पानी से कौनसा घर जल जायेगा ?

तु० के फूंक सैं पहाड़ उड़ै है ?

६२२. के दड़ में 'मे बरस्यो है ?

कौनसा दड़ में मेह बरसा है ?

यद्यपि घर में पुत्र या पौत्र का जन्म बड़ा आल्हादकारी माना जाता है तथापि किसान उनसे भी अधिक महत्त्व 'दड़' मे मेह बरसने को देता है क्योंकि इस मरु भूमि मे वर्षा ही उनके पूरे परिवार के जीवन का आधार होती है।
दड़ = खेत को पहले बिना बीज के ही जोतते है और यदि यह पूर्व-पश्चिम जोता गया हो तो दुबारा उसे उत्तर-दक्षिण जोत कर इसमे ग्वार बो देते हैं। इनसे खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ जाती है। इसे दड़ कहते है। इस प्रकार तैयार की गई भूमि मे वर्षा होने पर फसल बहुत अच्छी होती है।

सन्दर्भ कथा—एक जाट के घर बहुत दिनों बाद पौत्र का जन्म हुआ। मां-बाप को तो इससे बड़ी प्रसन्नता हुई लेकिन दादा ने कहा कि घर में पौत्र का जन्म हुआ है, यह तो खुशी की बात है, लेकिन कोई 'दड' मे मेह थोड़े ही बरस गया है। बच्चे की मां को यह बात बहुत अखरी और वह अपने पति से कह कर श्वसुर से अलग हो गई। संयोग से अगले २–३ वर्षो में लगातार अकाल पड़े और जाट दम्पत्ति के पास खाने के लिए एक दाना भी न रहा। वे अपने बच्चे को लेकर रोटी-रोजी की तलाश मे गांव छोड कर निकल पड़े।

चलते-चलते वे एक साधु के मठ के पास पहुँचे। बच्चा भूख के मारे बिलबिला रहा था और उन दोनों के पाँव भी आगे बढने से जवाब दे रहे थे। मां-बाप ने सोचा कि ऐसी हालत मे बच्चा अधिक समय तक जीवित नही रह सकेगा, यदि इस साधु को देदें तो इसकी प्राण–रक्षा तो हो जाएगी। यों सोच कर उन्होने थोड़े से अनाज के बदले में बच्चे को साधु के हाथों बेच दिया और आगे बढ गये। साधु ने सोचा कि बडा होने पर इसे चेला बना लेंगे। लेकिन लड़के का दादा उनके पीछे-पीछे आ रहा था। उसने साधु को दुगना अनाज देकर बच्चे को वापिस ले लिया और घर लाकर उसे अच्छी तरह खिलाने-पिलाने लगा।

अगले साल अच्छी वर्षा होने पर जाट जाटनी बड़ी हीन दशा में घर लौटे। जाटनी तो सूख कर कांटा हो गई थी। जाट के बाप ने अपने बेटे से पूछा कि बच्चा कहां है तो उसने उदास होकर कहा कि वह चल बसा। जाटनी भी सिसक-सिसक कर रोने लगी। इस पर बूढे ने दोनो से कहा कि यह क्यों नही कहते कि अमुक साधु को पांच सेर अनाज के बदले बच्चे को बेच गये थे। तभी दादा ने पोते को पुकारा तो वह हँसता-खेलता वहां आ गया। दोनों के सिर शर्म से झुक गये, लेकिन उन्हें दड़ मे मेह बरसने के महत्त्व का भी पता चल गया।

९२३. **के दोराणी आगड़ी, के जिठाणी घाट।**

देवरानी और जेठानी में कोई भी एक दूसरी से कम नही।

६२४. **के पूछं पंडत जोसी, पून फिरयां 'मे होसी ।**
पंडित और जोशी को क्या पूछते हो ? हवा का रुख पलटने से वर्षा होगी ।

६२५. **के बाड़ पर सोनो सूकं ?**
कौन सा बाड़ पर सोना सूख रहा है ?
ऐसी कौनसी वहुतायत है ?
रू० के छान पर सोनो सूकं ?

६२६. **के मोठां को पीसणो, के सासु को रूसणो ।**
मोठों का पीसना क्या और सास का रूठना क्या ?
दोनों ही साधारण वातें हैं ।

६२७. **के रोऊं श्रे जणी, तूं आंगी दी न तणी ।**
माँ की मृत्यु पर बेटी कहती है कि तुझे क्या रोऊं ? तूने तो मुझे दहेज में आंगी या तनी कुछ भी तो नहीं दी ।

६२८. **के लेग्या राव अर के लेग्या अमराव ?**
इस संसार से जाते समय कोई कुछ भी साथ नहीं ले जा पाता ।

६२९. **के है भोळी बातां में, जूती लेल्यो हाथां में ।**
भोली-भाली वातों में क्या रखा है ? अब तो यही उचित है कि जूतियों को हाथों में लेकर तेजी से भाग चलो ।
विपत्ति के समय जब बचाव का कोई उपाय न हो तो वहाँ से भाग निकलना ही अच्छा है ।

६३०. **कैंकी जाई कैंका देव धोकै ।**
पता नहीं किसके यहाँ जन्मी लड़की को विवाह के वाद किस घर जाकर उनके देवता धोकने पड़ें ।

६३१. **कैं घड़ बैठै ऊंट ?**
क्या पता ऊंट किस करवट बैठे ?

सन्दर्भ कथा—(१) एक दिन एक ऊंट माली की वाड़ी में घुस गया । कुछ बूटे उसने खाये, कुछ तोड़ डाले । माली की लड़की उस समय वाड़ी में थी । उसको बड़ा रंज हुआ, लेकिन सामने ही कुएँ पर कुम्हार की लड़की खड़ी थी । वह खिलखिला कर हँसने लगी तो माली की लड़की ने कहा—

गड़ गड़ हँसै कुम्हार की, माळी का चर रयो बूंट ।
तूं के हँसै कुम्हार की, कैं घड़ बैठै ऊंट ।।

इस पर कुम्हार की लड़की ने उत्तर दिया कि ऊंट हमारे कौन से बूटे खायेगा ? हम तो आग पर खेती करती हैं । लेकिन संयोग से ऊंट वाड़ी से निकल कर कुम्हार के आँवे की तरफ जा निकला जहाँ कुम्हार ने बहुत सारे

बर्तन तैयार करके पकाने के लिए रख छोड़े थे। ऊंट वहीं लोट लगाने लगा जिससे कुम्हार के सारे बर्तन फूट गये।

(२) एक कुम्हारी और एक मालिन ने हाट जाने के लिए साझे पर ऊंट किराये लिया। एक तरफ कुम्हारी ने अपने बर्तन भर लिये और दूसरी तरफ मालिन ने शाक सब्जियां भर लीं। चलते-चलते ऊंट शाक सब्जियों में मुंह मार लेता तो कुम्हारी हंसने लग जाती। इस पर मालिन ने कुम्हारी से कहा कि ऊंट मुझे हानि पहुँचा रहा है तो तुम हँस रही हो, लेकिन क्या पता ऊंट किस करवट बैठे? और आगे चल कर जब ऊंट बैठा तो बैठते ही लोटने लगा, जिससे कुम्हारी के सारे बर्तन फूट गये। अब मालिन के हँसने की बारी थी।

९३२. **कै कमावै बेटो, कै कमावै फेंटो।**

या तो बेटा कमाता है अथवा दुकान पर ग्राहकों की भीड़भाड़ रहे तो उससे कमाई होती है।

९३३. **कै फोडां, कै गोडां।**

दीवानी मुकद्दमे दीर्घ काल तक चलते रहते हैं। कई बार किसी एक पक्ष के पास अर्था-भाव होने से अथवा अदालतों एवं वकीलों आदि के घर चक्कर लगाते-लगाते थक जाने पर ही मुकद्दमे का अन्त आता है।

९३४. **कै खागी पल्लू पापणी, कै गिटग्यो कोट किलूर।**
जावै सो आवै नहीं, यो ही बड़ो फितूर॥

इस संदर्भ की एक बड़ी प्रसिद्ध कथा है जिसके अनुसार कोट किलूर के राजा को मजबूरन अपनी लड़की पल्लू की शादी किसी नवाब के साथ करनी पड़ी। लेकिन सुहाग रात को ही नवाब को भोजन में विष देकर मार डाला गया। इस पर बाप के प्रति पल्लू के मन में प्रतिहिंसा की भावना भड़क उठी और जब उसके बाप ने उसके भाइयों को महल में पता लगाने के लिए भेजा तो पल्लू ने बारी बारी से सभी को मार डाला।

९३५. **कै गीतड़ा, कै भींतड़ा।**

मनुष्य की कीर्ति या तो गीतों से बनी रहती है अथवा भवन निर्माण से। लेकिन इन दोनों में भी गीतों को विशिष्टता प्रदान की गई है—

रह ज्यासी गीतड़ा, ढह ज्यासी भींतड़ा।

९३६. **कै जागै जोगी, कै जागै भोगी।**

रात्रि को या तो योगी योग साधना के लिए जगता है अथवा भोगी काम-वासना की पूर्ति हेतु जगता है।

९३७. कै जागै बेटी को बाप, कै जागै जींकै घर में सांप ।
रात्रि को या तो उस व्यक्ति को चिंता के मारे नींद नहीं आती जिसके विवाह-योग्य बेटी हो अथवा उस व्यक्ति को, जिसके घर में सांप हो ।

९३८ कै ठगावै रोगी, कै ठगावै भोगी ।
या तो रोगी ठगाता है अथवा भोगी ठगाता है ।

९३९. कै डरिये काळां, कै डरिये बाळां ।
या तो कालों (काले बालों अथवा काले नागों) से डर कर रहना चाहिए अथवा अपनी संतान से ।
मनुष्य अपने पर तो नियन्त्रण रख सकता है लेकिन संतान पर नियन्त्रण रख पाना कठिन होता है । कहावत है—आपो रहज्या, जापो कोनी रैवै ।

९४०. कै तो गैली सासरे जावै ई कोनी अर जावै तो पूठी बावड़ै ई कोनी ।
या तो पगली ससुराल जाये ही नहीं और चली जाए तो फिर लौटे ही नहीं ।
रू० कै तो गैली पैरै ई कोनी अर पैरै तो खोलै ई कोनी ।

९४१. कै तो घर को नास करूं, कै कात्यो कूत्यो कपास करूं !
या तो घर का विनाश करूं अथवा सारे काते-कताये को कपास करूं !
दोनों तरफ हानि ।

९४२ कै तो घोड़ो घोड़्यां में, नईं तो चोर ले ही ग्या ।
या तो घोड़ा घोड़ियों में चला गया है नहीं तो उसे चोर ले ही गये हैं ।
रू० कै तो भैंसो भैंस्यां में, कै कसाई कै खूंटै !

९४३. कै तो डालियो कोनी, कै कसार को लाडू कोनी ।
या तो आज डालिया नहीं, या कसार का लड्डू नहीं ।
इस संदर्भ की एक छोटी सी कथा भी प्रचलित है ।

९४४. कै तो तिल कोरा भला, कै ल्यो तेल कटाय ।
अधबिचली कूलर बुरी, तेल तिलां सें जाय ।।
या तो कोरे तिल रख लेना ठीक है, नहीं तो उनका तेल कढ़वा लेना चाहिए। अधबिचली कूलर बुरी होती है जिसमें तेल और तिल दोनों से ही वंचित होना पड़ता है ।

९४५. कै तो नांव सपूतां, कै नांव कपूतां ।
या तो नाम सपूतों से या नाम कपूतों से ।
सपूत अपने बाप का नाम उजागर करते हैं और कपूत बदनाम करते हैं । लेकिन बदनाम करने पर भी नाम तो हो ही जाता है—बदनाम भी होंगे तो क्या नाम न होगा ?

९४६. **कै तो नुहाया दाई माई, कै नुहासी पांच भाई।**
या तो जब जन्मे थे तब दाई ने नहलाया था या जब मरेंगे तब पांच भाई नहलाएँगे।
उस अघोरी एवं गलीज व्यक्ति के प्रति व्यंग्य, जो जिन्दगी भर स्नान ही नहीं करता।

संदर्भ कथा—दो समधी बहुत समय बाद परस्पर मिले। दोनों ही बड़े गलीज थे। नहाने-धोने के विषय में बात छिड़ी तो एक ने कहा—साल में दो बार नहाता हूँ; एक बार होली पर और दूसरी बार दीवाली पर। यह सुन कर दूसरे ने अचंभे में भर कर कहा कि तुम तो पानी के मेंढक ही बन गये जो एक साल में दो बार नहा लेते हो। मुझे तो जन्म के समय दाई ने नहलाया था और मरने पर पाँच भाई-बन्धु नहलाएँगे।

९४७. **कै तो पेट ई पळै, क बेटा ई पळै।**
नन्हें शिशु की माँ को खाने-पीने का बड़ा ध्यान रखना होता है। यदि वह जीभ के स्वाद के वशीभूत होकर चाहे जो खा लेती है तो उसका विकार दूध में उतर आता है जो बच्चे के लिये संकट का कारण बन जाता है।

९४८. **कै तो फूड़ चालै ई कोनी, जै चालै तो नौ घर हालै।**
या तो फूहड़ चलती ही नहीं और जब चलती है तो पास-पड़ोस के घरों को भी हिला डालती है।
रू० कै तो पैल बळद चालै कोनी, जै चालै तो सात गाँव की सींव फोड़ै।

९४९. **कै तो बाप बताणो पड़सी, नईं मोसर करणो पड़सी।**
या तो बाप बतलाना पड़ेगा अन्यथा मौसर करना पड़ेगा।

संदर्भ कथा—किसी युवक का बाप बहुत दिनों तक घर नहीं लौटा तो पंचों और बिरादरी वालों ने उससे कहा कि यदि तुम्हारा बाप जिन्दा है तो बतलाओ कि वह कहाँ है और यदि मर गया है तो उसका मौसर करो। दोनों में से एक काम तो अवश्य करना पड़ेगा।
रू० कै तो बाप बतासी, नईं सराध करसी।

९५०. **कै तो राखै राम, कै राखै डाम।**
बीमार होने पर ऊंट को या तो राम ही बचाता है अथवा डाम ही।
ऊंट की अनेक बीमारियों पर उसे डाम लगाया जाता है अर्थात् लोहे को गर्म करके उससे दागा जाता है।

९५१. **कै तो लड़ै सूरमा, कै लड़ै गिवार।**
या तो शूरवीर लड़ता है या गँवार लड़ता है।
रू० कै लड़ै लड़ायतो, कै लड़ै अणजाण।

९५२. कै तो हर, कै भर ।

या तो इस पार या उस पार ।

९५३. कै मारै बादळ की घाम, कै मारै वैरी को जाम ।

या तो बदली की घाम जान लेवा होती है या वैरी का पुत्र ।

९५४. कै मोड्यो बांधै पागड़ी, कै रहै उघाड़ी टाट ।

बाबाजी बांधे तो सिर पर पगड़ी ही बांधें नहीं तो नंगे सिर ही रहें ।

तु० कै तो सरब सुहागण, कै फरड़क रांड ।

९५५. कैयां कातूं सासूजी ?

सासजी मैं कैसे कात सकती हूँ ?

काम चोर व्यक्ति काम न करने का एक न एक बहाना ढूँढ ही लेता है ।

संदर्भ कथा—सास ने बहू से सूत कातने के लिए कहा तो वह बोली कि सासजी, आज तो पहल 'पड़वा' (प्रतिपदा) है, इसलिए आज कैसे सूत कात सकती हूँ ? अगले दिन सास ने फिर सूत कातने के लिये बहू से कहा तो बहू बोली कि आज तो भैया दूज है, अतः आज भला कैसे सूत कात सकती हूँ । इसी प्रकार वह कजली तीज, करवा चौथ, नाग पंचमी, 'छाना छठ', सीतला सप्तमी, दुर्गा अष्टमी, रामनवमी, दशहरा, निर्जला एकादशी, वत्सबारस, धन तेरस और रूप चौदस आदि कह कर टालती रही । पूर्णिमा को होली एवं अमावस्या को दीवाली बतला कर सूत कातने में असमर्थता प्रकट कर दी और इस प्रकार बहू ने कभी सूत कातने का अवसर नहीं आने दिया ।

९५६. कैर को ठूंठ टूटज्या, पण लुळै कोनी ।

कैर का ठुंठ टूट भले ही जाए, झुकता नहीं ।

उजड्ड आदमी नुकसान भले ही उठाले, लेकिन अपने दुराग्रह को नहीं छोड़ता ।

९५७. कैर, बोर, पीलू पकै, नीम आम पक जाय ।

दूध दही रस कस घणां, कातिक साख सवाय ।

कैर, बेर, पीलू, नीम और आम अधिक फलें तो दूध-दही आदि रस-कस पदार्थों की बहुलता रहेगी और कातिक में फसल सवाई होगी ।

९५८. कै रूवां, कै धूवां, कै दूवां ।

जाड़ा रूई से, आग तापने से अथवा दो जनों के मिल कर सोने से दूर होता है ।

९५९. कै रोसी वोहरो, कै वोहरै की जोय।
गैरो साटो देय कर, पतळा मांडा पोय।
मुफ्त का माल उड़ाने वाला व्यक्ति जो वोहरे से रुपये उधार लाया है, अपनी घरवाली से कहता है कि या तो वोहरा रोयेगा या वोहरे की स्त्री रोयेगी, अपने तो चकाचक माल उड़ने दो।
रू० खाओ वेटा घी अर खांड, कै रोसी वोरो कै वोरै की रांड।

९६०. कवै खेत की, सुणै खळै की।
कहते कुछ हैं, सुनता कुछ है।

९६१. कवै जिको कुहावै।
जो दूसरों को अपशब्द कहता है, बदले में उसे भी अपशब्द सुनने पड़ते हैं।
रू० कोई नै रै कवै जिको तूं कुहावै।

९६२. कै सहरां, कै डहरां।
मनुष्य या तो शहर में कोई धंधा या मजदूरी करके जीवन निर्वाह कर सकता है अथवा उपजाऊ खेत पर निर्भर रह कर।

९६३. कै सुणै जणी, कै सुणै धणी।
औरत के मन की बात या तो उसकी मां सुनती है अथवा उसका पति।

९६४. कै सोवै राजा को पूत, कै सोवै जोगी अवधूत।
या तो राजा का बेटा निश्चिन्त होकर सोता है या अवधूत जोगी।

९६५. कै हंसा मोती चुगै, कै लंघण कर ज्याय।
या तो हंस मोती चुगते हैं नहीं तो लंघन ही कर जाते हैं।

९६६. कोई कनै नौ म्होर होसी, जिको ई तेरै जीमण नै आसी।
जिसके पास नौ मोहरें होंगी, वही तुम्हारे घर भोजन करने आयेगा।
सन्दर्भ कथा—एक साधु ने वर्षों तक भिक्षा मांग कर जो कुछ जोड़ा था उससे सोने की ९ मोहरे खरीद ली थीं। इन मोहरों को वह सदैव अपनी जटा में छिपाये रखता था। हर सवेरे जब वह शौच के लिए जंगल में जाता तब एक उनको बार गिनकर और सम्भाल कर फिर जटा में बांध लिया करता। एक दिन एक जाट ने ये मोहरें देखलीं और वह बाबाजी की कुटिया पर जाकर उन्हें अपने भोजन करने के लिये घर लिवा लाया। बाबाजी को गाढ़ी खीर परोसी गई, लेकिन बाबाजी भोजन करने को तैयार हुये तो जाट अपनी औरत को डांट कर पूछने लगा कि मैंने अभी अभी ९ मोहरें यहां रखी थीं, वे कहाँ गई? औरत साफ नट गई तो बाबाजी की बारी आई और उनकी जटा से ९ मोहरें बरामद हो गई। बाबाजी खिन्न-मन, बिना भोजन किये ही वहां से चले गये। कुछ समय बाद वही जाट उन बाबाजी को पुनः भोजन का निमन्त्रण देने उनकी कुटिया पर गया तो बाबाजी बोले—जिसके पास नौ मोहरें होंगी वही तुम्हारे घर जीमने जाएगा।

६६७. कोई की जबान चालै तो, कोई का हाथ चालै ।
किसी की जबान चलती है तो किसी के हाथ चलते है ।
कोई गाली निकालता है तो कोई बदले मे उसे पीट देता है ।

६६८. कोई कै बंगण बायला, कोई कै बंगण पच्च ।
कोई कै बादी करै, कोई कै जावै जच्च ।।
एक ही वस्तु किसी के लिये हित कर होती है तो किसी के लिये अहितकर ।

६६६ कोई कैवै रामदेवजी, कोई कैवै पब्बा ।
दो दो रोटी बांट लेई, आप-आप कै डब्बां ।
कोई रामदेवजी के नाम पर तो कोई पाबूजी के नाम पर अपनी आजीविका कमाता है ।
सब किसी न किसी हीले से रोटी कमाते है ।

६७०. कोई को घर बळै, कोई तपै ।
किसी का घर जल रहा है और कोई उससे आग ताप रहा है ।

६७१. कोई खाय कर राजी होवै तो कोई खुवाय कर राजी होवै ।
कोई किसी दूसरे के यहां खाना खाकर राजी होता है, लेकिन कोई अपने यहाँ दूसरों को खिलाकर प्रसन्न होता है ।

६७२. कोई गावै होळी का तो कोई गावै दिवाळी का ।
कोई होली के गीत गा रहा है तो कोई दीवाली के ।

६७३. कोई चालो चाकरी, ताज्यो तुरक त्यार ।
कोई भी चाकरी के लिये जाये, ताजिया तुर्क उसके साथ चलने के लिये हर घड़ी तैयार रहता है ।
कोई आदमी भले ही कोई काम करे ताजिया तुर्क अपनी टाग अड़ाने के लिए बीच मे आ धमकता है ।

६७४ कोई तातो थूकै जिकै न राख ।
जो कोई गर्म थूके, उसे रखलो ।

संदर्भ कथा—किसी सेठ के यहां एक नौकर रहता था जो बड़ा ही अड़ियल था । सेठ उसे किसी प्रकार निभाये जा रहा था, लेकिन वह जाने के लिये कोई न कोई बहाना ढूंढ रहा था । एक दिन वह सेठ के हाथ धुलवा रहा था कि उसने जानबूझ कर सेठ के हाथ पर थूक दिया । सेठ को बड़ा बुरा लगा, लेकिन उसने अपने गुस्से को दबाते हुए नौकर ने कहा, वाह ! तुम्हारा थूक तो बड़ा शीतल है । बस, नौकर को बहाना मिल गया । उसने उत्तर दिया कि जो गर्म थूके उसे रखलो, मै तो यह चला । यों कहकर वह वहां से चल दिया ।

९७५. **कोई ना देखो, पण राम तो देखै है ।**
भले ही और कोई न देखे, लेकिन भगवान् तो सब कुछ देखता है ।

संदर्भ कथा—एक बार किसी साधु के पास दो युवक शिष्य बनने की इच्छा से आये । साधु ने उनकी परीक्षा लेनी चाही और दोनों को एक-एक कबूतर देकर उनसे कहा कि इनको ऐसे स्थान पर मार कर ले आओ जहाँ कोई न देखता हो । दोनों युवक कबूतरों को लेकर अलग-अलग दिशा में चल पड़े । एक ने तो वृक्षों से घिरा एक जन शून्य स्थान देखा और उन वृक्षों की ओट में जाकर कबूतर की गरदन मरोड़ लाया । लेकिन दूसरा ऐसा न कर सका । वह कबूतर को सही-सलामत लेकर साधु की कुटिया पर लौट आया ।

पहले युवक ने साधु को विश्वास दिलाते हुये दृढ़ता पूर्वक कहा कि मैंने कबूतर को ऐसे स्थान पर ले जाकर मारा है, जहाँ कोई नहीं देखता था । लेकिन दूसरे ने अपनी मजबूरी प्रगट करते हुये कहा कि मुझे कोई ऐसा स्थान नहीं मिला, जहां कोई न देखता हो । और कोई देखे या न देखे, लेकिन भगवान् की आंखें मुझे साफ देख रही थीं । दोनों की बात सुनकर साधु ने पहले युवक से कहा कि तुम मेरे शिष्य बनने के सर्वथा अयोग्य हो, अतः यहां से चले जाओ । फिर उसने दूसरे से कहा कि तुम स्वयं ज्ञानी हो और भगवान् को घट घट में देखते हो, अतः तुम्हें किसी का शिष्य बनने की आवश्यकता ही नहीं है, और यों कहकर उसे भी विदा कर दिया ।

९७६. **कोई निरखै कांच कांगसी, कोई निरखै मणियारी ।**
कोई कांच-कंघी देख रहा है तो कोई उन्हें बेचने वाली मनिहारी पर टकटकी लगाये है ।

९७७. **कोई मा कै पेट सें सीख कर कोनी आवै ।**
कोई भी आदमी माँ के पेट से सीख कर नहीं आता ।
काम करने से ही मनुष्य प्रवीण होता है ।

९७८. **कोई मानै नी तानै नी, मैं लाडै की भूवा ।**
कोई माने न ताने, मैं दूल्हे की बूआ ।
ख्वाहमख्वाह रिश्ता जोड़ कर अपनी प्रमुखता जताना ।

९७९. **कोई सागै आयो न कोई सागै जावै ।**
संसार में न कोई किसी के साथ आया है, न साथ जाएगा ।

९८०. **कोट कडूंबो खीचड़ो खग बावां को काछ ।**
इतणा तो जाडा भला, छाती बोरो छाछ ।
उपरोक्त सारी चीजें पुष्ट एवं मोटी होनी चाहिएँ ।

९८१. **कोट की सोभा कांगरा ई कह् देवं ।**
किले की शोभा तो उसके कंगूरे ही बतला देते है ।

९८२. **कोट कै लैर कर अर मंदर कै आगै कर ।**
किले के पीछे से और मन्दिर के आगे से निकलना चाहिए ।
रू० गढ़ की अगाडी अर घोडै की पछाड़ी मारै ।

९८३. **कोठै होवै सोई होठै आवै ।**
जो बात पेट में होती है, वह होठों पर आये बिना नहीं रहती ।

९८४. **कोडी कुटावै भोडी ।**
कौड़ी ही सिर फुड़वाती है ।
अर्थ ही सारे अनर्थों की जड़ है ।

९८५. **कोडी-कोडी करतां भी लंक लागै ।**
कौड़ी-कौड़ी जोड़ने पर भी बड़ी राशि जमा हो जाती है और कौड़ी-कौड़ी खर्च करने से सब समाप्त हो जाता है ।

९८६. **कोडी साटै हाथी जा, 'क कोनी लेणो; लाख में जावैगो जद लेवांगा ।**
एक कौड़ी में हाथी बिक रहा है तो नहीं लेना है, जब लाख रुपये में बिकेगा तब लेंगे ।

संदर्भ कथा—एक सेठ किसी समय बड़ा सम्पन्न था, लेकिन धीरे-धीरे उसकी सारी सम्पत्ति समाप्त हो गई और स्थिति यहां तक बिगड़ी कि दो जून खाने के भी लाले पड़ गये । उन्हीं दिनों उस गाँव में से एक हाथी गुजरा । हाथी का मालिक उसे एक कौड़ी में भी बेचने को तैयार था । सेठ के बेटे ने आकर अपने बाप से कहा तो सेठ बोला—एक कौड़ी का हाथी हमें नहीं लेना है, जिस दिन हम इस योग्य हो जायेंगे कि लाख रुपये देकर भी हाथी खरीद सकें, उस दिन एक रुपये देकर भी हाथी खरीद लेंगे । हम उस समय उसे अच्छी तरह खिला-पिला भी सकेंगे और हमारे घर के दरवाजे पर बंधा हुआ हाथी अच्छा भी लगेगा । यदि एक कौड़ी में आज हाथी खरीद भी लेंगे तो न हम उसे खिला-पिला सकेंगे और न वह हमारे दरवाजे पर शोभा देगा ।

९८७. **कोढ तो थी ही, पांव और होगी ।**
कोढ तो पहले से थी ही, उसमें खाज और हो गई ।

९८८. **कोढिये को मनं सुवासणी पर बिटळै ।**
कोढी का मन सुआसिनों पर चलता है ।
रू० कोढिये को काड़ सुवासणी पर उठै ।

९८९. **कोढिये को दाणों ठाकुर दुआरं क्यूं ?**
कोढी का दाना ठाकुर द्वारे क्यों चढ़े ?
पापी का पैसा सत्कर्म में कब लगे ?

९९०. कोथळी में टक्का होवै जितरा ई नीसरै।
थैली में जितने टके डाले गये हैं, उतने ही तो निकलेंगे।
शरीर में जितने श्वास डाले हुये हैं, उतने ही आयेंगे।
ऐसा विश्वास है कि आदमी की जिन्दगी श्वासों की गिनती के अनुसार होती है। इसलिए लम्बे श्वास लेने से आयु बढ़ती है।
रू० कोथळी में आटो होवै, जितरी ई रोटी होवै।

९९१. कोथळी में न्याणो तो बेटो परणीजे काणो।
रुपये खर्च करने पर काना बेटा भी ब्याहा जाता है।
रू० (१) कोथळी में टक्का तो अै रही मक्का।
(२) नगद न्याणा, बीन परणीजै काणा।

९९२. कोपीन रांड ई पोसाक में गिणी जावै है के ?
क्या क्षुद्र लंगोटी की गिनती भी पोशाक में होती है ?

९९३. कोयलां की दलाली में हाथ काळा।
कोयलों की दलाली में हाथ काले।

९९४. कोस तो चाली ई कोनी अर तिसाई भी होगी।
कोस भर तो चली ही नहीं और प्यासी भी हो गई।
रू० पैंड तो चाली ई कोनी अर काका तिसाई।

९९५. क्यां पर ल्याया केचली, क्यां पर ऊंट पचास ?
गैणै मे ल्याया झालरो, च्यारूं भाई साथ।
सार स्वल्प और आडम्बर बेशुमार।
संदर्भ कथा—किसी गांव में चार भाई रहते थे। एक भाई के लड़के का विवाह निश्चित हुआ तो बारात बड़ी धूमधाम से चली। पचास ऊंटों पर पूरे एक सौ आदमी सवार, नाचने गाने के लिये पातुर और चारों भाई बड़ी ऐंठ के साथ बरात सजा कर लड़के को ब्याहने चले। लेकिन वधू के लिये गहने के नाम पर केवल एक 'झालरा' मात्र था। तब वधू पक्ष की ओर से ताना मारते हुये किसी ने उपरोक्त कहावती दोहा कहा।
झालरा = गले में पहनने का सामान्य आभूषण जो प्रायः चांदी का होता है।

९९६. क्युंई घोड़ै को घटसी तो क्युंई सवार को ई घटसी।
यदि घोड़ा पीछे रह गया तो जहाँ घोड़े की प्रतिष्ठा कम होगी, वहाँ सवार की भी कम होगी।

९९७. क्युंई डरै, क्युंई डरावै।
कुछ स्वयं डरे, कुछ प्रतिपक्षी को डरावे, इसी नीति से काम बन सकता है।
दोनों पक्षों के थोड़ा-थोड़ा झुकने से ही काम बनता है।

९९८. क्युईं तो लो खोटो, क्युईं लुहार खोटो।

कुछ तो लोहे में खोट है, कुछ लुहार में।
दोष दोनों पक्षों का है।

तु० १. कीं तो कवाड़ियो भोलो कीं धव चीकणी।

२. कीं तो काठ चीकणो, कीं कुहाड़ियो भूठो।

३. क्युईं गुड़ ढीलो, क्युईं बाणियो ढीलो।
क्युईं ताखड़ी में काण, तीनूं बातां री हाण॥

९९९. क्युईं तो रांड बावळी ही अर क्युईं भूतां खदेड़ी।
कुछ तो रांड पहले से ही बावली थी और फिर भूतों ने खदेड़ दी तो रही-सही कसर भी पूरी हो गई।

१०००. क्यूं कुस टूटै क्यूं घर आऊं, क्यूं राजा घर बैद कुहाऊं ?
औरूं न खाऊं रांड की खीर, सहाय करो मेरा गोगा पीर॥

संदर्भ कथा— एक किसान अपने खेत में काम कर रहा था कि उसकी कुश (लोहे का एक कृषि उपकरण) टूट गई। वह दूसरी कुश लेने को घर आया। उसकी औरत बड़ी चालाक थी और पति की अनुपस्थिति में नित्य खीर बना कर खाया करती थी। उस दिन भी वह खीर बनाकर पड़ोसिन के यहाँ चली गई थी। लेकिन इसी बीच किसान घर पहुँच गया और वह सारी खीर खा गया। उसकी औरत घर आई तो पूरी बात जानकर वह झुंझला उठी। आज उसकी पोल खुल गयी थी। उसने मन ही मन पति को इसका मजा चखाने का संकल्प कर लिया।

अगले ही दिन राजा के कुँअर को साँप डस गया। बहुत उपचार कराया गया, लेकिन वह ठीक नहीं हुआ। किसान की औरत को अच्छा अवसर मिल गया और पति को राजा से दण्ड दिलवाने की नीयत से उसने राजा से कह दिया कि उसका पति बड़ा करामाती है और वह तत्काल ही सांप का विष उतार देगा। राजा ने तुरन्त ही किसान को बुलवाया। किसान ने बहुत आनाकानी की कि वह कुछ नहीं जानता, लेकिन राजा को लगा कि यह झूठ बोल रहा है। इसलिए उसने हुक्म दिया कि यदि यह राजकुमार को ठीक नहीं करे तो इसे जूते लगाओ। इस पर लाचार होकर वह राजकुमार का विष उतारने के लिए झाड़ा देने लगा—
क्यूं कुस टूटै, क्यूं घर आऊं, क्यूं राजा घर बैद कुहाऊं।
औरूं न खाऊं रांड की खीर, सहाय करो मेरा गोगा पीर॥

१००१. क्यूं राम की मा नै लातां सूं मारै।
क्यों झूठी डींग हांकते हो ?

१००२. क्रतिका तो कोरी गई, अदरा मेह न बूंद ।
तो यूं जाणो भड्डली, काळ मचावै दूंद ॥
सूर्य के कृतिका एवं आर्द्रा नक्षत्र पर रहते यदि जरा भी वर्षा न हो तो अकाल पड़े ।

१००३. खग पांख्यां फैलाय, उभकि चूंच पवनां भखै ।
तीतर गूंगा थाय, इन्द्र धड़कै माघजी ॥
यदि पक्षी अपने पंखों को फैलाकर बैठें और चोंच खोल कर पवन का भक्षण करें, तीतर नामक पक्षी बोलना बन्द करदें तो जानें कि वर्षा शीघ्र होगी ।

१००४. खड़्या ई कोनी दीखै जिका पड़्या के दीखैगा ?
जो खड़े हुए भी कोई कारगुजारी नही दिखला सकते, वे पड़ने के बाद क्या दिखलाएँगे ?
जब पद पर रहते हुये भी कुछ नहीं कर पाते तो पदच्युत होने के बाद क्या कर सकेंगे ?

१००५. खर घूघू मूरख नरां, सदा सुखी प्रिथिराज ।
गधा, उल्लू और मूर्ख मनुष्य सदा सुखी (निश्चित) रहते हैं, क्योंकि उन्हें अपने कर्तव्य का जरा भी भान नहीं होता ।

१००६. खरची का कसाला, भूखा मरै रिसाला ।
राज्य के खजाने में धन का अभाव होने से सेना भूखों मरने लगती है ।
अर्थ के अभाव में अत्यावश्यक कार्य भी रुक जाते हैं ।

१००७. खरची खूटी, यारी टूटी ।
अर्थाभाव में यारी टूट जाती है ।
पैसा रहा न पास यार मुख से नहीं बोले ।

१००८. खर बायों, बिस जीवणों ।
यात्रा करते समय गधे का बाईं ओर मिलना एवं सांप आदि विषैले जन्तुओं का दाईं ओर मिलना अच्छा समझा जाता है ।

१००९. खरबूजै नै देखकर खरबूजो रंग पलटै ।
खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है ।
एक की देखादेखी दूसरा भी तेवर बदलने लगता है ।

१०१०. खरबूजै पर चक्कू पड़ो चाए चक्कू पर खरबूजो पडो, नास तो खरबूजै को ई है ।
चाहे खरबूजे पर चाकू गिरे, चाहे चाकू पर खरबूजा, दोनों तरफ नाश तो खरबूजे का ही होगा ।

१०११. खरी मजूरी, चोखा दाम ।
खरी मजदूरी, पूरे दाम ।

१०१२. खळ काकड़ा भूरी खाती, घी को देती लुम्मो ।
इंदरियो धररायो जद, अब याद आयो कुम्मो ।
मनुष्य हर सूरत में अपने स्वार्थ को प्राथमिकता देता है ।
संदर्भ कथा– एक किसान के यहाँ भूरी भैंस और कुम्मा नाम का बैल था । भैंस से उसे नित्य दूध और घी का लौंदा मिलता था, इसलिए वह उसे ही खिलाता-पिलाता था और बेचारे बैल की सुध भी नहीं लेता था । लेकिन जब वर्षा-ऋतु आई और बादल गरजने लगे तो किसान हल जोतने की मंशा से बैल के पास गया । इस पर उपरोक्त कहावती पद्य बैल की ओर से कहा गया ।

१०१३. खळ गुड़ एकं भाव ।
खली और गुड़ एक भाव ।
जहाँ भले-बुरे एवं न्याय-अन्याय में कोई अन्तर न हो ।
रू० गुड़ खळ एक भाव ।

१०१४. खसम मरे को धोखो कोनी, सुपनो साचो होणो चाये ।
पति के मरने का धोखा नहीं, लेकिन घरवाली का सपना सच होना चाहिए ।
अपने क्षुद्र अहं की पूर्ति के लिए सर्वनाश की भी परवाह न करना ।

१०१५. खसम मारी बरसोलै की, के मुँह लेकर बोलैगी ?
जब पति ही अपनी स्त्री को पीटे तो वह किसके आगे जाकर पुकारे ?

१०१६. खसले दादी पोतां सें. हाड तोड़ दे गोतां सें ।
दादी तो पोतों से सेवा की अपेक्षा रखती थी, लेकिन पोते ऐसे निकले कि उसकी-हड्डी पसली ही तोड़ डालें ।

१०१७. खांड गळी का सै सीरी, गांड गळी को कोई कोनी ।
खाने-पीने के अवसर पर तो सब आ जुटते हैं, लेकिन विपदा के समय कोई नहीं आता ।
रू० खांड गळी को सो जग सीरी, गांड गळी को कोई ना ।

१०१८ खांड नै खांड हरावै, रांड नै रांड हरावै ।
खांड को खांड हराती है, रांड को रांड ।
पहले बिना दानेदार चीनी ही काम में ली जाती थी जिसे खांड कहते थे । यह खांड घटिया बढ़िया अनेक किस्मों की होती थी । बोरियों से खांड की बानगियाँ परखियों के द्वारा निकालकर और हरे रंग की चद्दर पर रखकर इनकी तुलना की जाती थी । एक बानगी दूसरी से अच्छी साबित होती जाती थी और इस प्रकार एक खांड दूसरी से हारती जाती थी ।

१०१९. खांड बिना सब रांड रसोई ।
खांड के बिना भोजन शृंगार रहित विधवा की तरह लगता है ।
रू० खांड बिना मोडी रांड रसोई ।

१०२०. खां सा'ब कै रिपिये का सौ टपका ।

खां साहब के रुपये के सौ टके ।

संदर्भ कथा— एक खां साहब सौदा-सुल्फ खरीदने के लिए मोदी की दुकान पर गये । उन्होंने मोदी से हल्दी का भाव पूछा तो मोदो ने एक रुपये की सवा सेर हल्दी बतलाई । इस पर खां साहब ने रौब से कहा कि सवा सेर का भाव तो सर्व-साधारण लोगों का है, खां साहब एक रुपये की एक सेर ही लेंगे । मोदी को इसमें कोई ऐतराज नही था । उसने एक रुपये की एक सेर हल्दी तोल दी । इसी प्रकार खां साहब ने पांच-सात रुपये की चीजें और खरीदी । मोदी खुश था कि आज अच्छी मुर्गी फंसी है ।

अन्त में खां साहब ने मोदी से टके का भाव पूछा तो मोदी ने कहा कि एक रुपये के बत्तीस । इस पर खां साहब ने तुनक कर कहा कि बत्तीस टके तो सामान्य लोगों के रुपये के होते हैं, खां साहब के रुपये के सौ टके होते हैं । इसलिए सौ के भाव से पांच रुपये के टके भी दे दो । खां साहब की बात सुन कर मोदी बिटपिटाया, लेकिन अन्त में उसे सौ के भाव से ही पांच रुपये के टके खां साहब को देने पड़े और कुल मिला कर मोदी के लिए यह सौदा घाटे का ही रहा ।

१०२१. खांसी करूं खुर्रो करूं, फेर भी न मरै तो के करूं ।

तम्बाकू के सेवन से आदमी चाहे मरे नहीं, लेकिन खाँसी आदि रोगों का शिकार तो हो ही जाता है ।

१०२२. खाइये त्यूंहार, चालिये ब्योहार ।

मिष्टान्न आदि विशेष भोजन तो पर्व-त्योहार जैसे खास अवसर पर ही करना चाहिए (नित्य नहीं) और व्यावहारिक ढंग से चलना चाहिए, फैल-फितूर नहीं करना चाहिए ।

१०२३. खाई दाळ तबेलै की, अक्कल होई धेलै की ।

राजा या ठिकानेदार के तबेले (अस्तबल) की दाल खाते ही चरवादार (साईस) की बुद्धि नष्ट हो जाती है ।

सरकारी नौकरी पर लगते ही दिमाग फिर जाता है ।

१०२४. खाकर दिरतावै न्हाकर स्यावै ।

खाने के बाद शरीर में आलस्य आता है, लेकिन नहाने के बाद ताजगी और स्फूर्ति ।

१०२५. खाकर सो ज्याणो, मार कर भाग ज्याणो ।

खाना खाकर सो जाना चाहिए कि जिससे वह अच्छी तरह पच जाए और मार कर भाग जाना चाहिए अन्यथा मार खाये हुए व्यक्ति के हिमायती आकर उसे पीट सकते हैं ।

१०२६. खाज, दाद अर राज बड़भागी नै मिलै ।

खाज, दाद और राज किसी बड़-भागी को ही नसीब होते हैं (व्यंग्य) ।

१०२७. खाज पर आंगळी सीदी जावै ।

शरीर में खुजलाहट महसूस होने पर उँगली वहाँ सीधी जाती है ।

अपने स्वार्थ की ओर मनुष्य का ध्यान तुरन्त जाता है ।

रू० खाज पर आँगळी गये बिना कोनी रैवै ।

१०२८. खाट पड़े ले लीजिए, पीछै देवै न खील ।

आं तीन्यां का एक गुण, वेस्यां वैद उकील ।।

वेश्या अपने ग्राहक से और वैद्य अपने रोगी से खाट पर पड़े हुये ही जो लेले सो ठीक है, पीछे मिलने की उम्मीद न करे । इसी प्रकार वकील अपने मवक्किल से जितना पहले हथिया ले वही उसका है ।

१०२९. खाणो'क न खाणो तो न खाणो, जाणो'क न जाणो तो जाणो ।

यदि मन में यह दुविधा हो कि खाना खायें या न खायें तो न खाना अच्छा है, लेकिन ऐसी ही दुविधा शौच जाने के सम्बन्ध में हो तो शौच जाना अच्छा ।

१०३०. खाणो थोड़ो, थूकणो बोळो ।

खाये थोड़ा, थूके अधिक ।

१०३१. खाणो परायो, पण पेट तो आपको ।

खाना तो पराया है, लेकिन पेट तो अपना है ।

किसी के यहाँ खाना खाने जाएँ तो दूसरे का माल देखकर इतना नहीं खा लेना चाहिए कि जो पेट में पीड़ा उत्पन्न करे ।

रू० घर तो परायो, पण पेट तो आपको ।

१०३२. खाणो पीणो खेलणों, सोणो खूंटी ताण ।

आछी डोबी कंथड़ा, नामरदी कै पाण ।।

पत्नि अपने निठल्लू पति से कहती है कि खाना, पीना, खेलना और खूंटी तान कर सोना, बस ये ही तुम्हारे काम रह गये हैं । अपनी अकर्मण्यता के कारण तुमने सब कुछ चौपट कर दिया है ।

१०३३. खाणो मन भातो, पैरणो जग भातो ।

खाना तो अपनी रुचि के अनुसार खाना चाहिये, लेकिन वस्त्र वैसे पहनने चाहिएँ जो दुनिया को बुरे न लगें ।

रू० खाणों घर सुहातो, पैरणो जग सुहातो ।

१०३४. खाणो मा कै हाथ को होवो भलाईं झैर ई ।

वैठणो भायां को, होवो, भलाईं वैर ई ।

चालणो गैलै को, होवो भलाईं फेर ई ।

छायां मोकै की, होवो भलाईं कैर ई ।

धीणों भैंस को, होवो भलाईं सेर ई ।

भोजन तो मां के हाथ का ही खाना चाहिए, भले जहर ही हो । वैठना भाइयों में ही चाहिए, भले परस्पर अनबन ही हो । चलना सही रास्ते से ही चाहिए, भले इसमें चक्कर ही पड़े । छाया मौके की अच्छी, चाहे कैर की ही क्यों न हो । धीना भैंस का अच्छा, भले सेर ही क्यों न हो ।

१०३५. खात अर पाणी, के करै विनाणी ।

खेत को खाद और पानी यथेष्ठ मिलें तो फसल अच्छी होगी ही ।

१०३६. खातण होय वळीतै नै क्यूं जावै ?

तेलण होय ल्हुखो क्यूं खावै ?

खातिन ईंधन के लिए क्यों जाए और तेलिन लूखा क्यों खाए ?

१०३७. खात पड़ै तो खेत, नईं तो कूढो रेत ।

खाद डालने से ही खेत सुधरता है, नहीं तो वह वालू का ढेर ही है ।

रू० खेती खात सेती ।

१०३८. खातां खाण न पीतां पाणी ।

सन्दर्भ कथा—एक मठ में बहुत से साधु रहते थे । लेकिन ओढने के लिए मठ में केवल एक ही बड़ी 'सौड़' थी । जाड़े के दिन थे और शाम होते ही जाड़ा वरसने लगता था । इसलिए हर साधु एक से एक पहले सोड़ में घुस जाने को व्यग्र रहता था । हर साधु सौड़ को अपनी ओर खींचता था और इस प्रकार रात भर खींचा तानी मची रहती ।

पद्य—अेक सोड़ अर जणा पचास, सारा करै ओढण की आस ।
साँझ पड़े ई खींचा ताणी, खातां खाण न पीतां पाणी ।।

रू० अेक टाट सात को सीर, नितकी जेठ रंधावै खीर ।
रात्यूं रैवै खींचाताणी, खातां खाण न पीतां पाणी ।

१०३९. खातां खातां ईं वंचग्यो सो वीज को वाजरो ।

जो खाते-खाते वच गया वही वीज का वाजरा ।

खेत में वोने के लिये किसान अच्छी-किस्म का वाजरा वीज के लिये वचाकर रखते हैं, लेकिन अभाव में वह भी खाया जाता है, इसलिये जो वच जाए वही वीज का वाजरा ।

१०४०. खाती कै गई ही सो मेरै मारी।
क्यांको ?
'क बठै ई घाटो हो के ?
खाती के यहाँ शारीरिक चोट पहुँचाने वाली चीज की क्या कमी ?

१०४१. खाद करै उपाध।
पेट भरा होने पर उत्पात सूझता है।
अच्छा खाना खाते रहने से बल बढ़ता है और शारीरिक विकास विशेष रूप से होता है।

१०४२. खानजादा खेती करै, तेली चढ़ै तुरंग।
खानजादे तो खेती करते हैं और तेली घोड़ों पर चढ़ घूमते हैं।

संदर्भ—फतहपुर के कायमखानी नवाब सरदारखां ने एक रूपवती तेलिन पर्दे में डाल ली थी। इसलिए उसके यहाँ कायमखानियों की अपेक्षा तेलियों को प्रमुखता प्राप्त हो गई थी। इसी को लेकर कहा गया है—

देखो खेल खुदाय का, के के पलटै रंग।
खानजादा खेती करै, तेली चढै तुरंग॥

१०४३. खाता पीता ना मरै, ऊंघतड़ा मर जाय।

१०४४. खा, बाणियां गुड़ तेरो ई है।
बनिये ! गुड़ तुम्हारा ही है, भले ही शौक से खाओ।
जब आदमी अपनी ही वस्तु का उपभोग करते हुए यह समझकर संतुष्ट हो कि वह मुफ्त में ही पराई वस्तु का उपभोग कर रहा है।

सन्दर्भ कथा—किसी बनिये के यहाँ भिवानी से गुड़ की कतारें आया करती थीं। एक बार वह यात्रा पर गया तो किसी धर्मशाला में रुका। वहाँ कुछ कतारिये भी ठहरे हुये थे जो गुड़ लाये थे। गुड़ की बानगी देखने के बहाने बनिया उसमें से गुड़ खाने लगा। लेकिन वस्तुतः वह गुड़ उसी के यहाँ जा रहा था। बनिया तो कतारियों को नहीं जानता था, लेकिन एक कतारिया बनिये को जानता था। इसलिये उसने चालाकी से बनिये को गुड़ खाते देखकर कहा, 'खा बाणियां गुड़ तेरो ई है।'

१०४५. खावा-पीवा में तो कैई सौक नै ऊपर आणदयूं नीं, छूं तो काम में ई मठी छूं।
काम करने में भले ही ढीली होऊं, लेकिन खाने-पीने के मामले में तो इतनी तेज हूँ कि अपनी किसी सौत को आगे न निकलने दूं।

१०४६. खावो सीरा को अर मिलवो वीरा को।
खाना तो हलवे का और मिलना भाई का।
रू० (१) खावो खीर को, वा'वो तीर को।
(२) खावो कोळा को, पैरवो चोळा को।

१०४७. खायां खूटै, खींच्यां टूटै ।
निरन्तर खाते रहने से बड़ा खाद्य-भण्डार भी समाप्त हो जाता है और अधिक खींचने से कोई भी बात या वस्तु टूट जाती है ।

१०४८. खाया-खाया माई जाया गेर दे, इतणै में लालच मत करै ।
भाई ! जितना तुमने खाया है, वह सब उगलना पड़ेगा । इसमें जरा भी लालच करने से काम नहीं चलेगा ।

१०४९. खाया गटका, आवै भटका ।
कभी जो गुलछर्रे उड़ाये थे, उनकी याद अब साल रही है ।

१०५०. खाया जिता चाया कोनी ।
जैसा खाया, वैसा चाहा नहीं ।

१०५१. खाया सोई खरचिया, दीन्यां सोई सत्थ ।
जो खालें-पीलें सो ही अपना है और दिया हुआ दान ही साथ चलता है ।

संदर्भ कथा—कहा जाता है कि जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंह को बहुमूल्य आभूषण धारण करने का बड़ा शौक था । एक बार उन्होंने अपने मन्त्रियों से कहा कि मेरे मरने के बाद मेरे आभूषण शरीर से न उतारे जाएं । मन्त्रियों ने महाराजा, को वैसा ही विश्वास दिला दिया । इसकी परीक्षा लेने के लिए एक दिन महाराजा ने श्वास खींच कर समाधि लगाली । सबने यही जाना कि महाराजा की मृत्यु हो गई । इसलिए मन्त्रियों ने उनके शरीर से सारे बहुमूल्य आभूषण उतार लिए और उनके स्थान पर वैसे ही नकली आभूषण पहना दिये । इतने में महाराजा की समाधि टूटी और उन्होंने सारी स्थिति को समझ कर कहा—

खाया सोई खरचिया, दीन्यां सोई सत्थ ।
जसवंत धर पोढाणियां, माल बिराणै हत्थ ।।

१०५२. खाये जींका गाये ।
जिसका खाना, उसी के गीत गाना ।
रू० (१) खाजा जींका बाजा ।
(२) खाजा जिता ई बाजा ।

१०५३. खायो-पीयो अेक नाम, मार्‌यो कूट्यो अेक नाम ।
चाहे एक कौर खाएँ, चाहे भरपेट, भोजन करने वालों में तो गिनती हो ही जाती है । इसी प्रकार चाहे किसी को थोड़ा पीटें या अधिक, पीटने का नाम तो हो ही जाता है ।

१०५४. खारा खावै जिको ई मीठा खावै ।
जो खारे खाता है, वही मीठे भी खाता है ।
जो दुःख उठाता है, वही सुख भी भोगता है ।

१०५५. खारा बोल्योड़ा अर मीठा खायोड़ा भूलं कोनी ।
किसी के द्वारा कहे गये कटु वचन और किसी के यहाँ खाया हुआ मीठा भोजन, भूलना नहीं ।

१०५६. खारी बोली मावड़ी, मीठा बोल्या लोग ।
साच कहे थी मावड़ी, झूठ कहे था लोग ।
माँ की बात कड़वी और दूसरे लोगों की बात मीठी लगती थी । लेकिन अब पता चलता है कि माँ की बात खरी और हितकर थी जब कि अन्य लोगों की बात झूठी और परिणाम में अहितकर थी ।
रू० खारी बोली मावड़ी, मीठा बोल्या लोग ।
खारी लागी मावड़ी, मीठा लाग्या लोग ।।

१०५७. खारो कड़वो गन्धलो, जे वरसैलो तोय ।
करसण री हांणी हुवै, देस नास लो जोय ।
खारा, कड़ुआ और दुर्गन्ध युक्त पानी बरसे तो खेती के साथ देश का भी विनाश हो ।

१०५८. खाल पराई लाकड़ी, जाणै भुस में जाय ।
दूसरे की खाल में लकड़ी घुसेड़ी जाती है तो मानो भुस में घुसेड़ी जाती है । दूसरे की पीड़ा को किंचित् भी महसूस न करना ।
रू० पराई खाल में जावै, जाणै तूंतड़ां की थड़ में जावै ।

१०५९. खाली हाथ मूं डै कानी कोनी जा ।
खाली हाथ मुँह की तरफ नहीं जाता ।
बिना स्वार्थ के आदमी किसी काम में प्रवृत्त नहीं होता ।

१०६०. खाले-पीले सो आपको ।
मनुष्य जो खाले-पीले, वही अपना है ।
रू० खाणा पीणा खेलणा, तीन बात है तत्थ ।
आखर नैं मर जायगा, धर छतियन पर हत्थ ।।

१०६१. खावणै का सांसा, पावणां का वासा ।
घर में तो खाने का टोटा, तिस पर पाहुनों का आवागमन ।

१०६२. खावण-पीवण नैं खेमली, नाचण नैं नगराज ।
खाने-पीने को खेमली और नाचने के लिए नगराज ।
मौज मजे कोई करे और काम किसी को करना पड़े ।
रू० खावण-पीवण नैं दीवाळी, कुटण नैं छाज ।
दीवाली के दूसरे दिन प्रातः ही स्त्रियां छाज को बेलन से पीटती हैं ।

१०६३. खावण में आगै, काम सैं भागै ।
खाने पीने में सबसे आगे और काम से दूर भागे ।

१०६४. खावै आपकी, बात बणावै जगत की।

लोग रोटी अपनी खाते हैं और बात दूसरों की बनाते हैं।

१०६५. खावै जिकै नै खुवाणो पड़ै।

जो दूसरों के यहाँ खाकर आता है, उसे दूसरों को अपने यहाँ खिलाना भी पड़ता है।

१०६६. खावै जितरी भूख, सोवै जितरी नींद।

खाने-पीने और सोने की जैसी आदत डाली जाए, वैसी ही पड़ जाती है।

१०६७. खावै तो ई डाकण, न खावै तो ई डाकण।

खाये तो भी डाकिन, न खाये तो भी डाकिन।

बदनाम मनुष्य यदि बुरा काम न भी करे तो भी उस पर लांछन लग जाता है।

१०६८. खावै-पीवै खसम को, गीत गावै बीरै का।

खाये-पीये पति का और गीत गाये भाई के।

१०६९. खावै पूणो जीवै दूणो।

जो पौना खाना खाता है, वह दुगना जीता है।

डट कर खाने की अपेक्षा थोड़ी भूख रख कर खाना अच्छा है।

१०७०. खावै बकरी की ज्यूं, सूकै लकड़ी की ज्यूं।

खाये बकरी की तरह, सूखे लकड़ी की तरह

१०७१. खिजूर खासी जिको झाड़ चढसी।

जिसे खजूर खाने होंगे, वही खजूर के वृक्ष पर चढेगा।

१०७२. खिलाये को नांव कोनी होवै, रुवाये को होज्या।

पराये बच्चे को खेलाते रहें तो कोई शाबाशी नहीं, लेकिन रुलाने पर उपालंभ तैयार।

१०७३. खीर खीचड़ो मंदी आंच।

खीर और खिचड़ी मंदी आंच से अच्छी पकती है।

१०७४. खीर बिगड़गी तो भी राबड़ी सैं न्याऊ कोनी।

खीर यदि बिगड़ भी जाए तो भी राबड़ी से बुरी नहीं।

१०७५. खीर सबड़कै की।

सबड़का लगाकर खाने से ही खीर का मजा आता है।

संदर्भ कथा—एक बार किसी राजा ने अपने सभी दरबारियों को भोज दिया। भोजन में सबको खीर परोसी गई। लेकिन खाने से पूर्व यह घोषणा कर दी गई कि कोई भी आदमी सबड़का लगा कर खीर न खाये। यदि कोई ऐसा करेगा तो उसका सिर धड़ से अलग कर दिया जाएगा। सब लोग चुप-चाप खीर खाने लगे। लेकिन तभी राजा की दृष्टि दूर बैठे एक दरबारी पर गई जो सबड़के लगा-लगा कर मौज से खीर खा रहा था। राजा ने उसके

पास जाकर पूछा कि क्या तुम्हें इस बात का पता नहीं कि जो भी सबड़का लगा कर खीर खायेगा, उसका सिर धड़ से अलग कर दिया जाएगा ? दरबारी ने नम्रता से उत्तर दिया कि महाराज ! मुझे पता है, लेकिन खीर सबड़के से ही खाई जाती है और तभी उसके खाने का मजा है। मुझे सबड़के लेकर पेट भर खीर खा लेने दीजिए, फिर भले ही मेरा सिर काट लें। उसके उत्तर से राजा बहुत खुश हुआ और बोला कि सारे दरबारियों में यही एक व्यक्ति वास्तव में खीर खाने वाला है।

१०७६. खीरां मेली खीचड़ी, टीलो आयो टच्च।

जैसे ही खिचड़ी चूल्हे पर से उतार कर अंगारों पर रखी, टीलू झट खाने के लिए आ बैठा।

पेटू आदमी इसी ताक में रहता है कि कब खाना तैयार हो और कब वह जीमने बैठे।

१०७७. खुद ई नाचै खुद ई वारणा ले।

खुद ही नाचे, खुद ही निछावर करे।

रू० आप ई नाचै, आप ई वारणा ले।

१०७८. खुदा की खुदाई नै कुण जाणै।

खुदा की खुदाई (ईश्वरता) को कौन जानता है ?

संदर्भ कथा—एक दिन एक मियां नमाज पढने के बाद कह रहा था कि या खुदा, तेरी खुदाई को कौन जानता है ? वहीं एक जाट खड़ा था। उसने मियां से कहा कि खुदा की खुदाई को मैं जानता हूं ? मियें ने जाट की बात का प्रतिवाद किया तो दोनों में होड लग गई। फैसला करवाने के लिए दोनों दिल्ली के बादशाह के दरबार में पहुँचे। जाट ने बादशाह से कहा कि हुजूर, मेरे साथ यमुना के किनारे चलें, वहीं मैं आपको खुदा की खुदाई दिखलाऊंगा। जब वे सब यमुना नदी के किनारे पर पहुँचे तो जाट ने नदी की ओर हाथ करके कहा कि यह खुदा की खुदाई है या इसे मियां के बाप-दादों ने खुदाई है ? बादशाह ने जाट के हक में फैसला दे दिया और वह होड जीत गया।

१०७९. खुदा तेरी खुदाई, मारै हो गधी मरगी गाई।

या खुदा ! तेरी भी कैसी खुदाई है ? मैं मारना चाहता था पड़ोसी की गधी और मर गई मेरी स्वयं की गाय।

सन्दर्भ कथा—एक मियां के घर के पास ही कुम्हार का घर था। मियां की कुम्हार से अनबन हो गई तो उसने खुदा से फरियाद की कि वह कुम्हार की गधी को मार दे। लेकिन अगले ही दिन उसकी स्वयं की गाय मर गई। इस पर मियां ने खुदा को उपालंभ देते हुए कहा कि या खुदा, यह

१०९७. **खेंची वणियां खेंची तणियां, खेंचम खेंच विकाय।**
चिनेक ढीली छोड़ दे, जड़ामूळ सें जाय।
वनिया अपना सौदा पूरी कसावट के साथ करे तभी लाभदायक होता है। *जरा सी ढील मे ही काम एक दम बिगड़ जाता है। इसी प्रकार तनी भी* पूरी तौर पर कसी रहे, यह अपेक्षित है।

१०९८. **खैरात वंटै जठै मंगता आपैई पूंच ज्याणै।**
जहां खैरात वँटती है वहां भिक्षुक अपने आप पहुँच जाते हैं।

१०९९. **'खो की माटी 'खो लागज्या।**
खोह की मिट्टी खोह में ही लग जाती है।
अधर्म की कमाई निरर्थक जाती है।
रू० *कूवें की माटी कूवें में लागज्या।*

११००. **खोटी संतान, रूस्यो भगवान।**
भगवान् रूठे तो खोटी संतान पैदा होती है।

११०१. **खोटो पीसो अर कपूत वेटो ओड़ी वरियां आडो आवै।**
खोटा पैसा और कुपुत्र वक्त जरूरत काम आता है।

११०२. **खोदै जठै खाडो, गेरै जठै भराव।**
जिस स्थान को खोदा जाए वहां खड्डा और जहां उस मिट्टी को डाला जाए वहां भराव।

११०३. **खोदचो डूंगर, निकळचो ऊंदर।**
खोदा पहाड़, निकली चुहिया।
भारी परिश्रम के वाद नगण्य फल की प्राप्ति।

११०४. **खोपरी-खोपरी बुध न्यारी।**
हर आदमी की वुद्धि भिन्न।

११०५. **खोयो ऊंट घड़ै में ढूंढै।**
गुम हुआ ऊंट घड़े में ढूंढे।
ऊंट कभी घड़े में नहीं समा सकता, लेकिन जिसका ऊंट खो जाए वह उसे घड़े में भी ढूंढता है।
गुम हुई वस्तु को आदमी ऐसी जगह भी तलाश करता है, जहाँ उसके होने की कोई सम्भावना नहीं होती।

११०६. **खोळी रैयां तो पूर और घलज्या।**
यदि खोल वच जाए तो उसमें चिथड़े तो और भरे जा सकते हैं।
बीमार आदमी यदि निहायत दुर्वल होकर भी वच जाए तो वह पुनः शक्ति और पुष्टता प्राप्त कर सकता है।

११०७. ख्याल खिलदारयां का, घोड़ा असवारां का।
मेल खिलाड़ियों के और घोड़े सवारों के।
जो जिस काम में निपुण हो, उसे ही वह काम फबता है।
रू० मेल खिलाड्यां का, घोड़ा असवारां का।

११०८. गंगा गया गंगादास, जमना गया जमनादास।
सिद्धान्त हीन मौका परस्ती।

११०९. गंगाजी कै घाट पर, बामण वचन परवांण।
गंगाजी की रेणका, तूं चन्नण करकै मान॥

संदर्भ कथा—एक जाट अपने मृत पिता के 'फूल' गंगाजी में प्रवाहित करने के लिये हरिद्वार गया। हर की पैड़ी पर उसे एक पंडा मिला और उसने जाट से कुछ ऐंठने की नीयत से उससे कहा कि घाट पर मेरे साथ चलो, मैं सारा काम करवा दूंगा। जाट उसके साथ घाट पर चला गया लेकिन पंडे के पास तो कोई सामग्री नहीं थी। इसलिये उसने गंगाजी की रेती से जाट के माथे पर तिलक लगाते हुए कहा कि ब्राह्मण के वचनों को प्रमाण मानकर इस रेती को ही चन्दन समझ लो। इस पर जाट ने गंगाजी की एक मेंढकी उसके हाथ में पकड़ा दी और बोला कि तुम भी जाट के वचनों को प्रमाण मान कर इस मेंढकी को ही गाय समझलो और इस प्रकार गो-दान का संकल्प पूरा कर दिया—

गंगाजी कै घाट पर, जाट वचन परवांण।
गंगाजी की मींडकी, तूं गऊ करकै जाण॥

१११०. गंगाजी को न्हायबो, विपरन को ब्योहार।
डूब जाय तो पार है, पार जाय तो पार॥
गंगाजी में स्नान करते समय आदमी डूब भी जाए तो यह सोच लेना चाहिए कि वह भवसागर से पार हो गया। इसी प्रकार ब्राह्मण को दिया गया ऋण न भी आये तो देने वाले को पुण्य लाभ तो हो ही जाएगा, यह मानकर संतोष कर लेना चाहिये।

११११. गंगाजी तूतिये में कद मावै।
गंगाजी 'तूतिये' में नहीं समा सकतीं।
तूतिया = एक बहुत छोटा नालीदार पात्र।

१११२. गंजी ई माथो गुंथावण चाली?
गंजे सिर वाली औरत भी माथा गुंथवाने चली।

१११३. गंजो नाई कने के घरावै?
गंजा आदमी नाई की क्या परवाह करे?

१११४. गंडक अर गोती गांव-गांव में मिलै।
कुत्ते और सगोत्री गांव-गांव में मिल जाते हैं।
सगोत्री होना कोई निकट का रिश्ता नहीं माना जाता।

१११५. गंडक की पूंछ कै न्योळी बंधरी है।
कुत्ते की पूंछ से रुपयों की 'न्योळी' बंधी रहे तो भी वह उन रुपयों का कोई उपयोग नहीं कर पाता।

अपात्र के पास धन हो भी जाए तो किस काम का?

१११६. गंडक नारेळ को के करै?
कुत्ता नारियल का क्या करे?
रू० (१) भेड़ सुपारी को के करै?
(२) गधो मिसरी सार के जाणै?
(३) बांदरो अदरक को सुआद के जाणै?

१११७. गंडकां से गांव की गळियां छानी कोनी।
कुत्तों से गांव की गलियां छिपी नहीं हैं।
रू० मुंगतां से गांव की गळियां छानी कोनी।

१११८. गई तिथ बामण ईं को वांचैनीं।
बीती हुई तिथि का महात्म्य ब्राह्मण भी नहीं बांचता।
जो बीत गया सो बीत गया, अब वर्तमान की बात करो।

१११९. गई बात नै घोड़ा ई कोनी नावड़ै।
बीती हुई बात को घोड़े भी नहीं पा सकते।

११२०. गई बात नै जाणदे, रही बात नै सीख।
जो बीत चुका सो बीत चुका, अब आगे की सुधि लो।

संदर्भ कथा—एक साहूकार की बेटी ने अपने बाप से कह दिया कि वह विवाह नहीं करेगी। बहुत समझाने-बुझाने पर भी जब वह नहीं मानी तो साहूकार ने उसके लिये एक अलग महल बनवा दिया और महल पर पहरेदार नियुक्त कर दिये जो रात-दिन पहरा देते थे।

महल में रात को लड़की का एक प्रेमी सांप बनकर आता था और महल में पहुँच कर वह सुन्दर युवक बन जाता था। दोनों परस्पर चौपड़-पांसा खेलते। एक रात पहरेदारों ने पांसों की अवाज सुनी तो उन्होंने जाकर साहूकार को सूचना दी। साहूकार ने उन्हें आदेश दिया कि जो भी महल में प्रवेश करे, उसे तुरन्त मार डालो। अगली रात को जब महल में सांप घुसने लगा तो पहरेदारों ने उसे मार डाला। लड़की को बड़ा दुःख हुआ। उसने मरे हुये सांप को हार में जड़वा कर अपने गले में पहन लिया।

साहूकार ने अब उसका विवाह भी कर दिया। जब वह सुसराल गई तो उसने सांप की केंचुली को बत्ती में डालकर उसका दीपक जलाया। जब उसका पति महल में आया और पलंग पर बैठने लगा तो पत्नी ने कहा—

पिव पाये पिव डोलिये,पिव को गळ बिच हार।
सिव को ही दिवलो जगे, चातर करो विचार।।

इस पर पति वहीं रुक गया, उससे कोई उत्तर देते नहीं बना लेकिन उसकी भौजाई जो बाहर ही खड़ी थी, बोली—

गई गई नै जाणदे, रही रही नै सीख।
अब क्यूं कूटै बावळी, मुवै सांप की लीक।।

जेठानी की बात सुनते ही देवरानी लजा गई और उसने अपना संकल्प बदल दिया।

११२१. **गई रांड सो घर-घर डोलै, गयो घर सो घुग्घू बोलै।**
गयो राज सो मानै गोलै, गयो साहू सो घाटू तोलै।।

घर-घर डोलने वाली स्त्री निकम्मी बन जाती है, जिस घर में उल्लू बोलता है वह घर बर्बाद हो जाता है, जिस राजा के यहाँ गोलों की प्रधानता होती है वह राज्य नष्ट हो जाता है और कम तौलने वाले दुकानदार की साख समाप्त हो जाती है।

रू० गई हाट जहँ मंडी हथाई।

११२२. **गई साख तो बंची राख।**

साख का बड़ा महत्व होता है। साख के नष्ट हो जाने पर शेष क्या रह जाता है?

११२३. **गाऊ अर बेटी नैं जठीनै टोरदे, बठीनै ई चाल पड़ै।**

गाय को जिधर हांक देते हैं, वह उधर ही चल पड़ती है। इसी प्रकार बेटी के मां-बाप जिसके साथ उसका विवाह कर देते हैं, उसी के साथ उसे जाना पड़ता है।

११२४. **गटका खासी जिको भटका भी सहसी।**

जो माल-मलीदा खायेगा, उसे भटके भी सहन करने पड़ेंगे।

११२५. **गडवैं सें भेर होंगी।**

गड्ढे के स्थान पर भेर बन गई।

सन्दर्भ कथा—राजा के सुनार के घर के आगे बहुतेरी खाली जमीन पड़ी थी। एक परिचित ग्वाली के माँगने पर उसने कुछ समय के लिये वह जमीन उसे काम करने के लिए दे दी। धीरे धीरे ग्वाली ने सारी जगह रोक ली और काठ-कबाड़ से भर दी। दिन भर खटाखट रहने लगी। सुनार जब

भी खाती से जगह खाली करने के लिये कहता, वह झगड़ा करने पर उतारू हो जाता।

इसी बीच राजा ने सुनार को सोने का एक गडुवा घड़ कर लाने का आदेश दिया। सुनार खजाने से सोना ले गया, लेकिन खाती की खट-पट के कारण वह गडुवा तैयार नहीं कर पाया। राजा का बुलावा नित्य आने लगा, लेकिन सुनार गडुवा नहीं बना पाया। एक दिन सुनार और खाती के बीच खूब जोरों से झगड़ा हुआ और तभी राजा का बुलावा फिर आ गया। सुनार गड़ुवा घड़ने को बैठा, लेकिन वह बहुत झल्लाया हुआ था। उसके दिमाग मे खाती वाली बात ही घूम रही थी। उसी धुन मे वह सोने के पात को पीट-पीट कर बढ़ाता गया और उसने गडुवे के स्थान पर 'भेर' बना डाली। भेर को लेकर वह राजा के पास पहुँचा तो राजा को बड़ा गुस्सा आया। उसने सुनार को कड़ा दण्ड दिये जाने की आज्ञा दी। सुनार को अपनी भूल का भान हुआ और उसने राजा के सामने अपने को बेकसूर बतलाते हुये कहा—

खोटा काम ठेठ में कीन्या, घर खाती नै मांग्या दीन्या।
घड़तां-घड़तां हुई अबेर, घड़ै हो गडवो हो'गी भेर॥

११२६. गडूं 'क बळूं ?

कब्र में दफन होऊं या चिता मे जलूं ?

संदर्भ कथा—एक गांव में सारे घर मुसलमानो के ही थे। इसलिए उस गाव से होकर गुजरने वाले हिन्दू पथिक को वहा खाने-पीने के लिए कुछ भी नहीं मिलता था। गांव वालों को भी यह बात बहुत अखरती थी कि उनके गांव मे आने वाला कोई बटाऊ निराहार जाए। इसलिये वे इसका कोई उपाय सोचने लगे।

उस गांव में एक गरीब मुस्लिम विधवा अपनी छोटी बेटी के साथ रहती थी। उसके घर में कोई कमाने-कजाने वाला था नही, इसलिये गांव के सब लोगों ने मिलकर उससे कहा कि हम तुम्हारे खाने-पीने की सारी व्यवस्था कर देगे और तुम एक ब्राह्मणी के रूप में रहने लग जाओ, जिससे गाव में आने वाला बटाऊ तुम्हारे घर भोजन कर सके। विधवा ने उनकी बात स्वीकार कर ली। वह इजार के बदले साड़ी पहनने लगी और ब्राह्मणी के वेश में रहने लगी। गांव वालों की ओर से समुचित व्यवस्था कर दी गई और गाव मे आने वाला प्रत्येक हिन्दू पथिक अब उस 'ब्राह्मणी' के यहा बसेरा लेने लगा।

एक दिन एक पंडित उसके यहां ठहरा। जब वह नहा धोकर और पूजा-पाठ करके जीमने बैठा तो उक्त ब्राह्मणी भी उसके पास आ बैठी।

उसने अपनी सारी राम कहानी उसे सुना कर पूछा कि अब तुम मुझे यह बतलाओ कि मैं इस लड़की की निकाह करूं या फेरे फेरूं ? उसकी बात सुनकर पंडितजी के हाथ का ग्रास हाथ मे और मुँह का ग्रास मुँह में रह गया। उसने बड़ी संजीदगी के साथ 'ब्राह्मणी' से पूछा कि मुझे तो तू ही बतला कि अब मैं क्या करूं ? 'गडूं या जळूं' ?

११२७. गढां कै गढ ई पावणां।

गढों के गढ ही पाहुने।

बड़ों के बड़े ही पाहुने।

११२८. गणगोरयां नै ई घोड़ा नईं दौड़ैगा तो कद दोड़ैगा ?

यदि गणगौर के दिन ही घोड़े नहीं दौड़ेंगे तो भला फिर कब दौड़ेंगे ?

मध्य युग में घोड़ों का बड़ा महत्व था। राजाओं और ठाकुरों के यहां काफी संख्या में घोड़े रहा करते थे और गनगौर के अवसर पर उनकी दौड़ प्रतियोगिता आयोजित की जाती थी।

यथा अवसर काम न होगा तो फिर कब होगा ?

११२९. गधां की यारी में लातां की त्यारी।

गधों की यारी में लातों की तैयारी।

मूर्खों की यारी में लड़ाई-झगड़ा ही होता है।

११३०. गधेड़ा ई मुलक जीतले तो घोड़ां नै कुण पूछै ?

यदि गधे ही मुल्क फतह करलें तो फिर घोड़ों को कौन पूछेगा ?

यदि मूर्ख ही किसी काम को पेश चढ़ादें तो अक्लमँद को कौन पूछे ?

११३१. गधेड़ै की गूणती में नौ मण को बांधो कोनी पड़ै।

गधे के बोरे में नौ मन की भूल नहीं पड़ सकती।

११३२. गधेड़ै कै जेठ में बूदी चढै।

गधे पर जेठ के महीने में मस्ती छाती है।

११३३. गधेड़ै को मांस खार घाल्यां सीजै।

गधे का माँस खार डालने पर ही सीझता है।

दुष्ट को यथोचित दण्ड देने से ही वह सीधा होता है।

रू० गधै को मांस मैन्त घाल्यां ई सीजै।

११३४. गधेड़ै में ग्यान कोनी, दरांती कै म्यान कोनी।

गधे में ज्ञान नहीं, हंसिया के म्यान नहीं।

रू० गधेड़ै में ग्यान कोनी, मूसळ कै म्यान कोनी।

११३५. गधेड़ो कुरड़ी पर रजै।

गधा घूरे पर ही संतुष्ट और प्रसन्न रहता है।

रू० गधेड़ो कुरड़ी देख कर भूंकै।

११३६. गधं की लीद का पापड़ वर्ण तो उड़द मूंग नै कुण पूछै ?
गधे की लीद से ही पापड़ तैयार हो जाएँ तो फिर उरद और मूंग को कौन पूछे ?

११३७. गधं नै घी देवं, 'क मेरी आंख फोड़ै ।
गधे को घी पिलाया जाए तो वह कहता है कि मेरी आंख फोड़ी जा रही है ।
ना समझ व्यक्ति उपकार को भी अपकार समझता है ।

११३८. गधं नै नुहायां घोड़ो थोड़ो ई होज्या ।
गधे को नहलाने से वह घोड़ा थोड़े ही बन जाएगा ।

११३९. गधो घोड़ो एक भाव ।
गधा और घोड़ा एक मोल !
जहाँ गुण—अवगुण की कोई परख न हो ।

११४०. गम खाणी भोत मुसकल ।
सहनशीलता रखनी अत्यन्त कठिन है ।

सन्दर्भ कथा—एक दिन गाँव के ठाकुर ने सेठ से पूछा कि आप इतने मोटे-ताजे हो रहे हैं, भला क्या खाते हैं ? सेठ ने उत्तर दिया कि हम गम खाते हैं । ठाकुर बोला कि तब तो हम भी गम खाया करेंगे । सेठ ने ठाकुर की बात का प्रतिवाद करते हुए कहा कि आप से गम नहीं खाया जाएगा, इसे खाना बहुत मुश्किल है । ठाकुर बोला कि खाया क्यों नहीं जाएगा, हम अवश्य खाएँगे । इस पर सेठ ने पुनः कहा कि 'रांघड़' कभी गम नहीं खा सकता । इस लघुता व्यंजक नाम को सुनते ही ठाकुर ने झट तलवार निकाल ली । इस पर सेठ ने हँसते हुये ठाकुर से कहा कि मैंने तो पहले ही कह दिया था कि आपसे गम नहीं खाया जा सकता, जरासी बात पर तलवार निकाल बैठे । यह सुनकर ठाकुर लज्जित हो गया ।

११४१. गम बड़ी चीज है ।
गम खाना बहुत बड़ी बात है ।

संदर्भ कथा—एक किसान की औरत बदचलन थी और वह अपनी सुसराल न जाकर पीहर में ही रहती थी । एक बार उसका पति उसे लेने के लिये आया तो घर वालों ने उसे उसके साथ भेज दी । राह में दोनों एक कुएँ पर विश्राम के लिये रुके । किसान गहरी निद्रा में सो गया । उसकी स्त्री ने अच्छा मौका देख कर उसे निद्रावस्था में ही कुएँ में डाल दिया और अपने बाप के घर जाकर कह दिया कि उसका पति उसे जंगल में छोड़ कर चला गया । उधर किसान को किसी ने कुएँ से निकाल दिया और वह अपने घर आ गया ।

समय में साथ पीहर में उसकी कद्र कम हो गई तो वह अपने पति के पास चली आई। कालान्तर में उसके बेटे-पोते हो गये। एक दिन किसान अपने नन्हें पोते को गोद में लिये खेला रहा था और कहता जाता था—गम बड़ी, भाई गम बड़ी। जब वह बहुत देर तक ऐसे ही कहता रहा तो उसकी औरत ने पूछा कि आज यह क्या रट लगाई है? किसान ने उत्तर दिया कि उस दिन वाली बात भूल गई क्या? यदि मैं गम नहीं खाता तो आज यह पोता कहाँ से आता? पति की यह बात सुनते ही वह एकदम लजा गई।

रू० (१) गम बड़ी गम सार।

(२) गम खाणा चीज बड़ी है, कोई देखां नी गम खाय कै।

११४२. गम्योड़ी खेती अर कमायोड़ी चाकरी बराबर।

खेती बिगड़ भी जाये तो भी कमाई हुई नौकरी के बराबर तो हो ही जाती है।

११४३. गया बदरी काया सुधरी।

बदरीजी की यात्रा करने से काया सुधर जाती है।

११४४. गयेड़ै न भूलज्या, आयेड़ै नैं कोनी भूलै।

गये हुये को भूल जाते हैं, लेकिन आये हुये को नहीं भूल पाते।
समय पाकर मृत व्यक्ति को तो भूल जाते है, लेकिन उस समय मातमपुरसी के लिये आने वाले की याद बनी रहती है।

११४५. गये बिचयारे रोजड़े, बाकी रहे नौ-बीस।

अब तो बेचारे रोजे चले ही गये, केवल नौ और बीस अर्थात् उन्नतीस ही तो और रहे हैं।

संदर्भ कथा—एक मियांजी थोड़ी देर भी भूखे नहीं रह सकते थे। एक बार काजी के अधिक कहने-सुनने पर उन्होंने पूरे महीने भर रोजे रखने का वादा कर लिया। जैसे-तैसे करके उन्होंने बड़ी कठिनाई से पहला दिन व्यतीत किया। लेकिन जब शाम को खाने के लिये बैठे तो इतमीनान से बोले अब तो बेचारे रोजे गये ही समझो, अब केवल उन्नतीस रोजे ही तो शेष रहे हैं।

११४६. गयो बरस पूर्वा वाळै।

सूर्य पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र पर हो और इन दिनों में वर्षा हो जाये तो इसमे वर्ष भर के अकाल सम्बन्धी दोषों का निराकरण हो जाता है।

११४७. गयो हो नमाज छुड़ावण नै, रोजा और गळै घलग्या।

गये तो थे नमाज छुड़वाने, लेकिन रोजे और गले पड़ गये।

सन्दर्भ कथा—एक गरीब मियां जंगल से लकड़ी लाकर अपना निर्वाह किया करता था। एक दिन वह काजी के घर लकड़ी का भार डालने गया

तो काजी ने उससे पूछा कि तुम पांच वक्त की नमाज पढ़ते हो या नहीं ? मियां ने उत्तर दिया कि मैं तो किसी प्रकार भाग दौड़कर अपना गुजारा चला पाता हूँ, नमाज पढ़ने के लिये मुझे समय ही नहीं मिल पाता। इस पर काजी ने उसे बहुत ऊँच नीच समझाया और दोजख की यातनाओं का भय दिखला कर उसे नमाज पढ़ने के लिए मजबूर कर दिया। मियां ने कुछ दिनों तक तो जैसे-तैसे करके नमाज पढ़ी, लेकिन वह शीघ्र ही उकता गया और नमाज छुड़वाने के लिये पुनः काजी के घर गया। काजी ने उसकी बात को अनसुनी करते हुए उससे कहा कि पांच वक्त की नमाज गुजारने लगे हो यह तो अच्छी बात है, लेकिन अब रमजान का महीना शुरू हो रहा है, इसलिये पूरे महीने रोजे भी जरूर रखो। काजी की बात सुनकर मियां पछताने लगा कि मैं तो नमाज छुड़वाने के लिये आया था लेकिन यहाँ आते ही रोजे और गले पड़ गये।

११४८. गरज को के मोल ?

गरज का क्या मोल ? अपनी गरज पूरी करने के लिए मुँह मांगी कीमत चुकानी पड़ती है।

रू० (१) गरज को मोल है।
(२) गरज दीवानी होवै।
(३) आपकी गरज गधै नै बाप कैवणो पड़ै।

११४९. गरज मिटी, गूजरी नटी।

गरज पूरी होते ही गूजरी नट गई।

पद्य–(१) गरज दीवानी गूजरी, नूंत जिमावै खीर।
गरज मिटी गूजरी नटी, छाछ नहीं रे बीर।
(२) गरज दीवानी गूजरी, अब आई घर कूद।
सावण छाछ न घालती, भर वैसाखां दूध ॥
(सांवण छाछ न घालती, जेठ परोसै दूध)

११५०. गरज मिटी रै गांगला, गांव सें आटो मांगल्या।

जब तक बाबाजी को चेले की गरज थी, तब तक तो उसकी बड़ी खुशामद करते थे। लेकिन गरज पूरी होते ही उससे कह दिया कि यों बैठे-बैठे काम नहीं चलेगा, गाँव में जाकर आटा माँग लाया कर।

११५१. गरजै जिको बरसै कोनी।

जो गरजता है वह बरसता नहीं।

रू० गरजै सो बरसै नहीं, बरसै घोर अंधार।

११५२. गरबं मतना गूजरी, देख मटूकी छाछ ।
नवसै हार्यां घूमता, राजा नळ कै बार ।।
हे गुजरी ! मथनी भर छाछ देख कर गर्व मत कर, कभी राजा नल के द्वार पर नौ सौ हाथी झूमते थे, लेकिन उसे भी दर-दर भटकना पड़ा, फिर तू तो किस गिनती में है ?
जब कोई व्यक्ति थोड़ीसी सम्पत्ति पाकर ही घमंड में भर जाए ।
स० तेरां सोनो पैरती, मोत्यां मरती भार ।
सो कासी कै चौवटै, हरिचंद बेची नार ।।

११५३. गरीब की हाय बुरी ।
गरीब की हाय बुरी होती है ।
गरीब को मत सता, गरीब रो देगा ।
गरीब की हाय पड़ी तो जड़ा मूल से खो देगा ।

११५४. गरीब को के दातार अर मालदार को के मूंजी ।
गरीब का क्या दातार और मालदार का क्या कंजूस ?
गरीब अधिक से अधिक जितना दे सकता है, उतना देना मालदार के लिए मामूली बात है ।

११५५. गरु की चोट, बिदया की पोट ।
गुरु की मार से विद्या आती है ।
स० (१) गरु मारै धम-धम, बिदया आवै छमछम ।
(२) चोटी करै चमचम, बिदया आवै धमधम ।।

११५६. गरु कवै ज्यूं करणो, पण गरु करै ज्यूं नई करणो ।
शिष्य को गुरु जैसा कहे, वैसा करना चाहिए, लेकिन जैसा गुरु करे उसकी देखा-देखी वैसा नहीं करना चाहिए ।

११५७. गरु गुड़ ई रैया, चेला चीणी होग्या ।
शिष्य गुरु से भी अधिक तेज हो गया ।

११५८. गरु चेलो लालची, दोनूं खेलै डाव ।
दोनूं भेळा डूबसी, बैठ पथर की न्याव ।।
गुरु और चेला दोनों लालची हैं और एक दूसरे से बाजी मारने के लिये परस्पर दाँव खेल रहे हैं, इसका परिणाम यह होगा कि दोनों ही डूबेंगे ।

११५९. गरु सें चेला आगळा ।
निश्छल भाव से सेवा करने पर शिष्य अपने गुरु से भी आगे बढ़ जाता है ।
पद्य—गुर गूंगा गुर पांगळा, गुर देवां का देव ।
गुरां सें चेला आगळा करै गुरां की सेव ।
स० गुरु सें चेला मारका ।

११६०. गळियारै में टट्टी बैठे, उलटा घुरिया काढै ।
गली में टट्टी बैठे और उल्टे आंखें दिखलाये ।
स्वयं बुरा काम करे और तिस पर भी दूसरों को डांट बताये ।

११६१. गळै बंध्यो ढोल तो बजायां ई सरै ।
जब गले में ढोल बंध ही गया तो उसे बजाना भी पड़ेगा ।
इच्छा न होते हुए भी जब किसी काम की जिम्मेदारी सिर पर आ पड़ती है तो उसे निभाना ही पड़ता है ।

११६२. गळै रोहणी मिग तपै, आदरा वाजे वाय ।
डंक कहै हे भड्डळी, दुरभिख होण उपाय ।।
रोहिणी गल जाये, मृगशिरा तपे और आर्द्रा नक्षत्र में तेज वायु चले तो इन लक्षणों से अकाल पड़े ।

११६३. गहणो अर गनायत ओड़ी वरियां आडो आवै ।
गहने और सम्बन्धी आपत्काल में काम आते हैं ।

११६४. गहणो धायां को सिणगार, भूखां को आधार ।
गहना सम्पन्न का शृंगार और विपन्न का आधार ।
विपत्ति के समय जब और कोई सहारा न हो तब आदमी गहनों को बेचकर या उन्हें गिरवी रख कर काम चलाता है ।

११६५. गांगै की गाय, सांगै को बाछो ।
गाय किसी की, बछड़ा किसी का ।
दोनों में परस्पर कोई सम्बन्ध नहीं ।

११६६. गांव करै सो गैली करै ।
गांव के लोग जैसा करते हैं, पगली भी उनकी देखा देखी वैसा ही करती है ।

११६७. गांव कसौटी होवै ।
दुनिया कसौटी होती है जो हर भली-बुरी बात को परख लेती है ।

११६८. गांव की नेपै बाड़ा ई कहदे ।
गांव की उपज बाड़े ही बतला देते हैं ।
रू० गांव की सोभा बाड़ा ई कह दे ।

११६९. गांव को छोरो छोरो, दूसरै गांव को छोरो बींद ।
अपने ही गांव में ब्याहने वाले दूल्हे की उतनी कद्र नहीं होती, जितनी दूसरे गांव से आने वाले दूल्हे की ।
पद्य—पांच कोस को आणो जाणो, बीस कोस को वड़ो ठिकाणो ।
तीन कोस माथै को मोड़, गांव गुंवाई गंड़क ठौड़ ।।

११७०. गांव कोटवाळो आपै ई सिखा देवै ।

गांव के लोग परस्पर एक दूसरे का भेद देकर अकुशल कोतवाल को भी होशियार बना देते हैं ।

११७१. गांव को मूं'डो कुण पकड़ै ?

गांव का मुँह कौन पकड़े ?

लोगों की जबान पर कौन काबू करे ?

रू० दुनियां की जबान कुण पकड़ै ?

११७२. गांव गयो अर सूत्यो जागै ।

दूसरे गांव गया हुआ आदमी न जाने कब लौटे, सोया हुआ आदमी न जाने कब जगे । दोनों ही बातें अनिश्चित ।

११७३. गांव-गांव खेजड़ी, गांव-गांव गूगो ।

गांव-गांव में खेजड़ी (शमी) वृक्ष है और गांव-गांव में गोगा है ।

राजस्थान के गांव-गांव में गोगाजी की मान्यता है और गांवों में गोगाजी का स्थान प्रायः खेजड़ी के वृक्ष के नीचे होता है ।

११७४. गांव-गांव में होतो नाथो, तो क्यां नै लोग माळवै जातो ।

प्रत्येक गांव में यदि नाथा जैसे दानशील व्यक्ति होते तो अकाल के समय लोगों को मालवा क्यों जाना पड़ता ।

नाथा=कोई व्यक्ति विशेष, जिसने अकाल के समय लोगों को यथोचित रूप से अन्न वितरित किया ।

११७५. गांव गैल ढेढवाड़ो सगळै ई होवै ।

११७६. गांव गैली नै गिणै नीं, गैली गांव नै गिणै नीं ।

गांव के लोग पगली को नहीं बदते तो पगली भी गांव के लोगों को कुछ नहीं गिनती ।

११७७. गांव तो वस्यो ई कोनी, मुंगता तो आ खड़्या रैया ।

गांव तो बसा ही नहीं, भिखमंगे पहले ही आ खड़े हुये ।

रू० (१) गांव तो वस्यो ई कोनी, माग्जादां का माचा तो आघल्या ।

(२) गहण तो लाग्यो ई कोनी, मुंगता पैली ई फिरग्या ।

११७८. गांव वळै, डूम त्यूंहारी मांगै ।

गांव तो जल रहा है और डोम त्यौहारी मांग रहा है ।

त्यूंहारी=त्यौहार के अवसर पर कारुओं को दिया जाने वाला अन्न, गुड़ आदि ।

११७९. गांव बसायो वाणियों, पार पड़ै जद जाणियों ।

वनिये ने गांव बसाया है, लेकिन जब पार पड़ जाए तभी जानें ।

११८०. गांव मांय तो कूतरा, रोही मांय सियार।
ये जो रोवै तो पड़ै गोहत्यारो काळ॥
गांव में कुत्ते और जंगल में सियार रोयें तो घोर अकाल पड़े जिसमें गायें बड़ी संख्या में मरें।

११८१. गांव में घर कोनी, रोही में खेत कोनी।
गांव में रहने के लिये घर नहीं, जंगल में जोतने के लिये खेत नहीं।
सर्वथा अकिंचन और अभावग्रस्त।

११८२. गांव में पड़्यो भजाड़ो, के करैगो स्यां'मी तारो ?
जब किसी भी भय की आशंका से गाँव में भगदड़ मची हो तब सामने का तारा क्या देखना।

११८३. गांव म्हारो, नांव थारो।
गांव हमारा, नाम तुम्हारा।
नाममात्र के मालिक तुम, वास्तविक मालिक हम।
रू० घर बार थारा, ताळा कूंची म्हारा।

११८४. गाछ चढै नै दो दीखै।
वृक्ष पर चढे हुए को एक के बदले दो दिखलाई पड़ते हैं।

संदर्भ कथा– एक बागवान की औरत पुंश्चली थी। एक दिन बागवान अपने बाग में एक वृक्ष पर चढ़ा हुआ फल तोड़ रहा था एवं उसकी औरत किसी दूसरे वृक्ष के नीचे अपने जार से बातें कर रही थी कि बागवान की नजर उन दोनों पर पड़ गई। उसने अपनी औरत को डांट कर पुकारा कि तुम्हारे पास यह कौन खड़ा है ? औरत ने कहा कि कोई नहीं है। इस पर बागवान वृक्ष पर से उतर कर उनकी ओर चला। इसी बीच स्त्री ने अपने जार को भगा दिया, इसलिये जब उसका पति वहाँ पहुँचा तब वह अकेली ही थी। तब बागवान की स्त्री उसी वृक्ष पर चढ़ी जिस पर से उसका पति उतरा था। वृक्ष पर चढ़ कर उसने अपने पति से पुकार कर पूछा कि तुम्हारे पास यह औरत कौन है ? तुम किससे बतिया रहे हो ? बागवान ने उत्तर दिया कि कोई नहीं है। इस पर औरत ने कहा, तुम झूठ बोल रहे हो, मैं अभी वहाँ आ रही हूँ। यों कहकर वह शीघ्रता से वृक्ष पर से उतर कर वहाँ पहुँची तो वहाँ केवल उसका पति ही था। इस पर बागवान ने उसे आश्वस्त करते हुये कहा कि यहाँ कोई औरत नहीं थी, यह सब इस वृक्ष का ही दोष है। इस पर चढ़ने वाले को एक के स्थान पर दो दिखलाई पड़ते हैं।

रू० ऊंट चढ़ै नै दो दीखै।

११८५. गाजर की पूंगी बाजी, तो बाजी नईं तोड़ खाई ।
गाजर की पूंगी बजी तो बजी, नहीं तोड़ खाई ।
गाजर की पूंगी न भी बजे तो खाने के काम तो आ ही जाती है । इसलिए बजे तो ठीक, न बजे तो कोई हानि नहीं ।
रू० गाजर की पूंगी बाजी जितरै बाजी, फेर तोड़ खाई ।
११८६. गाजा-बाजा सैं बींद कै बाप पर ।
सारे गाजे बाजे दूल्हे के बाप पर ।
११८७. गाजै बाजै करै उफांण, बाय लंकाऊ दूध उफाण ।
रंग रूप जे घणां जतावै, तो यूं ग्वाळचो काळ बतावै ।।
आकाश में बादलों की गर्जना हो, बिजलियां चमकें, बादल विभिन्न प्रकार के रूप रंग दिखलाएं और उस समय यदि दक्षिण दिशा का वायु हो तो उस वर्ष अकाल पड़े ।
११८८. गाजो न बाजो, बींदराजा आय विराज्यो ।
न गाजे न बाजे, दूल्हे राजा आय विराजे ।
११८९. गाडर ल्याया ऊन नैं, बैठी चरै कपास ।
बहूज ल्याया काम नैं, बैठी करै फरमास ।।
भेड़ को लाये तो थे ऊन के लिए लेकिन वह तो उल्टे बैठी-बैठी कपास चर रही है । इसी प्रकार बहू को लाये तो थे घर का काम-धंधा करने के लिए और वह बैठी बैठी फरमाइशें करती रहती है ।
रू० इण बहुअड़ नै देख कर, उठै काळजै आग ।
दियो बाजरो पीसणो, चाव गई निरभाग ।।
११९०. गाडिये लुहार को किसो गांव ?
गाड़िये लुहार घुमन्तु होते हैं, आज यहां तो कल वहां । इसलिए उनका कोई एक निश्चित गाँव नहीं होता ।
११९१. गाडी को पहियो अर मरद की जबान फिरती ई चोखी ।
गाड़ी के पहिये का तो फिरते रहना ठीक है, इसी से वह गतिशील रहती है । लेकिन आदमी अपनी जबान (वचन) से न फिरे यह अपेक्षा की जाती है । इसलिए जो आदमी अपनी जबान को बदलते रहते हैं, उनके लिए व्यंग्य में ही ऐसा कहा गया है ।
११९२. गाडी को फाचरो, लुगाई को चाचरो ठोक्यां ई काम दे ।
फाचरो = लकड़ी के पहियों में लगाई जाने वाली काठ की कीलें ।
चाचरो = सिर का अग्रभाग ।
११९३. गाडी नै देख कर लाडी का पग सूजै ।
गाड़ी को देख कर लाडी (छोटी बहू) के पैर फूल जाते हैं ।
गाड़ी को सामने देख कर कोई पैदल क्यों चलना चाहे ?

११९४. गाडै नैं देख कर पाडै का पग सूजै ।

गाड़े को देख कर भैंसे के पैर भारी हो जाते हैं कि अब इसे खींचना पड़ेगा ।

११९५. गाडै में छाजलै को के भार ?

गाड़े में छाज का क्या भार ?

गाड़े का मालिक छाज से गाड़े में सामान भर कर छाज को भी उसके ऊपर रख देता है । संभवतः इसी से यह कहावत चल पड़ी है ।

११९६. गाडै लीक सो गाडी लीक ।

बड़ों की लीक पर ही छोटे चलते हैं ।

११९७. गाडो सी भू को दो लातां सँ के बीगड़ै ?

संड-मुसंड बहू का दो लातों से क्या बिगड़ता है ?

समर्थ व्यक्ति के लिए छोटी-मोटी क्षति कोई महत्त्व नहीं रखती ।

११९८. गाणो अर रोणो सै जाणै ।

गाना और रोना सब जानते हैं ।

११९९. गादड़ बिना नाड़ी कोनी कटै ।

गीदड़ के बिना नाड़ी नहीं कटती, जरूर उसी ने नाड़ी काटी है ।

नाड़ी = बिना कमाये हुए चमड़े की डोरी ।

१२००. गादड़ मारी पालखी, 'मे धड़ूक्यां हालसी ।

गीदड़ पलथी लगा कर बैठ गया है, अब वह वर्षा की गरज सुन कर ही उठेगा ।

इस कहावत का प्रयोग उस कच्चे दिल वाले व्यक्ति के लिए किया जाता है, जो किसी बात की घोषणा तो बड़ी दृढ़ता के साथ करता है, लेकिन जरा-सा डर दिखलाते ही विचलित होकर भाग खड़ा होता है ।

संदर्भ कथा—एक गीदड़ जंगल में स्थित तालाब की पाल पर मिट्टी की चौंतरी बना कर बैठ गया । जो भी छोटे-मोटे जानवर तालाब पर पानी पीने के लिए आते, उनसे वह घुड़क कर कहता कि मेरी आज्ञा के बिना तुम पानी नहीं पी सकते । मैं तुम्हें तभी पानी पीने की आज्ञा दूंगा कि जब तुम यों कहोगे—

रूपै की तेरी चूंतरी, सोनैं ढोळी है ।
कानां में तेरै कोकरू, जाणैं सेठ बैठ्यो है ॥

बेचारे जानवर मजबूरन ऐसा कहते और पानी पीकर चले जाते ।

थोड़ी ही देर में एक लोमड़ी वहां पानी पीने के लिए आई तो गीदड़ ने उससे भी वैसा ही कहा । लेकिन लोमड़ी चालाक थी, अतः उसने गीदड़ से कहा कि प्यास के मारे मेरे से बोला नहीं जाता । पहले पानी पीलूं, फिर तुम जैसा कहोगे, वैसा ही कह दूंगी । इस पर गीदड़ ने लोमड़ी को पानी

पीने की इजाजत दे दी । पानी पीकर वह जाने लगी तो गीदड़ ने उसे पुन टोका । इस पर लोमड़ी बोली—

माटी की तेरी चूंतरी, गोबर ढोळी है ।
कानां में तेरै मूंमटा, जाणैं ढेड बैठ्यो है ।।

इतना सुनते ही गीदड़ गुस्से में भर कर उसके पीछे दौड़ा । लोमड़ी शीघ्रता से भाग कर एक ऊंचे वृक्ष पर चढ़ गई और गीदड़ को सुना कर बोली—

तूं कां चढगी बांस, उतरसी छठै मास ।

लेकिन गीदड़ उसके भुलावे में नहीं आया । वह पल्थी लगा कर वहीं बैठ गया और उसने पूरे दम-खम के साथ यह घोषणा कर दी—

गादड़ मारी पालथी, 'मे थड़ूक्यां हालसी ।

इस पर लोमड़ी ने दूसरी युक्ति सोची । वह वृक्ष पर और भी ऊंची चढ़ गई और उत्तर दिशा में दूर तक देखने का अभिनय करती हुई बोली —

कांधै जेळी गंडक घणां, चाल्या आवै च्यार जणां

अर्थात् चार आदमी जिनके कंधों पर 'जेळियां' हैं और जिनके साथ बहुत से कुत्ते हैं, इधर ही चले आ रहे हैं ।

कुत्तों के आने की बात सुन कर गीदड़ का धैर्य छूट गया और वह दुम दबा कर भाग खड़ा हुआ । तब लोमड़ी भी हँसती हुई वृक्ष पर से उतर कर अपनी राह चली गई ।

जेळी = लकड़ी या लोहे के दो लम्बे सींगों वाला एक कृषि उपकरण जिससे कँटीली झाड़ियां आदि हटाई जाती हैं।

१२०१. गादड़ियोजी ग्यारस करै, कैंकी काटै नाड़ी ?

गीदड़ ने आज एकादशी का व्रत कर रखा है, भला वह किसकी नाड़ी काटे ।

संदर्भ कथा—एक हिरन, कौवा और गीदड़ दोस्त थे । वे एक जाट के खेत में खाने के लिए जाया करते थे । एक दिन जाट ने खेत में जाल फैलाया तो हिरन उसमें फँस गया । कौवे ने गीदड़ से जाल की डोरी काटने के लिए कहा तो गीदड़ ने बहाना बना दिया कि मैंने तो आज एकादशी का व्रत रखा है, इसलिए मैं किसी चीज को मुँह नहीं लगाता । लेकिन वस्तुत: उसके मन में कुटिलता थी और उसे आशा थी कि जाट जब हिरन को मारेगा, तो उसे भी कुछ मिलेगा ।

तब कौवे ने हिरन को एक युक्ति बतलाई । इसके अनुसार जब अगले दिन जाट खेत में आया तो हिरन मृतक के समान होकर पड़ रहा । उसे मरा समझ कर जाट अपने जाल को समेटने में लग गया और जब वह हिरन से दूर निकल गया तो वृक्ष पर बैठा कौवा कांव-कांव करने लगा । कौवे का संकेत पाते ही हिरन फुर्ती से उठ कर भाग गया । जाट को उसकी धूर्तता

पर बड़ा गुस्सा आया। उसने उसे मारने के लिए अपनी कुल्हाड़ी फेंकी। लेकिन हिरन तो बच गया और वह कुल्हाड़ी गीदड़ को लगी जो हिरन का मांस खाने की आशा में वहीं छुपा हुआ था। गीदड़ तुरंत ही मर गया—

गादड़ियो जी ग्यारस करै, फैंकी काटै नाड़ी।
भायलै पर दगो विचारयो, कांधै पड़ी कुहाड़ी।।

१२०२. गादड़ै की उतावळ सें बेर कोनी पाकै।

गीदड़ की उतावली से बेर नहीं पकते। वे तो समयानुसार ही पकते हैं।

रू० (१) गादड़ै की उतावळ सें काकड़िया कद पाकै ?
(२) लूंकड़ी की उतावळ सें बेर कोनी पाकै।

कहते हैं कि लोमड़ी बेरों को बिना चबाये यों हीं निगल जाती है जो शौच के साथ ज्यों के त्यों निकल जाते हैं। इस संदर्भ की एक कथा भी है जिसका पद्य यों है—

अल्ला तेरी अलड़ी, पके बेर पाये।
रेत लगी न फूस लग्यो, भुंडै पर ठैराये।।

१२०३. गादड़ै की मौत आवै जद गांव कानी भागै।

जब गीदड़ की मौत आती है तो वह गाँव की तरफ भागता है, जहां उसे कुत्ते चीर डालते हैं।

१२०४. गादड़े कै मूंडै न्याय है।

गीदड़ के मुँह न्याय है। वह जो कहदे, वही न्याय है।

संदर्भ कथा—(१) एक नर-भक्षी शेर को जंगल में किसी ने पिंजड़े में बंद कर दिया। एक ब्राह्मण उधर से गुजरा तो शेर ने बड़े विनीत स्वर में उससे प्रार्थना की कि वह उसे पिंजड़े से बाहर निकाल दे। शेर ने ब्राह्मण को पूरा भरोसा दिलाया कि वह उसे खायेगा नहीं। लेकिन ब्राह्मण द्वारा पिंजड़ा खोले जाने पर जब शेर बाहर आया तो उसने ब्राह्मण को खाना चाहा। ब्राह्मण ने बहुत प्रार्थना की, लेकिन वह नहीं माना। तब ब्राह्मण ने शेर से कहा कि इस हरे वृक्ष से पूछलो कि मुझे मारना उचित है या अनुचित। दोनों की बातें सुनकर वृक्ष बोला—आदमी बड़ा कृतघ्न होता है। मैं उसे शीतल छाया देता हूं, मीठे फल देता हूं, फिर भी वह मुझे निर्ममता से काटता है और जलाता है। इसलिए उचित है कि शेर इस आदमी का भक्षण करले। तब वे दोनों एक गाय के पास पहुँचे, लेकिन गाय ने भी शेर के पक्ष में ही फैसला सुनाया। इसी समय ब्राह्मण को एक गीदड़ दिखलाई पड़ा तो उसने शेर से कहा कि इस गीदड़ से और पूछलें, यह जो निर्णय दे देगा, वही मुझे मान्य होगा। शेर ने उसकी बात मान ली। ब्राह्मण ने गीदड़ से बात कही तो गीदड़ बोला—तुम्हारा कथन अविश्वसनीय है। जंगल का राजा शेर

कभी पिंजड़े में बंद नहीं हो सकता। तब दोनों उसे पिंजडे के पास ले गये और शेर ने ब्राह्मण की बात का समर्थन करते हुए कहा कि मैं इस पिंजड़े में बन्द था। लेकिन गीदड़ ने उससे कहा कि मुझे इसमें घुस कर दिखलाओ। शेर पिंजड़े में चला गया। तब गीदड़ ने ब्राह्मण से पूछा कि क्या पिंजड़े का दरवाजा बन्द था और इसे सांकल लगी हुई थी? ब्राह्मण ने स्वीकृति सूचक सिर हिलाया तो गीदड़ ने कहा कि मुझे वैसा ही करके दिखलाओ। ब्राह्मण ने पिंजड़े का फाटक बन्द करके सांकल लगा दी। तब गीदड़ ने उससे कहा कि अब न्याय हो गया, शेर को पिंजड़े में बन्द रहने दो और तुम अपनी राह लगो।

(२) एक ठाकुर किसी तेली के रुपये मांगता था। एक दिन वह अपनी घोड़ी पर सवार होकर तेली के गाँव गया। तेली ने कहा कि वह पांच-सात दिनों में रुपये दे देगा। ठाकुर वहां खा-पीकर सो गया। रात को ठाकुर की घोड़ी ने एक बछेड़ा प्रसव किया तो तेली ने उसे लेजाकर अपनी घानी से बांध दिया। सवेरे जब ठाकुर को इस बात का पता चला तो तेली ने कहा कि यह बछेड़ा मेरी घानी ने प्रसव किया है। उसने दो आदमियों की झूठी गवाहियां भी दिलवादीं। लाचार ठाकुर अपनी घोड़ी को लेकर चल पड़ा, लेकिन घोड़ी अपने बछेड़े को छोड़ कर जाना नहीं चाहती थी। वह बार-बार अड़ रही थी और ठाकुर उसे मार-पीट कर लिये जा रहा था।

ऊंचे टीले पर बैठे एक गीदड़ ने यह सब देख कर ठाकुर से पूछा तो ठाकुर ने सारी घटना सुना दी। गीदड़ ने कहा कि तुम हाकिम के पास पुकार करो, मैं तुम्हारी गवाही दूंगा। ठाकुर ने अपने गांव पहुंच कर तेली पर दावा किया तो हाकिम ने तेली को तलब किया। तेली ने हाकिम के सामने उपस्थित होकर कहा कि बछेड़ा उसकी घानी ने ही जना है और उसने अपने कथन के समर्थन में दो गवाहियां भी दिलवादीं।

अब हाकिम ने ठाकुर से अपना गवाह पेश करने के लिए कहा तो ठाकुर ने गीदड़ को पेश किया। गीदड़ ने कीचड़ और राख में लोट-पोट कर अजीब सूरत बना रखी थी और वह बार-बार ऊंघ रहा था। हाकिम के पूछने पर गीदड़ ने कहा कि हुजूर, रात को समुद्र में आग लग गई थी सो रात भर उसे बुझाने में जुटा रहा। इसी कारण कीचड़ और राख में सना हुआ हूँ और थकावट व नींद के मारे आंखें भी नहीं खोल पा रहा हूं। हाकिम ने पूछा कि क्या कभी समुद्र में भी आग लगा करती है? गीदड़ ने जवाब दिया कि जब तेली की निर्जीव घानी एक बछेड़े को जन्म दे सकती है तो समुद्र में आग क्यों नहीं लग सकती? गीदड़ की बात सुनकर हाकिम

गया कि तेली सर्वथा झूठा है। इसलिए उसने तेली और उसके झूठे गवाहों को सजा सुनाते हुए ठाकुर को उसका वछेड़ा दिला दिया।

१२०५. 'गायक अर मौत को ठिकाणो कोनी, कद आज्या।

ग्राहक और मौत का कोई ठिकाना नहीं कि कब आ जाए।

१२०६. 'गायक अर राम आगै रोजे ई रोजे।

ग्राहक और भगवान् के आगे तो निरन्तर और अधिक के लिए ही मांग करते रहना चाहिए।

१२०७. गाय का भैंस तळै अर भैंस का गाय तळै करै।

इधर का उधर और उधर का इधर करते रहना।

१२०८. गाय को भैंस के लागै ?

गाय और भैंस का भला क्या रिश्ता ?

रू० अलड़ी की मां मलड़ी की के लागी ?

१२०९. गाय गई अर गळांवड़ो ई लेगी।

गाय गई और साथ में 'गळांवड़ा' भी ले गई।

गळांवड़ा = गाय-भैंस आदि के गले में बांधी जाने वाली रस्सी आदि का गोल पट्टा।

रू० कुत्ती गई अर पटियो भी लेगी।

१२१०. गाय दूंई अर गंडकां नै गेरी।

गाय का दूध निकाला और कुत्तों को पिलाया।

घर में मां या पत्नी से धन छीना और किसी कुलटा को दिया।

सुपात्र से छीन कर कुपात्र को देना।

१२११. गाय न वाछी, नींद आवै आछी।

जो घर में गाय–बछिया नहीं रखता वह आराम से निश्चित होकर सोता है।

१२१२. गाय न्याणै की, भू घराणै की।

गाय 'न्याणै' की लानी चाहिए और वहू अच्छे घराने की।

'न्याणा' = वह रस्सी जिससे दूध निकालते समय गाय की पिछली टांगें बांधी जाती हैं। यहां न्याणा की गाय से तात्पर्य है, जो मर्यादा के बन्धन को स्वीकारे। कुछ गायें ऐसी होती हैं जो न्याणा नहीं लगाने देतीं।

१२१३. गाय मारणी अर गळी सांकड़ी।

गाय मारने वाली है और गली सँकरी। बचकर निकलने का कोई रास्ता नहीं।

रू० बळद मारणो अर गळी सांकड़ी।

१२१४ गायां कै भाग को बरसै ।
गायों के भाग्य से ही वर्षा होती है।
मनुष्य के कर्म तो ऐसे हैं कि जिनके कारण वर्षा न हो, लेकिन भगवान् गायों की ओर देखकर वर्षा करते हैं ।

१२१५. गायां तो उच्छरगी अर पोटा लेरनै छोड़गी ।
गायें तो जंगल में निकल गई और अपने पीछे गोबर छोड़ गई ।
समर्थ और दिलदार व्यक्ति तो चले गये, पीछे केवल निठल्ली और अकर्मण्य संतान रह गई ।

१२१६. गायां भायां बामणां, भाज्यां ई भला ।
गायों, भाइयों और ब्राह्मणों से बच कर रहना ही अच्छा है, क्योंकि इनकी गलती होने पर भी इन्हें मारना या इनसे झगड़ा करना उचित नहीं ।

१२१७. गाया-गाया सै गीतां में आ ज्यासी ।
जो भी गाया है, वह सब गीतों के अन्तर्गत आ जाएगा ।

१२१८. गारड़ बिना भैर कोनी ऊतरै ।
गारुड़ी के बिना सांप का जहर नहीं उतरता ।

१२१९. गाल-थाप में के आंतरो ?
गाल और थप्पड़ में क्या दूरी ?
प्रमाण लगे हाथ दिया जा सकता है ।

१२२०. गाळ्यां सें किसा गूमड़ा नीकळै ?
गालियों से फोड़े थोड़े ही निकलते हैं ?
किसी के द्वारा गाली देने पर उपेक्षा का भाव ।

१२२१. गावतै डूम को अर रोवतै टाबर को के बीगड़ै ।
गाते हुए डोम का और रोते हुए बच्चे का क्या बिगड़ता है ।
ये तो इनकी स्वभावगत विशेषताएँ हैं।

१२२२. गावै तो सीठणां, लड़ै तो गाळ ।
गाये तो सीठने गाये और लड़े तो गाली दे ।
जो गाने और लड़ने दोनों में ही गाली का प्रयोग करे ।
यदि किसी को यों ही गाली दी जाए तो वह नाराज होता है । लेकिन वही गाली जब कोई समधिन अपने सगों को गाती है तो उन्हें 'सीठना' कहा जाता है और सुनने वाले उनका बुरा नहीं मानते बल्कि आनन्दित होते हैं ।

१२२३. गिण कर पोवै समाळ कर खा ।
जो गिन कर रोटी पोये और संभाल कर खाये, उसमें भला क्या अन्तर पड़ेगा ।

१२२४. **गिण्यो पान गोपाळो चरै ।**
गोपाला अब गिने हुए पान ही चर रहा है; कुछ न कुछ शीघ्र ही घटने वाला है ।

१२२५. **गिरस्ती कनै कोडी न हो तो दो कोडी को अर साधु कनै कोडी हो तो दो कोडी को ।**
यदि गृहस्थी के पास सम्पत्ति न हो तो उसका मूल्य दो कौड़ी भी नहीं होता और यदि साधु के पास सम्पत्ति हो तो उसका मूल्य केवल दो कौड़ी होता है ।

१२२६. **गिरस्ती को अेक हाथ नील में अर एक हाथ कसूमै में ।**
गृहस्थी का एक हाथ नील में और दूसरा कसूंभे में ।
गृहस्थ में सुख-दुःख लगे ही रहते हैं । कभी-कभी गृहस्थी को हर्ष व शोक की प्रक्रियाएँ एक साथ भी निभानी पड़ती हैं ।
यहाँ नील शोक का और कसूंभा उल्लास का सूचक है ।

१२२७. **गिरै जाणै अर डाकोत जाणै ।**
अब ग्रह जानें और डाकोत जाने ।
डाकोत (थावरिया) के कहे अनुसार हमने तो क्रूर ग्रहों की शान्ति करवादी, अब ग्रह जानें और डाकोत जाने अर्थात् वे ही उनसे निबटें ।

१२२८. **गिरै बिनां घात नईं, भेद बिनां चोरी नईं ।**
घातक ग्रह के बिना मृत्यु और भेद के बिना चोरी नहीं होती ।

१२२९. **गीतां में गाण जोगी न रोज में रोण जोगी ।**
न गीत ही गा सकती है, न रो ही सकती है; किसी काम के योग्य नहीं ।
हर दृष्टि से निकम्मा आदमी जो न प्रशंसा के योग्य हो और न मरने पर रोने योग्य ।

१२३०. **गुड़ खावै अर गुडियाणी का पंच्छ करै ।**
गुड़ तो खाये और जिस गुड़ से गुडियानी तैयार हो, उससे परहेज करे ।

१२३१. **गुड़ खासी जिको कान विंधासी ।**
जो गुड़ खायेगा, उसे कान बिंधवाने पड़ेंगे ।
लाभ प्राप्त करने वाले को कष्ट भी झेलना होगा ।

१२३२. **गुड़ घालै जिसो ही मीठो होवै ।**
भोज्य पदार्थ में जितना गुड़ डाला जाएगा, उसी के अनुरूप वह मीठा बनेगा ।
रू० घी घालै जित्तो ई मीठो होवै ।

१२३३. **गुड़ जठै माख्यां, घी जठै कीड़्यां ।**
गुड़ पर मक्खियां और घी पर चींटियां पहुँच ही जाएँगी ।
रू० गुड़ जठै मकोड़ा, गढ जठै घोड़ा ।

१२३४. गुड़ डळियां, घी आंगळियां ।
डली डली करके गुड़ और उंगली ऊंगली करके घी समाप्त हो जाता है।

१२३५. गुड़ दियां मरै जिकै नैं झैर क्यु' देणो ?
जो गुड़ देने से मर सके, उसे जहर क्यों दिया जाए ?
मीठा बोलने से काम चल जाए तो कटु शब्द क्यों बोले जाएँ ?

१२३६. गुड़ देकर जी ल्यायोड़ो है ।
गुड़ के बदले जी (प्राण) लाया हुआ है ।
जो व्यक्ति जरा भी पीड़ा सहन न कर सके, उसके लिए इस कहावत का प्रयोग होता है ।

१२३७. गुड़ दे नई छोरी हो जास्यूं ।
गुड़ दे दो, नहीं तो लड़के से लड़की बन जाऊंगा ।
जरा-जरा सी बात के लिए बड़ा नुकसान कर देने की धमकी देना ।

१२३८. गुड़ विनां किसी चौथ, जैंतल विनां किसो रातीजगो ?
गुड़ बिना कैसी चौथ और जैंतल बिना कैसा रतजग्गा ?
चौथ के व्रत में गुड़ का प्रयोग आवश्यक रूप से होता है एवं घरेलू रतजग्गों में जैंतलदे का गीत भी अवश्य गाया जाता है।

१२३९. गुण की पूजा है ।
गुणों के अनुसार पूजा या प्रतिष्ठा होती है ।
रू० गुण गैल पूजा ।

१२४०. गुणां का किसा गाडा भरया जावै ?
गुणों के कौन से शकट भरे जाते हैं ?
गुण कोई स्थूल वस्तु नहीं कि जिससे शकट भरे जाएँ।

१२४१. गुणं कै माल में गधै क्रो के सीर ?
गधे की पीठ पर लदे बोरे के माल में गधे का क्या साझा ?
रू० गधेड़ी चावळ ल्यावै तो बींनैं कुण घालै ?

१२४२. गुपतदान महापुन्न ।
गुप्त दान का पुण्य अधिक होता है क्योंकि ऐसे दान में दाता को नाम की भूख नहीं होती ।

१२४३. गुरु दिन ग्रहण जे होय तो, दुगणो लाभ चौमास ।
रूपो तेल कपास घी, संग्रह करजो तास ।।
ग्रहण के दिन गुरुवार हो तो रूपा, तेल, कपास और घी का संग्रह करलें, चातुर्मास में इनसे दुगना लाभ होगा ।

१२४४. गुलगुला भावै, पण गुड़ तेल कठै सें आवै ?
गुलगुले खाने की तो बड़ी तमन्ना है, लेकिन गुड़-तेल कहाँ से आये ?
बिना साधनों के इच्छा पूर्ति कैसे हो ?

पद्य—गुड़ कोनी गुलगुला करती, ल्याती तेल उधारो ।
परींडै में तो पाणी कोनी, बळीतै को दुख न्यारो ।
कड़ायो तो मांग कर ल्याती, पण आटै को दुख न्यारो ।

१२४५. गुवाड़ को जायोड़ो, कीं नै बाप कैवै ?
गाँव के सार्वजनिक चौक में जन्मा बच्चा किसको बाप कहे ?
रू० भगतण को जायो कींनै बाप कैवै ?

१२४६. गूंगा तेरी सैन में, समझै तेरी माय ।
गूंगे के संकेत को उसकी मां ही ठीक से समझ सकती है ।
रू० (१) गूंगा तेरी सैन में, समझै कुळ में दोय ।
कै गूंगै की मावड़ी, कै गूंगै की जोय ।।
(२) गूंगा तेरी सैन में, और न समझै कोय ।
कै समझै तेरी मावड़ी, कै समझै तेरी जोय ।।

१२४७. 'गू खायां काळ कोनी कटै ।
विष्टा खाने से अकाल का समय थोड़े ही निकल पाता है ?

१२४८. गूगो चाल्यो गांवां नै, कुण डाटैगो भावां नै ?
गोगा-नवमी तक यदि यथोचित वर्षा होती रहे तो फिर अनाज के भावों को कौन रोक सकेगा ?
गोगा नवमी तक पर्याप्त वर्षा होते रहने से अच्छा जमाना होने की उम्मेद हो जाती है । इसलिए न किसान अन्न को रोकना चाहता है और न व्यापारी उसका संग्रह करना चाहता है, जिससे भाव गिरने लगते हैं ।

१२४९. गूगो बड़ो 'क राम ?
'क बड़ो तो है जिको ई है, पण सांपां सें बैर कुण बांधै ?
किसी ने पूछा कि गोगा बड़ा है या राम ? तो उत्तर मिला कि बड़ा तो जो है सो ही है, लेकिन गोगा के बड़प्पन को नकार कर सांपों से वैर कौन बांधे ? गोगाजी सांपों के देवता माने जाते हैं और यह लोक विश्वास दृढ है कि गोगाजी के आदेश के बिना सांप किसी को नहीं डसता ।
रू० गांड फाटतो गूगो धोकै ।

१२५०. गूजर किसका पाळती, किसका मित्र कलाळ ?
गूजर किसका आसामी और कलाल किसका मित्र ?

१२५१. गूजर सें ऊजड़ भली ।
गूजर के पड़ोस से तो ऊजाड़ ही अच्छा ।
रू० गूजर सें ऊजड़ भली, ऊजड़ सें भली ऊजाड़ ।

१२५२. गेडिया रळग्या ।
आज तो गेडिये मिल गये ।

संदर्भ कथा किसी गाँव के मन्दिर में एक अनपढ़ पुजारी पूजा किया करता था। वह मन्दिर की कोठरी के एक कोने में पन्द्रह गेडिये रखता था और तिथि के बदलने के साथ उनमें से एक गेडिया उठाकर कोठरी के दूसरे कोने में रख देता। इन्हीं गेडियों को गिनकर वह पूछने वालों को बतला दिया करता कि आज अमुक तिथि है। एक दिन जब वह बाहर गया हुआ था तो बच्चों ने दोनों कोनों के सारे गेडिये परस्पर मिला दिये। पुजारी के लौटने पर जब किसी औरत ने मंदिर में आकर पूछा कि पुजारीजी, आज कौन तिथि है तो पुजारी तिथि का पता लगाने के लिये कोठरी मे गया। लेकिन वहाँ तो सारे गेडिये रले-मिले पडे थे, अतः वह कोई निर्णय नहीं कर पाया और बाहर आकर उसने पूछने वाली से कह दिया 'आज तो गेडिया रळग्या'।

गेडिया = हाकी स्टिक की तरह मुड़े हुये अग्र भाग वाली मोटी छड़ी।

रू० आज तो वार गेडियां रळग्या।

१२५३. गैल-गैल की घोळ-मथोळ।

पीछे-पीछे की बात गोलमोल अर्थात् विगत में जो हुआ उसे जाने दो।

संदर्भ कथा—एक दामाद अपनी ससुराल गया। उसके लिये खिचड़ी बनाई गई और खिचड़ी में भरपूर घी डाला गया। लेकिन सास को यह सह्य नहीं हुआ कि सारा घी उसका दामाद अकेला ही खा जाये। इसलिए उसने अपने छोटे लड़के को उसके साथ जीमने को बिठला दिया। परन्तु जब सास ने देखा कि सारा घी तो दामाद की तरफ रह गया है और उसके लड़के को बिना घी की खिचड़ी खानी पड़ेगी तो वह थाली के पास बैठ गई और खिचड़ी में पड़े घी को उंगली से अपने लड़के की ओर करती हुई बोली कि देखोजी, आपकी माँ ने मेरी लड़की से ऐसा कहा, वैसा कहा, यह किया, वह किया आदि। हर बात के साथ वह उँगली से एक रेखा खिचड़ी में बना देती, जिसके फलस्वरूप सारा घी उसके बेटे की तरफ बह आया। दामाद ने सोचा कि यह तो खूब रही। उसने भी एक तरकीब निकाली और अपने हाथ से सारे घी को खिचड़ी में मिलाकर फेंटते हुये बोला—अजी, जाने भी दो, आगे से ऐसा नहीं होगा, 'गैल गैल की घोळ-मथोळ।'

१२५४. गैली सैं सैं पैली।

किसी भी काम में पगली सबसे आगे।

१२५५ 'गो चौड़ी तो सांप लांबो।

गोह चौड़ी अधिक है तो साँप लम्बा ज्यादा है।

दोनों में से कोई घटकर नहीं।

रू० इन्नै सोल्यो भांवैं इन्नै, गांड तो मान्नै के बीच में रैं'सी।

१२५६ गोड़ में भी झोड़ ?

गौड़ में भी झंझट ?

संदर्भ कथा—किसी गाँव में ब्रह्मभोज हो रहा था। एक मियां भी ब्राह्मण का वेश बनाकर जीमने के लिये आ गया। लेकिन 'बंधे' (प्रवेश द्वार) पर बैठे हुये लोगों को उस पर सन्देह हो गया। इसलिये उन्होंने उससे पूछा कि तुम कौन हो ? उत्तर मिला 'बामन'। प्रश्न हुआ, 'कौनसा बामन' ? उत्तर मिला 'गौड़ बामन'। उन्होंने फिर पूछा कि 'गौड़ बामन' तो ठीक है, लेकिन गोत्र क्या है ? ब्राह्मण वेशधारी मियां इससे अधिक कुछ जानता नहीं था। इसलिये उसके मुँह से सहसा निकल पड़ा, "या अल्लाह गाड़ मे भी झोड़ ?"

१२५७. गोत आळी गाळ तो गंडक कै ई लागै।

गोत्र की गाली तो कुत्ते को भी बुरी लगती है।

रू० गोत आळी गाळ तो भैंस कै ई लागै।

१२५८. गोद को छोरो, राखणो दोरो।

गोद के बेटे को रखना कठिन होता है क्योंकि दोनों तरफ ही आत्मीयता का अभाव होता है।

१२५९. गोद मोल का छोरा, न्हयाल करैगा दोरा।

गोद-मोल के बेटे कभी मुश्किल से ही निहाल करते हैं।

१२६० गोद लडायो गीगलो, चढ्यो कचेड़्यां जाट।

पी'र लडाई पदमणी, तीनूं हिं बारा बाट॥

अधिक लाड़-चाव में पला लड़का, कचहरियों मे मुकद्दमेबाजी करते रहने वाला जाट, पीहर में लडाई गई स्त्री—ये तीनों ही बारहबाट हो जाते हैं।

१२६१ गो'दां सें हळ कोनी बाया जावै।

सांडों से हल नहीं जोते जाते।

सांड = बिना खस्सी किया हुआ बैल जिसे केवल जोड़ा खिलाने के लिये पालते हैं एवं हिन्दू लोग मृतक की स्मृति में दाग लगा कर छोड़ देते हैं।

१२६२. गोदी आळै नै गेर कर पेट आळै की आस के करणी।

गोदी वाले का परित्याग करके पेट वाले की आशा क्या करनी ?

उपलब्ध को त्यागकर अनुपलब्ध की क्या आशा करें ?

सन्दर्भ कथा— किसी स्त्री के केवल एक ही बच्चा था। वह चाहती थी कि उसे और अधिक बच्चे हों। किसी ने उसे कहा कि यदि वह अमुक देवी को अपने पहले बच्चे की बलि चढ़ादे तो उसे और बच्चे हो जायेंगे। वह इसके लिये तैयार हो गई, लेकिन उसकी पड़ोसिन ने उसे समझाया कि तू यह कैसी मूर्खता कर रही है जो और बच्चों को पाने की आशा में गोद

वाले बच्चे को मार रही हैं। यदि और बच्चा न हुआ तो जो अभी मौजूद है, उससे भी हाथ धो बैठेगी। तब वह मान गई।

१२६३. **गोबर का लाग्या जिका कुस का लागसी।**

गोबर के दाग लग गये हैं तो कुश के भी लगेंगे ही।

ऊंट के दाग लगाते समय पहले गोबर से दाग लगाते हैं और फिर लोहे का तप्त कुश से।

१२६४. **गोबर को घड़ो अर काठ की तलवार।**

गोबर का घड़ा और काठ की तलवार। दोनों तरफ ठगाई का सौदा।

सन्दर्भ कथा—एक ठग ने गोबर से एक घड़ा भर लिया और केवल मुँह पर थोड़ा सा गाढ़ा घी डालकर वह शहर में घी बेचने चला। वहाँ उसे एक दूसरा ठग मिला जो एक काठ की तलवार को एक सुन्दर म्यान में डाल कर बेचने लाया था। घी वाले को वह तलवार पसन्द आ गई और उसने अपने घी के घड़े के बदले में वह तलवार ले ली। दोनों ही ठग अपनी-अपनी कारगुजारी पर प्रसन्न होते हुये चले गये। लेकिन घर जाने पर जब रहस्य खुला तो दोनों ही पछताये कि वे ठगे गये।

१२६५ **गोयरो लड़चो, 'क परेंसो पड़ी।**

गोयरा अधिकतर खेजड़े के वृक्ष के खोखलों में रहता है और सांप से भी अधिक जहरीला माना जाता है। उसके काटते ही आदमी तत्काल जमीन पर गिर पड़ता है। इसलिये गोयरा आदमी को काट कर उससे कहता है कि तुम कहीं मेरे ऊपर गिरकर मुझे दबा न लेना, अलग ही गिरना।

१२६६ **गो'र को दिन माड़ो आवै जद गायां चंवरा बाछा ल्यावै।**

जब गो'र का दुर्दिन आता है तो गायें चवरे बछड़ों को जन्म देती हैं।

गो'र = गायों को बांधे जाने का स्थान।

रू० भैंस्यां की जावली आवै जद च्यानणां पाडा ल्यावै।

१२६७. **गो रयो को गाय न को गो'दो।**

गोरू की गिनती न गायों में न सांड़ों में।

१२६८ **गोरी में गुण होसी तो ढोलो आपै ई आ मिलसी।**

पत्नी में गुण होंगे तो पति स्वयं ही आ मिलेगा।

१२६९ **गोला किसका गुण करै, औगणगारा आप।**
मायड़ जिणकी खावळी, सोळा जिणका बाप।

वर्णशंकर किसी का भला नहीं कर सकते, क्योंकि वे स्वयं अवगुणी होते हैं।

१२७०. **गोला कीं का गोठिया, पातर कीं की नार?**

गोला किसका मित्र और वेश्या किस की स्त्री?

१२७१ **गोळी को घाव भरज्या, पण बोली को कोनी भरै ।**
बन्दूक या पिस्तौल की गोली का घाव भर जाता है, लेकिन बोली का घाव नहीं भरता ।

१२७२. **गोलै को गुर जूतो ।**
गोले का गुरु जूता ही होता है ।
रू० गोलै कै सिर ठोलो ।

१२७३. **गोलो अर मूंज पराये बळ आंवसै ।**
गोला और मूंज पराये बल पर ही ऐंठते हैं ।

१२७४. **गौर भी मानज्या अर टाबर भी फळ-ढोकळा खाले ।**
गनगौर भी मनजाए और बच्चों को भी फल-ढोकले खाने को मिल जाएँ ।
दो काम एक साथ सध जाएँ । एक पंथ दो काज ।
गणगौर के त्यौहार पर मुख्यतया बाजरे के आटे के 'फळ-ढोकळे' भाप से सिजा कर बनाये जाते थे ।

१२७५. **ग्यान गिणै सो मूरख हारै, सो जीतै रो पैली मारै ।**
सोच-विचार करते रह जाने वाला मूर्ख हारता है और पहले वार करने वाला जीतता है ।

१२७६. **ग्यानी काटै ग्यान सें, मूरख काटै रोय ।**
आपतकाल को ज्ञानी तो ज्ञान से काटता है और मूर्ख रो-धोकर ।

१२७७. **ग्यानी सें ग्यानी मिलै, करै ग्यान की बात ।**
मूरख सें मूरख मिलै, कै जूता कै लात ।।
दो ज्ञानी मिलते हैं तो ज्ञान-वार्ता करते हैं; दो मूर्ख मिलते हैं तो झगड़ा-फसाद करते हैं ।

१२७८. **ग्यारस को कड़दो बारस में नीकळै ।**
एकादशी को व्रत रखने वाला द्वादशी को भोजन की कसर पूरी करता है ।

१२७९. **घट तोला मिठ बोला ।**
कम तोलने वाला दुकानदार मीठा बोलता है ।

१२८०. **घड़ी दोय दिन पाछलै, बादळ धनुष धरेह ।**
डक्क कहै हे भड्डळी, जळ थळ अेक करेह ।।
सूर्यास्त से दो घड़ी पहले यदि आकाश में इन्द्र धनुष दिखलाई पड़े तो भरपूर वर्षा हो ।

१२८१. **घड़ी में तोळा, घड़ी में मासा ।**
जरा जरा देर में पलटने वाला आदमी ।
रू० पल में तोळा, पल में मासा ।

१२८२. घड़ै कुम्हार, भरै संसार ।
कुम्हार मिट्टी के घड़े बनाता है और सारी दुनिया पानी भरती है ।
रू० घड़ै सुनार, पैरै संसार ।

१२८३ घड़ै गैल ठीकरी, मा गैल टीकरी ।
घड़े के अनुरूप ठीकरी होती है और माँ के अनुरूप बेटी ।
ठीकरी = मिट्टी के टूटे बर्तन का छोटा टुकड़ा ।

१२८४ घड़ै सें घड़ो कोनी भरै ।
एक ही माप के एक घड़े के पानी को दूसरे में उंडेलने से वह पूरा नहीं भर पाता ।

१२८५. घड़ो फूट कर गिरगणों ईं हाथ आवै ।
घड़ा फूट जाने पर उसका 'गिरगणा' ही हाथ लग पाता है ।
गिरगणा = घड़े के मुँह का गोलाकार घेरा ।
पहली पत्नी के मरने पर जब दूसरी पत्नी पहले वाली से घटिया मिलती है, तब प्रायः इस कहावत का प्रयोग करते हैं ।

१२८६. घणा कतवारी नैं नागी बाळी ।
अधिक कातने वाली को नंगी ही जलाई ।
जिसने जीवन में खूब कमाया वह भी नितान्त अभावग्रस्त अवस्था में मरा ।

१२८७. घण जायां घणा ओळमा, घणा बरस्यां कणा हाण ।
अधिक संतान अधिक उपालंभ दिलाने वाली और अधिक वर्षा अन्न का नाश करने वाली होती है ।
रू० (१) घणा जायां कुळ मेहणो, घणा बूठां कणा हाणा ।
(२) घणा जायां घणा नास ।

१२८८. घणा जीतै सूरमा हारै ।
शत्रुओं की संख्या अधिक हो तो शूरवीर भी हार जाता है ।
रू० घणा जीतै रै लिछमणां ।

१२८९. घणा दूधी, थुड़ मोली, पाडी की सी मा ।
भैंस यदि अधिक दूध देने वाली हो, मोल कम हो और उसके साथ पाडी हो तो फिर क्या चाहिये ?
भैंस के साथ पाडी एवं गाय के साथ बछड़ा हो तो कीमत अधिक मिलती है ।

१२९०. घणा गोलां ईं कोटड़ी सूनी ।
गोलों की संख्या अधिक होने पर भी 'कोटड़ी' सूनी ।
गाँवों में ठाकुर निवास के स्थान को कोटड़ी कहा जाता था । ठाकुरों के यहाँ गोले रहते थे, लेकिन ठाकुर के स्वयं के संतान न होने पर गोलों के बड़ी संख्या में रहने पर भी ठाकुर की कोटड़ी सूनी ही रहती थी ।
रू० नौ गोलां ईं कोटड़ी सूनी ।

१२६१ घणा गोलां घर ऊजड़ै ।
गोलों की अधिकता घर को वर्वाद कर देती है ।
रू० घणां मोडां मंडी ऊजड़ै ।

१२६२. घणा में घुण पड़ग्या ।
घने में घुन पड़ गये । घने को घुन लग गये ।
जो मालिक बहुतेरा देने का आश्वासन तो देता रहे, लेकिन दे कुछ नहीं ।

१२६३. घणा हेत टूटण का, वड़ा नैण फूटण का ।
अधिक घनिष्ठता भी टूट जाती है, वड़े नेत्र भी फूट जाते हैं ।
रू० घणै मीठै में कीड़ा पड़ै ।

१२६४. घणी खींच्यां टूटै ।
अधिक खींच-तान करने से वात विगड़ जाती है ।
रू० घणों वट दियां घुंडी पड़ै ।

१२६५ घणी गई थोड़ी रैई ।
अधिक तो बीत गई और थोड़ी शेष है, इसलिए अब वात क्यों बिगाडी जाए ?

सन्दर्भ कथा एक राजा वड़ा कंजूस था । एक दिन एक नट-मंडली उस राजा के नगर में आई । मंडली के सरदार ने दरवार में उपस्थित होकर राजा से उनकी मंडली का तमाशा देखने की अर्ज की । लेकिन राजा ने वात आगे के लिए टाल दी । नट-मंडली राजा की स्वीकृति की प्रतीक्षा करते करते तंग आ गई और उसकी जमा पूंजी भी समाप्त हो गई । तब एक दिन मंडली के सरदार ने पुनः राजा के सामने तमाशा देखलेने की प्रार्थना की । लेकिन राजा ने कोई स्पष्ट उत्तर नहीं दिया । इस पर मन्त्री ने राजा से कहा कि इतने दिनों तक ठहराने के वाद भी नट-मण्डली का तमाशा नहीं देखा गया तो ये लोग जहाँ भी जाएँगे, आपकी निंदा करेंगे । इसलिए आप इनका तमाशा देख लीजिए, खर्चे का प्रवन्ध मैं स्वयं कर दूंगा । इस पर राजा ने स्वीकृति दे दी ।

रात को तमाशे का आयोजन हुआ । नगर भर के लोग तमाशा देखने के लिए इकट्ठे हो गये । राजा भी एक ऊँचे मंच पर वैठ गया । नट और नटी ने जी खोलकर तमाशा दिखलाया, लेकिन राजा ने कोई उत्साह प्रकट नहीं किया । वह गुमसुम वैठा देखता रहा । उसने तो कभी कुछ देने का नाम ही नहीं सीखा था और राजा के न देने के कारण दूसरे लोग भी देने की पहल नहीं कर रहे थे । यों करते कराते रात वीत चली, सिर्फ घड़ी भर रात शेष रही । नृत्य करते-करते नटी थक कर चूर हो गई थी और राजा

के व्यवहार ने उसकी थकावट और भी बढ़ा दी थी। इसलिये उसने गाते हुये ही नट को संकेत दिया—

रात घडी भर रह गई, थाके पिंजर आय।
कहे नटी सुन हो पिया, मधरा ताल बजाय॥

अर्थात् हे पिया! नृत्य करते-करते सारी रात बीत चली है और मैं एकदम थक गई हूँ, इसलिए अब तुम धीमे-धीमे ताल दो, क्योंकि तुम जितनी तेजी से ताल लगाते हो, उतनी ही तेजी से मुझे नाचना पड़ता है।

इस पर नट ने सोचा कि केवल घड़ी भर के लिये क्यों सारे किये कराये पर पानी फेरा जाये? इसलिए उसने नटी को सुना कर कहा—

घणी गई थोड़ी रही, थोड़ी भी अब जाय
भाखत नट सुण नायिका, ताल भंग नहीं लाय॥

नट की बात सुनते ही दर्शकों में बैठे एक साधु ने अपना कम्बल शरीर पर से उतार कर नट को दे दिया। युवराज ने अपनी उँगली से बहुमूल्य अंगूठी उतार कर नट को दे दी तो राजकुमारी ने अपना कंगन उसे दे दिया। यह सब देखकर राजा को दुःख भी हुआ और आश्चर्य भी।

राजा ने साधु को अपने पास बुलाकर उससे पूछा कि इस जाड़े में ओढने के लिये तुम्हारे पास सिर्फ एक कम्बल ही था और वह भी इस तुमने नट को दे दिया, इसका क्या कारण है? साधु ने उत्तर दिया कि महाराज! मैं दुनिया में रहते हुए भी आज तक इसके भोगों से विरक्त रहा, लेकिन आज आपकी नगरी में आकर मेरा मन भोग के लिये ललचा गया। परन्तु इस नट ने चेतावनी देकर मुझे विषयों के गर्त में गिरने से बचा लिया। इसलिये मैंने सहर्ष अपना कम्बल उसे दे दिया।

तब राजा ने राजकुमारी से पूछा तो उसने कहा कि पिताजी! मैं विवाह-योग्य हो गई और आप रुपया खर्च होने के डर से मेरा विवाह नहीं करते, इसलिये मैंने मन्त्री के लड़के के साथ भाग निकलने की योजना बनाई थी। किन्तु इस नट के दोहे को सुनकर मैंने अपना विचार बदल दिया है, जिससे आपके कुल को भी कलंक लगने से रह गया है। इसी बात की खुशी में मैंने अपना कंगन नट को दे दिया। इसके बाद राजा ने युवराज से पूछा तो वह बोला कि मैं राजा का बेटा होकर भी गरीबों जैसी तंगी भुगत रहा हूँ। इसलिये मैं सोच रहा था कि आपको खाने में विष दिलवाकर मरवा डालूं और पूरे राज-पाट का मालिक बन जाऊं। लेकिन इस नट के दोहे को सुन कर मैंने अपना विचार बदल दिया। सोचा, कि पिताजी की उम्र तो अब बीत ही चुकी है, अब तो ये थोड़े ही दिनों के मेहमान हैं। इनके मरने के

बाद तो सब कुछ अपना ही है, अतः थोड़े समय के लिये पितृहत्या का यह जघन्य पाप अपने पल्ले क्यों बांधू ? नट ने मुझे एक भारी पाप-कर्म से बचाया और इसी के उपलक्ष्य में मैंने उसे अपनी अंगूठी दे दी।

अब राजा की आँखें खुलीं। उसने नट-नटी को भरपूर पुरस्कार दिया। फिर उसने मन्त्री के लड़के के साथ राजकुमारी की शादी कर दी और युवराज को सारा राज-पाट सौंप कर स्वयं वन में तपस्या करने चला गया।

१२९६. घणी दाई घणा पेट फाड़ै।
प्रसव के समय यदि दाइयां अधिक संख्या में एकत्र हो जाएँ तो वे जच्चा को हानि ही पहुँचाती हैं, क्योंकि सभी अपनी अपनी होशियारी जतलाती है।

१२९७. घणी भगती चोर का लच्छण।
अधिक भक्ति का प्रदर्शन करने वाला अन्त में चोर निकलता है।

१२९८. घणी भू बटाउवां खातर थोड़ी ई है ?
घर में अधिक बहुएँ हैं तो क्या बटोहियों के लिए हैं ?
घर में अधिक सम्पत्ति है तो राह चलतों के लिये नहीं है।
रू० घणो दूध किसो बाड़ में ढोळै ?

१२९९. घणी सराई खीचड़ी, दांतां कै चिपज्या।
किसी की अधिक सराहना करने पर जब वह उल्टा गले पड़ने लगे।
रू० घणी सराई खीचड़ी दांतां लागी।

१३००. घणी सूदी छिपकली घणा जिनावर मोसै।
ऊपर से अधिक सीधा लगने वाला व्यक्ति अधिक घातक होता है।

१३०१. घणो खाऊं न कुवेळां जाऊं।
न अधिक खाऊं, न बेवक्त जाऊं।

संदर्भ कथा—एक सेठ की औरत ने शाम के वक्त कुछ अधिक खाना खा लिया तो रात को उसे शौच की हाजत हुई। वह शौच के लिये घर से बाहर निकली तो एक चोर ने सेठानी को पकड़ कर कहा कि तुझे मेरे साथ चलना पड़ेगा। सेठानी जरा भी नहीं घबराई और उसने चोर को चकमा देने के लिये कहा—यह तो बड़ा अच्छा है, मैं तो इस घर से और बूढ़े पति से स्वयं ही उकताई बैठी हूँ, लेकिन तुम कहो तो मैं अपना गहनों का डिब्बा भी ले आऊँ। चोर ने उत्तर दिया कि नेकी और पूछ-पूछ ? तुम गहनों का डिब्बा लेकर शीघ्र आ जाओ, मैं बाहर बैठा हूँ। चोर के पूछने पर सेठानी ने अपना नाम 'समझी' बतलाया और वह घर में चली गई। उसने घर में घुसकर किवाड़ों को सांकल लगादी। कुछ देर की प्रतीक्षा के बाद चोर ने

'समझी, समझी' कह कर दबी आवाज में पुकारा तो सेठानी ने बारी खोल कर अन्दर से ही उसे उत्तर देते हुये कहा हां भाई, समझ गई, न अधिक खाऊं, न रात को बेवक्त बाहर जाऊं। चोर अपना सा मुँह लेकर चला गया।

१३०२. **घणो खावै जिको घणो मरै।**

अधिक खाना नुकसानप्रद ही होता है।

रू० घणो खावै जिको घणो डबकै।

१३०३. **घणो धूंसै जिको खावै कोनी।**

अधिक भोंकने वाला कुत्ता काटता नहीं।

पद्य—घण गाजण बरसै नईं, घुसण कुता नईं खाय।
घण बोल्या धण जावसी, अणबाल्या मर जाय॥

१३०४. **घणो लडायेड़ो टावर ईतरै।**

अधिक लाड़-चाव से बालक इतरा जाता है।

१३०५. **घणो स्याणो कागलो होवै जिको भिस्टा में चांच देवै।**

अधिक सयाना कौवा होता है जो विष्टा में चोंच मारता है।

अधिक सयानप दिखलाने वाला व्यक्ति कहीं न कहीं कालीधार डूबता है।

१३०६. **घर आई लिछमी नै ठोकर नईं मारणी।**

घर आई लक्ष्मी कभी ठुकरानी नहीं चाहिये।

प्रायः यह कहावत उस समय कही जाती है जब कोई लड़की वाला अपनी लड़की का सम्बन्ध लेकर आता है और लड़के वाला ना-नुकर करता है।

रू० मूंडै आगै आयोड़ी थाळी कै ठोकर नईं देणी।

१३०७. **घर आयो नाग न पूजिये, बांबी पूजण जाय।**

घर आये नाग की तो पूजा न करे और उसकी पूजा करने हेतु उसकी बांबी पर जाये।

हाथ में आये अवसर को गँवाकर उसके लिये व्यर्थ का श्रम उठाते फिरना।

१३०८. **घर आयो बैरी ई पावणो।**

घर पर आया हुआ शत्रु भी पाहुना।

घर आये बैरी का भी सत्कार करना चाहिये।

संदर्भ कथा—एक बार राजा भोज वेश बदले हुये रात्रि को अपनी नगरी में घूम रहा था कि उसे चार योगनियां मिलीं। योगनियों ने राजा से कहा कि अगली रात को एक भयंकर काला नाग तुम्हें डसने के लिये तुम्हारे महल में आयेगा।

राजा महल में आ गया और उसने नाग को मारने की अपेक्षा उसका सत्कार करना चाहा। उसने अपने महल के चारों ओर साफ बालू बिछवाई और उसे केवड़े एवं गुलाबजल से तर कर दी। चन्दन आदि का उत्तम इत्र वहाँ छिड़कवा दिया एवं केशर युक्त दूध के प्याले भरवा कर रखवा दिये। आधी रात को काला विषधर जोरों से फुफकारता हुआ वहाँ पहुँचा, लेकिन गुलावजल एवं केवड़ाजल से शीतल बालू में लेटने से उसे बड़ी शान्ति प्राप्त हुई। विभिन्न प्रकार की सुगन्धियों से महकते हुये वातावरण में नाग मस्त हो गया और उत्तम दूध पीने से उसे बड़ी तृप्ति हुई। इस पर क्रोध रहित होकर जब नाग राजा के पास पहुँचा तो राजा ने दण्डवत करके उसका सत्कार किया। इससे नाग बड़ा संतुष्ट हुआ और राजा को डसने के स्थान पर मुँह मांगा वरदान देकर लौट गया।

रू० (१) घर आयो सोई पावणो।
(२) बैरी सतकार सार।

१३०९. घरकां नै नाज नां मिलियो, लकड़ियां नै भेज देगा।

संदर्भ कथा—एक डोम का लड़का नितान्त आलसी था। उसके माँ-बाप गाँव में भीख मांग कर किसी तरह गुजारा करते थे। लेकिन जब वे भीख मागने के लिये गाँव में जाते तो लड़का पीछे से यही मनाया करता कि उन्हें भीख में अनाज न मिले अन्यथा वे चूल्हा जलाने के लिए मुझे ही लकड़ियां लाने हेतु भेजेंगे।

१३१०. घर का घर सळट लिया।

घर में ही परस्पर समझौता कर लिया।

सन्दर्भ कथा—एक सियार और सियारी तालाब पर पानी पीने के लिये गये तो उन्होंने तालाब के किनारे एक शेर को बैठे देखा। दोनों बहुत प्यासे थे और पानी पीना अत्यावश्यक था, इसलिये दोनों ने मिलकर एक युक्ति सोची। सियार को अपने पीछे लेकर सियारी ने शेर के पास जाकर स्त्रियोचित कोमलवाणी में कहा कि जेठजी आप हमारा न्याय कर दीजिये। शेर के पूछने पर सियारी ने अपनी बात को स्पष्ट करते हुये कहा कि हम पति-पत्नी अपना-अपना हिस्सा अलग कर रहे हैं। हमारे तीन बच्चे हैं, जिनमें से दो को सियार लेना चाहता है। लेकिन मैंने बच्चों को जन्म दिया है, उन्हें कष्ट उठा कर पाला-पोसा है, अतएव मुझे दो बच्चे मिलने चाहिएँ और सियार को एक।

शेर ने सोचा कि दो तो ये हैं और तीन इनके बच्चे है, अतः पांचों को मिलाकर अच्छा नाश्ता हो जायेगा। इसलिये उसने सियारी से कि कहा तू

जाकर तीनों बच्चों को यहाँ लेआ, मैं समुचित न्याय कर दूंगा। यह सुनकर सियारी वहाँ से चली और चलते समय पेट भरकर पानी भी पीती गई।

जब कुछ समय बीत गया और सियारी बच्चों को लेकर नहीं लौटी तो सियार ने नम्रता पूर्वक शेर से कहा कि सियारी की नीयत में फर्क है। वह सोचती है कि जंगल के राजाजी कहीं सियार को दो बच्चे न दिलवादें और इसीलिये वह बच्चों को लेकर यहाँ नहीं आई है। लेकिन मुझे आपसे न्याय की पूरी आशा है, अतः मैं जाकर अभी उन चारों को आपके पास ले आता हूँ। शेर ने आज्ञा दे दी और सियार भी पानी पीकर चलता बना।

कुछ देर तक तो शेर प्रतीक्षा करता रहा। लेकिन जब भूख अधिक सताने लगी तो वह स्वयं ही चलकर सियार की 'घुरी' पर आया और दोनों को पुकार कर कहा कि तुम अपने तीनों बच्चों को लेकर शीघ्र आ जाओ, मैं अभी तुम्हारा न्याय कर देता हूँ। शेर की बात सुनकर दोनों मन ही मन हँसे और सियारी ने घुरी के अन्दर से ही कह दिया—सेठजी, हम तो अपने घर में ही सलट लिये हैं। सियार दो बच्चे मांगता है तो इसे दो दे दूंगी और मैं एक पर ही सन्तोष कर लूंगी। आपने यहाँ तक आने का कष्ट व्यर्थ ही किया, अब आप भले ही पधार जाएँ।

सियारी की बात सुनकर शेर अपना सा मुँह लेकर चला गया।

१३११. घर का घ ड़ा वाट खुदा की।

घोड़ा तो घर का है और रास्ता खुदा का, चाहे जितना दौड़ाओ।

१३१२. घर का देव, घर का पुजारा, घर का ई धोक देवण आळा।

जब किसी काम में अपने ही अपने लोगों का बोलबाला हो।

१३१३. घर का पूत कुंआरा डोलै, पाड़ोस्यां का नौ-नौ फेरा।

घर के पूत तो कुंआरे डोलते हैं और पड़ौसी के बेटों के विवाह नौ-नौ फेरों से किये जाते हैं।

जब कोई आदमी अपने घर के काम के प्रति सर्वथा उदासीन रहे और दूसरों के काम को तरजीह दे।

रू० घर का टाबर भूखा मरै, पाड़ोस्यां नै खीर चूरमो।

१३१४. घर की कस्सी घर को छाज, करावो कोई काल आळी आज।

कुदाल और छाज घर के हैं, कोई कल वाला काम आज भी करवा ले।

संदर्भ कथा— एक जाट रोजगार की तलाश में शहर में गया, लेकिन उसे कोई काम न मिला। भटकते-भटकते वह शाम को कब्रिस्तान में पहुँच गया। वहाँ एक जनाजा रखा था और कुछ मुसलमान जनाजे के आस-पास एकत्र हो रहे थे। उनके पास कोई कब्र खोदने वाला नहीं था। जाट

ने कब्र खोद दी और उन लोगों ने उन्हें पांच रुपये दे दिये। जाट खुश हो गया और मन ही मन बोला कि बड़ा अच्छा काम मिल गया है।

अगले दिन उसने बाजार में जाकर एक कुदाल एवं एक छाज खरीदा और इनको लेकर वह मुसलमानों के मोहल्ले में जा कर आवाज लगाने लगा—

घर की कस्सी, घर को छाज।
करा ल्यो कोई काल आळी आज।।

उसकी बात को कोई नहीं समझ पाया। लेकिन जब वह उस घर के सामने पहुँचा कि जिसके मृतक व्यक्ति की कब्र वह पिछले दिन खोद चुका था तो मृतक की बीवी तुरन्त ही उसका आशय समझ गई। उसने झल्ला कर उससे कहा, 'तेरों की खोद, तेरों की।' उसके कहने का तात्पर्य यह था कि तेरे घर वालों की कब्र खोद। लेकिन जाट उसकी बात को नहीं समझा और बोला कि तेरों (१३) की तो पैसे लेकर खोदूंगा, बाकी एक-दो छोटी-मोटी यों हीं खोद दूंगा।

१३१५. घर की खांड किरकरी लागै, गुड़ चोरो को मीठो।

घर की तो चीनी भी किरकरी लगती है और चोरी का गुड़ भी मीठा लगता है।

यह कहावत प्रायः उस व्यक्ति के लिए प्रयुक्त होती है जो अपनी विवाहिता सुन्दर पत्नी को छोड़ कर बाजारू औरतों की टोह में रहता है।

रू० (१) घर की खांड किरकरी लागै, गुड़ हाट्यां को मीठो।
(२) घरे तो नागर बेल छाई अर पाड़चोसण को खोसै फूस।

१३१६. घर की छीज, लोक की हांसी।

घर की क्षति और दुनिया हँसे।

इस सन्दर्भ की कई कथाएँ हैं। एक कथा का पद्य इस प्रकार है—

पद्य—नणद भौजाई इसी लड़ी, सासु जा कूवै में पड़ी।
घर कै धणी लीनी फांसी, घर की छीज लोक की हांसी।

रू० घर की हाण लोक की हांसी।

१३१७. घर की मुरगी दाळ बरोबर।

अपने वालों को कोई महत्त्व नहीं दिया जाता।

१३१८. घर को जोगी जोगनो, आण गांव को सिद्ध।

अपने गांव में योग्य व्यक्ति की भी कद्र नहीं होती, जब कि बाहर से आये हुए अपेक्षाकृत कम योग्य व्यक्ति की भी पूजा होने लगती है।

१३१९. घर को भेदी लंका ढावै ।
घर का भेदी लंका ढहाये ।
घर का भेदी लंका जैसे सुदृढ किले और रावण जैसे बलशाली राजा का भी पतन करा देता है ।

१३२०. घर खोयो साळां, भींत खोई आळां ।
घर को साले और दीवार को आले कमजोर बना देते हैं ।
रू० (१) घर रोक्यो साळां, भींत रोकी आळां ।
(२) घर में साळो, भींत में आळो ।
आज नईं तो, काल दिवाळो ।।

१३२१. घर गैल पावणो 'क पावणैं गैल घर ?
घर की समाई के अनुसार ही पाहुने की आवभगत हो सकती है, पाहुने की हैसियत के अनुसार नहीं ।

१३२२. घर-घर माटी का चूल्हा है ।
सभी घरों में मिट्टी के चूल्हे हैं ।
ऐसा नहीं कि किसी के घर मेहमान बनकर अनिश्चित काल तक मौज उड़ाते रहें ।

१३२३. घर जाये का दिन गिणूं 'क दांत ?
घर में जन्मे पशु के दिन गिनूं या दांत ?
ऊंट—बैल आदि घरेलू पशुओं की उम्र का अनुमान उनके दांतों को देख कर लगाया जाता है । लेकिन अपने घर में जन्मे पशु के दांत क्या देखना ? घर के मालिक को तो यह पता ही रहता है कि अमुक पशु कब जन्मा था ।

१३२४. घरणी बिनां किसो घर ?
स्त्री के बिना कैसा घर ?
रू० घर दीपै घरआळी सें ।

१३२५. घर तरसै, बारै बरसै ।
घर के लोग तो अन्न के लिए तरसते हैं और बाहर दान-पुण्य !
रू० (१) घर में तो फाका पड़ै, मोडा नूंतण जाय ।
(२) घर का टाबर चाकी चाटै, ओझैजी नै सीधो ।

१३२६. घर तो घोसियां का ई बळसी, पण सुख ऊंदरा भी कोनी पावै ।
घोसियों के घर तो जलेंगे ही, लेकिन चूहे भी सुख नहीं पायेंगे ।
घोसी = एक जाति विशेष ।

१३२७. घर दीवा तो मसीत दीवा ।
घर में दीपक जला कर ही मस्जिद में दीपक जलाया जाता है ।

१३२८. घर में आई जोय, बांकी पगड़ी सीधी होय ।
घर में पत्नी के आने पर पति की सारी अकड़ निकल जाती है ।

१३२९. घर में ईं मोतियां को चौक पूर राख्यो है ।
कल्पना के महल सजाना ।
अपने मुँह मियां मिट्ठू बनना ।

१३३०. घर में कसाला, ओढ़ै दुसाला ।
फाकामस्ती में भी अमीरी का प्रदर्शन !
रू० घर में फाका, बारै बांका ।

१३३१ घर में कोनी तेल तळाई, रांड मरै गुलगुलां आई ।
घर में गुड़-तेल आदि कुछ नहीं और गुलगुले खाने को लालायित ।
रू० (१) घर में भूंजी भाग कोनी खीर की मड़मड़ी आवै ।
(२) घर में कोनी अखत को बीज, ना'र मनावै आखा तीज ।

१३३२. घर में घोघड़ आठ मुख, चौवटिये में च्यार ।
पर घर जातां दोय मुख, निरमुख राज दुआर ।।
शरीर से सण्ड-मुसण्ड किन्तु बुद्धि से हीन व्यक्ति घर में तो खूब झखता रहता है मानो उसके आठ मुँह हों, किन्तु बाजार में आने पर उसके चार मुँह ही रह जाते हैं। दूसरे के घर जाने पर उसके केवल दो मुँह रह जाते हैं और कोर्ट-कचहरी में जाने का काम पड़ जाए तो उसकी बोलती एक दम बन्द हो जाती है ।

१३३३. घर में चाकी ग्यारस करै ।
फाकामस्ती की स्थिति ।
रू० घर में ऊंदरा कल्लाबाजी खावै ।

१३३४. घर में जनानो पग तो टिक्यो !
घर में जनाना पैर तो टिका !
सन्दर्भ कथा—एक मियां जन्म से कुँआरा था, अतः औरत के लिए बड़ा नदीदा रहता था । एक दिन पड़ौसी की मुर्गी उसके घर में घुस आई तो किसी ने मियां को सावधान करते हुए कहा कि मियांजी आपके घर में मुर्गी घुस आई है । लेकिन मियां ने इसे अपना अहोभाग्य माना और बोला—खुदा का शुक्र है जो आज मेरे घर में जनाना पैर तो टिका ।

१३३५. घर में धन आतां लोग हँसै तो हँसण दे ।
सीरो खातां जाड़ घसै तो घसण दे ।।
अपने घर में धन आते यदि लोग हँसते हों तो हँसने दो, उनकी परवाह न करो, यदि हलवा खाने से भी जाड़ घिसती हो तो घिसने दो ।

१३३६. घर में ब्याव अर बहू पींपळां ।
घर में तो ब्याह रचा है और बहू पीपलों जी पूजा करती डोल रही है ।
रू० घर में ब्याव अर बहू छाणां चुगवा जाय ।

१३३७ घर मोटो टोटो घणो, मोटो पिव को नांव ।
श्रें कारण धण दूवळी, म्हारो रस्ता ऊपर गांव ।।
घराना बड़ा है, पति का नाम भी खूब है, लेकिन वर्तमान में घर की आर्थिक स्थिति बड़ी नाजुक है, फिर गांव भी मुख्य रास्ते पर है जिससे मेहमानों का आवागमन प्रचुर रहता है और इसी चिंता में घर की मालकिन घुली जाती है।
रू० घर वड़ो वर वड़ो, वड़ो कुहड़ दरवार।
घर मे एक पछेवड़ो, ओढण आळा च्यार ।।

१३३८. घर रैई भलो 'क ऊछरी भलो, के ठा पड़ै ?
कौन जाने कि गायों का घर पर रहना अच्छा या चरने के लिए जंगल में जाना। भविष्य का कोई पता नहीं होता।

१३३९. घर सीर, वटोड़ा न्यारा !
पूरा घर तो साझे में और 'वटोड़े' अलग !
वटोड़ा = गोबर के उपलों का ऊंचा ढेर जिसे—गोवर से ही लीप दिया जाता है और आवश्यकतानुसार उसमें से उपले निकाल लिये जाते है।

१३४०. घर सें उठ वन में गया अर वन में लगी लाय।
अभागा मनुष्य घर से ऊब कर वन में गया तो वहाँ भी आग लग गई। अभागे व्यक्ति को कहीं सुख नहीं।
रू० घर तायो वन में गयो वन में लागी लाय।

१३४१. घर सें घर कोनी चालै।
एक घर से दूसरा घर नहीं चल सकता।
कोई व्यक्ति किसी की थोड़ी बहुत मदद तो कर सकता है, लेकिन सदैव ही उसके घर का निर्वाह नहीं कर सकता।

१३४२. घर सें वेटी नीसरी, जम ल्यो भांवें जंवाई ल्यो।
विवाह के बाद वेटी पराई हो जाती है, माँ-बाप का उस पर कोई अधिकार नही रह जाता।

१३४३. घर हीण देदेणी, वर हीण नई' देणी।
बेटी को गरीब घर में भले ही व्याह दें, लेकिन अयोग्य पति को नहीं देनी चाहिए।

१३४४. घरे घाणी, तेली ल्हूको क्यूं खावै।
तेली के घर में जब घानी चलती हो, तब वह लूखा क्यों खाये ?

१३४५. घरे वैठ्यां गंगा आ'गी।
घर बैठे गंगा आगई।

१३४६ घाघरी को साख नजीक को हो ज्यावै ।

पगड़ी के साख की अपेक्षा घाघरी का साख प्रिय हो जाता है ।
विवाह के बाद लड़के को माँ-बाप, भाई बहिन आदि की अपेक्षा सास ससुर, साले-सलहज आदि प्रिय लगने लगते हैं ।
पुरुष के पिता, चाचा, भाई आदि पगड़ी के साख के अन्तर्गत एवं उसकी सुसराल वाले घाघरी के साख के अन्तर्गत आते हैं ।
रू० मा नै मारै, सासु नै सिरणगारै ।

१३४७. घाटो तो लूण को ई बुरो ।

घाटा तो नमक का भी बुरा ।
दैनिक व्यय में थोड़ा सा टोटा रहे तो वह भी बुरा ।

१३४८. घाटो-बाधो करमां को ।

हानि-लाभ तो कर्माधीन हैं ।

१३४९. घाटो है तो मणां को है, कणां को कोनी ।

घाटा है तो मन का है, कन का नहीं ।
घर में भले ही बहुतायत न हो, लेकिन आये हुए मेहमान की आव-भगत तो कर ही सकते हैं ।

१३५०. घाणी सें खळ ऊतरी, रैई बळीतै जोग ।

घानी से उतरने के बाद खल ईंधन के योग्य ही रह जाती है ।
पद से हटने के बाद आदमी की कद्र कम हो जाती है ।

१३५१. घायल की गत घायल जाणै ।

घायल की पीड़ा को घायल ही जान सकता है ।

१३५२. घालो घाल में काढो काढ लागगी ।

उल्टा चाक चलने लगा ।
एक दम विपरीत स्थिति पैदा हो गई ।

१३५३. घालो घाल में घालो घाल, काढो काढ में काढो काढ ।

जो ढर्रा चल पड़ता है, चल पड़ता है ।
एक की देखा-देखी दूसरा भी वैसा ही करता है ।

१३५४. घाव तो वैरी का भी सराया जावै ।

वीरता तो वैरी की भी प्रशंसनीय है ।

१३५५. घाव भरज्या, पण सैनाण कोनी जा ।

घाव के भर जाने पर भी उसका चिह्न बाकी रह जाता है ।
विवाद के मिट जाने पर भी उसकी कटु स्मृति शेष रह जाती है ।

१३५६. घींघलै कै तो गोबर ई गुड़ ।

गुबरैला के लिए तो गोबर ही गुड़ ।

१३५७. घी का तो मारया ई फिरां हां ।

घी की मार से आहत हुए तो डोल ही रहे हैं ।

जो उपचार बतला रहे हो, वही तो व्याधि की जड़ है ।

संदर्भ कथा—एक सेठ के घर में घाटा था । वह कुछ कमाता कजाता न था और जैसे-तैसे अपना निर्वाह कर रहा था । एक दिन उसकी स्त्री ने खिचड़ी बनाई । सेठ जीमने बैठा तो सेठानी ने उसे थाली में खिचड़ी परोस कर उसमें जरा सा घी भी डाल दिया । सेठ ने और घी मांगा तो सेठानी ने उसकी बात पर ध्यान नहीं दिया, लेकिन जब वह बार-बार घी मांगने लगा तो सेठानी को गुस्सा आ गया और उसने 'डोई' (लकड़ी की कलछी) उठा कर उसके सिर पर दे मारी । सिर से रक्त बहने लगा, लेकिन सेठ चुप-चाप उठ कर बाहर चला गया । जब किसी ने सेठ के मस्तक पर लगी चोट देखी तो उसने सहानुभूति जताते हुए उससे कहा कि इस पर थोड़ा सा घी लगालो, जख्म ठीक हो जाएगा । उसकी बात सुन कर सेठ ने ठंडी सांस लेकर कहा—इस घी के मारे तो यों फिर ही रहे हैं, सारी खराबी की जड़ तो यही है ।

१३५८ घी खाणो तो पगड़ी राख कर खाणो ।

घी खाये तो इज्जत की रक्षा करते हुए खाना चाहिए ।

मनुष्य के लिए घी का बड़ा महत्त्व माना गया है, लेकिन इज्जत का महत्त्व उससे भी अधिक है, अतः घी खाने के लिए इज्जत नहीं गँवानी चाहिए ।

१३५९. घी घालै तो घालै, नईं खीचड़ी तो ठंडी होवै ई है ।

मेजबान यदि खिचड़ी में घी डाल दे तो बड़ी अच्छी बात है अन्यथा खिचड़ी तो ठंडी हो ही रही है । खिचड़ी के ठण्डी होने तक तो यूं भी प्रतीक्षा करनी ही होगी, इस बीच वह खिचड़ी में घी डाल दे तो नफे में है ।

१३६०. घी घाल्योड़ो तो अंधेरै में ईं छानो कोनी रैवै ।

यदि मेजबान चावल-खिचड़ी आदि में अंधेरे में भी घी डाले तो वह छिपा नहीं रह सकता ।

अनजान में किया गया उपकार भी अज्ञात नहीं रह पाता ।

रू० घी घाल्योड़ो तो मूंगां में ईं दीख्यावै ।

१३६१. घी-चीणी का गारा-नांव न्यारा न्यारा ।

मिठाइयों के नाम भले ही अलग-अलग हों, लेकिन उनमें घी और चीनी की ही प्रमुखता होती है ।

१३६२. घी जाट को, तेल हाट को ।

घी जाट का अच्छा और तेल हाट का ।

तेली के यहां तेल ताजा मिलता है जिसमें गाद मिली होती है, लेकिन दुकान में पड़े रहने के कारण तेल की गाद नीचे बैठ जाती है और वह साफ हो जाता है ।

१३६३. घी ढुळ्यो तो मूंगां में।
घी गिरा तो मूंगों में ही गिरा, व्यर्थ नहीं गया।

संदर्भ कथा—दो भाइयों में बड़ा प्रेम था, लेकिन घर में स्त्रियों की नहीं पटती थी इसलिए दोनों अलग अलग रहते थे। एक बार बड़े भाई के घर भोज था। छोटे भाई को भी न्योता दिया गया, लेकिन उसकी भौजाई ने उसे बुलावा नहीं देने दिया। यद्यपि राजस्थान में ऐसी प्रथा थी कि यदि न्योता देने के बाद बुलावा नहीं दिया जाता था तो जीमने के लिए नहीं जाते थे, तथापि बड़े भाई की मजबूरी को समझ कर छोटा भाई बिना बुलावे ही जीमने चला गया।

भोजन में सब को चावल और मूंग परोसे गये तथा बड़ा भाई स्वयं घी का बर्तन लेकर सब को, घी डालने के लिए चला। सब को घी डाल चुकने के बाद जब उसके छोटे भाई की बारी आई तो उसे अपनी पत्नी की नाराजी का ख्याल आया कि छोटे भाई को घी डालने पर वह कलह करेगी। इसलिए छोटे भाई के पास पहुँचते-पहुँचते उसने ठोकर खाकर गिर पड़ने का उपक्रम किया और गिरते-गिरते छोटे भाई की थाली में घी डाल दिया। घी चावलों में न गिर कर मूंगों में गिरा। सारी परिस्थिति को समझ कर पास में बैठे आदमी ने कहा—

भाई कै भाई मन भायो, बिना बुलावै जीमण आयो।
आखड़ियो पण पड़ियो नांहि, घी ढुळ्यो तो मूंगां मांहि॥

१३६४ घी नै अर खुदा नै कुण देख्यो है?
घी को और खुदा को किसने देखा है?

सन्दर्भ कथा किसी आदमी ने अपने जीवन मे पहली बार घी देखा था। उन दिनो जेठ का महीना था और घी पिंघला हुआ था। इसलिए उसने सोचा कि घी तो पानी जैसा ही होता है। लेकिन उसी के एक मित्र ने माघ के महीने में पहली बार घी को देखा जो जमा हुआ था और डली के रूप में था। एक बार दोनों मित्रों में होड लग गई। पहले ने कहा कि घी पानी जैसा होता है। लेकिन दूसरे ने कहा कि नहीं, डली जैसा होता है। इसका निर्णय कराने के लिए दोनों जने काजीजी के पास गये। लेकिन काजीजी को अपनी जिन्दगी में एक बार भी घी के दर्शन नहीं हुये थे। इसलिए दोनों की बात सुन कर वे पसोपेश में पड़ गये। फिर सोच कर बोले कि तुम दोनों ही झूठे हो, घी को और खुदा को भला किसने देखा है?

१३६५ घी सुंवारै खीचड़ी नांव बहू को होय।
घी डालने से खिचड़ी अच्छी बनती है और यश बहू को मिलता है।
किसी कार्य के सुधरने का निमित्त तो कुछ और हो एवं यश किसी और को मिले।
रू० घी सुंवारै साग नै, नांव बहू को होय।

१३६६. घूंघटै सें सती नईं, मूंड मुंडायां जती नईं ।

घूंघट निकालने से ही कोई स्त्री सती नहीं बन जाती और सिर मुंडवाने से ही कोई यति नहीं बन जाता ।

१३६७. घूस चालती तो वाणियों धरमराज नै भी घूस दे देतो ।

यदि धर्मराज घूस स्वीकार करता तो बनियां उसको भी घूस देकर स्वयं को अमर बना लेता ।

रू० धरमराज घूस लेतो तो वाणियों वीं सें ईं कोनी टळतो ।

१३६८. घोकत विदया, खोदत पानी ।

रटने से विद्या आती है और खोदते रहने से पानी निकल आता है ।

रटने से कठिन विद्या भी कंठाग्र हो जाती है और जमीन को खोदते रहने से गहराई में भी पानी निकल आता है ।

रू० भखत विदया, पचत खेती ।

१३६९. घोघड़ कें घड़ मोटो, 'क लावो गिणूं न टोटो ।

नादान व्यक्ति जो कभी लाभ-हानि की चिंता नहीं करता, वह शरीर से मोटा हो जाता है ।

१३७०. घोड़ां दूभर भादुवो, भैंस्यां दूभर जेठ ।
मरदां दूभर पीसणो, नारी दूभर पेट ।।

घोड़ों के लिए भादों का और भैंसों के लिए जेठ का महीना कष्टदायी होता है । मर्दों के लिए चक्की चलाना दुखदायी होता है और नारी के लिए गर्भस्थ शिशु से बोझिल पेट असुविधाजनक होता है ।

रू० कांकर दोरी करहळां, थळ दोरी तुरियांह ।
गाडी दोरी गिखरां, लांबी नार नरांह ।।

१३७१. घोड़ी कठै बांधू ? 'क म्हारी जीभ कै ?

घोड़ी कहां बांधूं ? मेरी जीभ से ।

संदर्भ कथा—एक सेठ अपनी हवेली के चबूतरे पर बैठा था कि उधर से एक ठाकुर अपनी घोड़ी पर चढा हुआ निकला । प्रातःकाल का समय था और सेठ ने सामान्य तौर पर ठाकुर से राम-राम की । बस ! ठाकुर को तो बहाना मिल गया । उसने सेठ से पूछा कि सेठजी घोड़ी कहां बांधूं ? राह चलती आफत सेठ के गले पड़ गई । इसलिए सेठ ने व्यंग्य से कहा, घोड़ी को मेरी जीभ से बांधिये, क्योंकि इसने चुप रहने की बजाय आप के साथ राम-राम करने की गलती की ।

१३७२. घोड़ी कै सींग हा ।

घोड़ी के सींग थे ।

यथा अवसर बात को इस तरह मोड़ देना कि सहज ही पीछा छूट जाए ।

संदर्भ कथा— एक बनिये का लड़का अपने खेत की रखवाली कर रहा था कि एक चोर एक घोड़ी को चुरा कर लाया और उधर से गुजरा। पीछे-पीछे कोतवाल भी अपने सिपाहियों सहित वहाँ पहुँचा। उसने लड़के से पूछा कि क्या तुमने इधर से किसी को एक घोड़ी ले जाते हुये देखा है? लड़के ने कहा, देखा है। इस पर कोतवाल ने लड़के से कहा कि तुम हमारे साथ चलो और बताओ कि वह किधर गया है। लड़के ने सोचा कि यह तो बिना बात की आफत आ गई। इसलिये उसने टालने के लिये कोतवाल से कहा कि घोड़ी के बड़े-बड़े सींग हैं और वह आदमी उसके सींगों में रस्सी बांध कर उसे इसी तरफ ले गया है, आप इसी रास्ते से चले जाएँ। इस पर कोतवाल को विश्वास हो गया कि लड़के ने घोड़ी नहीं, बल्कि गाय देखी है और वह अपने सिपाहियों सहित आगे बढ़ गया।

१३७३. **घोड़ै री लात सैं घोड़ो कोनी मरै।**
घोड़े की लात से घोड़ा नहीं मरता।

१३७४. **घोड़ै कै नाळ जड़तां गधेड़ो भी पग उठावै।**
घोड़े को नाल जड़ी जाती हुई देख कर गधा भी अपना पैर उठाता है।
योग्य व्यक्ति का सन्मान होते देखकर अयोग्य व्यक्ति भी वैसा ही सम्मान पाने की आकांक्षा करता है।

१३७५ **घोड़ो खावो घोड़ै कै धणी नै।**
घोड़ा खाये घोड़े के मालिक को।
जिसकी समस्या हो, वही उससे निपटे।

१३७६ **घोड़ो घास सैं यारी करै तो खावै के?**
घोड़ा घास से यारी करने लगे तो खाये क्या?
रू० भैंस खळ सैं यारी करै तो के खावै?

१३७७. **घोड़ो चाये निकासी नैं, बावड़तो सो आये।**
दूल्हे की निकासी के लिए घोड़े की तत्काल आवश्यकता, और कहे कि फिर आना।

१३७८. **घोड़ो ठाण सिर बिकै।**
घोड़ा चाहे कितना ही अच्छा हो, यदि वह गरीब के घर बन्धा हो तो उसकी पूरी कीमत नही मिलती। लेकिन वही घोड़ा किसी समर्थ व्यक्ति के यहाँ बंधा हो तो मुँह माँगी कीमत मिलती है।

१३७९. **घोड़ो मरद मकोड़ो, पकड़्यां पीछै छोडै दौरो।**
घोड़ा, मर्द और मकोड़ा इनकी पकड़ जबरदस्त होती है पकड़ने के बाद ये कठिनाई से ही छोड़ते हैं।

१३८०. चंगा माढू घर रह्यां, तीनूं ओगण होय ।
कपड़ा फाटै रिण वधै, नांव न जाणै कोय ।।
तन्दुरुस्त और भला-चंगा आदमी यदि अकर्मण्य होकर घर बैठा रहे तो घर में दरिद्रता आती है, कर्ज बढ़ता है और वह कोई नाम नहीं कमा सकता ।

१३८१. चंदा तूं गिगनापति, किसो भलेरो देस ?
संपत होय तो घर भलो, नईं भलो परदेस ।
किसी ने चांद से पूछा कि तुम गगन के स्वामी हो और सब कुछ देखते हो, अतः यह बतलाओ कि संसार में कौनसा देश अच्छा है, जहाँ जाकर रहा जाए ? इस पर चाँद ने उत्तर दिया कि सब में परस्पर मेल हो तब तो घर अच्छा है अन्यथा विदेश में जाकर रहना ठीक है ।

१३८२. चंवरी सें उतारी, वींद कै मूंड मारी ।
विवाह वेदी से उतरने के बाद लड़की जाने और दूल्हा जाने ।

१३८३. चढज्या बेटा सूळी, भली करै करतार ।
बेटे सूली पर चढ़जा, भगवान् सब ठीक करेंगे ।
स्वयं अलग रह कर दूसरे को कष्ट उठाने के लिये उत्साहित करना ।

संदर्भ कथा—एक सेठ-सेठानी रात को अपनी हवेली में सो रहे थे । उनके कोई सन्तान नहीं थी । एक रात को घर की दीवार लांघकर एक चोर उनके घर में उतरा तो उन दोनों ने चोर को देख लिया । लेकिन उन्होंने उसे युक्ति से पकड़ने की तरकीब निकाली । सेठ ने सेठानी से कहा कि मुझे अभी स्वप्न में भगवान् दिखलाई पड़े हैं और वे हमें एक पुत्र दे गये हैं । उन दोनों को बोलते देखकर चोर एक खम्भे के पीछे छिप गया । लेकिन सेठ ने उसके पास जाकर सेठानी से कहा कि भगवान् ने हमें जो पुत्र दिया है, वह यही है । सेठानी ने भी बड़ी प्रसन्नता प्रकट की ।

सवेरा हुआ तो सेठ ने उसे नहला-धुलाकर अच्छे कपड़े व गहने पहनाये एवं उसे खिला पिलाकर अपनी दुकान पर ले गया । जिस किसी ने भी उसके बारे में पूछा, सेठ ने उसे अपना बेटा बतलाया । चोर मन ही मन खुश था कि अब उसके भाग्य खुल गये हैं । लेकिन सेठ ने छिपे तौर पर सारी घटना राजा को कहलवादी । राजा के सिपाही आये और चोर को पकड़ कर ले चले । सेठ भी उसकी तसल्ली के लिये साथ हो लिया । उस राज्य का नियम था कि जो कोई चोरी करे, उसे सूली पर चढ़ा दिया जाये । इसलिये राजा ने चोर को तत्काल सूली पर चढ़ा देने का हुक्म दे दिया । इस पर सेठ ने चोर-बेटे की पीठ थपथपाते हुये कहा—'चढ़ज्या बेटा सूळी, भली करै करतार ।"

रू० (१) चढज्या बेटा सूळी, मैं तेरै कन्नै ई' खड़्यो हूँ ।
(२) चढज्या बेटा सूळी, राम करै सो होय ।

१३८४ **चढतां चढतां ई' रायवी होवै ।**
चढने का अभ्यास करते-करते ही आदमी कुशल घुड़सवार बन पाता है ।

१३८५. **चढै सो पड़ै ।**
जो ऊंट-घोड़े आदि पर चढ़ेगा, वही गिरेगा । न चढ़ने वाला क्या गिरेगा ?
जो ऊंचा चढ़ेगा, वह नीचे भी गिरेगा ।
रू० चढ़सी जिकै नै गिरणां सरसी ।

१३८६. **चणा चाव कर आंगळी चाटणै में के सुआद है ?**
चने चबा कर उंगलियां चाटने में कौनसा स्वाद आता है ?

१३८७. **चणा चाव कहै, म्हे चावळ खाया ।**
नईं छान पर फूस, कहै हेली सें आया ।
चने चबा कर किसी तरह गुजारा करते हैं, लेकिन दूसरों से कहते है कि हम तो चावल खाते हैं । छप्पर पर फूस भी नहीं और कहते हैं कि हवेली से आ रहे हैं ।
झूठ-मूठ की शेखी बघारना ।

१३८८. **चणां है जठै जाड़ कोनी अर जाड़ है जठै चणा कोनी ।**
जहाँ चने हैं वहाँ दांत नहीं और जहाँ दांत हैं वहाँ चने नहीं ।
जहाँ सम्पत्ति है वहाँ उसे भोगने वाला नहीं और जहाँ भोगने वाला है, वहाँ सम्पत्ति नहीं ।

१३८९. **चणो अर चुगल जाड़ कै लाग्योड़ो बेगो कोनी छूटै ।**
भुना चना और चुगलखोर एक बार लग जाने के बाद जल्दी नहीं छूटता ।

१३९०. **चणो उछळ कर किसी भाड़ फोड़ देरै ?**
चना उछल कर भाड़ को नहीं फोड़ सकता ।
अकिंचन व्यक्ति नाराज होकर भी समर्थ का क्या बिगाड़ लेगा ?

१३९१. **चत्तर नै चौगुणी, मूरख नै सौ गुणी ।**
दूसरे के पास की सम्पत्ति चतुर को चार गुनी और मूर्ख को सौ गुनी दिखाई देती है ।

१३९२. **चमड़ी जा पण दमड़ी नई' जा ।**
चमड़ी भले ही चली जाये, लेकिन दमड़ी न जाने पाये ।
संदर्भ कथा—एक सेठ बड़ा कंजूस था । घरवाली की जिद के कारण एक बार वह गंगा स्नान के लिये गया, लेकिन भिखारियों के डर से मुर्दाघाट पर ठहरा । भगवान् ने उसके पन की परीक्षा लेनी चाही और वे एक दरिद्र

ब्राह्मण के रूप में उसके पास याचना के लिये आये। ब्राह्मण ने यजमान से बहुत कुछ कहा-सुना, लेकिन सेठ ना ही करता रहा। अन्त में बहुत दिक् करने पर सेठ ने उसे टालने के लिये कहा कि अभी तो मेरे पास कुछ भी नहीं है, कभी घर आओगे तो एक दमड़ी दे दूंगा। ब्राह्मण संतुष्ट होकर चला गया और सेठ अपने घर आ गया।

कुछ दिन बाद वही ब्राह्मण उक्त सेठ के घर पहुँच गया। सेठ ने उसे दूर से ही पहचान लिया और मृत होकर पड़ रहा। सेठ के आदेशानुसार सेठानी ने ब्राह्मण से कह दिया कि सेठ तो मर गया। ब्राह्मण ने कहा कि यह तो बुरा हुआ, लेकिन सेठ मेरा यजमान था, अतः मैं भी श्मशान तक तो साथ जाऊंगा ही। सेठ के सगे संबंधी उसकी अर्थी बना कर मरघट में ले गये। अर्थी चिता पर रख दी गई तो सेठ के बेटे ने अपने बाप के कान के पास मुंह लेजा कर कहा कि ब्राह्मण तो किसी प्रकार टलता नहीं, यहीं खड़ा है। सेठ ने कहा, उसे खड़ा रहने दो, तुम चिता में आग लगा दो। चिता में आग लगा दी गई तो ब्राह्मण वेशधारी भगवान् उसके पन को देख कर प्रसन्न हो गये और उसे चिता से बाहर निकाल कर उससे वरदान मांगने के लिये कहा। सेठ ने कहा कि यदि वरदान ही देना चाहते हो तो मेरी दमड़ी माफ कर दो।

१३९३. **चरतियां में पीतियां में, उछरतियां में सेंसें आगै।**

जो व्यक्ति खाने-पीने आदि के लाभप्रद मामलों में सबसे आगे रहे।

१३९४. **चल सुन्दर मंदर चलां, तो बिन चल्यो न जाय।**
माता देती आसका, वै दिन पूंच्या आय।

राजस्थान में माताएँ अपने बालकों को 'बूढो डोकरो हो' कह कर दीर्घायु होने का आशीर्वाद देती हैं। वृद्धावस्था प्राप्त होने पर ऐसा ही एक आदमी मां के आशीर्वाद को याद करके अपनी लाठी से कहता है कि हे सुन्दरि! अब तो तेरे सहारे बिना चला ही नहीं जाता, माता जो आशीर्वाद दिया करती थी, अब वे दिन आ पहुँचे हैं।

१३९५ **चलती में न चलावै जिको बावळो अर न चलती में चलावै जिको बावळो।**

चलती में जो न चलाये वह बावला और जहां पोल न चल सके, वहां जो पोल चलाने की चेष्टा करे वह भी बावला।

१३९६. **चांच दी है जिको चुग्गो भी देसी।**

जिसने चोंच दी है, वह चुग्गा भी देगा।

जिसने पैदा किया है, वह खाने को भी देगा।

सन्दर्भ कथा—एक साधु किसी के घर भिक्षाटन के लिये गया तो एक गर्भवती स्त्री उसे भिक्षा डालने के लिये द्वार पर आई। उसके स्तनों की

ओर देखकर साधु ने पूछा—माई ! तुम्हारे सीने पर इतने बड़े-बड़े फोड़े बने हैं, क्या ये तुम्हें पीड़ा नहीं पहुँचाते ? स्त्री ने उत्तर दिया कि मुझे बच्चा होने वाला है और भगवान् ने उसके लिये इनमें दूध पैदा कर दिया है, ये फोड़े नहीं हैं। उसकी बात सुनकर साधु को ज्ञान हो गया कि जो ईश्वर बच्चे के पैदा होने से पहले ही उसके लिये दूध का प्रबन्ध करता है, वही उसका भी प्रबन्ध करेगा और उसने उसी समय से भिक्षा मांगना छोड़ दिया।

१३९७. चांद आगै लूंकड़ी किती'क वार ल्हुकै ?
चांद के सामने लोमड़ी कितनी देर छिपी रह सकती है।
सबल के आगे निर्बल कब तक छिपा रह सकता है।

१३९८. चांद घैण कूकरां भारी।
चांद ग्रहण कुत्तों को भारी पड़ता है। ग्रहण के समय याचक भिक्षा के लिए घूमते हैं, जिन्हें देख-देख कर कुत्ते भौंकते हैं और उन्हें याचकों की मार भी खानी पड़ती है।

१३९९. चांद छोडै हिरणी तो लोग छोडै परणी।
अक्षय तृतीया को यदि चन्द्रमा मृगशिरा से पूर्व ही अस्त हो जाए तो भयंकर अकाल पड़े, जिससे लोगों को अपनी स्त्रियों को छोड़-छोडकर निर्वाह हेतु अन्यत्र जाना पड़े।

१४००. चांद सूरज कै कुंडळ होय, पांच पो'रं में बिरखा जोय।
निपट नजीक लाल रंग साजै, तो घड़ी पलक में मेवलो गाजै॥
सूर्य और चन्द्रमा के चारों ओर कुण्डल हो तो पांच पहर में वर्षा होगी। यदि यह लाल रंग का हो और अत्यन्त समीप हो तो बहुत जल्द ही वर्षा होगी।

१४०१. चांद सूरज कै भी काळो लागै।
सामान्य मनुष्य की तो बात ही क्या है, चांद सूरज को भी ग्रहण के रूप में कलंक लगता है।

१४०२. चांदी की मेख, खड़ी तमासा देख।
चांदी के बल पर हर काम बन जाता है।

१४०३. चांदी देख्यां चेतना, मुख देख्यां ब्योहार।
चांदी को आंखों से देखने पर चेतना आती है और किसी को आमने-सामने देखने पर ही उससे व्यवहार होता है।

जिन दिनों चांदी के रुपये प्रचलन में थे, तब दुकानदार प्रायः उपरोक्त कहावत को दोहराते हुये ग्राहक से कहा करता था कि 'न्योळी' से रुपये निकालो जिससे सौदा बन पाये, केवल बातें करने से सौदा नहीं पटता।

१४०४. **चाकरी घणी ग्राकरी ।**
नौकरी बड़ी कठिन ।

१४०५ **चाकी को पीस्यो खाणो, दांत को पीस्यो नईं खाणो ।**
चक्की का पिसा हुग्रा खाना चाहिये, दांत का पिसा हुग्रा नहीं ।
ऐसा काम नहीं करना चाहिये जिससे दुनिया तरह-तरह की बातें बनाये ।
रू० गांव कै दांतं नईं चढणो ।

१४०६. **चाकी मांय कर साबतो कोई कोनी निकळै ।**
चक्की के बीच से कोई साबित नहीं निकल पाता ।
धरती ग्रौर ग्राकाश रूपी दो पाटों के बीच कोई ग्रमर नहीं ।
दो पाटन के बीच में साबित बचा न कोय ।

१४०७. **चाकी मांय कर साबतो नीकळयावै ।**
ऐसा धूर्त ग्रौर चालाक ग्रादमी जो चक्की में से भी साबित निकल ग्राये ।
जो किसी तरह पकड़ में न ग्राये ।

१४०८. **चाकी में गाळो घाल्यां ईं ग्राटो हाथ ग्रावै ।**
चक्की के मुँह में ग्रन्न डालने से ही ग्राटा हाथ ग्रायेगा ।

१४०९. **चाखै तो चांदी, रगड़ै तो गोडा ।**
यहां कोई ग्रानी जानी नहीं ।

१४१०. **चारो चरै मींगणां करै, बींको बाणियों के करै ?**
बनिया ऐसी चीज को खरीद कर क्या करे, जिससे लाभ के स्थान पर हानि हो ।

संदर्भ कथा—एक बनिया थोड़ी सी पूंजी लगा कर ग्रपना कारोबार करता था । एक दिन कोई ग्रादमी उसके पास एक ऊंट लेकर ग्राया ग्रौर बोला, सेठजी ऊंट ले लीजिए । सेठ ने कहा हां भाई ! ले लेंगे, दुकान में डाल दो । ग्रागन्तुक ने जब यह कहा कि कहीं ऊंट भी दुकान में डाला जाता है, तो सेठ ने उत्तर दिया कि जो वस्तु दुकान में नहीं डाली जा सकती तथा जिसे चारा खिलाना पड़े एवं बदले में केवल मेंगने प्राप्त हों, ऐसी वस्तु को खरीद कर मैं क्या करूं ?

१४११ **चाल चटकै की, मौत पटकै की ।**
चाल में फुर्ती हो, मृत्यु चटपट हो यह नहीं कि दीर्घकाल तक खाट में पड़े सड़ते रहें ।

१४१२. **चालणी को पींदो, पूत मुई की छाती ।**
पुत्र की मृत्यु से मां का कलेजा चलनी के पेंदे की तरह छलनी हो जाता है ।

१४१३. **चालणी में दूध दूवै, करमां नै दोस देवै ।**
चलनी में दूध दूहे ग्रौर भाग्य को दोष दे ?

१४१४. **चालती को नांव गाडी है ।**

चलती का नाम गाड़ी है ।

१४१५. **चालतै चाक में सै माट-मटकण उतरज्या ।**

चलते चाक पर छोटे-बड़े सभी प्रकार के वर्तन तैयार हो सकते हैं, लेकिन उसके रुकने के बाद एक दीपक भी नहीं बन सकता ।

कारोबार चलता रहे तो गृहस्थी के छोटे बड़े खर्च उसी से निकलते रहते है ।

१४१६. **चालतै नैं चाल कोनी आवै, बोलतै नै बोली कोनी आवै ।**

नितान्त कमजोर व्यक्ति जो कुछ भी कर पाने में समर्थ न हो ।

१४१७ **चाल रै बळदिया तेरो धणी चलावै जियां चाल ।**

चल रे बैल, जैसे तेरा मालिक चलाये, वैसे ही चल ।

संदर्भ कथा—एक जाट अपनी जाटनी से नाराज हो गया और वह उसे पीटने का कोई न कोई बहाना ढूंढने की फिक्र में था । उसने अपने बैलों को जोता तो एक का मुँह उत्तर की ओर तथा दूसरे का दक्षिण की ओर कर दिया एवं उन्हे मार-मार कर चलाने का प्रयास करने लगा । लेकिन बेचारे बैल चलें तो कैसे चलें ? जाट यह सब जानबूझ कर कर रहा था । वह सोच रहा था कि जाटनी यह कहेगी कि इस प्रकार बैल क्योंकर चल सकते हैं तथा उसके इतना कहते ही उसे पीटने का बहाना मिल जाएगा । लेकिन जाटनी भी उसके मन की बात ताड़ गई । वह बोली–चलो रे बैलो, जैसे तम्हारा मालिक चलाये वैसे ही चलो । जाटनी की बात सुनकर जाट की योजना असफल हो गई ।

१४१८ **चाली परवा पून, मतीरी गळ-गळ गई**
मिरियां मिरियां घाल सगी धी, वा विरियां तो टळ गई ।।

संदर्भ कथा—एक बार अकाल पड़ा तो एक जाट अकाल का समय काटने के लिये अपने सगे (समधी) के यहाँ गया, क्योंकि उसकी तरफ जमाना अच्छा था । जाट अपने समधी के खेत पर पहुँचा तो उस वक्त उसकी सगी (समधिन) ही खेत पर थी । समधी को आया देखकर उसने सोचा कि यह अकाल का मारा आया है और यदि इसे ठहरा लिया तो फिर यह टलने का नाम नहीं लेगा । इसलिये उसने सगे की बात भी नहीं पूछी । उस वक्त परवा हवा चल रही थी जिससे खेत में लगी मतीरियां गली जा रही थीं, लेकिन सगी ने उसे एक गलती हुई मतीरी भी खाने के लिए नहीं दी । वह बेचारा अपना सा मुँह लेकर चला गया ।

अगले वर्ष उस जाट के यहां भी अच्छा जमाना हुआ । इस बार वह सगे के घर गया तो सगी ने सोचा कि इस बार सगे के यहां भी बहुत अच्छी

फसल है और वह एक दो दिन से ज्यादा नहीं रुकेगा। इसलिये मगी ने उसकी बड़ी आवभगत की और उसकी मनुहार करती हुई खिचड़ी में खूब घी डालने लगी। इस पर जाट ने कहा कि उस वक्त तो तुमने एक पिलती हुई मतीरी भी खाने को नहीं दी थी, अब चाहे जितना घी डालो, वह बात वापिस आने की नहीं।

१४१६. चालै है तो चाल निगोड्या, मैं तो गंगा न्हाऊंगी।

कलहारी औरत अपने पति से कहती है कि तुझे चलना है तो तू भी चल, अन्यथा मैं तो गंगा स्नान के लिये अवश्य जाऊंगी, चाहे कुछ भी हो जाए।

भरपूर नुकसान उठाकर भी अपने मन की बात को पूरी करना।

पद्य—चाकी फोड़ूं चूलो फोड़ूं, घर कै आग लगाऊंगी।
चालै है तो चाल निगोड्या, मैं तो गंगा न्हाऊंगी॥

१४२० चावळ मिलता ल्हास में, होळी दिवाळी तेल।
गीहूं रांड गरमी करै, देख दई का खेल॥

जिस आदमी को कभी 'ल्हास' के समय ही गुड़ के चावल नसीब होते थे और होली दिवाली पर ही तेल के दर्शन होते थे, स्थिति परिवर्तन के साथ वही आदमी अब कहता है कि मुझे गेहूं भी अब गर्मी करते हैं, भाग्य का खेल विचित्र है।

ल्हास = खेत पर सामूहिक रूप से दिन भर काम करने वालों को सामान्यतया गुड़ के भात बना कर खिला देते थे। यह सामूहिक काम बारी के अनुसार परस्पर एक दूसरे के खेत पर किया जाता था जिसे ल्हास करना कहते थे।

रू० ल्हासां मिलतो खीचड़ो, होळी दिवाळी तेल।
गीहूंड़ा गरमी करै, देख दई का खेल॥

१४२१. चावळां की भगर वयां जोगी कोनी होवै।

चावलों की भगर का कोई उपयोग नहीं।

अभाव की स्थिति पैदा होने पर अमीर का लड़का शारीरिक श्रम करके अपना पेट भरने में भी असमर्थ रहता है।

१४२२. चावळां को खाणो, फळसै ताईं जाणो।

चावल हल्का-फुल्का खाद्य है, उसे खाकर दूर की पैदल यात्रा नहीं की जा सकती।

रू० (१) दाळ-भात को खाणो, फळसै ताईं जाणो।
(२) रोटी कहे मंजिल पहुँचाऊं, बाटी कहे फेर ले आऊं।
चावळ कहे मेरा हळका खाणा, मेरै भरोसै कहीं न जाणा।

१४२३. चिडपड़ै सुहाग सैं तो रंडापो ई चोखो।

अकर्मण्य और नामर्द पति की अपेक्षा तो वैधव्य ही अच्छा।

१४२४. **चिड़ियां जे माळो करै, कोठां कमरां मांय ।**
विरखा आयां आगमच, तो च्यार मास बरसाय ।।
वर्षा ऋतु के आगमन से पूर्व यदि चिड़ियें अपने घोंसले घर के कमरों में बनाने लगें तो जानो कि चौमासे के चारों महीने बरसतें निकलेंगे ।

१४२५. **चिड़ी चिड़ै की लड़ाई, चाल चिड़ा में आई ।**
पति-पत्नी का क्या रूठना ? जरा सी बात पर रूठ जाते हैं और जरा देर बाद मन जाते हैं ।

१४२६. **चिड़ी ज न्हावै धूळ में, मेहा आवण हार ।**
जळ में न्हावै चिड़कली, मेह विदा तिण वार ।।
चिड़ियों का धूल में नहाना वर्षा के आगमन का सूचन करता है और उनका जल में नहाना, मेह के विदा होने का ।

१४२७. **चित भी मेरी, पुट भी मेरी ।**
दोनों तरफ हाथ मारना ।

१४२८. **चित्रा दीपक चेतवे, स्वाते गोवरधन्न ।**
डंक कहै हे भडुळी, अथक नीपजै अन्न ।।
यदि दिवाली चित्रा नक्षत्र में और गोवर्द्धन स्वाति नक्षत्र में हो तो डंक भड्डली से कहता है कि फसल भरपूर होगी ।

१४२९. **चिमतकार नै निमसकार है ।**
चमत्कार को नमस्कार है ।
जो चमत्कार दिखलाता है, दुनिया उसे नवती है ।

१४३०. **चिरमिराट मिटज्या गिरगिराट कोनी मिटै ।**
मार की चरपराहट तो मिट जाती है, लेकिन 'गिरगिराट' (ऊहापोह) नहीं मिटता ।

संदर्भ कथा— एक ठाकुर अपने घोड़े पर चढ़ा जा रहा था । प्रात-काल का समय था, जाड़े की ऋतु थी और ठंड खूब पड़ रही थी । ठाकुर अपने शरीर पर एक उम्दा कम्बल लपेटे था । राह में एक डोम मिला जो जाड़े के मारे ठिठुर रहा था । उसने नमस्कार करके ठाकुर से कम्बल मांगी तो उसकी स्थिति पर तरस खाकर ठाकुर ने कम्बल उसे दे दी और स्वयं आगे बढ़ गया ।

उधर डोम के मन में यह बात आई कि ठाकुर ने मांगते ही इतनी बढ़िया कम्बल मुझे दे दी, यदि मैं उससे उसका घोड़ा मांगता तो शायद वह घोड़ा भी दे देता । इसी ऊहापोह में वह ठाकुर के घोड़े के पीछे-पीछे दौड़ चला और उसने ठाकुर के पास जाकर घोड़े की मांग कर डाली । डोम की बात सुनकर ठाकुर को बड़ा गुस्सा आया और उसने तीन-चार कोड़े डोम

के लगा दिये। अब डोम का संशय मिट गया और उसने ठाकुर से कहा -ठाकरां ! कोड़े की मार वाली यह चरपराहट तो मिट जायेगी, लेकिन मन की गिरगिराहट कभी न मिटती। यदि मैं आपसे घोड़ा न मांगता तो मेरे मन में सदैव यह बात खटकती रहती कि घोड़ा न मांग कर मैंने बड़ी भूल की, क्या पता ठाकुर घोड़ा दे ही देता।

१४३१. **चीकणी चोटी का सैं लगवाळ।**
पैसे वाले से सभी कुछ न कुछ ऐंठने की ताक में रहते हैं।

१४३२. **चीकणै घड़ै कै छांट न लागै, जै लागै तो चीटो।**
पापी कै परमोद न लागै, पैजारां सैं पीटो॥
चिकने घड़े पर पानी नहीं ठहरता। हां, उस पर 'चीटा' (तेल या घी का किट्ट) अवश्य चिपक जाता है। इसी प्रकार पापी पर प्रबोधन का असर नहीं होता, वह तो जूतों से पीटने पर ही मानता है।

१४३३. **चुगल कोनी चूकै, और सै चूकज्या।**
और सब चूक सकते हैं, लेकिन चुगलखोर चुगली खाने से कभी नहीं चूकता।

१४३४. **चुगलखोर चुगली करै, जड़ामूळ सैं जाय।**
दूसरों की चुगली करने से स्वयं चुगलखोर का ही विनाश हो जाता है।

१४३५. **चुस्सी धन कै जोर पर कूदै।**
चुहिया धन के बल पर कूदती है।

सन्दर्भ कथा—एक बार कोई साधु किसी मठधारी साधु के यहाँ गया। रात को दोनों साधु परस्पर बात-चीत करने लगे। लेकिन मठधारी साधु का ध्यान दूसरी तरफ लगा हुआ था। एक चुहिया छीके पर टंगी हुई भोज्य-सामग्री की तरफ बार-बार कूदती थी और मठ वाला साधु एक फटे बांस को जमीन पर मार कर उसे हर बार भगाता था। आगन्तुक साधु ने जब उससे पूछा कि तुम मेरी बात को ध्यान से क्यों नहीं सुनते, तो मठ वाले साधु ने सारी स्थिति उसे बतला दी। इस पर उसने कहा कि अवश्य ही इस चुहिया के बिल में धन है और यह उसी के बल पर कूदती है। उसके कहने पर मठ वाले साधु ने चुहिया के बिल को खोदा तो सचमुच ही वहाँ कुछ द्रव्य मिला। इस पर आगन्तुक साधु ने मठ वाले साधु से कहा कि अब तुम निश्चित होकर सो जाओ, अब यह चुहिया छीके तक नहीं कूद सकती। थोड़ी देर बाद चुहिया आई, वह कूदी, लेकिन उसकी पहोंच अब छीके से आधी भी नहीं रह गई थी।

१४३६ **चुस्सै कै बिल में ऊंट कद मावै ?**
चूहे के बिल में ऊंट कब समाये ?
छोटा आदमी बड़ी चोरी को नहीं पचा सकता।

१४३७. चूस्सै नैं पा'गी हळदी की गांठ अर पसारी बण बैठ्यो ।
चूहे को हल्दी की गांठ मिल गई तो वह पंसारी बन बैठा ।
रू० सूंठ को गांठियो लेकर पसारी बण बैठ्यो ।

१४३८. चूंटी चून, घड़ा दस पाणी का ।
व्यर्थ का प्रदर्शन ।

१४३९. चूड़ै आळी नैं घर-घर सुहाग ।
चूड़े वाली को घर-घर सोहाग ।

१४४०. चूड़ै में चूड़ी खटाज्या ।
चूड़े मे चूड़ी खटा सकती है ।
व्यभिचारिणी स्त्री का पति जीवित हो तो उसका व्यभिचार छिप जाता है । पति की जीवित अवस्था में वह दूसरे के गर्भ को भी पति का गर्भ बतला कर बच सकती है, लेकिन पति के न होने पर वैसा नहीं कर सकती ।
रू० चूड़ै में बंगड़ी खटाज्या, खाली बंगड़ी टंट फोड़ गेरै ।

१४४१. चूड़ो भळकै, पेट कळपै ।
सोहागिन तो है, लेकिन पुत्रवती नहीं ।

१४४२ चूतियां को माल मसखरा खावै ।

१४४३. चूनड़ ओढै गांठ की, नांव पी'र को होय ।
वहू भले ही अपने पैसे से तैयार करवाकर चुंदरी ओढे, लेकिन नाम पीहर वालों का ही होता है ।

१४४४. चूनै में भाठो, घी में लाठो ।

१४४५. चूल्है पर ली तेरी, तवै परली मेरी ।
चूल्हे वाली तेरी, तवे ऊपर की मेरी ।
अत्यंत अभाव की स्थिति ।

१४४६. चेजो चला कर देखो, ब्या मांड कर देखो ।
खर्चीले होने के अतिरिक्त दोनों ही कामों में विविध प्रकार की सामग्री एवं साधन जुटाने होते हैं, अनेक प्रकार की प्रक्रियायें निभानी पड़ती है तथा दोनों ही काम कठिनता से निपटने में आते हैं ।

१४४७. चैत चिड़पड़ो तो सावण निरमळो ।
चैत्र मास में बूंदा-बांदी होती रहे तो सावन में आकाश निर्मल (बिना बादलों के) रहे, अर्थात् वर्षा न हो ।
रू० (१) चैत में पाणी तो सावण में धूळ उडाणी ।
(२) चैत चिरपड़ो माघजी, फळै नहीं वणराय ।
माय बिसारै डीकरा, वच्छ बिसारै गाय ।।

१४४८. चैत मास में बीज ल्हुकोवै, वैसाखां में केसू धोवै।
जेठ मास जै जाय तपंता, तो कुण रोकै जळ बरसंता॥
चैत मास में बिजली न चमके, वैशाख में कुछ वर्षा हो और जेठ मास खूब तपे तो फिर वर्षा को कौन रोक सकता है? अर्थात् भरपूर वर्षा हो।

१४४९. चैतै गुड़ वैसाखै तेल, जेठै पंथ अषाढै बेल।
सावण साग भादवो दही, क्वार करेला काती मही।
अगहन जीरा पूसै धाणा, माहे मिसरी फागण चिणा॥
चैत में गुड़, वैशाख में तेल, जेठ में पैदल यात्रा, आषाढ़ में बेल-फल, सावन में हरे शाक, भादों में दही, आसोज में करेला, कातिक में छाछ, मार्गशीर्ष में जीरा, पौष में धनिया, माघ में मिसरी और फाल्गुन में चना वर्जित है।

१४५० चोखो दिन आवै जद उगाई आवै, म्याऊ दिन आवै जद डूबत आवै।
अच्छा दिन आता है तो मनुष्य की डूबी हुई उगाही भी आ जाती है और बुरा दिन आने पर रकम डूब जाती है।

१४५१. चोट्टू को हिमायती हारै।
पोचे आदमी की हिमायत करने वाले को भी नीचा देखना पड़ता है।

१४५२ चोट्टू जात मजूर की, मत करिये करतार।
दांतण करै न हर भजै, करै ढँवार-ढँवार॥

१४५३. चौधरी गंगा न्हायो के? 'क खोदी कुण हो?
जब किसी काम के कर्त्ता से ही पूछा जाए कि उसे उस काम की कोई जानकारी है क्या?
रू० चौधरी पोकर न्हायो के? 'क खोदयो कुण हो?

१४५४ चोपड़ी अर दो दो!
चुपड़ी और दो दो?

१४५५ चोब जितरी सोभ।
व्यय के अनुरूप ही शोभा।

१४५६. चोर कनै बागळी ई कोनी।
चोर के पास 'बागळी' भी नहीं।
ऐसा अभावग्रस्त या नौसिखिया चोर जिसके पास 'बागळी' भी नहीं।
बागळी = वह थैली जिसमें वस्तु डाल कर बगल में छिपाई जा सके।

१४५७. चोर की मा घड़ै में मूँडो देकर रोवै।
चोर की माँ घड़े में मुँह डाल कर रोती है जिससे भेद न खुले।
चोर नारि जिमि प्रगटि न रोई।

१४५८. चोर कै पग कोनी होवै।
चोर के पाँव नहीं होते। जरासी आहट पाते ही वह भाग छूटता है।

१४५९. **चोर-चोर मौसेरा भाई।**

चोर-चोर मौसेरे भाई।

१४६०. **चोर चोरी करै पण घर में बोलै साच।**

चोर चोरी करता है लेकिन घर वालों को सच-सच बतला देता है कि कितनी चोरी की है।

१४६१. **चोर चोरी सें गयो पण हेरा-फेरी सें तो कोनी गयो।**

चोर ने चोरी करनी छोड़ दी तो क्या हेरा-फेरी से भी गया?

संदर्भ कथा—एक चोर किसी साधु के उपदेश से चोरी करना छोड़ कर उसका शिष्य बन गया। साधु के और भी बहुत से शिष्य थे। नया शिष्य रात को उनकी तूंबियां और लंगोटियां इधर-उधर कर दिया करता। एक की तूंबी दूसरे के पास और दूसरे की लंगोटी तीसरे के पास। तब उन सबने मिल कर गुरु से इसकी शिकायत की। गुरु ने नये शिष्य को बुला कर पूछा तो उसने अपना अपराध स्वीकार करते हुए गुरु से कहा कि बाबाजी! चोर चोरी से गया तो क्या हेरा फेरी से भी गया?

१४६२. **चोर नैं कवै लाग, साहूकार नैं कवै जाग।**

चोर से कहता है चोरी कर और साहूकार को सावधान करता है कि जगता रह।

दोनों ओर भाठे भिड़ाने वाला व्यक्ति।

१४६३. **चोर नै के मारै, चोर की मा नै ई मारै।**

चोर को मारने की अपेक्षा चोर की मां को मारना उचित है, जिससे चोर का जन्म ही न हो।

समस्या का सही हल ढूंढना अपेक्षित है।

१४६४. **चोर नैं च्यानणो कद सुहावै?**

चोर को चांदना कब सुहाये?

१४६५. **चोर पेई लेग्यो तो के होयो, चाबी तो मेरै कन्नै ईं है।**

चोर संदूक चुरा कर ले गया तो क्या हुआ? उसकी चाबी तो मेरे पास ही है।

सन्दर्भ कथा—एक बुढिया ने अपनी सारी पूंजी एक पेटी में रख कर उसे ताला लगा दिया और चाबी अपने पास सम्हाल कर रखने लगी। एक रात को एक चोर उसकी पेटी चुरा ले गया। सवेरे जगने पर उसे चोरी की बात मालूम हुई तो वह बड़े इतमीनान से बोली कि पेटी ले गया तो क्या हुआ, उसकी चाबी तो मेरे ही पास है।

१४६६. **चोरां कुतिया रळ गई, पैरा किसका देय?**

जब कुतिया चोरों के साथ मिल गई तो पहरा क्या दे?

१४६७ **चारी को धन मोरी में जा ।**
चोरी का धन व्यर्थ जाता है ।
रू० चोर को माल चिडाळ खावै ।

१४६८ **चोरां कै चौबारा कोनी होवै ।**
चोरों के चौबारे नहीं बनते ।
रू० (१) चोरां कै टोडा कोनी झुकै ।
(२) चोरां कै धन होवै तो सगळा ई चोरी करण नै लाग ज्यावै ।

१४६९ **चोरां कै भी चोर लागज्या ।**
कभी कभी चोरों के भी चोर लग जाते हैं ।

१४७०. **चोड़ा कुंडळ तारा माहीं, वाय बजावै विरखा नाहीं ।**
जे बरसै तो झड़ी लगावै, सोता नाग पताळ जगावै ।।
चन्द्रमा के चारों ओर बड़ा कुण्डल हो, उसके बीच में तारे दिखलाई पड़ें और वायु जोरों से चले तो वर्षा न हो, लेकिन कदाचित् वर्षा हो तो फिर झड़ी ही लग जाए ।

१४७१. **चौमासै को गोबर लीपणै को न थापणै को ।**
चौमासे का गोबर न लीपने के काम आता है और न थापने के ।
निकृष्ट व्यक्ति किसी काम नहीं आता ।
रू० बिल्ली को गू लीपणै को न पोतणै को ।

१४७२ **चौमासो तीनां बुरो, छेळी ऊंट रबाब ।**
चौमासा बकरी, ऊंट और रबाब (एक वाद्य) तीनों के लिए बुरा होता है ।

१४७३. **च्यानणी रात करम में लिखी होती तो रातीनो ईं क्यूं होवतो ?**
यदि भाग्य में चांदनी रात का सुख भोगना बदा होता तो रतौंधी क्यों होती ?

१४७४. **च्यार डांगां चौधरी, पांच डांगां पंच ।**
जींकै घर में छः डांग, वो पंच गिणै न ढंच ।।
जिसके घर में चार लठैत हों वह चौधरी, पांच लठैत हों वह पंच एवं जिसके घर में छह लठैत हों तो वह किसी पंच-पंचायती की परवाह ही नहीं करता ।
आज जिसके घर में शक्ति संपन्न लोगों की बहुलता है, समाज में उसी का सिक्का जम जाता है ।

१४७५. **च्यार थंभ है बरस का, जाणै जाणनहार ।**
अै च्यारूं हो जाय तो, होवै जय जय कार ।।
वर्ष के चार स्तम्भ माने गये हैं । जिस वर्ष ये चारों ही आ जाते हैं तो प्रजा में सुख चैन रहता है ।
चैत्र शु० प्रतिपदा को रेवती नक्षत्र होना जल का स्तम्भ माना जाता है । ऐसा योग बने तो वर्षा भरपूर हो । वैशाख शु० प्रतिपदा को भरणी नक्षत्र

हो तो यह त्रण स्तम्भ कहा जाता है, इसके फल-स्वरूप घास खूब हो। जेठ शु० प्रतिपदा को मृगशिरा नक्षत्र वायु स्तम्भ और आषाढ शु० प्रतिपदा को पुनर्वसु नक्षत्र का होना अन्न का स्तम्भ माना जाता है जिससे अन्न खूब होता है।

१४७६. **च्यार दिनां की च्यानणो, फेर अंधेरी रात।**

सुख-ऐश्वर्य अस्थायी हैं।

१४७७. **च्यारुं धार दुहारे में पड़े, जद भरतां के वार लागे ?**

जब चारों धार एक साथ दुहारे में गिरें तो उसे भरते क्या देर लगे ? जब चारों ओर से आमदनी हो तो सम्पन्नता आते देर नहीं लगती।

१४७८. **छछियारी नै छछियारी कोनी सुहावै।**

एक छछियारी (दूसरों के घर से छाछ मांग कर लाने वाली) को दूसरी छछियारी नहीं सुहाती, क्योंकि वह सोचती है कि दूसरी छछियारी उसका हिस्सा बटा लेगी।

१४७९. **छठ उजाळी पोस की जे बिरखा हो जाय।**
सावण महीना मांय नै, अवसै बिरखा होय॥

पौष शु० ६ को यदि वर्षा हो जाए तो आगामी सावन में अवश्य वर्षा हो।

१४८०. **छदाम की छाजली, छै टका गंठाई का।**

छदाम की छाजली छोटा छाज) और छः टके उसकी गठाई पर खर्च किये जाएँ !

१४८१. **छह ग्रह एक रास पर आवै।**
महाकाळ नै न्ंत र लावै॥

एक राशि पर छः ग्रह एकत्र हों तो घोर दुर्भिक्ष पड़े अथवा महा विनाश हो।

१४८२. **छत्री मार निछत्री कीधो, सूई ले ओलो ले लीधो।**

कहा जाता है कि जब परशुरामजी ने क्षत्रियों का विनाश किया तब कुछ क्षत्रियों ने सुई लेकर अर्थात् दर्जी का पेशा अख्तियार करके अपने प्राणों की रक्षा की।

१४८३ **छा अर बेटी मांगणै में लंजण कोनी।**

छाछ और बेटी मांगने में कोई सामाजिक लांछन नहीं।
बेटी मांगने से तात्पर्य लड़के वाले की ओर से अपने लड़के के विवाह संबंध के लिए लड़की वाले से उसकी बेटी मांगना है।
अब तो दहेज प्रथा की प्रबलता के कारण लड़की वाले को ही लड़के की तलाश में भटकना पड़ता है और उसके निहोरे खाने पड़ते है, लेकिन पहले जब बेटे वाले को किसी की बेटी जँच जाती थी तो वह स्वयं अपने बेटे के लिये उसकी मांग कर लेता था।

१४८४. **छाछ घालतां छाती फा'टै, दूध घालणो दोरो ।**
रोटी घालतां रोज आवै, बात बणाणो सोरो ।।
अतिथि को खिलाना-पिलाना तो दूभर, केवल बातें बनाना आसान ।

१४८५. **छाछ छांवळी छोकरा अर छन्दगाळी नार ।**
च्यारूं छ छ्छा जद मिलै, जद तूठै करतार ।।
समुचित छायादार आवास, घर में 'धीना', पुत्रों की औलाद एवं नखराली पत्नी ये चारों भगवत् कृपा से ही प्राप्त हो सकते हैं ।

१४८६. **छा छाळी, भैंस बुढाळी ।**
छाछ बकरी की अच्छी, भैंस प्रौढा अच्छी, क्योंकि उसके घी ज्यादा होता है।
रू० छा छाळी की, घी भैंस को अर दूध गाय को ।

१४८७. **छा छीतरी, छोरी ईतरी ।**
अधिक पानी मिली हुई छाछ और इतराई हुई बेटी अच्छी नहीं होती ।

१४८८. **छाज तो बोलै जिको बोलै, चालणी रांड के बोलै जिकी में ठोतर सै बेज ।**
छाज (सूप) तो बोले सो बोले, लेकिन चलनी क्या बोले जिसमें १०८ (अनगिनत) छिद्र हैं ।
सदाचारी और ईमानदार व्यक्ति तो दूसरों से कुछ कहे तो ठीक है, लेकिन जो स्वयं कदाचारी और भ्रष्टाचारी हो उसे दूसरों से कुछ कहने का क्या हक है ?

१४८९. **छाजैजी का छाज करै, राजैजी का राज करै ।**
प्राय: छाज बनाने वाले राजाओं के साथ अपने परिवारिक सम्बन्ध जोड़ते हुये कहा करते हैं कि एक बाप के दो बेटे थे—छाजा और राजा, सो छाजा के वंशज तो हम छाज बनाते हैं और राजा के वंशज राज करते हैं ।

१४९०. **छाटी गेरयां पीछै क्यांकी जगात ?**
जब छाटी ही डाल दी तब फिर जकात काहे की ?
जब सारा माल ही सौंप दिया तब जकात किस चीज की ?
छाटी = अनाज भरने का बड़ा और मजबूत बोरा जिसे प्राय: बकरी के बालों या जट से तैयार करते थे ।

१४९१ **छाती पर बेरियो पड़्यो, 'क कोई मुंह में गेरदे तो खाल्यूं ।**
आलसी आदमी अपनी छाती पर पड़े बेर को भी उठाकर मुंह में डालने का श्रम नहीं करना चाहता ।

संदर्भ कथा—दो आलसी आदमी एक झड़बेरी के नीचे सोये हुये थे । एक की छाती पर एक पका हुआ बेर आकर गिरा, लेकिन आलस्य के कारण उसने बेर को मुंह में नहीं डाला । कुछ देर बाद उधर से एक घुड़सवार निकला तो उसने घुड़सवार से कहा कि भाई ! मेरी छाती पर जो बेर पड़ा

है उसे मेरे मुंह में तो डाल दो। घुड़सवार ने उसे झिड़कते हुये कहा कि तुम बड़े आलसी हो जो अपनी छाती पर पड़े बेर को भी उठा कर अपने मुंह में नहीं डाल सकते। तब पास लेटे हुये दूसरे आलसी ने उसकी बात का समर्थन करते हुये कहा कि हां भाई! यह बड़ा ही आलसी है। रात भर एक कुत्ता मेरे मुंह को चाटता रहा और इसने कुत्ते को दुत्कारा भी नहीं।

१४६२. छानी बुलाई, ऊंट चढी आई।

कहा तो था छुप कर आने के लिये और आई ऊंट पर चढ़ कर।

जिस काम को छिपा कर करने को कहा था, उसका भरपूर प्रदर्शन कर डाला।

१४६३. छायां छायां आई, छायां छायां जाई।

छाया में ही आना और छाया होने पर ही जाना।

संदर्भ कथा—एक सेठ मरते समय अपने बेटे को यह शिक्षा दे गया कि बेटा! दुकान पर छाया-छाया जाना और छाया-छाया ही आना। पिता की आज्ञा का पालन करने की दृष्टि से पुत्र ने घर से लगाकर दुकान तक का पूरा रास्ता चांदनियों से छवा दिया जिससे दिन भर पूरे रास्ते में छाया ही बनी रहती। लड़का दोपहर तक घर में पड़ा रहता और कुछ देर के लिये दुकान पर जाकर पुनः घर लौट आता। दुकान का काम न सम्भालने से दुकान में घाटा होने लगा। इसका कारण पूछने पर बूढ़े मुनीम ने कहा कि आपके पिता ने आपको जो सीख दी थी, उसका सही आशय आपने नहीं समझा। उनके कहने का तात्पर्य यह था कि छाया रहते-रहते अर्थात् धूप होने से पहले दुकान पर जाना और पुनः छाया होने पर सूर्यास्त होने पर। घर लौटना। लड़के की समझ में बात आ गई और वह वैसा ही करने लगा, जिससे उसका कारोबार फिर चमक उठा।

१४६४. छा रोटी रायतो, कहो बहू न खाय तो।

घर में तो छाछ-रोटी ही है, बहू को भूख लगे तो खाले।

घर की स्थिति के अनुकूल ही अपने को ढालना होता है।

संदर्भ कथा—किसी धनी आदमी की लड़की सयोग से किसी गरीब घर में व्याही गई। घर में इस कदर तंगी थी कि शाक-दाल भी नहीं बन पाता था। घर के लोग या तो छाछ के साथ रोटी खाते थे अथवा छाछ में नमक-मिर्च डाल कर रायता बना लिया जाता था। बहू ने अपने बाप के घर में कभी ऐसा खाना नहीं खाया था, अतः वह या तो भूखी रह जाती थी अथवा कभी मन मार कर एक-आधी रोटी खा लेती थी। एक बार बहू ने तीन-

दिनों तक रोटी नहीं खाई और बैठी-बैठी बार-बार इसी बात को दोहरा रही थी —छा रोटी रायतो, छा रोटी रायतो। उसके श्वसुर ने यह बात सुन ली तो उसने उसे सुना कर कहा कि हां बहू, यहां तो छाछ रोटी और रायता ही मिलेगा, खाना हो तो खालो। निदान बहू ने सोच लिया कि अब तो जिन्दगी भर यहीं रहना है, अत. जो कुछ मिलता है, वही खाना पड़ेगा।

१४६५. छिण छाया छिण तावड़ो, विरखा रुत कै मांय।
इण लखणां सें जाणज्यो, विरखा गई विलाय॥
वर्षा ऋतु में छन में धूप निकले और छन मे छाया हो तो जानो कि वर्षा चली गई।

१४६६. छींकत खाये छींकत पीये, छींकत रहिये सोय।
छींकत पर घर कदे न जाये, आछी नाहीं होय।
खाते, पीते, और सोते समय की छींक तो अच्छी होती है, लेकिन, दूसरे के घर प्रस्थान करते समय की छींक अहितकारी मानी जाती है।

१४६७. छींकतां ई किसा नाक कटै ?
किसी के छींक देने पर उसकी नाक थोड़े ही काट ली जाती है ?

१४६८. छींकतां ई नाक कटै।
अति सामान्य बात के लिये भी दण्डित किया जाता है।

१४६९. छींट अर छिनाळ दूर सें घणी फूठरी लागै।
छींट और छिनाल औरत दूर से ज्यादा आकर्षक लगती है।

१५००. छींट की भांत अर ऊत की जात को नमेड़ कोनी।
जैसे छींट की भांत अनेक प्रकार की होती है, वैसे ही बेवकूफ भी तरह-तरह के होते हैं।

१५०१. छेळी खटीक नै धोजै।
बकरी खटीक को ही पतियाती है, भले ही वह उसकी खाल निकाल ले।

१५०२. छेळी दूध तो देवै, पण देवै मींगणी करकै।
बकरी दूध तो देती है, लेकिन देती है मेंगनी करके।
वह आदमी जो देता तो है, लेकिन देता है परेशान करके।
रू० बकरी दूध तो देवै, पण देवै मींगणी रळा कर।

१५०३. छोटी मोटी कामणी सगळी विष की वेल।
छोटी हो या बड़ी, सभी कामिनियां विष की वेल है अथवा विषय-वासना की ओर ले जाने वाली है।

१५०४. छोटो जितोई खोटो।
जितना छोटा, उतना ही खोटा।

१५०५. छोडा छोलरण बूंट उपाड़रण, थपथपिया अर नाई ।
इतरा चेला मत कर गरुजी, कुवद करैंगा काई ।।
गुरु को चाहिए कि वह इन चारों को शिष्य न बनाये क्योंकि ये कोई न कोई आफत उत्पन्न कर देंगे ।

१५०६ छोडो ईस, बैठो बीस ।
चारपाई की ईस (लम्बी भुजाएँ) छोड़कर भले ही उस पर बीस आदमी बैठ जाएँ, वह टूटती नही ।

१५०७. छोरा तेरी मा खसम करचो, 'क भोत बुरो करचो ।
'क अब तो छोड़ दियो, 'क यो और भी बुरो करचो ।।
किसी ने कहा कि लड़के, तेरी (विधवा) माँ ने खसम कर लिया । लड़के ने उत्तर दिया कि यह तो बहुत बुरा किया । उसने फिर कहा कि अब तो उसने उसे छोड़ दिया है । इस पर लड़का बोला कि यह तो और भी बुरा किया ।

१५०८. छोरा तेरी मा तो डाकरण, 'क तनै के बेरो ?
'क म्हारली मा नैं मुसारगां में मिली ही ।
'क थारली मा रांड भली ही तो वा वठै क्यूं गई ही ?
एक लड़के ने दूसरे लड़के से कहा कि तुम्हारी माँ तो डाकिन है । दूसरे ने पूछा कि तुम्हें कैसे पता चला ? पहले ने जवाब दिया कि वह मेरी माँ को गत रात मरघट मे मिली थी । इस पर दूसरे ने कहा कि यदि तुम्हारी माँ भली है तो वह वहाँ क्यों गई थी ?

१५०९. छोरा तेरी सगाई देखरण नै जावां हां.
'क बापू बीनरगी नैं सागै ई ले आयो ।
बाप ने बेटे से कहा कि तेरी सगाई के लिये कोई लड़की देखने जा रहा हूँ । इस पर लड़के ने उत्तर दिया कि वहू को साथ ही लिवा लाना ।
किसी वस्तु की प्राप्ति के लिये हास्यास्पद ढंग से व्यर्थ की उतावली प्रकट करना ।

१५१०. छोरा तेरो पेट कंयां टूटगो ? 'क माटी खाऊं हूं नी ।
छोकरे ! तेरा पेट क्योंकर टूट गया ? लड़के का उत्तर था—मिट्टी जो खाता हूँ ।
जब आदमी को यह पता हो कि अमुक काम को करने से हानि होती है और फिर भी वह उस काम को करे ।

१५११. छोरा तेरो पेट बांको,
'क दो रोटी अर एक रावड़ी को बाटको ईं में ईं पड़चो रैसी ।
किसी ने कहा कि लड़के तेरा पेट तो टेढा है । लड़के ने उत्तर दिया कि दो रोटी और एक कटोरा रावड़ी इसी में पड़े रहेंगे ।

जो साधन उपलब्ध हैं, उन्हीं से काम चलाना पड़ेगा।

१५१२. **छोरा रोवै क्यूं ? तेरी मां नै हिरणी कर देस्यूं।**

लड़के ! रोता क्यों है, तेरी मां को हिरनी बना दूंगा।

सन्दर्भ कथा—एक देहाती लड़के की माँ बीमार हो गई और उसके लिये उठना बैठना भी कठिन हो गया। तब लड़का शहर में आया और एक वैद्य को अपने घर ले गया। माँ की हालत देख-देख कर लड़का रो रहा था। वैद्य ने उसे ढाढस बंधाते हुये कहा कि तू रो मत, तेरी माँ को हिरनी बना दूंगा (अब तो यह उठ बैठ भी नहीं सकती, लेकिन मेरी दवा से हिरनी की तरह दौड़ने लग जायेगी) इस पर लड़का और भी जोरों से रोने लगा और बोला कि यदि यह मर जाएगी तो भी मैं इससे वंचित हो जाऊंगा और यदि तुम इसे हिरनी बना दोगे तो भी मेरे हाथ नहीं आने की। यह मेरे से तो दोनों ही तरह चली जाएगी, तब तुम्हें पैसे भी क्यों दूं ?

१५१३ **छोरी अं गांव की चौधर कीं कै है ?**

'क पैलकाणी तो म्हारलो खेत निपज्यो हो सो चौधर म्हारै ई ही, इबकै बाजरी म्हारलै काकै कै होई है सो चौधर बीं कै चली गई।

साधन और सम्पन्नता के साथ ही चौधराई मिलती और छिनती रहती है।

१५१४. **जगतण नैं भगतण कवै, कवै चोर नै साह।**

नाई नैं ठाकर कवै, अै तीनूं राह कुराह ॥

वेश्या को भगतिन, चोर को शाह और नाई को ठाकुर कहा जाता है जो तीनों ही उल्टी बातें हैं।

१५१५. **जाट खोस्यां किसा ऊंट मरै ?**

जट खसोटने से ऊंट थोड़े ही मरते हैं।

१५१६. **जटा बधे बड़ री जद जाणा, बादळ तीतर पंख बखाणा।**

अबस नील रंग व्है असमाणां, घण बरसै जळ रो घमसाणा ॥

जब बरगद की जटा बढ़ने लगे, आकाश का रंग नीला हो जाये और तीतर-पंखी बादली आसमान में छा जाये तो जानो कि वर्षा जोरों से होगी।

१५१७. **जठै चुग्गो, बठै चोट।**

जहाँ दाना है वहाँ खतरा भी है।

जहाँ रोजगार है, वहाँ जोखिम भी है।

१५१८. **जठै जाय भूखो, उठै पड़ सूखो।**

भूखा (भाग्य हीन) जहाँ जाता है, वहीं अकाल पड़ जाता है।

१५१९. **जठै देखै तवो परात, बठै नाचै सारी रात।**

जहाँ खाने का जुगाड़ बैठता दिखलाई देता है, वहाँ रात दिन एक कर देते है।

१५२०. जठै पड़ै मूसळ, वठै खेम कुसळ ।

मूसल से चूरमा कूटा जाना क्षेम-कुशल का द्योतक है। वार-त्यौहार एवं खुशी के अन्य अवसरों पर भी राजस्थान में घर-घर चूरमा बनाने की परम्परा है ।

१५२१. जठै बिरछ नईं, वठै अरंड ई रूंख ।

जहाँ वृक्ष न हों, वहाँ एरंड ही वृक्ष ।

१५२२. जठै भागां भागी जाय, वठै भाग अगाऊ जाय ।

चाहे कोई कहीं भी भाग कर चला जाए, उसका भाग्य उससे पहले ही वहाँ पहुँच जाता है ।

रू० जा देखो धरती को ओड़, वोही माथो वाही खोड़ ।

१५२३. जठै राणोजी वसै, वठै ही उदैपुर ।

जहाँ राणाजी वसें, वहीं उदयपुर ।

जहाँ राजा वसे, वही राजधानी ।

१५२४. जठै रोजगार वठै ई घरवार ।

मनुष्य जहाँ रोटी-रोजी कमाता है, कारोबार करता है, उसका घर-वार भी वहीं हो जाता है ।

राजस्थान के अनेक लोगों ने राजस्थान से वाहर जाकर देश के विभिन्न भागों में अपना कारोवार प्रारम्भ किया और कालांतर में उन्होंने वहीं अपने घर वसा लिए ।

१५२५. जणनो तो सीखी 'क !

वहू जनना (प्रसव करना) तो सीखी !

काम का प्रारम्भ तो हुआ । भले ही उसमें पहले पहल लाभ न हुआ हो अथवा कम हुआ हो । लेकिन आगे जाकर विशेष लाभ भी हो सकता है ।

संदर्भ कथा—किसी ठाकुर के लड़के का विवाह हुए कई वर्ष वीत गये, लेकिन उसके कोई संतान नहीं हुई । बहुत समय वाद वहू के एक लड़की हुई । वांदी ने इसकी सूचना ठाकुर को दी तो ठाकुर ने संतोष प्रकट करते हुए कहा कि अच्छी वात है—वहू ने जनना तो सीखा । आज बेटी हुई है तो अगली वार वेटा भी हो जाएगा ।

१५२६. जत्ती है तो जत्तण क्यूं ?

यदि यति (ब्रह्मचारी) है तो पास में औरत क्यों ?

रू० जत्तण है तो जत्ती क्यूं ?

१५२७ जद कद दिल्ली तंवरां ।

जब-कब दिल्ली पर पुनः तँवरों का अधिकार होगा ।

दिल्ली पर किसी समय तँवरों का शासन था जो छिन गया। लेकिन तँवरों को यह गुमान रहा कि कभी न कभी पुनः दिल्ली पर तँवरों का अधिकार होगा। परन्तु उनकी यह आशा सफलीभूत नहीं हुई। फिर भी यह आम कहावत बन गई और किसी स्थान पर पुनः अधिकार करने की आशा में यह कहावत गर्वोक्ति की तरह प्रयुक्त होती है।

१५२८. जद चोखा दिन आवड़ै, पायया पावै वोर।
घर नूरी घोड़ो जणै, मरिया पावै चोर।।

जब अच्छे दिन आते हैं तो सब काम अनायास ही लाभप्रद होते जाते हैं।

सन्दर्भ कथा— एक ठाकुर बड़ा अकर्मण्य था और कभी कुछ कमाता-कजाता नहीं था। एक दिन ठुकरानी ने ठाकुर से अधिक कहा-सुनी की तो वह बोला कि मैं कल कमाने जाऊंगा। ठुकरानी जानती थी कि ठाकुर जाएगा तो भी १-२ दिन बाद वापिस आ जाएगा, क्योंकि वह पहले भी कई बार ऐसा कर चुका था। इसलिये उसने गुस्से में आकर ठाकुर के लिये चूरमे के जो लड्डू राह में खाने हेतु बनाये, उनमें तेज विष मिला दिया।

ठाकुर घर से चल पड़ा और शाम होते-होते एक तालाब के किनारे पहुँचा। वहां बहुतेरी झड़बेरियां खड़ी थीं जिनमें पके और मीठे बेर लगे हुए थे। ठाकुर ने भर पेट बेर खाये और लड्डुओं की पोटली को सिरहाने रख कर वहीं सो गया। आधी रात के बाद वहाँ चार चोर आये जो नजदीकी शहर में से काफी माल-मत्ता चुराकर लाये थे। उन्होंने ठाकुर के सिरहाने से पोटली निकाली और चारों विष मिले लड्डू खा कर सो गये—लेकिन फिर कभी नहीं उठे।

सवेरे ठाकुर जगा तो उसे सारी स्थिति समझते देर नहीं लगी। वह सारा धन लेकर घर आ गया। उधर उसकी अनुपस्थिति में रात को एक चारण ने उसके घर आश्रय लिया। चारण की घोड़ी सगर्भा थी और उसी रात को उसने एक बछेड़े को जन्म दिया। चारण अफीमची था और बड़े तड़के ही जब वह वहाँ से विदा हुआ तो अन्धेरे में बछेड़े को देखकर भी उसने यही समझा कि यह ठाकुर की भैंस का कटरा है और इस प्रकार उपरोक्त कहावती पद चरितार्थ हो गया।

१५२९. जननी जणै तो भक्त जण, कै दाता कै सूर।
नातर रहजे बांझड़ी, मती गंवाजे नूर।।

जननी यदि पुत्र प्रसव करे तो ऐसा पुत्र जन्मे जो भक्त, दाता या शूरवीर हो अन्यथा वह पुत्र प्रसव कर क्यों अपना सौन्दर्य गँवाये?

१५३०. **जब लग जीणा, तब लग सीणा ।**

जब तक जीना है, तब तक सीना ही है अर्थात् आयु पर्यन्त काम ही करते रहना है ।

१५३१. **जब तक तेरे पुण्य का, बीता नहीं करार ।**
तब लग तुझ को माफ है, औगण करो हजार ।।

जब तक मनुष्य का पुण्य समाप्त नहीं होता, तब तक वह भले कितने ही अपराध करे, कोई उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता ।

१५३२. **जबान में ईं रस, जबान में ईं विष ।**

जबान या बोली में ही रस भी होता है और विष भी । प्रिय एवं मीठी बोली से काम बन जाता है तथा अप्रिय और कड़वी बात कहने से बिगड़ जाता है ।

सन्दर्भ कथा-(१) एक बार बादशाह ने अपने एक हिन्दू वजीर से पूछा कि सबसे मीठी और सबसे कड़वी चीज क्या होती है ? वजीर ने उत्तर दिया कि—जबान । बादशाह ने इसका प्रमाण मांगा तो वजीर ने एक दिन बादशाह की प्रधान बेगम को अपने यहाँ आमन्त्रित किया । बेगम अनेक दासियों के साथ वजीर के यहाँ आई तो वजीर ने उसकी इतनी आवभगत की कि बेगम अत्यन्त प्रसन्न हुई और उसने सोचा कि बादशाह सलामत से कहकर इसे प्रधान वजीर बनाऊंगी । लेकिन जब वह जाने लगी तो वजीर ने उसे सुना कर अपने सेवकों से कहा कि घर में तुर्किन के आने से घर अपवित्र हो गया है, अतः सारे घर को गंगाजल से धो डालो । बेगम ने वजीर की यह बात सुनी तो उसके बदन में आग लग गई । उसने महल में जाकर बादशाह से वजीर को कड़ा दण्ड देने की प्रार्थना की । बादशाह ने वजीर को तलब किया तो वजीर ने सारी बात का खुलासा करते हुये बादशाह से कहा कि मैंने तो आपके प्रश्न का ही उत्तर दिया है । सुनकर बादशाह संतुष्ट हो गया ।

(२) एक दिन एक राहगीर किसी जाट के घर पहुँचा और उसने जाटनी से कहा कि मेरे पास चावल और दाल तो हैं, यदि तुम मुझे पकाने के लिए एक बर्तन दे दो और स्थान बतलादो तो मैं खिचड़ी पकालूं । जाटनी ने उसे एक बर्तन दे दिया और घर के आंगन में खड़े नीम के नीचे स्थान बतला दिया । मुसाफिर ने खिचड़ी चढ़ा दी । फिर उसने जाट के घर की ओर देखा । जाट बड़ा सम्पन्न था, घर में कई गायें भैंसें बंधी थीं । राहगीर ने जाटनी से कहा कि तुम्हारे घर का दरवाजा बहुत छोटा है, यदि यह भैंस घर के अन्दर ही मर जाए तो इसे काट कर ही बाहर निकालना पड़े । जाटनी को यह बात बहुत बुरी लगी और उसने राहगीर से कहा कि

तू अपनी खिचड़ी पकाले और व्यर्थ की बातें न कर। लेकिन राहगीर से चुप नहीं रहा जाता था। थोड़ी देर बाद उसने जाटनी के चूड़े की ओर इशारा करके कहा कि तुम्हारा नया चूड़ा बड़ा कीमती है, लेकिन यदि जाट आज मर जाए तो तुम्हें अपना नया चूड़ा आज ही फोड़ना पड़े। राहगीर की बात सुनकर जाटनी तमक कर उठी। उसने राहगीर की अधपकी खिचड़ी उसके अंगोछे में डाल दी और उसे घर से निकाल दिया।

अंगोछे में से अधपकी खिचड़ी का पानी टपक रहा था। रास्ते में किसी ने पूछा कि यह क्या है सो उसने उत्तर दिया—मेरी जबान का रस टपक रहा है।

१५३३. जबान हारी जिको जलम हारचों।

जो अपने वचन का पालन नहीं करता, उसका जीना धिक्कार है।

१५३४. जम सें जब्बर बाणियों।

बनिया यमराज से भी जबरदस्त होता है।

संदर्भ कथा—एक बनिया बड़ा मालदार था, लेकिन साथ ही कंजूस भी अव्वल दर्जे का। उसने अपनी जिन्दगी में कोई दान-पुण्य नहीं किया। हां केवल अपनी पत्नी के बहुत कहने सुनने पर उसने एक मरियल गाय एक ब्राह्मण को दान में दी थी जो सवा पहर जीने के बाद मर गई। जब बनिया मृत्यु के बाद यमराज के यहां पहुँचा तो यमराज ने उससे पूछा कि पहले पाप का फल भोगना चाहते हो या पुण्य का? बनिये ने कहा पुण्य का। इस पर यमराज ने वह गाय लाकर उसके आगे खड़ी कर दी और कहा कि तुम्हारे खाते में तो सारे पाप ही पाप हैं, केवल यह गाय तुमने दान में दी थी जो सवा पहर जीने के बाद मर गई, इसलिए सवा पहर के लिए यह गाय तुम्हारी इच्छा के मुताबिक काम कर देगी।

यमराज की बात सुनकर बनिये ने गाय की पूंछ पकड़ली और गाय से कहा कि अपने तीखे सींगों को यमराज के पेट में घुसेड़ कर इसे मार डाल। बनिये का आदेश सुनते ही गाय क्रोध में भरकर यमराज की तरफ लपकी यम-राज डर कर भाग पड़ा और पुकार लेकर विष्णु भगवान् के पास पहुँचा। गाय और बनिया भी उसके पीछे-पीछे वहाँ पहुँच गये। यमराज ने सारी बात विष्णु भगवान् को बतलाई तो उन्होंने बनिये से कहा कि तुम्हारी सवा पहर बीत चुकी है और अब तुम्हें सदा के लिए कुम्भी पाक नरक में रहना होगा। इस पर बनिये ने भगवान् से प्रार्थना की कि भगवन्! जो भी पापी आपका नाम स्मरण कर लेता है, वह भी स्वर्ग का अधिकारी हो जाता है और मैंने तो साक्षात् आपके दर्शन कर लिए हैं तो क्या अब भी मुझे नरक भोगना पड़ेगा? बनिये की

बात सुनकर भगवान् मुस्कराये और उन्होंने यमराज से कहा कि तुम जाओ, बनिया स्वर्ग में ही रहेगा।

१५३५. जम सें बुरी जनेत।
किसी समय जनेत (बारात) जाना यम यातना से भी कष्टकर समझा जाता था क्योंकि न तो आवागमन के समुचित साधन थे और न अन्य सुविधाएँ।
पद्य—भूख मरण भूमि पड़न, पड़ै बुगै में रेत।
राघो चेतन यूं कवै, जम सें बुरी जनेत।।

१५३६. जमीं जोरू जोर की, जोर हट्यां है और की।
शक्ति के अभाव में जमीन और स्त्री पर भी दूसरे लोग अपना हक जमा लेते हैं।
रू० जर जमी जोरू जोर की, जोर हट्यां है और की।

१५३७. जयो चोंचड़ो दायमो, खटमल माछर जूं।
अकल गई करतार की, इता बणाया क्यूं ?
भगवान् ने इन सबको व्यर्थ ही बनाया।

१५३८. जळ को डूब्यो तिर निकळै, तिरिया डूब्यो बह ज्याय।
पानी में डूबा हुआ आदमी तैर कर निकल सकता है, लेकिन नारी में आसक्त नहीं निकल पाता।

१५३९. जलम को दुखियारो अर नांव सदासुखराय !
जन्म से ही दुखियारा और नाम सदासुखराय !
गुण के सर्वथा विपरीत नाम।

१५४०. जलम घड़ी अर मरण घड़ी टळै कोनी।
जन्म और मृत्यु की घड़ी टलती नहीं।
रू० जलम रात अर फेरां रात टळै कोनी।

१५४१. जळ में मूतै जिको ई जाणै।
जो जल में मूते, वही जाने।
जो छिप कर (पर्दे में) पाप करे, वही जाने।

१५४२. जवाहर चूड़ो जायफळ, विडंग सुपारी बैण।
इतणा तो जाडा भला, साह धणी अर सैण।।
उपरोक्त सब पुष्ट होने अपेक्षित हैं।

१५४३. जांका ऊंचा बैठणा, जांका खेत निवाण।
वांका वैरी के करै, जांका मित दीवाण।।
जिनकी बैठक बड़े आदमियों में है, जिनके खेत निचाई में हैं और दीवान जिनके मित्र हैं, उनका दुश्मन क्या बिगाड़ सकते हैं।

१५४४. जांका पड़्या सुभाव 'क जासी जीव सूं ।
नीम न मीठा होय, सींचो गुड़ घीव सूं ।

जिसका जैसा स्वभाव बन गया है, वह जीते जी छूटने का नहीं । नीम को चाहे घी और गुड़ से सींचा जाए, वह मीठा नहीं होने का ।

सन्दर्भ कथा—एक बुढिया का ऐसा स्वभाव बन गया था कि कोई भी पास-पड़ोसी चाहे किसी भी जरूरी काम से जा रहा हो, वह उसे टोके बिना नहीं रहती थी । वर्षा की ऋतु आई और पड़ोसी किसान अपने खेतों में हल जोतने के लिये जाने लगे तो उन्होने बुढ़िया से पहले ही कह दिया कि बुढिया माई, तू हमें टोकना मत । फसल पकने पर हम सब तुम्हें आधा-आधा मन अनाज ला देंगे । बुढिया हां भर ली । लेकिन जब वे जाने लगे तो बुढिया ने उन्हें पीछे से आवाज देकर बुलाया और बोली कि तुम्हारे खेतों में भले ही पाव भर अनाज भी न हो, लेकिन मैं तो तुम्हारे वादे के अनुसार बीस-बीस सेर अनाज तुम सबसे ले लूंगी ।

१५४५ जांका मरग्या बादस्या, रुळता फिरै वजीर ।

जिनके बादशाह मर गये, उनके वजीर यों हीं भटकते फिरते हैं । उनकी कोई पूछ नहीं ।

रू० (१) जांका मरग्या सायबा, बांका के घरबार ।
(२) नहीं नगीनो नगर में, नहीं नगर में सीर ।
जिणका मरग्या बादस्या, रुळता फिरै वजीर ।।

१५४६. जांकै हांगा डील का, बांका दिल दरियाव ।

जिनके शरीर में भरपूर शक्ति होती है, उनके हौसले भी बड़े होते हैं ।

१५४७ जां घर माईं बापरै, वो घर बाराबाट ।

जिस घर में मौसी (सौतेली मां) आ जाती है, वह घर बर्बाद हो जाता है । प्राय: पहले वाली स्त्री की सन्तान तो बहुत ही दुखी हो जाती है ।

इस प्रकार के दुखों से उकता कर जब एक लड़का घर से निकल भागा तो उसे पहले पहल एक तेली मिला—जिसे अच्छा शकुन नहीं माना जाता । लेकिन लड़के ने मन ही मन कहा—'एक तेली कहा करि है उसको, सौ तेली बसे जिसके घर मांहि ।

१५४८. जांवण लाग्या ईं दूध जमै ।

जामन लगने से ही दूध जमता है ।
उपयुक्त उपचार से ही काम बनता है ।

१५४९. जाओ लाख, रैवो साख ।

लाख रुपये जाएं तो जाएं, लेकिन साख बनी रहनी चाहिए ।

सन्दर्भ कथा—एक बार राजा भोज गंगू तेली के साथ तेलियों के मोहल्ले में आ निकला। सभी तेली जानते थे कि गंगू की राजा भोज के दरबार में भी बड़ी प्रतिष्ठा है इसलिए उन्होंने उसकी खूब आव भगत की और उसे बैठने के लिए मूढा दिया। लेकिन राजा भोज को वे नहीं जानते थे इसलिए उन्होंने उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया। पास में ही एक मोगरी पड़ी हुई थी और राजा उसी पर बैठ गया। तभी कोई जानकार आदमी वहाँ आ निकला और सारी परिस्थिति जानकर उसने उपरोक्त कहावती पद कहा।

१५६६. **जाणन आळा जाणग्या, के जाणै अणजाण।**
जो जानकार (दूरदर्शी) थे वे रहस्य को जान गये, अज्ञ क्या जानें ?

सन्दर्भ कथा—(१) एक रात को किसी गाँव से होकर एक हाथी गुजरा। सवेरे जब गाँव के लोगों ने उसके 'खोज' (पदचिन्ह) देखे तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ कि इतने बड़े बड़े खोज किस जानवर के हो सकते हैं ? उस गाँव में 'बुझक्कड़जी' ही सर्वाधिक बुद्धिमान समझे जाते थे। इसलिए सब लोग मिल कर उनके पास गये। बुझक्कड़जी ने 'खोज' देखे और झट से बोल पड़े—

जाणन आळा जाणग्या, के जाणै अणजाण।
पगां कै चाकी बांध कर, कूद गया मिरगाण।।

अर्थात् जानने वाले इस रहस्य को जान गये, तुम मूर्ख लोग भला क्या जानो ? ये तो हिरन अपने पैरों में चक्की के पाट बांध कर कूदे हैं जिससे ही इतने बड़े बड़े खोज अंकित हो गये हैं।

(२) एक बार गाँव के लोगों को एक बड़ी और पुरानी ओखली मिल गई तो वे उसे लेकर बुझक्कड़जी के पास आये। बुझक्कड़जी ने ओखली को ध्यान से देखकर इतमीनान से कहा—

लाल बुझक्कड़ बूझते, और न बूझै कोय।
हो न हो अल्लाह की, सुरमादानी होय।।

१५६७. **जाण मारै वाणियों, पिछाण मारै चोर।**
बनिया जानकार को अधिक ठगता है और चोर पहिचान कर (भेद प्राप्त कर) के चोरी करता है।

१५६८. **जाणै जित्तोई वखाणै।**
जो जितना जानता है, उतना ही बखानता है।
रू० जाणै सोई वखाणै।

१५६९. **जात चिंडाळ कोनी, करम चिंडाळ है।**
चाण्डाल जाति से नहीं, कर्म से होता है।

सन्दर्भ कथा—एक पंडितजी कथा वाचन करके अपने घर जा रहे थे। रास्ते में एक चाण्डालिन से उनका दुपट्टा छू गया। पंडितजी बिगड़ पड़े। चाण्डालिन ने बड़ी क्षमा प्रार्थना की, लेकिन पंडितजी बिफरते ही चले गये। तब चाण्डालिन ने कस कर पंडितजी का हाथ पकड़ लिया और बोली कि तुम तो मेरे पति हो, तुम यहाँ कहाँ फिर रहे हो, मेरे साथ घर चलो। उसकी बात सुनते ही पंडितजी को मानो काठ मार गया। उनका सारा गुस्सा काफूर हो गया। वे चाण्डालिन से हाथ छोड़ देने की प्रार्थना करने लगे। इस पर उसने हाथ छोड़ते हुए पंडितजी से कहा कि अब आप जा सकते हैं। इतनी देर तक आप के सिर पर क्रोध रूपी चाण्डाल सवार था, अब वह उतर गया है और आप फिर से ब्राह्मण बन गये हैं।

१५७०. जात नै जात बतावै।
जाति को जाति बतला देती है।

१५७१. जात-पांत पूछै ना कोय, हरि नै भजै सो हरि का होय।
भगवान् के यहाँ जाति पांति को कोई नहीं पूछता, जो भी भगवान् को भजता है, वही भगवान् का हो जाता है।

१५७२. जात सुभाव न जाय, रांघड़ के बोदो होवै।
किसी का जातिगत स्वभाव छूटता नहीं।

संदर्भ कथा—राजा के दरबार में नगर सेठ का बड़ा सम्मान था और वह राजा के सन्निकट रहा करता था। राजनर्तकी ने एक बिल्ली के बच्चे को प्रारंभ से ही सिखलाना शुरू कर दिया था और वह बिल्ली का बच्चा पान देने, दीपक पकड़ने और चामर डुलाने आदि कार्यों में पटु हो गया था। राजनर्तकी ने एक दिन राजा के सामने बिल्ली के बच्चे की बड़ी प्रशंसा की तो नगर सेठ ने उससे कहा कि यह सब तो ठीक है, लेकिन उसका जातिगत स्वभाव नहीं छूट सकता। नर्तकी ने सेठ की बात का प्रतिवाद किया तो सेठ बोला कि मैं इसका प्रमाण दूंगा।

एक रात राजा उक्त नर्तकी के साथ चौसर खेल रहा था और बिल्ली का बच्चा सावधानी से दीपक पकड़े हुए था। इतने में सेठ ने एक चूहा वहाँ छोड़ दिया। चूहे को देखते ही बिल्ली के बच्चे ने दीपक को पटक दिया और वह तेजी से उस पर झपटा। राजा को प्रमाण मिल गया।

१५७३. जान नै अर धाड़ नै जावतां के बार लागै?
बारात और धाड़ (डाकुओं की टोली) को जाते क्या देर लगती है?

संदर्भ कथा—एक बार चमारों की एक बारात किसी गाँव जाने लगी तो दूल्हे का बाप ठाकुर से विदाई लेने गया। ठाकुर ने पूछा कि गाँव कितनी दूर है? दूल्हे के बाप ने उत्तर दिया कि बीस कोस। ठाकुर ने पुनः कहा कि

तब तो वहाँ पहुँचने में ही काफी समय लग जाएगा। इस पर दूल्हे के बाप ने तपाक से उत्तर दिया कि नहीं, बारात और धाड़ को जाते क्या देर लगती है। लड़की वालों का गांव २० कोस है और हम सब बराती भी २० ही हैं अतः एक-एक कोस ही तो सबके हिस्से में आयेगा।

१५७४. **जान में कुण कुण आया ?**

बींद अर बींद को भाई, खोड़ियो ऊंट अर काणियों नाई।

किसी ने पूछा—बारात में कौन कौन आये ? उत्तर मिला—दूल्हा, दूल्हे का भाई, खोड़ा ऊंट और काना नाई।

जब किसी बारात में बहुत ही कम बराती हों और वे भी काने खोड़े।

रू० बींद बींद को भाई, तीजो बामण चौथो नाई।

१५७५. **जापा जाया पदमणी, जटा थोड़ी जूं घणी।**

पद्मिनी ने अच्छी संतान जनी है, जिनके सिर पर बाल तो कम हैं, और जूएँ अधिक।

किसी औरत की गन्दी संतान पर व्यंग्य।

१५७६. **जापै पैली न्हाण करै।**

प्रसव से पहले ही नहान ?

काम करने से पूर्व ही मजदूरी ?

रू० बड़ां पैली तेल पीवै।

१५७७. **जा भैंस पाणी में।**

किसी काम के काबू से बाहर हो जाने पर इस कहावत का प्रयोग होता है।

सन्दर्भ कथा—एक ग्वाला बाईं आंख से काना था। तालाब के किनारे उसकी भैंस चर रही थी और वह एक वृक्ष के नीचे पड़ी मोर की पांखों को चुग रहा था और साथ ही यह भी ध्यान रख रहा था कि भैंस पानी में न चली जाए। पांखें चुगते हुए उसने ऊपर की ओर देखा तो वृक्ष पर बैठे एक मोर ने अपनी एक पांख गिराई और वह संयोगवश ग्वाले की दाहिनी आंख में आकर टिकी। आंख फूट गई। अब वह भैंस की निगरानी क्या करे ? सहसा उसके मुँह से निकल पड़ा—

पांख चुगतां आंख फूटी, फूटी आंख दाणी।
दोनूं आंख बराबर होगी, जाये भैंस पाणी॥

रू० (१) पांख झूड़तां आंख फूटी, गयो टींटको काणी में।
दोनूं आंख सपासप होगी, जा भैंस पाणी में॥

(२) घड़लो ले मैं घर सें चाली, खोजो लाग्यो आणी में।
दोनूं पाट बराबर मिलग्या, जाये भैंस पाणी में॥

१५७८. **जायोड़ै नै पोतड़ा होयां सरसी।**

जो जन्मा है उसके लिए कोई न कोई व्यवस्था होगी ही।

१५७९. **जायो नाम जलम को, रैणो किस विध होय ?**
जब जन्म लेने को ही 'जायो' कहते हैं तब मनुष्य अमर कैसे हो सकता है ?
राजस्थानी में जन्म लेने को भी 'जायो' कहते हैं और जाने को भी।

१५८०. **जाळां घणी जवार, कैरां घणो कपास।**
आकां घणो गऊं, खेजड़ां घणो बाजरो ॥
जिस वर्ष जाल वृक्ष ज्यादा फलें उस वर्ष ज्वार अधिक हो, कैर अधिक फलें तो कपास, आक अधिक फलें तो गेहूँ और खेजड़े अधिक फलें तो बाजरा खूब हो।

१५८१. **जावै तो बरजूं नईं, रैवै तो या ठोड़।**
हंसां नै सरवर घणां, सरवर हंस किरोड़ ॥
जाते हो तो रोकता नहीं, रहना चाहते हो तो खुशी से रहो। हंस के लिए सरोवर बहुत हैं एवं सरोवर के लिए हंस बहुतेरे हैं।

१५८२. **जिकी आंगळी कै लागै, वीं कै ई पीड़ होवै।**
जिस उँगली में चोट लगती है, पीड़ा की अनुभूति उसी को होती है।
एक हाथ में पांच उँगलियां होती हैं और वे सब पास-पास रहती हैं, लेकिन एक की पीड़ा से दूसरी को कोई वास्ता नहीं।

१५८३. **जिकी हांडी में खावै, वीं में ईं छेद करै।**
जिस हँडिया में खाता है, उसी में छेद करता है।
जिससे जीविका कमाता है, उसी को हानि पहुँचाता है।

१५८४. **जिकी हांडी में सीर कोनी, वा भांवें चढती ई फूटो।**
जिस हँडिया में अपना साझा नहीं, वह भले चूल्हे पर चढाते ही फूट जाए।

१५८५. **जिकै खातर नाक कटायो, वोई कैवै नकटो।**
जिसके लिए नाक कटवाई, वह भी नकटा कहे।
जिसकी भलाई के लिए स्वयं का नुकसान किया, वह भी उल्टे दोष दे।

१५८६. **जिकै गांव नईं जाणो, वींको गैलो ई क्यूं पूछणो ?**
जिस गाँव जाना ही नहीं, उसका रास्ता क्यों पूछते फिरें ?

१५८७. **जिण गांव लोभी बसै, निरधन भूखो सोवै क्यूं ?**
जिस गाँव में लोभी बोहरा बसता हो, उसमें गरीब भी भूखा क्यों सोये ?
लोभी बोहरा अधिक ब्याज के लालच में गरीब को भी उधार दे देता है।

१५८८. **जितणा मूंडा, उतणी बात।**
जितने मुँह, उतनी बात।
कोई कुछ कहता है, कोई कुछ।

१५८९. **जितणै की ताल कोनी, उतणै का मजीरा फूटग्या।**
ताल से अधिक कीमत के तो मजीरे फूट गये।

१५९०. जित्ता भाई, वित्ता घर।

जितने भाई, उतने घर।

१५९१. जिद चिढ़ोड़ो जाट तूंवो भी खाज्या।

जिद कर लेने पर जाट तूम्बे जैसा कड़वा फल भी खा जाता है।

१५९२. जिमावै जिको ई चळू करावै।

जो भोजन करवाता है, वही 'चळू' भी करवाता है।

चळू करवाना = भोजन के बाद हाथ-मुँह धुलवाना और कुल्ले करवाना।

१५९३. जिसा कंथा घर रैया, विसा ई परदेस।

पुंसत्व हीन पति चाहे घर पर रहे, चाहे परदेश में।

पद्य   कदे न हँस कर कुच गह्या, कदे न रिस कर केस।
        जिमा कंथा घर रैया, विसा ई परदेस॥

१५९४. जिसा देव, विसी ही पूजा।

जैसे देव, वैसी ही पूजा।

रू० (१) जिसा देव विसा ही पुजारा अर विसा ही जात देवण हारा।
     (२) देव जिसा पुजारा।
     (३) जिसा भाजन, विसा भोजन।

१५९५. जिसा वोलै डोकरा, विसा वोलै छोकरा।

घर में जैसे बड़े-बूढ़े बोलते हैं, बच्चे भी वैसी ही वाणी बोलने लग जाते हैं।

१५९६. जिसा मेरा खाणा दाणा, विसा मेरा काम जाण्या।

जैसा मेरा खाना-पीना है, वैसा ही मेरा काम है।

१५९७. जिसो अंस, विसो वंस।

जैसा अंश, वैसा वंश।

१५९८. जिसो पीवै पाणी, विसी वोलै वाणी।

जैसा पानी पीते हैं, वैसी ही वाणी बोलने लग जाते हैं।

१५९९. जिसो राजा, विसी ही परजा।

यथा राजा तथा प्रजा।

१६००. जींकी खाये वाजरी, वीं की दीजे हाजरी।

जिसकी वाजरी खाई जाती है, उसी की हाजरी देनी पड़ती है।

रू० जैकी चावै घूघरी, वींका गावै गीत।

१६०१. जीं की मोगरी, वीं की टाट।

जिसकी मोगरी, उसी का सिर।

रू० तेरी जूती, तेरो ई सिर।

१६०२. जीं की मौत होवै, वो ही मरै।

जिसकी मौत आती है, वही मरता है।

संदर्भ कथा—एक दिन में चार ग्वाले गायें चरा रहे थे। सहसा आकाश में गहरे बादल घिर आये, वर्षा होने लगी और घोर गर्जना के साथ बिजलियां चमकने लगीं। चारों ग्वाले एक जांट (शमी वृक्ष) के नीचे खड़े हो गये, लेकिन बिजलियां बार-बार उसी वृक्ष पर कौंधने लगीं। ग्वालों ने सोचा कि यहां खड़े रहने से तो बिजली हम सब पर गिरेगी और हम सभी मारे जाएंगे। इससे अच्छा तो यही होगा कि प्रत्येक व्यक्ति सामने के वृक्ष को हाथ लगा कर आये, जिस पर बिजली गिरनी होगी, उस पर गिर जाएगी। इस निर्णय के अनुसार तीन ग्वाले उस वृक्ष को हाथ लगा-लगा कर लौट आये, लेकिन बिजली नहीं गिरी। इसलिए चौथे ने सोचा कि अब तो यह बिजली अवश्य मेरे ऊपर ही गिरेगी। इसलिए वह वहाँ से जाना नहीं चाहता था, लेकिन शेष तीनों ने जबरन उसे वहा से धकेल दिया। जैसे ही वह उस वृक्ष की ओर बढा, बिजली कड़क के साथ शेष तीनों पर गिरी और वे तीनों ही मर गये। चौथा बच गया।

१६०३. **जींकी लाठी, वींकी भैंस।**

जिसकी लाठी, उसकी भैंस।

शक्ति के अनुसार सत्ता का परिवर्तन। यह शक्ति 'सोट' (लाठी) की भी हो सकती है, वोट की भी।

सन्दर्भ कथा—एक ब्राह्मण को उसके यजमान ने भैंस दी। भैंस को लेकर वह अपने गाँव जा रहा था कि राह में पड़ने वाले जंगल में उसे एक लुटेरा मिल गया। उसके हाथ में एक लम्बी और मजबूत लाठी थी। उसने ब्राह्मण को ललकारा और जमीन पर लट्ठ ठोकते हुए बोला कि भैंस को छोड़ कर शीघ्रता से भाग जा, नहीं तो तेरी हड्डी-पसली तोड़ डालूंगा। ब्राह्मण निहत्था था, इसलिए उसने लुटेरे से कहा कि भैंस तो तुम ले लो, लेकिन मैं ब्राह्मण हूँ, इसलिए भैंस के बदले में मुझे कुछ न कुछ अवश्य दो। लुटेरे ने कहा कि मेरे पास क्या धरा है, यह लाठी है, सो तुम ले लो। यों कह कर लुटेरे ने अपनी लाठी ब्राह्मण को दे दी। लेकिन लाठी हाथ में आते ही ब्राह्मण का रंग बदल गया। उसने कड़क कर लुटेरे से कहा कि जान की खैर चाहता है तो यहाँ से भाग जा, नहीं तो तेरी खोपड़ी के टुकड़े टुकड़े कर डालूंगा। पहले लाठी तुम्हारे हाथ में थी, अब मेरे हाथ में है, अत. जिसके पास लाठी है, भैंस भी उसी की रहेगी। निदान, लुटेरा अपना सा मुँह लेकर वहाँ से चलता बना।

१६०४. **जींकै घर में दूजै गाय, सो क्यूं छाछ पराई जाय ?**

जिस के स्वयं के घर में गाय दूध देती हो, वह दूसरों के वहाँ छाछ मांगने क्यों जाए ?

१६०५. जीं को बाप बीजळी सें मरै, वो कड़कै सें डरै ।

जिसका बाप बिजली गिरने से मरा हो, वह बिजली की कड़क से भी डरता है ।

१६०६. जीं नै देख्यां ताप श्रावै, वो ही निगोड़चो ब्यावण आवै !

जिसको देखने से ही मुझे ज्वर चढता है, वही निगोड़ा मुझे ब्याहने के लिए आ रहा है ।

इच्छा के सर्वथा विपरीत और बेमेल काम ।

१६०७. जीजा ! तेरी मेरी सगाई होई; 'क अभी के साख नीकळचायो ।

साली ने जीजा से कहा कि तेरी और मेरी सगाई हुई । जीजा ने उत्तर दिया कि अभी क्या सम्बन्ध हो गया ?

१६०८. जीजी कै ब्या, मेरै ढमढमी ।

विवाह तो जीजी के यहाँ है और बाजे अपने घर बजवा रही हूँ ।

१६०९. जी, जी सें कै एक सो ।

जीव (प्राण) तो सब का एक जैसा है । जैसी अनुभूति अपने को होती है, वैसी ही दूसरों को भी होती है ।

१६१०. जीभ की चाट, घाटै की ठाट ।

चटोरा आदमी दिन भर कुछ न कुछ खाता ही रहता है जिसके फलस्वरूप वह घर की सम्पत्ति को चाट जाता है, और उसके घर में घाटा आ जाता है ।

१६११. जीभड़ली मेरी आळ-पताळ, कड़कोला खा मेरो लाडलो कपाळ ।

जिसकी जिव्हा वश में नहीं और जो बिना विचारे चाहे जो कह देता है, वह मार ही खाता है ।

१६१२. जीभ बिना हाड की है, फिरतां के वार लागै ?

जीभ तो बिना हाड की है, इसे फिरते (बदलते) क्या देर लगती है ?

जो आदमी अपनी जबान का जरा भी पाबन्द न हो ।

१६१३. जीम कर ई पड़चा था ।

सन्दर्भ कथा—एक बनिया अपने समधी के यहाँ गया । समधी ने उससे खाना खाने के लिए बहुत बार कहा लेकिन वह बराबर ना करता रहा । मेजबान ने भोजन की थाली उसके पास मंगवाली और बार बार आग्रह करने लगा, लेकिन जैसे जैसे वह आग्रह करता जाता था—समधी ना कहता हुआ पीछे खिसकता जाता था । पीछे एक कुआं था (जहाँ पानी गहरा नहीं होता, वहाँ कहीं कहीं घरों में कुएँ होते हैं) । समधी को इसका पता नहीं था और वह पीछे खिसकता हुआ कुएँ के अन्दर जा गिरा । मेजबान ने उसे बाहर निकाला और बोला कि लो अब तो खाना खालो । इस पर समधी ने कहा कि नहीं जी, खाना खाकर ही तो कुएँ में गिरा था ।

१६१४. जीम्यां पीछै तो चळू ई होवै।

भोजन कर चुकने के बाद तो 'चळू' करना ही शेष रहता है।

पटाक्षेप हो जाने पर क्या हो सकता है ?

१६१५. जीम्या अर पातळ फाड़ी।

भोजन किया और पत्तल फाड़ी।

रू० भात खाया अर पातळ फाड़ी।

१६१६. जीव कै जीव लागू।

जीव जीव का भोजन है।

रू० जी में जी, सक्कर में घी।

१६१७. जीव जायो, जीवका मत जायो।

जान जाये तो जाये, लेकिन आजीविका नहीं जानी चाहिए।

१६१८. जीवतड़ां नईं दान, मरचां नै पकवान।

जीवित माँ-बाप की तो बात भी न पूछे और मरने के बाद लोक-दिखावे के लिए पकवान जिमाये।

रू० (१) जीवतड़ां नै रोटी कोनी, मरचां पीछै लाडू गुड़कावै।
(२) जीवत पिता की करी ना सेवा, मरचां पीछै लाडू मेवा।
(३) जीवत पिता कै रह्यो न नेड़ो, मरचां पीछै वांटै हेड़ो।
(४) जीवत पिता सें जंगम जंगा, मरचां पीछै हर हर गंगा।

१६१९. जीवती माखी नईं गिटणी।

जान बूझ कर किसी का हक नहीं मारना चाहिए।

१६२०. जीवते की दो रोटी, मरचोड़ै की सो रोटी।

जीते हुए की दो रोटी, मरे हुए की सौ रोटी।

१६२१. जीवतै जी नै सोक्यूं करणो पड़ै।

जीवित रहते हुए आदमी को सभी कुछ करना पड़ता है।

किसी प्रिय संबंधी की असामयिक मृत्यु से आदमी को गहरा आघात लगता है, लेकिन फिर वेमन से ही सही, उसे समयानुसार सभी काम करने पड़ते हैं।

१६२२. जीवतो लाख को, मरचां पीछै सवा लाख को।

जीवित हाथी लाख का और मरने के बाद सवा लाख का।

१६२३. जीवैगा नर तो फेर करैगा घर।

आदमी जिन्दा रहेगा तो फिर नया घर बना लेगा।

१६२४. जुआं कै मिस घाघरो कोनी गेरचो जावै।

जुओं के मिस घाघरा थोड़े ही फेंक दिया जाता है ?

किसी सामान्य अड़चन के कारण समूचे काम को ही नहीं त्यागा जा सकता।

१६२५. जुआरी को खरचो बादस्या भी कोनी पूर सकै।

जुआरी के खर्च को बादशाह भी पूरा नहीं कर पाता।

सन्दर्भ कथा—एक बार किसी बादशाह ने अपने सभी दरबारियों से पूछा कि उनका मासिक खर्च कितना कितना है ? किसी ने पांच, किसी ने पचास, किसी ने सौ और किसी ने हजार रुपये मासिक का खर्च बतलाया। अन्त में एक जुआरी की बारी आई तो पहले तो उसने बतलाने में अपनी असमर्थता प्रकट की। लेकिन बादशाह के जोर देकर पूछने पर बोला कि हुजूर ! आप मेरा खर्चा क्या पूछते हैं ? मैं आपके जैसी सात बादशाहतें एक ही दांव पर लगा सकता हूं। जुआरी का उत्तर सुन कर बादशाह चुप हो गया।

१६२६. जुग कोनी मरै, जुग टूट्यां ई स्यार मरै।

चौपड़ के खेल में जब तक दो 'स्यार' (गोटी) एक 'ढाणे' (खाने) में रहती हैं, दूसरा खिलाड़ी उन्हें नहीं मार सकता। लेकिन जैसे ही खिलाड़ी को उन दोनों में से एक 'स्यार' को चलने की आवश्यकता हो जाती है और उस खाने में एक ही गोटी रह जाती है तो प्रतिपक्ष का खिलाड़ी उसे आसानी से मार लेता है।

संगठन टूटने से ही नाश होता है।

सन्दर्भ कथा—एक जाट के खेत में चार जने मतीरे खाने के लिए घुस गये—एक ब्राह्मण, एक ठाकुर, एक बनिया और एक नाई। जाट आया तो उसे उनको मतीरे खाते देख कर बड़ा गुस्सा आया, लेकिन वे चार थे, इसलिए उसने तरकीब से काम निकालना ही ठीक समझा।

पहले उसने नाई को पकड़ा और ब्राह्मण की ओर इशारा करके कहा कि ये तो दादा-गुरु हैं, ठाकुर मालिक हैं और ये सेठ हैं जिनसे सारे काम निकलते हैं, अतः इन तीनों की तो कोई बात नहीं। लेकिन तुझे तो हर काम के पैसे देता हूं, फिर तू इनके साथ खेत में कैसे घुसा ? यों कह कर उसने नाई को ठोंक-पीट कर खेत से बाहर निकाल दिया, शेष तीनों आदमी चुप रहे। अब सेठ की बारी आई। उसने सेठ से कहा कि ब्राह्मण देवता तो दादा हैं और ठाकुर मालिक हैं, लेकिन तुम्हारे से जो रुपया उधार लेता हूँ तो उसका मुँह मांगा ब्याज तुम्हें देता हूँ, फिर तुम खेत में क्योंकर घुसे ? यों कह कर उसने सेठ को भी मार-पीट कर खेत से बाहर निकाल दिया। फिर उसने ठाकुर से कहा कि मैं खेत जोतता हूँ तो तुम्हें लगान देता हूं, फिर तुम बिना पूछे खेत में कैसे घुसे ? यों कह कर उसने ठाकुर को भी धक्के देकर बाहर निकाल दिया। अब पंडितजी की बारी आई और उनकी भी वही गति हुई।

१६२७. जुग जीत्यो रै काण्यां, 'क बेरो पड़सी उठाण्यां ।

वाह ! काने ने जुग जीत लिया ! यह तो उठाने पर ही पता लगेगा ।

सन्दर्भ कथा वर पक्ष वाले चालाकी से अपने काने लडके को ब्याह कर बडे प्रसन्न थे । जब फेरे हो चुके तो उन्होंने घमड मे कहा—

जुग जीत्यो रै काण्या ।

लेकिन वधू पगु थी । इसलिए कन्या पक्ष वालो ने भी उत्तर मे कहा—

बेरो पडसी उठाण्या ।

एक पक्ष धोखेबाज तो दूसरा उसका भी उस्ताद ।

१६२८. जुग देख कर जीणो है ।

ससार को देख कर जीना है ।

अपने से हीन और विपरीत परिस्थितियो मे दूसरो को जीते देख कर जीने का सम्बल प्राप्त होता है ।

सन्दर्भ कथा—एक निहायत गरीब आदमी कही जा रहा था । भूख बहुत जोरो से लग रही थी, लेकिन पास मे केवल एक पैसा था । उसने उस पैसे की मूलिया ली और चलते हुए ही वह उन्हे खाने लगा । जैसे-जैसे वह मूलिया खाता जाता था, उनके पत्ते तोड-तोड कर पीछे की ओर फेकता जाता था । उसे अपनी हीन दशा पर बडा क्षोभ था और सोचता था कि यह भी कोई जीवन है, इससे तो मर जाना ही अच्छा ।

चलते-चलते ही उसने पीछे की ओर दृष्टि डाली तो देखा कि उसके पीछे-पीछे एक दूसरा आदमी आ रहा है जो उससे भी बदतर हालत मे है । वह मूली के जिन पत्तो को फेकता चलता है, पीछे आने वाला आदमी उन्हे ही सहर्ष उठा-उठा कर खा रहा है । यह देख कर उसको कुछ तसल्ली मिली कि अभी तो उससे भी अधिक गरीब लोग इस ससार मे मौजूद है ।

१६२९. जुर जाचक अर पावणो, चौथो मंगण हार ।
लंघण तीन कराय दे, फेर न आवै दुआर ।।

ज्वर, याचक, पाहुना और मागने वाला (ऋणदाता) इन को तीन दिन भूखे रखदो, फिर ये दुबारा नही आयेगे ।

१६३०. जुळिये नै पुळियो कोनी नावड़ै ।

धीमी गति से, किन्तु निरन्तर अपने काम मे लगे रहने वाले को फुर्तीला किन्तु आलसी आदमी नही पा सकता ।

सन्दर्भ कथा—एक कछुवे और खरगोश मे किसी निश्चित स्थान पर पहले पहुँचने की होड लग गई । कछुआ अपनी मथर गति से तत्काल चल पडा । उसकी धीमी चाल को देख कर खरगोश को हँसी आई और उसने सोचा कि मै इसके साथ ही क्यो दौड़ना शुरु करूं । यह रेंगता हुआ कुछ दूर जाता

है तो जाने दो, तब तक मैं एक झपकी ले लेता हूँ। उठने के बाद तो इसे तुरन्त ही दौड़ कर पकड़ लूंगा। यों सोच कर खरगोश गहरी नींद में सो गया और जब वह उठा तब तक कछुआ गंतव्य स्थान पर पहुँच चुका था।

१६३१. जुवारी नै आपको ही आपको दाव सूझै।
जुआरी को सदा अपना ही दाँव सूझता है।
सूझ जुआरिहि आपन दाऊ।

१६३२. जूं बिना खाज नीं, कुळ बिना लाज नीं।
जूं के बिना खाज नहीं और कुल के बिना लज्जा नहीं।
अकुलीन को कैसी लज्जा?

१६३३. जूठै हाथ सैं कदे गंडकड़ै नै ई कोनी मारै।
ऐसा कंजूस कि जो कभी जूठे हाथ से कुत्ते को भी न निकाले।

१६३४. जूत को मारयो ऊपर नै अर टूक को मारयो नीचै नै देखै।
जूते की मार मारने से आदमी अकड़ता है, आंखें दिखलाता है, लेकिन टुकड़े की मार से वह नीचे देखने लगता है, नम्र बन जाता है।
टुकड़े की मार का आशय रुपये-पैसे आदि के प्रलोभन से है।

१६३५. जे टाबरिया ई काम करले तो बाबो बूढळी क्यूं ल्यावै।
यदि बालक ही काम करलें तो बाबा को 'बूढली' क्यों लानी पड़े।

१६३६. जे टूट्या तो ई टोडा।
यह घराना बड़ा है। यद्यपि इस समय घर में कसाला है, फिर भी बहुत कुछ शेष है।

१६३७. जेठ गळचो, गूजर पळचो।
ज्येष्ठ मास में वर्षा हो जाए तो गूजर पल जाता है।

१६३८. जेठ को सो पेट को।
जेठ का पुत्र भी अपने पुत्र जैसा ही।

१६३९. जेठजी की पोळ में जेठजी ई पोढै।
जेठ जी की पोल में जेठ जी ही पौढें, दूसरों को इससे कोई प्रयोजन नहीं।

१६४०. जेठ मास जो तपै निरासा, तो जाणो बिरखा की आसा।
ज्येष्ठ मास में पूरे महीने अधिक गर्मी पड़े तो आगे अच्छी वर्षा होगी।
रू० जेठ मास जे रवि तपे, वाजै ऊनी वाय।
तो जाणीजे भडुळी, पुंहमी नीर न माय॥

१६४१. जेठ मूंघा तो सदां सूंघा।
जेठ में मँहगाई रहे तो शेष वर्ष में चीजें सस्ती रहें।

१६४२. जेठ में चालै परवाई, तो सावण सूखो जाई।
जेठ के महीने में परवा हवा चले तो अगला सावन सूखा ही निकले।

रू० (१) जै दिन जेठ वहै परवाई, तै दिन सावण धूड़ उड़ाई ।
(२) जेठ महीनै वैरण वाजै, मूका सरवर भाण तपै ।
इन्दर राजा अरज सामळो, थां वूठां म्हारा काज सरै ।।

१६४३. जेठ सरीखा वाजरा कोनी, कातिक सरीखा जौ कोनी ।
ज्येष्ठ मास में वाजरा और कार्तिक में जौ बोना उत्तम है ।
रू० जेठ वायो वाजरो, सावण घाल्या बूंट ।
भर भादूड़ै भरदेसी, वो वाजरै का ऊंट ।।

१६४४. जेठा अन्त विगाड़िया, पूनम नै पड़वा ।
ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा और आषाढ मास की प्रतिपदा को छींटों का पड़ना कृषि के लिए अच्छा नहीं माना जाता ।

१६४५. जेठो वाजरो अर मोवी पूत राम दे तो पावै ।
ज्येष्ठ महीने का वाजरा एवं पुत्र रूप में पहली संतान की प्राप्ति प्रभु कृपा से ही होती है ।
रू० (१) जेठो वाजरो अर मोवी पूत बड़ो होवतो ई दीखै ।
(२) जेठो वेटो, भाई वरोवर ।

१६४६. जे तूं आती थोड़ी सी मोड़ी, तो मैं गुवातो नूं तोड़ी ।
यदि तू थोड़ी देर और ठहर कर आती तो मैं नखों तक गवाता ।
अपनी अनभिज्ञता का सोत्साह प्रदर्शन करने पर यह कहावत कही जाती है ।

संदर्भ कथा—किसी राजा की महफिल लगी हुई थी । गायिका वहुत अच्छा गा रही थी और श्रोता वाह-वाह कर रहे थे । लेकिन राजा इस मामले में एक दम कोरा था । गाना पूरा हुआ तो दर्शकों में से कुछ ने कहा कि कान्हरा वहुत अच्छा गाया । इस पर राजा ने सोचा कि राग-रागिनियों के नाम तो शरीर के अंगों के नाम पर ही होते हैं । इसलिए अगली वार गाना समाप्त होते ही सवसे पहले राजाजी वोल उठे 'नाकड़ा' वहुत अच्छा गाया । लोग-वाग मुंह पर हाथ रख कर हँसने लगे । पुनः गाना समाप्त हुआ तो राजाजी वोले—इस वार 'आंखड़ा' अच्छा गाया । चिक के अन्दर से रानी यह सव देख रही थी । राजा की अज्ञता पर वह भी मन ही मन कुढ रही थी । उसने अपनी दासी को राजा के पास भेज कर उससे कहलवाया कि शरीर के अंगों से राग-रागिनियों के नामों का कोई संवंध नहीं है । इस पर राजा ने दासी से कहा—

जे तूं आती थोड़ी सी मोड़ी, तो मैं गुवातो नूं तोड़ी ।
रू० जे तूं आती थोड़ी सी मोड़ी, तो मैं गुवातो सौ तोड़ी ।

१६४७. जे धन दीसै जावतो तो श्राधो दीजे बांट ।
यदि सारा ही धन हाथ से निकलता दिखाई पड़े तो श्राधा देकर श्राधा बचा लेना ही अच्छा है ।
पद्य वादीला मत वाद कर, छोड़ पुराणी श्राट ।
जे धन दीसै जावतो, तो श्राधो दीजे बांट ।।

१६४८. जे नईं देख्यो जैपरियो तो कुळ में श्राकर के करियो ।
संसार मे श्राकर यदि जयपुर ही नही देखा तो क्या देखा ?

१६४९. जे पुरवा लावै पुरवाई तो सूखो नदियां नाव चलाई ।
पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र पर सूर्य के रहते हुए यदि पुरवा हवा चले तो इतनी अधिक वर्षा हो कि सूखी नदियों मे भी नावे चलने लगे ।

१६५०. जे वरसै उतरा तो धान न खावै कुतरा ।
सूर्य के उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र मे श्रा जाने पर वर्षा हो तो इतना अधिक अन्न उत्पन्न होगा कि कुत्ते भी नही खाएंगे ।

१६५१. जे वरसै पुनरवसु श्रर स्वात ।
ना चालै चरखो, ना चालै तांत ।
पुनर्वसु या स्वाति नक्षत्र पर सूर्य के रहते वर्षा होने पर कपास नही होता जिससे न कातने के लिए चर्खा चलता है न धुनने हेतु तांत ही बजती है ।

१६५२. जे बसन्त फूलै नहीं, फळै नही बणराय ।
राजा परजा सहु दुखी, दुखिया गोधा गाय ।
वसन्त ऋतु मे यदि वनस्पति न फूले-फले तो राजा-प्रजा और पशु सभी दुखी होंगे, क्योंकि अकाल पड़ेगा ।

१६५३. जे भीज्यो कोनी काकड़ो, तो क्यूं फेरै हाळी लाकड़ो ?
कर्क संक्रांति पर वर्षा न हो तो हल जोतना व्यर्थ है क्योंकि अकाल पड़ेगा ।

१६५४. जेर सें ईं सेर होवै ।
नवजात शिशु ही जो जन्म के समय सर्वथा नाजुक होते है, समयानुसार ताकतवर बन जाते हैं ।

१६५५. जे रिण तेरै बाप को तो साढा मूंग बुहाय ।
यदि बाप का ऋण उतारना हो तो श्रापाढ में ही मूंग बो दो, क्योंकि वे बड़े लाभदायक होते है ।

१६५६. जेवड़ी बळज्या, पण बळ कोनी जा ।
रस्सी जल जाती है, पर ऐंठन नहीं जाती ।
जो आदमी सर्वस्व गँवा देने पर भी झूठा अहंकार लिए फिरे ।

१६५७. जे सुख चावै जीव को तो खेल्योड़ी से खेल ।

१६५८. जैसे कूं तैसा मिल्या, मिल्या बामण कूं नाई।
वो दीनी आसका, वो आरसी दिखाई ।।
दोनों ही एक जैसे मिल गये । ब्राह्मण ने नाई को आशीर्वाद दिया तो नाई ने बदले में ब्राह्मण को दर्पण दिखला दिया ।

१६५९. जोक चाये जद भंगी कै जाणो पड़ै ।
जोंक की आवश्यकता होने पर भंगी के घर जाना पड़ता है ।

१६६०. जोजरै घड़ै की जोजरी अवाज ।
जर्जर घड़े की आवाज भी जर्जर ।
दुर्बल की आवाज भी दुर्बल ।

१६६१. जोड़ी मिली रे जोगिया, मांगो अर खाओ ।
हे जोगिया, तुम्हारी अच्छी जोड़ी मिल गई है; अब मांगो और खाओ ।

१६६२. जोसी कै मुखड़ै सोई पतड़ै ।
जो जोशी (ज्योतिषी) की जबान पर है, वही पत्रे में है ।

१६६३. ज्यूं ज्यूं भीजै कामळी, त्यूं त्यूं भारी होय ।
जैसे जैसे कम्बल भीगती जाती है, वैसे वैसे अधिक भारी होती जाती है ।
पद्य बातड़ियां घर ऊजड़ै, चूल्है दाळद होय ।
ज्यूं ज्यूं भीजै कामळी, त्यूं त्यूं भारी होय ।।

१६६४. ज्यूं ज्यूं मुरगी मोटी होय, त्यूं त्यूं गांड सांकड़ी होय ।
जैसे जैसे आदमी के पास संपत्ति बढ़ती जाती है, पैसे के प्रति उसका मोह भी बढ़ता जाता है ।

१६६५. झगड़ै ई झगड़ै, पण कूंजड़ी कैवै ज्यूं तेरो कीणो तो समाळ ।
केवल झगड़ते ही झगड़ते हो, अपना कीना तो संभालो ।
कीणो = कुंजड़िन या मालिन को शाक-सब्जी के बदले दिया जाने वाला अन्न । वस्तु विनिमय की प्रथा पाणिनि काल में भी थी । इसे तब निमान कहा जाता था । मालिन और कुंजड़िन आज भी अनाज के बदले शाक सब्जी देती हुई देखी जा सकती हैं ।

१६६६. झगड़ो झूठो, कबजो साचो ।
मकान पर जिसका कब्जा है, उसका पक्ष प्रबल रहता है, शेष बातें गौण ।

१६६७. झगड़ो तो वधावै जितोई वधज्या ।
झगड़े को जितना बढ़ाया जाए, उतना ही बढ़ जाता है ।

१६६८. झट काढी अर पट वाई ।
झट से तलवार निकाली और फट से वार किया ।
किसी काम को तुरत-फुरत कर डालना ।
तु० चट रोटी, पट दाळ ।

१६६९. झींगरियां बोलै घणी, नाड़ी तत्ता नीर।
मेघ घुमण्डे माघजी, पूरब वहै समीर ॥
झिंगुर खूब बोलें, तालावों का पानी गरम हो जाए और परवा हवा चले तो वर्षा शीघ्र हो।

१६७०. झूठ कित्ती दूर चालै ?
झुठ अधिक दूर तक नहीं चल सकती।
रू० (१) झूठ कै पग कोनी होवै।
(२) झूठ की दौड़ डागळै ताईं।

१६७१. झूठ को बोलणियों अर धरती पर सोवणियों संकड़ेलो क्यूं भोगै ?
झूठ बोलने वाला और जमीन पर सोने वाला तंगी क्यों भोगे ?
जब झूठ ही बोलना है तब कसर क्यों रखी जाए और जमीन पर ही सोना है तब भले कितनी ही दूर में पैर फैला कर सोएँ।

१६७२. झूठ तो आटै लूण जित्ती ई खटावै।
झूठ उतनी ही चल सकती है जितना आटे में नमक।

१६७३. झूठ तो रावड़ी रोटी है।
जो आदमी सदा झूठ ही बोलता है, उसके लिए झूठ बोलना रावड़ी-रोटी खाने के समान है।

१६७४. झूठ विनां झगड़ो नईं, धूळ विनां धड़ो नईं।
झूठ के बिना झगड़ा नहीं और धूल के बिना धड़ा नहीं।
धड़ा = तराजू में चीज तौलने से पूर्व खाली वर्तन का संतुलन करना।
यह संतुलन धूल से बड़ी सुगमता से हो जाता है।

१६७५. झूठ अर साच में च्यार आंगळ को आंतरो।
झूठ और सच में चार अंगुल की दूरी। कानों से सुनी हुई बात झूठी और आंखों से देखी हुई सच्ची।

१६७६. झूठी राख छाणी, लादी न दाजी धाणी।
निरर्थक श्रम किया, लाभ कुछ नहीं मिला।

१६७७ झूठै की के पिछाण ? 'क वो बात-बात पर सौगन खा।
झूठे आदमी की यही पहिचान है कि वह बात-बात पर सौगन्ध खाता है।

१६७८. झूठै की पत कोनी।
झूठे आदमी का विश्वास नहीं, उसकी कोई इज्जत नहीं।
लाखपती को झूठ सें, दो कौड़ी को मोल।

१६७९. झूठो झगड़ो रोटियां सें मँहगो कोनी।
झूठा झगड़ा रोटियों से मँहगा नहीं।

जब कोई आढतिया किसी दुकानदार के यहां दूसरे गाँव से हिसाब करने आता था तब उसे रोटी तो खिलानी ही पड़ती थी, लेकिन बहुधा हिसाब में कोई न कोई झगड़ा डाल कर रोटी से अधिक पैसा काट लिया जाता था।

रू० झूठो झगड़ो रोटियां सें कोनी जा।

१६८०. झैर खासी जिको मरसी।

जो जहर खायेगा, वही मरेगा।

जो अपराध करेगा, उसे ही उसका दण्ड भोगना पड़ेगा।

१६८१. झैर सें झैर मरै।

जहर से जहर मरता है।

विषस्य विषमौषवम्

रू० झैर नै झैर मारै

१६८२. टका दाई लेगी अर कुंडो फोड़गी।

सर्वथा निकम्मे और अकर्मण्य व्यक्ति के लिए प्रयुक्त।

रू० दाई रांड मांगत का ई लेगी।

१६८३. टकां विना टकटकी लगायां ईं देखो।

टके के विना कोई काम नहीं होता।

१६८४. टकै आळी को झूंझणियो बजासी।

टके वाली का बालक झुनझुना बजायेगा।

सन्दर्भ कथा—एक आदमी मेले में जा रहा था। पास पड़ोस की स्त्रियां उससे कहने लगीं कि मेरे लड़के के लिए मेले से अमुक चीज लाना, मेरे लड़के के लिए अमुक चीज लाना। लेकिन पैसा किसी ने भी नहीं दिया। तब एक स्त्री ने उसके हाथ में एक टका देते हुए कहा कि मेरे नन्हे के लिए एक झुनझुना लेते आना। इस पर उस आदमी ने कहा कि अन्य स्त्रियों की फरमाइशें तो पूरी नहीं होंगी, लेकिन तूने टका दिया है, इसलिए तेरा मुन्ना अवश्य झुनझुना बजायेगा।

१६८५. टकै की डोकरी, दो टका टाट मुंडाई का ?

एक टके की बुढ़िया और दो टके उसकी टाट मुँडवाई के ?

१६८६. टकै की हांडी फूटी, गंडक की चाल पिछाणी।

थोड़ी हानि तो अवश्य उठानी पड़ी, लेकिन यह पता चल गया कि अमुक आदमी कैसा है।

१६८७. टकै की हांडी लेवै जिको भी बजाकर लेवै।

जो एक टके की हँडिया लेता है, वह भी ठोंक-बजा कर लेता है।

संदर्भ कथा—एक महात्माजी अपनी भक्त मण्डली में बैठे प्रवचन कर रहे थे। एक राह गुजरता आदमी भी वहां रुक गया। प्रवचन की अपेक्षा

उसे महात्माजी की घुटी हुई और चमचमाती टाट बड़ी आकर्षक लगी। वह अपने को रोक नहीं सका और मौका देखकर उसने महात्माजी के सिर में एक 'ठोला' (ठोंग) जमा दिया। उसकी इस बेहूदा हरकत से सारे भक्त एवं शिष्य रोष में भर गये और उसे पीटने के लिये उतारू हुए। लेकिन महात्माजी ने उन्हें ऐसा करने से मना किया और बोले कि कोई आदमी एक टके की हांडी लेता है तो उसे भी अच्छी तरह ठोंक बजा कर लेता है, फिर यह तो मुझे गुरु बनाना चाहता था और इसलिए इसने 'ठोला' मारकर मेरी परीक्षा ली है कि मैं इस योग्य हूँ भी या नहीं।

आगन्तुक व्यक्ति पर इस बात का बड़ा असर पड़ा और उसने उसी समय महात्माजी का शिष्यत्व स्वीकार कर लिया।

१६८८. टकै टकै की न्यूंत है।

जरा-जरासी बात पर झगड़ते हैं।

रू० ठीकरी में घालो ई कोनी रळै।

१६८९. टको टूंसी एक न यार, तोरण मारण होग्यो त्यार।

पास में न एक टका, न कोई आभूषण और विवाह करने को उत्सुक।

टूंसी = ठुसी = एक आभूषण।

१६९०. टको व्याज मूळ नै खावै।

टके, रुपये का व्याज मूल को भी ले बैठता है।

रू० (१) करड़ो व्याज मूळ नै खावै।

(२) सौ नै लेग्यो पंजो, पंजै नै लेग्यो पाव।
अब के है सेठाणी, आव भलाई जाव॥

१६९१. टट्टू नै मारचां टार कांपै।

टट्टू को मारने से टार (घोड़ा) कांपता है।

एक अपराधी को दण्डित होते देखकर दूसरा अपराधी डरता है।

संदर्भ कथा— एक राजा कुछ महीनों के लिए बाहर गया और कहता गया कि जब भी मैं लौटूंगा, सारे मुकद्दमे मामले एक दिन में निवटा दूंगा। राजा लौटा तो उसके सामने अनेक लोग अपने-अपने मामले लेकर उपस्थित हुए। राजा ने सबसे पहले अपने साले का मामला लिया जिसने किसी गरीब आदमी की औरत जबरन अपने घर में डाल ली थी। जब राजा को यह विश्वास हो गया कि मामला सच्चा है तो उसने अपने साले को तत्काल ही मृत्यु दण्ड देने की आज्ञा दी। यह देखकर सब सन्नाटे में आ गये और उन्होंने परस्पर समझौता कर लेना ही श्रेयस्कर समझा। इस प्रकार सारे मामले एक बारगी ही निवट गये।

१६६२. टाट में दियां पिदो बाजै ।
सर्वथा अभाव की स्थिति ।

१६६३. टाटी कै घर नै फेरतां के वार लागै ?
छप्पर के घर का द्वार फेरने में क्या देर लगती है ?
ऐसा सामान्य काम जिसमें परिवर्तन करना कठिन न हो ।

१६६४. टाबर कुटाबर होज्या, मायत कुमायत कोनी होवै ।
पुत्र भले ही कुपुत्र हो जाए, लेकिन माँ बाप वैसे नहीं बन सकते ।

१६६५. टाबर खावै हाड बधावै, मोट्यार खावै घणो कमावै, बूढो खावै अंळो जावै ।
बेटे की वहू अपने पति और बच्चों के खाने को तो सार्थक समझती है एवं बूढे सास-श्वसुर के खाने को निरर्थक ।

१६६६. टाबर, पण खावै बराबर ।
कहने को तो बालक है, लेकिन खाना बड़ों के जितना ही खाता है ।
स० टाबर है, पण बडोड़ां का कान कतरै ।

१६६७. टाबरां को सी बकरियां चरै ।
बच्चों के जाड़े को बकरी के बच्चे चर जाते हैं ।
बच्चों को जाड़ा नहीं सताता, वे योंही खेलते-कूदते फिरते हैं ।
स० टाबर नै मैं छेड़ूं कोनी, जवान मेरा भाई ।
बूढां नै तो छोड़ूं कोनी, ओढो मांवैं रजाई ।।

१६६८. टाबरां बिना किसो घर ?
बालकों के बिना कैसा घर ? जिस घर में बच्चों की किलकारियां न सुनाई दें, वह घर सूना-सूना लगता है ।

१६६६ टीकै आळो ल्याई है ।
गाय ने टीके वाला बछड़ा प्रसव किया है ।
जब खुशी के मारे कोई आपा भूल जाए, तब इस कहावत का प्रयोग होता है ।

संदर्भ कथा—एक पंडितजी की गाय जंगल में ब्या गई । गाय का बछड़ा बड़ा सलौना था और उसके माथे पर तिलक था। पंडितजी हर्ष से नाच उठे । लेकिन गाय को बांध कर घर ले जाने के लिये रस्सी नहीं थी । इसलिये पंडितजी ने झट से अपनी धोती खोलकर गाय के गले में बांध दी, नवजात बछड़े को अपने कंधे पर उठा लिया और गाँव की तरफ चल पड़े । जो भी आदमी पंडितजी को मिलता, वह उन्हें टोकता कि पंडितजी यह क्या ? लेकिन पंडितजी अपनी ही धुन में उत्तर देते चलते कि है क्या ? टीके वाला लाई है । आखिरकार पंडितजी अपने घर पहुँचे । पत्नी ने किवाड़ खोले तो पति

को इस अवस्था में देखकर बड़ी लज्जित हुई। उसने खीझते हुए पंडितजी से पूछा कि यह क्या स्वांग बनाया है? इस पर पंडितजी को अपनी भूल का भान हुआ।

१७००. टीकै की वरियां माथो टाळै।

तिलक के समय माथा टालता है।

कहते हैं कि जोधपुर बसाने वाले राव जोधाजी की मृत्यु पर उनके पुत्रों में से जोगाजी को टीका (राज तिलक) दिया जा रहा था। लेकिन वे स्नान करके आये थे और उनके यह कहने पर कि मेरे बाल सुखा लेने तक ठहर जाओ, सरदारों ने जोगा के दूसरे भाई सातल को टीका दे दिया।

रू० आई लोडी सिर क्यूं टाळै? (व्यंग्य)

१७०१ टीटूड़ी कै इंडो एक, करै फोगसी काळ विसेक,
दो इण्डा टीटूड़ी धरै, तो निस्चै आधो काळ पड़ै,
जे हो ज्यावै इंडा तीन, तो रोग दोष सें परजा छीण,
जे मिल ज्यावै इण्डा च्यार, नव खण्ड निपजै माघ विचार।

टिटहरी के एक अण्डा हो तो पूरा अकाल पड़े, दो अण्डे हों तो आधा अकाल पड़े, तीन अण्डे हों तो रोग फैले और चार अण्डे हों तो भरपूर जमाना हो।

१७०२. टीटूड़ी समद उळीचियो, परवारां कै पाण।

पारिवारिक या जातीय संगठन के बल पर टिटहरी नामक क्षुद्र पक्षी ने समुद्र को उलीच डाला।

इस संदर्भ की एक कथा है कि टिटहरी (एक छोटी चिड़िया) ने समुद्र के किनारे अण्डे दिये तो समुद्र उनको बहा ले गया। इस पर टिटहरी ने उससे बदला लेने की ठानी। पक्षियों के राजा गरुड़ सहित तमाम पक्षियों ने उसका साथ दिया और अन्त में समुद्र को हार मानकर टिटहरी के अंडे लौटाने पड़े।

१७०३. टुकड़ा दे दे बछड़ा पाळचा, सींग होया जद मारण आया।

जिन को छुटपने से ही पालपोष कर बड़ा किया, वे ही अब समर्थ होने पर मारने आते हैं।

कृतघ्न व्यक्तियों के लिए इस कहावत का प्रयोग किया जाता है।

१७०४. टूटतै अकास कै थळो कोनी लागै।

टूटते हुए आकाश को आधार स्तम्भ नहीं लगाया जा सकता।

अत्यन्त समर्थ व्यक्ति का पराभव होता है तो सामान्य साधनों से उसे नहीं रोका जा सकता।

१७०५. **टूटी कै बूंटी कोनी ।**
आयु पूरी हो जाने पर कोई दवा नहीं लगती ।
रू० टूटी कै बूंटी नईं, नईं काळ की टाळ ।

१७०६ **टूटी डाळी उडग्या मोर, धी मरी जंवाई चोर ।**
वृक्ष की डाली टूटी और उस पर बैठा मोर उड़ गया ।
बेटी मरी और जँवाई की कद्र गई ।

१७०७. **टूट्यो पेट गोडां नैं आवै ।**
पेट टूटता है तो उसका भार घुटनों पर ही आता है ।

१७०८. **टेढी खीर कोनी खाई जावै ।**
हमसे तो टेढी खीर नहीं खाई जाएगी ।

संदर्भ कथा—एक सेठ ने किसी सूरदास को भोजन का निमन्त्रण दिया तो सूरदास ने पूछा कि भोजन में क्या पदार्थ बनाओगे ? सेठ बोला कि खीर बनाई जाएगी । सूरदास का कभी खीर से वास्ता नहीं पड़ा था, इसलिये उसने सेठ से पूछा कि खीर कैसी होती है ? सेठ ने उत्तर दिया कि बगुले जैसी सफेद होती है । सूरदास ने फिर पूछा कि बगुला कैसा होता है ? इस पर सेठ ने अपनी कोहनी मोड़ कर बगुले जैसी आकृति बनाई और कहा कि बगुला ऐसा होता है । सूरदास ने 'बगुले' पर हाथ फेर कर देखा और बोल पड़ा—सेठजी ! यह तो टेढी खीर है, हमसे नहीं खाई जाएगी, हमें आपका न्योता स्वीकार नहीं है ।

१७०९. **टोटा तेरा तीन नाम, लुच्चा गुण्डा बेईमान ।**
घाटे में आदमी को चाहे जो कह दिया जाता है ।

१७१०. **ठंठेरां की बिल्ली खुड़कां सैं कोनी डरै ।**
ठठेरों की बिल्ली खट-खट की आवाज से नहीं डरती, क्योंकि वह तो रात-दिन यह आवाज सुनती ही रहती है ।
बखेड़े-बाजी करते रहने का अभ्यस्त आदमी सामान्य घुड़कियों से नहीं घबड़ाता ।

१७११. **ठण्डो लो तातै 'लो नै काटै ।**
ठंडा लोहा गरम लोहे को काटता है ।
विनम्र व्यक्ति अपनी विनम्रता से उग्र व्यक्ति को हरा देता है ।

१७१२. **ठगां कै ठग ई पावणा ।**
ठगों के ठग ही पाहुने ।

१७१३. ठग्यां ठग, ठगायां ठाकर ।

ठगने वाला ठग और ठगाने वाला ठाकुर ।

१७१४. ठाकर आडा भी चालै, ऊभा भी चालै ।

ठाकुर आड़े भी चलते है, खडे भी चलते हैं ।

संदर्भ कथा—गांव के ठाकुर के घर मे घाटा था । वाजरी के सिट्टे तोड़कर लाने की मंशा से एक शाम को वह उसी गांव के एक जाट के खेत मे छिपकर घुसा । ठाकुर ने सोचा कि जाट की नजर मुझ पर न पड़ जाए, इसलिए वह घुटनों के वल चल रहा था । वाजरी के वूटों की खड़खड़ाहट हुई तो जाट ने कड़क कर पूछा—कौन है ? जाट की आवाज सुनकर ठाकुर सीधा खड़ा हो गया और रोव से वोला—क्यो मैं हूँ ! ठाकुर को पहचान कर जाट ने नम्र स्वर मे पूछा कि ठाकुर साहव ! घुटनों के वल कैसे चल रहे है ? इस पर ठाकुर ने वड़ी वेपरवाही से उत्तर दिया—यह हमारी मर्जी है, ठाकुर जो है । ठाकुर तो आड़े भी चलते हैं और खड़े भी ।

१७१५ ठाकर आया ये ठुकराणी, चूल्हे आग न पैंडै पाणी ।

ठाकुर सा'ब घर आये, लेकिन घर मे तो आग-पानी कुछ भी नही है ।

ठाकुरों के यहां आय तो प्रायः कम होती थी और व्यय अधिक, इसलिये अधिकतर ठिकानों में घाटे की स्थिति ही रहती थी ।

ठाकुरों के यहां सख्त पर्दा रहता था । यदि घर में वांदी होती तो वह पानी एवं ईंधन ले आती अन्यथा ठुकरानी यों ही वैठी रहती थी ।

१७१६. ठाकर चालै जेरां कैरां, ढेढां आधी रात ।
डूम तो दोपारां चालै, जाटजी परभात ।।

किसी दूसरे गांव जाना हो तो ठाकुरों का कोई निश्चित समय नही होता । लेकिन चमार आधी रात को, डोम दोपहर मे और जाट प्रातः काल जाना पसन्द करते है ।

१७१७. ठाकर तो कूंळै मांड्योड़ो ई वुरो ।

ठाकुर को तो कोंले पर मांडना भी वुरा ।

संदर्भ कथा—एक सेठ ने एक हवेली चिनवाई और हवेली तैयार हो जाने के वाद जव उस पर भित्ति चित्र वनाये जा रहे थे तो सेठ का एक परिचित ठाकुर उधर आ निकला । हवेली के मुख्य द्वार के आगे एक हथियार-वन्द जमादार का चित्र वनाया गया था । ठाकुर ने सेठ से पूछा कि यह किसका चित्र है ? सेठ ने मजाक में कह दिया कि आपके 'वावो सा' का । ठाकुर वोला कि यह तो वहुत अच्छी वात है, लेकिन आप उनका नाम भी चित्र के नीचे लिखवा दीजिए । सेठ ने नाम लिखवा दिया और ठाकुर चला गया ।

कुछ वर्ष बाद वही ठाकुर पुन सेठ के पास आया। कुशल क्षेम पूछने के बाद ठाकुर ने सेठ से कहा कि मैं अपने 'बावोसा' की नौकरी का हिसाब लेने आया हूँ सो दिलवा दीजिये। सेठ ने पूछा—कैसी नौकरी ? ठाकुर बोला कि जब से आपकी हवेली बनी है तब से ही मेरे 'बावो'सा' रात-दिन आपकी हवेली का पहरा लगा रहे हैं और यही कारण है कि आपके यहां आज तक न चोरी हुई और न डाका पड़ा। सेठ दुविधा में पड़ गया। उसने ठाकुर से कहा कि मैं इस चित्र को मिटवा देता हूँ। इस पर ठाकुर बोला कि भले ही मिटवा दें, लेकिन आज तक की नौकरी का हिसाब तो देना ही पड़ेगा। निदान, सेठ को रुपये देने ही पड़े।

१७१८. ठाकर नै चाकर घणां।

ठाकुर को चाकरों की क्या कमी ?

१७१९. ठाकरां ! ऊत गई, 'क गयाई' जावै है, अभी के थामो लागग्यो है ?

किसी ने ठाकुर से कहा कि ठाकुर साहब, आपके यहाँ तो सभी 'ऊत' (निकम्मे) गये। इस पर ठाकुर ने जवाब दिया कि अभी तो जा ही रहे हैं, रुके कहाँ हैं ?

१७२०. ठाकरां ! खळ खावो हो ? 'क या ही गंडकां कै मूं मांय सूं खोसी है।

किसी ने ठाकुर से पूछा कि ठाकुर साहब ! आप खली खा रहे हैं ? ठाकुर ने उत्तर दिया कि खली भी कहाँ नसीब होती है, यह भी कुत्तों के मुँह से छीनी है।

१७२१. ठाकरां ! खांगा बैठो; 'क खांगा बैठ्यां खरचो लागै।

किसी ने ठाकुर से कहा कि ठाकुर साहब, जरा ऐंठ मे बैठिये।
ठाकुर ने उत्तर दिया कि ऐंठ से बैठने में खर्चा लगता है।

१७२२. ठाकरां गैर बखत ? 'क गैर बखत तो म्हेई हां।

किसी ने ठाकुर से पूछा कि ठाकुर साहब, गैर वक्त (चोरी-डाका पड़ने के समय) किधर ?

ठाकुर ने उत्तर दिया—गैर वक्त तो हम स्वयं ही हैं अर्थात् हमी तो चोरी-डाका डलवाते हैं।

१७२३. ठाकरां ! घोड़ी ठेका तीन देसी, 'क ठाकर यार तो पैलै ई ठेकै में तळै आसी, दो तो एकली ई देसी।

किसी ने कहा कि ठाकुर साहब ! यह घोड़ी तीन उछाले मारेगी, सावधान रहना। इस पर ठाकुर बोला कि ठाकुर तो पहली उछाल में ही नीचे आ गिरेंगे, शेष दो उछाल तो घोड़ी अकेली ही लगायेगी।

१७२४. ठाकरां ! टाबर कित्ताक ?
'क भाई कै साळै कै दो डांवड़ा है ।
किसी ने ठाकुर से पूछा कि ठाकुर साहब ! आपके बाल बच्चे कितने हैं ?
ठाकुर ने उत्तर दिया कि भाई के साले के दो लड़के हैं ।

१७२५. ठाकरां ! ठाडा किसाक ? 'क चोदू का तो वैरी ई पड्या हां ।
किसी ने ठाकुर से पूछा कि आप कैसे वीर बहादुर हैं ?
ठाकुर ने उत्तर दिया—कमजोर के तो दुश्मन ही हैं ।

१७२६. ठाकरां ! दूबळा क्यूं ? 'क करड़ खा'गी ।
ठाकुर साहब ! दुबले क्यों ?
उत्तर मिला—ऐंठ खा गई ।

१७२७. ठाकरां ! धोळा आग्या अर भागो हो ?
'क भागतां भागतां ईं धोळा लिया है, नईं तो काळै केसां ईं मारचा जाता ।
ठाकुर साहब ! आपके बाल सफेद हो गये हैं और अब भी पीठ दिखला कर भाग रहे हैं ?
उत्तर मिला—भागते-भागते ही तो सफेद बाल हो पाये हैं, न भागते तो कभी के मारे जाते ।

१७२८. ठाकरां परै सरको ।
'क दुख पासी जिको आपै ई सरक जासी ।
किसी ने ठाकुर से कहा कि ठाकुर साहब ! कुछ आगे सरकिये ।
ठाकुर ने उत्तर दिया—जो दुःख पायेगा, वह अपने आप सरक जाएगा ।

१७२९. ठाकरां, बोरियां में तो कीड़ा है ।
'क ओर खावां के झख मारण नै हां ?
किसी ने ठाकुर से कहा कि ठाकुर साहब ! आप जो बेर खा रहे हैं, इनमें तो कीड़े बहुत हैं ।
ठाकुर ने उत्तर दिया कि नहीं तो क्या झख मारने के लिये खा रहे है ? अर्थात् कीड़े हैं तभी तो खा रहे हैं ।

१७३०. ठाकरां व्याया 'क कुंआरा ? 'क आधा व्यायोड़ा ।
आधा कैयां ? 'क म्हे तो त्यार बैठ्या हां, आगलो बेटी देवै तो पूरो व्या होज्या ।
किसी ने ठाकुर से पूछा कि व्याहे हुए हो या कुंआरे ?
ठाकुर ने उत्तर दिया कि आधे व्याहे हुये, क्योंकि हम तो व्याहने के लिये तैयार ही हैं, कोई लड़की वाला अपनी लड़की दे तो पूरा व्याह हो जाए ।

१७३१. **ठाकरां भागल्यो कितराक, 'क लैर की दब्बी जाणिये**
ठाकुर साहब ! आप कितना तेज भाग सकते हैं ?
उत्तर मिला--पीछे का दबाव जानिये ।

१७३२. **ठाकरां मरचा सुण्या, 'क सांपरत खड़्या हां नी !**
नई सा, म्हानै भी एक ठावो आदमी कैवै हो ।
किसी ने ठाकुर से कहा कि हमने तो सुना था कि आप मर गये ? ठाकुर ने उत्तर दिया कि मैं तो आपके सामने प्रत्यक्ष खड़ा हूँ । लेकिन पूछने वाले ने ठाकुर की बात को झुठलाते हुए कहा--ऐसा नहीं हो सकता, हमें एक बहुत ही विश्वसनीय आदमी ने यह बात कही है, वह झूठ बोलने वाला व्यक्ति नहीं है ।

१७३३. **ठाकरां हाथ तो पतळा-पतळा दीखै, 'क लाग्यां बेरो पड़ै ।**
ठाकुर साहब ! आपके हाथ तो पतले पतले (कमजोर) लगते हैं ?
ठाकुर ने उत्तर दिया कि झापड़ लगे तो पता चले ।
रू० ठाकरां पूंचो तो पतळो दीखै, 'क लागै जिकै नै बेरो पड़ै ।

१७३४. **ठाडै का दो वांटा ।**
सबल के दो हिस्से ।
रू० नागै का दो वांटा ।

१७३५. **ठाडै कै धन का प्रेस्ता रुखाळा ।**
समर्थ के धन की रखवाली फरिश्ते करते हैं ।
रू० (१) भागवान कै धन की रुखाळी फरिस्ता करै ।
(२) ठाडै कै धन को बोजो-बोजो रुखाळो ।

१७३६. **ठाडै निमळै का दो गैला ।**
सबल और निर्बल के भिन्न रास्ते ।

१७३७. **ठाडै को डोको डांग नै फाड़ै ।**
सबल का सरकंडा लाठी को चीर डालता है ।
रू० ठाडै को टोको निमळै की डांग नै फाड़ै ।

१७३८. **ठाडो काढै गाळ, हांसियां में ई टाळ ।**
सबल की गाली को हँसी में टालना ही अच्छा है ।

१७३६. **ठाडो मारै भी रोवण भी कोनी दे ।**
सबल मारता भी है और रोने भी नहीं देता ।
रू० ठाडो मारै रोवण देनी, खाट खोसले सोवण देनी, बीज खोसले बोवण देनी ।

१७४०. ठाल कै हेज घणो, नापीरी कै तेज घणो ।

दूध न देने वाली गाय अपने बछड़े पर अधिक प्यार जताती है और जिसके पीहर में कोई न हो, वह अधिक आक्रोश प्रकट करती है ।

१७४१. ठालप सें वेगार भली ।

निकम्मा रहने की अपेक्षा तो वेगार करना ही अच्छा ।

रू० वेकार सें वेगार भली ।

१७४२. ठाली वैठी डूमणी घर में घाल्यो घोड़ो ।
दूध बाजरी खावती, घास खोदवो दोरो ।।

किसी डोमनी के यहाँ एक गाय थी जिससे उसे दूध दही खाने को मिल ज.ते थे । लेकिन उसने गाय को वेच कर एक घोड़ा खरीद लिया । अब उसे दूध-दही के दर्शन तो दुर्लभ हो गये एवं घोड़े के लिए नित्य प्रति घास और खोदनी पड़ने लगी ।

किसी लाभप्रद काम को छोड़कर निरर्थक काम में फँसना ।

रू० (१) दूध दही सें धापगी, चढवा नैं मन चाल्यो ।
ठाली वैठी डूमणी, घर में घोड़ो घाल्यो ।
(२) वाजू वेच वंदूखड़ ल्याया सिर गोळी की खाई ।
छायां वैठ्या वेजो वणाता, काई मड़मड़ी आई ।।

१७४३. ठालो वैठी नायण पाडड़ा मूंडै ।

वेकार वैठी नाइन भैंस के वच्चों को मूंड़ती है ।

रू० (१) निकमी नायण पाटड़ा मूंडै ।
(२) ठालो वैठचो वाणियों के करै, अैं कोठी को धान वीं कोठी में धरै ।
(३) सोनीजी थोड़ो सोनो दणो ।
'क सोनो मांग्यो मिलै है के ?
'क मांग्यो तो कोनी मिलै, पण ठाली जीभ के करै ।

१७४४. ठावां ठावां टोपला वाकी का लंगोट ।

प्रभाव और प्रतिष्ठा के अनुसार भेंट पूजा ।

१७४५. ठिकाणै सें ई ठाकर वाजै ।

ठिकाने से ही ठाकुर कहलाता है ।

रू० ठिकाणै ठाकर पूजीजे ।

१७४६. ठोकर खायां ई हुंसियार होवै ।

ठोकर खाकर ही आदमी होशियार वनता है ।

१७४७. ठोठ मजूरी आगड़ी, कारीगर स्यावास ।

अनाड़ी मजदूर तो अपनी पूरी मजदूरी ले लेता है और कारीगर को केवल वाहवाही मिलती है ।

१७४८. ठोड को मिणयों ठोड सोवै ।

हर आदमी यथास्थान ही शोभित होता है ।

१७४९. डर कनै गयां ईं डर नीसरै ।

डर के पास जाने से ही डर निकलता है ।

बहुत बार अंधेरे में किसी वस्तु को दूर से देखकर आदमी डर जाता है, लेकिन उसके पास जाने से उसकी वास्तविकता प्रकट हो जाती है ।

१७५०. डरती हर हर करती ।

डर के मारे ही भगवान् का स्मरण करती है ।

१७५१. डर तो घणों खाये को है ।

अधिक खाना नुकसानप्रद है ।

१७५२. डरै जिकै नै घणों डरावै ।

जो डरता है, उसे अधिक डराया जाता है ।

रू० चिड़ै जिकै नै घणों चिड़ावै ।

१७५३. डरै जिकै नै बीच में सुवावै ।

जो डरता है उसे बीचोंबीच सुलाते है ।

१७५४. डरै तो करै क्यूं ?

यदि डरे तो अपराध करे ही नहीं ।

संदर्भ कथा—एक स्त्री बड़ी चटोरी थी । उसका पति जो कुछ कमाता, वह खाने-पीने में उड़ा देती । इससे वह सदा दुखी रहता । एक दिन उसकी बहिन ने उसे चार खूंटियां दीं और उससे कहा कि इनको रसोईघर के चारों कोनों में गाड़ दो । भाई ने चारों खूंटियां रसोई में गाड़ दीं और काम पर चला गया । पीछे से उसकी स्त्री ने सदा की तरह चूल्हे पर कड़ाही चढाई तो एक खूंटी बोली—देखो, यह चटोरी स्त्री क्या करती है ? दूसरी ने कहा—यह तो सदा ही ऐसा करती है । तीसरी ने पूछा कि क्या ऐसा करते हुये यह डरती नहीं ? चौथी ने जावाव दिया—यदि डरती तो करती ही क्यों ? चारों खूंटियों की बातचीत सुनकर वह वास्तव में डर गई और उसने अपनी आदत बदल ली ।

१७५५. डांग टूटी तो ई ठोबरां जोगी ।

लाठी टूट गई है तो भी मिट्टी के भांडों को तोड़ने के लिए तो काफी है ।

१७५६. डाकण का हाथ माता में ई पड़ै ।

शीतला में हर समय खराबी की आशंका बनी रहती है और मौका मिलते ही डाकिन की बन आती है ।

शीतला में डाकिन के दाँव पड़ने के अधिक अवसर रहते हैं ।

१७५७. **डाकण वेटा दे 'क ले ?**
डाकिन वेटा दे या ले ?
डाकिन के पास देने को कहां ? वह तो सदा दूसरों के वेटे लेती ही है ।
वह आदमी जो सदा दूसरों का हिस्सा हड़पने को उतारू रहता है ।

१७५८. **डाकण ही अर जरख चढ़गी ।**
डाकिन यों हीं वहुत भयंकर होती है और जरख पर चढ़ने के वाद तो उसकी भयंकरता और भी वढ़ गई ।
डाकिन की सवारी जरख (लकड़वग्घा) है, इसलिए उसे जरखवाहिनी भी कहते हैं ।

१७५९. **डाकणां कै ब्या में न्यू तारां का गटका ।**
डाकिनों के यहां विवाह होता है तो वे निमन्त्रित व्यक्तियों को ही डकार जाती हैं ।

१७६०. **डाकणां से गांव का नळा के छाना ?**
डाकिनों से गाँव के वच्चों के आँवलनाल क्या छिपे हैं ?

१७६१. **डाकियां का डाव, आधै पाणी न्याव ।**
जवरदस्तों के दाँव लगने पर वे आधा पानी न्याय कर देते हैं ।
आधा भाग तो स्वयं ही डकार जाते हैं ।

१७६२. **डाढी मूँछ आळा भी डूबै है ।**
छोटे-मोटे की तो विसात ही क्या, वड़े-वड़े भी डूव रहे हैं ।
संदर्भ कथा—दाढ़ी-मोंछों वाला एक प्रौढ़ आदमी अपने छोटे पौत्र को साथ लेकर नदी तट पर गया । पोते को अपनी छाया पानी में दिखलाई पड़ी तो उसने दादा से कहा कि एक लड़का पानी में डूवा जा रहा है । इस पर दादा ने पानी में देखा तो उसे भी अपना प्रतिविम्व दिखलाई पड़ा । इसे देखकर उसने पोते से कहा कि छोकरों की क्या विसात, यहाँ तो दाढी-मोंछों वाले भी डूव रहे हैं ।

१७६३. **डिगमरां कै गांव में धोवियां को के काम ?**
दिगम्वरों के गाँव में धोवियों का क्या काम ?

१७६४. **डूंगर चढ़तो पांगळो, सीस अणूतो भार !**
पंगु पहाड़ पर चढ़े और सिर पर वेशुमार वोझ ।

१७६५. **डूंगर वळती दीखै, पगां वळती कोनी दीखै ।**
पहाड़ पर लगी आग को तो सव देखते हैं, लेकिन अपने पैरों में लगी आग को कोई नहीं देखता ।
हर आदमी दूसरों के दोष ही देखता है, अपने नहीं देखता ।

१७६६. डूंगरां नै छायां कोनी होवै ।
पहाड़ों को छाया नहीं की जा सकती ।
सामान्य आदमी बड़ों को प्रश्रय नहीं दे सकते ।

१७६७. डूबती-तिरती कोनी देखै ।
नफे नुकसान का विचार किये बिना जो झट से किसी काम को कर डाले ।

१७६८. डूबतै नै तुणकै को ई सा'रो ।
डूबते को तिनके का सहारा ।

१७६९. डूबतो सिवाळां नै हाथ घालै ।
पानी में डूबता हुआ मनुष्य शैवालों को हाथ मारता है, लेकिन उनसे कोई बचाव नहीं हो सकता ।

१७७०. डूबी पर नौ बांस तिरै ।
डूबी हुई पर नौ बांस तैर रहे हैं । नौ बांस जितनी गहरी डूब गई है । इतनी गहरी डूब गई है कि बचाव का कोई रास्ता नहीं ।
बांस = एक माप (चार बांस, चौबीस गज, अंगुल अष्ट प्रमाण) ।

१७७१. डूब्या वंस कबीर का, जाया पूत कमाल ।
कमाल जैसा पुत्र पैदा होने से कबीर का वंश डूब गया ।
कहा जाता है कि कबीर जो बात कहते थे, कमाल उनसे सर्वथा विपरीत कहते थे । जैसे, कबीर ने कहा—'मन का कहना मानिये, मन है पक्का मीत', तो कमाल ने कहा—'मन का कहा न मानिये, मन है पक्का चोर ।'

१७७२. डूम किसै दिन संख बजाया ?
डोमों ने किस दिन शंख बजाये ?

१७७३. डूम की जात नै सी घणो लागै ।
डोम को जाड़ा अधिक सताता है । साल भर में कभी उनका जाड़ा नहीं उतरता ।
तु० सींगाळां सी ऊतरै, आवै जातां माह ।
तुरियां फागण ऊतरै, नर बांदर वैसाख ।
डूमां कदे न ऊतरै, थितिया बारै मास ।

१७७४. डूम (डूमणी) के रोणै में भी राग ।
डोम रोता भी है तो राग में ।
डोम प्रारम्भ से ही अपने बच्चों को ताल-धुन आदि का ज्ञान कराने लगता है, जैसे छोटे बालक से कुत्ते को हांकने के लिये वह ताल लगाते हुए ही कहता है—

दाळ-बाटी की रसोई, दाळ-बाटी की रसोई,
छोरा कुत्तै नै हांक, छोरा कुत्तै नै हांक,
कुत्ता दुर रै, कुत्ता दुर रै।

१७७५. **डूमड़ो गा-गा कर हारग्यो, धणी कै भावैं ई' कोनी ।**
डोम तो गाते-गाते थक गया और मालिक ने उसकी तरफ ध्यान ही नहीं दिया।

१७७६. **डेढ घड़ो अर डीडवाणो प्याऊं ?**
पास में केवल डेढ़ घड़ा पानी और पूरे डीडवाने को पानी पिलाने की आकांक्षा ?
साधन अत्यन्त सीमित, महत्वाकांक्षा बहुत बड़ी।

१७७७. **डूब गई सिरकार मुसायब डूमड़ा।**
डूब गई पणिहार 'क सिर में गूमड़ा।
वह सरकार डूब गई जिसमें डोम मुसाहिब हों; वह पनिहारिन डूब गई जिसके सिर मे फोड़े हों।

कहते है कि अमिया ढोली जैसे ओछी बुद्धि के लोग जोधपुर के राजा रामसिंह के प्रीतिभाजन थे और राजा उनका कहना मानता था, जिसके परिणाम स्वरूप उसे राज्य से हाथ धोना पड़ा।

राजस्थान में पुरुष अपने कंधों पर पानी की दोघड़ ले जाते हैं और स्त्रियां सिर पर उठा कर। इसलिए जिस पनिहारिन के सिर में फोड़े हों, वह पानी की दोघड़ नहीं ले जा पाती।

१७७८. **डूमकी कीं जाणै तो बखाणै ?**
डोम की स्त्री कुछ जाने तो बखाने (यश वर्णन करे)।
रू० डूम कीं जाणै तो बखाणै ?

१७७९. **डूम कै डार, डार कै डोई, डोई कै कोई न कोई।**
डोम के याचक डार, डार के याचक डोई, लेकिन डोई के कोई नहीं।

१७८०. **डूमां आडी डीकरी, बळदां आडी भैंस।**
विदया आडी बीनणी, उद्यम आडो ऐस ॥
डोमों के लिए लड़की, बैल के लिए भैंस, विद्या प्राप्त करने में बहू और उद्यम के लिए ऐश-आराम बाधक हैं।

१७८१. **डेरै में डेरी कोनी खटावै।**
एक घर में दूसरे का हस्तक्षेप नहीं खटाता।

सन्दर्भ कथा—एक सेठ ने बीस हजार की लागत से एक मकान बनवाया। फिर उसने उस मकान को इस शर्त पर दूसरे आदमी को दस हजार

में बेच दिया कि मकान के आंगन के बीच में जो एक खम्भा है, वह सेठ का रहेगा और सेठ जब भी चाहेगा मकान में आकर अपने खंभे को सम्भाल सकेगा। मकान लेने वाले ने यह शर्त मान ली और आधी कीमत पर सहर्ष मकान खरीद लिया।

अब हर आधी रात को सेठ अपना खंभा संभालने के लिए आता और मकान के किवाड़ खट-खटाता। घर वाले दरवाजा खोल देते। सेठ कुछ देर तक खंभे के पास बैठा रहता और फिर घरवालों को बिना कहे ही चला जाता एवं घर का दरवाजा खुला ही छोड़ जाता। इससे हमेशा चोरी की आशंका बनी रहती, लेकिन सेठ को इससे कोई मतलब नहीं था। मकान खरीदने वाले के लिये मुसीबत खड़ी हो गई और उसने क्रय मूल्य पर ही वह मकान सेठ को वापिस बेच दिया।

१७८२. डोकरी कै कंये सँ खीर कुण रांधै ?

बुढ़िया के कहने से खीर कौन रांधता है ?

किसी नगण्य और उपेक्षित आदमी की इच्छा पूर्ति की कोई परवाह नहीं करता।

१७८३. डोकरी माई ! अै मुसाण कीं का ? 'क आया गयां का।

किसी ने पूछा कि बुढ़िया माई, ये मसान किन के हैं ?

बुढ़िया ने उत्तर दिया कि आने-जाने वालों के।

१७८४. डोकरी माई ! तूं डाकण है तो रायसलिये को काळजो खाले।

खंडेला पर कभी निरवाण चौहानों का अधिकार था। कहा जाता है कि रायसल (दरबारी) खंडेला व्याहे थे और इन्होंने छल से खंडेला पर अधिकार कर लिया था। निरवाणों में इतनी शक्ति नहीं थी कि वे बल पूर्वक पुन: खंडेला पर अधिकार करलें। इसलिए जब वे किसी बुढ़िया को देखते तो कहते कि डोकरी माई ! यदि तू डाकिन है तो रायसल का कलेजा खाले।

१७८५. डोळ जिसा पंचोळ।

अपने डौल के अनुसार ही पंचायती।

१७८६. ढक दिया ताळा, बैठग्या रुखाळा।

आदमी बूढा और अशक्त हो जाता है तो घर में बहू-बेटों की चलने लगती है। वृद्ध माँ-बाप अपनी इच्छा से कुछ भी खर्च, दान-पुण्य आदि नहीं कर पाते।

रू० जड़ दिया ताळा, बैठग्या रुखाळा।

१७८७. ढब्बां खेती, ढब्बां न्याव।

ढब से ही खेती होती है, ढब से ही न्याय होता है।

रू० ढब्बां खेती, ढब्बां न्याव, ढब्बा हो बूढै को ब्याव।

१७८८. ढांढा मारण, खेत सुकावण, तूं क्यूं चाली आधै सावण ?

आधा सावन बीत जाने पर नागोरण हवा का चलना पशुओं और खेतों के लिए हानिप्रद होता है।

रू० नाड़ा टांकण, बळद विकावण, तूं क्यूं चाली आधै सावण ?

१७८९ डूंगां में लंगोटी कोनी अर जै बोलो तम्बू की।

पहनने के लिए लंगोटी नहीं और जय बोलते हैं तम्बू की।

१७९०. ढेढ को गाडो सं सें आगै चालै।

ढेढ का गाड़ा सबसे आगे चलता है।

मंदी वस्तु सबसे पहले विकती है।

१७९१. ढेढ को मन ल्हपावड़ै में रैवै।

ल्हपावड़ा = गुड़ और मामूली घी या तेल से बना एक घटिया खाद्य पदार्थ।

१७९२. ढेढणी, अर भींव्योड़ो भावै कोनी !

ढेढनी और किसी का छुआ खाती नहीं !

१७९३. ढेढणी के बोलै, चरू बोलै।

ढेढनी क्या बोलती है, चरू ही बोलती है।

चरू = टोकनी, देग।

संदर्भ कथा—एक चमारी अपने गाँव के ठाकुर के यहाँ गाय-भैंस का काम करने के लिए जाया करती थी। एक दिन उसने ठुकरानी को उदास देखकर पूछा कि आज आप उदास क्यों हैं ? ठुकरानी ने कहा कि लड़की विवाह योग्य हो गई, लेकिन कोई सम्बन्ध नहीं हो रहा है। इस पर चमारी ने कहा कि इसमें उदास होने की क्या बात है ? मेरे एक लड़का है जिसकी जोड़ी आपकी बेटी के साथ खूब फबेगी। चमारी की बात सुनकर ठुकरानी को गुस्सा तो आया, लेकिन वह कुछ बोली नहीं। दूसरे दिन भी वही बात हुई तो ठुकरानी ने ठाकुर से कहा। ठाकुर बोला कि इसमें कोई न कोई रहस्य है। जिस जगह पर खड़ी होकर चमारी ने ठुकरानी से बात की थी, ठाकुर ने वह जगह खुदवाई तो वहाँ द्रव्य से भरी एक 'चरू' निकली। ठाकुर ने ठुकरानी से कहा कि चमारी क्या बोलती थी, यह चरू ही बोलती थी अर्थात् इस द्रव्य के बल पर ही वह ऐसी बहकी-बहकी बातें करती थी। अगले दिन चमारी आई तो ठुकरानी ने उसके लड़के की बाबत पूछा। लेकिन आज ठुकरानी की बात सुनकर वह सकपका गई और अपने पूर्व कथन के लिए माफी मांगने लगी।

१७९४. ढेढणी ही अर रावळै जा आई !

ढेढनी थी और रनिवास में जा आई, अब किसको क्या समझे ?

१७९५. ढेढ नै कूवै में भी वेगार ।

चमार को कुएँ में भी वेगार ।

संदर्भ कथा—नित्य की वेगार से उकता कर एक चमार कुएँ में गिर पड़ा। लेकिन कुएँ में रहने वाले मेंढक को जब यह पता चला कि यह तो चमार है तो उसने उससे कहा कि जरा ये सिवार साफ कर दो, मैं तैरूंगा ।

रू० ढेढ नै मुरग में भी वेगार ।

१७९६ ढेढां दिवाळी आ'री है ।

१७९७. ढोल में पोल है ।

ऊपर दिखावा अधिक है, लेकिन अन्दर पोल है ।

१७९८. ढोसी का डूंगर चीकणा होता तो नारनौळ का कुत्ता कदई का चाट ज्याता ।

ढोसी के पहाड़ चिकने होते तो नारनौल के कुत्ते कभी के चाट जाते ।

ढोसी की पहाड़ी नारनौल के पास है । कहा जाता है कि च्यवनऋषि का आश्रम यहीं था ।

१७९९. तंगी में कुण संगी ?

तंगदस्ती में कोई साथ नहीं देता ।

१८००. तन रूड़ो, मन कूड़ो ।

तन सुन्दर, किन्तु मन मैला ।

१८०१. तनै पराई के पड़ी, तूं तेरी तो नमेड़ ।

तुझे दूसरे की क्या पड़ी ? अपना घर तो सम्भाल !

पद्य—बाजण दे वजंत्री, कुलंत्री न छेड़ ।
तनै पराई के पड़ी, तूं तेरी तो नमेड़ ।

१८०२. तनै हुकहुकी आवै तो मनै लुटलुटी आवै ।

तेरे से बोले विना नहीं रहा जाता, तो मेरे से लोटे विना नहीं रहा जाता ।

सन्दर्भ कथा—एक ऊंट जंगल में चरा करता था । वहीं एक गीदड़ भी रहता था । पास में ही एक नदी बहती थी । गीदड़ को इस बात का पता था कि नदी के दूसरे किनारे के खेतों में घास बहुत अच्छी है, लेकिन वह स्वयं नदी को पार नहीं कर सकता था । इसलिये उसने ऊंट को मित्र बना लिया । रात को ऊंट ने गीदड़ को अपनी पीठ पर बिठला कर नदी पार की और दोनों उस किनारे के खेतों में चरने लगे । गीदड़ का पेट

जल्दी भर गया। अब उसे इस बात की चिंता नहीं रही कि ऊंट का पेट भरा है या नहीं। इसलिए उसने ऊंट से कहा कि मुझे 'हुक हुकी' लगी है और मैं बोले बिना नहीं रह सकता। ऊंट ने उत्तर दिया कि मैं तो अभी भूखा हूं, मुझे पेट भर चर लेने दो। लेकिन गीदड़ नहीं माना और ऊंचा मुंह करके जोरों से बोलने लगा। उसकी आवाज सुनकर किसान लट्ठ लेकर आया। गीदड़ तो छिप गया, लेकिन ऊंट कहाँ छिपता? किसान ने ऊंट को खूब पीटा और उसे नदी की तरफ भगा दिया। गीदड़ भी वहाँ आ पहुँचा। ऊंट ने उसे अपनी पीठ पर बिठला लिया। लेकिन जब वह मँझधार में पहुँचा तो ऊंट ने गीदड़ से कहा कि मुझे तो 'लुट लुटी' लगी है, इसलिए मैं तो यहां लोटूंगा। गीदड़ ने बहुत मना किया, लेकिन ऊंट नहीं माना। वह वहीं लोट गया, जिसके फलस्वरूप गीदड़ उसकी पीठ पर से गिर कर नदी में डूब गया।

१८०३. तपेसरी सो राजेसरी, राजेसरी सो नर केसरी।

पूर्व जन्म की तपस्या से ही मनुष्य राजा और नर शार्दूल बनता है।

१८०४. तरवार को घाव भरज्या पण बोली को घाव कोनी भरै।

समय पाकर तलवार का घाव भर जाता है, लेकिन बोली का घाव आजन्म नहीं भरता।

१८०५. तळै पड्यो हूं, पण टांग तो मेरी ई ऊपर है।

नीचे पड़ा हूँ, लेकिन टांग तो मेरी ही ऊपर है।
हारते हुए भी अपनी जीत का झूठा दावा करना।

१८०६. तवै की काची नैं, सासरै की भाजी नै कठैई ठोर कोनी।

तवे पर कच्ची रह गई रोटी खाने योग्य नहीं और सुसराल से भगी स्त्री के लिए समाज में कोई स्थान नहीं।

१८०७. तवै परली तेरी, चूलै मांयली मेरी।

चूल्हे में सिकने वाली रोटी मेरी और तवे वाली तेरी, अर्थात् पहले मैं रोटी लेलूं, बाद में तुम भी ले लेना।
रोटी पहले तवे पर सेंकी जाती है और फिर अंगारों पर।
जब घर में तंगी हो और खाने वाले अधिक हों तब पहल के लिए स्पर्धा होनी स्वाभाविक है।
तु० तवै चढे नैं धाड़ खाय।

१८०८. ताखड़ी आगै साच है।

कम-अधिक का निर्णय तकड़ी स्वयं कर देगी।
यह न तुम्हारी बात रखेगी, न मेरी।

१८०९ तातो खावै छायां सोवै, वीं को वैद पिछोकड़ रोवै ।

जो सदा गरम खाना खाता है और छाया में सोता है, उसे वैद्य की आवश्यकता क्यों पड़े ?

१८१०. तातो खायो कोनी, रातो पैरयो कोनी ।

निकम्मे पति के प्रति पत्नी की उक्ति—तुम्हारे पीछे आकर न कभी गरम भोजन नसीब हुआ, न पहनने को समुचित वस्त्र ।

रू० (१) तातो कवो न मुख भख्यो, कदे न रातो वेस ।
जैसो कंतो घर रह्यो, वैसो ही परदेस ।।
(२) पिउ पासे सूता थकां, हेज नईं लवलेस ।
जिसड़ो कंतो घर रैयो, विसड़ो ई परदेस ।।

१८११. तानो सीर को होवै ।

ताना पूरे समाज या परिवार पर लागू पड़ता है ।
रू० भूंड तो सीर की होवै ।

१८१२ ताळी लाग्यां ई ताळो खुळै ।

सही चाबी लगने से ही ताला खुलता है ।
यथोचित जरिये से ही काम बनता है ।

१८१३. तार टूट्यो अर राग पूरी होई ।

तार टूटा और राग पूरी हुई ।
सांस टूटी और जिन्दगी का खेल खत्म हुआ ।

१८१४. तावड़े में बैठ कर धोळा कोनी करया ।

धूप में बैठ कर बाल सफेद नहीं किये हैं ।

१८१५. तावड़ै में 'मे बरसै, भूत भूतणियां को ब्या होवै ।

धूप में जब बूंदा-बांदी होती है, तब भूत-भूतनियों के विवाह होते हैं ।

१८१६. तिरिया चिरत न जाणै कोय, खसम मार कर सत्ती होय ।

नारी-चरित्र को कोई नहीं जान पाता । एक कुलटा नारी स्वयं अपने पति की हत्या करके भी अपने को लोक में शीलवती (सतवंती) सिद्ध करने के लिए पति के मृत शरीर के साथ सती हो जाती है ।
नारी-चरित्र संबंधी अनेक लोक कथाएँ प्रचलित हैं ।

१८१७ तिरिया तेरा, मरद अठारा ।

स्त्री १३ वें वर्ष से और पुरुष १८ वें वर्ष से युवावस्था की ओर उन्मुख होने लगता है ।

१८१८ तिरिया तेल हमीर हठ, चढै न दूजी वार ।
विवाह से पूर्व भावी वधू को एक ही बार तेल चढ़ाया जाता है । इसी प्रकार हठीला हम्मीर भी अपनी बात पर अडिग रहा है ।
यह कहावत रणथंभोर के चौहान नरेश हम्मीर से संबंधित है, जिसने शरणागत की रक्षा हेतु अपने वचन का पालन करने के लिए अलाउद्दीन खलजी जैसे प्रचंड सुल्तान से जम कर लोहा लिया और प्राण देकर भी अपने वचन का पालन किया ।
रू० सिंघ संग सापुरष वच, केल फळै इक वार ।
तिरिया तेल हमीर हठ, चढै न दूजी वार ।।

१८१९. तिथ टूटै, वार कोनी टूटै ।
तिथि ही टूटती है, वार कभी नहीं टूटता ।
संदर्भ कथा—एक वर्ष अकाल पड़ा तो एक किसान अपने परिवार को लेकर अपनी बहिन के यहाँ गया क्योंकि उसकी तरफ जमाना अच्छा था । लेकिन बहिन ने भाई को नहीं रखा । अगले वर्ष बहिन के यहाँ अकाल पड़ा एवं भाई के यहाँ अच्छा जमाना हुआ तो बहिन अपने बाल-बच्चों को लेकर भाई के घर आ गई । भाई ने उन सब को अपने यहाँ रखा और उनकी यथोचित सहायता की । इस पर बहिन ने लज्जित होकर कहा—
वखत पड़यां रै वीर, तूं म्हांनै मोटा करया ।
तिथ टूटै रै वीर, वार कदे टूटै नईं ।।

१८२०. तिल तिड़क्या, दिन भड़क्या ।
मकर सक्रांति पर तिल का प्रयोग विशेष रूप से होता है । इसलिए उसे 'तिल संकरांत' भी कहते हैं । मकर संक्रांति (जो प्राय: १४ जनवरी को ही पड़ती है) से सूर्य उत्तरायण आने लगता है जिससे दिन शनैः शनैः बढ़ने लगते हैं और वातावरण में उष्मा आने लगती है ।

१८२१. तिसायो होसी जिको मत्तै ई कूवै आ ढुकसी ।
जो प्यासा होगा, वह स्वयं ही कुएँ के पास आ जाएगा ।
कुआँ कभी प्यासे के पास नहीं जाता ।
गरजमन्द स्वयं ही गरज पूरी करने वाले के पास पहुँचता है ।

१८२२. तीज तिवारां बावड़ी, ले डूबी गणगौर ।
सावन शु. तीज से त्यौहारों का प्रारम्भ हो जाता है और गनगौर (चैत्र शु. ३) के साथ उनका समापन हो जाता है अर्थात् गनगौर के बाद हरियाली तीज तक त्यौहार बहुत कम आते हैं ।

१८२३ तीतर कै मूंडै कुसळ है ।
तीतर के मुंह कुशल है अर्थात् अमुक व्यक्ति जो कहदे वही ठीक है ।

१८२४. तीतर छोड बणी में दीन्या भटजी भया निराळा ।

भट्टजी ने तीतर पाल रखे थे जिन्हें खिलाने-पिलाने का झंझट सदा बना रहता था । जब उन्होंने उन्हें वन में छोड़ दिया तो वे उनसे एक बारगी ही निवृत्त हो गये ।

१८२५ तीतर जाणैं तीतर की, मैं जाणूं तेरै भीतर की ।

एक तीतर दूसरे तीतर की बात जानता है और मैं तेरे मन की गुप्त बात को जानता हूँ ।

१८२६. तीतर पंखी बादळी, विधवा काजळ रेख ।
वा बरसै वा घर करै, ईं में मीन नं मेख ॥

आकाश में तीतर पंखी बादली छाये और विधवा अपनी आंखों में काजल सारे तो यह निश्चित है कि बदली तो बरसेगी और विधवा नया पति करेगी ।

१८२७. तीतर बोल्यो बोळा, कै पंदरा कै सोळा ।

तीतर ने बहुत अधिक कहा तो या तो पन्द्रह या सोलह ।

हैसियत के अनुसार ही अनुमान ।

१८२८. तीन बुलाया तेरा आया, भई राम की बाणी ।
राघो चेतन यूं कहै, दे दाळ में पाणी ॥

तीन को भोजन का निमंत्रण दिया और तीन के स्थान पर तेरह आ गये तो अब इसका यही उपाय है कि दाल में पानी ठेल दो ।

१८२९ तीन लोक सें मथरा न्यारी ।

तीनों लोकों से मथुरा न्यारी ही है ।

रू० ईं की गोकल सें मथरा न्यारी ई है ।

१८३०. तीर नईं तो तुक्को ई सही ।

तीर नहीं तो तुक्का ही सही ।

१८३१. तीसरो सूको, आठवों अकाळ ।

राजस्थान की मरु भूमि में औसतन तीसरे वर्ष सूखा एवं आठवें वर्ष अकाल पड़ जाता है ।

१८३२. तुरक की यारी, तूंबै की तरकारी, अन्त खारी को खारी ।

तूंबा = एक अत्यंत खारा फल ।

१८३३. तुरकणी कै रांधेड़ै में के फरक पड़ै, जिकी चाख-चाख कर रांधै ।

तुर्किन के रांधे हुए में क्या फर्क पड़ सकता है ? क्योंकि वह पकाये जाने वाले पदार्थ को बीच-बीच में चख कर देखती रहती है ।

रू० तुरकणी कै कात्योड़ै में ईं फिदड़को ?

१८३४ तुरत दान महा पुन्न ।
यथा अवसर तुरत-फुरत दान करने से महापुण्य होता है ।
रू० तुरत दान महापुन्न, करै सो पावै ।
हाथ को दियो, कठै ई नईं जावै ॥

१८३५ तुलै बूचकी तीखा कान ।
फुर्ती से नौ-दो ग्यारह हो जाना ।

१८३६. तूं आंटोलो मैं अणखोली क्यूंकर होय खटाव ?
जब पति-पत्नी दोनों ही अकड़ैत हों तब निर्वाह कैसे हो ?
दोनों ही पक्ष अपनी-अपनी ऐंठ पर अड़े रहें तो बात नहीं बन सकती ।

१८३७ तूं आप फिरै उघाड़ै तणै ।
तू स्वयं ही नंगे वदन डोल रही है तो दूसरों को वस्त्र क्या देगी ?
सदर्भ कथा—एक बिल्ली बूढी और अशक्त हो गई । अब चूहे उसकी पकड़ में नहीं आते थे । इसलिए उसने एक चूहे के बिल के पास जाकर चूहे को पुकारते हुए कहा कि हे अभागे चूहे, तेरे पास न पहनने के लिए झुग्गा है, न सिर पर ओढने के लिए पाग; यदि तू मेरे पास आये तो मैं दोनों चीजें तुझे देदूं---
आ रै चूसिया निरभाग, तनै झुग्गो दयूं अर पाग ।
लेकिन चूहा समझदार था । उसने बिल में से ही कहा—
तूं के कातै तूं के बुणै, तूं आप फिरै उघाड़ै तणै ।
अर्थात् तू क्या कातती है, क्या बुनती है और जब तू स्वयं ही नंगे वदन डोल रही है तब मुझे झुग्गा और पाग कहाँ से देगी ?

१८३८. तूं ई तो देखण जोगी ही अर तूं ई काको कै बैठी ।
साथ की सब स्त्रियों में तू ही तो देखने योग्य (खूबसूरत) थी और तू ही काका कह बैठी ! अब तो रिश्ता ही दूसरा बन गया ।

१८३९. तूं ई राणी मैं ई राणी, कुण घालै चूल्है में छाणी ?
तू भी रानी, मैं भी रानी, अब चूल्हे में आग कौन जलाये ?
साझे के घर में जब अनेक स्त्रियां होती हैं तब कोई भी घर का काम नहीं करना चाहती । हर स्त्री यही सोचती है कि मैं क्यों करूं ? मेरी बला से !
रू० तूं ई राणी मैं ई राणी, कुण भरै पैंडै को पाणी ।

१८४०. तूं क्यूं रोवै नाई का, करम फूटग्या बाई का ।
नाई के बेटे, तू क्यों रो रहा है ? कर्म तो बाई (भावी वधू) के फूटे हैं ।
पुराने जमाने में नाई और ब्राह्मण आदि ही लड़के-लड़कियों का संबंध तय करवा देते थे । जब किसी नाई ने अपने यजमान की लड़की का संबंध किसी

अयोग्य लड़के के साथ करवा दिया तो उसे डांटने पर वह रोने लगा। इस पर किसी ने उपरोक्त वात कही जो कहावत वन गई।

१८४१. तूं क्यूं लाडो उणमणी, तेरै सेलो आळो साथ ?

माँ अपनी लाडली लड़की से कहती है कि—तू अनमनी क्यों है ? भाला धारण करने वाला तेरा पति तेरे साथ है।

१८४२. तूं डाळै-डाळै, मैं पान-पान।

तू डाल-डाल, मैं पात-पात।

१८४३. तू पी तूं पी करत ही, मिरगा तज्या पिराण।

तू पी, तू पी कहते-कहते ही हिरन-हिरनी मृत्यु को प्राप्त हुए।

संदर्भ कथा—हिरन और हिरनी वड़े प्यासे थे। उन्हें एक गड़हे में थोड़ा सा जल मिला जिससे कठिनाई से एक प्राणी की प्यास वुझ सकती थी। हिरन हिरनी में वड़ा प्रेम था। वे एक दूसरे से कहने लगे कि पानी तुम पीलो, तुम पीलो, लेकिन दोनों में से किसी ने पानी नहीं पीया और दोनों ही एक दूसरे की मनुहार करते करते ही मर गये। उनको मृत देख कर किसी स्त्री ने अपनी साथिन से पूछा कि न तो यहां कोई व्याध दिखलाई पड़ता है और न ही इनको कोई तीर लगा है, तब ये दोनों कैसे मर गये ? तब साथिन ने उसे पूरी घटना वतलाई। दोनों में हुआ संवाद यों है—

खड़्यो न दीखै पारधी, लग्यो न दीखै वाण।
मैं तनैं पूछूं हे सखी, ये किस विध तज्या पिराण ?
जळ थोड़ा नेहा घणां, लग्या प्रीत का वाण।
तूं पी तूं पी करत ही, मिरगा तज्या पिराण॥

१८४४. तूं वेस्यां, मैं भांड।

तू वेश्या है तो मैं भांड हूँ।

सन्दर्भ कथा—किसी धार्मिक पर्व का दिन आया तो एक वेश्या ने सोचा कि आज तो एक ब्राह्मण को भोजन करवा कर पुण्य लूटना चाहिए। लेकिन वेश्या के घर भोजन करने के लिए कोई ब्राह्मण तैयार नहीं होता था, इसलिए उसने एक खतरानी का वेश वनाया और उपयुक्त ब्राह्मण की खोज में निकल पड़ी। उधर एक भांड ने सोचा कि आज तो पर्व का दिन है, इसलिए कहीं भर पेट मिष्टान्न की तजवीज विठानी चाहिए। यों सोच कर वह तिलक-छापे लगा कर और पंडित का वेश वनाकर वाजार में आ वैठा। खतरानी रूपी वेश्या को वह ब्राह्मण वेश धारी भांड उपयुक्त लगा और उसे भोजन करवाने के लिए अपने घर लिवा लाई। उसने 'पंडितजी' को भर पेट भोजन करवाया। भोजन करवा चुकने के वाद उसने कहा कि हे ब्राह्मण

देवता ! मैं तो वास्तव में एक वेश्या हूँ। मेरे घर कोई ब्राह्मण भोजन करने के लिए नही आता था, इसीलिए मैंने खतरानी का वेश वनाया था। इस पर भांड ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया कि तुम इसके लिए जरा भी पश्चात'प न करो। तुम वेश्या हो तो मैं भी भांड हूँ। पर्व के दिन न्यौता देकर कोई भांड को जिमाता नहीं, इसीलिए मैंने भी जीमने की गरज से ही ब्राह्मण का वेश वनाया था—

तूं खतराणी मैं पांडियो, तूं वेस्यां मैं भांड।
तेरै जिमाये मेरै जीमे, पत्थर पड़सी रांड॥

१८४५. तूं रोवै रोटियां नै, मैं घलास्यूं दाळ।
तुम रोटी देने में ही भींक रही हो, लेकिन मैं दाल और लूंगा।

१८४६. तूं रोवै है छाक नै, मैं वूझण आई हूं 'क आटो उधारो कीं पां ल्याऊं?
तुम छाक के लिए कलप रहे हो, लेकिन मैं तो अभी यह पूछने के लिए आई हूँ कि रोटी बनाने के लिए आटा उधार किससे लाऊं?
छाक = खेत में काम करने वाले के लिए घर से पहुंचाया जाने वाला दो पहर का भोजन।

१८४७. 'तेरा कक्का भेळा होवै, जद सिरमाळी रोटी भेळा होवै।
जव तेरह ककार (कड़ायला, कुरछी, कामळिया आदि) एकत्र होते हैं, तव श्रीमाली भोजन करते हैं।

१८४८. तेरा करम ई तनै कुटावै।
तेरे कर्म ही तुझे कुटवाते हैं।

संदर्भ कथा—एक डोम बड़ा आलसी था। उसे भूख लगी तो रोटी वनाने के श्रम से वचने के लिए सूखा वाजरा ही चवा गया। भूख जोरों की लगी थी इसलिए उसे वाजरा वड़ा स्वाद लगा और चवाता ही चला गया। भर पेट खा लेने के वाद उसने कहा कि लोग व्यर्थ में ही वाजरे को कूटते है, पीसते है और रोटी वनाने का श्रम करते हैं, इसे तो यों हीं चवा लिया करें तो अच्छा हैं। लेकिन सूखा वाजरा अधिक मात्रा में चवा लेने से उसे 'पोखाळा' (अतिसार) हो गया और वह शौच जाते-जाते तंग आ गया। तव भुंझला कर वोला की अरी वाजरी, तुझे न कोई कूटे, न पीसे, लेकिन तेरे कर्म ही तुझे कुटवाते हैं।

१८४९. तेरा जायोड़ा भी कदे पगां चालसी के?
तुम्हारे जन्मे हुए भी क्या कभी अपने पैरों पर चलेंगे?
अकुशल व्यक्ति के ऊटपटांग कामों के प्रति व्यंग्य।

१८५०. 'तेरा दिनां को होवै पाख, तो अन मँहगो समझो वैसाख।
माह के किसी पक्ष में १३ दिन हों तो वैशाख में अन्न महँगा रहे।

१८५१. **तेरा बैंगण मेरी छा, भला मंगारया मेरी मा ।**
जो निठल्ला आदमी व्यर्थ में इधर-उधर की करता फिरे ।

१८५२. **तेरा मरग्या बादस्या, मेरा मरचा वजीर ।**
आये धानो घर करां, पड़ै दुनी में सीर ।।
धानी नामक विधवा के प्रति किसी विधुर की उक्ति—तेरा बादशाह (पति) मर गया है और मेरा वजीर (पत्नी) । इसलिए अब दोनों मिलकर नया घर बसालें जिससे हम भी दुनिया से अलग-थलग न रह कर उसमें मिल जाएँ ।
रू० तेरै हा दो बळदिया, मेरै ही दो टाली ।
तूं फिरै हो रांडियो, मैं थी बैठी ठाली ।।

१८५३. **तेरी मेरी बणै नां, तेरै बिना सरै नां ।**
तेरी मेरी बनती भी नहीं और तेरे बिना सरता भी नहीं ।
रू० तेरै बिना चैन नईं, तेरै सागै रै'ण नईं ।

१८५४. **तेरै मन कुछ और है, करता कै कुछ और ।**
आदमी कुछ सोचता है और भगवान् कुछ और ही कर देता है ।

१८५५. **तेरै ल्होड़िये नै नूंतो है, 'क मेरै तो सै ई ढाई सेरिया है ।**
एक आदमी ने किसी औरत से कहा कि तुम्हारे छोटे बेटे को न्योता है, उसे हमारे घर भोजन करने के लिए भेज देना । औरत ने उत्तर दिया कि छोटा और बड़ा क्या, मेरे तो सभी अढाई सेर भोजन करने वाले हैं ।
जब किसी घर में सभी भोजन-भट्ट हों ।

१८५६. **तेरो चून गंडकड़ा खा, मेरो हँसती को के जा ?**
तेरे आटे को कुत्ते खा रहे हैं, इस पर मेरे हँसने में क्या लगता है ?
दूसरे की हानि पर सन्तुष्ट और प्रसन्न होने की दुष्प्रवृत्ति ।

१८५७. **तैरो टको टंकूलड़ी, मेरो टको लाल ।**
दूसरे की चीज को क्षुद्र एवं अपनी चीज को बढाचढा कर बतलाना ।

१८५८ **तेरो तो घड़ो ई फूट्यो, मेरो बण्यो बणायो घर ढह्ग्यो ।**
तुम्हारा तो केवल घड़ा ही फूटा है, मेरा तो बना-बनाया घर ढह गया है ।
सदर्भ कथा—एक तेली तेल से भरा घड़ा लिए शहर की ओर जा रहा था । राह में उसे शेखचिल्ली मिला । तेली ने उससे कहा कि यह घड़ा अमुक स्थान तक ले चल, तुझे दो आने दे दूंगा । शेखचिल्ली ने घड़ा अपने कंधे पर उठा लिया और कल्पना लोक में ग़ोते लगाता हुआ चलने लगा तेली से मुझे जो दो आने मिलेंगे, उनसे अंडे लाऊंगा, अंडों में से जो बच्चे निकलेंगे, उनकी मुर्गियां बन जाएँगी; उन मुर्गियों को बेच कर एक बकरी लाऊंगा, उससे अनेक बकरियां पैदा होंगी; उन को बेच कर भैंस लाऊंगा और फिर

भैंस को बेच कर बीबी ले आऊंगा; बीबी के बच्चे होंगे और जब वे मेरे पास आकर कहेंगे कि अब्बाजान चलो, अम्मीजान खाना खाने को बुलाती हैं तो मैं उनसे अकड़ कर कहूँगा—चलो बे, अभी नहीं खाएँगे। यों कहने के साथ ही उसने हाथ का फटकारा लगाया तो घड़ा नीचे गिर कर फूट गया। तेली ने शेखचिल्ली से कहा कि यह क्या किया? शेखचिल्ली ने उसकी बात की उपेक्षा करते हुए संजीदगी से उत्तर दिया—तेरा तो घड़ा ही फूटा है, मेरा तो बना-बनाया घर ही ढह गया है।

रू० तूं तो वीं काळी कळूंटी (भैंस) नै ईं रोवै है, अठै तो केसर सा (मुर्गा) ढहग्या।

१८५९. तेरो माजणो धेलै को कर द्यूंगा, 'क घणी आच्छी बात, पैली तो छिदाम को ई थो।

"तेरी आबरू गँवा कर अधेले की कर दूंगा।"

उत्तर मिला, "अभी तक तो मेरी आबरू एक छदाम की ही थी, आप उसे बढा कर अधेले की कर देंगे, फिर और क्या चाहिए?"

छदाम = छः + दाम, पैसे का चौथाई भाग। दो छदाम का एक अधेला।

१८६०. तेरो यार मरग्यो, 'क किसी गळी को?

किसी ने किसी कुलटा से कहा कि तेरा यार मर गया। लेकिन कुलटा के तो अनेक यार थे, इसलिए उसने पलट कर पूछा कि कौनसी गली वाला?

१८६१. तेरो राज गयो, ईं को ईमान गयो।

किसी ने छल से नवाब का राज्य हथिया लिया तो मौलवी ने अपदस्थ नवाब को आश्वस्त करते हुए फतवा दिया कि तेरा राज्य चला गया तो क्या हुआ, उसका ईमान भी तो चला गया है।

१८६२. तेल जितणो खेल।

जितना तेल, उतना खेल।

नटों में लड़की को छुटपन से ही तेल पिलाना शुरू कर देते थे और उसके हाथ-पांव मोड़ते रहते थे जिससे उसके शरीर में अधिक लचक आ जाती थी और तमाशा दिखलाते समय वह अपने अंगों को विशेष रूप से मोड़ कर अधिक आकर्षण पैदा कर सकती थी।

१८६३. तेल तो तिलां में सैं ही निकळसी।

तेल तो तिलों में से ही निकलेगा।

पैसा तो असामी से ही प्राप्त होगा।

१८६४. तेल देखो, तेल की धार देखो।

तेल देखिये, तेल की धार देखिये।

संदर्भ कथा—एक महाजन का किसी तेली पर ऋण था। जब तेली ने रुपये नहीं दिये तो महाजन ने हाकिम के पास फरियाद की। हाकिम ने तेली को तलब किया तो तेली ने तेल का एक घड़ा हाकिम के घर भेज दिया। तब हाकिम ने महाजन से कहा कि तेली के पास रुपया होगा तब मिलेगा, तुम उसे तंग मत करो। इस पर महाजन ने एक मोहर हाकिम के पैर के नीचे सरकादी। अब महाजन का पक्ष मजबूत हो गया और हाकिम ने तेली को डाँटते हुए कहा कि तुझे सेठ के रुपये अभी देने होंगे। तेली ने अपने तेल के घड़े का स्मरण कराते हुए हाकिम से कहा कि तेल देखिये, तेल की धार देखिये। इस पर हाकिम बोला कि देखा तेरा तेल फुलेल, मेरे तलवे से और ही लग गई है।

१८६५ **तेल बाकळा मैरू पूजा।**
भैरों जी तेल और 'बाकळों' (सिजाये हुए मोठ) से ही प्रसन्न होते हैं।

१८६६. **तेली को तेल बळै, मुसालची की गांड बळै।**
तेल तो तेली का जलता है और मशालची व्यर्थ ही कुढ़ता है।

१८६७ **तेली को बळद सौ कोस चालै तो भी घरै को घरै।**
तेली का बैल रात-दिन घानी में चल कर भी वहीं का वहीं रहता है।

१८६८. **तेली सूँ खळ ऊतरी, रैई बळीतै जोग।**
तेली की घानी से उतरने के बाद खली जलाने योग्य ही रह गई।
रू० ठाकर सूँ घर छूटगी, भांडां लीनी भोग।
तेली सूँ खळ ऊतरी, रैई बळीतै जोग॥

१८६९. **तैरू की रांड होवै।**
कुशल तैराक भी कभी न कभी धोखा खा कर डूब जाता है जिसके फलस्वरूप उसकी औरत विधवा हो जाती है।
रू० घणा मेहा मिंदर चुवै, भूपति हो भाजन्त।
वैदां ही की रांड हुवै, तैरू डूब मरंत॥

१८७०. **तोलैगी जद रोवैगी।**
अब तो खुश है, लेकिन तौलने पर जब वास्तविकता का पता लगेगा तो रोयेगी।

सन्दर्भ कथा—एक औरत किसी धुनिये के पास कुछ रुई धुनवाने हेतु लाई। धुनिये ने उसमें से कुछ रुई चुरा कर रखली और शेष धुन कर उसे लौटा दी। धुनी जाने के कारण रुई फूल गई और अधिक दिखलाई पड़ने लगी। औरत मन ही मन खुश थी कि धुनिये ने भूल से अधिक रुई दे दी है। धुनिये ने उसकी बात ताड़ली और वह मन ही मन कह उठा—
हांसै है के रोवैगी, जद पलड़ै घाल पजोवैगी।

१८७१. तोळो वड़ो 'क रत्तो ?
तोला भारी या रत्ती ?
संदर्भ कथा—एक ठाकुर ने एक सुनार को अपने घर पर बिठला कर उससे गहना गढवाया। सुनार दिन भर गहना गढता रहता और ठाकुर की बाई बराबर उसके पास बैठी एक टक देखती रहती। उसकी आंखें भी बड़ी-बड़ी थीं जिससे सुनार ने समझा कि बाई बहुत कड़ी निगरानी रखती है। इसलिए उसे सोने में खोट मिलाने का साहस नहीं हुआ। जब सारा गहना गढा जा चुका तो बाई ने सुनार से पूछा—'सोनी जी, तोळा वड़ा या रत्ता' (वजन में तोला अधिक होता है या रत्ती) ? इस पर सुनार ने जान लिया कि यह तो निपट ना समझ है। इसलिए उसने मन ही मन कहा, 'बाई जी का तो फेर घड़ावरण का मत्ता।' फिर उसने प्रकट रूप में ठाकुर से कहा कि ठाकुर साहब गहना मेरे मन-मुआफिक नहीं बना है, इसलिए सारा गहना दुबारा गढ़ूंगा, भले ही इसमें मुझे दोहरा श्रम करना पड़े। ठाकुर ने स्वीकृति द दी और जब उसने दुबारा गहना गढा तो उसमें मन चाहा खोट मिला दिया।

१८७२. थां गत सो म्हां गत।
अब तो जो गति तुम्हारी होगी, वही हमारी भी होगी—(दो अभिन्न साथियों का पारस्परिक कथन)।
रू० तो गत सो मो गत।

१८७३ थारी म्हारी बोली में, इतरो ही फरक।
तूं तो कहै फरेस्ता अर मैं कहूं जरख॥
तुम्हारी और हमारी बोली में इतना ही फर्क है कि तुम जिसे फरिश्ता कहते हो, उसी को मैं जरख कहता हूँ।
सन्दर्भ कथा—किसी मुसलमान की कब्र को खोद कर एक जरख (लकड़बग्घा) उसकी लाश को निकाल कर ले गया। एक जाट ने उसे ऐसा करते देख लिया और उसने उसके घर जाकर उसके घर वालों से यह बात कही तो वे बोले कि कैसा जरख ? वह तो फरिश्ता था। इस पर जाट ने उपरोक्त कहावती पद कहा।
रू० बोली बोली को आंतरो, बोली बोली को फरक।
कोई कहे फरेस्ता, अर कोई कहे जरख॥

१८७४. थारै आया, कुण कुहाया।
तुम्हारे यहाँ आये और 'कौन' कहलाये।
संदर्भ कथा—चमारों के यहाँ विवाह था। निमन्त्रित लोग आते थे और खाना खाकर न्योते का रुपया देते जाते थे। पंच लोग खाट पर बैठे आने वालों की निगरानी कर रहे थे और न्योते के रुपयों का हिसाब भी रख

रहे थे। एक चमार ने खाना तो खूब डट कर खाया, लेकिन उसके पास न्योते में डालने के लिए रुपया नहीं था, इसलिए वह छिप कर पंचों की खाट के नीचे खिसक गया। लेकिन उसने खाना अधिक खा लिया था, अतः वह खाट के नीचे ही उलट-पुलट होने लगा। पंचों ने डांट कर पूछा कि खाट के नीचे कौन है? बस! चमार को बहाना मिल गया। वह खाट के नीचे से निकला और तड़ाक से बोला—तुम्हारे यहाँ आये तो 'कौन' कहलाये। अच्छा, कौन तो कौन ही सही। यों कह कर वह फुर्ती से चलता बना।

रू० कुण तो कुण ई' सरी।

१८७५. थारो म्हारो के रूसणो ?

तुम्हारा-हमारा क्या रूठना !

काम के समय तो बहाना लेकर रूठ जाए और खाने के समय मन जाए।

संदर्भ कथा—एक चुहिया घर का कोई काम-धंधा नहीं करती थी। एक दिन चूहे ने उसे पीट दिया तो वह नीम के नीचे जाकर सो गई। चूहा जब भी उसे किसी काम के लिए पुकारता तो वह कह देती—तुमने मुझे *पीटा क्यों था, अब मैं काम करने के लिए नहीं आती*

मनै मारी थी, मनै कूटी थी,
मैं नीम तळै जा सूती थी,
मैं क्यूं आऊं मेरो के लियो।

निदान चूहे ने घर का सारा काम अकेले ही किया। लेकिन खाना तैयार होने पर जब उसने चुहिया को खाने के लिए पुकारा तो वह झट से बोल पड़ी—मुँह धोकर अभी आ रही हूँ, भला आपका और मेरा कैसा रूठना ?

आऊं छूं जी आऊं छूं,
मुखड़ो धोकर आऊं छूं,
थारो म्हारो के रूसणो ?

१८७६. थावर कीजे थरपना, बुध कीजे ब्योहार।

स्थापना शनिवार को और व्यवहार बुधवार को प्रारम्भ करना चाहिए।

१८७७. थावर की थावर गाँव थोड़ा ई बळै ?

हर शनिवार को गाँव थोड़े ही जला करते हैं ?

ऐसा अंधविश्वास रहा है कि यदि शनिवार को गाँव में आग लग जाए तो कम से कम सात शनिवारों तक आग लगती है। लेकिन ऐसा नहीं हुआ करता। निपूती स्त्रियां पुत्र कामना की इच्छा से दूसरों के बहकावे में आकर या अंधविश्वास के कारण किसी के झोंपड़े में आग लगा देती थीं, यह काम शनिवार को किया जाता था। लेकिन हर शनिवार को ऐसा नहीं हो सकता।

१८७८. थोड़ो नफो घणी कुसळ ।

थोड़ा नफा लेकर माल बेचने में अधिक कुशल है ।

१८७९. थोथा पिछोड़ै, उड़-उड़ जाए ।

थोथे अनाज को सूप द्वारा फटकने पर सारा अनाज उड़ उड़ के चला जाता है ।

सारहीन काम करने से कोई लाभ नहीं होता ।

१८८०. थोथी चिड़ी कपूरी नांव ।

झूठ मूठ का आडम्बर ।

रू० (१) एक तिल अर मांय सैं काणों, रात्यूं पीव चलायो घाणो ।
ले ले कुलड़ा उलट्यो गांव, थोथी चिड़ी कपूरी नांव

(२) एक टाट नौ जणां सीर, नितकी जेठ रंधावै खीर ।
सवारी उठके नूंतै गांव, थोथी चिड़ी कपूरी नांव ।।

१८८१. थोथो चणो, बाजै घणो ।

थोथा चना अधिक आवाज करता है ।

मूर्ख व्यक्ति अधिक बोलता है ।

रू० च्यार बीछिया टन-टन बाजै, नो मण काजळ नैण विराजै ।
झीणो घूंघट नखरो घणो, थोथो चणो बाजै घणो ।।

१८८२. थोथो थूक बिलोणैं सें गरज कोनी सरै ।

थोथी बातें बनाने से गरज पूरी नहीं होती ।

रू० थूक का पकोड़ा उतारयांई गरज कोनी सरै ।

१८८३. थोथो संख पराई फूंक सें बाजै ।

थोथा शंख दूसरे की फूंक से बजता है ।

जिसमें गांठ की अक्ल न हो, वह दूसरों के कहे अनुसार ही कहता और करता है ।

१८८४ दक्खण धनुष करै मेह हाण, बिग्रह टीडी पड़ै सुकाण ।

दक्षिण दिशा में इन्द्र धनुष दिखलाई पड़े तो अकाल व उत्पात हों ।

१८८५. दगाबाज दूणो नवै, चीतो चोर कबाण ।

धोखेबाज, चीता, चोर और धनुष जितने अधिक झुकते हैं, उतने ही अधिक घातक होते हैं ।

नवनि नीच कै अति दुखदाई । जिमि अंकुस धनु उरग बिलाई ।

रू० नमण-नमण बहु आंतरो, नमण नमण बहु बाण ।
अै तीनूं अधका नवै, चीता चोर कबाण ।।

१८८६. दगो कँईं को सगो नईं ।

दगा किसी का सगा नहीं ।

सन्दर्भ कथा—एक पंडित नित्य राजा को कथा सुनाने जाया करता था। राजा ने पंडित से कहा कि कथा सुनने के लिए मेरे पास अधिक समय नहीं रहता, इसलिये आप मुझे सार रूप में ही कथा सुना दिया करें। पंडितजी सार रूप में दो बातें कह दिया करते—दगा किसी का सगा नहीं; करंता सो भोगंता। राजा उसे सोने की एक मोहर दे दिया करता। यह देख कर राजा के नाई को बड़ी डाह हुई। उसने पंडित का पत्ता काटने की युक्ति सोची और अगले ही दिन उसने पंडित की भर्त्सना करते हुए कहा कि तुम काहे के पंडित हो ? राजा मांस खाता है, शराब पीता है और तुम उसके मुँह में मुँह दिये रहते हो। जब राजा तुमसे बात करता है तो उसके मुँह की हवा तुम्हारे मुँह में जाती है, जिससे तुम्हारा भी धर्म भ्रष्ट होता है। इसलिए कल से मुँह पर पट्टी बांध कर आया करो। पंडित को राज-नाई की बात उपयुक्त लगी और उसने हाँ भरली। उधर नाई ने राजा से कहा कि महाराज ! आपने यह कैसा पंडित रख रखा है ? यह तो कहता है कि राजा के मुँह से बड़ी दुर्गन्ध आती है, इसलिए कल से मुँह पर पट्टी बांध कर आया करूंगा। यह बात राजा को बड़ी बुरी लगी और उसने पंडित को दण्ड देने का निश्चय कर लिया।

अगले दिन पंडित अपने मुँह पर पट्टी बांध कर आया और कथा सुना कर जाने लगा तो राजा ने उसे एक की बजाय दो मोहरें दीं और साथ ही उसे एक चिट्ठी भी दी कि यह चिट्ठी अभी कोतवाली जाकर कोतवाल को दे देना। पंडित बाहर निकला तो दरवाजे के बाहर ही उसे नाई मिला। उसने एक मोहर नाई को दे दी और उससे कहा कि यह चिट्ठी तुम कोतवाल को दे आओ। नाई खुश हो गया और चिट्ठी लेकर कोतवाली गया। कोतवाल ने चिट्ठी पढ़ी और नाई को पकड़ कर झट से उसकी नाक काटली, क्योंकि चिट्ठी में राजा ने कोतवाल के नाम यही आदेश लिखा था कि चिट्ठी लाने वाले की नाक तुरन्त काटली जाए। इस प्रकार नाई को दगा करने का फल मिल गया—

दगा किसी का सगा नहीं, कर देखो रे भाई।
चिट्ठी उतरी बामण ऊपर, नाक कटायो नाई ॥

१८९०. दगो करयो वणिये की जोय, पूत खसम नै लीनो रोय ।

१८८७. दड़ूको क्यूं 'क सांड हां।
पोटा क्यूं करो 'क गऊ का जाया हां।
दड़ोकते क्यों हो ? सांड हैं।
गोबर क्यों फेंकते हो ? गाय के जाये हैं।
विरोधी को निर्बल देख कर गरजने लगते हैं और सबल देखकर मेमियाने लगते हैं।

१८८८ दद्दो तो जाणूं नईं, लल्लै आखर सार।
कभी कुछ देना तो सीखा ही नहीं, यहां तो केवल लेना ही सार है।

१८८९. दबी चुस्सी कान कटावै।
दबा हुआ आदमी हानि सहन करने के लिए विवश होता है।

१८९०. दमड़ां को लोभी बातां सें कोनी रीझै।
धन का लोभी बातों सें सन्तुष्ट नहीं होता।

१८९१. दमड़ी का कामण फळसै ताईं चालै।
दमड़ी के 'कामण' (टोने) फलसे तक ही प्रभावी रहते हैं।
मामूली मूल्य की वस्तु का प्रभाव भी नगण्य होता है।
दमड़ी = एक पैसे का आठवां भाग।

१८९२ दमड़ी का छाणां, धुवांधार मचाई।
एक दमड़ी के कण्डे जला कर धुआंधार मचादी।
व्यर्थ का आडम्बर।

१८९३. दया-मया है 'क ?
'क दोनूं ईं भाजगी।
स्वामीजी का कोई भक्त बड़े समय बाद दिसावर से लौटा तो उसने स्वामीजी को प्रणाम करते हुए उनसे पूछा कि महाराज ! हम पर दया-मया तो है न ? बाबाजी खिसिया कर बोले—दोनों ही भग गईं।

संदर्भ कथा—एक स्वामीजी के पास दया और मया नामक दो चेलियां रहती थीं। बाद में उन्होंने कृपाराम नामक एक नवयुवक को चेला बनाया तो वह उन दोनों को ले भागा। स्वामीजी इस बात से बड़े दुखी थे। एक दिन स्वामीजी का कोई श्रद्धालु भक्त काफी समय बाद उनके दर्शन करने आया तो उसने सहज भाव से उनसे पूछा कि महाराज ! हम पर दया मया तो है न ? स्वामीजी चुप रहे। तब भक्त ने फिर पूछा—क्यों महाराज ! बोले कैसे नहीं, कृपा तो है न ? अब स्वामीजी का दुःख उबल पड़ा और वे झल्लाकर बोले – अरे, वह दुष्ट 'कृपन्या' ही तो दया-मया को भगा कर ले गया।

१८९४. दरजियां आळी पाल मार दी ।

दर्जियों वाली पाल मार डाली ।

संदर्भ कथा—जोधपुर नगर के पास पाल नाम का गाँव है । एक बार जोधपुर से कुछ दर्जिनें जंगल में कण्डे बीनने गईं तो पाल के किसी आदमी ने उनसे कण्डे छीन लिये । इस पर दर्जी उत्तेजित हो उठे और गज व कतरनी ले लेकर पाल मारने को चले । चलते-चलते रात हो गई तो वे सब गांव के बाहर ही एक लम्बी कतार में इस प्रकार सो गये कि एक का सिर दूसरे की टांगों के नीचे रहे । किन्तु जो दर्जी पंक्ति में सबसे आगे था, उसने सोचा कि लड़ाई होने पर मैं ही सबसे पहले न मारा जाऊँ और वह अपनी जगह से उठकर सबसे अन्त में आ सोया । दूसरे और तीसरे ने भी वैसा ही किया और फिर तो रात भर यही क्रम चलता रहा । यों करते करते सवेरा हुआ तो उन्होंने देखा कि वे तो जोधपुर नगर के दरवाजे तक आ पहुँचे हैं । अब सबने सलाह की और यह तय रहा कि आज तो घर चलो, फिर कभी मौका लगाकर पाल पर हमला करेंगे ।

१८९५. दलाल कै दिवाळो नईं मसीत कै ताळो नईं ।

दलाल का दिवाला नहीं पिटता, क्योंकि वह घर की पूँजी लगाकर काम नहीं करता और मस्जिद के ताला नहीं लगाया जाता क्योंकि वहां चोर आयेगा भी तो क्या ले जाएगा ?

१८९६. दसां डावड़ो, बीसां बावळो, तीसां तीखो, चाळीसां चोखो, पचासां पाको, साठां थाको, सतरां सूळो, अस्सी लूलो, नब्बै नांगो, सोवां तो भागो ई भागो ।

मनुष्य की पूर्ण आयु सौ साल की मानी गई है । प्रथम दस वर्ष की अवस्था तक वह बालक रहता है, बीस वर्ष तक अल्हड़पन, तीस तक तेज, चालीस तक पूरा समझदार बनता है, पचास तक परिपक्व हो जाता है, साठ तक थकने लगता है, सत्तर तक जर्जर होने लगता है, अस्सी तक घुटनों आदि में दर्द रहने के कारण पंगु जैसा हो जाता है, नब्बे तक कपड़े-लत्ते की सुध-बुध खोने लगता है, और सौ में तो महाप्रयाण कर जाता है ।

संदर्भ कथा—ब्रह्माजी ने सृष्टि की रचना की तो उन्होंने आदमी, बैल, कुत्ता और घुग्घू (उल्लू) चारों को चालीस-चालीस साल की उम्र प्रदान की । आदमी ने तो कहा कि मुझे चालीस वर्ष की उम्र बहुत कम दी गई है, लेकिन शेष तीनों ने कहा कि हमारी उम्र बहुत लम्बी कर दी गई है । इसलिये उन तीनों ने अपनी उम्र में से बीस-बीस साल की उम्र आदमी को दे दी ।

जब आदमी पृथ्वी पर आया तो उसने अपनी उम्र के चालीस वर्ष तो खूब अच्छी तरह बिता दिये। लेकिन आगे के बीस वर्ष उसे बैल से उधार मिले थे, इसलिये वह अपने परिवार के पालन-पोषण में बैल की तरह खटने लगा। वह साठ का हो गया तो अब उसे बीस वर्ष कुत्ते की आयु के बिताने थे। अब बेटे सयाने हो गये थे और अपनी इच्छा के मुताबिक चलने लगे थे। बाप उन्हें टोकता तो बेटे कहते कि आप दिनभर (कुत्ते की तरह) भौं-भौं मत किया करिये। यों मन मारकर उसने कुत्ते की आयु पूरी की। अब वह अस्सी वर्ष का हो गया तो उसे घुग्घू की आयु के बीस वर्ष मिले। उसके अंग शिथिल हो गये, आँखों से दिखलाई देना बन्द हो गया और वह घुग्घु की तरह आंखें बन्द कर मृत्यु की प्रतीक्षा करने लगा।

१८९७. **दांतण करयां सवारै न्हायां, रिण काढ्यां अर बैर बुझायां।**
मेह बरस्यां अर बेटो जायां, आणंद होय छः बात बणायां॥
प्रातःकाल दाँतुन करना, नहाना, ऋण मुक्त होना, वैर मिटाना, मेह बरसना *और पुत्र-जन्म, ये छहों बातें आनंद दायिनी होती हैं।*

१८९८. **दांत भलाई टूट ज्यावो, 'लो कोनी चबै।**
दांत भले ही टूट जाएँ, लोहे को नहीं चबाया जा सकता।

१८९९. **दांतलै खसम को रोवतै को बेरो पड़ै न हांसतै को।**
दंतुले पति का कुछ पता ही नहीं चलता कि वह रो रहा है या हँस रहा है।

१९००. **दाई रांड मांगत का ई लेगी।**
अकर्मण्य और निठल्ले व्यक्ति के प्रति व्यंग्य।
रू० दाई टक्को लेगी अर जाती कूंडो फोड़गी।

१९०१. **दाई सैं पेट छाना कोनी।**
दाई से सगर्भा स्त्री का पेट छिपा नहीं रहता।
हमसे क्या छिपाते हो, हम सब जानते हैं।

१९०२. **दाणां चुगती मोडी मारी, गादड़ मारयो तीस्यो।**
अबकै खोज बड़ां का लीन्या, जड़ा मूळ सैं जास्यो॥

सन्दर्भ कथा—किसी ठाकुर ने दाने चुगती हुई एक कमेड़ी (पंडुकी) मारली और फिर तालाब पर पानी पीने के लिये आये हुए एक गीदड़ को मार लिया। अब वह अपने को बड़ा वीर-बहादुर समझने लगा। एक दिन उसने जंगल में शेर के खोज (पद चिन्ह) देखे तो शेर की शिकार करने की मंशा से उन खोजों के पीछे-पीछे चलने लगा तो किसी ने उपरोक्त कहावती पद कहा कि कमेड़ी और प्यासे गीदड़ को मारकर तुम अपने को बड़ा शिकारी समझने लगे हो, लेकिन यदि शेर से पाला पड़ गया तो वह तुम्हें समूल ही हज्म कर जाएगा।

१६०३. दाणें-दाणें पर म्होर छाप है ।

हर दाने पर खाने वाले का नाम (अप्रकट रूप से) लिखा होता है ।

१६०४. दाता दे, भंडारी को पेट फूटै ।

दाता देता है और भंडारी कुढ़ता है ।

१६०५. दाता सें सूम भलो जो झटकै उत्तर दे ।

झूठे आश्वासन दे कर रोज-रोज टालने वाले दाता की अपेक्षा तो वह कंजूस ही अच्छा जो पहली बार में ही ना कह देता है ।

१६०६ दादो इसो सावो काढ्यो, 'क फेरां कै दिन जनेत आई रैई ।

पंडित–दादा की होशियारी का क्या कहना, उसने विवाह का ऐसा मुहूर्त्त निकाला कि विवाह वाले दिन ही बरात आई रही ।

१६०७. दादोजी घी खाया करता, म्हारी हथेळी सूंघल्यो ।

दादाजी घी खाया करते थे, विश्वास न हो तो हमारी हथेली सूंघ कर देखलो, उसमें आज भी घी की गंध आती है ।

१६०८. दान की बाछी का दांत कोनी गिण्या जावै ।

दान में प्राप्त होने वाली बछिया के दांत नहीं गिने जाते ।

१६०९. दान-दायजा वहज्या, छाती कूटा रहज्या ।

अधिक दान-दहेज के लालच में जब निकम्मी बहू ले आते हैं, तब यह कहावत कही जाती है । दहेज तो एक बार ही मिलता है लेकिन निकम्मी बहू जिन्दगी भर घरवालों की छाती पर मूंग दलती रहती है ।

कन्या पक्ष वालों की ओर से कभी 'कन्या धन' के रूप में कुछ धन वर-पक्ष वालों को दिया जाता था जिसने बाद में दहेज का रूप ले लिया और आज तो इसका रूप बहुत भी भयंकर एवं कष्टदायक हो गया है ।

१६१०. दानो दुसमण नादान दोस्त सें चोखो ।

नादान दोस्त की अपेक्षा दिलेर और बुद्धिमान दुश्मन अच्छा ।

सन्दर्भ कथा—चार आदमी कमा कर दिसावर से आ रहे थे । सुविधा और सुरक्षा की दृष्टि से उन्होंने अपनी सारी कमाई के बदले एक-एक लाल खरीद लिया था । जब ठगों की बस्ती नजदीक आई तो उन्होंने एक वृक्ष के नीचे बैठ कर सलाह की और चारों आदमियों ने अपना-अपना लाल निगल लिया । वृक्ष पर बैठा एक चोर यह सब देख रहा था । चारों वहाँ से चलने लगे तो लालों को हथियाने की इच्छा से वह भी उनके साथ हो लिया । थोड़ी ही देर में वे ठगों की बस्ती में पहुँच गये । ठगों के पास एक ऐसा सुग्गा था जो यह बतला दिया करता था कि अमुक मुसाफिर के पास इतना धन है । उन पांचों को देखकर सुग्गे ने कहा कि इन मुसाफिरों के पेट में कीमती

लाल हैं। ठगों ने उन सब को घेर लिया और बोले-कि तुम्हारे पेट चीर कर हम लाल निकालेंगे। चोर ने सोचा कि मैं पहले मर कर इन चारों के प्राण बचा सकता हूँ। इसलिये उसने ठगों से कहा कि हमारे पास लाल नहीं हैं। यदि तुम्हें विश्वास न हो तो मेरा पेट चीर कर देख लो, तुम्हें लाल मिले तो इन सबके पेट भी चीर डालना, नहीं तो नाहक क्यों नर हत्या का पाप अपने सिर लेते हो। ठगों ने उसकी बात मानली। उसका पेट चीरा गया, लेकिन उसमें से लाल प्राप्त न होने पर उन्होंने उन चारों को छोड़ दिया और इस प्रकार उस 'दाना दुश्मन' ने शेष चारों की जान बचा दी।

१६११. **दाम काढ़ै काम।**

दाम से ही सब काम बनते हैं।

यों तो एक पैसे के पच्चीसवें भाग को दाम कहा जाता था, लेकिन यहाँ दाम से तात्पर्य धन से है जो राजनीति का भी एक अङ्ग (साम, दाम, दण्ड, भेद) रहा है।

दाम–दुकड़ा यौगिक शब्द है। ६। दुकड़े का एक आना और १०० दुकड़े का एक रुपया होता था। इसे आज का पैसा कह सकते हैं।

१६१२. **दाळ-भात को खाणो, फळसै ताईं जाणो।**

दाल-भात का खाना और घर के दरवाजे तक जाना।

दाल-भात का खाना हल्का होता है और इसे खाकर लम्बी मंजिल तय नहीं की जा सकती।

रू० रोटी कहै मैं आऊँ जाऊँ, खीच कहै मैं ठेठ पुगाऊं।
घाट कहै म्हारो फुसकर नांव, म्हारै भरोसै न जाये गांव॥

१६१३. **दाळ-भात लाम्बा (मीठा) जीकारा), अै बाई परताप तुमारा।**

वृद्ध धनिक को अपनी बेटी व्याहने वाले बाप की अपने दामाद के घर विशेष खातिर होती है।

१६१४. **दावो करचो, तकादो गयो।**

कर्जदार पर न्यायालय में दावा कर देने के बाद कर्ज अदायगी के लिए तकाजा नहीं किया जा सकता।

१६१५. **दास सदा उदास।**

दास सदा चिंतित रहता है, क्योंकि वह परतन्त्र होता है और उसे हर घड़ी मालिक की इच्छा का ध्यान रखना पड़ता है।

१६१६. **दिखणादो 'मे कदे न आवै, जे आवै तो ढूंढा ढावै।**

दक्षिण की तरफ का मेह प्रायः नहीं आता, और कभी आता है तो मकानों को धराशायी कर देता है।

१६१७. दिन श्रायां रावण मरै ।

समय श्राने पर ही रावण मरता है ।

समय श्राने पर रावण जैसे दुर्दान्त राक्षस को भी मरना पड़ता है ।

१६१८. दिन कटै काम सूँ, रात कटै नींद सूँ, गैलो कटै साथ सूँ ।

दिन काम से, रात नींद से श्रौर रास्ता साथ से कटता है ।

१६१६ दिन करै सो वैरी नईं करै ।

समय जो कर देता है, वह वैरी भी नहीं कर पाता ।

रू० दीहा जे कारज करत, सो वैरी न करंत ।

दीह पलट्टया रावणा, पाथर नीर तरंत ।।

१६२०. दिन को ऊगणों हो श्रर टाबरां की श्रांख खुलणी ही ।

यह संयोग ही ऐसा बना कि इधर दिन उगा श्रौर उधर बच्चों की श्रांखें खुलीं ।

संयोग से ही काम बन गया ।

१६२१ दिन चेत्यां ईं काम बणै ।

दिन चेतने से ही काम बनता है । श्रच्छे दिन श्राने से ही लाभ होता है ।

संदर्भ कथा—एक नगर में दो सेठ रहते थे । दोनों ही खूब मालदार श्रौर परस्पर गहरे दोस्त । संयोग से एक सेठ को बड़ा घाटा लगा श्रौर उसके पास कुछ भी नहीं रहा । दूसरे सेठ ने उसे दो-तीन बार एक-एक लाख रुपये व्यापार करने के लिए दिये, लेकिन वे भी चले गये । तब उसने श्रपने मित्र से कहा कि तुम्हारे दिनमान श्रभी श्रच्छे नहीं हैं, इसलिए श्रभी व्यापार मत करो श्रौर चूंकि व्याज को रेवड़ ही पहुँच पाता है, इसलिए तुम रेवड़ पालना शुरू कर दो । दूसरे दिन सेठ ने उसे चार बकरियां खरीद दीं, लेकिन कुछ ही दिन बाद उनमें से दो मर गईं । सेठ ने दो बकरियां श्रौर खरीद दीं, किन्तु काफी प्रयत्न करने के बावजूद भी बकरियों की संख्या चार से श्रधिक न बढ़ी ।

परन्तु एक दिन ऐसा भी श्राया कि बकरियों की संख्या बढ़ने लगी श्रौर कुछ ही दिनों में बीस बकरियां हो गईं । उसने इसकी सूचना श्रपने मित्र सेठ को दी तो वह बोला कि श्रब तुम्हारा दिन चेत गया है, श्रतः श्रब जोरों से कारोबार करो । सेठ ने वैसा ही किया श्रौर वह शीघ्र ही पहले की तरह मालदार बन गया ।

रू० दिनमान चेत्यां ईं काम बणै ।

१६२२. **दिन चोखो होवै जद हाट चालै, नूंता आवै।**
दिन माड़ो होवै जद हाट उठै, पावणा आवै।।
दिन अच्छा होता है तो दुकान भी चलती है और भोजन के निमन्त्रण भी आते हैं। लेकिन जब दिन खराब आता है तो दुकान भी उठ जाती है और पाहुने आते हैं।

१६२३. **दिन जातां वार कोनी लागै।**
समय बीतते देर नहीं लगती।
रू० दिनां नै जातां के वार लागै।

१६२४. **दिन दीखै न फूड़ पीसै।**
जब तक सूर्य दिखलाई नहीं देता तब तक फूहड़ स्त्री यही समझती है कि अभी तो रात है और वह पीसना प्रारम्भ नहीं करती।
रू० बादळ में दिन दीखै, फूड़ दळै न पीसै।

१६२५. **दिन में गरमी रात में ओस,**
विरखा जा पूगी सौ कोस।
वर्षाकाल में दिन में गरमी रहे और रात में ओस पड़े तो जानो कि वर्षा दूर चली गई।

१६२६. **दिन में दो बार, महीनै में दो बार, साल में दो बार।**
दिन में दो बार शौच जाना, महीने में दो उपवास रखना और साल में दो बार (चैत्र व आसोज में) जुलाब लेकर पेट साफ करना स्वास्थ्य के लिए हितकर है।

१६२७ **दिनूगे को भूल्योड़ो संज्या नै घरां आज्या तो भूल्योड़ो कोनी बाजै।**
सवेरे का भूला, शाम को घर आ जाए तो भूला हुआ नहीं कहलाता।
आदमी थोड़ी भूल करते ही संभल जाए तो ज्यादा क्षति नहीं उठाता।

१६२८. **दिल लाग्यो गधेड़ी सें तो परी के चीज है?**
यदि गधी के साथ ही मन लग गया है तो फिर परी भी कुछ नहीं।
जिसका जिसके साथ मन लग जाए, उसके लिए वही सर्वश्रेष्ठ।
ऊधो मन माने की बात।

१६२९. **दिल्ली की कुमाई, दिल्ली में गुमाई।**
बड़े शहर में आय अधिक होती है तो व्यय भी अधिक होता है।

१६३०. **दिल्ली नै दोखां लगी, दारू रंडी राग।**
सुरा, सुन्दरी और राग के कारण दिल्ली की मुगलिया हुकूमत का पतन हो गया।

६३१. दिवाळो काढँ तीन जणां, हुण्डी, चिट्ठी व्योपार घणां ।
तूं क्यूं काढै चौथा जणा ? पैदा थोड़ी खरच घणां ।।

अपने बूते से बहुत अधिक हुंडी-चिट्ठी और व्यापार करने वाले का कभी न कभी दिवाला पिट जाता है तथा यही हालत उस आदमी की भी होती है जो आय से अधिक व्यय करता है ।

६३२. दीखत का ही सोवणा, रोहीड़ै का फूल ।

रोहिड़े का फूल देखने में तो बहुत सुन्दर होता है, लेकिन उसमें सुगन्धी जरा भी नहीं होती ।

सुन्दर, किन्तु गुण रहित आदमी के लिए प्रयुक्त ।

रू० (१) दीखत ही नीको लगै, भँवर न जावै भूल ।
रंग रूड़ो गुण वायरो, रोहिड़े को फूल ।।
(२) कारज किणही न आवसी, वास विहूणो गुल्ल ।
रूप रूड़ो गुण वायरो, रोहिड़ै रो फुल्ल ।।

१६३३. दीप माळका दीवा बुझावै, होळी झळ उत्तर दिस जावै ।
आसाढी पून्यू दखणी वाव, तो अन्न विकैगो आनै पाव ।।

दीपावली के दीपक हवा के कारण बुझ जाएँ, होली की ज्वाला उत्तर दिशा की ओर जाये और आषाढ़ शु० पूर्णिमा को दक्खिनी हवा चले तो अन्न एक आने पाव अर्थात् बहुत मँहगा बिके ।

जिस समय इस कहावत का निर्माण हुआ होगा उस समय अन्न का भाव मनों में रहता होगा । इसीलिए एक आना पाव अन्न बहुत ही मँहगा समझा जाता था । वि० सं० १९५६ के भयंकर दुर्भिक्ष के समय भी अन्न का भाव सात-आठ सेर का था, फिर भी हजारों आदमी हहरा कर मर गये कि इतना महँगा अन्न कैसे खा पायेंगे । हाँ, आज जब अन्न ग्रामों में बिकने लगा है, तब यदि एक आना पाव अन्न बिके तो इसे बहुत सस्ता और ईश्वरीय वरदान ही माना जाएगा ।

१६३४. दीये की देवळ चढँ. क्यूं कोई रीस करै ।
नागरचाळो ठाकरो, सांगो गोड़ सिरै ।।

देने वाले का ही नाम होता है, इसमें गुस्सा करने की कोई बात नहीं । नागर चाळा के ठाकुरों की तुलना में सांगा गौड़ कुछ भी नहीं था, लेकिन उसकी उदार वृत्ति के कारण उसे ठाकुरों से श्रेयस्कर कहा गया ।

१६३५. दीये-लीये सें तो डूम राजी होवै ।

देने-लेने से तो डोम खुश होते हैं ।

यह बात कभी लड़के वाले की ओर से तब कही जाती थी जब लड़की वाला उसके यहाँ अपनी लड़की का सम्बन्ध करने आता था और दान-दहेज की

बात उठती थी। लेकिन अब तो लड़के वालों के लिए दहेज ही सर्व-प्रमुख मुद्दा बन गया है।

रू० देज-लेज सें तो डूम राजी होवै।

१६३६. दीवा बीती पंचमी, जो शनि मूल पडंत।
दूणा तीणा चौगणा, महगा नाज करंत॥
कार्तिक शु० ५ को यदि मूल नक्षत्र और शनिवार हो तो अन्न चार गुना तक मँहगा हो।

१६३७. दीवा बीती पंचमी, सोम सुकर गरु मूल।
डंक कहै हे भड्डळी, सातूं निपजै तूल॥
कार्तिक शु० ५ को यदि मूल नक्षत्र में सोम, गुरु या शुक्रवार पड़े तो सातों प्रकार के अन्न पैदा हों।

१६३८. दीवाळी का दीवा दीठा, काचर बोर मतीरा मीठा।
दीपावली तक काचर, बेर और मतीरे मीठे हो जाते हैं।

१६३९. दीवाळी जे हुवै मंगळवारी, तो हँसै करसो रोवै व्योपारी।
दीपावली के दिन मंगलवार हो तो अन्न अधिक पैदा होगा जिससे किसान खुश होगा और अन्न का संग्रह करने वाला व्यापारी घाटा लगने से रोयेगा।

१६४०. दीवै की बाती नै अर बहू नै घणी उकरेळणी आछी कोनी।
दीपक की बत्ती को और बहू को अधिक उभाड़ना अच्छा नहीं।

१६४१. दीवै जोगा भाग होता तो रातीनो क्यूं होतो ?
दीपक का प्रकाश देखना भाग्य में बदा होता दो रतौंधी ही क्यों होती ?

१६४२. दीवो चासण नै तेल कोनी, अर आंगणै में नाच घलावै।
घर में दीपक जलाने के लिए तो तेल नहीं और आंगन में नाच करवाये।

१६४३. दीवै तळै अंधेरो।
दीपक के नीचे अन्धेरा रहता है।
हर आदमी की अपनी कमजोरियां होती हैं।

१६४४. दुख 'कैणै को कोनी, 'सैणै को होवै।
दुःख दूसरों से कहने के लिए नहीं, स्वयं सहने के लिए होता है।

१६४५. दुनियां कैयां ई कोनी टिकण दे।
दुनिया किसी भी प्रकार टिकने नहीं देती।
हर बात की आलोचना की जाती है।

संदर्भ कथा—एक साधु रास्ते से कुछ हट कर जमीन पर लेटा हुआ था। सहारे के लिए उसने बालू का तकिया सा बना लिया था। पानी भरने के लिए जाती हुई कुछ पनिहारिनें उधर से गुजरी तो उनमें से एक ने कहा

साधु हो गया है, लेकिन फिर भी तकिया लगा कर ऐश करता है। साधु ने यह बात सुनी तो उसने मिट्टी को समतल कर दिया और यों ही लेट गया। कुछ देर बाद पनिहारिनें लौटी तो उनमे से एक ने कहा—साधु हो गया, लेकिन गुस्सा नही गया।

रू० (१) दुनिया नै कुण जीतै ?

(२) दुनिया की जीभ कुण पकड़ै ?

१९४६. दुनियां ठगिये मक्कर सें, रोटी खाइये सक्कर सें।

दुनिया को मक्कारी से ठगिये तो शक्कर से रोटी खाइये।

१९४७ दुनियां दुरंगी है।

दुनिया दो रंगी है। सामने कुछ कहती है तो पीठ पीछे कुछ।

सुख मे व्यवहार दूसरा होता है, दुःख में दूसरा।

रू० दुनियां दुरंगी, मक्का सराय। कही खैर खूबी, कही हाय-हाय।

१९४८ दुनिया है अर मतलब है।

सारी दुनिया स्वार्थ की है।

संदर्भ कथा—एक स्त्री अपने पति मे बड़ा अनुराग दिखलाया करती थी। एक दिन पत्नी ने कई तरह के मिष्टान्न बनाये, लेकिन इसी बीच पति घर के एक खंभे मे पैर फँसा कर और मृतवत होकर पड़ रहा। स्त्री ने जब देखा कि उसका पति मर गया है तब उसने खूब छक कर भोजन किया और फिर इतमीनान से रोने बैठी। पास-पड़ौस के लोग इकट्ठे हो गये। वे उसके पति का पैर निकालने के लिए खंभे को तोड़ने लगे तो वह बोली कि नाहक खंभे को क्यो तोड़ रहे हो, यह तो अब मर ही गया है, इसका पैर काट कर निकाल लो।

१९४९. दुनियां पराये सुख दूबळी है।

दुनिया के लोग एक-दूसरे को सुखी देखकर डाह के मारे घुलते रहते है।

१९५०. दुनियां में दोई गरीब है, कै बेटी कै बैल।

संसार मे गरीब दो ही है, बेटी और बैल।

सन्दर्भ कथा—चार मुसाफिर कही जा रहे थे। राह मे प्यास लगी तो चारो एक कुएँ पर गये। वहाँ एक पनिहारिन पानी भर रही थी। एक ने उसके पास जाकर पानी मांगा तो उसने पूछा कि तुम कौन हो ? मुसाफिर ने उत्तर दिया कि मैं गरीब हूँ। इस पर पनिहारी बोली कि दुनिया मे गरीब तो दो ही है, तुम तीसरे कहां से आ गये ? उसने उसे पानी नही पिलाया और वह एक तरफ जाकर बैठ गया। दूसरे ने अपने को मुसाफिर, तीसरे ने जबरदस्त और चौथे ने अपने आपको बेवकूफ बतलाया। लेकिन पनिहारिन

का कहना था कि ये सब तो दो-दो ही है। फिर वह उन्हें वहीं बिठलाकर अपने घर गई और घर से मिठाई का एक थाल भर कर लाई। इसी बीच किसी ने उसके पति से कह दिया कि तुम्हारी औरत को तो चार आदमी भगा कर ले जा रहे हैं। उसने राजा के पास पुकार की तो राजा ने उन सब को पकड़ मंगवाया और चारों को कड़ा दण्ड देने की आज्ञा दे दी। तब औरत ने राजा को सारी बात स्पष्ट करते हुए कहा कि दुनिया में गरीब दो ही हैं—बेटी और बैल, इनको जिसके हाथों सौंप दिया जाता है, उसी के साथ इन्हें जाना पड़ता है। मुसाफिर भी दो ही है, चांद और सूरज जो निरन्तर चलते ही रहते है। जबरदस्त भी दो है, दाना और पानी एवं मूर्ख भी दो ही है—एक मेरा पति और दूसरे आप स्वयं क्योंकि मेरे पति ने तो बिना सोचे समझे आपको आकर कह दिया एवं आपने सबको पकड़ मंगवाया और बिना जांच-पड़ताल किये ही इन चारों को दण्ड भी सुना दिया। तब राजा ने लज्जित होकर उन सब को छुट्टी दे दी।

१६५१. **दुहागण की वरियां चांद ई आथमज्या।**
दुहागिन जब अर्घ्य देने जाती है तो चांद भी छिप जाता है।
दुहागिन = पति द्वारा तिरस्कृता, जिसकी ओर से पति विमुख हो गया हो।

१६५२. **दूध अर दळियो खा मेरी लाडो, क्यूं झूरै है मेवां नै।**
कोई सम्पन्न घराने की लड़की थळी में किसी ऐसे स्थान में ब्याही गई जहाँ खाने पीने की चीजें अति सामान्य थीं। लेकिन अब तो उसे उसी पर संतोष करना होगा—

सागर फोग थळी का मेवा, सरज्या है कोई देवां नै।
दूध अर दळियो खा मेरी लाडो, क्यूं झूरै है मेवां नै।

१६५३. **दुवधा में दोनूं गया, माया मिली न राम।**
दुविधा में दोनों ही चले गये, न माया मिली, न राम मिले।
न खुदा ही मिला न विसाले सनम।
रू० राधो तूं समझ्यो नईं, घर आया था स्याम।
दुवधा में दोनूं गया, माया मिली न राम॥

१६५४. **दुसमण की किरपा बुरी, भली सैण की त्रास।**
आडंग कर गरमी करै, जद बरसण की आस॥

दुश्मन की कृपा की अपेक्षा अपने वालों की त्रास अच्छी। जब आकाश में बादल घिरते है तब गर्मी तो होती है, लेकिन वर्षा की आशा भी बन्ध जाती है।

१९५५. दूज वर की गोरड़ी, हाथ-पग की मोरड़ी।

पुरुष की पहली पत्नी के मर जाने पर जब वह दूसरी पत्नी लाता है तो उसकी इच्छा पूर्ति का विशेष ध्यान रखता है कि कहीं उसका अन कहा न हो जाए।

रू० दूज वर की गोरड़ी, हाथ पग की मोरड़ी।
दगड़ दगड़ खाऊंगी, बोलै तो मर जाऊंगी॥

१९५६ दूध अर दुहावणी दोनूं 'रैणी चाये।

दूध भी रहे, दोहनी भी रहे।

दोनों काम बनने चाहिएं।

१९५७. दूध का दूध, पाणी का पाणी।

दूध का दूध और पानी का पानी (नीर-क्षीर) हो जाना।

यथोचित न्याय होना।

सन्दर्भ कथा—गाँव की एक गूजरी पास के शहर में दूध बेचने के लिए जाया करती थी। रास्ते में एक छोटी सी नदी पड़ती थी। गूजरी जितना दूध घर से लाती थी, उतना ही पानी नदी में से मिला लेती थी। दूध देते कई दिन हो गये तो वह एक दिन हिसाब करवा के दूध के सारे रुपये ले आई। वह नदी के किनारे आकर दूध का बरतन धोने लगी कि इतने में एक बंदरिया आई और रुपयों की पोटली को उठा कर ले गई। गूजरी चिल्लाने लगी। लेकिन बंदरिया पोटली को लेकर एक वृक्ष पर चढ़ गई। उसने पोटली से लेकर एक रुपया गूजरी की तरफ फेंका और दूसरा नदी में। वह अन्त तक इसी प्रकार एक रुपया गूजरी की तरफ और दूसरा नदी में फेंकती गई। गूजरी को उसके दूध के रुपये मिल गये और पानी के रुपये पानी में चले गये।

बांदरी भोळी, गूजरी स्याणी।
दूध का दूध, पाणी का पाणी॥

१९५८. दूध को दाझेड़ो, छा नै ई फूंक-फूंक कर पीवै।

दूध का जला छाछ को भी फूंक-फूंक कर पीता है।

१९५९. दूध दही का पावणां, छा नै ई अणखावणां।

दूध दही से भी मँहगे पाहुनों को अब छाछ के लिए भी नहीं पूछते।

१९६०. दूध देती की तो लात भी 'सैई जावै।

दूध देने वाली गाय की तो लात भी सहनी पड़ती है।

जिससे लाभ होता हो, उसकी कड़ी बात भी सहन करनी पड़ती है।

१६६१. **दूध पीवती बिल्ली गंडकड़ां में पजगी ।**
दूध पीती हुई बिल्ली कुत्तों में जा फंसी ।
मौज-मजे करने वाला व्यक्ति दुष्टों के चंगुल में फँस गया ।

१६६२. **दूध वेचो भांवें पूत बेचो ।**
किसी समय दूध वेचना भी पुत्र को बेचने की तरह निषिद्ध माना जाता था । यह पुरानी बात है, जब घर-घर में गायें रहती थीं । लेकिन दूध-पूत की सौगन्ध तो आज भी बहुत बड़ी मानी जाती है ।

१६६३ **दूध भी धोळो, छा भी धोळो ।**
दूध भी सफेद, छाछ भी सफेद ।
जो आदमी छल-प्रपंच न जाने और दूसरे की बात का झट से विश्वास करले ।

१६६४. **दूध होतो, बूरो होतो, कचोळो होतो अर दूध को कचोळो भर कर, अर बूरो आंगळी सें मिला कर पीता, पण अब तो आंगळी-आंगळी ई आपकी रैई है ।**
हमारे यहाँ कभी बड़ी मात्रा में दूध हुआ करता, बूरा होता, कटोरा होता और हम कटोरे को दूध से भर कर, उसमें बूरा डाल कर एवं बूरे को उँगली से मिला कर पीया करते, लेकिन अब तो केवल उँगली ही शेष है, बाकी सब नदारद ।
पुरानी सुखद स्मृतियां मनुष्य को सालती रहती हैं ।
बूरा — देसी खांड को गला कर, साफ करके और चाशनी बना कर तैयार किया जाता था ।

१६६५. **दूध तो खूब ई 'रैसी, घास-फूस बळ ज्यासी ।**
खरे आदमी का सदा बोल-बाला रहेगा, झूठ-कपट करने वाले नष्ट हो जाएँगे ।

१६६६. **दूबळै नै दो साढ !**
दुर्बल मवेशी के लिए दो आषाढ और भी कष्टकर हो जाते है ।

१६६७ **दूबळो धीणों पराई छा सें खोवै ।**
जब घर में गाय-भैंस हों, लेकिन दूध बहुत कम देती हों तो छाछ की आवश्यकता रहते हुए भी दूसरों के यहाँ छाछ मांगने के लिए जाने में संकोच होता है ।
रू० दूबळी खेती धणी नै मारै ।

१६६८. **दूयां पैली फाटै दूध, वा को क्या कीजिए ?**
नईं घिरत में सार, वां नै ढोळ दीजिए ।
दूध दुहने से पहले ही फटे तो उसमें घी क्या निकलेगा ? ऐसे दूध को तो जमीन में गिरा देना ही अच्छा है ।

१६६६. दूर का ढोल सुहावरणा लागै ।

दूर के ढोल अधिक सुहावने लगते हैं ।

रू० दूर का डूंगर सुहावरणा लागै, कनै गयां वै ई भाठा का भाठा ।

१६७०. दूर जंवाई फूल बरोबर, गांव जंवाई आधो ।
घर जंवाई गधै बरोबर, चाये जैयां लादो ।।

दूर रहने वाले दामाद का अधिक सम्मान रहता है, गाँव वाले का आधा और घर-जंवाई की कद्र तो गधे के बराबर रह जाती है ।

१६७१. दूसरां की आस में भूख मरै ।

दूसरों की आशा में भूखों रहना पड़ता है ।

सन्दर्भ कथा—एक स्त्री का पीहर भी उसी गाँव में था और सुसराल भी उसी गाँव में थी । दोनों ही तरफ परिवार बहुत बड़े थे । कोई त्योहार आया तो उसने सोचा कि पीहर एवं सुसराल वालों के यहाँ से खाने-पीने की सामग्री पर्याप्त आयेगी ही, इस लिए मैं क्यों खाना बनाने का झंझट करूं ? लेकिन किसी के यहाँ से कोई सामग्री नहीं आई तो वह भूखी ही सो रही—

रांध्यो पी'र अर सासरै, रांध्यो सो परवार ।
एक न रांध्यो आपकै, भूखी सूती बार ।।

१६७२. दूसरै की थाळी में घी घणों दीखै ।

हर आदमी को दूसरे की थाली में घी अधिक दिखलाई पड़ता है ।

रू० दूसरै की थाळी में लाडू बडो दीखै ।

१६७३. दूसरै पर बुरी चींतै, जिकी आप पर ई पड़ै ।

जो दूसरे का बुरा सोचता है, उसका स्वयं का ही बुरा होता है ।

१६७४. देखणा सो भूलणा नईं ।

किसी विशिष्ट स्थान, वस्तु या उत्सव आदि को देखने का मौका मिले तो चूकना नहीं चाहिए ।

१६७५. देख पराई चोपड़ी, क्यूं ललचावै जी ?
रूखी सूखी खाय कर, ठंडो पाणी पी ।।

दूसरे की चुपड़ी रोटी देख कर मन ललचाना अच्छा नहीं । अपनी रूखी-सूखी खाकर और ठंडा पानी पीकर संतोष करना ही अच्छा है ।

रू० भोळो अर भूंडो भलो, प्यारो अपणो पीव ।
देख पराई चोपड़ी, क्यूं तरसावै जीव ।।

१६७६. **देख पराई चोपड़ी, जा पड़ बेईमान ।**
एक घड़ी की सरमा-सरमी, दिन भर को आराम ।

हे बेईमान ! दूसरे की चुपड़ी हुई रोटी देख कर उस पर टूट पड़ । एक घड़ी के लिए थोड़ी शर्म उठानी पड़ेगी, लेकिन फिर दिन भर का आराम हो जाएगा ।

१६७७. **देख मरदां की हथफेरी, अम्मा तेरी 'क मेरी ?**

मरदों की हथ फेरी देखो और पहचानो कि अम्मां उसकी है या तुम्हारी ?

सन्दर्भ कथा—एक औरत बड़ी कलहकारिणी थी । एक दिन अपनी सास की भरपूर बेइज्जती करने की नीयत से वह पेट-दर्द का बहाना बना कर लेट गई और हाय-तोबा मचाने लगी। वैद्यों और सयानों ने सब तरह के उपाय कर लिये, लेकिन दर्द हो तो मिटे ।

अन्त में पति ने अपनी पत्नी से ही पूछा कि तुम्हारा दर्द कैसे दूर हो, यह तुम्हीं बतलाओ । पत्नी ने उत्तर दिया कि इसका एक मात्र उपाय यही है कि तुम अपनी मां का सिर मुंडवा कर, मुंह काला करके और उसे गधे पर चढा कर मेरे आगे से निकालो । पति अपनी पत्नी की दुष्टता को भाँप गया, लेकिन उसे मजा चखाने की मंशा से उसने हाँ भरली। उसकी सुसराल उसी गाँव में थी, अतः उसने तुरन्त ही अपनी सास के पास जाकर पत्नी वाला नुसखा उसे बतलाया । बेटी की ममता के कारण माँ ने वह सब स्वीकार कर लिया और उसी रूप में सजा कर वह उसे अपनी पत्नी के पास ले आया । पत्नी ने सोचा कि उसका पति अपनी माँ को ही लाया है । इसलिए उसने व्यंग्य से इठलाते हुए कहा—

देख बनी का चाळा, सिर मूंड्या मुंह काळा ।

इस पर पति भी तपाक से बोल पड़ा —

देख मरदां की हथफेरी, अम्मा तेरी है 'क मेरी ।

पति की बात सुन कर और अपनी माँ को पहचान कर पत्नी सन्न रह गई ।

१६७८. **देखा-देखी साधै जोग, छीजै काया बाढै रोग ।**

दूसरों की देखा-देखी करने से आदमी हानि ही उठाता है ।

संदर्भ कथा—एक बार संत कबीरदास कही जा रहे थे । रास्ते में प्यास लगी तो उन्होंने एक लुहार की दुकान पर जाकर पानी मांगा । लुहार सीसा गला रहा था और उसने वह गला हुआ सीसा ही कबीर जी के पात्र में डाल दिया । कबीर जी ने सोचा कि दाता ने जो दिया, वही स्वीकार कर

लेना चाहिए। उन्होंने पात्र उठाया, राम का नाम लेकर उस गले हुए सीसे को पीया और आगे बढ गये। पीछे-पीछे उनका शिष्य आ रहा था। उसने भी कबीर जी की देखा-देखी वैसा ही किया, लेकिन सीसा पीते ही वहीं ढेर हो गया।

१९७९. देखो काका, मोठां के करी, लिया हा नौ सेर, वेच्या नौ घड़ी।

देखो काकाजी, मोठों ने क्या गजब ढाया है, खरीदे तो थे नौ सेर के भाव और वेचने पड़े नौ घड़ी के भाव।

एक घडी=पांच सेर।

अकाल और जमाने के अनुसार अन्न के भावों में बड़ा अन्तर रहता था। मोठ में जल्दी घुन लग जाते हैं अतः इसे अधिक समय तक रोक पाना संभव नहीं होता था और जमाना होने पर मोठ अधिक सस्ता विकला था—

रू० तिलड़ी तोड़ तिलां में दीनी, मोवन माळा मोठां में।
सीसफूल साई में दीन्यो, औरूं घाटो मोठां में॥

१९८०. देख्या बाप घर, करै आप घर।

लड़की जैसा अपने बाप के घर में देखती है, वह सुसराल जाने पर वहां भी वैसा ही करती है।

रू० देख्या बाप कै, करै आप कै।

१९८१. देण लेण नै कुछ नईं, हामळ भरूं किरोड़।

जो आदमी देने की वात तो खूब बढा चढा कर करे, लेकिन दे कुछ नहीं।

सन्दर्भ कथा—एक दरिद्र ब्राह्मण की सेवा से प्रसन्न होकर भगवान् ने उसे एक शंख दिया। ब्राह्मण अपनी आवश्यकतापूर्ति के लिए जो भी वस्तु शंख से मांगता, उसे तत्काल प्राप्त हो जाती। पड़ोसी को इसका पता चला तो उसने शंख चुरवा कर मंगा लिया। अव ब्राह्मण फिर संकट में पड़ गया। इस वार भगवान् ने उसे एक बड़ा शंख दिया। ब्राह्मण इससे सौ रुपये मांगता था तो शंख जोरों से वोलता—सौ ले, हजार ले, दस हजार ले, लेकिन देता पाई भी नहीं। इस पर पड़ोसी ने पहले वाला शंख तो ब्राह्मण के यहां रखवा दिया और वड़ा शंख चुरवा कर मंगवा लिया। पड़ोसी इससे जो भी मांगता, शंख उससे कहीं अधिक देने की घोषणा करता, लेकिन देता कुछ भी नहीं। इस पर वह पछताने लगा तो शंख वोला—

वा ही संखी सोहणी, मैं हूं संख ढपोळ।
देण लेण नै कुछ नईं, हामळ भरूं किरोड़॥

१९८२. देण-लेण नैं रामजी को नांव है ।

यहां देने-लेने को कुछ भी नहीं है ।

रू० देण लेण नैं कुछ नईं, लड़नैं कूं मजबूत ।

१९८३ देणियें नै पुन्न होवै तो लेणियें नै पाप जरूर होवै ।

यदि दान देने वाले को पुण्य होता है तो लेने वाले को पाप अवश्य होता है ।

१९८४. देणैं का बाट और, लेणैं का बाट और ।

देने के बटखरे दूसरे, लेने के दूसरे ।

देता है तो कम तौल वाले वटखरे से और लेता है तो अधिक तौल वाले से ।

१९८५. देणैं को दिवाळियो, लेणैं को साह ।

देने के लिए दिवालिया और लेने के लिए शाह ।

रू० लेणा हो तो चोखा लेवां, लैर लगादयां प्यादो ।
देणा हो तो कछू न देवां, करता फिरो फरियादी ।

१९८६. देणैं को नांव ई लेणो है ।

उधार ली हुई चीज का पैसा जो समय पर चुका देता है, उसे ही फिर उधार मिलता है ।

१९८७. देणो अर मरणो बराबर ।

देना और मरना बराबर है ।

१९८८. दे दे सो आपको ।

जो दूसरों के हित में लगा दिया जाए, वही अपना है ।

१९८९. देवी दे तो दे, नईं भैरूं त्यार है ।

देवी दे तो दे, नहीं तो भैरों देने के लिए तैयार है ।

एक न दे तो दूसरा देने को तत्पर है ।

१९९०. देवी बीखै का दिन काटण आई, लोग परचा मांगै ।

देवी दुःख के दिन काटने आई है और लोग उससे 'परचे' मांगते हैं अर्थात् देवी से कोई करश्मा या चमत्कार दिखलाने को कहते हे ।

१९९१. देवी मंढ में बैठी ही मरड़का करै है, कदे बाणियें नै बेटो कोनी दियो है ।

देवी अपने मंढ (थान = छोटा देव मंडप) में बैठी ही इठला रही है, उसने कभी बनिये को बेटा नहीं दिया है ।

संदर्भ कथा—एक बनिये के कोई पुत्र नहीं था । उसने भैरोंजी की मनौती मानी कि यदि उसके एक पुत्र हो जाए तो वह भैरोंजी को एक भैंसा चढा देगा । कुछ समय बाद उसे एक पुत्र की प्राप्ति हो गई तो वह एक भैंसे को लेकर भैरोंजी के 'मंढ' पर गया, लेकिन उससे भैंसे की बलि देते नहीं बनी । कुछ देर की ऊहापोह के बाद उसने भैंसे की नाथ भैरोंजी की मूर्ति से बांधकर भैरोंजी को भैंसा समर्पित कर दिया और हाथ जोड़ कर अपने घर

आ गया। थोड़ी देर तक तो भैंसा वहां खड़ा रहा, लेकिन फिर उसका मन उचट गया और वहां से चल पड़ा। चूंकि मूर्ति भैंसे की नाथ से बंधी हुई थी, इसलिए वह भी साथ ही घिसटने लगी। वहीं एक देवी का 'मंड' भी था। भैंरों की यह दशा देख कर देवी ने व्यंग्य से पूछा—भैंरों, आज इस प्रकार क्योंकर घिसटते जा रहे हो? इस पर भैंरों ने झल्ला कर उत्तर दिया कि तुम मंड में बैठी हुई ही ऐंठ दिखला रही हो, कभी बनिये को बेटा देतीं तो पता लग जाता।

१६६२. देवी में गुण होसी तो पुजारा, रोही में ई ढूंढ लेसी।
देवी में कोई करामात होगी तो उसके पुजारी उसे जंगल में भी ढूंढ लेंगे।

१६६३. दे रै पांड्या आसीस, 'क मैं के द्यूं' मेरी आंतड़ी देसी।
किसी ने भूखे को भोजन देकर कहा कि आशिष तो देते जाओ। इस पर उसने उत्तर दिया कि मैं अपने मुंह से क्या आशिष दूं? असली आशिष तो मेरी अंतड़ियां (अंतरात्मा) देंगी।

१६६४. देव देख्या अर जात पूरी होई।
देवता के दर्शन हुए और जात्रा पूरी हुई।
रू० देवला कै गया अर जात पूरी होई।

१६६५. देवां सैं दाना ठाडा होग्या।
देवताओं की अपेक्षा भी दानव जबर हो गये।

१६६६ देस चोरी, परदेस भीख।
भूखा आदमी परदेश में भीख मांग कर भी पेट भर लेता है क्योंकि वहां सब अपरिचित होते हैं, लेकिन अपने देश (गांव) में भीख मांगने में उसे संकोच होता है। पर चूंकि, उसे गांव के लोगों का भेद मालूम होता है, अतः चोरी आसानी से कर सकता है।

१६६७. देस जिसा भेस।
जैसा देश, वैसा वेश। देश के अनुकूल वेश।

१६६८. देसी टोरड़ी, दिसावरी चाल।
रू० देसी कुतिया, विलायती बोली।

१६६६. दो एक नांव काळिये का ई लेई।
दो-एक नाम काले के भी ले लेना।

सन्दर्भ कथा— एक आदमी को काले नाग ने काट लिया। उस गांव में एक आदमी झाड़ा लगाने वाला था। वह बिच्छू के झाड़े का एक टका और सांप के झाड़े का एक रुपया लेता था। सांप के द्वारा काटे हुए आदमी ने उसके पास जाकर कहा कि मुझे बिच्छू ने काट लिया है, यह टका लो और

झाड़ा लगा दो। जब वह विच्छू का झाड़ा लगाने लगा तो उस आदमी ने कहा कि भाई दो-एक नाम काले (नाग) के भी ले लेना।

जब कोई आदमी टका देकर रुपये का काम करवाना चाहे।

२०००. दो घड़ी को धामड़ कूटो, सारै दिन की सैल।

दो घड़ी की मार-पीट, शेष पूरे दिन की मौज।

सन्दर्भ कथा—एक माली के पास दो बैल थे। एक बैल तो खूब काम करता था, लेकिन दूसरा बिल्कुल 'पैल' (काम से जी चुराने वाला) था। जब भी माली उसे जोतता, वह बीच में ही बैठ जाता और मारने-पीटने पर भी नहीं उठता। तब हार कर वह उसे छोड़ देता और दूसरे बैल से ही सारा काम लेता, जिससे उसे जरा भी आराम नहीं मिल पाता। एक दिन उसने अपने साथी बैल से पूछा कि मुझे भी अपना पीछा छुड़ाने की युक्ति बतलाओ। तब दूसरे बैल ने कहा कि तुम भी मेरे वाला नुसखा ही आजमाओ, दो घड़ी की मार पीट और फिर सारे दिन का आराम—

सुण रै भाई पैल, कैयां छूटै गैल।
दो घड़ी को धामड़ कूटो, सारै दिन की सैल॥

२००१. दो घर डूबता एक ई डूब्यो।

जब पति-पत्नी दोनों एक जैसे गये-गुजरे हों।

रू० सोढै जिसी सांखळी, सांखळी जिसो सोढो।
दो घर डूबता, एक ई डूब्यो॥

२००२. दो घोड़ां पर सागै कोनीं चढ्यो जा।

दो घोड़ों पर एक साथ सवारी नहीं की जा सकती।

रू० (१) दो घोड़ां पर सागै चढ्यां रान फाटज्या।
(२) दो न्यावां में सागै कोनी चढ्यो जा।

२००३. दो ठगां ठगाई।

दोनों ही ठग हैं और परस्पर एक दूसरे को ठगने की चेष्टा कर रहे हैं।

रू० दो सगां सगाई।

२००४. दो तो माटी का ई बुरा।

दो तो मिट्टी के बने भी बुरे होते हैं।

दो कमजोर आदमी भी एक बलवान् को गिरा लेते हैं।

२००५ दोनूं खोई बूबना, आदेसां जुंहार।

सन्दर्भ कथा एक राजा के मन में वैराग्य जगा तो वह राज-पाट छोड़ कर जोगी बन गया। लेकिन जब जोग नहीं सधा तो एक विधवा कुम्हारी से

नाता जोड़ कर कुम्हार बन गया। जब वह राजा था, तब लोग उसे 'जुहार' करते थे और जोगी बना तो 'आदेश बाबाजी' कहते थे। लेकिन अब तो वह दोनों से ही गया—

राजा सें जोगी भयो, जोगी सें भयो कुम्हार।
दोनूं खोई बूवना, आदेसां जुंहार ॥

रू० मूंड मुंडायो काणो भयो, फेरयो घर को दुआर।
दोनूं खोई बूवना, आदेस न जुंहार ॥

२००६. **दोनूं हाथ रळाया धुपै।**
दोनों हाथ मिलाने से ही धुलते हैं। पारस्परिक सहयोग से ही काम बनता है।

२००७. **दो पोई दो काख में, के ढूंढै अब राख में ?**
तुमने दो रोटियां बनाई थीं जो तुम्हारी बगल में हैं, अब राख में क्या ढूंढते हो ?

२००८. **दो बुरां बुराई होवै।**
कसूर दोनों पक्षों का होता है।

२००९. **दो लड़ै जिकां में एक तो पड़ै ई।**
दो आदमी लड़ते हैं तो उनमें से एक तो गिरता ही है।

२०१०. **दो सावण दो भादवा, दो कातिक दो 'मा।**
ढांढा ढोरी बेच कर, नाज विसावण जा ॥
जिस वर्ष दो सावन, दो भादों, दो कार्तिक अथवा दो माघ हों उस वर्ष अकाल पड़ता है, इसलिए उचित है कि पशुओं को बेच कर अनाज खरीद लो।
रू० दो सावण दो भादवा, दो काती दो 'मा।
मोती बेचो सेठजी, नाज खरीदो 'सा ॥

२०११ **धणी को धणी कुण ?**
मालिक का मालिक कौन ?

२०१२ **धणी नै खावणियों गंडक गैलै वगतै को के मुलायजो वरतै ?**
जो कुत्ता स्वयं अपने मालिक को भी काट खाता है, वह राहगीर का भला क्या लिहाज रखेगा ?

२०१३ **धन का 'तेरा मकर पचीस, अै सरदी का दिन अड़तीस।**
तेरह दिन धन की संक्रांति के और पच्चीस दिन मकर की संक्रांति के, कुल ३८ दिनों तक जोरदार जाड़ा पड़ता है।
रू० धन का पंदरा, मकर पचीसां।
जाड़ा चिल्ला, दिन चाळीसां ॥

२०१४. धन खेती, ध्रिक चाकरी ।
खेती करना धन्य है, नौकरी को धिक्कार है ।
रू० (१) उत्तम खेती मध्यम वान, निखद नोकरी भीख निदान
(२) धन खेती ध्रक चाकरी, धन-धन विणज वेपार ।
ध्रक-ध्रक वां का जीवणा, जो नित उठ लदै करतार ।।

२०१५. धन जा, जैंको विसवास जा ।
जिसका धन चोरी चला जाता है, वह दूसरों के प्रति अविश्वास करने लगता है ।

२०१६. धन तो घिरती फिरती छायां है ।
धन तो छाया की तरह अस्थाई है ।
रू० सुख-दुःख तो ढळती-फिरती छायां है ।

२०१७. धन धाणियां को, गुवाळ कै हाथ में लकड़ी ।
ग्वाला जिन पशुओं को चराता है, वे तो दूसरों के हैं, उसकी स्वयं की तो केवल वह लकड़ी है जिससे वह पशुओं को हांकता है ।

२०१८. धन धन माता रावड़ी, जाड़ हालै न जावड़ी ।
अपनी तो 'रावड़ी' ही अच्छी जिसे खाने में न जाड़ चलानी पड़ं न जवड़ी ।

२०१९. धन विनां किसी मरोड़ ?
धन के विना कैसी ऐंठ ?

२०२०. धनवंतं कै कांटो लाग्यो, सार करै सब कोय ।
निरधनियों डूंगर सें गुड़गो, बात न पूछी कोय ।।
धनवान के पैर में कांटा भी गड़ जाता है तो सब लोग हमदर्दी जताने आते हैं और निर्धन पहाड़ पर से भी गिर पड़े तो उसे कोई नहीं पूछता ।

२०२१. धनप पड़ै बंगाली, बरसै सांझ सकाळी ।
यदि पूर्व दिशा में इन्द्र धनुप दिखलाई पड़े तो प्रातः या सायंकाल तक वर्षा हो जाए ।

२०२२. धरती को धणियाप किंसो ?
धरती पर कैसा स्वामीत्व ?
धरती सदा एक की होकर नहीं रहती ।

२०२३. धरती परै सरकज्यां ये, 'कं छैला पांव धरैगा ।
अधर छैल के प्रति व्यंग्य ।

२०२४. धरम की जड़ पताळ में ।
धर्म की जड़ पाताल में होती है ।
रू० धरम की जड़ सदा हरी ।

२०२५. धरम को धरम, करम को करम ।

जब किसी काम के करने से धर्म और कर्म दोनों सधते हों।

२०२६ धरमसाळ को बैठणो, सदावरत को चून ।
तीजी विधवा बामणी, आं नै वरजै कूण ?

उपरोक्त तीनों को कौन रोके ?

२०२७. धरोड़ में के बुधवार ।

धरोहर लौटाने में कैसा बुधवार ?

किसी के यहाँ किसी की धरोहर जमा करवाई हुई हो तो उसे लौटाने में वार क्या देखना ? वह जब भी मांगे तभी देनी अपेक्षित है।

२०२८. धाई भली न फत्ती, दोनूं रांड कपत्ती ।

दोनों ही एक जैसी दुष्टा हैं।

२०२९. धाई भैंस कनै बैठी, भूखी भैंस के करै ?

धाई भैंस तो बैठी जुगाली करती है लेकिन उसके पास भूखी भैंस क्यों बैठी रहे ? उसे तो घूम फिर कर अपना पेट भरना चाहिए।

रू० धीणोड़ी कै सागै हीणोड़ी मरज्याय ।

२०३०. धानी धन की भूखी कोनी, साकै की भूखी है ।

धानी धन की भूखी नहीं, लेकिन साके की भूखी है।

स्पर्धा की लालसा बड़ी प्रबल होती है, कोई किसी से घटकर रहना नहीं चाहता।

संदर्भ कथा—देवरानी के घर में जेठानी की अपेक्षा तंगी थी। जेठ के ऊँट को घी दिया जा रहा था तो वह 'अरड़ा' रहा था। इस पर देवरानी ने अपने पति से कहा कि तुम अपने ऊँट के गले में पानी ही डालो कि जिससे यह 'अरड़ाये' और लोग जानें कि तुम भी अपने ऊँट को घी पिला रहे हो।

अरड़ाना – बलबलाना, ऊँट की बलबलाहट।

ऊँट का स्वभाव होता है कि चाहे उसके गले में घी डालें, चाहे गुड़-फिटकरी या और कुछ, वह तो अरड़ाता ही है।

२०३१. धाय' तेरी छा राबड़ी, गंडकां सें तो कढा ।

तेरी छाछ-राबड़ी तो भरपाई, इन कुत्तों से तो पिंड छुड़वादे।

रू० (१) धाया थारी बांग, म्हारो कचोळो तो दे ।
(२) धाया तेरा दूध-दळिया, धक्के भी क्यूं दे ?

२०३२. धायो उगाळ गेरै ।

सम्पन्न व्यक्ति किसी न किसी काम में पैसा लगाता ही है।

२०३३. **धायो मीर, भूखो फ़कीर, मरयां पीछै पीर ।**

मुसलमान सम्पन्न हो तो अमीर, भूखा होने पर फकीर और मरने पर पीर ।

२०३४. **धायो रांगड़ धन हड़ै, भूखो हड़ै पिराण ।**

पेट भरा होने पर रांघड़ दूसरों का धन हरता है और भूखा होने पर प्राण ।

२०३५. **धीकै जितरै धिकणदयो ।**

जब तक निभे, निभने दो ।

संदर्भ कथा – एक ब्राह्मण सर्वथा अनपढ़ था, लेकिन अपने को बड़ा पंडित प्रदर्शित किया करता था । एक दिन उसने नगर सेठ के पास जाकर कहा कि सेठजी, मुझे कोई काम दीजिए । सेठ ने कहा कि आप दुर्गाजी के मंदिर में नित्य पाठ किया कीजिये । सेठ ने उसका मासिक वेतन तय कर दिया और वह पाठ करने हेतु मंदिर में चला गया । लेकिन वह तो कुछ भी जानता न था, इसलिए बार-बार यही पाठ करने लगा, "मैं दुर्गा को नहीं जानता, मैं दुर्गा को नहीं जानता ।" कुछ दिन बाद सेठ ने दूसरे पंडित को और भेजा, लेकिन वह भी वैसा ही था । इसलिए वह पाठ करने लगा, "दुर्गा मुझ को नहीं जानती, दुर्गा मुझ को नहीं जानती ?" तीसरा पंडित आया तो उसने पाठ प्रारम्भ किया, "ऐसा क्योंकर निभेगा ।" अन्त में चौथा पंडित आया और पाठ करने लगा, ' निभे जितना निभने दो ।"

२०३६. **धीरां की देवळी, उतावळां का मसाण ।**

धीर की देवली स्थापित की जाती है और बिना सोचे-समझे जल्दबाजी करके मर जाने वाले को मरघट में लेजाकर जला दिया जाता है और उसका कोई स्मृति चिन्ह नहीं बनता ।

सोच विचार कर धैर्य-पूर्वक काम करना हितकर, जल्दबाजी करना अहितकर ।

२०३७. **धीरै धीरै जायसी, सब देवन को साथ ।**
रै'सी देवी काठ की, पत्थर को पारसनाथ ।।

संदर्भ कथा— किसी मंदिर में बहुतसी मूर्त्तियां थीं जिनमें से देवी की एक मूर्त्ति काठ की, पार्श्वनाथ की पत्थर की और शेष सब धातु की थीं । मंदिर के मालिक ने किसी नये पुजारी को पूजा करने के लिए रखा तो वह धीरे-धीरे धात्विक मूर्त्तियों को पार करने लगा । एक दिन मंदिर के मालिक ने मंदिर में आकर देखा तो उसे मूर्त्तियां थोड़ी लगीं । उसने पुजारी से पूछा तो पुजारी ने उपरोक्त कहावती पद सुनाते हुए कहा कि मंदिर में तो काष्ठ-निर्मित देवी की मूर्त्ति एवं पाषाण निर्मित पार्श्वनाथ की मूर्त्ति, यही दो रहेंगी, बाकी तो धीरे-धीरे सभी चली जाएँगी ।

उस समय संभवतः काठ और पत्थर की मूर्त्तियों की बाजार में मांग नहीं रही होगी, लेकिन अब तो काठ व पत्थर की कलात्मक मूर्त्तियों की भी चोरी होने लगी है।

२०३८. **धीरै धीरै ठाकरां, धीरै सब कुछ होय।**
माळी सींचै सौ घड़ा, रुत आयां फळ होय।।
धीरे-धीरे, यथा-समय ही सब काम पूरे होते हैं, जल्दबाजी करने से कुछ नहीं होता। माली चाहे किसी वृक्ष में सौ घड़े पानी सींचे, लेकिन फल तो ऋतु के अनुसार ही लगेंगे।

२०३९. **धुर आसाढ दुतिया दिवस, निरमळ चंद उगंत।**
सोमा सुकरां सुरगुरां, जळ थळ एक करंत।
आषाढ कृष्णा द्वितीया को चन्द्रमा निर्मल दिखलाई दे और इस दिन सोम, शुक्र या गुरुवार हो तो वर्षा भरपूर होगी।

२०४०. **धुर बरसाळै लूंकड़ी, ऊंची धुरी खिणन्त।**
भेळी होय जे खेल करै, तो जळधर अति बरसन्त।
यदि वर्षा ऋतु के आरम्भ में लोमड़ियां अपनी 'धुरी' ऊंचाई पर खोदें एवं परस्पर मिल कर क्रीड़ा करें तो जानो कि वर्षा भरपूर होगी।

२०४१. **धेलै की न्यूंतार, मांडै कै बांय घालै।**
नाममात्र का सहयोग देकर सर्वेसर्वा बनने का प्रयत्न।
न्यूंतार = विवाह आदि के अवसर पर 'न्यौते' के रूप में कुछ धन-राशि देने वाले को न्यूंतार कहते हैं। यह राशि संबंधियों एवं मित्र वर्ग आदि की ओर से दी जाती है।

२०४२. **धेलै बीधै आळी मे चालै जिकै नै कोई नीं अणखै।**
अत्यन्त सादगी से चलने वाले को कोई नहीं अनखता।

२०४३. **धोती आळो लेज्या, टोपी आळै को नांव होज्या।**
ले जाए कोई और नाम, किसी दूसरे का हो जाए।
रू० घूंघटिये आळी लेज्या अर चुरगटिये आळी को नांव होज्या।

२०४४. **धोबण सें के तेलण घाट, वींकै मोगरी वींकै लाठ।**
धोबिन से घटकर तेलिन भी नहीं। उसके यहां मोगरी है तो उसके यहां लाठ।

२०४५. **धोबी की हांते गधा खा।**
धोबी के श्राद्ध पर उसके निमित्त निकाली गई भोज्य सामग्री को गधा ही खाता है।

२०४६. धोबी कै रैवो चाये कुम्हार कै, गधो तो लदसी ।
गधा चाहे धोबी के यहाँ रहे चाहे कुम्हार के घर, वह तो लदेगा ही ।

२०४७. धोबी कै लाग्या चोर, डूब्या और ई और ।
धोबी के यहाँ चोरी हुई तो दूसरे लोगों का ही नुकसान हुआ ।
धोबी के यहाँ जो कपड़े धुलने आते हैं, वे तो दूसरों के ही होते है, अस्तु ।

२०४८. धोबी को गधो, घर को न घाट को ।
धोबी का कुत्ता न घर का, न घाट का ।

२०४९. धोबी को गधो, स्यामी की गाय ।
राज को नौकर, गत्तां से जाय ॥
इन तीनों की ही आदत बिगड़ जाती है ।

२०५० धोबी को धोखो मिल्यो, मन में हुयो हुलास ।
समीर उठ्यो है देग में, हुई मेह की आस ॥
धोबी के देग में समीर उठना वर्षा का सूचक होता है ।

२०५१. धोबी बेटा चांदसा, चोटी न पट्टा ।
धोबी का बेटा दूसरों के धुले वस्त्र पहनकर ही चन्द्र धवल बना फिरता है ।

२०५२. धोळा धाड़ आई, 'क बा'सी जिको चरासी ।
किसी ने सफेद बैल से कहा कि 'धाड' (डाकुओं की टोली) आ रही है । इस पर बैल ने उत्तर दिया कि इससे मुझे क्या ? मुझे तो जो लेजायेगा और जोतेगा वही चरायेगा । यहाँ भी मुझे काम करना पड़ता है तभी चारा मिलता है, ऐसे ही वहाँ भी मिलेगा ।

२०५३. धोळै पर दाग घणो दीखै ।
सफेद वस्त्र पर लगा दाग अधिक दिखलाई देता है ।
पहले से ही कलंकित आदमी कोई बुरा काम करे तो उसकी उतनी निन्दा नहीं होती, लेकिन कोई भला आदमी ऐसा करे तो सबकी चर्चा का विषय बन जाता है ।

२०५४. नईं भीज्यो काकड़ो तो क्यूं फेरै हाळी लाकड़ो ।
यदि कर्क संक्रांति के दिन वर्षा न हो तो खेत जोतना बेकार है, क्योंकि अकाल पड़ेगा ।

२०५५. नईं मांगी भीख तो बीड़ी पीणी सीख ।
यदि कभी भीख न मांगी हो तो बीड़ी पीना सीख लो, इससे मांगने की आदत पड़ जायेगी ।

२०५६. नई गैली घल्योड़ी चोखी कोनी ।
नई राह निकलनी अच्छी नहीं ।

संदर्भ कथा—एक सेठ रात को अपने घर में सोया हुआ था कि एक चूहा उसकी छाती पर से निकल गया। सेठ जाग पड़ा और हाय-तोवा मचाने लगा। घर के सारे लोग इकट्ठे हो गये। कारण जानकर उन्होंने सेठ से कहा कि चूहा निकल गया तो क्या हो गया? सेठ ने उत्तर दिया कि बात चूहे की नहीं है। यह नया रास्ता खुल गया, इसी का डर है। आज तो छाती पर से चूहा निकला है, कल इसकी देखादेखी सांप भी निकल सकता है।

२०५७. **नई नौ दिन, पुराणी सौ दिन।**

कोई भी वस्तु नई तो कुछ ही दिनों तक रहती है, फिर तो वह दिन प्रति-दिन पुरानी ही होती जाती है।

२०५८. **नकटा तेरी छाती पर रूंख उग्यो, 'क चोखो छायां बैठस्यां।**

निर्लज्ज आदमी सर्वथा बेहया होता है। मान-अपमान का उसे कोई ध्यान नहीं रहता। अपमानित किये जाने पर वह और अधिक ऐंठ दिखलाता है।

संदर्भ कथा—एक बार कोतवाल ने राजा भोज के सामने चार चोरों को पेश किया। राजा ने एक से कहा कि भले आदमी यह काम तेरे लायक नहीं था और उसको छोड़ दिया। दूसरे को कुछ डांट-फटकार के छोड़ दिया और तीसरे को चार कोड़े लगाकर छोड़ दिया। लेकिन चौथे के लिये राजा ने हुक्म दिया कि इसकी नाक काट कर, काला मुंह करके और गधे पर चढ़ा कर इसे पूरे शहर में घुमाया जाए।

इस अपमान से पहले चोर को इतनी ग्लानि हुई कि उसने घर जाकर विषपान कर लिया, दूसरे ने नगर का परित्याग कर दिया और तीसरा शर्म के कारण घर से बाहर नहीं निकला। लेकिन चौथा चोर पूरा निर्लज्ज था। उसकी नाक काट कर, काला मुंह करके और गधे पर चढ़ा कर पूरे नगर में घुमाया गया। हजारों तमाशबीन उसके पीछे हो लिये। जब वह नगर के तीन दरवाजे घूम चुका तो उसकी औरत दिखलाई पड़ी। उसने बुलन्द आवाज में उससे कहा कि घर चलकर गरम पानी कर और मलीदा बना। अब थोड़ा ही घूमना बाकी है। मेरी सवारी के पीछे चलने वाले लोगों ने मुझे नीचे गिराने की चेष्टा तो खूब की लेकिन मैं गिरा नहीं। नीचे गिर जाता तो इज्जत धूल में मिल जाती। लेकिन अब तो इज्जत बच ही गई है।

रू० (१) नकटा तेरी नाक कटी, 'क सवा हाथ और बधी।
(२) नकटा तेरो नाक कट्यो, 'क चोखो नकसीर सें पिंड छुट्यो।
(३) नकटी रांड बगल में छुरी, कैवै जैणां लागै बुरी।

२०५६. नकटा देव, सुरड़ा पुजारा ।
निर्लज्ज देवता, वेशर्म पुजारी ।

२०६०. नकटी नथ को के करै ?
नकटी के लिये नथ की क्या उपयोगिता ?
रू० नाक की नकटी अर नथ विना अलूणी ।

२०६१. नगद नाणां, वीन परणीजे काणां ।
धन के वल पर गलत काम भी सही हो जाता है ।

२०६२. नगारखानै में तूती की आवाज को के थाग ?
नक्कारखाने में तूती की आवाज कौन सुने ?

२०६३. नट विद्या आज्या, जट विद्या कोनी आवै ।
नट की कलावाजी सीखी जा सकती है, लेकिन जाट की युक्ति नहीं ।

सन्दर्भ कथा—एक वार किसी नट-मण्डली ने राजा के यहाँ तमाशा दिखलाया । दर्शकों में एक जाट भी वैठा हुआ था । उसने राजा के सामने ही नट-मण्डली के सरदार से कहा कि तुम जो कलावाजियां दिखलाते हो, वे तो अभ्यास से आ सकती हैं, लेकिन जो करतव मैं दिखला सकता हूं, वह तुम नहीं दिखला सकते । नटों के पूछने पर जाट ने कहा कि जव तुम अगली वार आओगे तव दिखलाऊँगा ।

नट-मण्डली चली गई । इधर वर्षा ऋतु आई तो जाट के खेत में मतीरे की वेलें खूव फैलीं । जाट ने एक वेल के छोटे फल को नाल सहित घड़े में डाल दिया और वह फल घड़े के अन्दर ही वढ़ने लगा । मतीरा खूव वड़ा हो गया तो जाट ने वेल के साथ उसका सम्बन्ध विच्छेद कर दिया । अगली वार जव वह नट-मण्डली फिर उस गाँव में आई तो जाट उस घड़े को राजा के पास ले गया । उसने राजा से कहा कि मैंने इस मतीरे को घड़े के अन्दर डाल दिया है, अव आप इन नटों से कहें कि वे घड़े को विना फोड़े अपनी हिकमत से इसे वाहर निकाल दें । लेकिन नटों के सरदार ने ऐसा कर पाने में अपनी असमर्थता प्रकट कर दी ।

२०६४. नटेड़ो वाणियों बुरो ।
एक वार ना करने के वाद वनियां सहज ही हां नहीं करता ।
रू० नटेड़ो वाणियों, वळ में आवै जद जाणियों ।

२०६५. नट्यां ई' घी घलै ।
ना कहने वालों को ही घी डाला जाता है ।
भोजन के समय चावल-खिचड़ी आदि में ऊपर से घी डाला जाता है ।

सम्मानित लोग जो थाली पर हाथ आड़े करके घी के लिए ना करते हैं, उन्हें तो बलात् घी डाला जाता है और मांगने वालों की उपेक्षा कर दी जाती है।
रू० घी तो आडै हाथां ईं घलै।

२०६६. नणद को नणदोई, गळै लाग कर रोई।
ननद का ननदोई, कोई निकट का रिश्तेदार नहीं होता।
झूठ-मूट की आत्मीयता प्रकट करना।
रू० नणद को नणदोई, गळै लाग कर रोई।
पाछी फिर कर देख्यो, तो सगो न सोई।

२०६७. नणद नै जिमाई, जेठूती आंगणै आई।
जेठ की बेटी का घर के आंगन मे आना और ननद को जिमाना बराबर है।

२०६८ नथ खोई, नणद नै देई।
नथ खो जाने पर भावज यह मानकर संतोष कर लेती है कि ननद को ही दी सही।
रू० ऊंट गयो, लाली कै लेखै।

२०६९. नदी किनारै रूंखड़ो, जदकद होय विणास
नदी-तट का वृक्ष कभी भी धराशायी हो सकता है।
रू० (१) अफली खेती अलप धन, गैली सैं घरवास।
नदी किनारै रूंखड़ो, जदकद होय विणास॥
(२) संपत थोड़ी रिण घणो, वैरी वाड़ै वास।
नदी किनारै रूंखड़ो, जद कद होय विणास॥

२०७० नया घड़ाया वाजसी, नरड़ का निसाण।
नरहड़ के नक्कारे अब तो नये बनवाने पर ही बजेंगे।
रू० तोपत वावर साह की, लेग्यो मांगो राण।
नया घड़ाया वाजसी, नरवरगढ़ नीसाण॥

२०७१ नया घोड़ा, नया मैदान।
नये घोड़े, नया मैदान।
अब तो सब कुछ नये सिरे से ही होगा।

२०७२. नयो मुल्लो घणों अल्ळा-अल्ला पुकारै।
रू० (१) नयो मुल्लो वणी जोर में बांग देवै।
(२) नई मोडी पातरै में पादै।
(३) नयो वळद खूंटो तोड़ै।
(४) नई जोगण, हूंगां ताईं जटा।

२०७३ नर चींतो होवै नई, हर चींती ततकाळ ।

आदमी के मंसूबे धरे रह जाते हैं, भगवान् जो करना चाहते है, वही होता है ।

रू० नर चींती होवै नई, हर चींती ततकाळ ।
मतो करयो वैकुंठ को, धर दीन्यो पाताळ ।।

२०७४. नर तिरिया भेळा हुयां, होय घणेरो मेह ।

पुरुष ग्रह और स्त्री संज्ञक नक्षत्र परस्पर मिलें तो वर्षा भरपूर हो ।

२०७५ नर नानेरै जाय ।

मनुष्य में मातृकुल के गुण आते हैं ।

रू० (१) नर नानेरै, घोड़ो दादेरै ।
(२) मा पर पूत, पिता पर घोड़ो ।
घणों नईं तो थोड़ो-थोड़ो ।।

२०७६. नरां में नाई, पखेरुआं में काग ।

मनुष्यों में नाई और पक्षियों में कौवा अधिक चालाक होता है ।

रू० नरां में नाई, पखेरुआं में काग ।
पाणी मांयलो काछवो, तीनूं दग्गै बाज ।।

२०७७. नस्ट देव की भिस्ट पूजा ।

अनिष्ट करने वाले देवता की भ्रष्ट पूजा ही होती है ।
जब कोई सीधे से नहीं मानता तब दण्ड नीति अपनानी होती है ।

२०७८ नांव को सीतळदास, बतळायो तो भोभरदास ।

नाम तो शीतलदास, लेकिन बतलाया तो निकला भोभरदास ।
भोभर = बहुत गरम राख जिसमें आग की चिनगारियां भी होती हैं ।

२०७९. नांव जिसाई गुण ।

नाम के अनुसार ही गुण ।

संदर्भ कथा—'ठीकरा' नामक गाँव के ठाकुर का नाम भिखारीदास था । वह नाम के अनुरूप ही बड़ी हीन प्रवृत्ति का था । एक दिन उसे एक चारण मिला जो उसकी आदत को जानता था, इसलिये उसने ठाकुर से व्यंग्य में पूछा—

गाँव को नांव कद हाथ लेस्यो ठाकरां ।
नांव को भेष कद धारस्यो ?

अर्थात् अपने गांव का नाम 'ठीकरा' हाथ में लेकर अपने नाम के अनुरूप (भिखारीदास) भीख मांगना कब शुरू करोगे ?

२०८०. **नांव मोटा, घर में टोटा।**

नाम तो खूब है, लेकिन घर में तंगी है।

रू० नांव मोटा, दरसण खोटा।

२०८१ **नसीब की खोटी, खा प्याज रोटी।**

जब भाग्य अच्छा नहीं तो खाने के लिये प्याज-रोटी ही मिलेगी।

२०८२ **नाई आळो ठोलो, वाणियें आळो टक्को।**

सन्दर्भ कथा—एक नाई ने किसी बनिये की हजामत बनाकर उसके सिर में एक 'ठोला' (ठोंग) जमा दिया। बनिये को बड़ा बुरा लगा, लेकिन उसने युक्ति से काम लेना ही ठीक समझा और बनिये ने बनावटी हर्ष प्रकट करते हुये नाई को एक टका पुरस्कार स्वरूप दे दिया। अब तो नाई को इसका चसका लग गया। अगली बार उसने एक ठाकुर की हजामत बनाई और हजामत बना चुकने के बाद उसके सिर में भी एक ठोंग लगा दिया। इस पर ठाकुर को गुस्सा आया और उसने अपनी तलवार से नाई का सिर उड़ा दिया।

२०८३. **नाई कीं का कारज सारै ?**

नाई किसका काम सुधारे ?

२०८४. **नाई की परख नुं'आं में।**

नाई की होशियारी की परीक्षा नख काटने में होती है।

२०८५. **नाई-नाई, सिर पर वाळ कित्ता 'क ?**

'क जजमान अभी आगै आज्या है।

हजामत बनवाने वाले ने जब नाई से पूछा कि मेरे सिर पर कितने बाल हैं तो नाई ने उत्तर दिया कि अभी तुम्हारे सामने आ जाते हैं।

२०८६. **नाई दाई वैद कसाई, आं को सूतक कदे न जाई।**

नाई, दाई, वैद्य और कसाई का अशौच कभी नहीं जाता।

२०८७. **नागां का लाल तुर्रा।**

बदमाशों के लाल तुर्रे।

तुर्रा = कलगी; पर या फुंदना जो पगड़ी आदि में लगाया जाता है।

रू० नागै कै नौवत बाजै, दो घड़ाका अबया लागै।

२०८८. **नागा-लुच्चा सैं सें ऊंचा।**

बदमाश और लुच्चे सब से ऊंचे।

रू० (१) नागी बूची सैं सें ऊंची।

(२) नागो तो राम सें ईं बुरो। राम तो करतो सो करै अर नागो झट बुरो-बिगाड़ कर दे।

२०८९. नागी भली 'क छींकै पांव ?

नंगी अच्छी या छीके पर पांव रख कर जाना अच्छा ?

सन्दर्भ कथा—एक स्त्री का पति दिसावर गया हुआ था, अतः अपने जेठ के साथ उसका अनुचित सम्बन्ध हो गया। उसने अपने सोने के स्थान पर एक छींका टांग रखा था। उसकी ननद उसके पास ही खटिया डालकर सोया करती, लेकिन भौजाई आधी रात को चुप-चाप छीके पर पांव रखकर जेठ के पास चली जाती। ननद को इस बात का पता लग गया, लेकिन उसने इस रहस्य को प्रकट नहीं किया।

एक दिन घर में भौजाई अपने कपड़े उतार कर नहा रही थी कि सहसा उसका जेठ घर में आ गया। अब तो उसने एक तूफान खड़ा कर दिया कि जेठ ने मुझे नहाते समय नग्न अवस्था में देख ली। मेरा पातिव्रत-धर्म नष्ट हो गया, अतः अब अनशन करके प्राण त्याग दूंगी। सब लोगों ने उसे बहुत समझाया-बुझाया, लेकिन वह टस से मस नही हुई। तब उसकी ननद ने उसे एकान्त में लेजाकर एक बात कही जिसे सुनते ही भौजाई ने ननद के पांव पकड़ कर रोटी खाली। वह बात यों है—

तेरो जेठ अर मेरो वीर, जिणनैं देखत ढक्यो सरीर।
बारह मास मोहि देखत भया, मैं मुख सेती कुछ ना कह्या।
अब लाग्यो कहणै को डाव, नागी भली'क छींकै पांव ?

२०९०. नागी रांड के धोवै अर के निचोवै ?

नंगी क्या धोये और क्या निचोये ?

रू० (१) नागी को लाय में के दाजै ?
(२) नागी नाचै फाटै के ?

२०९१. नागो जाणै मेरै सैं डरयो, लाजां मरतो घर में बड़यो।

भला आदमी झगड़ा-टंटा नहीं करना चाहता और संकोच-वश अपने घर में चला जाता है तो बदमाश यही समझता है कि वह मेरे से डर गया।

२०९२. नाचण आळी नै बिछिया चायै।

नाचने वाली को बिछिये चाहिएँ।

किसी भी काम के लिए उपयुक्त सामग्री अपेक्षित होती है।

२०९३. नाचण लागगी जद क्यांको घूंघटो ?

जब नाचने ही लगी तब लज्जा कैसी ?

रू० तूं हीं कंत उतारयो चित्त, मैं ही और करूंगी मित्त।
तू मुझ सेती कीधो ऐसो, नाचण लागी घूंघट कैसो ?

२०९४. नाच न जाणै, आंगणो बांको।

नाचना तो जाने नहीं और आंगन को टेढा बतलाये।

२०९५. **नाज का नाज में, ब्याज का ब्याज में, राज का राज में, बाज का बाज में।**
अनाज की कमाई अनाज में, ब्याज की ब्याज में, राज की राज में और आवाज की आवाज मे लग जाती है।
वाज से तात्पर्य उस आवाज से है जो सट्टेवाज सट्टा करते समय लगाते हैं।

२०९६. **नाज को कोठलियो हो, गुड़ग्यो तो गुड़ग्यो।**
अनाज का कुठला ही तो था, ढह गया तो ढह गया।
सन्दर्भ कथा—एक औरत का पति मर गया तो वह जोर-जोर से रोने लगी। उसके पड़ौस में ही एक नशेबाज रहता था, वह भी सहानुभूति जतलाने के लिए उसके घर आया। नशेबाज के पूछने पर औरत ने बतलाया कि वह न तो शराब पीता था, न भांग पीता था और न चरस, गांजा या तम्बाकू का ही सेवन करता था। इस पर नशेबाज बड़ी उपेक्षा और लापरवाही से बोला—तब ऐसे आदमी को क्या रोती हो? वह तो अनाज का कुठला मात्र था सो ढह गया।

२०९७. **नाजर गूजर मेर कुता, सोयां पीछै सात मता।**
इन चारों का विचार बड़ी जल्दी पलट जाता है।

२०९८. **नाजरजी! बेल बधज्यो, 'क बस म्हारै ताईं।**
किसी ने नाजिरजी को आशीर्वाद दिया कि आप की वंशवृद्धि हो। इस पर नाजिरजी बोले कि बस! हमारे तक जो होनी थी, हो गई, आगे और वंश-वृद्धि नहीं होगी।
नाजर = नाजिर, पुरुष वेश में रहने वाला खोजा या हिजड़ा।
रिपोर्ट मर्दुमशुमारी राज मारवाड़ के अनुसार नाजिर और हिजड़े में यह अन्तर है कि नाजिर के दाढी मोंछ नहीं होती जब कि हिजड़े के होती है। हिजड़े जनाने वेश में रहते हैं और गाते बजाते हैं। इसलिए उन्हें अपनी दाढी मोंछें जल्दी-जल्दी मुंडवानी पड़ती हैं और इसीलिए यह कहावत भी प्रसिद्ध है कि हिजड़े की कमाई मोंछ मुड़वाई में चली जाती है। नाजिर पुरुष वेश में रहते हैं और गाने-बजाने का पेशा नहीं करते। राजस्थान के भू० पू० देशी राज्यों में कई नाजिर बड़े नामिक एवं राज-काज में दक्ष हो गये हैं।

२०९९. **नाजो नाज बिना रहज्या, काजळ-टीकी बिना कोनी रैवै।**
नाज-नखरे वाली औरत अन्न के बिना भले ही रह जाए, शृंगार-पिटार बिना नहीं रहती।

२१००. **नातरायत की तीजी पीढ़ी गढ चढै।**
नातरायत राजपूत विधवा का नाता कर देते थे, इसलिए उनके विवाह संबंध असली माने जाने वाले राजपूतों में नहीं होते थे। लेकिन तीसरी पीढ़ी में जाते-जाते इनकी लड़कियां बड़े ठाकुरों में ब्याही जाने लगती थीं।

२१०१. नाथी एक, निजारैं आळा बोळा ।
नाथी तो एक और उसके ग्राहक अनेक ।

२१०२. नादीदी का नौ फेरा ।
नदीदी रे नौ फेरे ।

२१०३ नादीदी को खसम आयो, भर दोपारी दियो जगायो ।
नदीदी का पति बहुत समय बाद घर आया तो उसने भरी दोपहरी में भी दीपक जलाया ।

रू० (१) नादीदी को खसम आयो, दिन में ईं दिवलो जोयो ।
(२) नादीदी कै होई कटोरी, पाणी पी-पी होई पदोरी ।
(३) नादीदी कै लोटो होयो, रात्यूं उठ-उठ पाणी पीयो ।

२१०४ नानी ई नानीं, पण है तो पूणी तेरा बरस की ई ।
पद में बड़ी होने पर भी कम उम्र के कारण परिपक्वता का अभाव ।

२१०५. नानी कूवै में पड़योड़ी है ।
नानी कुएँ में गिरी हुई है ।
आजकल तो विवाह सम्बन्ध करने के समय दहेज को ही सर्वाधिक प्रमुखता दी जाती है, लेकिन पहले घर-घराना भी विशेष रूप से देखा जाता था । यदि परिवार पर कोई लांछन होता तो विवाह-सम्बन्ध करते समय अड़चन पैदा हो जाती थी ।

संदर्भ कथा—एक सेठ के चार बेटे थे । तीन के विवाह हो चुके थे । चौथे की सगाई आई तो सेठ को ज्ञात हुआ कि लड़की वाले बहुत सम्पन्न हैं, लेकिन लड़की की नानी कुए में गिर कर मर गई थी । इस पर सेठ ने तो अनिच्छा जाहिर की, लेकिन लड़के की माँ के जोर देने पर सम्बन्ध कर लिया ।

एक बार सेठ ने घर आकर कहा कि कारोबार में बहुत घाटा लग गया है और रकम हाथों हाथ चुकानी है, इसलिए सब स्त्रियां अपना-अपना गहना लादें । साख बनी रहेगी तो गहने फिर बन जाएंगे । इस पर सेठानी व तीन बहुओं ने तो अपने गहने लादिये लेकिन चौथी सर्वथा नट गई । उसे अधिक कहा-सुना गया तो वह बोली कि मैं जीतेजी गहना नहीं दूंगी, यदि तुम मुझे अधिक तंग करोगे तो मैं कुए में गिर कर आत्महत्या कर लूंगी ।

२१०६. नानी खसम करै, दोयती डंड भरै ।
नानी का दण्ड दोहिती पर ।
अपराध कोई करे और दण्ड किसी को मिले ।

२१०७. नानी रांड कुंआरी मरगी, दोयती का नौ-नौ फेरा ।
नानी तो कुंआरी ही मर गई और दोहिती के नौ-नौ फेरे ।
जब कोई गरीब आदमी मालदार बन जाने पर अधिक आडम्बर करे ।

२१०८. नापै सौ गज, फाड़ै कोनी एक गज ।
देने–दिलाने की शेखी तो बहुत बघारे, लेकिन दे-दिलाये कुछ नहीं ।
रू० नापै घणो, फाड़ै थोड़ो ।

२१०९. नामरदी तो खुदा ई देदी, मार–मार तो कर ।
नामर्दी तो खुदा के घर से मिली है, लेकिन मार-मार तो कर ।

२११०. नामी चोर मारयो जा, नामी 'सा कुमा खा ।
नामी चोर मारा जाए, नामी शाह कमा खाये ।

२१११. नायां की जनेत में सै ई ठाकर ।
नाइयों की बारात में सभी ठाकुर ।

२११२. ना'र की खाल ओढ्यां गधेड़ो सिंघ कोनी बणै ।
शेर की खाल ओढ लेने से गधा कभी शेर नहीं बन सकता ।

संदर्भ कथा—एक गधे को जंगल में किसी मृत शेर की खाल पड़ी मिल गई तो वह उसे ओढकर जगल का राजा बन बैठा । लेकिन गीदड़ ने एक दिन उसे घास चरते देख लिया और फिर उसके पद चिन्ह देखने पर तो उसे निश्चय हो गया कि यह तो गधा ही है । उसने अन्य जानवरों से भी यह बात कही, लेकिन 'जंगल के राजा' का सामना करने की हिम्मत किसी में नहीं हुई । तब गीदड़ एक गधी को 'जंगल के राजा' के दरबार में लाया । जेठ का महीना था, गधी के खुर जैसे ही गरम हुए वह रेंकने लगी । अब 'जंगल का राजा' भी अपने को न रोक सका । वह भी जोरों से रेंकने लगा । गीदड़ ने शेर वाली खाल खींचली तो जंगल के राजा का असली रूप सामने आ गया और सब जानवरों ने मिलकर उसे मार डाला ।

२११३. ना'रां का 'मूं कुण धोया है ?
शेरों के मुंह किसने धोये हैं ?

२११४. नारी स्यारी कींगरी, अर चौथा जूवा ।
भाग्या सोई ऊबरचा, बैठ्या सो मूवा ।।
इन चारों से जो दूर रहा, वह तो बचा और जो इनमें रम गया, वह बर्बाद हो गया ।
स्यारी = स्यार; चौपड़ की गोटी ।
कींगरी = किंगिरी = छोटा चिकारा या सारंगी ।

२११५. निकळ गई गणगौर, 'क मोल्यो मोड़ँ आयो।

गनगौर तो निकल गई और पति अब घर आया है।

गनगौर, तीज आदि पर्वों पर पति घर रहे, यह पत्नी की आकांक्षा होती है। लोक गीतों में भी पत्नी की यह आकांक्षा मुखर है।

मोल्यो = पति के लिए लघुता और तिरस्कार व्यंजक संबोधन।

रू० मोड़ी चेती, संग दूर गयो।

२११६ निखट्टू गयो हाट, को ताखड़ी न बाट।

निकम्मा आदमी दुकान पर गया भी तो क्या करे? तौनने के लिये उसके पास न तकड़ी (तराजू) है, न बटखरे।

२११७. निनाणमें की बाकी लाग्यां फेर सोवयुं भूलज्या।

निन्यानवे के फेर में पड़ने पर मनुष्य सब कुछ भूल जाता है।

संदर्भ कथा—एक सेठ के पास बहुत धन था, लेकिन फिर भी वह शरीर से कृश रहता था। एक दिन सेठानी ने अपने घर के पास रहने वाले जुलाहे की ओर संकेत करते हुए अपने पति से कहा कि यह गरीब जुलाहा इतना हृष्ट-पुष्ट रहता है, जबकि आप इतने मालदार होकर भी इतने कृश रहते हैं। सेठ ने हँस कर उत्तर दिया कि यह निन्यानवे के फेर में नहीं पड़ा है। सेठानी ने जब पूछा कि यह क्या होता है तो सेठ ने एक पोटली में ९९ रुपये बांध कर जुलाहे के घर में डाल दिये। शाम को जुलाहा घर आया और उसे ९९ रुपये मिले तो उसने सोचा कि इन्हें पूरे सौ कर दूं। यों सोच कर उसने अपनी उस दिन की कमाई का एक रुपया उसमें मिला दिया। इससे उस दिन उसके घर में खाना नहीं बना। जुलाहे को अब धन संग्रह करने की चिन्ता लग गई। वह घुलने लगा और जल्दी ही सेठ से भी अधिक कृश हो गया।

२११८. नींद कै बिछावण नईं, भूख कै लगावण नईं।

जब आंखों में नींद जोरों से घुल रही हो तो बिछौने की परवाह नहीं की जाती और जब भूख जोरों से सता रही हो तब बढ़िया शाक-सब्जी आदि की।

रू० नींद न देखै टूटी खाट, भूख न देखै जूठा भात, प्यास न जाणै धोबी घाट।

२११९. नींद बेचकर ओजको मोल कुण लेवै?

नींद को बेचकर उनींदापन कौन खरीदे?

ओजको = चौंक कर जाग पड़ना। उनींदापन।

२१२०. **नींबोळी सूकै नीम पर, पड़ै न नीचै आय।**
अन्न न निपजै एक कण, काळ पड़ैगो आय॥
यदि नींबोलियां पक कर नीम पर ही सूक जाएं, नीचे न गिरें तो जानो कि अकाल पड़ेगा।

२१२१. **नीचा-नीचा काकलासर तो आ ढुक्या।**
नीचे से नीचे काकलासर तो आ ढुके।

सन्दर्भ कथा—काकलासर एक छोटा सा गाँव है जो चूरू जिले में है। एक बार बीकानेर के महाराजा काकलासर व्याहने के लिये आये। दूल्हे के वेश में महाराजा ऊँचे हाथी पर सवार थे और घर का द्वार बहुत नीचा था। इसलिये तोरण मारने के लिए महाराजा झुके, लेकिन फिर भी तोरण दूर रह गया। इस पर किसी ने महाराजा से कहा कि अन्नदाता, कुछ और नीचे। वहीं एक चारण खड़ा था। वह व्यंग्य पूर्वक बोल पड़ा कि बीकानेर के महाराजा काकलासर तो आ ढुके, अब इससे नीचे और क्या आयेंगे।

२१२२. **नीचो करचो कांधो, देखण आळो आंधो।**
शर्म से कंधा (गर्दन) झुका लेने के बाद भी कोई देखे तो देखने वाला ही अन्धा है।

२१ ३. **नीत गैल बरकत होवै।**
नीयत के अनुसार ही बरकत होती है।

संदर्भ कथा—(१) एक राजा शिकार खेलता हुआ जंगल में भटक गया। संगी-साथी सब पीछे छूट गये। प्यास के मारे उसका दम घुटने लगा। कुछ दूरी पर उसे एक झोंपड़ी दिखलाई दी तो राजा वहाँ गया। वहाँ एक बुढ़िया थी। उसने अपने खेत में से एक गन्ना तोड़ा और गन्ने के रस से कटोरा भर कर राजा को दिया। राजा को वह अमृत जैसा स्वादिष्ट लगा। वह तृप्त हो गया। लेकिन राजधानी में पहुँच कर उसने गन्ने की खेती पर भारी कर लगा दिया।

संयोग से दूसरी बार भी राजा भटक कर उसी बुढिया के पास पहुँचा। बुढिया ने पांच-सात गन्नों का रस निकाला तो कटोरा भरा। लेकिन राजा को वह पहले जैसा स्वादिष्ट नहीं लगा। उसने बुढिया से पूछा कि पिछली बार तो एक ही गन्ने के रस से प्याला भर गया था एवं वह स्वादिष्ट भी बहुत था। लेकिन इस बार गन्नों में न तो उतना रस है और न मिठास, इसका क्या कारण है? बुढिया ने उत्तर दिया कि यहाँ के राजा की नीयत खराब हो गई है जिससे गन्ने के रस में भी अन्तर आ गया है। राजा का सिर लज्जा से झुक गया।

(२) एक किसान के दो बेटे थे, लेकिन दोनों ही अकर्मण्य। किसान के मरने के बाद उनके घर में बहुत तंगी आ गई। तब लड़कों की मां ने अपने बेटों से कहा कि अमुक सेठ तुम्हारे बाप का दोस्त है, तुम उसके पास जाकर कुछ रुपये उधार ले आओ और खेती करो। दोनों लड़के गये और उनका परिचय पाकर सेठ ने उन्हें सौ रुपये दिलवा दिये। दोनों को बड़ी आसानी से रुपये मिल गये थे. अतः उन्होंने सोचा कि अब तो कई दिन गुलछर्रे उड़ाएँगे। रास्ते में आते समय वे एक तालाब पर ठहरे और तालाब में नहाने घुसे तो एक चील रुपयों की 'न्योळी' को उठा ले गई। दोनों भाई फिर सेठ के पास गये तो सेठ ने उन्हें फिर सौ रुपये दिलादिये। इस बार वे नहाने के लिए तालाब में घुसे तो एक भैंस रुपयों की पोटली पर गोबर कर गई। लड़कों को थैली नहीं मिली तो वे दोनों फिर सेठ के पास गये और सेठ ने तीसरी बार भी उन्हें रुपये दे दिये।

सेठ के व्यवहार का उन पर बड़ा असर हुआ और उन्होंने गुलछर्रे उड़ाने की बजाय मेहनत से खेती करने का निश्चय कर लिया। इस बार उन्होंने एक सेर बाजरे का आटा मोल लिया और उसी तालाब पर पहुँच कर रोटी बनाने की सोचने लगे। एक भाई ने आग जलाने की इच्छा से भैंस वाले गोबर को उठाया तो उसे रुपयों की पोटली मिल गई। दूसरा भाई लकड़ियों की तलाश में एक खेजड़ी के पास पहुँचा तो उसे वृक्ष की डाल से एक रस्सी लटकती दिखलाई दी। वह रुपयों वाली 'न्योळी' की रस्सी थी और उसके खींचते ही 'न्योळी' नीचे आ गिरी। अब उनकी समझ में यह बात आ गई कि पहले हमारी नीयत खराब थी, इसलिए रुपये चले गये और अब हमारी नीयत साफ है तो गये हुए रुपये भी वापस मिल गये।

२१२४. **नूंतो नूंतै को, नूंतो जूतै को।**
नूंतो आये जाये को, नूंतो गीत गाये को।

न्योता या तो न्योते के बदले में दिया जाता है अथवा धौंस पट्टी से। न्योता उसको मिलता है जिसका आना-जाना हो या जो उसके यहाँ काम धंधा करता हो।

रू० नूंतो आवरण-जावण को, नूंतो टाबर खिलावण को।

२१२५. **नूंत्या पंदरा, आया बीस, घर का रळ कर होग्या तीस।**

न्योता तो पंद्रह व्यक्तियों को दिया था, लेकिन बीस आ गये और घर वालों को मिला कर तो तीस हो गये।

अनुमान से दुगने जीमने वाले हो गये।

२१२६. **नूंत्यो बामण बैर गावै ।**

यदि किसी ब्राह्मण को भोजन का निमंत्रण तो दे दिया जाय, लेकिन किसी विशेष कारणवश उसे भोजन न कराया जा सके, तो वह दूसरों के आगे निंदा करता है । जब अशौच (स्यावड़, सूतक) आदि के कारण ब्राह्मण भोजन नहीं करता तो उसे भोजन-सामग्री या नकद राशि देकर संतुष्ट किया जाता है ।

२१२७. **नेकी कर अर कूवै में गेर ।**

किसी का उपकार करके उसे भूल जाना चाहिए ।

२१२८ **नेकी जावै नौ कोस, बदी जावै सौ कोस ।**

कीर्ति की अपेक्षा अपकीर्ति अधिक फैलती है ।

२१२९. **नेम निमाणा, धरम ठिकाणा ।**

२१३०. **नैकारै खेती नीपजै ।**

नकारते रहने से खेती अधिक फलती है ।

२१३१ **नैवो धारयां भगवान मिलै ।**

दृढ निश्चय से ही भगवान् मिलते हैं ।

२१३२. **नोकरी की जड़ झावलै में ।**

मालिक जब चाहे तभी नौकर को हटा सकता है ।

रू० (१) नोकरी की जड़ धरती सें सवा हाथ ऊंची ।

(२) नोकरी घणी आकरी ।

३) नोकरी न कीजिये, घास खोद खाइये ।
और खोदै आस-पास, आप दूर जाइये ।।

२१३३. **नो गोदी नो आंगळी, नो नानेरै जाय ।**
हुकम होवै तो और जणां, काळ पड़्यां के खाय ।

बहुत अधिक संतान वाली स्त्री के प्रति व्यंग्य ।

२१३४. **नो नगद न तेरा उधार ।**

तेरह रुपये में उधार बेचने की अपेक्षा नौ रुपये में नकद बेचना अच्छा ।

२१३५. **नो नाथां में नाथ कुहाऊं पट दरसण में आगो ।**
औरां कै गळ सेळी सींगी मेरै गळ में पागो ।।

बिना माने-ताने ही हर काम में जबरन आगे रहने वाला व्यक्ति ।

२१३६. **नो पेठा तेरा लगवाळ, गधी नै लेग्यो कोटवाळ ।**

संदर्भ कथा—किसी राजा के यहाँ तरह-तरह के अनेक कर लगते थे । एक बार एक कुम्हार अपनी गधी पर लाद कर वहाँ पेठे (एक प्रकार का कुम्हड़ा) बेचने के लिए लाया । पेठे केवल नौ थे और लाग वसूल करने वाले तेरह । जब नौ आदमियों ने पेठे ले लिए तो कोतवाल उसकी गधी को ही ले भागा ।

२१३७. **नो में ल्यायो नारो, च्यार को चरायो चारो अर गायक आवै जिको पांच धामै ।**
नौ रुपये में बैल खरीदा, चार रुपये का उसे चारा खिला दिया और जो भी ग्राहक आता है, वह कुल पांच रुपये धामता है ।
घाटे का सौदा ।

२१३८. **न्याऊ ई न्याऊ, पण तेरो तो खसम हूं ।**
पति अपनी पत्नी से कहता है कि मैं चाहे कितना ही गया-गुजरा हूँ, लेकिन तेरा तो खसम हूँ ।
रू० चोदू ई चोदू, पण तेरो तो खसम ई हूँ ।

२१३९. **न्याऊ दिन आवै जद एक कानी सें कोनी आवै ।**
बुरा दिन आता है तो एक तरफ से नहीं, चारों तरफ से आता है ।

२१४० **न्याऊ बात तो साची होज्या, पण चोखी बात साची कोनी होवै ।**
किसी की कही हुई बुरी बात तो सत्य हो जाती है, लेकिन अच्छी बात सत्य नहीं होती ।

सन्दर्भ कथा—एक आदमी निहायत गरीब था । उसने सुन रखा था कि आदमी के मुँह से दिन भर में निकली हुई बातों में से एक बात अवश्य सत्य हो जाती है । उसके पास पीतल की एक टोकनी थी । एक दिन सवेरे ही उसने वह टोकनी अपने सामने रखली और बार-बार कहने लगा, 'बनजा सोने की, बनजा सोने की' । लेकिन टोकनी सोने की नहीं बनी । ऐसा करते-करते शाम होने लगी तो उसने झल्ला कर कहा कि सोने की नहीं तो लोहे की ही बनजा, और उसके इतना कहते ही टोकनी लोहे की बन गई ।

२१४१. **न्यारै घरां का न्यारा बारणां ।**
अलग घर का अलग दरवाजा ।

२१४२. **न्याव को अर भाव को कोई नै बेरो कोनी पड़ै ।**
किसी को यह सुनिश्चित पता नहीं होता कि न्यायाधीश क्या निर्णय देगा और अगले दिन किसी वस्तु का क्या भाव रहेगा ।

२१४३. **न्हाणो धोणो तो बामण को धरम है ।**
नहाना-धोना तो ब्राह्मण का धर्म (कर्तव्य) ही है ।

सन्दर्भ कथा—एक ब्राह्मण का एक सेठ के यहाँ आना जाना था । एक दिन सेठ ने पंडितजी से पूछा कि क्यों पंडितजी स्नान तो कर आये होंगे ? लेकिन जाड़े के कारण पंडितजी ने स्नान नहीं किया था, इसलिए कुछ बोले नहीं । किन्तु उनके मन में यह पछतावा जरूर रहा कि यदि आज नहा कर आया होता तो सेठजी अवश्य ही कुछ देते । यद्यपि पंडितजी जाड़े में स्नान

करने से बहुत कतराते थे, फिर भी सेठ से कुछ प्राप्त होने की आशा में वे अगले दिन बड़े तड़के उठे, स्नान किया, तिलक-छापे लगाये और सेठ की हवेली की ओर चल पड़े। सेठ ने उन्हें देख कर कहा कि पंडितजी, आज तो नहा-धो कर आये लगते हैं। पंडितजी तपाक से बोले—हाँ सेठ सा'ब नहा-धोकर आया हूँ। इस पर सेठ ने लापरवाही से कहा कि पंडितजी अच्छा किया, नहाना धोना तो ब्राह्मण का धर्म ही है। सेठ का उत्तर सुन कर पंडितजी का उत्साह ठंडा पड़ गया।

२१४४. न्हाया जित्तो ई पुन्न।

जितना नहा सके, उतना ही पुण्य।

जितना दान-पुण्य कर पाये, अथवा किसी का भला कर पाये, उतना ही अच्छा।

२१४५. पंच कोसी प्यादो रवै, दस कोसी असवार।
कै तो नार कुभारजा, कै रांडोलो भरतार।।

यदि पैदल घर आने वाला व्यक्ति संध्या हो जाने के कारण अपने घर से पांच कोस की दूरी पर रुक जाए और सवार दस कोस की दूरी पर रुक जाए तो यही समझना चाहिए कि या तो पत्नी कुभार्या है अथवा पति पुंसत्व-हीन है।

२१४६. पंचां को कै'णो सिर-माथै, पण नाळो अठै ई पड़सी।

पंचों का निर्णय सिर-आंखों पर, लेकिन मेरे घर का नाला तो यहीं गिरेगा।
पंचों का निर्णय मौखिक रूप से तो स्वीकार, लेकिन कार्य रूप देने से इन्कार।

२१४७. पंचां में परमेसर बोलै।

पंचों के मुंह भगवान् बोलते हैं।

पंच पंचायती का अस्तित्व भारतीय समाज में प्राचीन काल से रहा है। साहित्य के अतिरिक्त शिलालेखों से भी इसकी पुष्टि होती है। चन्द्रगुप्त द्वितीय के सांची प्रस्तर अभिलेख (सन् ४१२-१३ ई०) में 'पञ्चमण्डल्या' का स्पष्ट उल्लेख हुआ है जो आधुनिक पंचाहृत या पंचायत का ही द्योतक है। मानस में तुलसीदासजी ने भी पंचों को पूरा महत्त्व दिया है (जो पांचहि मत लागै नीका, करहु हरषि हियँ रामहि टीका)। पुरालेखों में भी पंच-पंचायती, का उल्लेख (पंच पंचायती, राज दरबार झूठो पड़े) पर्याप्त मिलता है। लेकिन कालान्तर में पंच-पंचायती की स्थिति शोचनीय बनती गई जिसके फलस्वरूप ऐसी कहावतों का भी निर्माण हुआ—

पांच पंच छठो पटवारी, खुल्ला केस चुरावै नारी।
फिरतो फिरतो दातण करै, जां कै पाप सैं कीड़ा मरै।।

२१४८. पंडत को पढायो पाधो, पाधै को पढायो आधो ।
अर आधै को पढायो, कीं न काईं ।
पंडित का पढाया हुआ पाधा, पाधे का पढाया हुआ आधा और आधे का पढाया हुआ कुछ भी नहीं ।
जिसका स्वयं का ज्ञान अधूरा है, वह दूसरों को क्या पढाये ?

२१४९. पंडत तो माघ ।
पंडित तो माघ ही है ।
माघ अपनी एक मात्र ज्ञात कृति 'शिशुपालवधम्' (महाकाव्य) के बल पर अमर हैं । ये श्रीमाल या भीनमाल (राजस्थान) के रहने वाले थे ।

२१५०. पंसेरी में पांच सेर की भूल ।
पांच सेर में पांच सेर की भूल ।

२१५१. पक्कै घड़ै कै कारी कोनी लागै ।
पक्के घडे को कारी नहीं लग सकती ।
कारी = जोड़ या पैवन्द ।

संदर्भ कथा—एक किसान की औरत बड़ी कर्कशा थी । उसकी देखा-देखी उसकी बेटी भी वैसी ही बन गई थी । लेकिन लड़की का पति उसे ब्याह कर अपने घर ले गया तो उसने शुरू में ही उस पर ऐसा आतंक जमा दिया कि वह एक दम सीधी हो गई । एक बार उसका बाप उससे मिलने आया तो बेटी के बदले हुए स्वभाव को देख कर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ । अपने घर जाकर उसने भी अपने दामाद वाली नीति अपनाने की चेष्टा की तो उसकी औरत ने कहा कि लड़की तो कच्चे घड़े के समान थी और इसलिए वह डर गई, लेकिन मैं तो पके घड़े की तरह पक चुकी हूं, अतः अब तुम्हारा रोब मेरे ऊपर नहीं जमेगा ।

२१५२. पगड़ी गई भैंस कै पेट ।
पगड़ी भैंस के पेट में चली गई ।
जब एक आदमी घूस देकर अपना काम बनाना चाहे, लेकिन प्रतिपक्षी उससे बड़ी घूस दे दे तो पहले वाले की घूस उसके नीचे दब जाती है ।

संदर्भ कथा—एक महाजन का किसी गूजर पर कुछ ऋण था । जब गूजर ने रुपये नहीं दिये तो महाजन ने हाकिम के पास फरियाद की और उसे अपने पक्ष में करने के लिए उसे एक पगड़ी बंधवादी । इस पर गूजर ने एक भैंस हाकिम के घर भिजवादी । अब गूजर का पक्ष प्रबल हो गया । जब पेशी हुई तो हाकिम ने महाजन से कहा कि तुम गूजर को तंग मत करो, उसके पास जब रुपये होंगे, तभी मिलेंगे । इस पर जब महाजन ने अपनी पगड़ी को हाथ लगाते हुए हाकिम से कहा कि मेरी पगड़ी की लाज रखिये तो हाकिम बोला—पगड़ी तो भैंस के पेट में चली गई ।

२१५३. पग तीखो मुख चरपरो, निपट निलज्जो होय।
नाक काट गुद्दी धरै, करै दलाली सोय॥
जो चलने-फिरने में तेज हो, वाचाल हो और शर्म-संकोच न करे, वही दलाली कर सकता है।

२१५४. पग पूजै, सिर कूटै।
पद में बड़ा होने के कारण तो पूजनीय, लेकिन नीच कर्मो के कारण पीटे जाने योग्य।

२१५५. पग बळै तो जूती पैरजे, धरती पर जाजम कोनी बिछै।
यदि घाम से तप्त धरती पर चलने से पैर जलते हों तो जूते पहनलो; ऐसा नहीं हो सकता कि तुम्हारे लिए सारी धरती पर जाजिम बिछाई जाए। जाजम = जाजिम; बेल-बूटे छपी हुई एक मोटी चद्दर।

२१५६. पग में सैं कांटो काढै तो ई पीड़ होवै, कपूत होयां भी बेटै नै घर सैं कैयां काढ्यो जावै?
यदि पैर में से कांटे को भी निकालते हैं तो पीड़ा की अनुभूति होती है, फिर कपूत होने पर भी बेटे को घर से कैसे निकाला जा सकता है?

२१५७. पगला देख कर ठिरग्या, मुखड़ो देख कर बळग्या।
नव वधू के पैर देख कर तो मन को शीतलता प्राप्त हुई, लेकिन जब घूंघट उठाकर मुँह की ओर देखा तो मन जल-भुन गया।

२१५८. पगां सैं गांठ दियोड़ी, हाथां सै कोनी खुलै।
ऐसा होशियार व्यक्ति जो अपने पैरों से गांठ लगादे तो दूसरे उसे हाथों से भी न खोल पायें। बात की बात में ऐसी उलझन पैदा करदे, जिसे सुलझाना दूभर हो जाए।

२१५९. पटै लिखाई मोठ बाजरी मांगै चावळ-दाळ।
राघो–चेतन यूं कवै, चिट्ठी तो समाळ॥
भाग्य में जब मोठ-बाजरा खाना ही बदा है, तब चावल-दाल की आकांक्षा करना निरर्थक है।

२१६० पड़ग्या खल्ला उड़गी खेह, फूल फड़क सी हो'गी देह।
जूते पड़ने से खेह उड़ गई और देह फूल की तरह हलकी-फुलकी हो गई। निर्लज्ज आदमी अपनी बेइज्जती होने पर अधिक इठलाता है।

२१६१. पड़ पड़ कर ई असवार होवै।
ठोकर खाकर ही मनुष्य होशियार बनता है।

२१६२. पड़वा दूज वैसाख की, होय उजाळै पाख।
बादळ थिर रह जाय तो, श्राछी निपजै साख ।।

वैसाख शु० प्रतिपदा श्रौर द्वितीया को आकाश में बादल स्थिर रह जाएँ तो जमाना अच्छा हो।

२१६३ पड़वा पाठ भुळावणी, छोरां नैं खिलावणी।

प्रतिपदा के दिन पढ़ने से विद्या क्षीण हो जाती है अथवा पाठ विस्मृत हो जाता है। इसलिए कुछ वर्षों पूर्व तक गुरुग्रों की पाठशालाओं में प्रतिपदा को छुट्टी रहती थी।

यह मान्यता रामायण काल में भी थी। सीताजी का पता लगा कर हनुमानजी जब लंका से लौटे तो समुद्र के किनारे पर प्रतीक्षा करते हुए वानरों से उन्होंने सीता के विषय में जानकारी देते हुए कहा कि जिस प्रकार प्रतिपदा के दिन स्वाध्याय करने वाले विद्यार्थी की विद्या क्षीण हो जाती है, उसी प्रकार सीता का शरीर भी दुर्बल हो गया है—प्रतिपत्पाठशीलस्य विद्येव तनुतां गता—वा० रामायण, सुन्दर काण्ड ५६/३१

रू० पड़वा पाटी भांगणी, बीज पाटी सांमणी।

२१६४. पड़्यो पारस बेचै तेल, श्रै देखो कुदरत का खेल।

किसी तेली के पास पारस था, लेकिन वह उसे सामान्य पत्थर समझ कर बटखरे के स्थान पर तेल-तौलने के काम में लेता था। इसी को लक्ष्य करके किसी ने कहा कि यह भाग्य का खेल ही है जो पारस पास में होने पर भी यह तेल बेच रहा है।

रू० (१) पढ़्यो फारसी बेचै तेल, श्रै देखो कुदरत का खेल।
(२) पढ़्यो फारसी बेचै श्राटो, यो देखो किसमत को घाटो।।

२१६५. पढ़ले बेटा फारसी, तळै पड़्यो सो हारसी।

सूत्र रूप में सार बात यह है कि जो नीचे दबेगा, वही घाटे में रहेगा।

२१६६. पढ़्यो पण गुण्यो कोनी।

पढा तो सही, लेकिन मनन नहीं किया। पढने के बाद मनन करना आवश्यक है।

संदर्भ कथा—राज पंडित का बेटा काशीजी से पढ कर आया तो राजा ने उसकी परीक्षा लेने के लिए उसे दरबार में बुलाया और उससे पूछा कि मेरी मुट्ठी में क्या है? लड़का ज्योतिष पढ़ कर आया था और उसने अपनी विद्या के बल पर बतलाया कि आपके हाथ में एक गोल वस्तु है जिसमें छेद है और वह सफेद पत्थर जैसी है। अब राजा ने उसका नाम पूछा जो उसकी

महज वुद्धि पर निर्भर करता था। लडके ने सोचा कि चक्की का पाट गोल होता है, उसके वीच में छेद होता है और वह पत्थर तो है ही, इसलिए झट मे बोल पडा कि आपके हाथ मे चक्की का पाट है। उसकी वात सुनकर राजा सहित सारे दरवारी हँस पड़े। तव राजा ने उससे कहा कि तुम पढे तो अवश्य हो, लेकिन गुने नही। तुमने यह नही सोचा कि चक्की के पाट का यहाँ क्या काम, और वह आदमी की मुट्ठी मे कैसे आ सकता है ? तव राजा ने अपनी मुट्ठी खोल कर उसे दिखलाई और कहा कि यह देखो, मेरी मुट्ठी मे मोती है।

२१६७ **पतळा पतळा पोवै, पी'र कां नै रोवै।**
मोटा मोटा पोवै. सणक सणक सोवै।।

जो स्त्री पतली-पतली रोटियां पोती है और घर के सदस्य भोजन भट्ट होते हैं तो उसे वडी रात गये तक रोटियां वनानी पडती हैं और वह तग आकर पीहर वालो को कोसती है कि मुझे कैसे घर मे व्याह दी। लेकिन मोटी-मोटी रोटिया पोये तो जल्दी जाकर आराम से सो सकती है।

२१६८ **पतळी छा जांवण सें क्यूं खोवै ?**

अधिक पतली छाछ और किसी काम मे न भी आये तो जामन के काम तो आही सकती है।

तु० पतळी छा खाटै सें क्यूं खोवै ?

२१६९. **पथवारी में ईं पग सूजग्या, गंगाजी तो दूर है।**

पथवारी मे ही पैर सूज गये तव गगाजी तक कैसे जा पाओगे, गंगाजी तो वहुत दूर है।

पथवारी = जव किसी मृतक का पुत्र या अन्य सम्वन्धी मृतक के फूल' गगाजी मे प्रवाहित करने जाता है तव पीपल के वृक्ष के नीचे पथवारी का पूजन करके जाता है। जवारे वोये जाते हैं और उसके लौटने तक उसकी स्त्री अन्य स्त्रियो के साथ नित्य आकर उन्हे सींचती हैं, गीत गाये जाते हैं (सींचंगी वाकी नार सवाई)। पथवारी—पथ की रानी मानी जाती है (पथवारी ये माता, पथ की राणी)। पथिक की मंगल कामना और निर्विघ्न यात्रा के लिए पथवारी का पूजन किया जाता है। गंगाजी जाने वाला व्यक्ति जव लौटता है तो पहले पथवारी के स्थान पर ही आकर रुकता है, तव घर से स्त्रिया गीत गाती हुई वहां आती हैं और उसे गीत गाते हुए ही घर ले जाती है।

२१७० **पपीहो पिउ पिउ करै, मोरां घणी अजग्ग।**
छत्र करै मोर्‌यो सिरै, तो नदियां वहै अथग्ग।।

पपीहा वार-वार पिउ पिउ करे, मोर अधिक वोलें और छत्री तानें तो वर्षा इतनी अधिक होगी कि नदियो मे उफान आ जाएगा।

२१७१. परणीजे जिको ई गाई जे।
जिसका विवाह होता है, उसी के गीत गाये जाते हैं।

२१७२ परणीज्या नईं तो जान तो गया ई हां।
विवाह नहीं हुआ तो क्या, बरात तो गये ही हैं।
हम भी कुछ जानकारी तो रखते ही हैं।
रू० ब्याया कोनी तो के होयो, जान तो गया हां।

२१७३. परतख नै परमाण के ?
प्रत्यक्ष को प्रमाण की क्या आवश्यकता ?

२१७४. परनारी कै पीव नै, वेसर यूं बरजंत।
जैसे धजा सिकन्द की, पंथी मना करंत।।
पर नारी से प्रेम करने वाले को वेसर हिलहिल कर वैसे ही मना करता है, जैसे सिकन्दर के जहाज पर लगी ध्वजा युक्त पुतली खतरे की तरफ बढ़ने से मना करती थी।
कहते हैं कि सिकन्दर महान् के जहाज पर ध्वजा युक्त पुतली लगी रहती थी जो जहाज-चालक को खतरे से दूर रहने का पूर्व संकेत दे देती थी।

२१७५. परनारी पैनी छुरी, तीन ठोर सें खाय।
धन छीजै जोवन हड़ै, पत पंचां में जाय।।
पर नारी से प्रेम करना पैनी छुरी के समान है। वह धन और यौवन का हरण करती है और पंचों में प्रतिष्ठा गंवा देती है।
रू० पर नारी पैनी छुरी, पांच ठौर सें खाय।
धन छीजै जोवन हड़ै, पत पंचां में जाय।
जीवत काढै काळजो, अन्त नरक ले जाय।।

२१७६. परभाते गेह डम्बरा, दोपारां तपंत।
रात्यूं तारा निरमळा, चेला करो गछंत।।
प्रात: बादल, दोपहर में गर्मी और रात को निर्मल तारे दिखलाई दें तो अकाल पड़े, इसलिए गुरु अपने चेले से अन्यत्र चलने को कहता है।
रू० (१) परभाते गेह डम्बर छाय, सांझा सीळी बाळ चलाय।
रात्यूं तारा तट्टम-तट्ट, कंत दिसावर चालो चट्ट।।
(२) दिन में बादळ, रात तारलिया।
चाल कंत जठै, जीवै टाबरिया।।

२१७७. परमातमा गंजै नै नख न देवै।
ईश्वर गंजे को नाखून न दे।

२१७८ **परवाई चालै घणी, विधवा पान चबाय।**
आ तो ल्यावै मेह नै, वा काहू संग जाय।
परवा हवा अधिक चले तो वह वर्षा को ले आती है और विधवा पान चबाने लगे तो वह नया पति करती है।

२१७९. **परवा ऊपर पछवा फिरै तो घर बैठी पणिहार भरै।**
यदि परवा हवा पर पछवा (पश्चिमी) हवा आ जाए तो पनिहारिन अपने घर पर ही पानी भरे, उसे अन्यत्र जाने की आवश्यकता नहीं, अर्थात् वर्षा खूब हो।
रू० परवा ऊपर पछवा चालै, ज्यूं सक्कर पर घी।

२१८०. **परवारिया को पूत, मंगायो हुक्को ल्यायो जूत।**
परिवारिया का पूत, ऐसा सपूत, मंगाया हुक्का, लाया जूत।
कहा कुछ, किया कुछ।

२१८१. **परसाद में दो गुण; देवता भलो मानै, घरकां को मीठो 'मुं' होज्या।**
देवता को प्रसाद चढ़ाने में दोहरा फायदा, देवता प्रसन्न हो और घर वालों के मुँह मीठे हो जाएँ।

२१८२. **पराई आस जाय निरास, आपकी आस भोग विलास।**
दूसरों की आशा करना निरर्थक। अपने ही बल-बूते पर ऐश कर सकते हैं।

२१८३. **पराई खाई खीचड़ी, गेणै मेल्यो जीव।**
दूसरे का अन्न खाने वाला, अपनी स्वतन्त्रता को गिरवी रख देता है।

२१८४. **पराई पीड़ परदेस बराबर।**
दूसरे की पीड़ा से सर्वथा उदासीन।

२१८५ **पराई सोड़ में सोवै जिको पादणो कुहावै।**
दूसरों के घर रहने वाले का सम्मान नहीं रहता।

२१८६. **पराया पूत कीं नै कमा कर घालै ?**
पराये पूत दूसरों को कब कमा कर देते हैं ?

२१८७. **पराये घरां नौ माचां पर कम्मर खुलै।**
अपने घर में चाहे भूंजी भांग न हो, लेकिन दूसरों के घर पर जाते हैं तो बड़ी ठसक दिखलाते हैं।

२१८८. **पराये दुख दूबळा थोड़ा, पराये सुख दूबळा बोळा।**
दूसरों के दुःख से दुखी होने वाले तो विरले ही होते हैं, लेकिन दूसरों को सुखी देखकर जलने वाले अधिक होते हैं।
रू० पराये सुख दूबळो।

२१८९. **परालब्ध पैली वणी, पीछै वण्यो सरीर ।**
शरीर से पहले ही प्राणी का भाग्य बन जाता है ।
जीव का भाग्य पहले से ही सुनिश्चित हो जाता है ।

२१९०. **पलक पखवाड़ो, घड़ी छः मास ।**
जिसका कहदे कल, उसका क्या व्हाल ?
वह झूठा प्राणी जो आजकल करके वर्षों का समय निकाल दे ।
रू० पलक पखवाड़ो घड़ी महीनो, संझ्या बारा मास ।
ठाकर तो तड़कै की कैवै, जैको के विसवास ?

२१९१. **पल्लै कोडी कोनी, नांव किरोड़ीमल ।**
पास में कौड़ी नहीं और नाम किरोड़ीमल !
रू० (१) नांव हजारीलाल, घाटो ग्यारासै को ।
(२) पैरण नै घाघरो ई कोनी, नांव सिणगारी ।
(३) नांव धापली, फिरै टुकड़ा मांगती ।
(४) पगां पांगळी, नांव फुदकी ।

२१९२. **पांगळी डाकण घरकां नै खा ।**
पंगु डाकिन कहीं जा तो सकती नहीं, अतः अपने घर वालों को ही खा जाती है ।
निकृष्ट आदमी अपने घर वालों को ही पीड़ा पहुँचाता है ।
रू० चोट्‌टू रांगड़ो घर कां नै मारै ।

२१९३. **पांच आंगळियां पूंचो भारी ।**
पांचों उँगलियों से ही पोंहचा बलिष्ठ होता है ।
संगठन में ही ताकत है ।

२१९४. **पांच पंच मिल कीजे काज, हारे जीते आवै न लाज ।**
जब पांच प्रमुख एक मत होकर कोई काम करते हैं, तब उस काम में हारने पर भी संकोच नहीं उठाना पड़ता ।

२१९५ **पांच-पांच घड़ी का मोर कुरळा-कुरळा कर मरग्या जद पाव कै पपैये की के चिकारी ?**
ऐसी मान्यता है कि मोर और पपीहे बोलते हैं तब वर्षा आती है । लेकिन जब पच्चीस-पच्चीस सेर के मोर बोल-बोल कर मर गये और वर्षा न आई तब बेचारे पाव भर के पपीहे की क्या बिसात ?

२१९६. **पांच सात की लाकड़ी, एक जणै को भार ।**
किसी काम को सब लोग मिल-बांट कर करें तो आसान होता है, लेकिन एक के लिये भार-स्वरूप हो जाता है ।

२१९७. पांचां मीत पचीसां ठाकर, सोवां सग्गो सोई ।
इतरां खातर मतां बिगाड़ो, होणी हो सो होई ।।
पांच रुपये की खातिर मित्र से, पच्चीस के लिए ठाकुर से और सौ रुपये के लिये सगे-सम्बन्धी से बात नहीं बिगाड़नी चाहिए ।

२१९८ पांचूं आंगळी एकसी कोनी होवै ।
हाथ की पांचों उँगलियाँ एक जैसी नहीं होतीं ।
घर या समाज में सब लोग एक जैसे नहीं होते ।

२१९९ पांचूं थोक पराया लाडा, मरोड़ घणी ।
पाचों वस्त्र तो दूसरों से उधार लेकर पहन रखे हैं, तिस पर ऐंठ इतनी अधिक ?
झूठा दंभ ।

२२००. पांचूं भाई पांच ठोड, मोको आयां एक ठोड ।
यों तो पांचों भाई अलग-अलग, लेकिन आवश्यकता पड़ने पर सब एक हो जाते हैं ।
पाँचों उँगलियां अलग-अलग होते हुए भी खाने के समय एक साथ आ जुटती हैं ।

२२०१. पांत में दुभांत क्यूं ?
एक ही पंक्ति में बैठाकर भोजन कराने वालों के साथ भेद-भाव नहीं होना चाहिये ।

२२०२. पांव उभाणा जायसी, कोड़ीधज कंगाल ।
चाहे करोड़पति हो चाहे कंगाल, मरने पर तो सब नंगे पैरों ही जाएँगे ।

२२०३. पांव पिछाणै मोचड़ी, नैण पिछाणै नेह ।
चोर पिछाणै च्यानणों, मोर पिछाणै मेह ।
जूती पैर को, नेत्र स्नेह को, चोर प्रकाश को और मोर मेह को पहचानता है ।

२२०४ पांवरी कुत्ती अर पूंछ में कांगसियो !
खाज से विकृत कुतिया (जिसके बाल झड़ गये हैं) और पूँछ में कंघा ?
रू० (१) पांवरी सांड, बनाती कूंची ?
(२) पांवरी सांड अर नारनोळ को भाड़ो ?
(३) पांवरी सांड, पकवान की भूखी ?
(४) पांवरी कुत्ती अर कोट्यार की रुखाळी ?

२२०५. पाखी आळो पैली चिमकै ।
पीठ पर घाव वाला पशु (ऊँट आदि) कौवे को देखते ही चौंक पड़ता है, भले ही वह घाव में चोंच न मारे ।

२२०६. पागड़ी जावो आगड़ी, सिर सलामत चाये ।
इज्जत जाये तो जाये, सिर सलामत चाहिये ।
उस व्यक्ति के प्रति व्यंग्य जो इज्जत की अपेक्षा स्वार्थपूर्ति को अधिक महत्व देता है ।

२२०७ पाडियो भैंस की आंख पैली ई पिछाण ले ।
भैंस का कटरा पहले ही अपनी मां की आंख पहचान लेता है । यदि दुहने के वक्त उसका रुख अनुकूल नहीं होता तो वह उसके स्तनों की ओर नहीं लपकता ।

२२०८. पाडै को अर पराई जाई को राम बेली ।
भैंसे का और पराई जाई का भगवान् ही मालिक ।

२२०९. पाड़ोसी को टाबर तावड़ै बाळचोड़ो ई चोखो ।
पड़ोसी के बालक को किसी काम के मिस व्यर्थ ही धूप में भेजकर संतोष की अनुभूति करना ।
रू० सीरी को टाबर तावड़ै बाळचोड़ो ई चोखो ।

२२१०. पाणी का ई सांसा, जठै क्यां का बासा ?
जहां पानी भी सुलभ न हो, वहां कैसा रहना ?

२२११. पाणी तो निचाण में ई जासी ।
पानी तो नीचे की ओर ही बहेगा ।
रू० (१) आखर पाणी निचाण आया सरसी ।
(२) आखर नेम निमाणां, धरम ठिकाणां होयां सरसी ।

२२१२. पाणी पाळा पातस्या, उतराधा आवै ।
पानी, पाला और पादशाह (बादशाह) उत्तर की ओर से ही आते हैं ।

२२१३. पाणी पीकर के जात पूछणी ?
पानी पी चुकने के बाद जाति क्या पूछनी ?

२२१४. पाणी पीकर मूत तोलै ।
बहुत अधिक सयानप लगाने वाले व्यक्ति के प्रति व्यंग्य ।
रू० मिण मिण कर मूतै ।

२२१५. पाणी पीये छाण कर, सग्गो (सगपण) करिये जाण कर ।
पानी छान कर पीना चाहिये और विवाह-सम्बन्ध अच्छी तरह जान-पहिचान करके करना चाहिये ।

२२१६ पाणी पीवै छाण, जीव मारै जाण ।
पानी तो छान कर पीता है और जीव हिंसा जानबूझ कर करता है ।

२२१७. **पाणी पैली पाळ बांधणोड़ी आडी आवै ।**

पानी आने से पहले ही पाल बनानी सार्थक है ।

संकट आने से पहले ही उपाय करना अपेक्षित है ।

२२१८. **पाणी वै'ता भला अर साधु रमता भला ।**

पानी बहता अच्छा और साधु रमता अच्छा ।

बहता पानी निर्मला, पड़्या सो गंदळा होय ।

२२१९ **पाणी में खोज पड़्या ।**

चोर की तलाश उसके खोज (पद चिन्ह) देख कर की जाती है, लेकिन पानी के खोजों का क्या पता चले ?

२२२०. **पाणी में बड़ कर कोई सूको कोनी नीकळै ।**

पानी में घुस कर कोई सूका नहीं निकल पाता ।

२२२१. **पाद को पदमसिंग कर दियो ।**

तिल का ताड़ बना दिया ।

रू० मैल का ना'र होग्या ।

२२२२. **पादा फूहड़ क्यूं कर जाणी ?**

रूआ घड़ा उघाड़ा पाणी, जीं में काग करै कलवाणी ।

निपट फूहड़ स्त्री की पहिचान क्या है ?

यही कि, उसके यहाँ पानी के घड़े पुराने होते है जो खुले रखे रहते हैं और जिनमें कौवे चोंच मार मार कर क्रीड़ा करते रहते हैं ।

२२२३ **पाप की पाण आये विना कोनी रैवै ।**

एक वार तो पाप के पैसे की चमक-दमक आती ही है ।

२२२४. **पाप को घड़ो भरयां ईं फूटै ।**

पाप का घड़ा भरने पर ही फूटता है ।

२२२५. **पाप को बाप लोभ ।**

पाप का बाप लोभ होता है । लोभ के वशीभूत होकर ही आदमी पाप कर्म करता है ।

सन्दर्भ कथा – एक दिन राजा ने अपने मंत्री से पूछा कि पाप का बाप कौन है ? मन्त्री कोई उत्तर नहीं दे पाया तो राजा ने कहा कि दस दिन में इसका उत्तर नहीं दोगे तो तुम्हारा मन्त्री पद छिन जाएगा । मंत्री घर आ गया और राजा के प्रश्न का उत्तर पाने के लिए नगर में घूमने लगा । घूमते-घामते वह एक वेश्या के घर पहुँच गया । वह ब्राह्मण था, लेकिन वेश्या ने प्रलोभन देकर उसे अपने यहाँ रहने एवं शराब व मांस—सेवन के लिये राजी कर लिया । मंत्री को एक तो अपने पद का लोभ था और दूसरे वेश्या ने उसे प्रलोभन दिया था, अत वह उसके साथ सहवास करने को भी

तत्पर हो गया। इस पर वेश्या ने उसके गाल पर एक चांटा जड़ दिया। मंत्री नाराज होने लगा तो वेश्या बोली कि मैंने तुम्हारे प्रश्न का ही उत्तर दिया है। तुम ब्राह्मण होकर भी लालच वश शराव, मांस और वेश्यागमन के लिये उतारू हो गये, जबकि ब्राह्मण के लिये ये सारे पाप-कर्म वर्जित और निंद्य हैं। इसलिए जानो कि लोभ ही पाप का बाप है।

२२२६. पापड़ सें काम 'क पड़ापड़ सें ?
आम खाने हैं या पेड़ गिनने है ?

२२२७. पापी कै मन में पाप बसै।
पापी के मन में सदा पाप-भावना ही बसती है।

२२२८. पापी पुन्न नईं करै, दूणो डंड राज में भरै।
पापी किसी पुण्य कार्य में पैसा नहीं लगाता, भले ही उससे दुगना पैसा दण्ड स्वरूप सरकार में भरदे।

२२२९. पारखी ई परख करै।
पारखी ही अच्छे-बुरे या खोटे-खरे की परख कर सकता है।

संदर्भ कथा—एक बार किसी वादशाह के दरवार में एक आलिम आया। उसने एक तीर चलाकर मोर का चित्र बना दिया तो वादशाह ने खुश होकर उसके लिए नित्य एक सेर आटा और एक पैसे भर घी रोज का निश्चित कर दिया। दूसरा हुनर दिखलाने पर वादशाह ने उसके पांचों कपड़े बनवा दिये और तीसरा हुनर दिखाने पर उसके लिए एक चारपाई का प्रवन्ध करवा दिया। आलिम को वादशाह की गुणग्राहकता पर बड़ा अफसोस हुआ।

जब वादशाह ने उससे पूछा कि तुम अपने सारे हुनर दिखला चुके हो या कुछ बाकी है तो आलिम ने कहा कि और तो सब दिखा चुका हूँ, एक हुनर बाकी है, और वह यह कि मैं किसी भी आदमी को देखकर यह बतला सकता हूँ कि वह अपने माँ-बाप की असली संतान है या वर्णशंकर। इस पर वादशाह ने उससे कहा कि कल हमारे सब दरवारियों की पहचान करना। आलिम ने हां भर ली। सारे दरबारी उसकी करामात देख चुके थे अतः सभी रात को उसके यहाँ पहुँचे और उसे मुँह मांगी राशि देकर इस वात के लिये राजी कर लिया कि वह किसी को वर्णशंकर नहीं बतलायेगा। अगले दिन दरवार जुड़ा तो आलिम ने वादशाह से कहा कि पहले आप से ही प्रारम्भ करता हूँ और यह घोषणा करता हूँ कि आप एक भठियारे के अंश हैं, विश्वास न हो तो अपनी माताजी से जाकर पूछलें, क्योंकि इसका पता माँ को ही होता है—

मन की बात मन ही जाणै, काया जाणै आपदा ।
गीता ग्रन्थ कृष्ण जाणै, माता जाणै सो पिता ।।

इस पर बादशाह महल में गया और उसकी माँ ने प्रकारान्तर से यह बात स्वीकार कर ली। तब उसने आलिम को बुलाया और पूछा कि तुम्हें इस बात का पता कैसे चला ? आलिम ने उत्तर दिया कि मैंने आपका पुरस्कार देखकर ही यह अनुमान लगाया। सुनकर बादशाह शर्मिन्दा हो गया।

२२३०. **पारो सारो ना मरै, गंधक तेल न होय ।**
गरु कवै रे बाळका, कई गया घर खोय ।।

गुरु अपने शिष्य से कहता है कि पारा पूरी तौर पर मरता नहीं और गंधक से तेल नहीं निकलता। इस पर शिष्य अपने गुरु को उत्तर देता है कि समर्थ सिद्ध पुरुष हो तो ये दोनों काम संभव हैं—

पारो तो सारो मरै, गंधक तेलज होय ।
चेलो 'कै गरुजी सुणो, सा पुरषां पां होय ।।

२२३१. **पाव की हांडी में सेर कद खटावै ?**
पाव की हँडिया में सेर नहीं खटाता ।
अकिंचन के पास थोड़ी सम्पत्ति आ जाने से ही वह इतराने लगता है ।
जस थोरेहुँ धन खल इतराई ।
रू० पाव की हांडी में सेर ऊरै जद फूटै ई ।

२२३२ **पाव चून, चौवारै रसोई ।**
चून केवल पाव भर और रसोई चौवारे में !
थोथा प्रदर्शन ।
रू० (१) पाव चून चौवारै रसोई, घर की रोटियां सैं बामणी नै खोई ।
(२) पाव चून चौवारै रसोई, आवो रै गांव को जीमल्यो ।

२२३३ **पावणां सैं पीढी कोनी चालै ।**
पाहुनों से वंश नहीं चलता ।

२२३४. **पाव बीघो धरती जीं में अड़ावो न्यारो ।**
कुल पाव बीघा खेत और उसमें भी अड़ावा अलग छोड़ दिया, फिर खेती क्या हो ?
अड़ावा = चरागाह, चरनी ।

२२३५. **पासो पड़ै, अनाड़ी जीतै ।**
पाँसा अनुकूल पड़ने से अनाड़ी भी जीत जाता है ।

२२३६. पिछलै मे'वां ई' जमानो हु' ज्याया करै है।
वर्षा काल के उत्तरार्द्ध में वर्षा होने पर भी जमाना हो जाया करता है। जब किसी औरत की पहले वाली संतान जीवित न रहे और बाद की छोटी संतान ही हो, तब प्रायः यह कहावत कही जाती है।

२२३७. पिटेड़ो अर खायोड़ो भूलै कोनी।
किसी से पिटा हुआ एवं किसी के यहां भोजन किया हुआ भूलता नहीं।

२२३८. पिसारी कै तो चावणै को ई ला'वो।
पीसने वाली को तो चबा लेने में ही लाभ।
जब अनाज पीसने वाली को अनाज पीसने के लिये देते हैं तो वह उसमें से अनाज तो नहीं ले जा सकती, लेकिन इस बीच जितना अनाज वह चबाले, उतना ही लाभ।
रू० पीसण आळी नै तो चावण सैं ई' लावो।

२२३९. पींघळग्यो सो पींघळग्यो पण नीचै लकड़ी कुण करग्यो ?
पिघल गया तो पिघल गया, लेकिन नीचे लकड़ी कौन लगा गया ?
सदर्भ कथा—एक आदमी ने किसी झाड़ में अपनी तलवार छिपा दी थी। एक चोर ने तलवार तो निकाल ली और उसके स्थान पर एक दांती (हँसिया) रख दी। जब तलवार का मालिक आया और उसने अपनी सीधी तलवार के स्थान पर मुड़ी हुई दांती देखी तो उसने अपने साथी से कहा कि मैंने बिल्कुल सीधी तलवार रखी थी, इसे टेढी-मेढी कौन कर गया ? साथी ने कहा कि तुम्हारी तलवार कच्चे लोहे की बनी हुई थी और जेठ-आषाढ की धूप में तपकर यह टेढी हो गई। इस पर उसने फिर पूछा कि यह तो ठीक है, लेकिन इसके नीचे लकड़ी कौन लगा गया—

मैं मेली थी सीदम सादी, बांकळ-चींकळ कुण करग्यो ?
जेठ साढ को पड़चो तावड़ो, काचो लोवो पींघळग्यो।
पींघळग्यो सो पींघळग्यो, पण नीचै लकड़ी कुण करग्यो ?

२२४०. पीछै घोड़ो दोड़ै, घोड़ी दोड़ै।
बाद में न जाने कैसी परिस्थिति पैदा हो जाए, इसलिए अभी तय कर देना ठीक है।

२२४१ पीतळ कांसी लोह नै पड़चो काट चढ जाय।
जळधर आवै दौड़तो, इण में संसै नांय॥
पीतल, कांसी और लोहे पर जंग चढ़ने लगे तो वर्षा शीघ्र ही आये।

२२४२. पीपळ तळै हां भरकर, कीकर तळै नटज्या।
पीपल के नीचे हां भरे, कीकर के नीचे नट जाए।
पल-पल में बात पलटने वाला आदमी।
रू० नीम तळै सौगन खा, पीपळ तळै नटज्या।

२२४३ **पी'र कां की ग्रास करै, जिकी भाईड़ां नै खा ।**

पीहर पर श्राश्रित रहने वाली स्त्री अपने भाइयों को ही हानि पहुँचाती है ।

२२४४. **पी'र सें ल्यावै दांतळी, घरां कुहाड़ी जाए ।**

पीहर से तो दांती लाती है और अपने घर कुल्हाड़ी की हानि हो जाती है । पीहर से जितना लाती है, उससे अधिक का नुकसान घर पर हो जाता है ।

२२४५. **पीसा खरचियो लेखै लेखै, म्हारी बाई एक ग्रांख सें देखै ।**

संदर्भ कथा—लड़की वालों ने छल से अपनी कानी लडकी के फेरे फेर दिये । उधर वर-पक्ष वाले खूब पैसा लुटा रहे थे । जब फेरे हो चुके तो लड़की वालों ने अपनी चाल पर इठलाते हुए लड़के वालों से कहा कि आप उचित तौर पर ही पैसा खर्च करें क्योंकि हमारी बाई तो एक आंख से ही देखती है अर्थात कानी है । लेकिन दूल्हे को दोनों आंखों से ही दिखलाई नहीं देता था । इसलिए उन्होंने नहले पर दहला लगाते हुए कहा—

वड़ै सगां की या ही बात, म्हारै बनै नै दिन सूझै न रात ।

इसी प्रकार की एक अन्य कथा है जिसमें एक बूढा मियां जिसके मुँह में केवल एक ही दांत है, शादी करता है । लेकिन उधर बीबी के मुँह में एक दांत भी नहीं है । निकाह हो जाने के बाद मियां गर्व से कहता है –

मरद तो इकदंता ही भला ।

बीबी उत्तर देती है—

मुँह में हाड का के लाड ?

मुँह तो सफम सफा ही चोखा ।

२२४६ **पीसा देकर सुग्रासणी क्यूं ब्यावै ?**

पैसे खर्च करके भी सुआसिनी (बहिन, भानजी आदि) क्यों ब्याहे ?

२२४७. **पीसै कनै पीसो ग्रावै ।**

पैसे के पास पैसा आता है ।

संदर्भ कथा—एक सेठ के यहाँ एक नौकर रहता था । नौकर ने एक दिन सेठ से पूछा कि आपके पास इतना पैसा कैसे आता है ? सेठ ने उत्तर दिया कि पैसे के पास पैसा आता है । शाम को दुकान बंद करने के बाद जब सेठ चला गया तो नौकर ने अपनी जेब से एक नकद रुपया निकाला और किवाड़ों की दरार में उस रुपये को लगा कर दुकान में रखे रुपयों को बुलाने की चेष्टा करने लगा । लेकिन रुपया उसके हाथ से छूट कर दुकान में चला गया । सवेरे जब नौकर ने सेठ को यह घटना सुनाई तो सेठ ने मुसकरा कर कहा कि तुम्हारे पास केवल एक रुपया था और मेरे रुपये अधिक थे, इसलिए तुम्हारे रुपये को मेरे रुपयों ने खींच लिया ।

रू० पीसै सें पीसो कमायो जावै ।

२२४८. पीसै की पैदा नीं, काम की मेदा नीं ।

एक पैसे की आमदनी नहीं और काम से फुरसत नहीं ।

२२४६. पीसै की भाजी, टक्कै को बघार !

एक पैसे की भाजी और उसमें टके का छौंक !

यों तो टके का भाव स्थान और समय के अनुसार भिन्न भिन्न रहा है, जैसे बीलाड़ा के राजसिंह के यात्रा-वर्णन के अनुसार १६ फरवरी, १६७८ ई० को चूरू में टके का भाव १६/३७॥ प्रति रुपया था। लेकिन अंगरेजी ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने तांबे का जो टका प्रचलित किया था वह दो पैसे का होता था और आकार में लगभग चांदी के रुपये के बराबर होता था ।

२२५०. पीसै बिना बुध बापड़ी ।

पैसे के अभाव में बुद्धि कुंठित हो जाती है ।

२२५१. पीसो आवतो ई दीखै, जावतो कोनी दीखै ।

पैसा आता है तो सब को दिखलाई पड़ जाता है (सब की चर्चा का विषय बन जाता है), लेकिन जाता हुआ किसी को दिखलाई नहीं पड़ता ।

२२५२. पीसो पास को, हथियार हाथ को ।

पास का पैसा और हाथ का हथियार ही वक्त पर काम देता है ।

रू० (१) पीसो हाथ को, भाई साथ को ।

(२) माया अंट की, विदया कंठ की ।

२२५३. पीसो माई पीसो बाप, पीसै बिना बड़ो संताप ।

आज के युग में पैसा ही मां-बाप है । पैसे के अभाव में बड़ा संताप रहता है । तुलसीदासजी ने भी दरिद्रता को सबसे बड़ा दुःख कहा है—नहिं दरिद्र सम दुख जग माहीं ।

२२५४. पीसो हाथ को मैल है ।

पैसा तो हाथ का मैल है, वह खर्च करने के लिए ही होता है ।

रू० पीसै नै आदमी कमावै, आदमी नै पीसो कोनी कमावै ।

२२५५. पीस्योड़ी दुआई अर मूंडेड़ै मूंड को बेरो कोनी पड़ै ।

पिसी हुई दवा और मूंड मुंडवाये हुये साधु का कुछ पता नहीं चल पाता ।

२२५६. पुजारी की पागड़ी, ऊंटवाळ की जोय ।

वेजारा की मोचड़ी, पड़ी पुराणी होय ।।

पुजारी की पगड़ी, किराये पर ऊंट चलाने वाले की स्त्री एवं बीमार की जूतियां पड़ी पड़ी ही पुरानी हो जाती हैं ।

रू० सरद रितु की च्यानणी, हीण पुरष की नार ।

बिन बरत्यां बोदी होवै, मौतै की तरवार ।।

२२५७. पुन्न की जड़ सदां हरी।

पुण्य की जड़ सदा हरी रहती है।

सन्दर्भ कथा—एक दरिद्र ब्राह्मण कुछ पढ़ा लिखा न था। लेकिन वह नित्य दरबार में आकर राजा को आशीर्वाद देते हुए कहता, 'चिरंजीवी रहो, पुण्य की जड़ सदा हरी।' राजा उसे सोने का एक टका दे दिया करता। दरबारियों को डाह हुई और उन्होंने राजा के कान भरे कि 'पुण्य की जड़' देखनी तो चाहिए। इस पर राजा ने ब्राह्मण से पुण्य की जड़ दिखलाने के लिए कहा। ब्राह्मण ने हां भरी और दूसरे दिन दोनों दो घोड़ों पर चढ़ कर उत्तर दिशा की ओर चल पड़े। बहुत दूर जाने पर उन्हें हरे-हरे वृक्षों के समूह दिखलाई पड़े, चारों ओर हरियाली छाई हुई थी जहां हृष्ट-पुष्ट गायें चर रही थीं। वहां का वातावरण बड़ा ही सुन्दर था। कुछ और आगे बढ़ने पर बहुत सुन्दर-सुन्दर महल दिखलाई पड़े जो बहुमूल्य वस्तुओं से अटे पड़े थे और जहां खासी चहल-पहल थी। लोगों से पूछने पर ज्ञात हुआ कि यह सारा वैभव उसी पुण्यात्मा राजा का है। कुछ और आगे चलने पर एक महात्मा की कुटिया आई जहां वे तपस्या कर रहे थे। उन्होंने राजा और ब्राह्मण का बड़ा सत्कार किया। भगवान् के घर से पांच पतवाड़े उतरे जो महात्मा, राजा, ब्राह्मण और दोनों घोड़ों ने बड़े चाव से खाये। राजा को ऐसा स्वादिष्ट भोजन कभी स्वप्न में भी नसीब न हुआ था। ब्राह्मण ने राजा से पूछा—क्यों राजन्, पुण्य की जड़ देखी? राजा ने विनम्र भाव से कहा—हां महाराज! खूब देखी।

अब राजा के दरबार में पंडित का सम्मान और भी बढ़ गया। दरबारियों ने फिर राजा के कान भरे कि इस ब्राह्मण के एक अति सुन्दर कन्या है जो आपके ही योग्य है। राजा का मन चलायमान हुआ और उसने यह बात ब्राह्मण से कही। ब्राह्मण ने उत्तर दिया कि आप एक बार पुण्य की जड़ और देख लीजिए और फिर आप जैसा कहेंगे, कर दिया जाएगा। अगले दिन राजा फिर ब्राह्मण को साथ लेकर पुण्य की जड़ देखने गया। लेकिन इस बार सारे ही दृश्य विपरीत दिखलाई पड़े वृक्ष झुलसे हुए थे, चारों ओर कूड़े के ढेर लगे हुए थे और गरम लू चल रही थी। तब राजा ने अपनी गलती महसूस की। उसने ब्राह्मण से क्षमा याचना की और योग्य वर के साथ उसकी बेटी का विवाह कर दिया।

२२५८. पुन्न पांगळो होवै।

पुण्य तो पंगु होता है।

पुण्य कार्य को दूसरे लोग आगे बढ़ाते हैं, तभी वह आगे बढ़ता है।

२२५९. पुराणी वैली अर चिमकणा नारा ।
बहली पुरानी और बैल चौंकने वाले ।
न जाने बैल कब चौंक जाएँ और बहली को किसी दीवार आदि से टकरा कर चकनाचूर कर दें ।

२२६०. पुराणो सो स्याणो ।
जो पुराना, सो सयाना ।

संदर्भ कथा—एक सेठ का दिसावर में बहुत अच्छा कारोबार था । सेठ की मृत्यु हो जाने पर उसके बेटे ने नये-नये आदमियों को रख लिया और पुराने मुनीमों की छुट्टी कर दी । वे सारे नौसिखिये थे और सेठ का बेटा भी स्वयं अपने कारोबार को संभाल पाने में अक्षम था, अत: कारोबार में ढिलाई आ गई । एक दिन उसके ऊपर एक बड़ी हुंडी आई । हुंडी दर्शनी थी, अत: उसके रुपये तत्काल दिये जाने अपेक्षित थे । लेकिन रोकड़ में रुपये नहीं थे । तब सेठ के लड़के ने अपनी माँ के कहने से पुराने मुनीम को बुलाया । जाड़े की ऋतु थी, मुनीम काफी वृद्ध था और जाड़े के कारण कांप रहा था । सेठ ने उसके तापने के लिए 'सिघड़ी' मंगवाई । इतने में हुंडी वाले का आदमी भुगतान लेने के लिए आ गया । वृद्ध मुनीम हुंडी को पढने लगा और पढते पढते ही उसने अपने कांपते हाथों से हुंडी 'सिघड़ी' में डाल दी । इस पर मुनीम ने अफसोस प्रकट करते हुए हुंडी वाले से कहा कि हुंडी तो आग में जल गई, तुम इसकी पैठ मंगवालो । उसने कहा कि कोई बात नहीं, पैठ मंगवाली जाएगी । यों पुराने मुनीम की चतुराई से सेठ के बेटे को रुपया एकत्र करने का अवसर प्राप्त हो गया ।

मियादी हुंडी का भुगतान हुंडी में लिखी मियाद पूरी होने पर किया जाता था, लेकिन दर्शनी हुंडी का भुगतान तत्काल करना होता था ।

हुंडी के गुम हो जाने या नष्ट हो जाने पर उसकी पैठ और पैठ के गुम हो जाने पर पर-पैठ लिखी जाती थी ।

२२६१. पुळ का वाया मोती नीपजै ।
समय पर किया हुआ काम ही समुचित फल देता है ।

संदर्भ कथा—अमरकोट का सोढा देपालदे जैसलमेर ब्याहा था । वह गौना करके लौट रहा था । बहू रथ में बैठी थी, रथ कुछ अन्य लोगों के साथ आगे-आगे चल रहा था, देपालदे पीछे पीछे घोड़े पर चढा आ रहा था । उसने देखा कि एक चारण खेत में हल चला रहा है । लेकिन उसके पास एक ही बैल है और दूसरे बैल के स्थान पर उसने अपनी औरत को जोत रखा है । देपालदे यह देख कर द्रवित हो गया । उसने चारण से कहा कि तुम मेरे साथ

चलो, मैं रथ के बैलों में से एक बैल तुम्हें दिलवा देता हूं। लेकिन चारण ने इन्कार कर दिया। तब देपालदे ने कहा कि तुम अपनी औरत को भेज दो, वह बैल ले आयेगी। लेकिन उसने फिर ना करते हुए कहा कि जितनी देर में वह बैल लेकर आयेगी, उतनी देर जोताई रुक जाएगी और जमीन सूख जाएगी। तब देपालदे ने चारण से कहा कि इसकी जगह मैं हल में जुत जाता हूं, तुम इसे भेज दो। देपालदे ने पहिचान के लिए अपना कोड़ा चारणी को दे दिया और स्वयं हल में जुत गया। चारणी ने रथ के पास जाकर देपालदे की बहू से उसके पति का संदेश कहा तो वह बोली कि तुम्हारे वाला बैल बड़ा कमजोर है और वह इस बैल के साथ नहीं चल पायेगा, इसलिए तुम दोनों ही बैलों को ले जाओ। यों कह कर उसने दोनों बैल चारणी को दे दिये। चारणी दोनों बैलो को लेकर खेत में पहुँची तो देपालदे को और भी अधिक संतोष हुआ और वह अपने घोड़े पर सवार होकर आगे बढ़ गया।

जब फसल पकी तो चारण ने देखा कि जितनी दूर मे देपालदे ने हल खींचा था, उतनी दूर के बूटों में अन्न के दानों के स्थान पर मोती उत्पन्न हुए हैं। मोतियों को देख कर चारण बोला कि यदि ऐसा पता होता तो हे देपालदे, मैं तेरे से ही अधिक देर तक हल चलवाता—

जे जाणूं जिणवार, निज भळ मोती नीपजै।
वाहूं तो वट वार, तो ही मूं देपाळदे॥

२२६२ पूछता नर पंडिता।

जिज्ञासु व्यक्ति पूछ पूछ कर ही पंडित बन जाता है।

२२६३. पूणी न सूत, जुलावै सें जूतम जूत।

सूत न कपास, जुलाहे से लट्ठमलट्ठा।

२२६४. पूत कमावै च्यार पहर, ब्याज कमावै आठ पहर।

बेटा तो चार पहर ही कमाता है, लेकिन ब्याज तो आठों पहर कमाता है। बेटा तो रात्रि मे सो जाता है, लेकिन ब्याज तो चलता ही रहता है।

२२६५ पूत का पग पालणं ई दिखज्या।

पूत के पैर पालने में ही दिखलाई पड़ जाते हैं।

२२६६. पून में पून मिलज्या।

हवा में हवा मिल जाती है।

संदर्भ कथा—एक ब्राह्मणी रैगरों के मोहल्ले में आकर रही जो कच्चे चमड़े को साफ करते थे। पहले तो दुर्गन्ध के कारण उसकी नाक फटती थी, लेकिन धीरे-धीरे उसकी घ्राण शक्ति वैसी ही बन गई। एक दिन उसने

अपनी पड़ोसिन से कहा कि जब मैं यहाँ आकर बसी थी, तब तो बड़ी दुर्गन्ध आती थी, लेकिन अब तो नहीं आती। इस पर उसने कहा कि तुम भी हमारे में मिल गई अर्थात् जैसे हमें दुर्गंध की अनुभूति नहीं होती, वैसे ही अब तुम्हें भी नहीं होती।

२२६७. **पेट कै आगै नां है।**

चाहे कोई कैसा ही भोजन भट्ट हो, आखिर तो उसे ना करनी ही पड़ती है।

२२६८. **पेट पिरोत, 'मूं' जजमान।**

पेट पुरोहित है और मुँह यजमान।

२२६९. **पेट भूखो भलाईं रैवो, पीठ भूखो कोनी रैवण दे।**

वह क्रूर मालिक जो अपने पशु को खाना तो पूरा नहीं देता, लेकिन उसको पीठ पर भरपूर बोझ लादता रहता है।

२२७०. **पेट में ईं पग है।**

पेट भरने पर ही चाल आती है।

रू० पेट में पड़ै रोटी, नाचै बोटी-बोटी।

२२७१. **पेट में पाप अर गऊमुखी में जाप।**

मुँह में राम, बगल में छुरी।

२२७२. **पेठा लाग्या न पापड़ी, भू दड़कदे आ पड़ी।**

बड़ी आसानी से बेटे का विवाह हो गया, कुछ भी न करना पड़ा और बहू घर में आ गई

रू० फळिया करया न पापड़ी, भू दडकदे आपड़ी।

२२७३ **पैंडो भलो न कोस को, बेटी भली न एक।**
करजो भलो न बाप को, सायब राखै टेक॥

पैदल तो कोस भर चलना भी बुरा, बेटी एक भी बुरी और कर्जा बाप का भी बुरा। इन तीनों से भगवान् ही बचाये।

रू० लैणो भलो न बाप को, बेटी भली न एक।
  पैंडो भलो न कोस को, सायब राखै टेक॥

२२७४. **पैल पड़वा गाजै, दिन भैंतर बाजै।**

आषाढ की प्रथम प्रतिपदा को आकाश में बादलों की गरज हो तो बहत्तर दिनों तक हवा ही चले, वर्षा न हो।

२२७५ **पैली आतमा, पीछै परमातमा।**

पहले आत्मा, फिर परमात्मा।

२२७६. **पैली कहदे जिको घणखाऊ कोनी बाजै।**

जो पहले कहदे कि मैं इतनी रोटियां खाऊंगा, उसे अधिक खाने वाला नहीं कहा जाता।

२२७७. **पैंली चावै घूघरी, पीछै गावै गीत ।**

काम करने से पहले ही पारिश्रमिक ।

रू० पैंली घूघरी, पीछै गीत ।

२२७८ **पैंली पेट पूजा, फेर काम दूजा ।**

पहले खाना खाये, फिर दूसरे काम को हाथ लगाये ।

२२७९. **पैंली मांड पीछै दे, फेर घटै मेरै सें ले ।**

कागज रोकड़िये से कहता है कि तुम पहले लिखो और फिर दो, उनके बाद तुम्हारी रोकड़ में कुछ घटे तो मेरे से लो ।

जो पहले लिख कर बाद में देता है, उसमें भूल नहीं पड़ती ।

२२८०. **पैंली रहतो यूं तो तमियो जातो क्यूं ?**

यदि पहले से ही यों (निचले) रहते तो तंबिया क्यों गँवाना पड़ना ?

२२८१. **पैंलो सुख निरोगी काया ।**

शरीर से निरोग रहना सर्व प्रथम सुख है ।

पद्य पैंलो सुख निरोगी काया, दूजो सुख हो घर में माया ।
तीजो सुख पतिवरता नारी, चौथो सुख पुत्र अग्याकारी ।
पांचवां सुख सुथान वासा, छठा सुख राज में पासा ।
सातवां सुख विद्या फळ दाता, औं सातूं सुख रच्या विधाता ।।

२२८२. **'पो खालड़ी को 'खो ।**

पौष के महीने में जाड़ा बहुत पड़ना है जिससे त्वचा फट जाती है ।

२२८३. **पोटो पड़ै जिको कीं न कीं लेकर ऊठै ।**

गाय भैंस आदि का गोबर जमीन पर गिरता है तो कुछ न कुछ साथ लेकर ही उठता है ।

२२८४. **पोतड़ां का विगड़चोड़ा, धोतड़ां में कोनी सुधरै ।**

बचपन से ही जिनकी आदत बिगड़ जाती है, वह उनके बड़े होने पर भी नहीं सुधरती ।

२२८५ **पोता म्‍ू की रावडी, दोयता भू की खीर ।**
मीठी लागी रावड़ी, खाटी लागी खीर ।।

पोते की वहू की बनाई 'रावड़ी' जैसी रुचिकर लगती है, वैसी दोहिते की बहू की खीर भी नहीं लगती ।

२२८६. **पोयो र धोयो, चढायो र खायो ।**

पौष में दिन बहुत छोटे होते हैं । पकाने-खाने में ही दिन पूरा हो जाता है ।

२२८७. **पोल को टक्को पोल में गयो ।**

पोल का टका पोल में चला गया ।

२३०७. फूल फूल छाब भरै ।
एक-एक फूल करके ही छबड़ा भर जाता है।
रू० बूंद बूंद घड़ो भरै ।

२३०८. फूलां फूलगी, लैर का दिन भूलगी ।
थोड़ी सी सम्पन्नता आने पर ही आदमी पिछले दिनों को भूलकर इतराने लगता है ।

२३०९. फूल्या फूल्या ई चरघा है, कदे जाड़ तळै कांकरो कोनी आयो है ।
सदा सफलता ही मिलती रही है, कभी आपत्ति में फँसोगे तब पता चलेगा ।

२३१०. फेरां की बखत कन्या तिसाई होवै ।
फेरों का समय होने पर कन्या को प्यास लगती है ।
रू० फेरां की वखत कन्या हंगाई होवै ।

२३११. फोग आलो भी बळै, सासु सुदी भी लड़ै ।
फोग की लकड़ी गीली होने पर भी जल जाती है । सास सीधी होने पर भी वहू को डांटती है ।

२३१२. फौज की अगाड़ी मारै, घोड़ै की पिछाड़ी मारै ।
फौज के अग्रिम भाग (हरावल) में खतरा अधिक रहता है और घोड़े की पिछाड़ी मारती है ।
रू० चेजै की अगाड़ी मारै, ब्या की पिछाड़ी मारै ।

२३१३. बंदो कै मैं धन करूं, करकै करूं गुमान ।
साईं हाथ कतरणी, राखैगो उनमान ।।
मनुष्य इस बात का इच्छुक रहता है कि उसके पास धन हो जाए तो वह भी ऐंठ दिखलाये । लेकिन ईश्वर के हाथ में कैंची रहती है और वह मनुष्य को उसके डौल के अनुरूप ही रखता है ।
रू० मन जाणै हाथी चढूं, मोती पैरूं कान ।
हाथ कतरणी राम कै, राखैलो उनमान ।।

२३१४ बंदो तो गंदो है ।
मनुष्य तो गन्दा है, पापी है ।

२३१५. बंधी भारी लाख की, खुली बिखर जाय ।
सब एक संगठन में बंध कर रहें, तभी तक कीमत है । झाड़ू के तिनकों की तरह अलग-थलग बिखर जाने पर कोई कीमत नहीं ।
रू० कागा लाख विकाइया, कोठी लाख पंचाय ।
बंधी भारी लाख की, खुली बिखर जाय ।।

२३१६. बंधी मूठी लाख की, खुली मूठी राख की ।
भ्रम बना रहे, तभी तक इज्जत है ।

२३१७ बकरै की मा कं दिन खैर मनावै ?

बकरे की माँ कितने दिन अपने बच्चे की कुशल मनायेगी, एक न एक दिन उसकी बलि लग ही जायेगी।

रू० बकरै की मा कै थावर टाळै ?

२३१८. बकसीस सौ-सौ, लेखो जौ-जौ।

इनाम चाहे सौ रुपये का दिया जाए, लेकिन हिसाब पाई-पाई का होना चाहिए।

२३१९. बखत ऊपर नईं बोपजै, सो वाणियों गिंवार।

जो बनिया उचित अवसर पर व्यापार नहीं करता, वह गँवार है।

रू० मन तोलो तन ताखड़ी, नणां विणजण हार।

ओसर देख न विणजियो, सो वाणियों गिंवार॥

२३२०. बखत को मोल है, आदमी को कोनी।

वक्त की कीमत है, आदमी की नहीं। वक्त अनुकूल होने पर आदमी जो कुछ भी करता है, फब जाता है, लेकिन दिन पलटने पर वह कुछ भी नहीं कर पाता।

वीर घणां वांका भया, निभी न एकण सार।
तिण डूबै लोढा तिरै, अपणी अपणी वार॥

२३२१. बखत न्याऊ आवै, जद तन का कपड़ा ई वैरी होज्या।

जब बुरा वक्त आता है तो मनुष्य के शरीर के कपड़े भी उसके वैरी हो जाते हैं।

प्रतिकूल वक्त आने पर आत्मीयजन ही शत्रु हो जाते हैं।

२३२२. बटोड़ै में तो छाणां ई नीकळै।

'बटोड़े' में से तो उपले ही निकलते हैं।

२३२३. बडका नईं मरता तो घर की फौज भेळी हो ज्याती।

यदि पूर्वज न मरते तो घर की फौज एकत्र हो जाती।

यदि संग्रह ही करते, व्यय न करते तो अपार सम्पत्ति जुड़ जाती।

२३२४. बड़ में बोलतो बोलतो, पीपळ में बोलण लागज्या।

प्रसंग को छोड़कर कहीं का कहीं बोलने लगे।

२३२५. बड़ां की बड़ी ई बात।

बड़ों की बातें भी बड़ी।

रू० (१) बड़ी रातां का बड़ा ई तड़का।
(२) बडै घरां का बडा ई बारणां।
(३) बडी हवेल्यां का बडा ई कलेवा।

२३४३. वांडिये कुत्तै को लाय में के दाजै ?
वेशर्म को कैसी लज्जा ?

२३४४. *वांदरै नै विच्छू खाय, ऊनाळै लागै लाय !*
रायकणी जे डाकण होज्या, ऊंटां चढ चढ खाय ।
वन्दर यों हीं बहुत चपल होता है और उसे विच्छू काट खाये तो फिर कहना ही क्या ? ग्रीष्म ऋतु में आग लग जाए तो उसकी प्रचंडता और भी बढ़ जाती है । इसी प्रकार रायकणी (राईका जाति की स्त्री, ये ऊंटों को पालने चराने का धंधा करते हैं। यदि डाकिन बन जाय तो वह ऊंटों पर चढ़ चढ़ कर लोगों को खाने लगे ।

२३४५. वांदरो बूढो होज्या तो ई फलांग लगाणी कोनी भूलै ।
वंदर बूढा हो जाने पर भी छलांग लगाना नहीं भूलता ।

२३४६. वांदी कींका घोड़ा बकस दे ?
वांदी किसको घोड़ा बख्श दे ?
घोड़ों का मालिक ही घोड़े बख्श सकता है ।
रू० सां' णी कींका घोड़ा वकस दे ?

२३४७. वांदी तेरो व्या करदयां ? 'क आगै ई बीस तो करचोड़ा है, एक और कर दयो ।
मालिक ने वांदी (दासी) से पूछा कि तेरा विवाह कर दें ?
वांदी ने उत्तर दिया—भले ही कर दीजिए, बीस बार पहले हो चुके हैं, एक बार और सही ।

२३४८. वांदी दूसरां का पग धो देवै, पण आपका कोनी धोया जा ।
वांदी दूसरों के पैर तो धोती रहती है, लेकिन उससे अपने पैर नहीं धोये जाते ।

२३४९. वांदी ये ! 'क हां दूदोजी,
'क नई', बस नांव ई' भूलग्या हा ।
मालिक ने वांदी को पुकारा तो वांदी ने मालिक का नाम लेकर पूछा—दूदोजी, कहिये क्या आज्ञा है ? इस पर मालिक (दूदोजी) ने कहा कि कुछ नहीं, बस अपना नाम ही भूल गया था जो तूने याद दिला दिया ।

२३५०. बांदी होकर कमावै तो बीबी होकर खावै ।
परिश्रम करके कमाये तो फिर मौज से खाये ।
रू० दासी की ज्यूं करै तो राणी की ज्यूं बरतै ।

२३५१. बांध्या तो बळद ई कोनी रैवें ।
बंधन में तो बैल भी नहीं रहना चाहते फिर नौकर या मजदूर आदि को उनकी इच्छा के बिना कैसे रखा जा सकता है ?

२३५२. **वांस चढी नटणी कहै, होत न नटियो कोय ।**
मैं नट कर नटणी भई, नटै सो नटणी होय ।।
बांस पर चढी हुई नटिनी सब तमाशबीनों से पुकार कर कहती है कि जिस के पास पैसा हो वह ना न करे । मैंने कभी ना की थी जिसके फलस्वरूप मैं नटिनी बनी एवं जो कोई ना कहेगा उसे भी नटिनी बनना पड़ेगा ।

२३५३. **वाई का फूल वाई कै लागग्या ।**
जिस काम से जो आय हुई, वह उसी में लग गई ।

२३५४. **वाई कँवतां रांड नीकळै ।**
ऐसा अनाड़ी आदमी जो कहना कुछ चाहे और मुँह से कुछ और निकल जाये ।
जिसे बोलने की भी तमीज न हो ।

२३५५ **वाई गैल घर आपै ई मिलज्या ।**
बाई के अनुरूप घर अपने आप ही मिल जाता है ।

२३५६ **वाई जाऊं जाऊं करै ही, वीरो लेवण नै आग्यो ।**
बाई जाने के लिए उत्सुक थी और भाई लेने आ गया ।

२३५७. **बाईजी चाल्या तो घणाई चटकै-मटकै, पण जा पड़्या ।**
बाईजी चले तो खूब चटक-मटक से, लेकिन गिर पड़े ।

२३५८. **बाईजी पेट में सें तो नीकळ्या, पण हांडी में सें कोनी नीकळ्या ।**
बाईजी पेट में से तो निकले, लेकिन हँडिया में से नहीं निकल पाये ।
मध्य युग में अधिकतर राजपूत अपनी नवजात कन्याओं को मरवा डालते थे और उन्हें हँडिया में बन्द करके कहीं फिकवा दिया जाता था । यह प्रथा १९वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक चलती रही । बीकानेर के महाराजा रत्नसिंह ने सन् १८३७ ई० में गया यात्रा के समय अपने राजपूत सरदारों से नवजात कन्याओं को न मारने की प्रतिज्ञा करवाई थी ।

२३५९. **बाईजी महलां सें उतरया, भोडळ को भळको ।**
बतळाया बोलै नईं, बोलै तो डबको ।
जो स्त्री शृंगार-पिटार तो खूब करे और ऐंठ में भी भरी रहे, लेकिन जिसे बोलने का भी सलीका न हो ।

२३६०. **बाई तो घणी ई सोवणी पण आंख में फूलो ।**
बाई खूबसूरत तो बहुत है, लेकिन आंख में फूला है ।
एक बड़ा ऐब सारे गुणों पर पानी फेर देता है ।

२३६१ **बाई नै बाई परणाई, कर सिणगार सासरै आई ।**
दोनूं डूंगा एकै ढाळ, जै गोपाल जै गोपाल ।
जब स्त्री को पुंसत्वहीन पति मिल जाए ।
जब दोनों पक्ष एक जैसे गये-गुजरे हों ।

२३७३ वाड़ी वारा हाट अठारा, घर वैठ्यां चौईस ।
यदि मालिन की वाड़ी पर चीज लेने जाएँ तो वारह सेर के भाव, दुकान पर लें तो अठारह सेर के भाव और यदि वह स्वयं घर पर देने के लिये आये तो चौवीस सेर के भाव दे जाती है ।

२३७४ वाण न छोडै वाणियों, जे सुरगापत जाय ।
सायव सैं सौदो करै, टक्को पीसो खाय ।।
वनियां लेन-देन की अपनी आदत को नहीं छोड़ता । यदि वह स्वर्ग में भी चला जाए तो वहाँ भी भगवान् से सौदा करके कुछ कमाने का प्रयत्न करता है ।

२३७५. वाणियां पूरो तोलिये, 'क कोई हाट भी चढै ?
वनिये ! पूरा तोलना ।
वनिये ने उत्तर दिया—तुम हाट पर चढो तव तो तौलूं ?

२३७६. वणियें की तायड़ी चाल्यां तो वो कैई ं कै सा'रै कोनी रैवै ।
वनिये की तकड़ी चलती रहे तो वह किसी की परवाह नहीं करता, अपना निर्वाह ठाट से कर लेता है ।

सन्दर्भ कथा—एक वनियां अपनी दुकान पर उदास मुंह वैठा था । गांव का ठाकुर उधर से निकला तो उसने वनिये से पूछा कि सेठजी, आज उदास क्योंकर वैठे हो ? सेठ वोला कि क्या करें, तकड़ी ही नहीं चलती । इस पर ठाकुर ने वनिये से व्यंग्य में कहा कि कल से हमारे अस्तवल जा कर घोड़ों की लीद तौला करो, तुम्हारो तकडी चल जाएगी । सेठ ने इसे सहर्ष स्वीकार कर लिया और अगले दिन अस्तवल में जाकर प्रत्येक घोड़े की लीद तौल-तौल कर लिखने लगा । यह देख कर साईस असमंजस में पड़ गये । उन्होंने सेठ से लीद तौलने का कारण पूछा तो सेठ वोला कि तुम ठिकाने से पैसा तो पूरा लेते हो और घोड़ों को दाना कम देते हो, इसलिए लीद तौल कर इस वात की जांच-पड़ताल की जाएगी कि तुम कितना दाना कम देते हो । साईस वास्तव में चोरी करते थे, इसलिए सव ने मिल कर सेठ का महीना वांध दिया और उससे आग्रह किया कि वह इसकी शिकायत ठाकुर से न करे । दूसरी वार जव ठाकुर उक्त वनिये की दुकान के आगे से निकला तो वनियां प्रसन्नचित्त था, क्योंकि उसकी तकड़ी चल गई थी ।

२३७७. वाणियें की वारा पुन्यूं होवै ।
वनिये की वारह पूनो (पूर्णिमा) होती है, इनमें से एक भी सफल हो जाए तो वह निहाल हो जाता है ।

२३७८ वाणियें की बेटी के जाणै मांस को सुम्राद ?

वनिये की बेटी माँस के स्वाद को क्या जाने ?

जिस वस्तु से जिसका कभी कोई वास्ता ही न पड़े, उसके विषय में वह क्या जाने ?

२३७६. वाणियें की मूंछ ऊची तो ऊंची अर नीची तो नीची ।

सन्दर्भ कथा—एक ठाकुर के पास कुछ रुपये इकट्ठे हो गये तो वह बड़ी ऐंठ जताने लगा । एक दिन वह पास के कस्बे में कुछ सामान खरीदने के लिए अपने घोड़े पर सवार होकर एक वनिये की दुकान पर गया तो वनिये ने भी अपनी मोंछों पर वल लगाया और बड़े रोव के साथ ठाकुर से बात की। इस पर ठाकुर जल गया और उसके मना करने पर भी जब वनियां नहीं माना तो उसने वनिये से कहा कि आज से हमारा और तुम्हारा वैर समझो और इसका निपटारा अमुक दिन होगा । वनिये ने ठाकुर की चुनौती स्वीकार करली और ठाकुर अपने गाँव चला गया । घर जाकर ठाकुर ने लड़ाई करने की तैयारी शुरू कर दी । उसने अपने सगे-सम्बन्धियों को भी वुला लिया और कई वैतनिक सैनिक इकट्ठे कर लिए । ठाकुर उन सब को खूब खिलाता-पिलाता। अन्त में लड़ाई का निश्चित दिन भी आ गया । ठाकुर अपने दल-बल सहित वनिये की दुकान पर पहुँचा और उसने वनिये को ललकारा कि आजाओ मैदान में, लेकिन वनिये ने कोई तैयारी नहीं की थी। उसने ठाकुर से कहा, ठाकुर सा'व आपकी और मेरी कैसी लड़ाई? आप को मेरी मोंछों का वल अखरता है तो मैं अभी खोल देता हूँ । यों कह कर वनिये ने अपनी मोंछों के वल खोल दिये और झगड़ा समाप्त हो गया । ठाकुर ने लड़ाई की तैयारी में अपना सारा धन वर्वाद कर दिया था और वह पछताता हुआ अपने आदमियों के साथ लौट गया ।

२३८०. वाणियें कै काम को अर राम कै नांव को ओड़ कोनी।

वनिये के काम और भगवान् के नाम स्मरण की कोई इति नहीं।

२३८१ वाणियें को रोड़ै में, रजपूत को घोड़ै में अर वामण को कड़ाये में ।

पैसा होने पर वनियां मकान वनाना चाहता है, राजपूत घोड़ा खरीदना चाहता है और ब्राह्मण तरह-तरह के पकवान खाना चाहता है ।

२३८२. वाणियों कै तो आंट में दे, कै खाट में दे ।

वनियां या तो फँस जाने पर देता है या वीमार पड़ने पर।

२३८३. वाणियों खाट में तो वामण ठाट में ।

वनियां वीमार होता है तो ब्राह्मण की वन आती है।

ह० वाणियों ठाट में तो वामण खाट में ।

२३७३ वाड़ी वारा हाट अठारा, घर वैठ्यां चोईस ।

यदि मालिन की वाड़ी पर चीज लेने जाएँ तो वारह सेर के भाव, दुकान पर लें तो अठारह सेर के भाव और यदि वह स्वयं घर पर देने के लिये आये तो चौवीस सेर के भाव दे जाती है ।

२३७४ वाण न छोडै वाणियों, जे सुरगापत जाय ।
सायव सँ सौदो करै, टक्को पीसो खाय ।।

वनियां लेन-देन की अपनी आदत को नहीं छोड़ता । यदि वह स्वर्ग में भी चला जाए तो वहाँ भी भगवान् से सौदा करके कुछ कमाने का प्रयत्न करता है ।

२३७५. वाणियां पूरो तोलिये, 'क कोई हाट भी चढै ?

वनिये ! पूरा तौलना ।

वनिये ने उत्तर दिया—तुम हाट पर चढो तव तो तौलूं ?

२३७६. वणियें की ताखड़ी चाल्यां तो वो कँई कै सा'रै कोनी रैवै ।

वनिये की तकड़ी चलती रहे तो वह किसी की परवाह नही करता, अपना निर्वाह ठाट से कर लेता है ।

सन्दर्भ कथा—एक वनियां अपनी दुकान पर उदास मुँह वैठा था । गांव का ठाकुर उधर से निकला तो उसने वनिये से पूछा कि सेठजी, आज उदास क्योंकर वैठे हो ? सेठ वोला कि क्या करें, तकड़ी ही नहीं चलती । इस पर ठाकुर ने वनिये से व्यंग्य में कहा कि कल से हमारे अस्तवल जा कर घोड़ों की लीद तौला करो, तुम्हारो तकडी चल जाएगी । सेठ ने इसे सहर्ष स्वीकार कर लिया और अगले दिन अस्तवल में जाकर प्रत्येक घोड़े की लीद तौल-तौल कर लिखने लगा । यह देख कर साईस असमंजस में पड़ गये । उन्होंने सेठ से लीद तौलने का कारण पूछा तो सेठ वोला कि तुम ठिकाने से पैसा तो पूरा लेते हो और घोड़ों को दाना कम देते हो, इसलिए लीद तौल कर इस वात की जांच-पड़ताल की जाएगी कि तुम कितना दाना कम देते हो । साईस वास्तव में चोरी करते थे, इसलिए सव ने मिल कर सेठ का महीना वांध दिया और उससे आग्रह किया कि वह इसकी शिकायत ठाकुर से न करे । दूसरी वार जव ठाकुर उक्त वनिये की दुकान के आगे से निकला तो वनियां प्रसन्नचित्त था, क्योंकि उसकी तकड़ी चल गई थी ।

२३७७. वाणियें की वारा पुन्यूं होवै ।

वनिये की वारह पूनो (पूर्णिमा) होती है, इनमें से एक भी सफल हो जाए तो वह निहाल हो जाता है ।

२३७८ वाणियें की बेटी के जाणै मांस को सुग्राद ?

वनिये की वेटी माँस के स्वाद को क्या जाने ?

जिस वस्तु से जिसका कभी कोई वास्ता ही न पड़े, उसके विषय में वह क्या जाने ?

२३७९. वाणियें की मूंछ ऊंची तो ऊंची ग्रर नीची तो नीची।

सन्दर्भ कथा—एक ठाकुर के पास कुछ रुपये इकट्ठे हो गये तो वह वड़ी ऐंठ जताने लगा। एक दिन वह पास के कस्बे में कुछ सामान खरीदने के लिए ग्रपने घोड़े पर सवार होकर एक वनिये की दुकान पर गया तो वनिये ने भी ग्रपनी मोंछों पर वल लगाया ग्रौर वड़े रोव के साथ ठाकुर से बात की। इस पर ठाकुर जल गया ग्रौर उसके मना करने पर भी जव वनियां नहीं माना तो उसने वनिये से कहा कि ग्राज से हमारा ग्रौर तुम्हारा वैर समझो ग्रौर इसका निपटारा ग्रमुक दिन होगा। वनिये ने ठाकुर की चुनौती स्वीकार करली ग्रौर ठाकुर ग्रपने गाँव चला गया। घर जाकर ठाकुर ने लड़ाई करने की तैयारी शुरू कर दी। उसने ग्रपने सगे-सम्वन्धियों को भी बुला लिया ग्रौर कई वैतनिक सैनिक इकट्ठे कर लिए। ठाकुर उन सब को खूब खिलाता-पिलाता। ग्रन्त में लड़ाई का निश्चित दिन भी ग्रा गया। ठाकुर ग्रपने दल-वल सहित वनिये की दुकान पर पहुँचा ग्रौर उसने वनिये को ललकारा कि ग्राजाग्रो मैदान में, लेकिन वनिये ने कोई तैयारी नहीं की थी। उसने ठाकुर से कहा, ठाकुर सा'व ग्रापकी ग्रौर मेरी कैसी लड़ाई? ग्राप को मेरी मोंछों का वल ग्रखरता है तो मैं ग्रभी खोल देता हूँ। यों कह कर वनिये ने ग्रपनी मोंछों के वल खोल दिये ग्रौर झगड़ा समाप्त हो गया। ठाकुर ने लड़ाई की तैयारी में ग्रपना सारा धन वर्वाद कर दिया था ग्रौर वह पछताता हुग्रा ग्रपने ग्रादमियों के साथ लौट गया।

२३८०. वाणियें कै काम को ग्रर राम कै नांव को ग्रोड़ कोनी।

वनिये के काम ग्रौर भगवान् के नाम स्मरण की कोई इति नहीं।

२३८१ वाणियें को रोड़ै में, रजपूत को घोड़ै में ग्रर वामण को कड़ाये में।

पैसा होने पर वनियां मकान वनाना चाहता है, राजपूत घोड़ा खरीदना चाहता है ग्रौर ब्राह्मण तरह-तरह के पकवान खाना चाहता है।

२३८२. वाणियों कै तो ग्रांट में दे, कै खाट में दे।

वनियां या तो फँस जाने पर देता है या वीमार पड़ने पर।

२३८३. वाणियों खाट में तो वामण ठाट में।

वनियां वीमार होता है तो ब्राह्मण की वन ग्राती है।

रू० वाणियों ठाट में तो वामण खाट में।

२३८४. वाणियों मेवं को रूंख होवै ।
बनियां तो मेवे का वृक्ष होता है जो कुछ न कुछ देता ही रहता है ।

२३८५. वाणियो लिखै, पढै करतार ।
वनिये की लिखावट को ईश्वर ही पढ सकता है ।
वनियें प्रायः मुडिया में लिखते हैं जिसमें मात्रा आदि नहीं लगती और कई अक्षर एक जैसे ही लिखे जाते हैं, इसलिए उसे पढना बड़ा कठिन होता है ।

२३८६. वाण्यां तेरी वाण, कोई सक्यो न जाण ।
पाणी पीवै छाण, अणछाण्यो लोई पीवै ।।
हे वनियें ! तेरे स्वभाव को कोई नहीं जान पाता । तू पानी तो छान कर पीता है, लेकिन लहू को विना छाने ही पी जाता है ।

२३८७. वात कै 'तां वार लागै, संजोग पीतां वार कोनी लागै ।
वात कहने में तो देर लगती है, लेकिन संयोग मिलते देर नहीं लगती ।
संयोग मिले तो काम आनन-फानन में बन जाता है ।

२३८८. वातड़ल्यां घर ऊजड़े, वातड़ल्यां घर होय ।
वात से ही काम वन जाता है, वात से ही विगड़ जाता है ।
रू० (१) वातां हाथी पाइये, वातां हाथी पांव ।
(२) वोली गधै चढावै, वोली घोड़ै चढावै ।
(३) वात वात सव एक है, पण वात-वात में फेर ।
वैं हीं 'लो की कुस घड़ै, वैं हीं की समसेर ।।

२३८९. वात रैवै दिन बीतज्या ।
समय निकल जाता है, लेकिन वात रह जाती है ।
पद्य - साजन सिलो न खाइये, जे सोनै की वाळ ।
वात रैवै दिन वीतज्या, समय पलटज्या काळ ।।

२३९०. वातां का टक्का लागै ।
वातों के टके लगते हैं ।
इस प्रकार की अनेक लोक कथाएँ हैं कि जब एक सह-यात्री दूसरे से कहता है कि कोई बात कहो तो रास्ता कटे । इस पर दूसरा कहता है कि वातों के टके लगते हैं । तव वह टके देकर वातें सुनता है और उनकी सत्यता को आजमाता है ।

२३९१. वातां बीसर तो व्या कोनो बीगड़न द्यां ।
वातों की कमी के कारण तो विवाह को बिगड़ने नहीं देंगे और कोई सहयोग भले ही न दें ।

२३९२ **वातां साटै हर मिलै तो म्हांनै ईं कहज्यो ।**
यदि वातें वनाने से ही भगवान् मिलते हों तो हमें भी वतलाना, हम भी मिल लेंगे ।

२३९३. **वाद तो रावण को ई कोनी चाल्यो ।**
दुराग्रह तो रावण का भी नहीं चल पाया, सामान्य आदमी की तो बात ही क्या है ?

२३९४. **वादळ की छायां सें कै दिन काम सरै ?**
वादल तो अस्थायी होता है, उसकी छाया से कितने दिनों तक काम चल सकता है ?

२३९५. **वादळ देख कर ई घड़ो फोड़ गेर्यो ।**
आकाश में वादल को देख कर ही पास के घड़े को फोड़ डाला ।
अधिक प्राप्ति की आशा में पास की वस्तु भी नष्ट कर डाली ।

२३९६. **वादळ रैवै रात को वासी, तो जाणो चोखस 'मे आसी ।**
यदि वादल रात भर रह जाए तो जानो कि वर्षा अवश्य आयेगी ।

२३९७. **वान वनोरा पोती खा, फेरां की वरियां दादी तूं जा ।**
'वान-वनोरे' तो पोती खाती है और फेरों के वक्त दादी से कहती है कि फेरे करवाने तू चली जा ।

२३९८. **वाप अर वात एक ई होवै ।**
वाप और वचन एक ही होता है ।

२३९९. **वाप कै धन सौंत को, वेटी नै देसी रीत को ।**
वाप के घर में चाहे कितना ही धन हो, लेकिन वेटी को हिसाव से ही दिया जाता है ।

२४००. **वाप न मारी ऊंदरी, वेटो तीरदाज ।**
वाप ने तो कभी चुहिया भी नहीं मारी और वेटा तीरन्दाज वना फिरता है ।
रू० वाप न मारी लूंकती वेटो गोळंदाज ।

२४०१. **वावू वड़ो न भइयो, सव सें वड़ो रपइयो ।**
न वावू वड़ा है, न भैया; सवसे वड़ा रुपैया है ।

२४०२. **वावै को तो वैरी ई पड्यो हूं ।**
वावा का तो दुश्मन ही हूँ ।

संदर्भ कथा—एक लड़का अपनी वहादुरी की वड़ी शेखी वघारा करता, लेकिन उसका वावा हँस कर टाल दिया करता था । एक दिन लड़का अपने वावा की तलवार लेकर और ऊंट पर सवार होकर किसी गाँव गया । उसका वावा शाम को उसी रास्ते पर डाकू का वेश वना कर एक टीले के ऊपर वैठ

गया। जब लड़का लौटा और अंधेरा होते होते उस टीले के पास पहुँचा तो डाकू बने बाबा ने अपनी बदली हुई आवाज में ऊंट-सवार को ललकारते हुए कहा कि जान प्यारी हो तो ऊंट और तलवार वहीं छोड़ दो। लड़का डर गया और दोनों चीजें उसे सौंप कर पैदल ही घर की ओर चल पड़ा। बाबा ऊंट पर सवार हुआ और दूसरे रास्ते से घर आ गया। उसने तलवार तो खूंटी पर टांग दी और ऊंट को पिछवाड़े बांध दिया।

कुछ रात गये जब लड़का घर पहुँचा तो बाबा ने पूछा की ऊंट कहाँ है? लड़का उदास होकर बोला कि क्या बताऊं बाबा, आज तो बीस डाकू एक साथ ही मिल गये। मैंने चार-पांच को तो धराशायी कर दिया, लेकिन वे संख्या में अधिक थे, इसलिए ऊंट को तो वे ले गये। लेकिन जब लड़के को इस बात का पता चला कि यह तो बाबा ही था, तो उसने क्रोध में भर कर कहा कि यदि उस वक्त यह पता चल जाता कि डाकू के वेश में तुम्हीं हो तो, तुम्हारे टुकड़े-टुकड़े ही कर डालता।

२४०३. बावै सूं ई' बाई' ?

सन्दर्भ कथा—एक लड़की बड़ी वाचाल थी। इसलिए कोई युवक उसके साथ शादी करने को तैयार नहीं होता था। आखिर एक युवक ने हां भरी और विवाह हो गया। जब दूल्हा-दुलहिन बहली में बैठे जा रहे थे तब कन्या पक्ष वालों की ओर से दिये गये 'पापड़-मूंगोड़ी' के 'माट' (चौड़े मुँह के मिट्टी के बड़े घड़े) परस्पर भिड़-भिड़ कर आवाज करने लगे। दूल्हे ने उन्हें चुप रहने का आदेश दिया, लेकिन वे क्या मानते? तब उसने फिर कड़ी आवाज में उनसे कहा कि मुझे जरा भी बड़बड़ाना नहीं सुहाता, या तो चुप हो जाओ, नहीं तो तुम्हें फोड़ डालूंगा। परन्तु जब वे नहीं माने तो वह लाठी लेकर बहली से उतरा और उसने उन मटकों को फोड़ डाला। इससे दुलहिन के मन में भय बैठ गया और उसका बोलना अत्यंत सीमित हो गया। वह पति की आज्ञा में चलने लगी। पति ने उसे समझा रखा था कि जब घर में कोई मेहमान आये और मैं दाईं आंख से इशारा करूं तो उसे खिचड़ी में घी डाला करो और बाईं आंख से इशारा करने पर तेल। वह वैसा ही किया करती। एक बार उसका बाबा उससे मिलने के लिए आया तो पति ने बाईं आंख का इशारा किया। इस पर उससे न रहा गया और बोल पड़ी कि क्या बाबा से भी बाईं ?

२४०४. बाबो गयो नौ दिन, नौ आया एक दिन।

बाबा नौ दिनों तक दूसरों के यहाँ खाना खाने गया, लेकिन उसके यहाँ नौ आदमी एक ही दिन आ गये। हिसाब बराबर हो गया—

बाबो गयो नौ दिन, नौ आया एक दिन ।
लेखो करयो मन परखावो, बाबो किन गयो न आवो ॥

२४०५. बाबो गयो बीज नै अर मिट्टा पाक्यां आयो ।
बाबा गया तो था खेत में बोने के लिए बीज लाने और मिट्टे पकने पर लौटा।

२४०६. बाबो घरे आणो चाये, भलाईं गैलै-गैलै आओ, भलाईं छप्पर फाड़ कर ।
बाबा घर पर आना चाहिए, भले वह किसी रास्ते से आवे ।
काम होना चाहिए, भले वह किसी जरिये से हो ।

२४०७. बाबोजी ! आज संख तो मुदियां बजायो ?
'क दुआरकाजी में टक्का नौ दिया है, मेरै लचै जद बजाऊं ।
जब किसी ने बाबाजी से कहा कि आज तो कुछ जल्दी शंख बजा दिया तो बाबाजी ने उत्तर दिया कि मैंने द्वारकाजी में इसे नौ टके देकर खरीदा है, अब मैं अपनी इच्छा हो तभी बजा सकता हूँ ।

२४०८. बाबोजी की झोळी में जेवड़ा ।
बाबाजी की झोली में तो केवल रस्सियां ही निकलीं ।
बाबाजी एक दम कोरे, नाम मात्र के बाबाजी निकले, सिद्धि या चमत्कार कुछ नहीं ।

२४०९. बाबोजी को नांव के ? 'क बैंगण पुरी ।
जद तो बाबोजी का बाबोजी अर तरकारी-रोटी भी सागै ।
किसी भक्त के पूछने पर बाबाजी ने अपना नाम बैंगनपुरी बतलाया तो भक्त खुश होकर बोला-वाह ! बाबाजी के बाबाजी और तरकारी व रोटी साथ में ।

२४१० बाबोजी, तिलक तो चौड़ा काढ्या, 'क सूक्यां फाटसी ।
बाबाजी अपने तिलक तो बहुत चौड़े निकाले ?
बाबाजी ने उत्तर दिया कि सूकने पर फटेंगे (सूकने पर पता चलेगा) ।

इसके पीछे एक नायक की कथा है जो छाज आदि बनाने का काम किया करता था और दिन में साधु का स्वांग बना कर भिक्षाटन के लिए जाया करता था । एक दिन उसने बची हुई वाध (चमड़े की डोरी) अपने माथे पर लपेट ली और जब साधु का वेश बनाने लगा तो वाध को उतारना भूल गया एवं उसी के ऊपर चंदन का लेप कर लिया ।

२४११. बाबोजी ! धूणी तापो हो ?
'क बच्चा, काया ई जाणै है ।
किसी ने महात्माजी से पूछा कि महात्माजी आप धूनी तप रहे हैं ? महात्मा ने उत्तर दिया कि मुझ पर जो बीत रही है, उसे काया ही जानती है ।

२४१२. **बावोजी ! भंडारं में कुत्तो वड़ग्यो ।**
'क जड़दद्यो, जिको आगलै घर सें भी खोटो होज्या ।
चेले ने मठाधीश से कहा कि बावाजी, भंडार में कुत्ता घुस गया । लेकिन भंडार घर तो सर्वथा खाली था, इसलिए बावाजी बोले कि कुत्ते को अन्दर ही बन्द कर दो कि जिससे यह दूसरे घर जाकर भी कुछ खा न पाये ।

२४१३ **बावोजी ! हरजस गावो । 'क रोणं सें धापां जद नीं ।**
बावाजी, हरिजस गाइये । कि रोने से फुरसत मिले तब न गायें ।
अन्य झंझटों से अवकाश मिले तो भगवान् का भजन करें ।

२४१४. **वावो बेचूं हूं । 'क बावै नै बेच्या करै है के ?**
'क मोल इसो कैस्यूं, जिको कोई लेत्रै ई कोनी ।
एक ने कहा कि अपने बाबा को बेच रहा हूं । दूसरे ने कहा कि कहीं बावा को भी बेचा जाता है ? इस पर पहले ने जवाब दिया कि बाबा की कीमत ऐसी लगाऊंगा कि कोई खरीद ही न सके ।

२४१५. **वावो मरचो टीमली जाई, रैया तीन का तीन ।**
बावा मरा तो टीमली (लड़की का नाम) पैदा हो गई, रहे वेही तीन के तीन ।

२४१६ **बावो सैंनै लड़ै, बावै नै कुण लड़ै ?**
बड़ा होने के कारण बाबा तो सबको डांटता है, लेकिन बावा को कौन डांटे ?
रू० बावो सैं नै मारै, बावै नै कुण मारै ?

२४१७. **बामण कह छूटै, बळद वह छूटै ।**
बैल जमीन को जोत कर छूट जाता है और ब्राह्मण कह कर ।

२४१८. **बामण कै हाथ में सोनै को कचोळो ।**
अन्य कोई आजीविका न होने पर ब्राह्मण माग कर ही अपना निर्वाह कर लेता है ।
रू० बामण हाथी चढयो ई मांगै ।

२४१९. ***बामण को जी लाडू में ।***
ब्राह्मण के प्राण लड्डू में वसते हैं ।
रू० बातां रीझै बाणियों, रागां सें रजपूत ।
बामण रीझै लाडुवां, बाकळ रीझै भूत ।।

२४२०. **बामण नै दी बूढी गाय, धरम नईं तो दाळद जाय ।**
ब्राह्मण को बूढी गाय दान में दी । इससे यदि पुण्य लाभ न भी हुआ तो भी बूढी गाय को खिलाने-पिलाने से तो पिण्ड छूटा ।

२४२१. **बामण नै बतळायो, लैरां लाग्यो आयो ।**
ब्राह्मण को बतलाते ही वह कुछ प्राप्ति की आशा में पीछे लग जाता है ।

२४२२. **वामण सीरी मत करै, खेती विना ई' सार ।**
वो जीमैगो जीमणां, तूं काढैगो गाळ ।।

सन्दर्भ कथा—एक जाट ने एक ब्राह्मण के साझे में खेती की । जाट तो रोज खेत में काम करता था, लेकिन ब्राह्मण को भोजन का निमंत्रण मिल जाता तो वह जीमने चला जाता और इतना खा आता कि फिर उससे कोई काम न होता । आसोज का महीना आया । फसल पक कर तैयार हो गई, लेकिन उधर श्राद्ध पक्ष लग गया, ब्राह्मण नित्य न्योता जीमने लगा और इधर जाट उसे कोसता ही रहा ।

२४२३. **वामण सें वामण मिल्यो, पूरवलै जलम का संस्कार ।**
देण लेण नै कुछ नईं, नमसकार ई नमसकार ।।

पूर्व जन्म के संस्कारों से दो ब्राह्मण परस्पर मिले तो दोनों एक दूसरे को नमस्कार ही नमस्कार करते हैं । देने-लेने को किसी के पास कुछ नहीं ।

२४२४. **वारठ जी को तो वस आंगळो आंगळो ई है ।**

सन्दर्भ कथा एक वारहठ के घर में कसाला था । लेकिन गाँव में उस की प्रतिष्ठा अच्छी थी । एक बार कोई मेहमान उसके घर आया तो उसने दूसरों के यहाँ से सारी चीजें मांग कर मेहमान की अच्छी खातिर कर दी । रात को जब वह मेहमान को दूध पिलाने के लिए दूध के कटोरे में चीनी मिलाने के लिए अपनी उँगली फिरा रहा था तब मेहमान ने वारहठ से कहा कि वारहठजी, आपने तो मेरी वड़ी अच्छी खातिर की है । इस पर वारहठ बोला कि वारहठजी की तो यह उँगली ही है जिसे दूध के कटोरे में चला रहा हूँ, शेप सारी चीजें तो मांगी हुई ही हैं ।

२४२५. **वार वडा 'क त्यूंहार ?**

वार वड़ा या त्यौहार ?

सामान्य तौर पर भले ही किसी वार को किसी विशिष्ट काम के करने का निपेध हो, लेकिन यदि उस दिन कोई त्यौहार हो तो वार की अड़चन नहीं मानी जाती ।

२४२६. **वा'रा कोसां वोली पळटै, वनफळ पळटै पाकां ।**
सौ कोसां तो साजन पळटै, लखण न पळटै लाखां ।।

स्थान और समय परिवर्तन के साथ सब चीजों में वदलाव आ जाता है, लेकिन मनुष्य की आदत नहीं वदलती ।

२४२७ **वारा वरस काठ में रैयो, घड़ी कै ताईं पग तुड़ायो ।**

वारह वर्पों तक काठ में रहा और मुक्त होने का समय आया तो शीघ्र छूटने की उतावली में पैर तुड़वा वैठा ।

काठ=यह दो तराशे हुए लकड़ों से बनाया जाता था। दोनों के बीच में छेद होते थे और इन छेदों में अपराधी के पैर डाल कर दोनों लकड़ों को कस देते थे।

२४२८. बारा बरस सैं बांझ ब्याई, पूत ल्याई पांगळो।
बारह वर्ष बाद तो बांझ ने पुत्र प्रसव किया और वह भी पंगु।

२४२९. बारा बरस सैं बाबो बोल्यो, बोल्यो—पड़ै अकाळ।
बारह वर्ष बाद अपना मौन भंग करके बाबा बोला तो यही बोला कि अकाल पड़ेगा।
रू० कै तो बाबो बोल्यो ई कोनी अर बोल्यो तो घरकां नै खाऊं।

२४३०. बारा बामण बारा बाट, बारा खाती एकै घाट।
बारह ब्राह्मण एकत्र होते हैं तो सब अलग-अलग मत प्रकट करते हैं, लेकिन बारह खाती एकत्र होते हैं तो वे एक ही वाणी बोलते हैं।

२४३१. बारा मुट्ठी, एक लप।
सर्वथा मूर्ख।
रू० आठूं गांठां ऊत।

२४३२. बारी आयां बूढळी नाचै।
अपनी बारी आने पर बुढिया भी नाचेगी।

२४३३. बारै बरसै, घर का तरसै।
बाहर तो माल लुटाये और घर वाले तरसते रहें।

२४३४. बाळ उपाड़्यां किसा मुरदा हळका होवै ?
बाल उखाड़ने से मुरदे थोड़े ही हलके हो जाते हैं ?

२४३५. बाळकां वेद, बूढां व्याकरण।
वेद मंत्रों को तो बालक भी कंठाग्र कर लेते हैं, लेकिन व्याकरण के भेदों को बड़े ही समझ पाते हैं।
रू० गळ में घालै गूदड़ी, निहचै मांडै मरण।
घो ची ली पू जद करै, जद आवै व्याकरण॥
घो=घोखना, रटना। चि=चितारना, चिंतन करना। लि=लिखना। पू=पूछना।

२४३६. बाळूं सोनो कान जो तोड़ै।
ऐसे सोने को जला देना ही अच्छा जो कान तोड़े।
रू० जद की परणी तद की परखी, कदे नै बोलै मन की हरखी।
जद बतळाऊं कड़की बोलै, बाळूं सोनो कान जो तोड़ै॥

२४३७. बावळा गांव मत बाळिये, 'क भली चितारी ।

किसी ने पागल से कहा कि गाँव न जला देना तो पागल बोला कि यह तो अच्छी याद दिलाई ।

रू० बावळा लाय ना लगाई, 'क थारां तो एक नई सिखाई ।

२४३८. बावळी ही अर भूतां खदेड़ी ।

पगली तो थी ही और फिर भूत पीछे लग गये ।

रू० बावळी अर भांग पीली ।

२४३९. बास छोड, पड़ बास क्यूं ?

पड़ोस की उपेक्षा करके दूर वालों को क्यों ?

२४४०. बिंदराबन में रैं'णो, राधे गोविंद कैं'णो ।

जो वृन्दावन में रहेगा, वह राधे-गोविन्द कहेगा ।

२४४१. बिधग्या सो मोती ।

जो बिंध गये सो मोती ।

२४४२. बिगड़ी तो चेली बिगड़ी, बाबोजी तो सिध का सिध ।

भ्रष्ट और बदनाम हुई तो चेली हुई, बाबाजी तो सिद्ध के सिद्ध ।

२४४३. बिगड़ी बणावै बाणियों ।

बनियां बिगड़ी हुई बात को भी बना लेता है ।

रू० बणी बणावै बाणियों ।

२४४४. बिगड़योड़ो तीवण सुधरै कोनी ।

बिगड़ा हुआ तीवन सुधरता नहीं ।

तीवण — शाक-सब्जी, दाल, कढ़ी आदि ।

बिगड़ी हुई संतान सुधरती नहीं ।

२४४५. बिच्छू को झाड़ो तो जाणै ई कोनी अर सांप की बांबी में हाथ घालै ।

बिच्छू का झाड़ा तो जाने ही नहीं और सांप की बांबी में हाथ डाले ।

२४४६. बिणज करैंगा बाणियां ।

व्यापार-बाणिज्य तो बनिये ही करेंगे ।

संदर्भ कथा—एक सेठ के घर के पड़ोस में एक पंडितजी रहते थे । उन्होंने सेठ से पूछा कि आप इतना धन कैसे कमाते हैं ? सेठ ने कहा कि हम तो व्यापार करते हैं, उसी से पैसा बढ़ता है । पंडितजी ने फिर पूछा कि मैं किस चीज का व्यापार करूं तो सेठ ने कहा कि आप तो पंडित हैं, इसलिए पत्रों का व्यापार ही कर लीजिए । पंडित ने बहुत सारे पत्रे छपवा लिए लेकिन पहले से जो पत्रे (पंचांग) प्रचलित थे, उनके सामने इन नये पत्रों को कौन पूछता ? पत्रे बिके नहीं और साल पूरा होने को आया तो पंडितजी बोले—

विराज करो रे वाणियों, म्हे विराजां सें धाया ।
अब कै जै पतड़ा विकज्या तो औरू गंगा न्हाया ।।
रू० विराज करैगा वाणियां और करैगा रीस ।

२४४७. विनां वजाई वाजै है ।
यह तो विना वजाये ही वज रही है ।
सन्दर्भ कथा—एक रात को कुछ चोर एक गाने-वजाने वाले के घर में घुसे । वहां चोरों को और कुछ नहीं मिला तो एक ने ढोलक उठाली, दूसरे ने सारंगी और तीसरे ने इकतारा ले लिया । इतने में जाग हो गई और चोर भाग छूटे । घर वालों ने और पास पड़ौस के लोगों ने भी उनका पीछा किया । चोर एक खेत में घुस गये । खेत में फसल पकी खड़ी थी और बाजरी के सिट्टे इतने घने थे कि रास्ता पा सकना कठिन था । जिसने गले में ढोलक डाल रखी थी, वह तो और भी कठिनाई से आगे वढ रहा था । जैसे तैसे वह भागता था, बाजरे के सिट्टे ढोलक पर तड़ातड़ पड़ते और ढोलक वजती जाती थी । उसके साथियों ने उससे पुकार कर कहा कि तू ढोलक न वजा, क्योंकि ढोलक की आवाज को लक्ष्य करके ही वे लोग हमारा पीछा कर रहे हैं । इस पर ढोलक वाले ने कहा कि मैं कहाँ वजा रहा हूँ, यह तो विना वजाये ही वज रही है ।
रू० गळै पड़ी वाजै है ।

२४४८. विनां वाप को छोरो विगड़ै, विना माय को छोरी ।
विना वाप का पुत्र और विना मां की लड़की विगड़ जाती है ।

२४४९. विनां मनां का पावणां, तनै घी घालूं 'क तेल ?
अनचाहे मेहमान को भोजन में घी डालूं या तेल ?
रू० (१) तेरो गयो टपकलो, मेरी गई हमेल ।
विनां मनां का पावणां, तनै घी घालूं 'क तेल ।।
(२) विनां मनां का पावणां, विन जीम्यां ईं जाय ।

२४५०. विनां रोये तो मा ईं बोवो कोनी दे ।
विना रोये तो माँ भी शिशु को स्तन पान नहीं कराती ।

२४५१. विभीषण विनां भेद कुण वतावै ?
विभीषण के विना लंका का भेद कौन दे ?
अपने वाला ही शत्रु को भेद देता है ।

२४५२. विलाई को मन मळाई में ।
बिल्ली का मन हर समय मलाई में रहता है ।

२४५३. बिल्ली आळी चाल तो सिखाई ई कोनी ।
बिल्ली वाली चाल तो सिखलाई ही नहीं ।

सन्दर्भ कथा—एक बार एक शेरनी ने अपने बच्चे को शिकार आदि की चाल (पैंतरे) सिखलाने का भार बिल्ली मौसी को सौंपा। बिल्ली ने उसे अनेक दांव-पेंच सिखला दिये। लेकिन जब सिंहनी का बच्चा कुछ बड़ा हुआ तो वह एक दिन बिल्ली पर ही झपटा। बिल्ली झट से उछल कर वृक्ष पर चढ गई। शेर का बच्चा देखता ही रह गया और उसने उपालंभ के स्वर में बिल्ली से कहा कि मौसी, तूने यह चाल तो मुझे सिखलाई ही नहीं। इस पर बिल्ली ने उत्तर दिया कि यदि यह चाल सिखला देती तो आज जीवित कैसे रह पाती ?

२४५४. बिल्ली की चाल जाणो, कुत्तं की चाल आणो
किसी काम के लिये जाते समय बिल्ली की चाल से जाना चाहिए और लौटते समय कुत्ते की चाल से लौटना चाहिए।

२४५५ बिल्ली कै पेट में घी कोनी पचै।
बिल्ली के पेट में घी नहीं पचता।

२४५६ बिल्ली कै भाग को छींको टूटगो।
बिल्ली के भाग्य से ही छींका टूट गया।

पद्य—सौक मुई न पिव घर आया, मन का चींत्या फळ पाया।
दुरजण केरा हिवड़ा फूटा, बिल्लै भागै छींका टूटा॥

२४५७. बिल्ली बजारिया तो घणां ई करले, पण कुत्ता करण दे जद नीं ?
बिल्ली बाजार की सैर तो खूब करले, लेकिन कुत्ते करने भी दें ?

२४५८. बिस दे देणो, पण बिसवास नईं देणो।
विष देने की अपेक्षा विश्वासघात करना अधिक बुरा है।

२४५९ बीघै बीघै भूत, बिसवै बिसवै सांप।
राजस्थान की मरु-भूमि में बीघे-बीघे पर भूत एवं बिस्वे-बिस्वे पर सांप रहते हैं।

२४६०. बीज जिसो ई फळ।
जैसा बीज, वैसा फल।

२४६१. बीजावरगी वाणियं, दूजो गूजर गोट।
तीजो मिलज्या दायमो, करै टापरो चोट॥
ये तीनों मिल जाएं तो फिर घर को बर्बाद करके ही छोड़ते हैं।

२४६२. बीन कै मूंडै लाळ पड़ै, जद जनेती के करै ?
जब दूल्हे के मुंह से ही लार गिरती हो तब बराती क्या करें ?
जब मुखिया ही निकम्मा हो तब उसके पीछे चलने वाले क्या करें ?

२४६३. *बीन बिना किसी बरात ?*

दूल्हे के बिना कैसी बरात ?

२४६४. **बीन मरो चाये बीनणीं, बामण का टक्का त्यार है।**

चाहे दूल्हा मरे चाहे दुलहिन, ब्राह्मण तो अपने नेग के टके ले लेता है।

रू० बामण तो हथलेवो जुड़ाणैं को सीरी है।

२४६५. **बीबी तुझै हँसली घड़ादयूं ? मियां मोकूं नाज।**

मियां के घर में घाटा था और दो जून रोटी भी नसीब नहीं होती थी, लेकिन जब उसने बीबी से हँसली (गले का एक आभूषण) घड़वा देने के लिए पूछा तो बीबी बोली कि मुझे तो खाने के लिये अनाज ला दो।

रू० बीबी तनैं हमेल ? 'क मियां मो कूं नाज।

२४६६. **बुध पैरै बागा, कदे न रैवै नागा।**

जो बुधवार को नया वस्त्र धारण करता है, वह कभी नंगा नहीं रहता।

२४६७. **बुध बावणी, सुक्कर लावणी।**

बुधवार को हल जोतना चाहिए और शुक्रवार को फसल काटनी चाहिए।

२४६८. **बुध विनां विदया बापड़ी।**

बुद्धि के बिना विद्या निरीह होती है।

रू० बळ विनां बुध बावळी।

२४६९. *बूडळी नैं पापड़ बेलतां बोळा दिन होग्या है।*

बुढ़िया को पापड़ बेलते बहुत दिन हो गये हैं।

इसे ना-समझ मत जानो।

२४७०. **बूढ घोड़ी कै लाल लगाम।**

बुढापे में अधिक बनाव-शृंगार करना भद्दा लगता है।

रू० (१) गये जोबन डंबर करै, सो माणस अग्यान।

(२) संन्यासी घर मांडियो, नवरंगी नार परणियो।
बुढापै भिसळचो डोकरो, बूढी गाय गळ टोकरो॥

२४७१. **बूढां बरकत होवै।**

बूढों से ही बरकत होती है।

संदर्भ कथा—एक बारात में सब छैल-छबीले युवक ही बराती बनकर गये। उन्होंने किसी बूढे को साथ नहीं लिया। लेकिन एक बूढा ऊँट के बोरे में छुप कर उनके साथ चला गया। उधर कन्या पक्ष वालों ने बरातियों की परीक्षा लेने हेतु उनसे कहलवाया कि सौ गांठों वाला थांभ भेजिये। किसी युवक की समझ में नहीं आया कि अब क्या किया जाए। तब बूढे ने बोरे में से निकल कर कहा कि डाभ का एक तिनका भेज दो। ऐसा ही किया

गया। और कन्या पक्ष वाले मान गये। इस प्रकार बूढ़े ने सबकी लाज रखली।

२४७२. **बूढै को अर बाळक को मन एकसो होवै।**
बूढ़े और बालक का मन एक जैसा होता है।

२४७३. **बूढै बळद नै अर बूढै माइत नै जोतले जितरो ई लावो।**
बूढे बैल से और बूढे माँ-बाप से जितना काम ले लें वही नफे में।

२४७४. **बूर को लाडू खावै सो पिसतावै, न खावै सो पिसतावै।**
बूर का लड्डू खाये सो भी पछताये, न खाये सो भी पछताये।
रू० काठियो लाडू खावै सो पिसतावै, न खावै सो पिसतावै।

२४७५. **बेईमान का घोड़ा मैदान में थकै।**
बेईमान के घोड़े मैदान में हार जाते हैं।

२४७६. **बे का घाल्या टळै कोनी।**
विधाता के अंक झूठे नहीं होते।
इस संदर्भ की अनेक कथाएँ लोक प्रचलित हैं।
रू० (१) बे का घाल्या ना टळै, टळै रावण का खेल।
रैई कुंआरी डूमणी, घाल पटां में तेल ॥
(२) हर लिख्या सो बे लिख्या, लिख लिख घाल्या अंक।
राई घटै न तिल वधै करल्यो कोड़ जतन्न ॥
(३) बे का घाल्या ना टळै, छठी रात का अंक।
राई घटै न तिल वधै, रह तू जीव निसंक ॥
(४) हिरण खुरी दो आंगळी, धरती लाख पसाव।
बे का घाल्या ना टळै, जां फांसी तां पाव ॥

२४७७. **बेटा स्याणो होई, 'क बापू फोड़ां सारू।**
बाप ने बेटे को सीख दी कि बेटे सयाने होना। बेटे ने उत्तर दिया कि पिताजी, जितनी मुसीबतें आयेंगी, उन्हीं के अनुसार सयाना बनता जाऊंगा।

२४७८. **बेटा होया स्याणा, दाळद गया पुराणा।**
बेटे सयाने (कमाने वाले) हुए तो घर का पुराना दारिद्रय चला गया।

२४७९. **बेटी अर जंवाई तो रूसेड़ा चोखा ई।**
बेटी और दामाद रूठते हैं तो अच्छा ही है, उन पर होने वाले व्यय की बचत हो जाएगी।

२४८०. **बेटी और बळद जूओ कोनी गेरै ।**
बेटी और बैल बंधन में ही रहते हैं ।
रू० मुंह सें कीं बोलै नईं, करो किसी कै गैल ।
पराधीन दोनूं सदां, जग में बेटी बैल ।।

२४८१. **बेटी की खुराक गिण्यां, जुंवाई आळी बट्टै में बै' ज्या ।**
घर में बेटी के लिए तो अन्य सदस्यों की तरह सदैव सामान्य खाना ही बनाया जाता है और दामाद के लिए विविध प्रकार के व्यंजन बनाये जाते हैं । लेकिन बेटी की खुराक का हिसाब लगायें तो दामाद की खुराक बट्टे में चली जाती है ।

२४८२. **बेटी की मा राणी, भरै बुढापै पाणी ।**
यदि किसी स्त्री के सब बेटियां ही हों तो उसे बुढापे में पानी भरना पड़ता है, क्योंकि बेटियां सुसराल चली जाती है और बेटा न होने से घर में बहू आती नहीं ।

२४८३. **बेटी जाई जिको पंगात्यां बैठसी ।**
बेटी वाला चाहे कितना ही बड़ा क्यों न हो, बेटे वाले से नीचे ही बैठता है । यही स्थिति रामायण काल में भी थी—संसार में कन्या के पिता को चाहे वह भूतल पर इन्द्र के तुल्य ही क्यों न हो, वर पक्ष के लोगों से अपमान उठाना पड़ता है (देखें, वा. रामायण, अयोध्या., ११८।३५) ।

२४८४. **बेटी जाय जमारो हारघो ।**
जिसके यहाँ बेटी जन्मी, उसका जन्म लेना ही व्यर्थ हो गया ।
महाभारत में भी बेटी को संकट माना गया है—आदि पर्व, १५८।११
रू० बेटी जाई रै जगनाथ, जैको हेटै आयो हाथ ।

२४८५. **बेटी बाप कै घरे कोनी खटावै ।**
बेटी बाप के घर में नहीं खटा सकती ।
रू० (१) बेटी मा कै पेट में खटाज्या, बाप कै आंगणै में कोनी खटावै ।
(२) बेटी अर माल घर में कोनी खटावै ।

२४८६. **बेटी हांते की सीरी होवै, पांती की कोनी होवै ।**
बेटी के मां बाप स्वेच्छा से जो दे दें, उसी पर बेटी का अधिकार होता है । बेटों की तरह घर में उसका बटवारा नहीं होता ।

२४८७. **बेटै सें बेटी भली, जे कोई होय सपूत ।**
निकम्मे बेटे की अपेक्षा तो सुयोग्य बेटी ही अच्छी ।
इस संदर्भ की एक अर्द्ध ऐतिहासिक कथा बड़ी प्रसिद्ध है जिसके अनुसार गढ़ चौटाला के ठाकुर 'अड़सी' (अरसी = अरिसिंह) के कोई पुत्र नहीं था, केवल ल्हालर नाम की एक कन्या थी। लेकिन ल्हालर बड़ी चतुर एवं

दिलेर थी और उसने अपने पिता की दोनों अन्तिम इच्छाओं को पूर्ण किया था—

अड़सी कै ल्हालर नईं होती, अड़सी जातो ऊत ।

२४८८. **वेस में सें कांचळी नीकळ्यावै, पण कांचळी में सें वेस कोनी नीकळै ।**

वेस में से कंचुकी निकल सकती है, लेकिन कंचुकी में से वेस नहीं निकल सकता ।

वेस = स्त्री की पूरी पोशाक—घाघरा, ओढ़ना और चोली या कब्जा आदि ।

२४८९. **वेसां चाली सासरै, सात घरां संताप ।**

वेश्या सुसराल चली तो उसके अनेक चहेते संतप्त हो उठे ।

२४९०. **वेई घोड़ा, वैई मैदान ।**

फिर वे ही घोड़े और वही मैदान ।

२४९१. **वैं चिड़कली कोनी जिको हरड़क देसी उडज्या ।**

यह वह चिड़िया नहीं जो जरा डराते ही हरड़ से उड़ जाए ।

तुम्हारी भभकी का यहां कोई असर होने वाला नहीं है ।

२४९२. **वैठ्यो मोजां मार सिपाइड़ा, कदे'क डाळो नूं जासी ।**

भगवान् के भरोसे वैठे मौज करो, कभी न कभी काम बन ही जाएगा ।

२४९३. **वैं पाणी मुलतान गया ।**

अब वह बात वापिस नहीं आने की ।

रू० (१) प्यावत ही जद पिया नहीं, तैं जोगी अभमान किया ।
भटक्या साधु फिरो दिवाना, वैं पाणी मुलतान गया ।।

(२) गैली पैली समझी नईं, मैंदी का रंग कहां गया ।
अब प्रेम नहीं उस प्यारी सें, वैं पाणी मुलतान गया ।।

२४९४. **वैम की दारू कोनी ।**

वहम की कोई दवा नहीं ।

रू० वैम की दारू लुकमान हकीम पां ईं कोनी ।

२४९५. **वैराग को के म्हूरत ?**

वैराग्य का क्या मुहूर्त ?

सन्दर्भ कथा—एक राजा के चार रानियां थीं । एक दिन उसके साले की पत्री आई कि मेरे सोलह रानियां हैं और मैं प्रत्येक रानी से एक-एक दिन मिल कर १६ दिनों बाद वैराग्य ले लूंगा । राजा उस समय नहा रहा था और उसकी पट्टरानी उसको नहला रही थी । अपने साले की पत्री पढ़ कर राजा ने व्यंग्य से कहा कि वैराग्य का भला क्या मुहूर्त, पता नहीं कि १६ दिनों में क्या हो ? अपने भाई के प्रति रानी इस व्यंग्य को नहीं सह सकी और तुनक कर बोली कि मेरा भाई तो ऐसा वैरागी नहीं है, लेकिन

आप तो है न ? रानी की बात सुन कर राजा नहाते हुये ही उठ खड़ा हुआ और जंगल की ओर चल पड़ा। उसकी चारों रानियों ने उसे रोकने का बड़ा प्रयत्न किया लेकिन वह नहीं रुका।

२४९६. **वैरी कै घर घोड़ो वंधियो, न मरियो, न चुरयो, न विकयो, खड़्यो-खड़्यो ई चरियो।**

वैरी के घर ऐसा घोड़ा बंधे जो न मरे, न जिसे चोर ले जाएँ, न विके, केवल खड़ा-खड़ा चरता ही रहे।

२४९७. **वो ई कुंहाड़ो, वो ई वैंसो।**

वही कुल्हाड़ा और वही बेंट।

संदर्भ कथा—किसी गांव में 'वावळी माता' की बड़ी मान्यता थी। चोरी करने वाले का हाथ माता की मूर्ति से छुआते ही चिपक जाता था और चोर द्वारा अपराध स्वीकार करने पर ही छूटता था। एक रात को सैंसा नामक खाती 'रावले' की एक उत्तम भैंस चुरा कर लाया और हाथ चिपकने के भय से रातोंरात देवी के 'मंढ' को कुल्हाड़े से फोड़ने लगा। माई ने उससे कहा कि तू मेरा मंढ न फोड़, तेरा हाथ नहीं चिपकेगा। इस पर सैंसा आश्वस्त होकर अपने घर चला गया। अगले दिन गांव में भैंस के चोरी चले जाने का शोर मचा और सारे ग्रामवासी माता की मूर्ति को हाथ लगा-लगा कर अपनी निर्दोषिता साबित करने लगे। जब सैंसे की वारी आई तो उसने माता से चेतावनी के स्वर में कहा—

सुण ये माता वावळी, भैंस गई है रावळी।
मैं हूँ खाती सैंसो वो ई कुंहाड़ो वो ई वैंसो॥

इस पर सैंसे का हाथ मूर्ति से नहीं चिपका।

२४९८. **बोर कै सागै कीड़ो खायो जा, म्होर कै सागै कोनी खायो जा।**

बेर के साथ कीड़ा खाया जा सकता है, मोहर के साथ नहीं खाया जा सकता।

२४९९. **बो 'रो ब्याज भी ले, वेगार भी लें अर गरज बधाऊ में करावै।**

वोहरा ब्याज भी लेता है, वेगार भी लेता है और गरज ऊपर से करवाता है।

२५००. **बोलतै का ठोरड़ बिकै।**

बोलने वाले का ठोरड़ू भी बिक जाता है।

जिसको बोलना आ जाता है, उसका काम आसानी से बन जाता है, जिसका मुँह सिला रहता है, वह कोरा रह जाता है।

रू० (१) कवि कुहाड़ो पाछणो, जे मुख भूठो होय।
गळियारां रुळतो रवैं, बात न बूझै कोय॥

(२) बोलवो न सीख्यो, सब सीख्यो गयो धूड़ में।

२५०१. **बोलै वड़ में लादै पीपळ में ।**
बोले कहीं, मिले कहीं । कहे कुछ, करे कुछ ।

२५०२. **बोलै राह, चालै कुराह ।**
बात तो राह की कहे और चले कुराह ।
रू० बोलै साफ, पेटै पाप ।

२५०३. **बोलै सो ई बाछड़ा खोलै ।**
जो बछड़ों को खोलने की सलाह देता है, उसे ही खोलने के लिए कहा जाता है ।
रू० बोलै सो मरै ।

२५०४. **बोल्या अर लादचा ।**
बोलते ही पता चल गया कि कितने पानी में है ।
रू० भरिया सो झळकै नईं, झळकै सो आदा ।
या पुरखां की पारखा, बोल्या अर लादचा ।।

२५०५. **ब्याज नै घोड़ा ई कोनी नावड़ै ।**
ब्याज को घोड़े भी नहीं पा सकते क्योंकि ब्याज आठों पहर चलता है ।
ब्याज की मार बड़ी बुरी होती है—
गाती तो छाती ढकै, ढकै पाघड़ी सीस ।
ब्याज नपूतो के ढकै, करै पांच का तीस ।।

२५०६. **ब्याज नै रेवड़ नावड़ै ।**
ब्याज को रेवड़ ही पहुँच सकता है ।

२५०७. **ब्याज भाड़ो दिछणां, बाकी रैई सो कुछ नां ।**
ब्याज, भाड़ा और दक्षिणा समय पर ही लेलें तो लेलें, बाद में कुछ नहीं मिलने का ।

२५०८. **ब्या तो बीगड़चो, घर का तो जीमो ।**
ब्याह तो बिगड़ा सो बिगड़ा अब घर के लोग तो भोजन करो ।

२५०९. **ब्या बिगाड़ां पार को, यो तो म्हारै घर को ।**
हम दूसरों का विवाह भी बिगाड़ देते हैं, फिर यह तो हमारे घर का है, इसको बिगाड़ना तो हमारे बायें हाथ का खेल है ।

२५१०. **ब्या बिगाड़ै दो जणां, कै मूंजी कै 'मे ।**
वो धेलो खरचै नईं, वो दड़ांदड़ दे ।।
विवाह को दो ही बिगाड़ते हैं, या तो मूंजी या मेह । कंजूस तो अधेला खर्च नहीं करता और मेह दड़ादड़ वर्षा करके सारी व्यवस्था बिगाड़ देता है ।

२५११. व्या मण मूंगां में भी होज्या, मण मोतियां में भी होज्या ।
विवाह मन भर मूंगों में भी हो जाता है और मन भर मोतियों में भी ।
विवाह थोड़े में भी हो जाता है और विवाह में अनाप-शनाप खर्च भी किया जा सकता है ।

२५१२. भंवरो जाणै सरब रस, जिण चाखी वणराय ।
घुण जाणै किम बापड़ो, सूका लाकड़ खाय ।।
समग्र वनस्पतियों का आस्वादन करने वाला भौंरा ही सब रसों को जानता है, सूके लक्कड़ों को खाने वाला बेचारा घुन क्या जाने ?

२५१३. भगतण नै के आसण सिखावै ?
वेश्या को कोई क्या आसन सिखलाये ?
काम शास्त्र में चौरासी आसन माने गये हैं ।

२५१४. भगतां भेळा मिल गया, कुण जाणै कुम्हार ?
भक्तों की मंडली में मिल गये तो अब कौन जाने कि यह कुम्हार है ।

२५१५. भगवान कै घरे देर है, पण अंधेर कोनी ।
ईश्वर के घर देर है, अन्धेर नहीं ।
पापी को देर-सवेर अपने दुष्कर्मों का फल भुगतना ही पड़ता है ।

२५१६. भगवान तो वासना को भूखो है ।
भगवान् तो भाव के भूखे हैं ।
रू० देवता तो वासना को भूखो है ।

२५१७. भगवान देवै जद छप्पर फाड़ कर देवै ।
ईश्वर देना चाहे तो छप्पर फाड़ के दे देता है । जब कहीं से भी प्राप्ति की आशा न हो तो ईश्वर चाहे जिस रूप में दे देता है ।

सन्दर्भ कथा—एक निर्धन ब्राह्मण को भगवान् का बड़ा भरोसा था । ब्राह्मणी जब भी उससे कमा कर लाने को कहती, वह यही उत्तर देता कि भगवान् को देना होगा तो वह छप्पर फाड़ कर ही दे देगा । एक दिन जब वह किसी गाँव जा रहा था तो रास्ते में एक पीपल के वृक्ष के नीचे ठहरा । वहाँ उसे कोई चमकती हुई वस्तु दिखलाई पड़ी तो उसने उस स्थान को खोदा । खोदने पर हीरे-मोतियों से भरा एक कलश निकला । लेकिन ब्राह्मण ने कलश को वहीं गाड़ दिया और अपने घर आ गया । रात को जब उसने ब्राह्मणी को यह घटना सुनाई तो ब्राह्मणी ने कहा कि आप को वह कलश ले आना चाहिए था । ब्राह्मण ने उत्तर दिया कि भगवान् को देना होगा तो वह छप्पर फाड़ कर ही दे देगा ।

ब्राह्मण के झोंपड़े के बाहर खड़े चोरों ने यह संवाद सुना तो वे तत्काल ही उस पीपल के नीचे पहुँचे। लेकिन कलश में तो सांप और बिच्छू भरे थे। ब्राह्मण की दुष्टता पर उन्हें बड़ा क्रोध आया और उन्होंने यह निश्चय किया कि उस दुष्ट ब्राह्मण को छप्पर फाड़ कर ही यह धन देना चाहिए। वे कलश को उठा लाये और उन्होंने ब्राह्मण का छप्पर ऊपर से फाड़ कर कलश को औंधा दिया। लेकिन कलश को औंधाते ही सारे सांप बिच्छू हीरे-मोतियों में बदल गये।

२५१८. भगवान सब चोखी करै।

ईश्वर जो करता है, अच्छा ही करता है।

२५१९. भगवान सैं बडो भगत।

भक्त तो भगवान् से भी बड़ा होता है।

२५२०. भठियारी घर सैं कींका पलोयण लगादे ?

भठियारी अपने घर से पलोथन नहीं लगाती।

पलोयण = फुलका बेलते समय उसके साथ लगाया जाने वाला सूका आटा।

२५२१. भणियों बूझै है 'क दायमों ?

पढा हुआ पूछते हो या दाहिमा ?

दाहिमा ब्राह्मण अनपढ होने पर भी हुनरमन्द माना जाता है, इसलिए उसकी पढाई के बारे में पूछना बे-मानी है।

पद्य भली करी रै दायमा, अण पढिया ई भट्ट।
मरतो-मरतो मारग्यो, दिरा पेट में लट्ट॥

२५२२. भदरा जें कै लागसी, जें कै रिध-सिध।

भद्रा वहीं लगती है, जहाँ ऋद्धि-सिद्धि का निवास हो।

संपन्न व्यक्ति से ही किसी न किसी बहाने कुछ ऐंठा जाता है।

२५२३. भरम बण्यो रंवै इत्तै ई ठीक है।

जब तक भ्रम बना रहे, तभी तक अच्छा है, भ्रम खुल जाने के बाद कुछ भी नहीं।

रू० भरम की रोटी है।

इस आशय की एक कथा है कि एक सेठ बूढा हो गया तो पुत्र-वधुओं ने उसकी सर्वथा उपेक्षा करदी, क्योंकि उन्हें यह विश्वास हो गया कि श्वसुर के पास अब कुछ भी नहीं है। लेकिन सेठ के कानों में सोने की 'मुरकी' (एक आभूषण) थी। उसने मुरकी निकाल कर चुपचाप तांबे के पैसे खरीदे और उन पर सोने का झोल' (मुलम्मा) फिरवा कर उन्हें अपने पास रखने लगा। जब पुत्र-वधुओं को इस बात का सुराग लगा कि ससुरजी के पास सोने की मोहरें हैं तो श्वसुर की सेवा करने के लिए उनमें होड़ लग गई।

२५२४. भरी जवानी पीसो पल्लै, राम चलायां सीधो चल्लै ।

भरपूर जवानी हो और पास में प्रचुर पैसा हो तो ईश्वर की मर्जी से ही वह सीधी राह चल सकता है अन्यथा कुमार्ग में भटक जाता है ।

रू० धन जोवन अर ठाकरी, तिण ऊपर अविवेक ।
अै च्यारूं भेळा हुयां, अनरथ करै अनेक ।।

२५२५. भरोसै की भैंस पाडो ल्याई ।

पूरे भरोसे वाली भैंस ने भी 'पाडी' के स्थान पर 'पाडा' जन दिया ।
जिस काम से विशेष लाभ की आशा हो, लेकिन वैसा लाभ न हो ।

रू० भली करी रै वोयता, घोड़ी पाडो ल्याई ।

२५२६. भलो करतां बुरो होवै ।

ऐसा जमाना आ गया है कि भला करने पर भी परिणाम बुरा ही होता है ।

रू० होम करतां हाथ वळै ।

२५२७. भांग मांगै भूगड़ा, सुलफो मांगै घी ।
दारू मांगै खूंसड़ा, खुसी आवै तो पी ।।

भांग भुने चने और सुलफा घी मांगता है । लेकिन शराब पीने वाले को तो जूते ही लगते हैं ।
ठेके से अनाप-शनाप शराब पी कर निकलने वाले लोग प्राय: गलियों में झखते-बकते हैं, जिससे उनको जूते लग जाते हैं ।

२५२८. भांडां की भैंस सोटां सैं पावसै ।

भांडों की भैंस लट्ठ पड़ने पर ही दूध देने को तत्पर होती है ।

२५२९. भाई को भाई वैरी ।

भाई का भाई ही दुश्मन ।
इस संदर्भ के अनगिनत उदाहरण उपलब्ध हैं—वाली-सुग्रीव, रावण-विभीषण, कौरव-पाण्डव आदि ।

रू० भाई जित्ती खाई, वाकी की छींकै टांग दी ।

२५३०. भाई जित्तै मायरो, मा जित्तै पी'र ।

जब तक मां जीवित रहती है, तभी तक बेटी का पीहर में विशेष आवागमन और आदर रहता है और जब तक भाई रहते हैं तभी तक 'मायरा' आता है ।
मायरा = बहिन के पुत्र या पुत्री के विवाह पर पीहर की ओर से दी जाने वाली धनराशि, आभूषण एवं वस्त्र आदि ।

२५३१. भाई बराबर वैर नईं, भाई बराबर सैण नईं ।

भाई के बराबर वैरी नहीं और भाई के बराबर सुहृद नहीं ।

२५३२. भाई बेटी तो ब्यावै कोनी ग्रौर बयुई बाकी छोड़ै कोनी।
भाई अपने भाई की बेटी तो व्याहता नहीं एवं परस्पर विरोध होने पर उसका बुरा करने में अन्य कोई कसर छोड़ता नहीं।

२५३३. भाई पूरा, लेखा पूरा।
पूरा-पूरा हिसाब हो गया। कोई लाभ-हानि या घटत-बढ़त नहीं।

२५३४. भाखड़ी कै कांटै को ग्रागड़ी ताईं जोर।
भाखड़ी = गोखरू की जाति का एक क्षुप। इसमें कांटेदार छोटे फल लगते हैं। ऊंट इन्हें बड़े चाव से खाते हैं एवं दवा में भी इनका उपयोग होता है। भाखड़ी का कांटा अधिक लम्बा नहीं होता, इसलिए शरीर में ज्यादा गहरा नहीं पैठ सकता।
क्षुद्र आदमी रुष्ट होने पर भी विशेष क्षति नहीं पहुँचा सकता।

२५३५ भागतै भूत की लंगोटी ई चोखी।
भागते भूत की लंगोटी हाथ लग जाए तो वह भी नफे में।
डूबती हुई रकम में से जो प्राप्त हो जाए, वही लाभ।
रू० भागतै भूत का झूंटा ई चोखा।

२५३६ भागलपर जाइये ना, जाइये तो कुछ लाइये ना, लाइये तो रोइये ना।
भागलपुरी चीजें चलने मे अच्छी नही मानी जाती थीं।

२५३७ भागवान को टाबर भूगड़ा चावै तो ई कैवै 'क मोळा ो चावै, पण गरीब को चावै तो कह दे 'क भूख मरतो चावै है।
मालदार का लड़का भुने हुए चने चबाता है तो लोग यही कहते हैं कि यह शौकिया चबा रहा है, लेकिन गरीब का लड़का चबाता है तो कहते हैं कि यह भूखों मरता चबा रहा है।

२५३८. भागवान को पाड़ोसी नारकी में जा।
मालदार का पड़ोसी नरक में जाता है·

२५३९ भागां का बळिया, रांधी खीर ग्रर होग्या दळिया।
जब भाग्य साथ नहीं दे तो खीर का दलिया हो जाता है।
भाग्य के विपरीत होने पर भूने हुए तीतर भी उड़ जाते हैं।

२५४०. भाग्यां पीछै बावड़ै, जीं नै ईं स्यावास।
युद्ध से एक बार विमुख होकर भी जो पुनः युद्धार्थ लौट पड़ता है, उसे भी शाबाशी देनी चाहिए।

२५४१. भाठै सैं भाठो भिड़ै जद बासते ई ऊपड़ै।
पत्थर से पत्थर टकराता है तो आग की चिनगारियां ही निकलती हैं।
जब दो समान पराक्रमी भिड़ते हैं तो मुकाबिला बड़ा सख्त होता है।

२५४२. भादवो गाज्यो, काळ भाज्यो ।

भादों में वर्षा होने पर अकाल भाग जाता है ।

२५४३. भाभी लीपती जा, कोडो खेलतो जा ।

आगे-आगे भाभी घर के आंगन को लीपती जाती है एवं पीछे-पीछे 'कोडा' (छोटे देवर का नाम) खेलता चलता है, जिससे सारी लिपाई खराब होती जाती है ।

जब एक आदमी किसी काम को करे और दूसरा उसे बिगाड़ता चले ।

२५४४. भायां बिन गाहड़ किसो, पूत बिनां परवार ।

भाइयों के बिना शक्ति कैसी ? पुत्रों के बिना परिवार कैसा ?

भाई को मनुष्य की भुजा कहा गया है ।

२५४५. भायां भेळै मरबो भलो, जाणै चढ्या जनेत ।

किसी कठिन काम में भाइयों का साथ देकर मरना भी बरात चढने के बराबर उल्लास-जनक होता है ।

२५४६. भाया तेरो बलाय ल्यूं, 'क भाये कै बलाय आय ई कोनी, लेसी के ?

बहिन ने भाई से कहा कि भैया तेरी बला लूं । इस पर भाई बोला—भाई के बला है ही नहीं, लोगी क्या ?

२५४७. भाये को मन बिजोलिये कनै ई लागै ।

भैया का मन बिजोलिया के पास ही लगता है, क्योंकि उसे चबाने के लिए बीज मिल जाता है ।

बिजोलिया = हल जोतते समय बीज भर कर रखने का थैला ।

२५४८. भाव में भाई के करै ?

बाजार-भाव जो होगा सो होगा, उसमें भाई क्या रियायत करे ?

रू० भाव अर न्याव पर कोई को जोर कोनी चालै ।

२५४९. भावी टळै कोनी ।

होनहार टलती नहीं ।

इस संदर्भ की अनेक लोक कथाएँ प्रचलित हैं ।

२५५०. भोंडळी गाय सदां ई बैडकी कुहावै ।

ओछे कद एवं छोटे सींगों वाली गाय बड़ी होने पर भी तरुण ही लगती है ।

रू० मोडी'गा सदां ई बैडकी कुहावै ।

२५५१. भींत सारू मांडणा ।

दीवार के अनुरूप ही चित्र बनते हैं ।

रू० भींत गैल चींत, पोत सारू रंग ।

२५५२. भींत जा आळै सें, घर जा साळै सें।
दीवार आलों से कमजोर हो जाती है और घर सालों से।
भाई की अपेक्षा साला अधिक प्रिय लगता है—
गुड सें तो गंडेरी प्यारी, घी में प्यारो राळो।
भाई में भतीजो प्यारो, मैं सें प्यारो साळो॥
२५५३. भीज्या कान, होया असनांन।
कान भीग गये तो स्नान पूरा हो गया।
मरु भूमि में पानी का अभाव रहता है, अतः सिर पर डाला हुआ पानी कानो तक आ जाए तो स्नान पूरा हुआ मान लिया जाता है।
२५५४ भील कै के ढील?
भील के यहाँ विलम्ब किस बात का?
२५५५. भील भंगी भगतण भोपा, देतां लेतां बाजै बोझा।
इनके साथ लेन-देन करने में बखेड़ा ही रहता है।
२५५६. भुआं बिना किसो आंगणों।
बहुओं के बिना घर का आंगन शोभायमान नहीं होता।
तु० मेहा मंडण बीजळी, सरवर मडण पाळ।
बाप जो मडण डीकरो, घर की मंडण नार॥
२५५७. भुआं हाथां चोर मरावै, चोर भऊ का भाई।
बहुओं के हाथों चोर मरवाये और चोर बहू के भाई।
जब चोर और पहरेदारों की मिली-भगत हो।
२५५८. मूंडी रांड मूण सो मायो, फर-फर फिरै बबूरी।
मुरड़ाटै माणस बण बैठी, राम घड़ै थो नूरी।
निपट भौंडी और बेशऊर स्त्री के लिए प्रयुक्त।
२५५९. भू आई सासु हरखी, पगां लागी अर परखी।
नव-वधू घर में आई तो सास आनंदित हुई, लेकिन बहू ने जैसे ही सास के पैर छूये, सास जान गई कि बहू कैसी है।
२५६०. भू कै पेट में बेटो तो है, पण होसी म्हां मरयां।
बहू के गर्भ में बेटा तो है, लेकिन जन्मेगा हमारे मरने पर।
लाभ तो होगा, लेकिन हमारे जीते जी नहीं।
२५६१. भूख बुरी है ठाकरां, कँवर करेला खाय।
भूख बड़ी बुरी होती है, इसमें न खाने योग्य चीजें भी मजबूरन खाई जाती हैं। संवत् १९५६ के अकाल में लोग खेजड़े की छाल भी खा गये थे।
२५६२. भूख मिट्यां पीछै पकवान?
भूख मिट जाने के बाद पकवान भी अच्छा नहीं लगता।

२५६३ भूखें को आडी आज्या, भूठें की कोनी आवै ।
भूखे की कभी न कभी भगवान् सुन लेता है और वह संपन्न बन जाता है, लेकिन झूठा नहीं फलता ।

२५६४ भूखो तो थाळी में घाल्यां ई पतीजै ।
भूखे की थाली में जब भोजन परोस दिया जाता है, तभी उसे इतमीनान होता है, आश्वासनों से नहीं ।

२५६५. भूखो पूछै जोतसी, धायो पूछै वैद ।
निर्धन तो ज्योतिषी से पूछता रहता है कि उसके दिनमान कब फिरेंगे और सम्पन्न व्यक्ति वैद्य से पूछता रहता है कि हाजमा या पुष्टि के लिए उसे क्या लेना चाहिए ?

२५६६ भूखो बामण सोवै, भूखो जाट रोवै ।
भूखो बाणियों हँसै, भूखो रांगड़ कसै ।।
भूखा ब्राह्मण (न्योते की प्रतीक्षा में) सोता है, भूखा होने पर जाट रोने लगता है, भूखा बनियाँ हँसता है और भूखा राजपूत लूट-पाट के लिए कमर कसता है ।

२५६७. भू ! घर-बार तेरो ई है, पण ढक्यो ढूम्यो राखी, कोई चीज कै हाथ मतना लगाई ।
बहू ! घर-बार सब तुम्हारा ही है, लेकिन किसी चीज को हाथ न लगाना । नाम-मात्र का अधिकार ।

२५६८. भूत मरै, पलीत जागै ।
भूत मरता है और प्रेत चैतन्य हो जाता है ।

२५६९. भूतां कै लाडुवां में अळायची को सुआद ?
भूतों के लड्डुओं में इलायची का स्वाद ढूंढना दुराशा मात्र है ।

२५७०. भू परोस्या खावैगा, बिन मारयां मर ज्यावैगा ।
पुत्र वधू अपने श्वसुर को बिना मन से और सामान्य खाना परोसती है, अतः कुपोषण के कारण श्वसुर जल्दी ही मर जाता है ।

२५७१. भूल कमाई में कोनी गिणी जावै ।
भूल तो लेनी-देनी होती है । भूल का पैसा कमाई में नहीं गिना जाता ।

२५७२. भूल को टक्को भूल में गयो ।
भूल का टका भूल में चला गया ।

२५७३. भूल गया राग रंग, भूल गया जकड़ी ।
तीन चीज याद रैई, तेल लूण लकड़ी ।।
तेल नोन और लकड़ी की चिंता में मनुष्य सारे राग-रंग भूल जाता है ।

२५७४ भूवा मिस लेवै तो भतीजां मिस देवै ।
बूआ के मिस लेती है तो भतीजों के मिस देना भी पड़ता है ।

२५७५ भेख की खोटी नईं कणी ।
भेष की निंदा नही करनी चाहिए ।

२५७६. भेड़ पर लाणी कुण छोडै ?
भेड़ पर ऊन कौन छोड़ता है ?

२५७७ भेड़ सुपारी सार के जाणै ?
भेड़ के लिए सुपारी का क्या उपयोग ?

२५७८. भेभळ राणी चोरटी, रात्यूं सिट्टा मोरती ।
भेभल रातों-रात खेत को बड़ा नुकसान पहुँचा देती है ।
भेभल = कृषि को क्षति पहुँचाने वाला पंख-युक्त एक छोटा कीट ।

२५७९. भेळै भांडा खुड़कै ई ।
साथ-साथ रहने वालों मे कभी कहा-सुनी भी हो जाती है ।

२५८० भैंस काळी होवै, पण दूध तो धोळो ई होवै ।
भैंस का रंग भले ही काला हो, लेकिन उसका दूध तो सफेद ही होता है ।
रंग की अपेक्षा गुण को देखना चाहिए ।

२५८१. भैंस की कमाई, भैंस में चली जा ।
भैंस की कमाई भैंस पर ही लग जाती है ।

२५८२. भैंस कै आगै बीण बजाई, गोबर को इनाम ।
गुण-ग्राहक ही गुण की कद्र कर सकता है ।
रू० भैंस पदमणी नैं हार पैं'रा दियो, के जाणैं वा नौसर हारैं नैं ?

२५८३. भैंस कै मूं'डै में तूंबो खटाज्या, बकरी कै मूं में कद खटावै ?
भैंस के मुँह मे ही तूम्बा खटा सकता है, बकरी के मुँह में नहीं ।

२५८४. भैंस को पोटो सूकतो सो सूकै ।
भैंस का 'पोटा' सूकते सूकते ही सूकता है ।
संपन्न घराने की संपत्ति छीजते-छीजते भी काफी समय निकाल देती है ।

२५८५ भैंस को मूत, भैंस ई पीज्या ।
भैंस का मूत्र भैंस ही पी जाती है ।
पोखरी आदि पर जहाँ भैंस पानी पीती है, वहीं मूत्र-त्याग भी करती है, वह मूत्र पानी में मिल जाता है और उसे भैंस ही पी जाती है ।

२५८६. भैंस को सींग लपोदर नांव ।

२५८७ भैंस तो भलाईं पाडी लियावो, पण भू कै बेटो होणो चायै ।
भैंस तो भले पाडी ही जने, लेकिन बहू के बेटा होना चाहिए ।
दोनो तरफ स्वार्थ-पूर्ति ।
भैंस के नर बच्चे अर्थात् पाडे की अपेक्षा पाडी की कीमत अधिक होती है ।

२५८८. भैंस भिराड़ी 'मा में ब्याई, घणी छोड़ धिराणी नै खाई।
माघ के महीने में भैंस का ब्याना मालकिन के लिए घातक होता है।

२५८९. भैंस रांड आपको रंग तो कोनी देखै अर छत्तै नै देख कर बिदकै।
भैंस अपना रंग तो नहीं देखती और छाते को देख कर चौंकती है।

२५९०. भैंस सगै कै खेत सार के जाणै ?
भैंस क्या जाने कि यह खेत उसके मालिक के समधी का है।

२५९१. भैंसो मार कर वेसवारां ताईं क्यूं खोवै ?
भैंसे को मार कर मसाले की कमी क्यों रखी जाए ?
जब किसी काम के लिए प्रचुर धन-राशि व्यय करदी तो छोटी-मोटी राशि के लिए उसे क्यों बिगाड़ा जाए ?

२५९२. भै कोनी मारै, भैसाण मारै।
भय की अपेक्षा भय का हौआ अधिक मारता है।

२५९३. भै विना प्रीत कोनी।
भय बिनु होइ न प्रीति।

२५९४. भोपी सें काम 'क मंड ढा'णो ?
भोपी से प्रयोजन है या मंढ ढहाने से ?

२५९५. भोळै ढाळै को राम रुखाळो।
भोले का रक्षक भगवान् है।

२५९६. भोळै बामणं भेड़ खाई, औरूं खाऊं तो राम दुहाई।
भोले ब्राह्मणं ने भूल से भेड़ खाली, यदि वह फिर खाये तो उसे राम दुहाई है।
भूल से किसी हानिप्रद काम को कर लेने पर पश्चाताप प्रकट करना कि फिर कभी यह काम न करूंगा।

२५९७. भोळो बाछड़ियो दूध पीवै, स्याणो चावै डोका।
जब तक बछड़ा नादान और छोटा रहता है, तब तक तो उसे उसकी माँ का दूध पिलाया जाता है, लेकिन बड़ा और सयाना होने पर उसे कड़बी (ज्वार-बाजरे के सूखे डण्ठल) डाली जाती है।

२५९८. भोळो सज्जन वैरी की गरज पाळै।
नादान दोस्त शत्रु के तुल्य होता है। वह अपनी नादानी से वैरी की तरह हानि पहुँचा देता है।
रू० मूरख मिंतर सो वैरयां की गरज सारै।

२५९९. मंगतै को अर मांगतोड़ै को उतावळ को बैर है।
भिखारी को भिक्षा के लिए जल्दी नहीं मचानी चाहिए एवं ऋणदाता को ऋण की वसूली में धैर्य से काम लेना चाहिए।

संदर्भ कथा—एक सेठ का किसी किसान पर ऋण था। उसने ऋण की वसूली के लिए अपने आदमियों को कई बार उसके गाँव भेजा, लेकिन किसान उन्हें टरका दिया करता। वह उनके खाने-पीने की व्यवस्था भी समय पर नहीं करता, अतः वे लोग तंग आकर खाली हाथ लौट आते। तब सेठ ने अपने बड़े मुनीम को भेजा और मुनीम ने किसान के घर जाकर डेरे डाल दिये। खाने का समय हुआ तो किसान की औरत ने मुनीम को सुना कर कहा—'तप रे तवा तीन दिन'। लेकिन उसकी बात सुनकर मुनीम जरा भी विचलित नहीं हुआ। उसने किसान की औरत को सुना कर कहा—'आये नींद नौ दिन', और वह खूंटी तान कर सो गया। अब तो वह बहुत चकराई और उसने अपने पति से कहा कि यह तो रुपये लेकर ही जाएगा, इसे रुपये देकर विदा करो, नहीं तो इसे खिलाने-पिलाने का खरच और लगेगा। तब किसान ने ब्याज सहित रुपये देकर मुनीम से फारखती लिखवाली।

२६००. **मंगळ महयो रवि तुरी, वुद्ध बैल सनि ऊंट।**
अजा शुक्र नहीं खींचिये, इतणा करै अपूठ॥
मंगलवार को भैंस, रवि को घोड़ी, बुध को बैल, शनि को ऊँट एवं शुक्रवार को बकरी खरीद कर लाना अशुभ एवं हानिकर होता है।

२६०१. **मंतर मैं पढ़ूं, बिल में हाथ तूं दे।**
मंत्र मैं पढ़ता हूँ, साँप के बिल में हाथ तुम डालो।
अपने को सुरक्षित रख कर दूसरे को खतरे के काम में डालना।

२६०२. **मंदी भैंस की पूंछ उठा-उठा कर देखै।**
यदि कोई अधिक सस्ते मूल्य पर अपनी भैंस को बेचे तो ग्राहक को शंका हो जाती है कि अवश्य ही इसमें कोई न कोई खोट है।

२६०३. **मकोड़ो बोल्यो 'क मा मैं गुड़ की भेली उठा ल्याऊं?**
'क बेटा तेरी कड़तू कानी तो देख।
मकोड़े ने अपनी माँ से पूछा कि माँ, क्या मैं गुड़ की भेली उठा लाऊँ? माँ ने उत्तर दिया कि तू पहले अपनी कमर की ओर तो देख।
जब कोई बूते से बाहर काम कर डालने की डींग हांके।

२६०४. **मघा 'मे बरसावियां, धान घणेरो होय।**
मघा नक्षत्र में वर्षा होने से अन्न खूब पैदा होता है।
रू० (१) जे बरसै मघा तो करै धान का ढिगा।
(२) मघा को बरसणो अर मा को पुरसणो बराबर।
(३) मघा चूकियां पड़सी काळ।

२६०५. **मजूरी में के हजूरी?**
मजदूरी करने के बाद जी हुजूरी की क्या आवश्यकता?

२६०६. मण घी देणो कर राख्यो है ।

संदर्भ कथा—ठाकुर के घर में घाटा था, फिर भी वह घोड़ी रखता था। लेकिन घोड़ी बहुत दुबली थी, क्योंकि उसे खाने को भर-पेट घास भी नहीं मिलती थी। एक दिन ठाकुर के यहाँ कोई मेहमान आया तो उसने घोड़ी को देखकर ठाकुर से कहा कि घोड़ी तो बहुत दुबली हो रही है। इस पर ठाकुर ने उत्तर दिया कि हमने तो घोड़ी को मन भर घी देने का आश्वासन दे रखा है, तिस पर भी यह दुबली रहे तो क्या उपाय ?

कोरे आश्वासन से पेट नहीं भरता।

२६०७. मत मरियो बूढ़े की जोय, मत मरियो बाळक की माय ।

बूढ़े की स्त्री और बालक की माँ न मरे।

वृद्धावस्था में पत्नी ही पति की समुचित देख-भाल करती है।

२६०८. मद कुमाऊ कुमावै कोनी तो घर तो आवै ?

अनकमाऊ कुछ न भी कमाये तो भी घर तो आये !

रू० मद कमाऊ सदांई दूसरां कै आधीन रेवै ।

२६०९. मन उमराव, करम दाळदी ।

मन तो महत्त्वाकांक्षी, लेकिन भाग्य दुर्बल ।

रू० मन तो राजा को सो अर करम कमेड़ी को सो ।

२६१०. मन का लाडू फीका क्यूं ?

मन के लड्डू फीके क्यों ?

रू० मन का लाडू फीका क्यूं ? फीका क्यूं तो कमती क्यूं ?

२६११. मन कै पाळ कोनी ।

मन के पाल (मेड़) नहीं होती। वह सदा और अधिक के लिए ललचाता रहता है।

रू० मन कै धाप कोनी ।

२६१२. मन कै हारे हार है, मन कै जीते जीत ।

यदि मनुष्य हार मानकर बैठ जाता है तो कुछ भी नहीं कर सकता, लेकिन यदि दृढ़ निश्चय से काम में जुट जाता है तो सफलता प्राप्त कर लेता है।

२६१३. मन भावै, मूंड हलावै ।

आन्तरिक इच्छा तो है, लेकिन दिखावे के लिए सिर हिला कर ना करता है।

२६१४. मन मिले का मेळा ।

मन मिले, तभी मिलना सार्थक है।

रू० मन मिले का मेळा, चित मिले का चेला ।

२६१५. मन्नै घड़गो, जिको बाड़ में ईं बड़गो ।

जो अपने बराबर किसी को न समझे।

२६१६. **मरज्याणा कबूल है, पण जौ का दळिया नईं खाणा ।**
मर जाना कबूल है, लेकिन जौ का दलिया खाना मंजूर नहीं ।
रू० भूखा सो ज्याणा, पण जौ का दळिया नईं खाणा ।

२६१७ **मरण नै मरग्यो, पण मन हथलेवै में ईं रैयो ।**
मरने के बाद भी मन हथलेवे में ही रहा ।
संदर्भ कथा विवाह की प्रबल इच्छा होने के बावजूद भी एक ठाकुर का विवाह नहीं हो सका और वह कुँआरा ही मर गया । मरने के बाद जब उसे पिण्ड देने लगे और पिंड देने वाले ने जब कहा कि पिंड लो, तब सहसा ठाकुर को कुछ क्षणों के लिए होश आया और उसने उत्सुकता से पूछा— क्या हथलेवा ?
इसी प्रकार किसी कुँआरे ठाकुर को गयाजी में पिंड देने के सम्बन्ध की भी लगभग ऐसी ही बात कही जाती है ।

२६१८. **मरणियें कै गैल कोनी मरयो जा ।**
मरने वाले के पीछे मरा नहीं जाता ।

२६ ९. **मरणियें नै मारणियों कोई कोनी ।**
जो मरने का हौसला रखता है, उसे मारने वाला कोई नहीं ।

२६२० **मरणै कै दुख रोटी खावै ।**
अत्यन्त आलसी आदमी, जो रोटी खाने का श्रम भी इस भय से करता है कि रोटी न खायेगा तो मर जाएगा ।

२६२१. **मरणो है जिको ज्यान सैं जाणो है ।**
मरना कोई हँसी-खेल नहीं, जहान से जाना है ।

२६२२. **मरतां का के गाडा जुपै है ?**
मरते क्या देर लगती है ?
रू० मरतां की के नोबत घुरै है ?

२६२३. **मरद तो मूंछ्याळ बंको, नैण बंकी गोरियां ।**
सुरहळ तो सींगाळ बंकी, पोड़ बंकी घोड़ियां ।
किसी ने कहा कि बल खाती मूँछों वाला मरद, बांके नेत्रों वाली युवती, सुन्दर सींगों वाली गाय और सुन्दर सुम वाली घोड़ी ही सराहनीय है ।
इस पर दूसरे ने उसकी बात का प्रतिवाद करते हुये कहा कि नहीं— वचन पर दृढ़ रहने वाला मरद, उत्तम कोख वाली नारी, दूध देने वाली गाय एवं तेज चाल वाली घोड़ी ही वास्तव में सराहनीय है—
मरद तो जबान बंको, कूख बंकी गोरियां ।
सुरहल तो दूधार बंकी, तेज बंकी घोड़ियां ।।

२६२४. मरद नै खोवै खटाई, लुगाई नै खोवै मिठाई ।
मरद को खटाई खोती है एवं औरत को मिठाई ।

२६२५. मर पड़ कर तो खसम करयो अर वो ई हींजड़ो नीसरयायो ।
बड़ी मुश्किल से तो खसम किया और वह भी हिजड़ा निकला ।

२६२६. मरसी 'लो कै पींजरै, ऊवरसी चोड़ै ।
मृत्यु आने पर कोई लोहे के मजबूत पिंजड़े में भी नहीं बच सकता और मृत्यु न आये तो खुले में भी कोई डर नहीं ।

संदर्भ कथा—राज-ज्योतिषी को उदास देखकर राजा ने उससे उदासी का कारण पूछा तो ज्योतिषी ने कहा कि मेरे लड़के का विवाह है और इसके भाग्य में ऐसा लिखा है कि इसे तीसरे फेरे में ही एक सिंह उठाकर ले जाएगा । राजा ने कहा कि मैं ऐसा कदापि नहीं होने दूंगा ।

राजा ने लोहे का एक बड़ा और मजबूत पिंजड़ा बनवाया । फेरे होने के समय वर-वधू, आदि के अतिरिक्त स्वयं राजा भी तलवार लेकर पिंजड़े के अन्दर बैठ गया । पिंजड़े के चारों ओर सख्त पहरा बिठला दिया गया और फेरे होने लगे । तीसरा फेरा शुरू होते ही राजा की तलवार की मूठ पर अंकित शेर जीवित हो गया, उसने वर को अपने जबड़ों में कस कर पकड़ लिया, पिंजड़े का द्वार अपने आप खुल गया और शेर उसे ले भागा । किसी से कुछ करते-धरते न बना । इसी लिए कहा है—

मरसी 'लो कै पींजरै, ऊवरसी चोड़ै ।
करणा होसी राम का, चित यूं हीं दोड़ै ।

२६२७. मरी क्यूं ? 'क सांस कोनी आयो ।
मरी कैसे ? संक्षिप्त उत्तर मिला—सांस न आने से ।

२६२८. मरी तो आथ ई कोनी अर भूतणी भी होगी ।
मरने से पहले की भूतनी भी बन गई ?

२६२९. मरे पूत कीं आंख्यां बडी-बडी होज्या ।
मरने के बाद मनुष्य की विशेषताओं को बढा-चढा कर बताया जाता है ।
रू० मरे पूत की आंख्यां कटोरा सी बतावै, होवो मांवैं पानी की चीर जिसी ई ।

२६३०. मरै जिको तो बोली सें ईं मरज्या, नईं गोळी सें ई कोनी मरै ।
लज्जाशील व्यक्ति का तो अपमान-जनक शब्द से ही मरण हो जाता है, लेकिन निर्लज्ज तो गोली से भी नहीं मरता ।

२६३१ मरै न खाट खाली करै ।
न मरे, न खाट खाली करे ।

जब कोई बीमार लम्बे समय तक खाट में पड़े रहने पर भी न मरे एवं घर वाले उसकी परिचर्या करते-करते तंग आजाएं।

२६३२. **मरै है, पण मलार गावै है।**

मरता है, फिर भी राग-रंग सूझता है।

२६३३. **मरो दूसरा, सुरग में मैं जायाऊं।**

मरे कोई और एवं स्वर्ग में मैं चला जाऊं।

मेहनत और कोई करे एवं उसका लाभ मुझे मिल जाए।

२६३४. **मरो मा, जीवो मांवसी; घी घालै न गोडा चालै।**

अपने स्वार्थ के कारण आदमी माँ की अपेक्षा भी मौसी को अधिक महत्व देता है।

२६३५. **मरयां पीछै बावै की गांड में घी लगा बोकरो।**

उपचार तो पहले ही हो सकता है, मरने के बाद चाहे कुछ भी करते रहो, सब व्यर्थ।

२६३६. **मरयो ऊंट घिसाई मांगै।**

मरे ऊंट की घिसवाई और देनी होती है।

रू० (१) गयो धन बोळाई मांगै।

(२) मुरदै नै कफन और देणो पड़ै।

२६३७. **मरयोड़ै पर एक कस्सी गेरो, चाये सौ कस्सी गेरो।**

निंद्य कर्म करने वाले को चाहे एक बार अपमानित करें, चाहे सौ बार।

२६३८ **मांग-तांग कर खीरो ल्याई, नांव धरयो बसंदर!**

मांग कर तो खीरी (जलता हुआ छोटा कोयला) लाई और नाम रखा है वैश्वानर?

रू० मांग तांग कर छा ल्याई अर सुरजी नै छांटो!

२६३६ **मांग-तांग कर मटको, करयो, खोस लियो मन फीको करयो।**

मांगी हुई चीज पर ऐंठ कब तक चले?

रू० पराई रकम को के निवाच?

२६४०. **मांगणियें कै सो घर लटै, कोई घालै कोई नटै।**

भिक्षुक तो पूरे गाँव में भिक्षा मांगता है, कोई देता है, कोई नहीं देता।

रू० मांगणियें कै सो घर लटै, कोई घालै कोई नटै।

कोई न दे तो जावै कठै, सगळा ई दे तो धरै कठै॥

२६४१. **मांगै कुण था, लैर पड़-पड़ कर घालै था।**

मांगता कौन था, लोग पीछे पड़ कर डालते थे।

सन्दर्भ कथा—एक वार अकाल पड़ा तो मियांजी के खेत में अन्न का एक दाना भी नहीं हुआ। उन्होंने एक फकीर को मांगते देखकर सोचा कि

यह काम अच्छा है। उन्होंने भी मांगना शुरू कर दिया, लेकिन वे मांगते समय अपने हाथ पीछे की ओर रखते थे। अगले वर्ष जमाना हुआ और मियांजी के खेत में भी खूब अच्छी फसल हुई। एक रोज मियांजी मलार गाते हुए अपने खेत से आ रहे थे कि एक लड़की ने उन्हें पहचान कर अपनी माँ से कहा—यह वही आदमी है जो पिछले वर्ष हमारे यहां रोटी मांगने आया करता था। मियांजी को लड़की की बात सुनाई पड़ गई तो तैश में आकर बोले—मांगता कौन था? लोग पीछे पड़ कर स्वयं ही देते थे।

२६४२. **मांग्या मिलै रै माल, जां कै काईं कमी रै लाल ?**
जिसे मांगने से ही मिल जाए, उसे किसी बात की कमी क्यों रहे ?
रू० मूंड मुंडायां ईं सरज्या, जिको क्यूं कुमावै ?

२६४३. **मांज्या थाळ, उतरचा वार।**
दोपहर के भोजन के बाद थालियां मांज लेने पर वह वार (दिन) पूरा हुआ मान लिया जाता है।

२६४४. **मांयला घाव कै बीबी जाणै, कै राव।**
आन्तरिक पीड़ा को या तो पति जाने या पत्नी।

२६४५. **मांवसी कै मूंछ होती तो बींनै ईं मामो कैवता।**
मौसी के मौछें होतीं तो उसे भी मामा कहते।

२६४६. **मांवसी राम-राम, 'क आ बेटा खाल्यूं।**
राम राम करते ही हजम कर जाने को तत्पर।

२६४७. **मा ई बात कोनी मानै, जद मांवसी कद मानै ?**
जब माँ ही बात न माने तब मौसी भला कब माने ?

२६४८. **मा ई मारै, मा ई बुचकारै।**
मां मारती है तो वही पुचकारती भी है।

२६४९. **मा का सराया पूत कोनी सराया जा।**
मां के सराहने से ही पुत्र सराहनीय नहीं हो जाता, जब दूसरे लोग उसकी सराहना करें तभी वह प्रशंसनीय है।

२६५०. **'मा की मोळ, जेठ की तेजी।**
माघ की मंदी और जेठ की तेजी अच्छी समझी जाती है।

२६५१. **माता जाया सात पूत, करम दिया बांट-चूंट।**
मां ने सात बेटे जने, लेकिन सब के भाग्य अलग-अलग।

२६५२. **मान बड़ा 'क दान ?**
दान की अपेक्षा सम्मान बड़ा है।

२६५३. मा न मा को जायो, सो ई देस परायो ।
जहां सभी अपरिचित हों ।

२६५४. मान रै पांच्या पांचां की, नईं मानूं पचासां की ।
पांच आदमी जो कहें उसे मान लेना चाहिए ।
उत्तर मिला—तुम पांच की कहते हो, मैं पचास की भी नहीं मानता ।
दुराग्रही मनुष्य किसी का कहना नहीं मानता ।

२६५५. मानै तो देव, नईं भींत को लेव ।
भावना हो तो मिट्टी की मूर्ति में भी देवता का निवास है, नहीं तो देव मूर्ति भी निरी मिट्टी या पत्थर ही है ।

२६५६ मानै नी तानै नी, मैं लाडै को भूवा ।
मान न मान, मैं तेरा मेहमान ।
तु० बिगर बुलाई आगै आवै, काम करै अण हुवा ।
मांडा गिणै न जानियां, मैं लाडै की भुवा ।।

२६५७. मा कै चूंथ्यां पार पड़सी, बाप कै चूंथ्यां पार कोनी पड़ै ।
जायज बात कहने से ही काम होगा, नाजायज बात कहने से नहीं ।

२६५८. मा को बदळो कोनी ऊतरै ।
मां का ऋण नहीं चुकाया जा सकता ।

२६५९. माठो धोरी ठोठ गुर, कुवै'ज खारो नीर ।
गांव कुठाकर कुअस्त्री, पांचूं दहै सरीर ।।
काम से जी चुराने वाला बैल, मूर्ख गुरु, कुएँ का खारा पानी, निकम्मा ठाकुर और कुभार्या ये पांचों ही पीड़ादायक होते हैं ।

२६६०. माठो देख कर भिड़नो नईं, मोटो देख कर डरणों नईं ।
शरीर से कृश दिखलाई देने वाले से भिड़ना नहीं चाहिए और मोटे-ताजे को देखकर डरना नहीं चाहिए ।

२६६१. माड़ो भूत बाकळां सें ई राजी ।
दुर्बल भूत सिजाये हुए मोठों से ही संतुष्ट हो जाता है ।

२६६२. माना चाली सासरै, मनावण आळो कूण ?
मानवती रूठ कर सुसराल चली तो अब उसे कौन मना सकता है ?

२६६२. (ब) मा बाप मरग्या, अैईं घर की करग्या ।
जब तक मां-बाप जीवित रहते हैं, बेटी का पीहर में आना-जाना बना रहता है । लेकिन उनके मरने के बाद आवागमन लगभग बन्द हो जाता है और उसे सुसराल में ही रहना पड़ता है ।

२६६३. मा भठियारी, पूत फतेखां ?
मां तो भाड़ झोंकती है और बेटा ऐंठ दिखलाता है ।
तु० मा तो गोबर चुगती फिरै, बेटो बटोड़ा बकसै ।

सन्दर्भ कथा—एक किसान की वहू बड़ी कर्कशा थी। वह नित्य प्रति अपने पति को घर के आंगन में विठला कर इक्कीस जूते लगाया करती। इससे तंग आकर वह एक दिन भाग निकला और पास के नगर में चला गया। लेकिन वहू भी एक ही थी। वह जिस जगह पर अपने पति को विठला कर जूते मारा करती थी, अब उस खाली जगह पर ही उसके नाम से जूते मार कर अपने नियम का निर्वाह करने लगी। उस स्थान के नीचे एक हँडिया गाड़ी हुई थी, जिसमें मंत्र-वल से एक भूत को वन्द किया हुआ था। अब वे जूते उसी भूत के सिर पर पड़ते। जूतों की मार से भूत विकल हो उठा, लेकिन वह निरुपाय था।

जूतों के आघात से एक दिन हँडिया फूट गई तो भूत उसमें से निकल कर वेतहाशा भागा और उसी नगरी में जा पहुँचा। एक दिन उसे वही किसान दिखलाई पड़ा तो भूत ने उससे कहा—जूत भाई, राम-राम। किसान के पूछने पर उसने आप वीती सुनाते हुए कहा कि हम दोनों ने एक ही औरत के हाथ से जूते खाये हैं, इसलिए हम 'जूत भाई' है। किसान बोला कि मुझे यहाँ आये इतने दिन हो गये, लेकिन कोई अच्छी आय नहीं हुई। भूत ने कहा कि इसका उपाय मैं किये देता हूँ। मैं अभी जाकर अमुक सेठ के वेटे के शरीर में प्रवेश करता हूँ, मैं किसी के निकाले नहीं निकलूंगा लेकिन जव तुम आओगे तो तुरन्त निकल जाऊंगा। इस काम के वदले तुम सेठ से मोटी रकम वसूल कर लेना। लेकिन इस वात को याद रखना कि मैं दुवारा किसी के शरीर में प्रवेश करू तो वहां भूल कर भी न आना, यदि आओगे, तो तुम्हें जान से मार डालूंगा। किसान ने यह वात स्वीकार कर ली और योजनानुसार किसान को सेठ से मुँह मांगी रकम प्राप्त हो गई।

अगली वार भूत ने राजा के कुँअर के शरीर में प्रवेश किया और किसी के निकाले नहीं निकला। राजा को पता चलने पर उसने किसान को तत्काल ही वुलावा भेजा। किसान दुविधा में फँस गया। न जाए तो राजा मारे और जाए तो भूत मारे। अन्ततः उसने एक युक्ति निकाली। उसने अपनी धोती के 'पायचे' मारे, जूतियां हाथ में लीं और वड़े जोरों से भागता हुआ राजा के वेटे के पास यह कहता हुआ—पहुँचा—भूत भाई, रांड आई अर्थात् वह जूते लगाने वाली औरत यहाँ भी आ पहुँची है। इतना सुनते ही भूत के होश फाख्ता हो गये, जूतों की मार का स्मरण कर वह कांप उठा और अविलम्व ही राजकुँअर के शरीर से निकल कर भाग गया।

२६७३ मारणियें सें वंचाणियों वडो होवै।

मारने वाले की अपेक्षा वचाने वाला अधिक समर्थ होता है।

मारणियें सें वंचावणियें का हाथ लांवा होवै।

२६७४. मारणियें को हाथ पकड़चोजा, पण झूठै की जवान कोनी पकड़ी जा ।
मारने वाले का हाथ तो पकड़ा जा सकता है, लेकिन झूठ बोलने वाले की जवान नहीं पकड़ी जा सकती ।

२६७५ मारवाड़ मनसूबं डूबी ।
मारवाड़ के लोग मंसूबे अधिक बांधते रहते हैं—
मारवाड़ मनसूबे डूबी, पूरब डूबी गाणां में ।
खानदेस खुन्दां में डूबी, दच्छण डूबी दाणां में ।

२६७६ मारै आप, चढ़ावै ताप ।
सबको मारता तो ईश्वर ही है, लेकिन ज्वर आदि किसी न किसी बहाने से ।

२६७७. माल उडै दरवाग का, नांव फते को होय ।
माल किसी का उड़ता है और नाम किसी का होता है ।

२६७८ माल गैल जगात है ।
माल के अनुसार ही जकात लगती है ।

२६७९. मालजादी को डंड फकीरां पर क्यूं ?
दुश्चरित्रा का दण्ड फकीरों पर क्यों पड़े ?

२६८०. माल पर चाल आवै ।
माल पर अपने आप चाल आने लगती है ।
रू० माल पर पग मत्तै ई उठै ।

२६८१. माली मलका मारसी, लोग पड़चा झख मारसी ।
माली (नाम विशेष) तो ऐसे ही नजारे मारेगी और लोग यों हीं झख मारते रहेंगे । माली किसी की परवाह नहीं करती ।

२६८२. मिनकी कै कैयां छींको थोड़ो ई टूटै ।
बिल्ली के कहने से छीका थोड़े ही टूटता है ।

२६८३. मिनखां नै मुंगता करचा, ढोर करचा जजमान ।
विधाता ने पंडितों को तो याचक बना दिया और ढोर जैसी बुद्धि वालों को यजमान—
बे' माता तूं बावळी, तेरा घुरड़'र काटूं कान ।
मिनखां नै मुंगता करया, ढोर करया जजमान ।।

२६८४. मिनखां मिनखां भीड़, मिनखां मिनखां छीड़ ।
मनुष्यों के जमा होने से भीड़ एवं उनके जाने से बिखराव ।

२६८५. मिन्नी तो काठ की घड़ा लेसी, पण म्याऊं म्याऊं कुण करसी ?
बिल्ली तो काठ की बनवालोगे, लेकिन म्याऊं-म्याऊं कौन करेगा ?

२६८६. मियां जीता रैसी तो फजीती और घणी ईं हो ज्यासी ।

मियांजी की फजीती (फजीहत) नामक लड़की मर गई तो 'फजीती' की मां रोने लगी । इस पर पड़ोसिन ने उसे आश्वस्त करते हुए कहा कि रोती क्यों हो ? मियांजी जीते रहेंगे तो 'फजीती' (फजीहत) और बहुत होगी ।

२६८७. मियांजी रोवो क्यूं ? 'क सूरत ई इसी है ।

मियांजी रोते क्यों हो ? रो कहां रहा हूँ, सूरत ही रोनी है ।

२६८८. मियां मरचा जद जाणिये, जद चाळीसा होय ।

मियां को तभी मरा समझना चाहिये कि जब उसका चेह्लुम हो जाए । जब कोई काम पूरी तरह निवट जाए, तभी उसे सम्पन्न हुआ मानना चाहिए ।

रू० जाट मरचो जद जाणिये, जद बरसोदी होय ।

२६८९. मियें की दोड़ मैजत ताईं ।

मियां की दौड़ मस्जिद तक ।

२६९०. मियों बीबी दो जणां, क्यूं खावै वै जौ-चणां ?

जब घर में मियां-बीवी दो ही हैं, तब जौ-चने क्यों खायें ?

२६९१. मियों बीबी राजी तो के करैगो काजी ?

जब मियां-बीवी रजामन्द हैं, तब काजी क्या करेगा ?

संदर्भ कथा—एक जाट और मियां दोस्त थे । मियां की शादी थी । जाट भी उसमें शरीक हुआ । लेकिन निकाह करवाने वाला काजी रुष्ट होने के कारण नहीं आया । तब जाट ने कहा कि निकाह मैं करवा देता हूं । जाट ने मियां और बीबी को पास-पास बिठलाया और बोला—

मियों बीबी राजी, के करैगो काजी ।
ढकणी में दही, निका होई सही ॥

२६९२. मिली भिटी, पीड़ मिटी ।

भेंट हो गई तो अवसेर मिट गई ।

२६९३. मींडकी कै ई जुखाम ?

मींडकी को भी जुकाम ?

रू० चींचड़ी अर खाज ?

२६९४. मींडा खड़बड़ में रैंणो चोखो कोनी ।

सन्दर्भ कथा—एक राजा को मेंढों की लड़ाई करवाने का शौक था और बहुत से मेंढे भी उसकी घुड़साल में रहते थे । नगर में बन्दरों का एक यूथ भी रहता था । यूथपति ने एक दिन सभी बंदरों से कहा कि यहां रहने

में कुशल नहीं है, क्योंकि मेंढे प्राय: रसोड़े में घुस जाते हैं और रसोइये क्रोधी हैं। इन्होंने कभी जलते हुए ठुंठ से मेंढों को मारा वे तो बचने के लिये घुड़साल में आएँगे और घुड़साल में आग लगने से घोड़े जल जायेंगे। घोड़ों के जलने की औषधि हमारी चर्वी से तैयार होती है अत: राजा अपने घोड़ों की खातिर हमें मरवा डालेगा, इसलिए शीघ्र ही यहाँ से अन्यत्र चले चलो। लेकिन वंदर नहीं माने। इस पर यूथपति तो चला गया और पीछे से वैसा ही हुआ, जैसा उसने कहा था। परिणाम स्वरूप सारे वन्दर मारे गये।

२६९५. **मीठी छुरी, झैर की भरी।**

मधुर भाषी किन्तु कपटी मनुष्य विष बुझी छुरी के समान।

२६९६. **मीठै कै लालच तो जूठो भी खायो जा।**

मीठै के लालच से तो जूठा भी खा लिया जाता है।

२६९७. **मुंगतै आगै मुंगतो मांगै, वींकी अक्कल कम।**

भिखारी के आगे भिखारी हाथ पसारे तो बुद्धि का घाटा ही समझना चाहिये।

दमदमी पर दमदमी, दम दमी पर दम।
मुंगतै आगै मुंगतो मांगै, वीं की अक्कल कम।

२६९८. **मुजरै को मारचो मरै है।**

सम्मान की भूख से मरा जा रहा है।

२६९९. **मुरदां का मुसाण ठिकाणां, मांगै रोटी घालै छाणां।**

मुरदों का ठिकाना मसान होता है जहां रोटी मांगने पर गोबर के कण्डे मिलते हैं।

२७०० **मुरदां कै सागै कांधिया कोनी वळै।**

मृतक के शव को अपने कंधों पर ढोकर ले जाने वाले उसके साथ थोड़े ही जलते हैं?

रू० मुरदा ई वळसी, कांधिया कोनी वळै।

२७०१. **मुळक विनां रूप अडोळो।**

मुसकराहट के विना रुपवान् भी वेडौल लगता है।

२७०२. **मुसाणां में गयोडा लकड़ा पाछा थोड़ा ई आवै?**

मसानों में गई हुई लकड़ियां वापिस नहीं आतीं।

२७०३. **मूंग मोठ में कुणसो घाट वाद?**

मूंग-मोठ में कोई छोटा वड़ा नहीं।

२७०४. **मूंग ल्यो मूंग, 'क लिया कोनी 'क लेस्यां कोनी।**

संदर्भ कथा—राजस्थान में दामाद सुसराल जाता है तो उसके लिए मूंग-भात वनाये जाते हैं। एक वनिये का लड़का अपनी सुसराल गया तो

उसकी सास स्वयं उसे भोजन करवा रही थी और बार-बार उससे मूंग लेने का आग्रह कर रही थी। लेकिन कुछ समय पूर्व दामाद ने मूंगों का संग्रह किया था और उसमें उसे पर्याप्त घाटा लग रहा था इसलिए उसने सोचा कि उसकी सास उसे ताना मार रही है, अतः जब पुनः सास ने और मूंग लेने का आग्रह किया तो दामाद खीझ कर बोल पड़ा—मूंग लिये नहीं, या लेंगे नहीं, नफा-नुकसान तो यों हीं होता रहता है।

२७०५. 'मूं चिलकै, पेट बिलकै।

ऊपर से तो टीप-टाप, लेकिन पेट भूखा।

२७०६ 'मूंडा देख कर टीका काढ़ै।

संदर्भ कथा—एक बार दो दामाद साथ-साथ अपनी सुसराल पहुँचे। एक मालदार था और दूसरा सर्वथा निर्धन हो गया था। सास ने मालदार दामाद की तो खूब खातिर की, उसे अनेक प्रकार के पकवान परोसे और वह स्वयं उसके पास बैठकर उसे जिमाने लगी, लकिन निर्धन दामाद की कोई कद्र नहीं थी, उसे दूर बिठलाया गया और साधारण खाना परोसा गया। इस पर उसने सास से कहा—

कै सासुजी म्हारा भाग पातळा, कै थे म्हांनै भूली ?
वां नैं घाली माल-मळाई, म्हांनै घाली थूली।

इस पर सास ने उत्तर दिया—

नां कंवरजी थारा भाग पातळा, नां मैं थांनै भूली।
'मूंडा देखकर टीका काढ्या, मार गवागव थूली।।

रू० 'मूं लैर थप्पड़।

२७०७. 'मूंडै कै लाळ लाग्योड़ी बुरी।

मुँह को लार लगी हुई बुरी होती है।

संदर्भ कथा—एक जाट गायें भैंसें रखता था और घी बेचने का काम किया करता था। एक दिन उसकी स्त्री ने देखा कि 'कढावनी' में दूध गरम हो गया है और उस पर मलाई आ गई है, लेकिन मलाई में एक तिनका पड़ा हुआ है। तिनके को फेंक देने से पहले उसने सोचा कि तिनके में जो मलाई लग गई है उसे व्यर्थ क्यों जाने दूं ? यह सोचकर उसने तिनके को चूस लिया। मलाई उसे बड़ी स्वाद लगी और उसके मुँह लार लग गई। अब वह नित्य दूध पर से मलाई उतार कर खाने लगी, जिसके फलस्वरूप घी की मात्रा बहुत कम हो गई। उसका पति घर आया और उसने घी की कमी का कारण पूछा तो पहले तो वह चुप रही, लेकिन जाट के जोर देने पर उसने सारी स्थिति स्पष्ट करते हुए कहा—

तिणकलिये डबोई रावत, तिणकलिये डबोई।

२७०८. 'मूंडै मांगी तो मौत ई कोनी मिलै ।
मुँह मांगी तो मौत भी नहीं मिलती ।

२७०९. 'मूं सूई सो, पेट कूई सो ।
मुँह तो छोटा सा, लेकिन पेट बड़ा ।
मुँह छोटा, लेकिन पूरा भोजन भट्ट ।

२७१०. मूततै नै छिदाम पाई, पूण पीसो घाट ई सरी ।
मूत्र-विसर्जन करते हुए को छदाम मिली तो पौन पैसा कम ही सही ।
अनायास जो मिल जाए, वही अच्छा ।
छदाम = एक पैसे का चौथा भाग ।

२७११. मूरख की सारी रैण, चतर की दो घड़ी ।
चतुर मनुष्य दो घड़ी में जो आनन्द ले लेता है, मूर्ख पूरी रात में भी नहीं ले पाता ।
रू० मगर मकोड़ो मूढ नर, तीनूं लाग मरंत ।
भंवर भुजंग 'र सुघड़ नर, डस कर दूर रहंत ।।

२७१२. मूरखां कै किसा सींग होवै ?
मूर्खों की पहचान के लिए उनके सिर पर सींग नहीं लगे होते, अपने कामों से ही वे अपनी मूर्खता जाहिर कर देते हैं ।

२७१३. मूळ सें ब्याज प्यारो ।
मूल धन की अपेक्षा ब्याज अधिक प्यारा लगता है । इसलिए ब्याज के लालच में मूल धन को भी जोखिम में डाल दिया जाता है ।
रू० पूत सें पोतो प्यारो ।

२७१४. मूसळ कै अणी नईं, वेसां कै धणी नईं ।
मूसल के अनी नहीं होती और वेश्या के पति नहीं होता ।
रू० मूरख में ग्यान नईं, दरांती कै म्यान नईं ।

२७१५. 'मे बावो आयो, सिट्टा-फळी ल्यायो ।
मेह के आगमन से ही सिट्टे-फली आदि उत्पन्न होते हैं ।

२७१६. मेर अर मोर ऊंचै पर राजी ।
मेर और मोर ऊंचे स्थान पर खुश रहते हैं ।
मेर = एक जाति विशेष ।

२७१७. मेरा मियां घर नईं, मुझे किसी का डर नईं ।
मालिक घर पर न हो तो फिर डर किस बात का ?

२७१८. मेरी नाजो को के के दुखै ? जो-जो सारै सो सो दुखै ।
नाजुक-मिजाज औरत का पति जितना ही उसकी सुख-सुविधा का खयाल रखता है, उसकी फरमाइशें आगे से आगे बढती जाती हैं ।

२७१६. मेरी मा गैली, दे रिपिये की धेली। मेरा बावा बावळा, दे रिपिये का पावला।
एक ने कहा कि मेरी मां गहेली है जो रुपया लेकर आठ आने वापिस करती है। इस पर दूसरा बोला कि मेरा बावा बावला है जो रुपये के चार आने ही देता है।
रू० मेरी मा इसी भोळी 'क कुड़छी गेर कर चमचो उठा ल्यावै।

२७२०. मेरै लाल कै कुण कुण यार ? धोबी छींपी अर मणियार।
जब कोई आदमी सर्वथा ओछी संगति में रहे।
रू० बावोजी का भायला, कै गूजर कै गोड़।

२७२१. मेरो के दोस, मेरो सारो घर एकसो।
मुझ अकेले को ही क्यों बुरा बतलाते हो ? मेरे घर में तो सभी एक जैसे हैं।

२७२२. मेरो खुदावकसियो ढाई सेर की लपसी खाज्या, पण खाज्या किस भड़वै की ?
मां ने बेटे की तारीफ में कहा—मेरा खुदाबख्श अढाई सेर तक लपसी खा जाए। इस पर किसी ने पूछा—खा तो जाए, लेकिन खा जाए किस भड़ुए की ?

२७२३. 'मेवा तो बरसत भला, होणी हो सो होय।
जो होना होता है, वह तो होकर ही रहता है, लेकिन मेह का तो बरसना ही अच्छा।
वर्षा की बाढ में किसी के सौ घोड़े, सौ ऊंट, स्त्री और पुत्र बह गये, फिर भी उसने यही कहा—

सौ घोड़ा सौ करहला, पूत सपूती जोय।
'मेवा तो बरसत भला, होणी हो सो होय।।

मरु भूमि में वर्षा की उत्कट प्रतीक्षा रहती है—

मान महोड़ण मन रखण, टूट्यां संधण नेह।
और तो सै ई रूसियो, तूं मत रूसै मेह।।

रू० 'मे अर पावणां तो आवता ई चोखा।

२७२४. 'मेवां मोळ, पूनां तेज।
वर्षा होने से अन्न के भाव गिरते हैं, हवा चलने से चढते हैं।

२७२५. 'मेवा वांही बरस सी, जां राजी होसी राम।
मेह वहीं बरसेगा, जहाँ प्रभु प्रसन्न होंगे।

२७२६. मैं अर मेरी बाजरी तूं अर तेरो रिपियो।
संदर्भ कथा—किसी आदमी ने एक परिचित दुकानदार से एक रुपये का बाजरा लिया और रुपया नाम लिख लेने के लिए कहा। इस पर

दुकानदार बोला कि अब तो तेरी और मेरी ताकत बराबर है – मैं और मेरा बाजरा एवं तू और तेरा रुपया। लेकिन बाजरा तुझे दे दूं तो मैं अकेला रह जाऊंगा और तुम्हारे पास तीन जोर हो जाएँगे, अतः तुम्हें नहीं पा सकूंगा। और यों कह कर उसने बाजरा देने से इन्कार कर दिया।

२७२७. मैं अर मौसी इक्कीसी घाली।

मैंने और मौसी ने इक्कीस रुपये थाली में डाले।

किसी काम में दूसरे के साथ अपना नाम जोड़ कर झूठ-मूठ का श्रेय लेने की चेष्टा।

२७२८. मैं ईं तो मा हूं जद पूत खसमड़ा जी लियो।

संदर्भ कथा—किसी आदमी को सन्निपात हो गया। उसकी औरत ने उससे पूछा कि क्या तुम मुझे पहचानते हो, मैं कौन हूं? पति ने लड़खड़ाती जबान से उत्तर दिया कि तू तो माँ है न? इस पर निराश होकर पत्नी बोली कि यदि मैं ही माँ हूँ तब तो मेरे पूत-खसम तुम जी लिए अर्थात् तुम्हारे बचने की क्या उम्मेद करूं?

२७२९. मैं गळो कटावै।

अहंकार सर्वनाश कर देता है।

बकरा में में करता है तो उसके गले पर छुरी चलाई जाती है।

रू० मैं कै गळै छुरी।

२७३०. मैं'गो रोवै एक बार सैं'गो रोवै बार-बार।

महँगी वस्तु खरीदने वाले को तो एक बार ही उसका महँगापन खलता है, लेकिन सस्ती चीज खरीदने वाला बार-बार झींखता है।

२७३१. मैं तनै किसोक लागूं? 'क तूं तनै इं पूछले।

जैसा मैं तुम्हें लगता हूँ, वैसे ही तुम मुझे लगते हो।

२७३२. मैं तो मरूं मेरी आई, तूं क्यूं मरै पराई जाई?

विपदाग्रस्त पति की पत्नी के प्रति उक्ति—मुझ पर तो विपदा आपड़ी है, इसलिए इसे झेलना ही पड़ेगा, लेकिन तू मेरे साथ क्यों मरती है?

२७३३ मैंदी कै पत्तै-पत्तै रंग, पण पीस्यां।

मेंहदी के पत्ते-पत्ते में रंग है, लेकिन उपलब्धि पीसने से ही होती है।

भगवान् कण-कण में व्याप्त हैं, लेकिन भक्ति से ही प्राप्त हो सकते हैं।

२७३४. मैं पीया, मेरा बैल पीया, बाकी का कूवा धिसज्या।

मैंने पानी पी लिया, मेरे बैल ने पानी पी लिया, हे कुएँ! अब भले ही तुम धँस जाओ।

अपना उल्लू सीधा हो जाने पर बाकी चाहे सब नष्ट हो जाए।

२७३५. मोटयारां की दूर बलाय ।
बला भी मरदों से दूर रहती है ।

२७३६ मोट्यारां की माया, विरछां की छायां ।
सब कुछ पुरुषों के पीछे ही है, छाया वृक्षों से ही होती है ।
रू० मोट्यारां गैल ई भला वानां है ।

२७३७. मोठां साटै घुण पिसज्या ।
मोठों के साथ घुन भी पिस जाते हैं ।

२७३८. मोडा करै मलार, पराये घर ऊपरां ।
वेशधारी साधु दूसरों के बल पर मौज उड़ाते हैं ।

२७३९. मोडा घणां वैकूंठ सांकड़ो ।
वेशधारी साधु इतने अधिक हैं कि उनके लिए स्वर्ग में भी स्थान कम पड़ गया है ।

२७४०. मोडा टोडा बाकरा, चौथी बिधवा नार ।
इतरा तो भूखा भला, धाया करै खुआर ॥
वेशधारी साधु, ऊंट, बकरा और विधवा स्त्री ये भूखे ही अच्छे, अधिक खाने पर ये खुराफात ही करते हैं ।

२७४१. मोड़ा निमाई तो आया ई करै है।
जिन्दगी में कठिनाइयां भी आती ही हैं ।

२७४२. मोत को अर पावणै को वेरो कोनी, कद आज्या ।
मृत्यु और अतिथि का पता नहीं होता कि कब आ जाएं ।

२७४३. मोत को घर खांसी, राड़ को घर हांसी ।
खांसी से अनेक रोग पैदा होते हैं जिनसे मृत्यु भी हो जाती है। हंसी में लड़ाई के बीज छिपे होते हैं ।
द्रौपदी ने दुर्योधन की हंसी उड़ाई थी जो महाभारत का कारण बन गई ।

२७४४ मोत टळै कोनी ।
मृत्यु टाले नहीं टलती ।
रू० मोत आवै जद आटै की सूळी सें ई मरज्या ।

२७४५. मोत दिखायां ताप आसंगै ।
मृत्यु का भय दिखलाने पर आदमी ज्वर की हां भरता है ।
यों तो आदमी जरा भी दण्ड भुगतने के लिए तैयार नहीं होता, लेकिन अधिक सजा सुनाने से थोड़ी पर सहर्ष तैयार हो जाता है ।

२७४६. मोत मांदगी मामलो, मंदो मांगणहार ।
अै पांचूं मम्मा बुरा, भली करै करतार ॥
मृत्यु, बीमारी, मुकद्दमा, मंदी और ऋणदाता ये पांचों हा बहुत बुरे होते हैं, इनसे भगवान् ही बचाये ।

२७४७ **मोत सें मोकाण भारी पड़गी ।**
मानमपुरसी तो मोत से भी भारी पड़ गई ।

२७४८. **मोत सें मोळ बुरी ।**
व्यापारी मृत्यु की अपेक्षा भी मंदी को बुरी मानता है ।
रू० (१) मोत देदेई, मोळ ना देई ।
(२) मोळ पड़ी जद जाणियें, झुकता तोलै तोल ।
नरम गरम घर में धरै, मीठा बोलै बोल ।।

२७४९ **मोत हरावै, भूख निवावै ।**
मृत्यु के आगे सब को हार माननी पड़ती है और भूख के आगे झुकना पड़ता है ।

२७५०. **मोया बुरी बलाय, खीर में लूण घलावै ।**
उजड्ड आदमी बुरी बला हैं जो खीर में खांड के स्थान पर नमक डलवाते हैं ।

२७५१. **मोर नाचै ई नाचै, पण पगां कानी देख कर रोवै ।**
मनुष्य भले सब तरह से सुखी हो, लेकिन एक ही दुःख या अभाव उसके सारे सुखों को फीका कर देता है ।

२७५२. **मोरां बिन डूंगर किसा, 'मे बिन किसी मलार ।**
तिरिया बिन तीजां किसी, पिव बिन किसा त्यूंहार ।।
मोरों के बिना कैसा पर्वत, मेह के बिना क्या मलार, पत्नी के बिना कैसी तीज एवं पति के बिना कैसा त्योहार ?

२७५३. **मोरियो मेहू-मेहू तो घणोई करै, पण बरसणो तो इन्दर कै सारै ।**
मोर मेहू मेहू तो खूब करता है, लेकिन मेह बरसाना तो इन्द्र के हाथ है ।

२७५४. **म्याऊं को 'मूंडो कुण पकड़ै ?**
म्याऊं का ठौर कौन पकड़े ?

२७५५ **म्हादेवजी सें मंत्तर छाना कोनी ।**
भगवान् सदा-शिव से मंत्र क्या छिपे हैं ?
रू० म्हादेवजी नै कोई के मंत्तर सिखावै ?

२७५६. **म्हारली बरियां कठै मरग्यो हो ?**
मेरी बिरियां कहां मर गये थे ?

संदर्भ कथा—एक ज्योतिषी किसी को विवाह का मुहूर्त्त बतला रहा था और कह रहा था कि इस मुहूर्त्त में विवाह करने पर वधू सदा सोहागिन बनी रहती है । ज्योतिषी की विधवा बेटी ने अपने बाप की यह बात सुनी तो मन ही मन कह उठी कि मेरी बिरियां तुम कहां मर गये थे ?

२७५७. **म्हारी बिल्ली अर म्हारै सें ई म्याऊं ?**
हमारी बिल्ली और हमें ही डराये ?

२७५८ **म्हारै घर में म्हे वडा, जीजी होरै जेठ।**
अपने घर में हम बड़े हैं, जीजी के घर में जेठ।
अपने अपने घर में सभी बड़े हैं।

२७५६. **म्हारै छापोली की चाकी अर थे छापोली व्याया, आपां दोनूं साढू।**
हमारे घर में छापोली (एक गांव का नाम) की चक्की है और तुम छापोली व्याहे हो, अतः अपन दोनों साढू।
अकारण रिश्ता जोड़ने की चेष्टा।

२७६०. **म्हारै सें गोरी जों कै पीळिये को रोग।**
मेरे से अधिक गौर वर्णवाली कोई अन्य स्त्री हो ही नहीं सकती, यदि तुमने कोई ऐसी औरत देखी है तो वह निश्चय ही पीलिया रोग से ग्रस्त है।
पीलिया = एक रोग, जिसमें शरीर का रंग पीला पड़ जाता है, यहाँ तक कि रोगी के कपड़े भी पीले हो जाते हैं।

२७६१. **म्हावतां सें यारी अर दरुजा सांकड़ा ?**
महावतों के साथ यारी और घर का दरवाजा सँकरा ?
बड़ों से दोस्ती और उनके आतिथ्य की कोई व्यवस्था नहीं।

२७६२. **म्हेई खेल्या, म्हेई ढाया।**
स्वयं ही किसी काम का प्रारंभ करे और स्वयं ही उसका अंत कर दे।

२७६३. **म्हांको गोलो होकर गाजर खा छै ?**
हमारा गोला होकर भी गाजर जैसी तुच्छ वस्तु खा रहा है ?
सन्दर्भ कथा—एक ठाकुर ने अपने गोले को गाजर खाते देख कर उससे कहा कि अरे, हमारा गोला होकर भी तू गाजर जैसी घटिया चीज खा रहा है ? गोले ने उत्तर दिया कि यह भी कहाँ नसीब होती है, मैंने तो कुत्ते के मुँह से छीनी है, आप कहते हैं तो मैं इसे कुएँ में डाल देता हूँ। लेकिन ठाकुर तो झूठी ऐंठ दिखला रहा था, वह स्वयं भूखा था। इसलिए उसने धीरे से गोले से कहा कि ला, यह गाजर मुझे दे दे, कुएँ में मत डाल देना, नहीं तो इसके लिए मुझे भी कुएँ में गिरना पड़ेगा।

२७६४. **यारां चोरी पीरां दगा।**
यारों के साथ चोरी और पीरों के साथ दगाबाजी नहीं करनी चाहिए।

२७६५. **यारी का घर दूर है।**
यारी निभा पाना बड़ा कठिन है।

२७६६. **या देबी बोळा भगत तारया है।**
इस देवी ने न जाने कितनों को पार लगाया है।
किसी कुलटा के प्रति व्यंग्योक्ति।

२७६७ **यो ई जंवाई है जद तो खिला लिया दोयता।**

इस दामाद के बल पर तो नानी मुश्किल से ही दोहितों को खेला पायेगी। नामरद दामाद के प्रति व्यंग्य।

२७६८. **यो मेळो तो एक दिन खिंडणो ई है।**

जिन्दगी का मेला तो एक दिन समाप्त होना ही है।

२७६९ **यो ही म्हारो आसरो, कै पीर कै सासरो।**

औरत के दो ही आश्रय हैं, पीहर व सुसराल।

२७७०. **रंक रीझै तो रो दे।**

रंक रीझे भी तो क्या दे दे?

किसी की कष्ट गाथा सुन कर वह रो भले ही दे, इसके अतिरिक्त वह उसकी क्या सहायता कर सकता है?

२७७१. **रंग न्यारा-न्यारा, सुवाद एक ई है।**

संदर्भ कथा—एक राजा की पुत्र-वधू अत्यंत रूपवती थी। उसको देख कर राजा का मन चलायमान हो गया और वह उसे किसी प्रकार प्राप्त करने की चेष्टा करने लगा। बहू को भी श्वसुर की इस कुत्सित इच्छा का पता चल गया और उसने युक्ति से ही काम लेना ठीक समझा। उसने श्वसुर को रात के समय महल में आने का संकेत दे दिया। राजा व्यग्रता से रात होने की प्रतीक्षा करने लगा। इधर बहू ने चार नीबू मंगवाये और उनके दो दो टुकड़े करके और उन्हे भिन्न-भिन्न रंगों मे रंग कर एक मेज पर रख दिया। राजा आया तो बहू ने उससे कहा कि पहले आप मेज पर रखी हुई आठों चीजों को चख कर उनके स्वाद मुझे बतलायें। राजा ने आठों टुकडो को चख कर कहा कि यद्यपि इनके रंग भिन्न भिन्न है, लेकिन स्वाद सब का एक ही है। इस पर पुत्रवधू ने उसकी कामवासना की भर्त्सना करते हुए कहा कि जिस प्रकार इन नीबुओं के रंग भिन्न है लेकिन स्वाद एक ही है, इसी प्रकार स्त्रियों के रंग भी भिन्न-भिन्न होते हैं, लेकिन बात एक ही है। तुम्हारे रनिवास में जितनी रानियां हैं, उनसे अधिक मेरे में भी कुछ नही है, अतः तुम अपने माथे पर कलंक का टीका क्यों लगवाते हो? बात राजा की समझ मे आ गई और वह बहू से माफी माग कर लौट गया।

२७७२. **रंग राजा, पोत परजा।**

कपड़े का रंग चटक हो तो उसकी मांग अधिक रहती है, भले ही उसका पोत घटिया हो।

२७७३. **रंडी किसकी जोरू, भड़वा किसका साला?**

वेश्या किसकी पत्नी और भडुआ किसका साला?

२७७४. रजपूत की तरवार सें नईं मरै जिको कायथ की कलम सें मरज्या ।

राजपूत की तलवार से तो आदमी बच सकता है, लेकिन कायस्थ की कलम के नीचे आने के बाद नहीं बच सकता ।

२७७५. रजपूती कोई कै बाप की कोनी ।

शूरवीरता किसी की बपौती नहीं ।

२७७६. रण की तो वातां ई चोखी लागै ।

युद्ध की तो बातें ही अच्छी लगती हैं, रण भूमि में जाना सहल नहीं ।

२७७७. रण जीत्यो जा, जण कोनी जीत्यो जा ।

रण जीता जा सकता है, लेकिन जनता को नहीं जीता जा सकता ।
दुनिया की जवान नहीं पकड़ी जा सकती ।

२७७८. रण में नईं जावै, इत्तै ई सूरमा वाजै ।

जब तक रणभूमि में नहीं जाता, तभी तक शूरमा कहलाता है ।

२७७९. रमता राम, वैठ्या सो ई मुकाम ।

साधु तो रमता रहता है, वह जहाँ बैठ जाए, वही उसका मुकाम ।

२७८०. रळायां हाथ धुपै ।

दोनों हाथ मिलाने से ही धुलते हैं ।
दोनों पक्ष रल-मिल कर काम करें तभी सफलता मिलती है ।

२७८१. रळियां में जलम्योड़ा, गळियां में भटकै ।

महलों में जन्मे हुए गलियों में भटकते फिर रहे हैं ।

२७८२. रसिये को ज्यान टक्को सो है ।

रसिक निपट अकेला ही है ।

२७८३. रांगड़ कै रैकारै की गाळ ।

राजपूत को 'अरे' कहना ही उसके लिए गाली है ।

२७८४. रांड कै मारचोड़ै की अर गांव में रुळोड़ै की कोई दाद-फिराद कोनी ।

स्त्री द्वारा पिटे हुए एवं गाँव में भटकने वाले की कोई सुनवाई नहीं ।

२७८५. रांड कै रांड पगां लागी, 'क मेरै जिसी तूं ।

एक विधवा ने दूसरी के पैर छुये तो वह बोली—जैसी मैं, वैसी तू ।

२७८६. रांड कैवै जिको निपूतो कुहावै ।

दूसरे को गाली देने वाले को स्वयं भी गाली सुननी पड़ती है ।
रू० महलां वैठ्यो कैवै जिको कुरड़ी वैठे सें सुणै ।

२७८७. रांड भांड नईं छेड़िये, पणघट पर दासी ।
भूखो सिंघ न छेड़िये, सूत्यो सन्यासी ।।

विधवा स्त्री, भांड, पनघट की दासी, भूखे सिंह एवं सोये हुए संन्यासी से कभी छेड़-छाड़ नहीं करनी चाहिए ।

२७८८. रांड रंडापो काट दे, पण रंडवा काटण दे जद नी ।

विधवा तो वैधव्य का शेष जीवन संयम से निकाल दे, लेकिन रंडुवे निकालने दें तब न !

२७८९. रांड सें वेसी तो गाळ ई कोनी ।

सुहागिन स्त्री के लिए रांड से बड़ी कोई गाली नहीं ।

२७९०. रांड स्याणी तो होवै, पण होवै खसम मरयां ।

स्त्री सयानी तो होती है, लेकिन होती है पति के मरने के बाद ।

२७९१. राई ओलै प्हाड़ रैज्या ।

कभी कभी बहुत छोटी बात के पीछे बहुत बड़ा रहस्य छिपा होता है ।

२७९२. राई का भाव राते गया ।

राई के वे भाव रात में ही चले गये ।

संदर्भ कथा—एक बनिये के घर में रात को चोर घुसा । बनिये ने उसे देख लिया लेकिन उसे पकड़े कौन ? तब उसने अपनी स्त्री से पूछा कि आज मैं दुकान से जो राई लाया था, उसे बहुत सुरक्षित रखना । राई की बड़ी मांग निकली है और यह कल सोने के भाव बिकेगी । बनिये की स्त्री ने उत्तर दिया कि मुझे इस बात का क्या पता था ? मैंने तो सारी राई एक घड़े में भर कर रसोई में रखदी है, सुबह ही उसे बहुत संभाल कर रख दूंगी । चोर ने लुके-छिपे दोनों का संवाद सुना तो उसने सोचा कि और वस्तुओं को ढूंढने की बजाय इस राई के घड़े को ले चलना ही सबसे अधिक लाभप्रद रहेगा । इसलिए वह राई के घड़े को उठा कर ले गया और अगले दिन उसे बेचने के लिए बाजार में गया । लेकिन बाजार में तो राई के भाव में कोई वृद्धि नहीं हुई थी । अन्त में वह घड़ा लेकर उसी बनिये की दुकान पर पहुँचा । बनिये ने उसे पहचान लिया और बोला—

वखत वखत को मोल है, वाण्यो अकल उपाई ।
राई का भाव राते गया, अब टक्कै की सेर ढाई ।।

२७९३. राई को साख, पेठै को नातो ।

राई जितना छोटा साख एवं पेठे (कुम्हड़े) जितना बड़ा नाता एक समान ।

२७९४. राई घटै न तिल वधै, 'वेमाता का लेख ।

विधाता के लेख में यत्किंचित् भी घट-बढ़ नहीं होती ।

२७९५. राख पत, रखाय पत ।

तुम दूसरों की इज्जत करोगे तो दूसरे तुम्हारी इज्जत करेंगे ।

२७९६ राखी पून्यूं कै दिनां, श्रवण नछत्तर होय।
विरखा आछी होयसी, धान घणेरो होय।।
रक्षा बंधन (श्रावण शु० पूर्णिमा) को श्रवण नक्षत्र हो तो वर्षा एवं अन्न प्रचुर हो।

२७९७ राग, रसायण, निरतगत, नटबाजी, बैदंग।
अस्व चढण, व्याकरण पढण, जाणत जोतिस अंग।
धनख-बाण, रथ हांकबो, चित्त चोरी, ब्रह्म ग्यान।
जळ तिरबो, धीरज वचन, चौदा विद्या निधान।।
राग, रसायन, नृत्य, नटबाजी, वैद्यक, घुड़सवारी, व्याकरण व ज्योतिष का ज्ञान, धनुषबाण चलाना, रथ संचालन, दूसरे के चित्त को मोह लेना, ब्रह्म ज्ञान, तैरना और धीर गंभीर वाणी बोलना, ये चौदह विद्यायें मानी गई हैं और इनको जानने वाले को चौदह विद्या निधान कहते हैं।

राजस्थान की लोक-कथाओं में राजा भोज को चौदह विद्या निधान कहा गया है। यद्यपि चौदह विद्याओं के नामों में अन्तर पाया जाता है, तथापि चौदह विद्या संबंधी उल्लेख हजारों वर्ष पूर्व भी मिलते हैं। महाराजा संक्षोभ के खोह ताम्र अभिलेख वर्ष २०९ (सन् ५२८-२९ ई०) में महाराजा को चौदह विद्या स्थानों का तत्वज्ञ बतलाया गया है (चतुर्दशविद्यास्थान-विदितपरमार्थस्य)।

२७९८. राग रसोई पागड़ी कदे कदे बण जाय।
राग, रसोई और पगड़ी कभी कभी ही ठीक बैठ पाती हैं:

२७९९. रागो भलो न पिरागो।
दोनों ही एक जैसे हैं। दोनों में से एक भी भला नहीं।

२८००. राज को सिर ऊपर कर गैलो।
राज का रास्ता माथे के ऊपर से निकलता है।
राजा के अनुचित आदेश को भी मानना पड़ता है।

२८०१. राज पोपां बाई को, लेखो राई-राई को।
यह पोपां बाई का राज्य है जहाँ राई-राई का हिसाब ले लिया जाता है।

२८०२. राजा को दान, परजा को अस्नान।
राजा को जो पुण्य दान करने से होता है, प्रजा को तीर्थ-स्नान करने से ही हो जाता है।

२८०३. राजा को दूसरो, छेरी को तीसरो, रंक को रूसबो खासरखूसा।
राजा का दूसरा बेटा, बकरी का तीसरा और गरीब का रूठना कुछ भी नहीं। राजा का एक पुत्र ही उसका उत्तराधिकारी बनता था, दूसरे

भाइयों को तो वह जो कुछ दे देता, उसी पर उन्हें संतोष करना पड़ता था। बकरी के दो ही स्तन होते हैं, अतः उसका तीसरा बच्चा क्या चूंघे ? इसी प्रकार रंक का रूठना भी बे-मानी है, वह क्या कर सकता है ?

२८०४. राजा को बेटो केरड़ो मारो, म्हे क्यूं कैवां ?

राजा के बेटे ने बछिया मार दी, लेकिन हम क्यों कहें ?

२८०५. राजाजी कै तो सोनै का पागड़ा ? 'क आंकै गुड़ का होवै तो ई थोड़ा है।

राजा की सवारी को देख कर एक देहाती स्त्री ने आश्चर्य में भर कर अपनी साथिन से कहा कि राजाजी के तो सोने के 'पागड़े' (रकाब) हैं। इस पर दूसरी बोली कि हांजी, इनके क्या कमी ? इनके तो गुड़ के पागड़े हों तो भी थोड़े हैं।

उसकी दृष्टि में गुड़ जैसी दुर्लभ वस्तु कोई न थी।

२८०६. राजाजी कै बेटो जायां सै ई राजी।

चाहे मन से चाहे बे मन से, राजा के पुत्र होने पर सभी हर्ष प्रकट करते हैं।

२८०७. राजा जोगी अगन जळ, इणकी उळटी रीत।
डरता रहज्यो परसराम, थोड़ी पाळै प्रीत॥

राजा, योगी, अग्नि और पानी से डर कर ही रहना चाहिए। इनसे अधिक प्रीति करना अच्छा नहीं।

२८०८. राजा तो एक राम ई है।

सही माने में तो राजा केवल राम ही है।

२८०९. राजा बांधै दळ, बैद बांधै मळ।

राजा दल बांधता (एकत्र करता) है और वैद्य रोगी के मल को बांधता है। बंधकर मल आना स्वास्थ्य का लक्षण माना जाता है। कहावत भी है 'मळ में ई बळ है'।

२८१०. राजा मानै सो राणी, और भरै सै पाणी।

राजाओं के अनेक रानियां होती थीं, लेकिन जिस पर राजा की विशेष कृपा होती थी, उसी का अधिक दबदबा रहता था। राजा की चहेती होने से कभी कभी तो पासवानों का रुतबा भी रानियों से अधिक बढ जाता था।

रू० राजा मानै सो राणी, धरती मानै सो पाणी।

२८११ राजा रूठै नगरी राखै, हर रूठ्यां कां जाणां ?

राजा रूठता है तो उसके नगर या राज्य का परित्याग किया जा सकता है, लेकिन भगवान् रूठ जाए तो फिर ठौर कहां ?

२८१२. राड़ कै सिर-पग कोनी होवै ।
लड़ाई-झगड़े के सिर-पैर थोड़े ही होते हैं। झगड़ा तो अकारण भी हो जाता है।

२८१३. राड़ में जावां न रण में जूझां, आपकी कैवां न पराई बूझां ।
दूसरों से कोई प्रयोजन न रखने वाला आदमी ।

२८१४. राड़ सैं बाड़ भली ।
झगड़ा करने की अपेक्षा तो बाड़ कर लेना अच्छा है ।

२८१५. राणीजी घमाळ गावै तो सै जणी नाड़ हलावै ।
रानीजी घमार गाती हैं तो सभी स्त्रियां उनकी खुशामद में गरदन हिलाती हैं।

२८१६. राणीजी नै काणी ना कैवो, पीं'र नेड़ो ई है ।
रानीजी को कानी न कह देना अन्यथा पीहर नजदीक ही है, रूठ कर पीहर चली जाएँगी ।

२८१७. राणी नै काणी कुण कैवै ?
कानी होने पर भी रानी को कानी कौन कहे ?

२८१८. रात की कमाई पड़ी पाई ।
रात में जितना काम कर लिया जाए, वह नफे में है ।
रू० रात आगै के उंवार्ग है ।

२८१९. रात च्यानणी, बात आंख्यां देखी मानणी ।
रात तो चांदनी अच्छी, बात आंखों देखी सच्ची ।

२८२०. राबड़ी चोखी होवै तो ब्या में कोनी रांधै के ?
राबड़ी ही उत्तम-पदार्थ हो तो क्या विवाह में न रांधी जाए ?

२८२१. राबड़ी रांड ई कैवै, 'क मनै दांतां सैं खावो ।
राबड़ी को दांतों से चबाने की आवश्यकता नहीं पड़ती, लेकिन वह भी कहती है कि मुझे दांतों से चबा कर खाओ ।
जब कोई अदना आदमी विशेष सम्मान प्राप्ति के लिए उत्सुक हो ।

२८२२. राबड़ी रोटी खावतां-खावतां ई घाटो आसी तो धूळ तो फाकी ई कोनी जा ।
यदि राबड़ी-रोटी जैसा सामान्य खाना खाने से भी घाटा पड़ेगा तो पड़ेगा ही, क्योंकि धूल तो फाँकी ही नहीं जा सकती ।

२८२३. राबड़ी सैं कान चेप राख्या है ।
बड़ी कठिनाई से किसी प्रकार निर्वाह-मात्र कर पाते हैं ।

२८२४. राब तिहारो रोस, जीवतड़ो भूलूं नई ।
हे राबड़ी, तेरे रोष को मैं जीवन-भर नहीं भूल सकता ।

संदर्भ कथा—एक पंडित के घर में घाटा था और वह किसी प्रकार रावड़ी–रोटी खाकर अपना निर्वाह करता था। जब रावड़ी–रोटी खाते-खाते ऊब गया तो उसने बाहर जाने का विचार किया। उसका एक यजमान आगरा रहा करता था। पंडित उसके पास आगरा पहुँचा। सेठ ने सोचा कि पंडितजी और तो सब चीजें खाते ही हैं, अतः उनके लिए विशेष तौर पर रावड़ी बनाई गई। रावडी को देख कर पंडितजी खड़े हो गये और हाथ जोड़ कर बोले—

राब तिहारो रोस, जीवतड़ो भूलूं नईं।
छोडी थी सौ कोस, आई आगै आगरै॥

२८२५. **राम कह कर रहीम के कै'णो।**
जो एक बार कह दिया, उसे क्या पलटना ?

२८२६ **राम की डांग पर डेरो है।**
सारा काम राम–भरोसे है।

२८२७. **रामजी ऊपर चढ्यो देखै है।**
रामजी सब कुछ देखता है, चाहे कोई कितना ही छुप कर कुकर्म करे, उससे छिपा नहीं रहता।

२८२८ **राम झरोखै बैठ कर, सबका मुजरा लेय।**
जैसी जाकी चाकरी, वैसा ही फळ देय॥
जो जैसा करता है, भगवान् उसे वैसा ही फल देता है।

२८२९. **रामदेवजी नै मिल्या जिका ढेढ ई ढेढ।**
रामदेवजी को सब ढेढ ही मिले।
रू० रामदेवजी नै मिल्या जिका सै कामड़िया ई कामड़िया।

२८३० **राम राखै जीं नै कोई नीं ताखै।**
जिसका रक्षक भगवान् है, उसे कोई क्षति नहीं पहुँचा सकता।

२८३१. **रामलली कै तीन सै, रामलाल कै तीन।**
रामलली के चहेते तो तीन सौ हैं और रामलाल के तीन।
नर्तकी का नृत्य देखने के लिए तो अपार भीड़ जमा हो जाती है, लेकिन रामकथा सुनने वाले इने–गिने लोग।

२८३२. **रावण कै रोणियों ईं कोनी रैयो।**
रावण का परिवार बहुत बड़ा था (नौ लख पूत, सवा लख नाती), लेकिन उसकी मृत्यु पर कोई रोने वाला भी न रहा।
रू० रांड को रोणियों ईं कोनी।

२८३३ **रावतजी का नौ हळ चालै, साढे आठ पराया ।**
आधै हळ में चौथो पांती, रावत का हळ आया ।।
रावतजी के नौ हल चलते हैं जिनमें साढे आठ तो दूसरों के हैं, शेष आधे हल में उनका केवल चौथाई हिस्सा है, फिर भी वे हल रावतजी के ही कहलाते हैं ।
बिना बात का श्रेय ।

२८३४. **रावळी घोड़ी का सै असवार ।**
रनिवास की घोड़ी पर सभी सवार होना चाहते हैं

२८३५. **रावळै को तेल पल्लै में ईं चोखो ।**
रनिवास का तेल पल्ले में भी अच्छा ।
संदर्भ कथा—दिवाली आई तो रनिवास की सभी बांदियों आदि को तेल बांटा जाने लगा । एक औरत के पास तेल लेने के लिए कोई पात्र नहीं था, अतः उसने अपनी ओढनी का पल्ला आगे करके उसी में तेल डलवा लिया, जिससे तेल लेने वालियों में उसका भी नाम दर्ज हो गया और आगे के लिए उसकी लाग चालू रह गई ।
रू० रावळै को तेल, झोळी में ईं झेल ।

२८३६. **रावळै जीमां हां ।**
जो लोग दूसरों के यहां ही भोजन करते हैं, उन्हें अनाज आदि के भावों का पता क्यों हो ?
संदर्भ कथा—एक बारहठ दूसरे गांव गया तो किसी ने उससे पूछा—बारहठजी, आपके यहां बाजरे का क्या भाव ? बारहठजी बोले हमें क्या पता ? हम तो 'रावळै' जीमते हैं । उसने फिर पूछा कि घी का क्या भाव ? बारहठजी ने उत्तर दिया—घी भी वे ही डाल देते हैं ।

२८३७. **रिपिया थारी रात, जायो न कोई जलम सों ।**
जिस रात्रि में रुपये का जन्म हुआ, उस रात्रि में और कोई नहीं जन्मा अर्थात् रुपये जैसी करामात किसी अन्य में नहीं ।
रू० (१) रिपिया तेरी रात, दूजो नर जायो नईं ।
जे जायो परभात, तेरै जिसा गुण नईं ।।
(२) रिपिया तेरी रात, दूजो नर जलम्यो नईं ।
जे जलम्या दो च्यार, तो जुग में जीया नईं ।।

२८३८. **रिपिये की जड़ काळजै में होवै ।**
रुपये की जड़ कलेजे में होती है अर्थात् रुपया अत्यंत प्यारा लगता है ।

२८३९. **रिपियो जीं ताव घड़्यो जावै, वीं ताव ईं पाछो आवै ।**
(धात्विक) रुपया जिस ताव से घड़ा जाता है, उसी ताव से वापिस आता है । यदि ऋणदाता थोड़ी भी ढिलाई बरते तो रुपया नहीं आता ।

२८४० रिपियो तो आपको खोटो अर दोस परखणियें नै दे ।
रुपया तो अपना खोटा और दोष परखने वाले को दे ।

२८४१. रिपियो परखै बार-बार, मिनख परखै एक बार ।
रुपये को बार-बार परखते हैं, लेकिन मनुष्य को एक बार ही परखा जाता है ।

२८४२. रीझ खीझ दोनूं पचै, जंको के विसवास ?
जिस आदमी के रीझने या खीझने का आभास भी न मिले, उसका कोई भरोसा नही कि वह क्या कर टाले ।

२८४३. रुक्या काम तो रावण का ई रहग्या !
रुके हुए काम तो रावण के भी अधूरे ही रह गये ।
कहते हैं कि रावण आकाश को सीढ़ियां लगाना चाहता था, अग्नि को निर्धूम बनाना चाहता था एवं सोने में सुगन्ध करना चाहता था, लेकिन उसके ये काम पूरे नहीं हो पाये । हाँ, आधुनिक वैज्ञानिकों ने इनमें से दो काम तो पूरे कर दिये हैं—बिजली के रूप में अग्नि को निर्धूम बना दिया है एवं राकेट के माध्यम से आकाश को सीढ़ियां लगादी हैं ।

२८४४. रूंगासिये को राम फळै ।
बेईमानी करने वाले को भगवान् उसका फल देते हैं ।

२८४५ रुइया सुख सोइया, घीया न लूखा खाय ।
लोहा लकड़ा विणजतां, जलम अकारथ जाय ।।
रुई व कपड़े का व्यापार करने वाला आराम से सोता है, घी का व्यापार करने वाला लूखी रोटी नहीं खाता, लेकिन लोहे और काठ का कारोबार करने वालों का जन्म तो व्यर्थ ही जाता है ।
लोहे और काठ का व्यापार आरामदायक न होकर कष्टकर ही होता है ।

२८४६. रूप की रोवै करम की खा, रूप की विराणी पाणी नै जा ।
सुन्दर किन्तु मंद भाग्य वाली तो पानी भरती देखी जाती हैं एवं कुरूप होने पर भी भाग्यशालिनी ऐश करती है ।
रू० रूप की रोवै, करम की सुख नींद सोवै ।

२८४७. रूपलालजी गरू, और सै चेला ।
रुपया ही गुरु है, शेष सब चेले ।
आज के युग में रुपया ही सर्वप्रमुख है, शेष सब गौण ।

२८४८. रूपली पल्लै तो उजाड़ में चल्लै ।
पास में रुपया हो तो जंगल में भी मंगल हो जाता है ।
रू० जर पल्लै तो उजाड़ में चल्लै ।

२८४६. रेवड़ में कुण गयो ? 'क वावो,
'क वावो ना'रियां सें वेसी ।

रेवड़ की सुरक्षा हेतु रेवड़ के साथ कौन गया ? उत्तर मिला—वावा । इस पर प्रश्नकर्त्ता ने कहा—वावा तो भेड़ियों से भी अधिक मांस भक्षी है । भेड़िया तो आये न आये, लेकिन वावा तो वहां मौजूद ही है, अतः वह एकाध भेड़-वकरी को जरूर मार कर खा जाएगा ।

रू० (१) गायां में कुण गयो ? 'क गीधो ।
रोवो क्यूं नीं रांडो, रोज पड़्यो सीधो ।।
(२) गायां में कुण गयो ? 'क गोदो ।
तो मारद्यो विलोवणो मोदो ।।

२८५०. रे कैवै जिको तूं कुहावै ।

जो दूसरे को अरे कहता है, वह स्वयं अपने लिए तू कहलवाता है ।

२८५१. रैवै तो आपसें, नईं रैवै कोनी सागो वाप सें ।

स्त्री स्वयं अपने शील पर कायम रहना चाहे, तभी रह सकती है, अन्यथा किसी भी प्रकार से नहीं ।

२८५२ रोटी साटै रोटी, के पतळी के मोटी ?

रोटी के वदले रोटी, फिर इसमें पतली और मोटी क्या करना ?

२८५३. रोड़तां रोड़तां ईं ऊफणसी, जैंको तो कोई उपाव ई कोनी ।

यदि चूल्हे पर चढाई गई वस्तु तत्परता से रोड़ते रहने पर भी उफनती है तो इसका क्या इलाज ?

यदि पूरा प्रयत्न करने पर भी वात विगड़ती है तो क्या वश ?

रू० च्यारूं हाथ-पगां सें दावतां-दावतां ईं इज्जत जासी तो वीं को उपाव ई कोनी ।

२८५४ रोवण नै ईं वरियां को है नीं ।

रोने के लिए भी फुरसत नहीं है ।

संदर्भ कथा—एक किसान अपने समधी से मिलने उसके खेत पर गया । समधी ने उपालंभ के स्वर में कहा कि आजकल तो आपके दर्शन भी नहीं होते । आगन्तुक किसान ने कहा कि क्या करें, इतना अधिक काम रहता है कि मरने की भी फुरसत नहीं रहती । किसान की समधिन भी वहीं काम कर रही थी, समधी की वात सुन कर वह वोली—समधीजी ! कहीं ऐसा जुल्म न कर वैठना, आजकल हम फसल काटने में लगे हैं, ऐसे में तुम मर गये तो हमें रोने की भी फुरसत नहीं मिलेगी ।

२८५५. रोवती नै राखी, 'क सागै ई ले चाल ।

रोती हुई को दिलासा देकर चुप की तो कहने लगी कि मुझे तो अपने साथ ही ले चलो ।

२८५६. **रोवतो जावै जिको मुवै की खबर ल्यावै।**
जो पहले से ही किसी काम के लिए रोता-झींखता जाता है, वह किसी के मरने की खबर लेकर ही लौटता है।
रू० (१) रोवतो जावै जिको मरचोड़ै की सुणावणी लेकर आवै।
(२) रोवतो सो जावै, ठिणकतो सो आवै।

२८५७. **रोहण तपै किरतका बरसै, घूघूकार जमानो दरसै।**
यदि रोहिणी तपे और कृतिका बरसे तो भरपूर जमाना हो।

२८५८. **रोहण तो सारी तपै, आखो तपै जे मूर।**
पड़वा तपै जे जेठ की, तो निपजै सातूं तूर।।
रोहिणी एवं मूल खूब तपे और जेठ मास की प्रतिपदा भी तपे तो सातों प्रकार के अन्न पैदा हों।

२८५९ **रोहण बाजै म्रिग तपै, गैलो हाळी क्यूं खपै ?**
यदि रोहिणी नक्षत्र में आंधियां चलें और मृगशिरा नक्षत्र में गरमी पड़े तो *पगला किसान अपने को खेती के काम में क्यों खपाये ? क्योंकि अकाल पड़ेगा।*
रू० रोहण बाजै मिरगलो तपै, तो राजा झूर्फ परजा खपै।

२८६०. **लंका नै के मूंदड़ी दिखावै ?**
सोने की लंका को कोई क्या मुंदरी दिखलाये ?

२८६१. **लंका नै तो हड़मानजी त्रेता में ईं बाळदी ही।**
हनुमानजी ने लंका तो त्रेता में ही जलादी थी।

संदर्भ कथा—एक सुनारी के पास थोड़ा सोना था। उसने सोचा कि यदि इसे आभूषण बनाने के लिए देवर या जेठ को दूंगी तो वे खोट मिला देंगे, इसलिए जब जब वह अपने पीहर आई तो उसने अपने बाप को सोना देकर आभूषण बना देने के लिए कहा। बाप ने अपने बेटे से कहा कि बाई को इस सोने के आभूषण बना दो। लेकिन जब वह आभूषण बना रहा था तो बाप ने सोचा कि भाई कहीं बहिन का लिहाज करके सोने में खोट मिलाने से न रह जाए, इसलिए उसने संकेत करते हुए कहा कि राजा रामचन्द्र तो समदर्शी थे, वे कोई भेद भाव नहीं बरतते थे। इस पर लड़के ने अपने बाप को आश्वस्त करते हुए उत्तर दिया कि हनुमानजी ने लंका तो त्रेता में ही जलादी थी अर्थात् तुम जिस काम के लिए कह रहे हो, वह मैंने पहले ही कर दिया है।
रू० सुनार तो मां की हूंसली मांय सैं भी काढ ई ले।

२८६२ **लंका में किसा दाळदी कोनी होवै ?**
सोने की लंका में क्या दरिद्र नहीं रहते ?

२८६३. लंका में राम दुहाई फिरगी।
लंका में राम की दुहाई फिर गई।
सारी व्यवस्था एवं प्रशासन ही बदल गया।

२८६४. लंका में सै ई नौ गजा।
लंका में सभी नौ गज लंबे।
जहाँ सभी एक जैसे 'लांघा वलाय' जबरदस्त) हो, कोई घटकर न हो।

२८६५. लगाई है देखां लगैगी तो, नार पराई है फबैगी तो।
दूसरे की वस्तु को हड़पने की युक्ति तो भिड़ाई है, देखें क्या परिणाम निकलता है।

२८६६ लड़ण वेळा देये, बिछुड़ण वेळा ना देये।
दो साथियों में परस्पर मन-मुटाव का अवसर भले ही पैदा हो जाए, लेकिन उनके बिछुड़ने का अवसर न आये।

२८६७. लड़तां की तो मा ई दो होवै।
पारस्परिक लड़ाई के समय तो दो सहोदर भाइयों की माँ भी दो (अलग-अलग) हो जाती हैं अर्थात् वे जरा भी लिहाज नहीं बरतते।

२८६८. लडाई डीकरी, हलाई खीचड़ी बिगड़ै।
लड़की अधिक लाड से और खिचड़ी रोड़ने से बिगड़ जाती है।
खिचड़ी से यहाँ तात्पर्य चावल-मूंगों की खिचड़ी से है। सीजने से पहले रोड़ देने से चावल-मूंगों की खिचड़ी खराब हो जाती है। हाँ, मोठ बाजरे की खिचड़ी को रोड़ना आवश्यक होता है।
रोड़ना = डोई या चम्मच आदि से चलाना।

२८६९. लड़ाई में तो सिर ई फूटै, लाडू थोड़ा ई फूटै।
लड़ाई में तो सिर ही फूटते हैं, लड्डू थोड़े ही बटते हैं?
रू० लड़ाई में तो लाठी ई बरसै, लाडू थोड़ा ई बंटै?

२८७०. लड़ै बरोबर, रोवै बाद।
लड़ता तो बराबर है और रोता अलग से है।
लड़ाई भी बराबर करता है और शिकायत भी करता है।

२८७१. लदणियां ई लदै।
खर्च करने वाले ही खर्च कर सकते हैं।

२८७२. लांबा हेला, ओछी बीख।
शोर अधिक, देना-लेना कम।

२८७३. लांबी 'बां दूर ताईं पसरै।
लम्बी भुजा दूर तक फैलती है।
समर्थ और उदार व्यक्ति दूर वालों को भी सहयोग देता है।

२८७४. **लाख कमाया, जीवता आया ।**

जीवित घर आ गये, इसे ही लाख रुपये की कमाई समझो ।

रू० (१) लख नूंट्या ग्रे डूमणी, जे घर आवै डूम ।

(२) कुसळां आया धाड़वी, धाड़ै ऊपर धूळ ।

२८७५. **लाखां लोहां चम्मड़ां, पैली किसा वखाण ।**

वहू वछेरां डीकरां, नीमटियां परवाण ।

लाख, लोहा, चमड़ा, बहू, बछेड़े एवं पुत्र इनकी पहले से ही क्या प्रशंसा की जाए, ये कैसे निकलते हैं, इसका पता तो बाद में ही लगता है ।

२८७६. **लाज तो आंख्यां की होव ।**

लज्जा तो आंखों की होती है, घूंघट या परदे की नहीं ।

२८७७. **लाठी कै डर बानर नाचै ।**

बेंत के डर से बन्दर नाचता है ।

भय दिखलाने से काम होता है ।

२८७८. **लाठी टूटै न भाडो फूटै ।**

लाठी भी न टूटे और भांडा भी न फूटे ।

दोनों काम हो जाएँ । दोनों पक्ष संतुष्ट हो जाएँ ।

२८७९. **लाठी भींत विचालै आग्या ।**

लाठी और दीवार के बीच में आ गये, बच कर निकलने का कोई रास्ता नहीं ।

२८८०. **लाठी हाथ में तो सगळा साथ में ।**

लाठी हाथ में ता सभी साथ में ।

हाथ में लाठी होने से आदमी का हौसला बढ़ जाता है ।

२८८१. **लाडू की कोर चाखै जठै ई मीठी ।**

लड्डू की कोर जहां से भी चखी जाय, मीठी ही होती है ।

रू० मिसरी की रोटी खावै जठै सैं ई मीठी ।

२८८२. **लाडू पर तो भगवान को भी मन चालै ।**

लड्डू पर तो भगवान् का भी मन चलता है ।

सन्दर्भ कथा—एक बार मोतीचूर का लड्डू भगवान् के पास गया और बोला कि प्रभो, मुझे तो जो भी देखता है, खा जाने को लपकता है, मुझे अपनी रक्षा का कोई उपाय बतलाइये । इस पर भगवान् बोले कि मन तो मेरा भी ललचाता है, इसलिए तुम्हें जो कुछ कहना हो दूर से ही कहो ।

२८८३. **लाडू फूटसी जठै भोरो खिंडसी ई खिंडसी ।**

लड्डू फूटते है तो उनके छोटे-बड़े टुकड़े भी बिखरते ही हैं अर्थात् दूसरों के पल्ले भी कुछ न कुछ पड़ता ही है ।

२८८४. लातां का देव वातां सूँ कोनी मानैं ।

लातों के देवता बातों से नहीं मानते ।

जो समझाने-बुझाने से राह पर न आये और पीटने से ही माने ।

२८८५. लाद दे लदायदे लादण आळा साथ दे ।

जब कोई आदमी सारा ही काम दूसरों से करवाना चाहे ।

२८८६. लापरवाई सदां दुखदायी ।

लापरवाही सदैव हानिप्रद ही होती है ।

२८८७. लाबदया को ओड़ कोनी ।

लालसा का कोई अन्त नहीं ।

२८८८. लाय लागी, दोपारां की टेम अर जेठ को म्हीनो, फेर कीं नैं नेड़ै आवण दे ?

जेठ का महीना, दोपहर का समय और ऐसे समय में आग लग जाए तो वह किसे नजदीक आने दे ?

जब सारा ही बानक एक जैसा बन जाए ।

२८८९. लाय लाग्यां कुवो कद खुदै ?

आग लगने के बाद कब कुआं खुदे और कब उससे पानी निकाल कर आग बुझाई जा सके ?

रक्षा का उपाय पहले से ही करना चाहिए ।

२८९० लाल किनारी धोतियां, दो-दो मुरकी कान ।
वेग पधारो बाघजी, या सुनारां की जान ।।

संदर्भ कथा—सुनारों की एक बरात दूसरे गाँव जा रही थी । रास्ते में उन्होंने पड़ाव किया तो बाघजी नामक डाकू ने बरात को लूटना चाहा । लेकिन चूंकि सुनारों का पहनावा भी राजपूतों जैसा ही था, इसलिए उसने सोचा कि यह बरात कहीं राजपूतों की न हो । उसने भेद लेने के लिए अपने एक भेदिये को उनके पास भेजा । उस वक्त वे लोग 'अमल' (अफीम) कर रहे थे एवं एक दूसरे की मनुहार करते हुए कह रहे थे —'लो एक धांस तो और लो ।' इस पर भेदिया जान गया कि यह सुनारों की बरात है और उसने उपरोक्त कहावती दोहा कह कर बाघजी को शीघ्र धावा करने का संकेत दे दिया ।

२८९१. लाचल गळो कटावै ।

लालच गला कटवा देता है ।

लालच के वशीभूत होकर आदमी अपने प्राण गँवा बैठता है ।

रू० लालच बुरी बलाय ।

२८९२. **लिख-लिख भेजूं पत्तर में, तूं सत्तर में ना मैंतर में ।**

संदर्भ कथा—एक सेठ का वेटा किसी वेश्या में बुरी तरह अनुरक्त हो गया । इस पर सेठ ने उसे दिसावर भेज दिया । यद्यपि वह दिसावर चला गया, तथापि उसका मन उसी वेश्या में लगा रहा । एक वार उसका कोई मित्र 'देस' आने लगा तो सेठ के वेटे ने उसे एक कीमती उपहार दिया और कहा कि यह उपहार तुम मेरी ओर से अमुक वेश्या को दे देना और इतना ही कहना कि यह उपहार तुम्हारे सवसे अधिक प्रिय व्यक्ति ने भेजा है, वह झट से तुम्हें मेरा नाम वतला देगी । मित्र ने तदनुसार ही उपहार लाकर वेश्या को दिया और उसके सवसे प्रिय व्यक्ति का नाम पूछा । वेश्या ने उसे सत्तर नाम वतलाये, लेकिन उनमें सेठ के वेटे का नाम नहीं था । उसने कहा कि इनमें तो उसका नाम नहीं है । इस पर वेश्या ने याद कर के दो नाम और वतलाये, लेकिन उनमें भी सेठ के वेटे का नाम नहीं था । तव उसने अपने मित्र को लिखा कि तुम जिसकी याद में घुले जा रहे हो, उसे तो तुम्हारा नाम भी याद नहीं है—लिख-लिख भेजूं पत्तर में, तूं सत्तर में ना मैंतर में ।

२८९३. **लिख्या होवै जित्ताई मिलै ।**

भाग्य में जितना लिखा होता है, उतना ही मिलता है ।

रू० लिख्या है लिलाड़ लेख, वीं में नईं मीन मेख ।

२८९४. **लिछमी कँईं कै पीढो घाल कर कोनी वैठै ।**

लक्ष्मी किसी के यहाँ पीढा डाल कर नहीं वैठती अर्थात् किसी एक ही घर में स्थिर नहीं रहती ।

रू० लिछमी थिर कोनी रैवै ।

२८९५. **लीद ई खावै तो हाथी की खावै जिको पेट तो भरै ।**

चोरी आदि निंद्य कर्म करे भी तो ऐसा करना चाहिए कि जिससे भूख तो भाग जाए ।

'गुनाह और वेलज्जत', जैसा काम न करना चाहिए ।

२८९६. **लीप्यो-पोत्यो आंगणो, फैरी ओढी नार ।**

लिपा-पुता आंगन और उसमें शृंगार की हुई वहू का फिरना घर की शोभा है ।

२८९७. **लुगाई एक घर का दो घर करादे ।**

दो सगे भाई मिल-जुल कर एक घर में रह सकते हैं, लेकिन उनकी स्त्रियों को यह सह्य नहीं, वे एक घर के दो घर करवा कर ही सन्तुष्ट होती हैं ।

एक उदर का ऊपन्या, जामण जाया वीर ।
नारी कै पानै पड़्या, नईं तरकारी में सीर ।।

२८९८. लुगाई का बरस नईं पूछणा चाये ।
स्त्री से उसकी उम्र नहीं पूछनी चाहिए ।

२८९९. लुगाई की अक्कल गुद्दी में होवै ।
स्त्री की बुद्धि गरदन के पिछले हिस्से में होती है अर्थात् हानि उठा लेने के बाद ही वह सोचती है ।
रू० लुगायां में अक्कल होती तो पागड़ी ई कोनी बांधती के ?

२९००. लुगाई की कमाई मोट्यार खावै तो टांटिये को ई विष उतरज्या ।
स्त्री की कमाई पर पलने वाले पति का स्वभाव बर्रे जैसा उग्र हो तो भी उसकी उग्रता समाप्त हो जाती है ।

२९०१. लुगाई कै पेट में टाबर खटाज्या, पण बात कोनी खटावै ।
स्त्री के पेट में बच्चा खटा जाता है, लेकिन बात नहीं खटाती ।
वह रहस्यपूर्ण बात को भी गुप्त नहीं रख पाती ।

कहते हैं कि महाभारत के युद्ध के बाद जब कुन्ती ने युधिष्ठिर को यह बतलाया कि कर्ण भी तुम्हारा भाई था तो युधिष्ठिर को बड़ा दुख हुआ और कुन्ती से बोला कि यह बात तुमने हमें पहले क्यों नहीं बतलाई ? इसके साथ ही युधिष्ठिर ने यह शाप भी दिया कि आगे से नारी किसी बात को छिपा कर नहीं रख पायेगी ।

२९०२. लुगाई को खसम मोट्यार, मोट्यार को खसम मांगतोड़ो ।
स्त्री का खसम आदमी और आदमी का खसम ऋणदाता ।

२९०३. लुगाई लड़ी अर कूवै में ।
स्त्री लड़ी और कुएँ में गिरी ।
घर में लड़ाई-झगड़ा होने पर स्त्रियां प्रायः कुएँ में गिरकर आत्महत्या कर लेती थीं ।

२९०४. लुट्यां पीछै डूमणी, भागी बारा कोस ।
लुट जाने के बाद डोमनी बारह कोस तक भागती ही चली गई ।
काम बिगड़ जाने के बाद तत्परता दिखाना व्यर्थ है ।

पद्य—रात्यूं चाली ऊंगती, दिन में आयो होस ।
लुट्यां पीछै डूमणी, भागी बारा कोस ।।

२९०५ लूंकी कै लख उपाय ।
लोमड़ी अनेक उपाय जानती है ।
जो आदमी बहुतेरे हथकण्डे जानता हो ।

२६०६ लूंट को मूसळ ई चोखो ।
लूट में प्राप्त मूसल ही अच्छा ।
मुफ्त में जो मिले वही अच्छा ।

२६०७. लूखा भोजन मग वहण, वडका बोली नार ।
मंदर चुवै टपूकड़ा, पाप तणां फळ च्यार ।।
लूखा भोजन, पैदल यात्रा, बढ़ बढ़ के बोलने वाली स्त्री एवं टपकने वाला घर ये चारों पापों के परिणाम स्वरूप ही मिलते हैं ।

२६०८ लूखो भोजन, भूत भोजन ।
लूखा भोजन भूतों का भोजन माना गया है ।

२६०६. लूण फूट फूट कर नीकळै ।
नमक हरामी करने वाले को समुचित फल भोगना पड़ता है ।

२६१०. लूण बखेरै जिकै नै आंख्यां सैं चुगणों पड़ै ।
नमक को जो व्यर्थ में इधर-उधर बिखेरता है, उसे वह नमक आंखों से उठाना पड़ता है ।

२६११ लूण विना, पूण रसोई ।
नमक के अभाव में भोजन पौना होता है ।
व्यंजनों में चाहे कितने ही मसाले डाले जाएँ, नमक के अभाव में वे फीके रहते हैं (लवन बिना बहु व्यंजन जैसे) ।

२६१२ लूली लेव देवै तो दो जणां कड़ सामै ।
लूली लिपाई करती है तो दो आदमी उसकी कमर को सहारा देने के लिये चाहिएँ ।
रू० लूली भारी काढै तो दो जणां वीं की कड़ सामै ।

२६१३. लेकर दियो, कमाकर खायो, तो झख मारण नै जग में आयो ?
यदि लिया हुआ ऋण लौटायें और कमा कर खायें तो क्या झख मारने को इस दुनिया में आये हैं ।
जो लेकर देना और कमाकर खाना हराम समझते हों ।

२६१४. लेख मिटाया ना मिटै ।
भाग्य के लेख मिटाये नहीं मिटते ।

२६१५. लेखो चोखो, प्रीत चौगणी ।
दोनों तरफ हिसाब साफ हो तो प्रीति चौगुनी बढ़ती है अन्यथा उसे टूटते देर नहीं लगती ।

२६१६. लेणा एक न देणा दोय ।
कोई आनी जानी नहीं—

दूर देस सें साजन आया, ऊंची मेंड़ी पिलंग बिछाया ।
खाय-पीय कर रहिया सोय, लेणा एक न देणा दोय ।।
तुम एक लेते नहीं, मैं दो देता नहीं ।

संदर्भ कथा—एक कछुवे और कौवे में मित्रता थी । कछुवा एक बड़े ताल में रहता था और कौवा एक उसके किनारे एक वृक्ष पर । एक दिन किसी चिड़ीमार ने कौवे को अपने जाल में फँसा लिया तो कछुवे ने कौवे से कहा कि तुम कौवे को छोड़ दो, मैं तुम्हें कौवे के बदले एक कीमती मोती दे दूंगा । चिड़ीमार के हां भरने पर कछुवे ने मोती ला दिया । लेकिन मोती को देख कर चिड़ीमार को लालच हो आया और उसने कछुवे से कहा कि पहले तुम मुझे इसकी जोड़ी का एक और मोती लाकर दोगे तभी मैं कौवे को छोड़ूंगा । कछुवे ने उससे कहा कि मैं तुम्हें मोती ला दूंगा, तुम कौवे को छोड़ दो । इस पर चिड़ीमार ने कौवे को छोड़ दिया ।

कछुवे ने पानी में डुबकी लगाई तथा उसे एक मोती और ला दिया । लेकिन चिड़ीमार बोला कि यह इसकी जोड़ी का मोती नहीं है । इस पर कछुवे ने उससे कहा कि एक बार तुम मुझे वह मोती दो तो मैं उसकी जोड़ी का मोती ढूंढ कर ला दूं चिड़ीमार ने मोती दे दिया और कछुवा पानी में जाकर बैठ गया । कुछ देर की प्रतीक्षा के बाद जब चिड़ीमार ने कछुवे को पुकारा तो कछुवे ने वहीं से जवाब दे दिया—

खुदा करै सो होय, लेणा एक न देणा दोय ।
अर्थात् खुदा जो करता है, वही होता है । तुम एक मोती लेते नहीं और मैं दो देता नहीं ।

२९१७. **लेय उबासी कूतरो, आंख्यां बरसावै तोय ।**
आभै सामो जोय तो, मेह घणेरो होय ।।
यदि कुत्ता उबासी ले, उसकी आंखों से पानी गिरे और वह आकाश की तरफ देखे तो वर्षा खूब हो ।

२९१८. **ले ये फुल्ली पैलो फेरो, यो मरज्या तो और भलेरो ।**
ले फुल्ली (नाम विशेष) पहला फेरा ले, यदि यह मर जाये तो इससे अच्छा दूसरा तैयार है ।
वह दुराचारिणी स्त्री जो बार-बार विवाह करे ।

२९१९. **ले रछाणी बैठ्यो नाई, नायण नै ली पास बुलाई ।**
चढ्यो काट राछां कै माहीं, आगम बिरखा देय बताई ।।
नाई के राछों (उस्तरा आदि) पर काट चढना वर्षा के आगमन की पूर्व सूचना है ।

२६२०. **ले ले करयां तो डाकण ई' को लेनी।**
ले, ले करने से तो डाकिन भी बच्चे को नहीं लेती।

२६२१. **लेवै रोक बतावै नारो, मांगै तो काढ़ै तरवारो।**
नकद ऋण लेकर बैल बतलाता है एवं मांगने पर तलवार निकाल लेता है। आजादी से पूर्व तक अधिकतर ठाकुर प्रायः ऐसा ही करते थे।
रू० देख्यो रांगड़ थारो भायला चारो।
दियो तो रोक बतावै नारो,
मैं पकड़यो नारो तो तैं काढ्यो तरवारो।

२६२२. **लोभै लाग्यो वाणियों, चूंटी लागी गाय।**
वावड़े तो वावड़े, नईं आगड़ै ई जाय॥
लोभ लगा बनिया एवं हरे अंकुरों को चरती हुई गाय वापिस फिरें तो फिरें अन्यथा ये आगे ही बढ़ते रहते हैं।

२६२३. **'लो जाणै लुहार जाणै, खाती की बलाय जाणै।**
लोहा जाने और लुहार जाने, खाती को इनसे क्या प्रयोजन ?

२६२४. **ल्या वांदी कोई ऐसा नर, पीर ववरची भिस्ती खर।**
ज्योतिष, रसोई, पानी लाने एवं बोझा ढोने का काम भी ब्राह्मण अकेला ही कर लेता था।

२६२५. **वकील को हाथ पराये गोजिये में।**
वकील का हाथ अपने आसामी की जेब में रहता है।

२६२६. **वळै न ढोलो पावणो, वळै न वागड़ देस।**
ये पुर पट्टन ये गली, बहुरि न देखैं आय।

२६२७. **वाही नार सुलाखणी, जां कै कोठी धान।**
वही नारी सुलक्षणी है, जिसकी कोठी धान से भरी रहती है। जो अन्य वस्तुओं की अपेक्षा अन्न संग्रह को अधिक महत्व देती है।

२६२८. **वेस्या वरस घटावै, जोगी वरस बधावै।**
वेश्या हमेशा अपने को कमसिन प्रकट करती है और योगी अपनी उम्र बढ़ा कर बतलाता है। इसीसे दोनों का सिक्का जमता है।

२६२९. **संख अर खीर भरयो।**
शंख एवं खीर भरा, फिर और क्या चाहिए ?
सोने में सुहागा।

२६३० **संगत को असर आये बिना कोनी रैवै।**
संगति का असर आये बिना नहीं रहता। आदमी जैसी संगति में रहता है, वैसे ही गुण-अवगुण ग्रहण कर लेता है।

इस संदर्भ की एक कथा है कि एक वनजारा अपनी 'वाळद' सहित एक तालाव के किनारे ठहरा हुआ था। वहीं एक ग्वाला अपने रेवड़ को पानी पिला रहा था और स्वयं भी जानवरों की तरह पानी में मुँह डालकर पानी पी रहा था। वनजारे ने ग्वाले की यह हरकत देखी तो उसने वनजारिन से कहा कि यह 'तुख्म ताशीर' है, लेकिन वनजारिन ने कहा कि नहीं, यह सोहवत (संगति) का असर है। दोनों में विवाद वढ़ गया और वनजारा अपनी वनजारिन को उस ग्वाले के पास छोड़ कर चला गया। वनजारिन ने उसे पढ़ाया-लिखाया, अच्छी संगति में रखा और उसे सुसभ्य वना दिया। वह राजा के दरवार में जाने लगा और राजा ने उसे नगर का 'जकाती' वना दिया। अगली वार वनजारा उस नगर में आया तो उसे उसी जकाती के आगे जकात के मामले को लेकर हाथ-पैर जोड़ने पड़े। उसने उसे पहचाना नहीं। लेकिन वनजारिन भी वहीं थी, उसने अपने पति को उसका सही परिचय दिया तो वनजारा मान गया कि आदमी जैसी सगति में रहता है, वैसा ही वन जाता है।

२६३१. **संगत वडां की कीजिये, वढत वढत वढ जाय।**
वकरी हाथी पर चढी, चुग चुग कूंपळ खाय।।
संगति हमेशा वड़ों की ही करनी चाहिए। वकरी ने हाथी की संगति की तो हाथी ने उसे अपनी पीठ पर चढाली और अव वह चुन-चुन कर वृक्षों की हरी कोंपलें खा रही है।

२६३२. **संगत सार अनेक फळ, भूंड भँवर कै संग।**
फुलड़ां चढ हर कै चढ्यो, चरण पखाळै गंग।।
एक भूंडिये की संगति एक भ्रमर से हो गई और वह भी उसके साथ फूल में वंद हो गया। अन्य फूलों के साथ वह फूल भी शिवजी पर चढाया गया और गंगाजल से सिंचित हुआ। भ्रमर की संगति से ही उसे यह सौभाग्य प्राप्त हो सका।
भूंडिया = गोवर में रहने वाला एक पंखयुक्त कीट।

२६३३. **संतोष में ईं सुख है।**
संतोष में ही सच्चा सुख है।
जव आवे संतोप धन, सव धन धूरि समान।

२६३४. **संदेसां खेती कोनी होवै।**
संदेशों से खेती नहीं होती। खेती करने वाले को स्वयं उसमें खपना होता है।
रू० संदेसां विणज, पर हाथां खेती ?

२६३५. **संपत में लिछमी को वासो।**
एकता में लक्ष्मी का निवास है।

सन्दर्भ कथा—(१) एक सेठ को स्वप्न में लक्ष्मीजी ने दर्शन दिये और कहा कि अब मैं तुम्हारे यहां से जा रही हूँ। सेठ ने लक्ष्मीजी से रहने के लिए बड़ी विनय की, लेकिन लक्ष्मीजी ने कहा कि मैं तो नहीं रह सकती, तुम्हें और कोई चीज मांगनी हो तो मांग सकते हो। तब सेठ ने कहा कि मेरे घर में सदा 'सम्पत' (एकता, पारस्परिक मेल) बनी रहे। इस पर लक्ष्मीजी बोली कि जहां आपस में मेल रहता है, वहीं मैं रहती हूँ, इसलिये मुझे भी अब यहां रहना ही होगा।

(२) एक सेठ के घर में भूख ने डेरा डाल दिया, अन्न के लाले पड़ गये तो सेठ सभी घरवालों को लेकर अन्यत्र चला। रास्ते में जंगल पड़ा तो उसने सोचा कि चलते-चलते कुछ लकड़ियां काट कर ले चलें तथा कुछ रस्सियां बट लें तो पास के शहर में इन्हें बेच कर कुछ पैसे प्राप्त कर लेंगे। सेठ के कहते ही सब लोग काम में जुट गये। वहीं वृक्ष पर एक भूत रहता था। उनको इस प्रकार जुटे देखकर वह डर गया और उसने आकर सेठ से पूछा कि तुम लोग क्या करना चाहते हो? सेठ ने उत्तर दिया कि इन रस्सियों से तुझे बांध कर ले जाएंगे। भूत डर गया और बोला कि तुम ऐसा न करो, मैं तुम्हें काफी धन दे दूंगा। सेठ के हां भरने पर भूत ने उसे प्रचुर धन दे दिया और सेठ उस द्रव्य को लेकर सपरिवार अपने घर लौट आया।

उसके पड़ोसी ने सेठ से पूछा तो सेठ ने सारी घटना उसे बतला दी। अब पड़ोसी भी अपने सब घर वालों को लेकर उसी स्थान पर पहुँचा। उसने सबको लकड़ियां तोड़ने और रस्सियां बटने के लिये कहा, लेकिन किसी ने कहा—मैं थक गया हूँ, किसी ने कहा—मुझे नींद आ रही है, किसी ने कहा कि मुझे भूख लगी है। उन सब में जरा भी एकता नहीं थी। उनको देखकर भूत नीचे उतरा और उसने मुखिया से पूछा कि तुम क्या करना चाहते हो? उसने जवाब दिया कि हम तुझे बांधकर ले जाएंगे। इस पर भूत बोला कि तुम अपने घरवालों को ही एकता के सूत्र में नहीं बांध पा रहे हो तो मुझे क्या बांधोगे? यहां से अविलम्ब भाग जाओ, नहीं तो सबको मार डालूंगा। इस पर वह सबको साथ लेकर वहां से उसी समय भाग आया।

२९३६. **सक्करखोरै नै सक्करखोरो मिलई ज्या।**

जैसे को तैसा मिल ही जाता है।

२९३७. **सगळां नै काम प्यारो है, चाम प्यारो कोनी।**

सबको काम प्यारा है, चाम नहीं।

इस आशय की एक प्रसिद्ध बाल कथा है जिसका सारांश यह है कि हलदी और सोंठ दो बहिनें थीं। एक बार हलदी अपने ननिहाल गई तो

राह में जिसने भी जिस काम के लिए कहा, वह करती गई और ननिहाल में भी खूब दौड़ दौड़ कर काम करती रही। इसलिए वह सब के मन भा गई और जब लौटने लगी तो सब की यही इच्छा रही कि हलदी यहाँ से न जाए। लेकिन जब वह जाने लगी तो सभी ने उसे तरह-तरह की चीजें दीं। रास्ते में भी उसने जिनका काम किया था, उन्होंने भी उसे विभिन्न प्रकार की चीजें दीं। जब वह घर पहुँची तो सोंठ के मन में डाह पैदा हुई और वह भी ननिहाल के लिए चल पड़ी। लेकिन न तो रास्ते में उसने किसी का कोई काम किया और न ननिहाल में ही। इसलिए कुछ समय बाद ही उन्होंने मामूली चीजें देकर सोंठ को वापिस भेज दिया। राह में भी उसे कुछ नहीं मिला। घर आकर जब उसने अपनी माँ से इसकी शिकायत की तो माँ ने यही कहा कि सब को काम प्यारा है, हलदी ने काम किया, इसलिए उसे अनेक प्रकार की चीजें मिलीं, तू ने काम नहीं किया, इसलिए तुझे क्या मिलता ?

२६३८ सगळां नै राजी राखणो दो'रो।

सब को खुश कर पाना अत्यंत कठिन है।

संदर्भ कथा—एक वृद्ध पिता अपने युवा पुत्र के साथ घोड़ी पर चढा चला जा रहा था। इस पर गांव वालों ने कहा कि देखो, ये कैसे निर्दयी हैं जो एक घोड़ी पर दोनों लद गये हैं। इस पर बेटा पैदल चलने लगा तो राह चलते लोग कहने लगे कि देखो, बेचारा लड़का तो पैदल चल रहा है और बाप इतना बड़ा होकर भी स्वयं घोड़ी पर चढा चलता है। इस पर बाप पैदल चलने लगा और बेटा घोड़ी पर सवार हो गया तो आगे मिलने वाले लोगों ने कहा कि देखो कैसा जमाना आ गया है, जो बूढा बाप तो पैदल चलता है और नौजवान बेटा घोड़ी पर सवार है। तब दोनों ही पैदल चलने लगे तो लोग बोल पड़े—इन भाग्यहीनों को तो देखो जो पास में घोड़ी होने पर भी पैदल चल रहे हैं।

२६३६. सगळै करमां की बाजै है।

सब जगह भाग्य ही काम करता है।

२६४०. सगाई दो जणां, ब्या सौ जणां।

सगाई तय करने में दो आदमी ही पर्याप्त होते हैं एवं विवाह के अवसर पर अधिक आदमियों से शोभा होती है।

रू० सगाई दोवां, ब्या सोवां।

२६४१. सगो सगै की जड़, आप तो बावै सठवां सगै न बतावै दड़।

एक समधी दूसरे का हितैषी होता है, वह स्वयं घटिया जमीन जोत कर समधी को तैयार की हुई भूमि जोतने के लिए बतलाता है।

रू० सगो सगै की जड़, मार खूंसड़ा फड़ांफड़ (व्यंग्य)

२६४२. **सगो समरथ कीजिए, जद–कद आवै काम ।**
समर्थ को समधी बनाना चाहिए जो वक्त पड़ने पर काम आये ।

२६४३. **सज्जन सोई जाणिये, चोड़ै देवै वजाय ।**
सज्जन उसे ही समझना चाहिए जो स्पष्ट बात कहदे ।
रू० साफ कै'णां, सुखी रै'णां ।

२६४४. **सत मत छोडो सूरमा, सत छोड़्यां पत जाय ।**
सत की बांधी लिच्छमी, फेर मिलैगी आय ।।
आदमी सत्य पर दृढ रहे तो गई हुई लक्ष्मी भी लौट आती है ।

२६४५. **सतलड़ी लभुं लभुं करै है ।**
सतलड़ी मिलने ही वाली है ।
संदर्भ कथा—दो नशेबाज बैठे गपशप कर रहे थे । एक ने कहा कि यदि इस वक्त मुझे एक सतलड़ी (सात लड़ियों की माला) मिल जाए तो कैसा रहे ? दूसरा बोला कि सतलड़ी मिल जाए तो चार मेरी और तीन तुम्हारी । इसी बात को लेकर दोनों में तकरार बढ गई और दोनों लड़ मरे । दोनों की बात सुन कर किसी ने पूछा कि वह सतलड़ी है कहाँ, जिसके लिए लड़ रहे हो ? इस पर दोनों बोले कि सतलड़ी अभी मिली कहाँ है, लेकिन संभव है, जल्दी ही मिल जाए ।

२६४६. **सती सराप देवै नीं, छिनाळ को सराप लागै नीं ।**
अपनी महानता के कारण सती तो शाप देती नहीं और छिनाल का शाप फलता नहीं, इसलिए शाप के डर से क्यों डरें ?

२६४७. **सदां एकसी कोनी रैवै ।**
सब दिन एक जैसे नहीं होते ।
किसी के सदा अच्छे दिन नहीं रहते तो बुरे भी नहीं रहते ।

२६४८. **सदां दिवाळी संत कै, आठूं पहर अनंद ।**
संत के लिए तो सदा दीवाली ही रहती है, वह हर परिस्थिति में मगन रहता है ।
रू० सावण सूको न भादुवो हरचो ।

२६४९. **सदां न जग में जीवणा, सदां न काळा केस ।**
मनुष्य अजर-अमर नहीं होता । वह बूढा भी होता है और मरता भी है, इसलिए जो भी सत्कार्य कर सके, कर लेना चाहिए ।

२६५०. **सदां भवानी दाहणी, सनमुख रहे गणेस ।**
पांच देव रच्छा करै, विरमा विसनु महेस ।।
भवानी और गणेश सदा अनुकूल रहें एवं ब्रह्मा, विष्णु और शिव सहित ये पांचों हमारी रक्षा करें ।

२६५१. सपूत को कमाई में सगळां को सीर ।

सपूत की कमाई में कुल, परिवार के अतिरिक्त समाज का भी हिस्सा रहता है क्योंकि वह अपने धन का उपयोग दूसरों के हित में करता है ।

रू० सपूत को सौ पीढी सीर ।

२६५२. सपूत तो पाड़ोसी को ई चोखो, जिको ओड़ी वरियां आडो आवै ।

सपूत तो पड़ोसी का भी अच्छा जो वक्त पड़ने पर काम आता है ।

२६५३. सब सैं भलो चुप ।

मौन रहना सब से अच्छा ।

संदर्भ कथा—दो पडोसिनें आपस में खूब लड़ती थीं । रोटी खा-पीकर जैसे ही वे निवृत्त होतीं, वाक्युद्ध में जुट जातीं और शाम तक वैसे ही झगड़ती रहतीं । एक स्त्री के बेटे की बहू आई तो उसने अपनी सास को कुछ लड्डू दिये और कह दिया कि जब पड़ोसिन लड़ने के लिए आये तो तुम ये लड्डू खाती रहना, कुछ बोलना नहीं । कुछ समय बाद पड़ोसिन ने आकर वाक्-युद्ध शुरू किया, लेकिन वह कुछ नहीं बोली और लड्डू खाती रही । इससे वह थक कर जल्दी चली गई । बहू ने तीन-चार दिन तक यही नुसखा काम में लिया और पड़ोसिन ने आना बन्द कर दिया ।

रू० मूरख को मुख बांवई, निकसत वचन भुजंग ।
ता की औषध मौन है, विष नहीं व्यापै अंग ।।

२६५४. सबूरी बड़ी होवै ।

सब्र करना बड़ी बात है ।

२६५५. समदर में खस खस कै दाणै को के थाग लागै ?

समुद्र में खसखस के दाने की क्या बिसात ?

खसखस = पोस्ते का दाना जो आकार में राई के दाने के बराबर होता है । सोना तोलने के लिए इसका उपयोग किया जाता था और सोना तोलने की यह सबसे छोटी इकाई होती थी ।

८ खसखस = १ चावल, ८ चावल = एक रत्ती ।

२६५६. समदर में रह कर मगरमच्छ सैं वैर कोनी खटावै ।

समुद्र में रह कर मगर से वैर नहीं निभ सकता ।

२६५७. समदर सुसै तो ई गोडां सुधो पाणी लाधज्या ।

समुद्र सूखता है तो भी घुटनों जितना पानी तो रह ही जाता है । किसी संपन्न व्यक्ति का धन छीज जाता है तो भी उसके पास बहुत कुछ मिल जाता है जो किसी सामान्य आदमी के पास नहीं मिल पाता ।

२९५८. समरथ नै दोष कोनी ।

समर्थ को दोष नहीं ।

समरथ कहुँ नहि दोषु गोसाईं ।

२९५९. समै दिवाळी, पोकर न्हाण ।

दीपावली और पुष्कर का स्नान । दीपावली के अगले दिन ही पुष्कर स्नान प्रारम्भ हो जाता है । पुष्कर हिन्दुओं का बड़ा तीर्थ है । कार्तिक शुक्ला एकम से पूर्णिमा तक यहां मेला लगता है और तीर्थ यात्री स्नान करके पुण्य लाभ लेते हैं ।

२९६०. समै वड़ी बळवान है, नर को के बळवान ।
भीलां लूंटी गोपियां, वो ई अरजन वै ई बाण ।।

समय ही बलवान् है, समय के सामने बड़े से बड़ा आदमी भी कुछ नहीं । समय पलटने से जगत् विख्यात धनुर्धर अर्जुन के देखते-देखते भीलों ने गोपियों को लूट लिया, न उसकी धुनर्विद्या काम आई न उसके बाण ।

२९६१. सरकणै में सुनार बैठ्यो है, खोटो खरो परखा लेई ।

संदर्भ कथा—एक चमार और एक सुनार साथ-साथ किसी गाँव जा रहे थे । जंगल में उन्हें दो लुटेरे मिल गये । सुनार तो 'सरकने' में छुप गया, लेकिन लुटेरों ने चमार को पकड़ लिया । उसके पास केवल चांदी का एक रुपया मिला जो उन्होंने छीन लिया । चमार ने सोचा कि मैं तो लुट गया, लेकिन सुनार बच गया । इसलिए उसे पकड़वाने की मंशा से उसने लुटेरों से कहा कि सरकने में सुनार बैठा हुआ है, मेरा रुपया उससे अभी परखवालो, फिर मैं जिम्मेदार नहीं होऊंगा । तब उन्होंने सुनार को जा पकड़ा और उसके पास जो कुछ मिला, लेकर चलते बने । लेकिन अब चमार को संतोष हो गया ।

सरकना = कांस की जाति का एक क्षुप ।

२९६२. सरदारी बिचारी, रै कर बोली नारी ।
जी कर मांग्या दम्मां, ऐ तीनूं काम निकम्मां ।

सरदारी या सत्ता बेचारी बन जाए अर्थात् उसकी अवमानना होने लगे, पत्नी अपने पति को 'अरे' कह कर पुकारे एवं ऋणदाता जी हुजूरी से ऋण की वसूली करना चाहे तो ये तीनों ही काम निरर्थक हैं ।

२९६३. सरप जे निगळै सरप नै, स्याम सेत को भेद ।
काळ पड़ै काळो गिल्यां, सम्वत करै सफेद ।।

यदि काला सांप सफेद सांप को निगल जाए तो दुर्भिक्ष एवं सफेद सांप काले को निगले तो सुभिक्ष हो ।

२६५१. सपूत की कमाई में सगळां को सीर ।
सपूत की कमाई में कुल, परिवार के अतिरिक्त समाज का
है क्योंकि वह अपने धन का उपयोग दूसरों के हित में कर
रू० सपूत को सौ पीढी सीर ।

२६५२ सपूत तो पाड़ोसी को ई चोखो, जिको ओड़ी वरियां क
सपूत तो पड़ोसी का भी अच्छा जो वक्त पड़ने पर काम

२६५३. सब सें भली चुप ।
मौन रहना सब से अच्छा ।

संदर्भ कथा—दो पडोसिनें आपस में खूब लड़ं
जैसे ही वे निवृत्त होतीं, वाक्युद्ध में जुट जातीं
झगड़ती रहतीं । एक स्त्री के वेटे की वहू आई तो उ
लड्डू दिये और कह दिया कि जब पड़ोसिन लड़ने
लड्डू खाती रहना, कुछ बोलना नहीं । कुछ समय
वाक्-युद्ध शुरू किया, लेकिन वह कुछ नहीं बोली
इससे वह थक कर जल्दी चली गई । वहू ने तीन-च
काम में लिया और पड़ोसिन ने आना वन्द कर दिया
रू० मूरख को मुख वांबई, निकसत वचन भुजंग ।
ता की औषध मौन है, विष नहीं व्यापैं अंग ।।

२६५४. सबूरी बड़ी होवै ।
सब्र करना बड़ी बात है ।

२६५५. समदर में खस खस कै दाणै को के थाग लागै ?
समुद्र में खसखस के दाने की क्या विसात ?
खसखस = पोस्ते का दाना जो आकार में राई के दा
सोना तोलने के लिए इसका उपयोग किया जाता
यह सबसे छोटी इकाई होती थी ।
८ खसखस = १ चावल, ८ चावल = एक रत्ती ।

२६५६. समदर में रह कर मगरमच्छ सें बैर कोनी खटावै ।
समुद्र में रह कर मगर से वैर नहीं निभ सकना

२६५७. समदर सुसै तो ई गोडां सुधो पाणी लाधज्या ।
समुद्र सूखता है तो भी घुटनों जितना पानी तो र
संपन्न व्यक्ति का धन छीज जाता है तो भी उसके पा
है जो किसी सामान्य आदमी के पास नहीं मिल पाता

२९७०. सांप कै डस्योड़ै नै दीतवार कद आवै ?

सांप के काटे हुए को रविवार कब आये ?

जब उपचार की तत्काल आवश्यकता हो और उपचार करने वाला कहे कि अमुक दिन आना।

झाड़-फूंक करने वाले बहुधा किसी निर्धारित दिन को ही झाड़ा लगाते है।

रू० संझ्या कै मरयोड़ै नै दिन कद ऊगै ?

२९७१. सांप कै बचिये को के छोटो अर के बडो ?

सांप के बच्चे का छोटा और बड़ा क्या ? छोटा सांप भी जहरीला होता है।

२९७२. सांप कोनी देख्यो, साप की लीक ई देखी।

झूठा आदमी जो बहुत झूठ बोलता है, लेकिन अत मे यथार्थ पर आ जाता है।

सन्दर्भ कथा – एक झूठे आदमी ने आकर कहा कि आज तो सौ सांप एक ही जगह पर देखे। लेकिन लोगो के बार बार पूछने पर सांपो की संख्या घटती गई और अंत में वह बोला,कि सांप तो एक भी नही देखा, लेकिन सांप की लकीर जरूर देखी।

२९७३. सांप चालती मौत है।

सांप तो चलती हुई मृत्यु है।

२९७४. सांप न होता तो गूगो कुण धोकतो ?

यदि सांप न होते तो गोगा की पूजा कोई क्यों करता ?

यदि दुष्ट न होते तो भले आदमियों का कौन पूछता ?

गोगाजी लोक देवता हैं। ये ददरेवा (जिला, चूरू) के राणक थे। ये सांपों के देवता माने जाते हैं।

रू० सांपां कै डर गूगो धोकै।

२९७५. सांप बिल में बड़ै जद सीधो होज्या।

सांप बाहर तो टेढा-मेढा चलता है, लेकिन बिल मे घुसते समय सीधा हो जाता है।

बाहर बड़ी ऐंठ दिखलाने वाला अकड़बाज भी घर में प्रवेश करता है तो सीधा हो जाता है।

२९७६. सांप भी मरज्या अर लाठी भी न टूटै।

सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे।

काम भी बन जाए और हानि भी न उठानी पड़े।

२९७७. सांप संपळोटिया तो घणा ई देख्या, इजगर बाबो अबकै।

छोटे-मोटे सांप-संपोले तो बहुत देखे—लेकिन अजगर को तो इस बार ही देखा है।

सामान्य दुष्टों से तो काम पड़ता रहा है, लेकिन दुष्टों के सरदार से अभी पाला पड़ा है।

२६६४. सरप रिझ्यो पकड़ायले, म्रिग रीझ्यो खा मार ।
नर रीझ्यो कुछ दे नहीं, वां को धरक जमार ।।
रीझने पर सांप अपने को पकड़वा लेता है, और हिरन भी मार खा जाता है, लेकिन यदि आदमी रीझ कर भी कुछ न दे तो उसे धिक्कार है ।

२६६५. सळू साटै भैंस फाट गेरै ।
अपने जरा से स्वार्थ के लिए जो दूसरे का बड़ा नुकसान करने में भी न हिचकिचाये ।
सळू = भैंस के चमड़े की पतली डोर ।

२६६६. सलाम साटै मियें नै क्युं रुसाणो ?
केवल सलाम के लिए मियां को क्यों नाराज किया जाए ?
मामूली बात के लिए किसी को क्यों रुष्ट किया जाए ?

२६६७. सहजां पाकै सो मीठो ।
स्वाभाविक रूप से डाल पर पकने वाला फल ही विशेष मीठा होता है ।

२६६८. सही सवारै सूम को नांव लियां रोटी कोनी मिलै ।
प्रात: काल सबसे पहले सूम का नाम लेने से रोटी नसीब नहीं होती ।
प्रात: काल किसी बड़े दातार का नाम लेना अच्छा समझा जाता है और चूंकि सबसे बड़ा दातार ईश्वर ही है, अत: सबसे पहले उसी का नामस्मरण करते हैं (भाख पाटी खोल टाटी, राम देसी दाळ बाटी) ।

इसी प्रकार ब्राह्ममुहूर्त में 'लाखा-फूलाणी' भी गाया जाता है । लेकिन सूम का नाम लेना निषिद्ध माना जाता है ।

सन्दर्भ कथा—एक गांव में एक सूम रहता था । कोई भी सवेरे-सवेरे उसका नाम नहीं लेता था । गांव के ठाकुर ने कहा कि यह सब बकवास है, मैं आज प्रात: ही उसका नाम लेता हूँ और देखता हूँ कि रोटी कैसे नहीं मिलती । उसने सूम का नाम लिया और किसी काम से बाहर चला गया । जाते समय वह खीर बनाने का आदेश दे गया । लेकिन उसका कोई काम सफल नहीं हुआ । घर लौटने पर जब वह खीर से भरी थाली उठा कर पीने को हुआ तो पास खड़ी घोड़ी ने लात फटकारी । थाली कांसी की थी और गिरते ही फूट गई—

सही सवारै सूम को, निरणा ल्यो मत नाम ।
थाळी फूटी खीर की, सर्यो न कोई काम ।।

२६६९. सांच नै आंच कोनी ।
सांच को आंच नहीं ।
रू० सांच बोल, पूरो तोल, बाये जठै डोल ।

२९७०. सांप कै डस्योड़ै नै दीतवार कद आवै ?

सांप के काटे हुए को रविवार कब आये ?

जब उपचार की तत्काल आवश्यकता हो और उपचार करने वाला कहे कि अमुक दिन आना।

झाड़-फूंक करने वाले बहुधा किसी निर्धारित दिन को ही झाड़ा लगाते हैं।

रू० संझ्या कै मरयोड़ै नै दिन कद ऊगै ?

२९७१. सांप कै बचिये को के छोटो अर के बडो ?

सांप के बच्चे का छोटा और बड़ा क्या ? छोटा सांप भी जहरीला होता है।

२९७२. सांप कोनी देख्यो, सांप की लीक ई देखी।

झूठा आदमी जो बहुत झूठ बोलता है, लेकिन अंत में यथार्थ पर आ जाता है।

सन्दर्भ कथा – एक झूठे आदमी ने आकर कहा कि आज तो सौ सांप एक ही जगह पर देखे। लेकिन लोगों के बार बार पूछने पर सांपों की संख्या घटती गई और अंत में वह बोला कि सांप तो एक भी नहीं देखा, लेकिन सांप की लकीर जरूर देखी।

२९७३. सांप चालती मौत है।

सांप तो चलती हुई मृत्यु है।

२९७४. सांप न होता तो गूगो कुण धोकतो ?

यदि सांप न होते तो गोगा की पूजा कोई क्यों करता ?

यदि दुष्ट न होते तो भले आदमियों का कौन पूछता ?

गोगाजी लोक देवता हैं। ये ददरेवा (जिला, चूरू) के राणक थे। ये सांपों के देवता माने जाते हैं।

रू० सांपां कै डर गूगो धोकै।

२९७५. सांप बिल में बड़ै जद सीधो होज्या।

सांप बाहर तो टेढा-मेढा चलता है, लेकिन बिल में घुसते समय सीधा हो जाता है।

बाहर बड़ी ऐंठ दिखलाने वाला अकड़बाज भी घर में प्रवेश करता है तो सीधा हो जाता है।

२९७६. सांप भी मरज्या अर लाठी भी न टूटै।

सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे।

काम भी बन जाए और हानि भी न उठानी पड़े।

२९७७. सांप संपळोटिया तो घणा ई देख्या, इजगर बाबो अबकै।

छोटे-मोटे सांप-संपोले तो बहुत देखे—लेकिन अजगर को तो इस बार ही देखा है।

सामान्य दुष्टों से तो काम पड़ता रहा है, लेकिन दुष्टों के सरदार से अभी पाला पड़ा है।

२९७८. सांपां का खोज अळाय जाणै ।
दुष्टों के रहस्य को जानने वाले ही जानते हैं ।
२९७९. सांपां कै के मांवसी ?
सांपों के कैसी मौसी ? वे मौसी के संबंध को क्या जानें ?
रू० (१) सांपां कै किसा साख ?
(२) सांपां कै के मांवसी, सुनारां कै के साख ?

२९८०. सांपां कै व्या में जीभां की लपालप ।
सांपों के विवाह में तो जीभों की लपालप ही होती है
रू० (१) सांपां कै सांप पावणां, जीभां का लपकारा ।
(२) जीमणा न जूठणा, ना कंघी ना खाट ।
सांपां कै व्या में, जीभां की लपलपाट ।।
२९८१. सांवरो सरणागत है ।
भगवान् ही शरणागत का रक्षक है ।
सन्दर्भ कथा—किसी राजा ने एक बहुत बड़ा तालाव वनवाया, लेकिन वह पानी से नहीं भरा । पंडितों से पूछने पर उन्होंने राजा से कहा कि जब तक तालाव में नर बलि नहीं दी जाएगी, यह नहीं भरेगा । अब नर बलि के लिए आदमी की तलाश शुरू हुई । उसी नगर में एक गरीब बनिया रहता था जिसके तीन बेटे थे । बड़ा बेटा बाप को एवं छोटा माँ को विशेष प्रिय था । इसलिए उन्होंने राजा से पर्याप्त धन लेकर अपने मँझले लड़के को बलि के लिए दे दिया । अब उसकी रक्षा कौन करे ? उसने भगवान् की शरण ली और प्रार्थना करने लगा ।
माता पिता धन का लोभी, राजा लोभी सागरा ।
देई देवता बळि का लोभी, सरणागत रख सांवरा ।।
भगवान् ने बालक के अन्तःकरण से निकली पुकार सुनी । घनघोर वर्षा हुई और एक ही बार में तालाब लबालब भर गया ।

२९८२. सांस जितरै आस ।
जब तक श्वास, तब तक आश ।
अंतिम सांस तक भी आशा बनी रहती है ।
२९८३. सांस बटाऊ पावणो, आयो न आयो ।
सांस का कोई भरोसा नहीं, आये न आये ।
जिन्दगी का कोई भरोसा नहीं ।
२९८४. सांसी की पंचायती भंगी करै ।
सांसी की पंचायत भंगी करते हैं ।

२६८५. सांसी कै क्यां को दिवाळो ?
मांग कर खाने वाले का दिवाला क्या निकले ?

२६८६. साईं तो सूं बीनती, तूं परणी मत मार ।
रावण सीता ले गयो, वै दिन आज समाळ ।।
हे भगवान्, किसी की पत्नी को मत मारो । ऐसा करने से पहले उन दिनों को याद करो, जब रावण सीता को हर कर ले गया था । तुम स्वयं भुक्त-भोगी हो, अतः पत्नी वियोग का दुःख तुम अच्छी तरह जानते हो ।

२६८७. सागी होयां तो साह ।
व्यापारी को भले ही किसी सौदे में लाभ न हो, लेकिन घाटा न लग कर उसकी पूरी रकम वसूल हो जाए तो भी वह शाह ही है ।
रू० सागी विणजै सो साह कुहावै ।

२६८८. सागै सोवै, 'मूं' ल्हकोवै ।
साथ भी सोये और मुँह भी छिपाये ।

२६८९. साच कैणो, सुखी रैणो ।
सत्य कहना, सुखी रहना ।

२६९०. साची कैई अर मा मारी ।
कटु सत्य कहने से माँ भी मारती है ।
सन्दर्भ कथा—एक विधवा स्त्री काजल-टीकी आदि शृंगार भी करती थी और लोग दिखावे के लिए माला भी जपती थी । उसका एक मात्र लड़का कुछ सयाना हुआ तो एक दिन उसने अपनी माँ से पूछ लिया कि पिता जी को मरे तो कई वर्ष हो गये, तुम यह शृंगार किस पर करती हो ? बेटे की बात माँ को बुरी लगी और उसने उसे पीट दिया ।
रू० (१) साची कैई, जाणै माठै की मारी ।
(२) साची कैणियों बाप को सो मारणियों लागै ।

२६९१. साठां कोसां लापसी, सौवां कोसां सीरो ।
कान पड़्यां छोडै नईं, बाईजी थारो बीरो ।।
ऐसा भोजनभट्ट जो लपसी मिलने की बात सुन कर साठ कोस एवं हलवा खाने के लिए सौ कोस पैदल चला जाता है ।

२६९२. साठा सो पाठा ।
साठ वर्ष की अवस्था में आदमी पट्ठा बन जाता है ।

२६९३ साठी बुध नाठी ।
जो आदमी बुढापे में निरर्थक बातें करे अथवा कोई दुष्कर्म करे तो प्रायः उसे 'साठी बुध नाठी' होना कहा जाता है ।

२९९४. साढू साल, गंडक भाई ।
साढू का रिश्ता कोई खास रिश्ता नहीं माना जाता ।
रू० साढू साढू गंडक भाई, रोटी ऊपर कैर ।
वो धरै वो गुड़ पड़ै, अन्त वैर को वैर ॥

२९९५. सात वार, नौ त्यूंहार ।
हिन्दुओं में पर्व-त्योहार अधिक मनाये जाते हैं और कभी कभी तो एक दिन में दो-दो भी । इसी को लक्ष्य करके कहा गया है कि वार तो सात ही होते हैं, लेकिन त्योहार नौ ।

२९९६. सात मामां को भाणजो भूखो ई रंज्या ।
सात मामों का भानजा भूखा ही रह जाता है, क्योंकि हर मामा यही सोच लेता है कि दूसरा मामा ही उसे भोजन करवायेगा ।
रू० (१) सीर कै वावै नै स्याळिया खा ।
(२) सीर को धन स्याळिया खा ।
(३) सातां की मा नै स्याळिया खा अर एक की मा गंगाजी जा ।

२९९७. सात हाथ सुलखणां, हांडी पड़्यां कुलखणां ।
यदि घर के सभी आदमी मिल कर उद्योग करें तो घर को बनते देर नहीं लगती, लेकिन सभी आदमी अकर्मण्य और केवल खाने वाले ही हों तो घर में दारिद्रय छा जाता है ।

२९९८. साता बीसी सैंकड़ो तो मण को छप्पन सेर ।
यदि तुम सात बीसी अर्थात् एक सौ चालीस के सौ गिनोगे तो मैं चालीस सेर के मन की बजाय छप्पन सेर का मन गिनूंगा ।
बीसी = बीस । पांच बीसी के सौ होते हैं ।
आम तौर पर देहातों में अनपढ़ लोग बीस तक ही गिनना जानते थे और पांच वार बीस-बीस गिन कर सौ की संख्या पूरी करते थे ।

२९९९. साधां कै के सुवाद ? अणविलोयो ई आवण दे ।
सन्दर्भ कथा—(१) एक साधु किसी के घर छाछ मांगने गया तो घर की मालकिन बोली कि अभी बिलौना बिलोया नहीं है । इस पर साधु बोला कि कोई बात नहीं, साधुओं को स्वाद से क्या प्रयोजन है, बिना बिलोया (मक्खन निकाले बिना, मलाई युक्त) ही आने दो ।

(२) एक साधु किसी के यहाँ भिक्षाटन के लिए गया । घर की मालकिन ने उससे पूछा कि भिक्षा में रोटी लोगे या खिचड़ी ? साधु ने उत्तर दिया—हम साधुओं को किसी चीज से परहेज नहीं, रोटी के ऊपर ही खिचड़ी भी रख लाओ ।

३०००. **साधु तो रमता ई भला ।**

साधु तो रमता रहे तभी अच्छा है । किसी स्थान या व्यक्ति से मोह करना उसके लिए वर्जित है ।

हंसा जेहा ऊजळा, पाथर जेहा चित्त ।
कांधै घाली मेखळी, जोगी किसका मित्त ?

३००१. **सामर पड्यो सो लूण ।**

सांभर झील में जो कुछ गिरता है, वही नमक बन जाता है ।
सांभर राजस्थान की प्रसिद्ध नमक-उत्पादक झील है ।

३००२. **सारी रात रोई, मरयो कोनी एक ई ।**

पूरी रात रोई और मरा नहीं एक भी ।
सब किया कराया निष्फल गया ।

३००३. **सारी रात हरजस गाती गाती, तड़काऊ केसिये वैरी का गीर दिया ।**

पूरी जिन्दगी तो भक्ति-भावना में गुजार दी और अन्तिम समय में राग-रंग सूझा ।

३००४. **सारीसै से कीजिए, व्या वैर अर प्रीत ।**

विवाह सम्बन्ध, शत्रुता और प्रीति बराबर वालों से ही करनी चाहिए ।

सन्दर्भ कथा—एक चिड़िया ने एक भैंस से मित्रता करली । वह दिन भर उसकी पीठ पर फुदकती रहती । एक दिन उसने भैंस से कहा कि मैं बीट करके अभी आती हूँ । भैंस बोली कि मेरे ऊपर ही करले और चिड़िया ने बीट कर दी । कुछ देर बाद भैंस बोली कि मैं 'पोटा' करूंगी । चिड़ी बोली कि मेरे ऊपर ही करले । यों कह कर चिड़िया जमीन पर बैठ गई । भैंस ने पोटा किया और चिड़ी उसके नीचे दब कर मर गई ।
पोटा करना = गोबर के रूप में मल विसर्जन करना ।

३००५. **साळी छोड सासुवां सैं ई मसखरी ?**

साली, सलहजों को छोड़कर सास से ही मसखरी करने लगे ?
बराबरी वालों से ही दिल्लगी करनी अपेक्षित है, बड़ों से नहीं ।

३००६. **सावण का पंचक गळै, नदी वहन्ता नीर ।**

सावन के पंचकों में वर्षा हो जाये तो इतनी वर्षा हो कि नदियों में बाढ़ आ जाए ।

३००७. **सावण की छा भूतां नै, जेठ की छा पूतां नै ।**

सावन की छाछ भूतों को और जेठ की छाछ पूतों को ।
सावन की छाछ किसी काम की नहीं होती, लेकिन जेठ की छाछ बड़ी गुण-कारी होती है और कठिनाई से मिल पाती है ।

३००८. **सावण कँ आंधै नैं हरचो ई हरचो सूझै ।**
सावन के अन्धे को हरा ही हरा सूझता है ।

३००९. **सावण पैली पंचमी, चंदा छिटक करै ।**
कै जळ दीखै कूए में, कै कामण सीस धरै ।।
सावन वदि पंचमी की रात को यदि चांदनी छिटकी रहे तो पानी या तो कुएँ में दिखलाई पड़ेगा या पनिहारिन के सिर पर रखे घड़ों में अर्थात् वर्षा नहीं होगी ।
रू० सावण पैली पंचमी, जोरां चलै बयार ।
थे जावो पिव माळवैं, मैं जाऊं मौसाळ ।।

३०१०. **सावण मास सूरियो चालै, भादूड़ै पुरवाई ।**
आसोजां में पिछवा चालै, ज्यूं ज्यूं साख सवाई ।।
(आसोजां में पिछवा चालै, गाडा भर भर ल्याई)
सावन में वायव्य कोण की हवा चले, भादों में परवा और आश्विन में पछवा हवा चले तो अन्न खूब पैदा हो ।
सूरियो = पश्चिमोत्तर दिशा की हवा ।

३०११. **श्रावण में चालै परा तो सबसें बुरा ।**
बामण होकर बांधै छुरा तो सबसें बुरा ।
सावन में परवा हवा चले तो बहुत बुरी और ब्राह्मण छुरा धारण करे तो बहुत बुरा ।

३०१२. **सासरो सुख बासरो, तीन दिनां को आसरो ।**
सुसराल में अधिक समय तक रहने से इज्जत नहीं रहती ।
सन्दर्भ कथा—एक जँवाई सुसराल गया तो उसकी बड़ी आव-भगत हुई । यह देखकर उसका मन वहीं रम गया । सवेरे सो कर उठा तो उसने कोयले से दीवार पर लिख दिया—'सासरो सुख बासरो', उसकी सलहज ने सोचा कि इसका मन तो यहीं लग गया है, इसलिये उसने वहीं लिख दिया—'तीन दिनां को आसरो' । इस पर दामाद ने लिखा, 'रहस्यां मास दो मास' । लेकिन सलहज ने प्रत्युत्तर में लिखा—'देस्यां खुरपी, खुदास्यां घास' । इस पर वह समझ गया और वहां से विदा हो गया ।

३०१३. **सासु का घमूका बहू ई सैवै ।**
सास की डांट-डपट बहू को ही सहनी पड़ती है ।

३०१४. **सासु का जीकारा बू नै भारी पड़ै ।**
सास का बहू को जी कहकर पुकारना स्वयं बहू के लिये ही भारी पड़ता है ।

३०१५. **सासु खाती पावणां, बू बटाऊ खाय ।**
सास तो पाहुनों को ही खाती थी और बहू तो अतिथियों को भी खाने लगी।
बहू तो सास से भी आगे निकल गई ।

३०१६ **सासुजी की सीख फळसै सुधी ।**
सासजी की सीख घर के द्वार तक ।
घर के द्वार से निकलते ही बहू अपनी सास की शिक्षा को भुला देती है ।

३०१७ **सासुजी, मेरै टावर होवै जद मनै जगा देयो,**
'क तूं ईं सात गांव जगासी ।
आसन्न प्रसवा बहू ने सास से कहा कि मैं तो सो रही हूँ, जब मेरे बालक जन्मे तो मुझे जगा देना । इस पर सास बोली कि तू स्वयं ही सब को जगा लेगी ।

३०१८. **सासु नै भावै कलेवा, बू काढै गैल का केवा ।**
सास तो सोचती है कि वह मुझे बुढापे में आराम देगी और बहू पिछली बातों को याद करके सास से बदला निकालती है ।
केवा = प्रतिशोध, वैर का बदला ।

३०१९. **सासु विना किसो सासरो ?**
सास के विना कैसी सुसराल ?
रू० (१) सासु जितरै सासरो, आसू (आसोज) जितरै 'मे ।
(२) सासु जितरै सासरो, मा जितरै पी'र ।
(३) सास विनां काईं सासरो, खांड विना काईं खीर ।

३०२०. **सासु मरगी कटगी बेड़ी, बू चढगी हर की पेड़ी ।**
सास मर गई तो बहू का बंधन कट गया और वह निहाल हो गई ।

३०२१. **सिंघ गाजै तो हाथी लाजै ।**
सिंह राशि पर सूर्य के रहते बादल गरजना करे तो हस्त नक्षत्र में वर्षा कम हो ।

३०२२. **सिंघ नईं देख्यो, तो देखले बिलाई ।**
जम नईं देख्यो, तो देखले जंवाई ।।
यदि सिंह न देखा हो तो बिल्ली को देखलो और यम को न देखा हो तो दामाद को देख लो ।

३०२३. **सिंघ नै पकड़्यो स्याळियो, जे छोड़ै तो खाय ।**
सियार ने भूल से शेर को पकड़ लिया, यदि अब वह उसे छोड़े तो शेर उसे खा जाए ।
भई गति सांप छछूंदर केरी ।

३०२४. **सिघां का भाई बघेरा, वै नौ कूदै वै तेरा ।**
वाघ भी शेरों के ही भाई हैं, कम नहीं । यदि शेर नौ हाथ की छलांग लगाते हैं तो वाघ तेरह हाथ की ।

३०२५. **सिघां कै आळां में हाथ दियां, हाथ काढलै ।**
शेर की मांद में हाथ डालने से वह हाथ निकाल लेता है ।
जबरदस्त से छेड़ छाड़ करने पर वह छेड़खानी का मजा चखा देता है ।

३०२६. **सिघां कै जाया भेड़िया, भेड़यां कै जाई कोळ ।**
कोळां कै जाया ऊंदरा, जद माची रापारोळ ।।
शेरों के भेड़िये जन्मे, भेड़ियों के 'कोळ' और 'कोळों' के चूहे जन्मे ।
इस प्रकार निरन्तर ह्रास होते रहने से सब कुछ चौपट हो गया ।
कोळ = घूस; चूहे की जाति का बड़े आकार वाला एक जीव ।

३०२७. **सिमाई देसी 'क वींत में देखूं ?**
दर्जी अपने ग्राहक से पूछता है कि तुम कपड़ा सिलवाने की सिलवाई दोगे अथवा मैं व्योंत में उसकी कसर निकालूं ?
मजदूर किसी न किसी रूप में अपनी मजदूरी ले ही लेता है ।

३०२८. **सिर को बोझ पगां नै आवै ।**
सिर पर रखे बोझ का भार अन्त में पैरों पर ही आता है ।

३०२९. **सिर जा, सिरवाड़ो कोनी जा ।**
रस्सी जल जाने पर भी ऐंठ नहीं जाती ।

३०३०. **सिर पर ओक मांडयां पेट कोनी भरै ।**
सिर के ऊपर 'ओक' माडने से पेट नहीं भरता । मुंह के आगे ओक मांडने से ही पेट भरता है ।
ओक = अंजलि, जिसे मुंह के आगे लगा कर पानी पीते हैं ।

३०३१. **सिर पर बंध्या न सेवरा, रण चढ किया न रोस ।**
लाहा जग में क्या लिया, पिया न चम्मड़पोस ।।
यदि सिर पर सेहरा न बंधा (दूल्हा न बना), युद्धार्थ न चढा और चम्मड़पोस न पिया तो संसार में आने का लाभ क्या हुआ ?
चम्मड़पोस = वह हुक्का जिसका जलपात्र चमड़े का होता है ।
हुक्के के पक्ष और विपक्ष में काफी कहा गया है ।

हुक्का तूं हुड़हुड़ियो नईं, गाज्यो नईं गजराज ।
थां बिन सूनी कोटड़ी, वठै रांडड़ियां को राज ।।
हुक्को पीयां हुरमत गई, लाज सरम गई छूट ।
घी वेच कर लेई तमाखू, गई हिये की फूट ।।

रू० जलम अकारथ ही गयो, भड़ सिर खग्ग न भग्ग ।
तीखी तुरी न मणियां, गौरी गळै न लग्ग ।।

३०३२. **सिर पर भौंटको, तंबू में बड़ण दे।**
सिर पर तो कांटों का भार और तम्बू में घुसने को तैयार।
रू० (१) सिर पर खेई, तम्बू में बड़णदग्गो।
(२) दयावै पिंड लखावै फेरा, सिर पर खेई तंबू में डेरा।

३०३३. **सिर बडा सिरदार का, पग बडा मऊदार का।**
सिर तो सरदार का बड़ा होता है और पैर दरिद्री के।

३०३४. **सिर भलाईं फट ज्यावो, नाक नईं कटणी चाये।**
सिर जाये तो जाये, इज्जत नहीं जानी चाहिये।

३०३५. **सिरमाळी जीवता कुमावै न मुवां खावै।**
श्रीमाली जीते जी जो जोड़ता है, वह उसके मौसर, श्राद्ध आदि में खर्च किया जाता है। इन कार्यों में श्रीमाली अधिक व्यय करते हैं।

३०३६. **सिल डूबै, लोडा तिरै।**
सिल डूबती है, लोढा तैरता है।
एक अपराधी को सजा मिल जाती है और दूसरा मुक्त घूमता है।
लोढा = वट्टा; पत्थर का वह टुकड़ा जिससे सिल पर रखकर किसी चीज को पीसते हैं।

३०३७. **सींत करू, दूर ले ज्याऊ, दोनूं भाई सागै जाऊ!**
सभी काम मुफ्त में करना चाहे और वे भी पूरी छूट व सहूलियत के साथ।

३०३८. **सीख में मुजरो बाकी।**
विदाई में केवल मुजरा (सलाम) करना बाकी है।

३०३९. **सीख वां नै दीजिये, जां नै सीख सुहाय।**
बांदर सीख सिखावतां, घर बैये को जाय॥
शिक्षा उसी को देनी चाहिए, जिसे वह अच्छी लगे अन्यथा इसका परिणाम शिक्षा देने वाले के लिए ही बुरा होता है, जैसे वन्दर को शिक्षा देने से बया का घर वर्बाद हो गया।

संदर्भ कथा—*वर्षा में भीगता हुआ एक वंदर वृक्ष की डाल पर बैठा* था। उसी वृक्ष पर एक बया ने घर बना रखा था और वह उसमें आराम से बैठा हुआ था। वंदर को वर्षा में भीगते देखकर बया ने उससे कहा कि—मनुष्य की तरह तुम्हारे हाथ-पांव हैं, फिर तुम अपने लिये घर क्यों नहीं बना लेते—

हाथ तेरै पांव तेरै, मिनख की सी देह।
बयो कैवै बांदरा, तूं घर क्यूंनीं कर लेय॥

लेकिन वंदर को बया का यह उपदेश अच्छा नहीं लगा और उसने झुंझला कर उसका घर नष्ट-भ्रष्ट कर डाला।

३०४०. सीख सरीरां ऊपजै, दीयां लागै डाम ।
सीख तो स्वयं के हृदय में ही उत्पन्न होती है, देने से तो डाम ही लगते हैं
डाम लगाना = तप्त लोहे से दागना ।
रू० सीख सरीरां ऊपजै, देई न आवै सीख ।
अरण मांग्या मोती मिलै, मांगी मिलै न भीख ॥

३०४१. सीतळ पातळ मंद गत, अलप अहार निरोस ।
अै तिरिया में पांच गुण, अै तुरिया में दोस ॥
शीतल स्वभाव, कृशवदन, मंद गति, अल्पाहार एवं रोष रहित होना ये पांचों स्त्री में गुण एवं घोड़ी में अवगुण हैं ।

३०४२. सीधी आंगळियां घी कद नीकळै ?
सीधी ऊँगलियों से घी नहीं निकलता ।
जब सीधेपन से काम न हो तो कड़ाई करने पर ही काम हो पाता है ।

३०४३. सीयाळै खाटू भलो, ऊनाळै अजमेर ।
नागाणो नित नित भलो, सावण बीकानेर ।
शीत ऋतु में खाटू, ग्रीष्म में अजमेर, सावन में बीकानेर अच्छा लगता है और नागौर तो सभी ऋतुओं में अच्छा है ।
उपरोक्त चारों ही स्थान राजस्थान में हैं ।

३०४४. सीयाळै में सी मरी, ऊन्याळै में लूवां ।
राघो चेतन यूं कवै, पुन होसी क्युंई दीयां ।
राघो चेतन का कथन है कि पुण्य तो दान से ही होता है, शारीरिक कष्ट उठाने से नहीं ।

३०४५. सीर की तो होळी होया करै है ।
सीर की तो होली ही होती है, अन्य किसी काम में सीर-साझा होने से झगड़ा हुए बिना नहीं रहता ।
रू० सीर की होळी तो बळज्या, पण सीर को बाप बळै न बुझै ।

३०४६. सीर सगाई चाकरी, राजीपै को काम ।
साझेदारी, सगाई और नौकरी—दोनों पक्षों की रजामंदी से ही हो सकती हैं ।
रू० सीर सगाई चाकरी, खुसी दावै को काम ।

३०४७. सीळी हो सपूती हो, सात पूत की मा हो,
'क रांड नौ तो मेरै आगै ई हैं ।
एक स्त्री ने दूसरी स्त्री के पैर छूये तो उसने आशीर्वाद देते हुए कहा—शीलवती हो, पुत्रवती हो, सात पुत्रों की माँ हो । इस पर पहली स्त्री बोली कि मेरे नौ पुत्र तो पहले से ही हैं, क्या तुम उनमें से दो को मारना चाहती हो ?

३०४८. सुक्करवारी वादळी, रही सनीचर छाय ।
डंक कहै हे भड्डळी, वरस्याँ विना न जाय ।
यदि शुक्रवार के दिन आकाश में बादल छायें और वे शनिवार तक बने रहें तो वर्षा करके ही जाएँगे ।

३०४९. सुख सोवै कुम्हार की, चोर न मटिया लेय ।
कुम्हारी आराम से निश्चिन्त होकर सोती है क्योंकि वह जानती है कि चोर उसकी मिट्टी को चुरा कर नहीं ले जाएगा ।
जिसके पास अधिक धन होता है, वह चोरी की आशंका से निश्चिन्त होकर नहीं सो पाता ।
रू० सुख सोवै कुम्हार की, चोर न मटिया लेय ।
गधो पगाणै बांधकर, छाज सिराणै देय ।।

३०५०. सुथार की बेटी सासरै जावै अर गतराड़ो गाती मारै ।
गतराड़ा या हिजड़ा सुथार के घर डेरा डालता था और जब तक वह अपने दस्तूर का सवा रुपया नहीं ले लेता था, सुथार की बेटी को सुसराल नहीं जाने देता था ।

३०५१. सुदी छिपकली घणां जिनावर मोसै ।
सीधा दिखलाई पड़ने वाला परोक्ष में अधिक पाप करता है ।

३०५२. सुनार कै आगै के सूई बेचै ?
सुनार के सामने चालाकी नहीं चल सकती ।

३०५३. सुनार नै घड़तां अर लुगाई नै जणतां नईं देखणी ।
सुनार को गढ़ते समय और स्त्री को प्रसव करते समय नहीं देखना चाहिए ।

३०५४. सुपना सूण सिधां का वाचा, कोई एक भूठा कोई एक साचा ।
स्वप्न की बात, शकुन एवं सिद्धों के वचन भूठ भी निकल जाते हैं और सत्य भी ।
रू० सुगन सरोधा सिव का वाचा, कोई एक भूठा कोई एक साचा ।

३०५५. सुपनै की सो म्होर सैं भी के काम सरै ?
स्वप्न में यदि सोने की सौ मोहरें भी मिल जाएँ तो क्या लाभ ?
रू० कहणी तो रांचै नईं, रहणी रांचै राम ।
सुपनै की सो म्होर सैं, कोडी सरै न काम ।

३०५६. सुपनै देखै सांखळी, नापासर का रूंख ।
सांखली अब स्वप्न में ही नापासर के वृक्ष देख पायेगी ।
नापा सांखला ने भू० पू० बीकानेर राज्य की स्थापना में राव बीका की मदद की थी और उसने अपने नाम पर नापासर नामक गाँव बसाया था । उसकी

कोई लड़की दूर-दराज ब्याही गई होगी। उन दिनों आवागमन के साधन बहुत कम थे और विवाहित लड़की की सुसराल अधिक दूर होने पर उसका बार-बार पीहर आना संभव नहीं होता था। इसी को लक्ष्य करके उपरोक्त कहावत बनी है।

३०५७. सुरग नरक अठै ई है।
स्वर्ग और नरक यहीं (धरती पर ही) हैं।
आदमी जैसा करता है, उसका फल उसे यहीं मिल जाता है।

३०५८. सुलफिया यार किसका, दम लगाई अर खिसक्या।
सुलफेबाज किसका मित्र ? वह तो दम लगा कर चलता बनता है।
मतलबी यार मतलब बनते ही किनारा कर जाता है।

३०५९. सुसरा, बू उघाड़ी, 'क सुसरै की फूटगी के ?
किसी ने श्वसुर से कहा कि तुम्हारी पुत्र वधू के पास तो पहनने को वस्त्र भी नहीं हैं। श्वसुर ने जवाब दिया कि मैं भी अंधा नहीं हूं, लेकिन मजबूरी का क्या इलाज ?

३०६०. सुसरो बैद, कुठोड़ खाई।
श्वसुर वैद्य है, लेकिन बहू की तकलीफ कुठौर है, उसका इलाज कैसे करे ?

३०६१. सूंकळी बकरी, टूंकळी चढगी।
जब कोई सामान्य आदमी ऊंचे स्थान पर प्रतिष्ठित हो जाए।

३०६२. सूई भी सागै कोनी चालै।
दुनिया से कूच करते समय आदमी एक सूई भी साथ नहीं ले जा सकता।

३०६३. सूझै सें बूझ्यो भलो।
सूझने की अपेक्षा पूछ लेना अच्छा है।
अपनी जानकारी की पुष्टि दूसरों से कर लेनी अच्छी।

३०६४. सूती गंगा बगै है।
कोई कहने-सुनने वाला नहीं है, चाहे सो करो।

३०६५. सूत्यां की तो पाडा ई जणै।
सोने वालों की भैंस तो पाडा ही जनेगी।

सन्दर्भ कथा—दो पड़ोसियों की भैंसें साथ-साथ ब्याने वाली थीं। दोनों उनके ब्याने की प्रतीक्षा कर रहे थे। रात अधिक हो गई तो एक ने कहा कि दोनों के जागने से क्या लाभ ? एक आदमी सो जाए और भैंस जब ब्याने को हो तो उसे जगा लिया जाए। यों कह कर वह सो गया और दूसरा जागता रहा। थोड़ी देर बाद दोनों भैंसें ब्या गईं। जो जाग रहा था, उसकी भैंस ने पाडा प्रसव किया और सोने वाले की भैंस ने पाडी। लेकिन चूंकि पाडी की

कीमत अधिक होती है, अतः जागने वाले ने पाडी को अपनी भैंस के साथ लगा दिया और पाडे को दूसरी भैंस के साथ। फिर उसने अपने साथी को जगाया। जागने पर उसने पाडी को देख कर कहा कि यह तो मेरी भैंस के अनुरूप है, लेकिन दूसरे ने कहा—नहीं, तुम्हारी भैंस तो पाडा ही लाई है। इतने में एक तीसरा आदमी वहां आ गया और सारी स्थिति जानकर उसने कहा—चाहे जो हो, सोने वालों की भैंस तो पाडा ही जनती है।
रू० सूत्यां की पाडा जलमै, जागतां की पाडी।

३०६६. सूत्योड़ै नै तो जगावै, पण जागतोड़ै नै के जगावै ?
सोये हुए को तो जगाया जा सकता है, लेकिन जागते हुए को क्या जगाये ? हिसाब में भूल हो तो वह दुरुस्त की जा सकती है, लेकिन जो जान-बूझ कर बेईमानी करे, उसका क्या इलाज ?

३०६७. सूदै पर दो लदै।
सीधे पर दो लदते हैं।

३०६८. सूना खेत सुलाखणा, हिरणा चर चर जाए।
सूने खेतों को तो हिरन ही चरते हैं।
जो अपने धंधे को स्वयं नहीं संभालता, उसका लाभ दूसरे ही उठाते हैं।

३०६९. सूनी पा'गी रसिया, घाल फोरी।
हे रसिक ! अब तो तुम्हें सूनी मिल गई है अतः चाहे जैसे उत्पात मचाओ।

३०७०. सूनै घर में हर कोई आ बड़ै।
सूने घर में कोई भी आ घुसता है।
कमजोर को हर तरह की व्याधि घेर लेती है।

३०७१. सूम कै घर में क्यांकी घूम ?
सूम के घर में कैसी धूम धाम ?

३०७२. सूमण पूछै सूम नै, काहे मुक्ख मलीन।
कै गांठी सें गिर पड़्यो, कै काऊ नै दीन ?
ना गांठी सें गिर पड़्यो, ना काऊ नै दीन।
देवत देख्या और कूं, या सें मुक्ख मलीन।
सूम घर आया तो उसकी स्त्री ने उससे पूछा कि आज उदास क्यों हो ? क्या कुछ गांठ से गिर पड़ा अथवा किसी को कुछ दे दिया ? इस पर सूम ने उत्तर दिया कि न तो गांठ से कुछ गिरा और न हाथ से किसी को कुछ दिया, लेकिन किसी और को देते हुए देखा तो उदासी छा गई।

३०७३. सूरज कुण्डाळयो चांद जलेरी, टूटै टीबा भरज्या डैरी।
सूर्य और चन्द्रमा के चारों ओर चक्र दिखलाई पड़े तो भरपूर वर्षा हो।

३०७४. **सूरवीर की मौत कायर कै हाथ होवै ।**
शूरवीर की मृत्यु कई बार कापुरुप के हाथों होती है क्योंकि आगे आकर तो वह उसका सामना कर नहीं पाता, इसलिए वह उसे धोखे से मार डालता है ।

३०७५. **सूरवीर तो चल दिया, पड़ी रह गई गल्ल ।**
शूरवीर तो चले गये, लेकिन उनकी वीरता की कहानियां शेप है—
राव गया ल्हालर गई, गई जमीं सें हल्ल ।
सूरवीर तो चल दिया, पड़ी रह गई गल्ल ।।

३०७६. **सेर की हांडी में सवा सेर कोनी खटावै ।**
सेर की हँडिया में सवा सेर नहीं खटाता ।

३०७७. **सेरे'क चून उधारा री, कोई गुड़ दे तो,**
गटक मलीदा करल्यूं कोई घी दे तो,
मरतो पड़तो खाल्यूं री, कोई कर दे तो ।
यदि कोई गुड़ दे तो सेर भर चून भी उधार लेलूं एवं कोई घी दे और मलीदा बनादे तो खा भी लूं ।
सारी चीजें मुफ्त में लेकर एवं सारे काम मुफ्त में करवा कर भी ऊपर से अहसान जताना ।

३०७८. **सेरे'क दूध अर आध पाव बूरो मिलज्या तो बाबै की हर ई कोनी हालै ।**
'क मिलै ई कोनी, मिल्यां तो घिरस्ती को ई बाळ वांको को होवैनी ।
संदर्भ कथा—एक जाट अपनी भैंस दुह रहा था । राह चलते एक साधु ने दूध प्राप्त करने की मंशा से उसके पास आकर कहा कि यदि साधु-बाबा को सेर भर दूध और आध पाव बूरा मिल जाए तो फिर उसका कोई बिगाड़ नहीं हो सकता । लेकिन जाट भी सयाना था, उसने साधु को टरकाने की नीयत से कहा कि मिलता ही कहां है ? मिल जाए तब तो साधु क्या, गृहस्थी का भी बाल बांका न हो ।

३०७९. **सेल घमोड़ा जो सहै, सो जागीरी खाय ।**
जो युद्ध में सेलों के वार सहता है, वही जागीरी का उपभोग भी करता है ।

३०८०. **सेल सिमरणी जंगी घोड़ा, सोख घणां नै राखै थोड़ा ।**
सेल, सुमिरनी और जंगी घोड़ा रखने का शौक तो बहुतों को होता है, लेकिन रखते हैं बहुत कम ।

३०८१. **सैलड़ चूंघै वाछड़ो, बहू चोर कर खाय ।**
परवा चालै टावरी, कदे न निरफळ जाय ।।
बछड़ा यदि गाय के साथ-साथ रह कर उसका दूध चूंघता रहे, बहू चोर कर भी खाये एवं परवा हवा तेज चले तो ये निष्फल नहीं जाते । यदि बछड़ा दूध

चूंघता रहता है तो वह अच्छा और मजबूत बैल बन जाता है, बहू चोर कर भी घी-दूध खाती है तो उसकी कोख से जन्म लेने वाला बालक हृष्ट-पुष्ट होता है एवं तेज चलने वाली परवा हवा तो बड़ी दूर से भी वर्षा ले आती है ।

३०८२. सैंस भुजा को धणी देवै, जद दो भुजा आळो के करै ?
सहस्र भुजाओं वाला ईश्वर जब देता है तो दो भुजाओं वाला आदमी क्या बाधा पहुँचा सकता है ?

३०८३ सै आप-आप को भाग खावै ।
सब अपने अपने भाग्य का खाते हैं ।
सब अपना-अपना भाग्य साथ लाते हैं ।

३०८४. सैं'जां चुड़लो फूटग्यो, हळका होग्या हाथ ।
सहज में ही पिण्ड छूट गया ।

बाई का बंधण कट्या, भली करी रुगनाथ ।
सैं'जां चुड़लो फूटग्यो, हळका होग्या हाथ ।।

३०८५ सै झुकतै पालड़ै का सीरी है ।
सभी झुकते हुए पलड़े के सीरी हैं । सभी जीतने वाले के साथ रहना चाहते हैं ।
रू० (१) सै होये होये का सीरी है ।
(२) सै चोखी-चोखी का सीरी है ।
(३) सै खाणैं का सीरी है ।

३०८६. सै पूरिया ई पूरिया है ।
सन्दर्भ कथा—एक बार किसी राजा ने साधु-महात्माओं को भोज दिया और ऐसा प्रबंध किया कि कोई साधु का वेश बना कर असाधु भोज में सम्मिलित न हो । जब साधुओं की पंगत जीमने बैठी तो राजा स्वयं अपने हाथ से उन्हें परोसने लगा । परोसते-परोसते जब वह एक साधु के पास पहुँचा तो कुछ ठिठक गया । राजा को उसकी शक्ल कुछ जानी-पहचानी सी लगी । राजा ने उसे गौर से देखा तो उसे भान हुआ कि यह तो उसका पूरिया नामक चरवादार (साईस) है । राजा ने उसे पहचान कर तेज आवाज में पूछा — अरे पूरिया ? पूरिया तत्काल ही खड़ा हो गया और नम्रता से बोला कि अन्नदाताजी—यहाँ जितने साधु बैठे हैं, वे सब पूरिये ही पूरिये हैं, आपने मुझे पहचान लिया और ये सब अपरिचित हैं, बस इतना ही अन्तर है ।

३०८७. सै भूखा उठै, पण भूखा सोवै कोनी ।
भगवान् सब की उदर–पूर्ति करते हैं । सब भूखे उठते हैं, लेकिन भूखे सोते नहीं ।

३०८८. सोखीन बुढिया अर चटाई को लँगो !
शौकीन बुढ़िया और चटाई का लहँगा !

३०८९. सोखीनां की के सैनाणी ?
कांच कांगसो सुरमादानी ।
शौकीनों की यह पहचान है कि वे हर वक्त अपने पास कांच (शीशा), कंघा और सुरमादानी रखते हैं।
सुरमादानी तो आज कल फैशन से बाहर हो गई है, लेकिन आज के बहुत से शौकीन कंघा अवश्य रखते हैं।

३०९०. सोगन अर सीरणी तो खाणै की ई होवै ।
सौगन्ध और शीरनी तो खाने के लिए ही होती है।
झूठे आदमी के लिए सौगन्ध खाना भी शीरनी खाने के तुल्य ही है।

३०९१. सोड़ गैल पग पसारणा चाये ।
आय के अनुसार ही व्यय करना चाहिए।

३०९२. सोत तो काचै चून की ई बुरी ।
सौत तो कच्चे आटे से बनी भी बुरी ।
रू० (१) कांटो बुरो करील को, अर बदळी की घाम ।
सोत बुरी है चून की, अर साझै को काम ॥
(२) सोत तो कूंळै मांड्योड़ी ई बुरी ।

३०९३. सोनी को बेटो संहगो सरूप, वाणियें को बेटो मंहगो करूप ।
सुनार का लड़का सुन्दर होते हुए भी सस्ता और बनिये का बेटा कुरूप होते हुए भी महँगा है।
किसी समय यह बात रही होगी, लेकिन आज कल वैसी स्थिति नहीं रही है। अब तो आम तौर पर बनिये के बेटों की पूछ बहुत कम रह गई है और वे दूसरों की तुलना में तेजी से पिछड़ते जा रहे हैं।

३०९४. सोनै की कटारी खाकर थोड़ी ई मरेजा ?
सोने की कटार बहुमूल्य तो होती है, लेकिन उसे पेट में घुसेड़ कर थोड़े ही मरा जाता है ?
रू० सोनै की कटारी पेट में थोड़ी घाली जा ।

३०९५. सोनै कै थाळ में तांबै की मेख ।
थाल तो सोने का और उसमें मेख तांबे की ?
रू० देव सोनै का गांड पीतळ की ।

३०९६. सोनो गयो करण के साथ ।

सोना तो कर्ण के साथ ही चला गया अर्थात् उस के जैसा स्वर्णदानी दुनिया में और नहीं है ।

कर्ण की दानवीरता लोक-विश्रुत है । कहा जाता है कि वह हर प्रातः सवा मन सोने का दान दिया करता था और इसलिए आज भी प्रातःकाल का समय राजा-कर्ण का समय कहलाता है । कर्ण ने भारत के लोक जीवन पर अपनी जो छाप छोड़ी है, वह आज भी अमिट है ।

इसी प्रकार सिकन्दर ने भी अपनी छाप छोड़ी है । आज भी जिसका भाग्य तीव्र होता है, उसके लिए कहा जाता है कि अमुक आदमी का दिन सिकन्दर है । इसी तरह राजा के लिए राम ने और सती के लिए सीता (सीता सतवंती) ने अपना स्थान बना रखा है ।

३०९७. सोनो देकर स्यावड़ का न्होरा क्यूं ?

३०९८. सोनो सुनार को, सोभा संसार की ।

सोना तो वास्तव में सुनार का होता है और शोभा उसके द्वारा बनाये गये आभूषणों को पहनने वालों की ।

३०९९ सोरठियो दूहो भलो, भली मखण की वात ।
जोवन छाई धण भली, तारां छाई रात ।।

दोहा सोरठिया अच्छा, वात मरवण (ढोला-मारू) की अच्छी, यौवन संपन्न पत्नी अच्छी एवं तारों से झिलमिलाती रात अच्छी ।

३१००. सोळ समैयो पंदरा क्यूं ?

सोलह के सवाये बीस होते हैं, पन्द्रह नहीं ।
जो आदमी नफे के स्थान पर मूल में भी घाटा करदे ।

३१०१. सोळा साल सें माथो न्हायो, जेळी सें सुळझायो ।

फूहड़ स्त्री ने सोलह वर्षों से तो माथा नहाया और 'जेळी' से बाल सुलझाये । जेळी = लकड़ी के दो सींगों वाली एक लंबी लाठी जिससे कँटीली झाड़ियां आदि हटाई जाती हैं ।

३१०२. सौ अक्कल तूज्या, एक अक्कल आडी आवै ।

सौ युक्तियां धरी रह जाती हैं और एक ही उपयुक्त युक्ति काम आती है ।

संदर्भ कथा—किसी जंगल में एक सांप, एक कछुवा और एक हिरन रहते थे । कछुवा कहता कि मैं पचास युक्तियां जानता हूं, सांप कहता कि मैं सौ युक्तियां जानता हूँ । लेकिन हिरन सदा यही कहता कि मैं तो एक ही युक्ति जानता हूँ और वह यह कि आपत्ति के समय भाग कर अपना बचाव किया जाए । हिरन की बात सुन कर दोनों उसको हँसी उड़ाया करते ।

एक बार वन में दावाग्नि भड़क उठी। हिरन तो उसे देखते ही भाग गया लेकिन कछुवे और सांप को अपनी युक्तियों पर भरोसा था, अतः वे नहीं भागे। आग बुझने पर जब हिरन उस स्थान पर लौटा तो उसने देखा कि सांप एक जली रस्सी की तरह वहां पड़ा है और कछुवा गेंद की तरह। यह देख कर वह बोला—

सौ की होगी सींदड़ी, पचासां की दड़ी।
आछी म्हारी एकली, लांवै खाळ खड़ी॥

३१०३ सौ का भाई सट्ठ।

सौ और साठ तो भाई-भाई ही हैं अर्थात् बराबर हैं।

सन्दर्भ कथा—गांव के साहूकार का एक कुंजड़े पर सौ रुपये का ऋण था। बार-बार टोकने पर भी जब कुंजड़े ने ऋण अदा नहीं किया तो सेठ उसके घर गया और बोला कि आज तुम्हें रुपये देने ही पड़ेंगे। इस पर कुंजड़ा बोला कि आप सौ रुपये मांगते हैं, लेकिन सौ और साठ तो भाई-भाई हैं, इसलिए आप को तो वास्तव में साठ रुपये ही देने हैं। लेकिन इन साठ में आधे रुपये छूट के रहेंगे। इस प्रकार शेष तीस रुपये देने रहे। इनमें से दस रुपये तो फिर कभी दे दूंगा, दस किसी से दिलवाऊंगा और दस का क्या देना-लेना, चलो हिसाब चुकता हुआ—

सौ का भाई सट्ठ, आधा नै गयो नट्ठ।
दस देंगे, दस दिलायेंगे और दस का क्या देना-लेना॥

३१०४. सौ को सवाई ई चोखो, दो को दूणो भे के काम को ?

सौ के सवाये भी अच्छे, दो के दुगने भी किस काम के ?

सौ के सवाये एक सौ पच्चीस होते हैं अर्थात् पच्चीस रुपये का मुनाफा हो जाता है, दो के दुगने भी कर लिए तो दो रुपये का ही मुनाफा हुआ।

३१०५. सौ, गायक अर एक ढब्बी।

दुकानदार के यहां कोई अपने वाला आदमी माल खरीदता है तो वह उससे सामान्य ग्राहक की अपेक्षा अधिक मुनाफा लेता है क्योंकि अपनत्व के मारे वह कुछ बोल नहीं पाता और यही समझता है कि दुकानदार तो अपना ही है, वह अपने से ज्यादा थोड़े ही लेगा।

३१०६. सौ जूती अर हुक्कै को पाणी।

ऐसा कभी नहीं हो सकता, जो ऐसा कहे उसे सौ जूते लगाये जाएं एवं हुक्के का पानी पिलाया जाए।

अपनी बात का बलपूर्वक समर्थन करना।

३१०७ सौ दवा, एक हवा।

शुद्ध वायु का सेवन सौ दवाओं के बराबर लाभप्रद है।

३१०८. **सौ दिन चोर का तो एक दिन साहूकार को भी।**
चोर सौ दिनों तक चोरी करता है, लेकिन एक दिन साहूकार का भी आता है और चोर पकड़ा जाता है।
रू० सौ दिन सासु का तो एक दिन बू को भी।

३१०९. **सौ घोती अर एक गोती।**
एक सगोत्री अन्य सौ के बराबर होता है।

३११०. **सौ नकटां में एक नाक आळो ई नक्कू बाजै।**
सौ नकटों में एक नाक वाला हो तो वह नक्कू बन जाता है।
सौ चोरों में एक साहूकार हो तो उसकी बेकद्री ही होती है।

३१११. **सौ न्होरा अर टांग जोर।**
सौ निहोरे खाने से जो काम नहीं होता, वह टांग के जोर से हो जाता है।

३११२. **सौ पट्टा, एक लट्ठा।**
सौ पट्टेबाजों को एक लट्ठबाज हरा देता है।
रू० सौ रांघड़ा, एक सांघड़ो।

३११३. **सौ बरसां को चिणनियों, पांच बरस को चिणावणियों।**
मकान चिनने वाला चाहे बड़ी उम्र का और चिनवाने वाला कम उम्र का हो, लेकिन चिनने वाले को उसी का कहना मानना पड़ता है।

३११४. **सौ में फूल सैंस में काणों, सवा लाख में ऐंचाताणो।**
मांझरियो सब को सिरदार, गंजे आगै निमसकार॥
जिसकी आंख में फूला हो वह सौ आदमियों में, काना हजार में और ऐंचाताना सवा लाख आदमियों से भी धूर्त माना जाता है। लेकिन इन से भी ऊपर मांझरा (बिल्ली जैसी आंखों वाला) होता है और गंजे को तो नमस्कार ही है।
रू० सौ में सूर सैंस में काणो, सब सैं खोटो ऐंचाताणो।
ऐंचाताणो करी पुकार, कंजे सैं रहियो हुंसियार॥

३११५. **सौवां पीछै भी साहजी क्यूं ?**
सौ के बाद भी साहजी की बारी क्यों आये ?

संदर्भ कथा—एक सेठ यात्रा पर जा रहा था। साथ जाने वाले सौ हथियार-बंद रक्षक तैयार हो चुके थे। जब सारी तैयारी पूरी हो चुकी तो रक्षकों के सरदार ने साहजी से निवेदन किया कि अब विदा होना चाहिए। साहजी ने उससे पूछा कि अभी समय क्या हुआ होगा ? सरदार बोला कि आधी रात बीत रही है। यह सुन कर सेठ बोला कि यह तो चोरी-डाके

का वक्त है, इस वक्त नहीं चलेंगे। सरदार ने कहा कि हम सौ आदमी आपके साथ हैं और जब तक हम सौ के सौ काम न आ जायेंगे, आपके ऊपर कोई आंच नहीं आयेगी। इस पर सेठ बोला कि सौ के बाद भी साहजी की बारी क्यों आये ? और साहजी ने यात्रा स्थगित कर दी।

३११६ **सौ सुनार की, एक लुहार की।**
लुहार की एक ही चोट सुनार की सौ चोटों के बराबर है।
जबरदस्त एक ही वार में सारी कसर निकाल लेता है।

३११७. **सौ सौ चूसा खा कर बिलाई हज करण नै चाली।**
अनगिनत पाप करके अब तीर्थ यात्रा को चले हैं।

३११८. **सौ स्याणा, एक मत।**
सौ सयाने, एक मत।

३११९. **स्याणी सासरै जा अर बावळी सीख दे।**
सयानी सुसराल जा रही है और बावली उसे शिक्षा देती है।

३१२०. **स्याणो आदमी लीक कोनी पीटै।**
सयाना आदमी लीक नहीं पीटता।

सन्दर्भ कथा—किसी मंदिर में एक सूरदास पूजा किया करता था। वह दो रोटी बना कर भगवान् को भोग लगा देता और फिर उन रोटियों को खा लिया करता। लेकिन मंदिर में एक बिल्ली हिल गई और जैसे ही सूरदास भगवान् की मूर्ति के आगे रोटियां रखकर हाथ जोड़ता, वैसे ही वह रोटियों को उठाकर भाग जाती। पुजारी भूखा रह जाता। तब उसने एक युक्ति निकाली। उसने काठ की एक बड़ी मेख बनवाई और जब वह भोग लगाता तो उस मेख को रोटियों में ठोंक देता, जिससे बिल्ली उन्हें नहीं लेजा पाती।

सूरदास की मृत्यु के बाद उसका एक चेला पूजा करने लगा। यद्यपि वह अन्धा नहीं था, तथापि गुरु की परिपाटी को निभाने के लिए वह भी रोटियों में मेख अवश्य ठोंकता। उसके बाद तीसरा पुजारी आया। वह कुछ समझदार था। उसने किसी वयोवृद्ध से मेख ठोंकने का रहस्य पूछा और सारी बात जानकर उसने रोटियों में मेख ठोंकना बंद कर दिया।

३१२१. **स्यामीजी नै साटै की, दे खसम कै भाठै की।**
साधु-मोडों को तो साटे की रोटी देती है और पति को कोरा रखती है।
कुछ स्त्रियां पति की तो उपेक्षा करती हैं और साधु संन्यासियों की आवभगत करती हैं।
साटा = पूड़ी आदि बेलने से पूर्व उसमें जो घी दिया जाता है, उसे साटा कहते हैं।

३१२२. स्यांमीं मिलज्या काणो, तो बैकूंठ भी नईं जाणो।
यात्रा के लिए प्रस्थान करते समय यदि काना सामने मिल जाए तो लाभप्रद यात्रा भी स्थगित कर देनी चाहिए।

३१२३. स्याळ लोंगी सफेद बाजा, क्या करे उसका रूठ्या राजा।
जिसके पास उपरोक्त दोनों चीजें हों, उसे किसी बात की कमी नहीं रहती और रूठा हुआ राजा भी उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

३१२४. स्याळो भोगी को, ऊन्याळो जोगी को।
भोगी के लिये शीत ऋतु एवं योगी के लिए ग्रीष्म ऋतु अच्छी होती है।

३१२५. हँगायो ग्रर उमायो रैवै कोनी।
शौच की हाजत वाला और उमंग में भरा हुआ रोके नहीं रुकता।

३१२६. हँसती हँसती कूवै में जा पड़ी।
हँसी-हँसी में बात बिगड़ गई।

३१२७. हँसली तो घड़ाल्यूं, पण घर को धणी बस में कोनी।
हँसली तो गढ़वालूं, लेकिन पति ही वश में नहीं तब क्या हो?
हँसली = गले का एक आभूषण।

३१२८. हठीला हठ छोड़ दे, 'क कठै पग भी मंडै ?

सन्दर्भ कथा—एक सियार ने किसी सिंह को शिकार करते देखा तो उसने अपनी सियारिन से आकर कहा कि मुझे भी शिकार करने की कला आ गई है। सियार की बात सुनकर सियारिन को हँसी आ गई। इस पर गीदड़ ने उसे डांटा और शिकार करने के लिये जोरों से दौड़ पड़ा। थोड़ी ही दूरी पर एक ऊंट चर रहा था। गीदड़ ने झाड़ में घुस कर उसके मुँह पर पंजा मारा। ऊंट ने अपनी गरदन ऊंची उठाई तो गीदड़ भी साथ ही लटका चला गया। सियारी ने अपने पति की यह हालत देखी तो उसने उससे पुकार कर कहा—हठीले हठ छोड़ दो। सियार ने उत्तर दिया कि मैं तो अपना हठ छोड़ने के लिए तैयार हूँ, लेकिन कहीं जमीन पर पैर भी तो टिक पायें, कम्बख्त ने पांच हाथ ऊपर उठा रखा है—

सुन्दर का बोल मेरे मन भावै।
पण धरती पर पांव मंडण भी पावै ?

३१२९. हड़क्यो भड़क्यो तीन दिन ई रैवै।
पागल कुत्ते के काटने से हड़काया हुआ तीन दिन ही जीवित रहता है।

३१३०. हणमानजी को बळ याद दवायां आवै।
हनुमानजी को अपना बल याद दिलाने से ही याद आता है।

३१३१. हतकार की रोटी, चौवटै ढकार ?
हत्कार की रोटी खाये और बाजार के चौराहे पर डकार ले ।
थोथे अहंकार का प्रदर्शन ।

३१३२. हथणी मोल न म्हैसरणी मोल ।
माहेश्वरियों में कभी विवाह सम्बन्ध हेतु लड़की की बड़ी कीमत चुकानी पड़ती थी ।

३१३३. हथेळी में सिरसूं कोनी उगै ।
हथेली में सरसों नहीं उग सकती ।
रू० हथेळी में सिरसूं कोनी 'बाई जा ।

३१३४. हम चौड़ा, गळियारा सांकड़ा ।
हम चौड़े, रास्ता संकरा ।
अतिशय अभिमानी व्यक्ति के लिए जो झूठे घमंड में भरा रहता है ।

३१३५. हर कठै अर मन कठै ।
ईश्वर कहीं और मन कहीं ।
हाथ में तो माला फिरती रहे एवं मन कहीं और रमता रहे ।

सन्दर्भ कथा—एक मौलवी अपना मुसल्ला बिछा कर नमाज पढ़ रहा था कि एक कामातुर नायिका अपने यार के पास जाती हुई उधर से गुजरी । वह अपनी धुन में जा रही थी । उसने मौलवी या उसके मुसल्ले को नहीं देखा और वह मुसल्ले पर पैर रखती हुई चली गई । इस पर मौलवी को बड़ा गुस्सा आया और उसने सोचा कि लौटते वक्त उसकी खबर लूंगा । बहुत देर बाद जब वह लौटी तो मौलवी उस पर बरस पड़ा और उसे पीटने के लिये उतारू हो गया । इस पर युवती ने कहा—

नर रांची जान्यो नहीं, तैं कस लख्यो सुजान ।
पढ़ि कुरान बौरो भयो, नहीं रांच्यो रहमान ।।

अर्थात् हे सुजान, मैं तो मनुष्य में अनुरक्त थी, इसलिये मेरा ध्यान तुम्हारे मुसल्ले की ओर नहीं गया । लेकिन तुम तो खुदा से लौ लगाये थे, फिर भला तुमने कैसे जाना कि मेरा पैर चादर पर पड़ गया है ? तुम तो बस कुरान पढ़ कर घमंड में भूल गये हो, वास्तव में तुम्हारा मन ईश्वर में लगा ही नहीं है । उसकी बात सुनकर मौलवी लज्जित हो गया ।

३१३६. हरख्यो हरख्यो फिरत है, आज हमारो ब्या ।
तुळसी गाय बजाय कर दियो काठ में पा ।।
दूल्हा हर्षित होकर घूम रहा है कि आज उसका विवाह है, लेकिन उसे यह पता नहीं है कि वास्तव में गा बजाकर उसे काठ में दिया जा रहा है अर्थात् बंधन में जकड़ा जा रहा है ।

रू० नर नैं खोड़ैं मार कर, ये गावै टोडरमल्ल ।

३१३७. हरड़ै भरड़ै आंवळा, घी सक्कर सें खाय ।
हाथी दाबै काख में, साठ कोस ले ज्याय ।।
त्रिफलों का घी-शक्कर के साथ सेवन करने से बड़ी ताकत आती है ।

३१३८. हरदी जरदी ना तजै, षटरस तजै न आम ।
सीलवंत गुण ना तजै, औगण तजै न गुलाम ।।
हलदी पीलेपन को, आम खटाई को, शीलवान् गुण को और गुलाम अवगुण को नहीं छोड़ता ।

३१३९. हर लिख्या सो 'वे लिख्या, लिख लिख घाल्या अंक ।
राई घटै न तिल वधै, करल्यो कोड़ जतन्न ।।
विधाता का लेख भी वही है जो भगवान् का है, इसे करोड़ उपायों से भी नहीं बदला जा सकता ।

३१४०. हर सें हेत, खसम सें चोरी ।
पति से तो चोरी करती है और भगवान् से हेत जतलाती है ।
रू० आधी न्हाई आधी कोरी, हर सें हेत खसम सें चोरी ।
मिरग चिड़ो डवकायो, कातिग को फळ पायो ।।

३१४१. हर हर गंगा गोदावरी, किमैक सरदा किमैक जोरावरी ।
कुछ तो श्रद्धा से भगवान् का नाम मुँह निकल रहा है और कुछ जाड़े के मारे मजबूरी से ।
शीत ऋतु में जब भक्तजन गंगा में गोता लगाते हैं अथवा शीतल जल से स्नान करते हैं ।

३१४२. हरी करै सो खरी ।
भगवान् जो करे वही खरा ।

३१४३. हरी खेती अर ग्याभण गाय ।
हरी खेती और गर्भवती गाय का पहले से ही सही अनुमान नहीं लगाया जा सकता ।

३१४४. हळकै पर बळ आवै ।
निर्बल पर ही जोश आता है । निर्बल पर ही जोर आजमाया जाता है ।
रू० निबळै पर ई झाळ आवै ।

३१४५. हळदी लागै न फिटकड़ी, रंग आवै चोखो ।
अपने पास से न हलदी लगे, न फिटकरी और रंग भी अच्छा आ जाए ।
काम मुफ्त में हो और अच्छा भी हो ।

३१४६. हळ हाळां, खेत पड़ाळां ।
अच्छी हाल वाला हल वढिया होता है और खेत पड़ाले का अच्छा होता है ।

३१४७. **हवा हवा को मोल है ।**

परिस्थिति के अनुसार मूल्यों में भी परिवर्तन होता रहता है ।

३१४८. **हस्त बरसै चितरा मंडरावै, घर बैठ्यो करसो सुख पावै ।**

हस्त नक्षत्र में वर्षा हो एवं चित्रा नक्षत्र में बादल मंडरायें तो अच्छा जमाना होने से किसान सुखी हो ।

रू० हस्तीड़ो तो 'मे बरसावै, चितरा उमड़्या बादळ लावै ।
सर्म निपजसी सांतरो, करसां कै मन मोद न मावै ।।

३१४९. **हस्ती जातो पूंछ हलावै, घर बैठ्यां गीऊं निपजावै ।**

हस्त नक्षत्र के समाप्त होते होते यदि वर्षा हो जाए तो गेहूँ की खेती के लिए बहुत लाभदायक हो ।

३१५०. **हांडी में रूप, पेई में सिणगार ।**

अच्छा खाने-पीने से रूप निखरता है एवं पेटी में आभूषण आदि हों तभी शृंगार हो सकता है ।

३१५१. **हांसी में खांसी होज्या ।**

हँसी-हँसी में झगड़ा हो जाता है ।

रू० हांसी में फांसी होज्या ।

संदर्भ कथा—एक सेठ के घर में बड़ा घाटा आ गया और रोटियों के भी लाले पड़ गये । तब उसकी स्त्री ने कहा कि ऐसा कब तक चलेगा, कुछ दिन मेरे पीहर चलकर रहा जाए । उसके कहने पर सेठ अपनी स्त्री एवं इकलौते बालक को लेकर अपनी सुसराल की ओर चल पडा । लेकिन रास्ते में उसकी स्त्री ने सोचा कि अपने दामाद को ऐसी गिरी हालत में देख कर मेरे पीहर वाले क्या कहेंगे, और मेरी भाभियां तो तानों के मारे जीने ही नहीं देंगी । यों सोचकर वह पानी पीने के बहाने अपने पति को कुएँ पर ले गई और अवसर पाकर उसे कुएँ में धकेल दिया । फिर वह अपने छोटे बालक को लेकर पीहर चली गई ।

इधर सेठ को किसी ने कुएँ में से निकाल दिया और वह एक शहर में जाकर धंधा करने लगा । थोड़े ही समय में उसके पास काफी धन हो गया और वह अपनी बहू और बेटे को अपने घर ले आया । बेटा भी अब सयाना हो गया था, अतः उसने उसका विवाह कर दिया । लेकिन बहू बड़ी कर्कशा आई । वह सास से नित्य ही झगड़ती रहती थी । एक दिन सेठ भोजन कर रहा था । सूर्य की धूप उस पर पड़ रही थी तो उसकी स्त्री ने अपने आंचल से छाया करदी । यह देख कर सेठ को हँसी आ गई कि एक दिन तो इसने मुझे कुएँ में धकेला था और आज आंचल से छाया कर रही

है। पुत्रवधू को इस रहस्य का पता लगा तो उसे सास को छकाने का गुरु-मंत्र मिल गया। वह बात-बात पर उससे कहने लगी कि तुम तो वही हो न! जिसने श्वसुरजी को कुए में धकेला था? उसने दुखी होकर सेठानी ऊपर के कमरे में चली गई और वहां फांसी लगाकर मर गई। थोड़ी देर बाद सेठ आया और पत्नी की दशा देखकर वह भी फांसी लगाकर मर गया। मां बाप को मरा देख कर बेटे को बड़ा दुःख हुआ और उसने भी फांसी लगा ली। अब बहू अकेली क्या करती? उसने भी इन तीनों का अनुसरण करना ही अच्छा समझा और इस प्रकार जरासी हँसी ने चारों की जान ले ली।

३१५२. हाकम को 'मूं' तोप होवै।
हाकिम का मुँह तोप होता है, पता नहीं, वह क्या हुक्म दे दे।

३१५३. हाकम चल्यो जा, पण हुकम रैज्या।
हाकिम चला जाता है, लेकिन उसका दिया हुआ हुक्म कायम रह जाता है।
रू० हाकम चल्योजा, हुकम कोनी जा।

३१५४. हाकम वैद रसोइया, नट वेस्यां अर भट्ट।
इण सैं कपट न कीजिये, इणका रच्या कपट्ट॥
हाकिम, वैद्य, रसोइया, नट, वेश्या और भट्ट से छल नहीं करना चाहिए क्योंकि इनसे कुछ छिपा नहीं रहता।

३१५५. हाक मारयां किसो कूवो खुदै?
हांक मारने से कुआं नहीं खुदता।

३१५६. हाकमी गरमाई की, दुकानदारी नरमाई की।
हाकिमी कड़ाई से होती है और दुकानदारी नम्रता से।

३१५७. हाजर में हुज्जत नईं, गैर में तलासी नईं।
जो पास में है, उससे इन्कार नहीं; जो नहीं है, उसका कोई उपाय नहीं।

३१५८. हाट जा वजार जा, भांवैं करल्या चोरी।
जे कमाणै की जुरत नईं, तो क्यूं परणै थो गोरी?
पत्नी अपने अनकमाऊ पति से कहती है कि चाहे हाट-बाजार से कमा कर लाओ, चाहे चोरी करके, लेकिन घरेलू सामान तो लाना ही पड़ेगा। यदि तुम्हारी कमाने की जुरअत नहीं थी तो विवाह क्यों किया था?

३१५९. हाडो ले डूब्यो गणगोर।
हाडा अपने साथ गणगौर को भी ले डूबा।

हाडा चौहान क्षत्रियों की एक शाखा है। राजस्थान में बूंदी और कोटा इनके राज्य रहे हैं। कविराजा श्यामलदास द्वारा लिखित 'वीर विनोद' नामक ग्रन्थ (पृ० ११४, बूंदी की तवारीख) के अनुसार बूंदी के राव बुद्ध-

सिंह का छोटा भाई जोधसिंह वि० सं० १७६३, चैत्र शु० ३ को गनगौर के दिन नाव में बैठ कर जैतसागर तालाब में सैर कर रहा था सो मस्त हाथी के हमला करने से गनगौर एवं अन्य साथियों सहित तालाब में डूब कर मृत्यु को प्राप्त हुआ और उस दिन से वहां गनगौर का त्यौहार मनाना बन्द हो गया।

३१६०. हाथ कंगण नै आरसी के ?
हाथ में पहने हुए कंगन को दर्पण में देखने की क्या आवश्यकता ?
प्रत्यक्ष को प्रमाण की क्या जरूरत।

३१६१. हाथ को गास अर वैकूंठां को वास।
जो अन्न का दान देता है, वह वैकुंठ में जाता है।
खाने के लिए अन्न उपलब्ध हो तो यहीं वैकुंठ है।

३१६२. हाथ पसारणै सें पग पसारणा चोखा।
किसी के आगे हाथ पसारने की अपेक्षा मरना अच्छा।

३१६३. हाथ पोलो देस गोलो।
हाथ का दातार हो तो सब कोई उसका काम करने के लिए तैयार रहते हैं।

३१६४. हाथ में लियो कांसो तो मांगणै को के सांसो ?
जब हाथ में भिक्षा-पात्र ले लिया तब मांगने में हिचक कैसी ?

३१६५. हाथ सुमरणी, बगल कतरणी।
हाथ में सुमरनी एवं बगल में कतरनी।
रू० (१) 'मुं में राम, बगल में छुरी।
(२) हिरदै घात, गऊमुखी में जाप।

३१६६. हाथां लगावै, पगां बुझावै।
इधर-उधर के भाठे भिड़ाने वाला आदमी।

३१६७. हाथी आगै लकड़ी है।
हाथी के आगे लकड़ी है, चाहे तो छोड़ दे, चाहे तो तोड़ दे।
रू० हाकम कै 'मूंडै न्याव है।

३१६८. हाथी का दांत खाणै का दूसरा अर दिखाणै का दूसरा।
हाथी के खाने के दांत और, दिखाने के और।

३१६९. हाथी कै गैल यूं हीं गंडक घूंसता रवै।
हाथी के पीछे यों हीं कुत्ते भौंकते रहते हैं, वह उनकी परवाह नहीं करता।
नीच आदमी बड़ों की निंदा करते रहते हैं, लेकिन वे उनकी बातों पर ध्यान ही नहीं देते।

३१७०. हाथी कै पग में सगळा पग समाज्या।
हाथी के पदचिह्न में सब जानवरों के पद चिह्न समा जाते हैं।
रू० हाथी कै खोज में सगळा खोज समाज्या।

३१७१. हाथी नै हिलावड़ो कुण फवै ?
समर्थ को कौन दोष दे ?

३१७२. हाथियां सें हळ कोनी वाया जावै ।
हाथियों से हल नहीं चलवाये जाते ।

३१७३. हाथी मरचो तो ई लाख को ।
हाथी मरने पर भी लाख रुपये का ।
हाथी के दांतों आदि की बड़ी अच्छी कीमत मिलती है ।

३१७४ हाथी सें हजार पेंड, लाख पेंड लूंड सें ।
तिरिया सें तेतीस पेंड, कोड़ पेंड भूंड सें ।।
उपरोक्त चारों से बचकर ही रहना चाहिये ।
भूंड = निंदा, अपकीर्ति ।

३१७५. हाथी हजार को, म्हावत कोडी च्यार को ।
कीमत हाथी की होती है, महावत की नहीं ।

३१७६. हा विना धा कोनी ।
अपनत्व के विना ममता नहीं ।

३१७७. हामणियां रे ! 'क हां भाई । काम करैगो ? ना भाई ।
कामचोर व्यक्ति को काम करते मौत आती है ।
रू० हामणियां रे, 'क हाय मावड़ी,
'क यूं क्यूं करचो ?
'क मैं देख्यो कोई काम उढासी ।

३१७८. हाय घोड़ो, दिन थोड़ो ।
पूरा दिन हाय-तोवा करते ही वीतता है ।

३१७९. हारलो नीं डोरलो, वोरलो ई वोरलो ।
गहने के नाम पर हार, डोर कुछ नहीं, केवल एक वोर है जिसका ही वार-वार वखान किया जा रहा है ।

३१८०. हारे को विसराम, तमाखू वापड़ी ।
तंबाकू हारे हुए मनुष्य का श्रम मिटाती है, उसे ताजगी प्रदान करती है ।

३१८१. हारै सो विच्यारै ।
हारने वाला ही तरह-तरह के सोच विचार करता है ।

३१८२. हारचो आक चावै ।
जीवन में हारा हुआ (असफल) व्यक्ति ही आक चवाता है ।
वह मजबूरी में न करने योग्य काम भी करता है ।

संदर्भ कथा—एक सेठ कभी बड़ा मालदार था लेकिन दुर्भाग्य से एकदम गरीब हो गया । घर में दो जून खाने को भी न रहा । तब उसने

अपनी स्त्री को भेज कर पड़ोसिन से दस रुपये उधार मंगवाये और कमाने के लिए चल पड़ा। चलते–चलते वह एक गांव में पहुँचा। गांव बड़ा था, बहुतेरी दुकानें थीं, ऊँचे-ऊँचे मकान भी थे, लेकिन सभी आदमियों के बाल और नाखून बढे हुये थे। वह जान गया कि यहाँ कोई नाई नहीं है। सेठ ने बड़ी ही अनिच्छा और मजबूरी से नाई का काम करने का निश्चय कर लिया। वह निकटवर्ती शहर में गया और राछों सहित एक रछैनी खरीद कर पुनः उस गांव में पहुँचा। हजामत करवाने वालों का जमघट लग गया और उन्होंने मुँह–मांगे दाम 'नाई' को दिये। उसके पास जल्दी ही अच्छी रकम जुट गई और वह घर को लौट पड़ा। घर पहुँचने पर जब उसकी औरत ने उससे पूछा कि इतनी जल्दी इतना धन कहाँ से ले आये तो उसने एक दीर्घ निश्वास लेकर कहा कि आक चबा कर लाया हूँ।

३१८३. हारचो जुवारी दूणो डाव धरै।
हारा हुआ जुआरी दुगना दांव लगाता है। उसे यही आशा रहती है कि इस बार सारी कसर निकाल लूंगा।

३१८४. हाल ताईं तो बेटी बाप कै है।
अभी तक तो बेटी बाप के यहाँ ही है।
अभी तक तो कुछ नहीं बिगड़ा है।

३१८५. हाळी कातिक में स्याणो होवै।
किसान कार्तिक में सयाना होता है।
कार्तिक में फसल पक जाने पर वह ऊहापोह करता रहता है कि यदि ऐसा करते तो ऐसा हो जाता।

३१८६. हिंदुवां में छोटै नै ईं मुसकल।
हिन्दुओं में जो छोटा होता है उसी को मुश्किल होती है क्योंकि छोटा-मोटा हर काम उसे ही करना होता है। छोटे की उपस्थिति में बड़ा काम नहीं करता।

३१८७. हिंदु कैवतो सरमावै, लड़तो कोनी सरमावै।
काम करवाते समय तो मजदूरी आदि तय करने में हिन्दू संकोच करता है, लेकिन फिर झगड़ने में संकोच नहीं करता।

३१८८. हिरण बड़ा'क हर बड़ा, सुगन बड़ा'क स्याम ?
अरजन रथ नै हांक दे, भली करै भगवान ॥
प्रस्थान के समय हिरन को बाईं ओर आया देख कर अर्जुन को शंका हुई तो किसी ने कहा कि शकुन बड़ा है या भगवान् ? जब स्वयं भगवान् तुम्हारे रथ

को हांकने वाले हैं तब अपशकुन कैसा ? इसलिए निर्भय होकर रथ को चलाने दो।

यात्रा के समय हिरनों का दायें आना अच्छा शकुन माना जाता है—

मृगमाला फिरि दाहिनि आई। मंगल गन जनु दीन्हि देखाई।

३१८९. हिरणां कै सींगां की गादड़ां नै कद सुंहात ?

हिरनों के सींग गीदड़ों को कब सुहायें ?

३१९०. हिली-हिली बांदरी, गुड़ मतीरा खाय।

जिसे चोरी की आदत पड़ जाती है, उससे रहा नहीं जाता।

३१९१. हिसाब बैठै ज्यूं को ज्यूं, छोरा-छोरी डूब्या क्यूं ?

हिसाब बराबर ज्यों का त्यों बैठता है, फिर छोरे-छोरी क्योंकर डूब गये ?

संदर्भ कथा—एक कायस्थ अपने परिवार सहित किसी गाँव जा रहा था। रास्ते में एक उथली नदी पड़ी। कायस्थ ने फीते से इस किनारे से लगा कर उस किनारे तक की गहराई का औसत निकाला तो तीन फुट निकला। उसने सोचा कि इतनी गहराई में कोई नहीं डूबेगा। इसलिए वह सब के साथ नदी में उतर गया। लेकिन आगे चल कर उसके लड़के-लड़की पानी में डूब गये। इस पर उसने दुबारा पानी की गहराई का औसत निकाला तो उतना ही निकला। इस पर वह बोल पड़ा कि हिसाब ज्यों का त्यों बैठता है, फिर लड़के-लड़की डूब कैसे गये ?

३१९२. हींजड़ां की कुमाई मूंछ मुंडाई में चली जा।

हिजड़ों की कमाई मोंछ मुंडवाई में चली जाती है।

हिजड़ों के मोंछें होती हैं, लेकिन वे जनाने वेश में रहते हैं, अतः उन्हें बार बार मोंछें मुंडवानी पड़ती हैं और इस तरह नाच-बजा कर जो कुछ वे लाते हैं, वह मोंछों को मुंड़वाने में ही चला जाता है।

३१९३. होणी लरड़ी 'तेरा जगां सें कटै।

ऊन काटते समय दुर्बल भेड़ तेरह जगह पर कट जाती है।

कमजोर को ही विशेष हानि होती है।

३१९४. होणो जेठ देवरां बरोबर।

हीन जेठ देवरों के बराबर। छोटे भाइयों की बहुएँ भी उससे लज्जा नहीं करतीं।

३१९५. हीरां की परख जूंरी करै।

हीरों की परख जौहरी ही कर सकता है।

३१९६. हुंडी अर पैंठ दोनूं ई खोटी।

हुंडी के गुम हो जाने पर उसके बदले पैंठ लिख कर दी जाती थी और इस पैंठ को दिखलाने पर भुगतान मिल जाता था। लेकिन जब हुंडी और पैंठ दोनों ही खोटी हों तो भुगतान क्या मिले ?

३१९७. हुकम हमारा, जोर तुमारा ।
हुक्म हम देते हैं, तुम्हारे में ताकत हो तो उसकी अनुपालना करवालो ।

३१९८. हूणियारां सूं देस भरया पड़्या है ।
उनहारों से देश भरा है ।
हमशक्ल बहुतेरे मिल जाते हैं ।

३१९९. हूं तो गांव की बेटी, पण भुम्रां सूं सेली पडूं हूं ।
हूँ तो गांव की बेटी, लेकिन बहुओं से तेज पड़ती हूँ ।
किसी कुलटा की गर्वोक्ति ।

३२०० होडां होळी, होडां पोळी; होडां बेटो जएा ये मोळी ।
एक ईर्षालु स्त्री ने पड़ोसिन की देखा-देखी खूब जोरों से होली मनाई एवं उसके घर की पोल के अनुरूप ही पोल बनवाई । लेकिन कुछ समय बाद पड़ोसिन ने पुत्र प्रसव किया तो ईर्षालु स्त्री के पति ने अपनी स्त्री से कहा कि अब पड़ोसिन की होड़ में तू भी पुत्र प्रसव करे तब जानूं ।

३२०१. होणी माता नै निमसकार है ।
भवितव्यता को नमस्कार है ।
रू० होणी कद टळै ?

३२०२. होत की भैण, अणहोत को भाई ।
बहिन तो संपन्नता में ही स्नेह जताती है, लेकिन भाई विपत्ती में भी अपनत्व रखता है एवं सहायता करता है ।
रू० सपूत को बाप, कपूत की माई,
होत की भैण, अणहोत को भाई,
निरधन होय सासरै मत जाई,
पीठ पीछै नार पराई ।

३२०३. होत को के सराये, अणहोत को के बिसराये ।
जिसके पास आवश्यकता से अधिक हो उसकी क्या प्रशस्ति की जाए और जिसके पास न हो उसकी क्या निंदा की जाए ?

३२०४. होय शुक्र अस्त आसोज मास ।
सब लोग सुखी आनन्द तास ।
आसोज मास में शुक्र का अस्त होना सबके लिए आनंददायक होता है ।

३२०५. होळी गई दमोदर आयो ।
संदर्भ कथा—होली के दिनों में गाँव के लोगों ने एक किसान को बड़ा तंग किया जिससे उसने घर से बाहर निकलना छोड़ दिया । जिस रात होली जलाई गई तो उसने संतोष की सांस ली और बोला कि अब कल से बाहर

निकलूंगा। लेकिन वड़े तड़के ही उसने गनगौर पूजने वाली लड़कियों को 'दामोदर वासदेवा' गाते सुना तो उदास होकर बोला कि अब तो एक के वदले दो आ गये हैं, इनसे भला कैसे पिंड छूटेगा।

रू० एक गई, दो आया।

३२०६. **होळी तो कपूत सें सुधरै।**

होली तो कपूतों से ही सुधरती है क्योंकि वे ही अधिक ऊधम मचाते हैं।

३२०७ **होळी पीछै घावळो, मार खसम कै मूंड।**

होली के बाद घावले की क्या उपयोगिता ?

रू० तीजां पीछै तीजड़ी, होळी पीछै ढूंढ।
फेरां पीछै चूनड़ी, मार खसम कै मूंड।

३२०८. **होळी वळवा की वखत, कुणसी बाजै बाय।**
पूरव दिस की जे होवै, राजा परजा सुख थाय।

होली 'मंगळाते' (जलाते) समय यदि पूर्व दिशा की वायु हो तो राजा और प्रजा के लिए शुभ होती है।

३२०९. **होळी बीती सावण आयो, पांचं बीती पख बोळायो।**

होली बीतने पर सावन शीघ्र आ जाता है और पंचमी तिथि के बीतने पर पक्ष पूरा हो गया, ऐसा मान लिया जाता है।

———

सन्दर्भ-सूची

१. श्री भागीरथ कानोड़िया (मुकुन्दगढ) का संग्रह।
२. श्री गोविन्द अग्रवाल (चूरू) का संग्रह।

प्रकाशित पुस्तकें :

१. राजस्थानी कहावतें, सम्पादक—डा. कन्हैयालाल सहल।
२. राजस्थानी कहावतें : एक अध्ययन—डा. कन्हैयालाल सहल।
३. राजस्थानी हिन्दी कहावत कोश (प्रथम जिल्द), सम्पादक-विजयदान देथा, भागीरथ कानोड़िया।
४. प्रकृति से वर्षा ज्ञान (पूर्वार्द्ध व उत्तरार्द्ध), डा. जयशंकर देवशंकरजी शर्मा।
५. रिपोर्ट मर्दुम शुमारी—राज मारवाड़, बावत सन् १८६१ ई०।

पत्र-पत्रिकाएं :

मरु भारती (पिलानी), वरदा (बिसाऊ), राजस्थान भारती (बीकानेर), विश्वंभरा (बीकानेर), राजस्थानी (कलकत्ता), शोध-पत्रिका (उदयपुर)।

गौण स्रोत :

१. वाल्मीकीय रामायण (गीता प्रेस, गोरखपुर)।
२. रामचरित मानस (गीता प्रेस, गोरखपुर)।
३. भारतीय अभिलेख संग्रह (खण्ड—३), अनु० गिरिजाशंकरप्रसाद मिश्र।
४. चूरू मण्डल का शोध पूर्ण इतिहास, गोविन्द अग्रवाल।

कहावतों के साथ दी गई अधिकांश संदर्भ कथाएँ 'मरु भारती' (पिलानी) के विविध अंकों में धारावाहिक रूप में प्रकाशित श्री गोविन्द अग्रवाल के 'राजस्थानी लोक कथा कोश' से ली गई हैं।

कहावतों की पाण्डुलिपि तैयार करते समय चूरू के श्री चन्द्रशेखर व्यास से समय-समय पर चर्चा होती रही है।

विशेष सूचना :

प्रस्तुत 'राजस्थानी कहावत कोश' के एक सम्पादक श्री गोविन्द अग्रवाल, 'चूरू मण्डल का शोध पूर्ण इतिहास' आदि अनेक ग्रन्थों के प्रणेता एवं 'मरु श्री' शोध-पत्रिका के सम्पादक श्री गोविन्द अग्रवाल हैं। चूरू के ही श्री गोविन्दराम धानुका जो प्रायः कलकत्ता रहते हैं और प्रो० गोविन्द अग्रवाल के नाम से लिखते हैं, वे सर्वथा दूसरे हैं। ❁